ॐ नमः सिद्धं ॥ अथ मोक्षमार्गप्रकाशक नाम शास्त्र लिख्यते ॥ दोहा ॥ मंगलमय मंगलकरण वीतराग
विज्ञान ॥ नमौं ताहि जातैं भए अरहंतादि महान ॥१॥ करि मंगल करिहौं महा ॥ ग्रंथ करन को काज
जातैं मिलै समाज सब पावै निजपद राज ॥२॥ अथ मोक्षमार्गप्रकाशक नाम शास्त्र का उदय हो है ॥ तहां मंग
ल करिए है ॥ णमो अरहंताणं ॥ णमो सिद्धाणं ॥ णमो आयरियाणं ॥ णमो उवज्झायाणं ॥ णमो लोए
सव्वसाहूणं ॥ यहु प्राकृत भाषामय नमस्कार मंत्र है सो महामंगलस्वरूप है ॥ बहुरि याका संस्कृत ऐसा
हो है ॥ नमोऽर्हद्भ्यः ॥ नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमः आचार्येभ्यः ॥ नमः उपाध्यायेभ्यः ॥ नमो लोके सर्वसाधुभ्यः ॥ बहु
रि याका अर्थ ऐसा है । नमस्कार अरहंतनि कै अर्थि ॥ नमस्कार सिद्धनि कै अर्थि ॥ नमस्कार आचार्यनि
कै अर्थि ॥ नमस्कार उपाध्यायनि कै अर्थि ॥ नमस्कार लोकविषै समस्त साधुनि कै अर्थि ऐसैं याविषै नमस्का
र कीया तातैं याका नाम नमस्कार मंत्र है ॥ अब इहां जिनकौं नमस्कार कीया तिनिका स्वरूप चिंत
वन कीजिए है ॥ तहां प्रथम अरहंतनि का स्वरूप विचारिए है ॥ जे गृहस्थपनौं त्यागि मुनिधर्म अंगीकार
करि निजस्वभावसाधनतैं च्यारि घातिकर्मनिकौं खिपाय अनंतचतुष्टय विराजमान भए ॥ तहां अ
नंतज्ञान करि तौ [illegible] अपने अनंत गुणपर्याय सहित समस्त जीवादि द्रव्यनिकौं युगपत विशेषपनैं करि
प्रत्यक्ष जानै है ॥ अनंतदर्शन करि तिनिकौं सामान्यपनैं अवलोकै है ॥ अनंतवीर्य करि ऐसी सामर्थ्य कौं
धारै है ॥ अनंतसुख करि निराकुल परमानंद कौं अनुभवै है ॥ बहुरि सर्वथा सर्व रागद्वेषादि विकारभाव
निकरि रहित होय शांतरसरूप परिणए हैं ॥ बहुरि क्षुधा तृषादि समस्त दोषनितैं मुक्त होइ देवाधिदेव

पनांकों प्राप्त भए हैं॥ बहुरि आयुध अंबरादिक वा अंगविकारादिक जे काम क्रोधादि निंद्य भावनिके चिह्न तिन
करि रहित जिनका परम औदारिक शरीर भया है॥ बहुरि जिनके वचननितैं लोकविषै धर्मतीर्थ प्रवर्तै है॥ ताकरि जीव
निका कल्याण हो है॥ बहुरि जिनिकै लौकिक जीवनिकौं प्रभुत्व माननेंके कारण अनेक अतिशय अर नानाप्र
कार विभवनिका संयुक्तपनां पाईए है॥ बहुरि जिनिकौं अपनां हितकै अर्थि गणधर इंद्रादिक उत्तम जीव सेवै हैं॥
ऐसे सर्वप्रकार पूजनें योग्य श्री अर्हंतदेव हैं तिनिकौं हमारा नमस्कार होउ॥ अब सिद्धनिका स्वरूप ध्याईए है॥ जे गृ
हस्थ अवस्था त्यागि मुनिधर्म साधनतैं च्यारि घातिकर्मनिका नाश भए अनंतचतुष्टय स्वभाव प्रगट करि। केतेक का
ल पीछैं च्यारि अघातिकर्मनिका भी भस्म होतैं परम औदारिक शरीरकौं भी छोरि ऊर्द्धगमन स्वभावतैं लोकका अग्रभाग वि
षै जाय विराजमान भए॥ तहां जिनकै समस्त परद्रव्य संबंध छूटनेंतैं मुक्त अवस्था की सिद्धि भई॥ बहुरि जिनकै चरम
शरीरतैं किंचित् ऊन पुरषाकारवत् आत्मप्रदेशनिका आकार अवस्थित भया॥ बहुरि जिनकै प्रतिपक्षी कर्म
निका नाश भया तातैं समस्त सम्यक्ज्ञान दर्शनादिक आत्मीक गुण संपूर्ण अपनें स्वभावकौं प्राप्त भए हैं॥ बहुरि
जिनकै नोकर्मका संबंध दूरि भया तातैं समस्त अमूर्तत्वादिक आत्मीक धर्म प्रगट भए हैं॥ बहुरि जिनकै भावकर्म
का अभाव भया तातैं निराकुलता आनंदमय शुद्ध स्वभावरूप परिणमन हो है॥ बहुरि जिनकै ध्यान करि भव्य जीवनि
कै स्वद्रव्य परद्रव्यका अर औपाधिक भाव स्वभाव भावनिका विज्ञान हो है ताकरि तिनि सिद्धनिकै समान आप होनेंका सा
धन हो है॥ तातैं साधनें योग्य जो अपनां शुद्ध स्वरूप ताके दिखावनेंकौं प्रतिबिंब समान हैं॥ बहुरि जे कृतकृत्य भए हैं तातैं

ऐसेंही अनंतकालपर्यंत रहै हैं॥ ऐसें निष्पन्न भए सिद्धभगवान तिनकौं हमारा नमस्कार होउ॥ अब आचार्य उपाध्या
य साधुनिका स्वरूप अवलोकिए है॥ जे विरागी होइ समस्त परिग्रहकौं त्यागि शुद्धोपयोगरूप मुनिधर्म अंगी
कार करि अंतरंग विषैं तौ तिस शुद्धोपयोग करि आपकौं आप अनुभवै है॥ परद्रव्य विषैं अहंबुद्धि नांही धारै है॥
बहुरि अपने ज्ञानादिक स्वभावनिहीकौं अपने मानै है॥ परभावनि विषैं ममत्व न करै है॥ बहुरि जे परद्रव्य वा
तिनके स्वभाव ज्ञान विषैं प्रतिभासै है तिनिकौं जानैं तौ है परंतु इष्ट अनिष्ट मानि तिनि विषैं रागद्वेष ना
हीं करै है॥ शरीरकी अनेक अवस्था होइ॥ बाह्य नाना निमित्त बनैं॥ परंतु तहां किछू भी सुख दुख मा
नते नांही॥ बहुरि अपने योग्य बाह्यक्रिया जैसें बनै तैसें बनै है ~~तैसें बनै है~~॥ खैंचि करि तिनिकौं करते नं
हीं॥ बहुरि अपने उपयोगकौं बहुत नांही भ्रमावै है॥ उदासीन होइ निश्चलवृत्तिकौं धारै है॥ बहुरि क
दाचित् मंदरागके उदयतें शुभोपयोग भी हो है॥ तिसकरि जे शुद्धोपयोगके बाह्य साधन है तिनि विषैं अ
नुराग करै है॥ परंतु तिस रागभावकौं हेय जानि दूरि कीया चाहै है॥ बहुरि तीव्र कषायकै उदयका अभाव
तें हिंसादिरूप अशुभोपयोग परणतिका तौ अस्तित्व ही रह्या नांही॥ बहुरि ऐसी अंतरंग दशातें बाह्य
दिगंबर सौम्यमुद्राके धारी भए है॥ शरीरका संवारनां आदि विक्रियानिकरि रहित भए है॥ वनखंडादि विषैं
वसै है॥ अठाईस मूलगुणनिकौं अखंडित पालै है॥ बाईस परीषहनिकौं सहै है॥ बारह प्रकार तपनि
कौं आदरै है॥ ~~बहुरि~~ कदाचित् ध्यानमुद्रा धारि प्रतिमावत् निश्चल हो है॥ कदाचित् अध्ययनादिक बाह्य

अर क्रियानि विषैं प्रवर्त्तै हैं॥ कदाचित् मुनिधर्म का सहकारी शरीर की स्थिति के अर्थि योग्य आहार विहारादि क्रियानि
विषैं सावधान हो है॥ ऐसैं जैनी मुनि हैं तिनि सबनि की ऐसी ही अवस्था हो है॥ तिनि विषैं जे सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारि
त्र की अधिकता करि प्रधान पद कौं पाइ संघ विषैं नायक भए हैं॥ बहुरि जे मुख्यपनैं तौ निर्विकल्प स्वरूपाचरण विषैं
ही मग्न हैं॥ अर जो कदाचित् धर्म के लोभी अन्य जीव याचक तिनिकौं देखि राग अंश उदय तैं करुणाबुद्धि होइ तौ ति
निकौं धर्मोपदेश देते हैं। जे दीक्षा ग्राहक हैं तिनिकौं दीक्षा देते हैं। जे अपने दोष प्रगट करै हैं॥ तिनिकौं प्रायश्चित्त विधि
करि शुद्ध करै हैं॥ ऐसे आचरन अचरावनवाले आचार्य तिनिकौं हमारा नमस्कार होहु॥ बहुरि जे ब
हुत जैन शास्त्रनि के ज्ञाता होइ संघ विषैं पठन पाठन के अधिकारी भए हैं॥ बहुरि जे समस्त शास्त्रनि का प्रयो
जन जानि एकाग्र होय अपने स्वरूप कौं ध्यावै हैं॥ अर जो कदाचित् कषाय अंश उदय तैं तहां उपयोग नाहीं
थंभै है तौ तिनि शास्त्रनि कौं आप पढ़ै हैं॥ वा अन्य धर्मबुद्धीनि कौं पढ़ावै हैं॥ ऐसैं समीपवर्ती भव्यनि कौं अ
ध्ययन करावनहारे उपाध्याय तिनिकौं हमारा नमस्कार होहु॥ बहुरि इन दोय पदवीधारक बिना अन्य सम
स्त जे मुनिपद के धारक हैं॥ बहुरि जे आत्मस्वभाव कौं साधै हैं॥ जैसैं अपना उपयोग परद्रव्यनि विषैं इष्ट अ
निष्टपनो मानि फंसै नाहीं तैसैं उपयोग कौं सधावै हैं॥ बहुरि बाह्य के साधनभूत तपश्चरणादि क्रियानि वि
षैं प्रवर्त्तै हैं॥ वा कदाचित् भक्ति वंदनादि कार्यनि विषैं प्रवर्त्तै हैं॥ ऐसे आत्मस्वभाव के साधक साधु हैं तिनि
कौं हमारा नमस्कार होउ॥ ऐसैं इनि अरहंतादिकनि का स्वरूप है सो वीतराग विज्ञानमय है तिस ही करि अरहंता

बाजा भो नांहीं२

दिक स्तुति योग्य महान जानने॥ जातैं जीवत्वकरि तो सर्व जीव समान हैं॥ परंतु रागादि विकारनिकरि वा ज्ञा-
नकी हीनताकरि तो जीव निंदा योग्य हो है॥ बहुरि रागादिक की हीनताकरि वा ज्ञानकी विशेषताकरि स्तुति यो-
ग्य हो है॥ सो अरहंत सिद्धनिकै तौ संपूर्ण रागादिक की हीनता अर ज्ञान की विशेषता होनेकरि संपूर्ण वीत-
राग विज्ञान भाव संभवै है॥ अर आचार्य उपाध्याय साधुनिकै एकोदेश रागादिक की हीनता अर ज्ञानादि की
विशेषता होनेकरि एकोदेश वीतराग विज्ञान संभवै है॥ तातैं ते अरहंतादिक स्तुति
योग्य महान जानने॥ बहुरि ए अरहंतादिक पद हैं तिनिविषै ऐसा जानना जो मुख्यपनैं तौ तीर्थंकर का अ-
र गौणपनै सर्व केवली का प्राकृत भाषाविषै अरहंत अर संस्कृत विषै अर्हत् ऐसा नाम जानना॥ बहु-
रि चौदहवां गुणस्थान कै अनंतर समय तैं लगाय सिद्ध नाम जानना॥ बहुरि जिनकौं आचार्य पद भया
होय ते संघविषै रहौ वा एकाकी आत्मध्यान करौ वा एकाविहारी होउ वा आचार्यनिविषै भी प्रधानता
कौं पाय गणधरपदवी के धारक होउ॥ तिनि सबनि का नाम आचार्य कहिए॥ बहुरि पठनपाठन तौ
अन्य मुनि भी करै हैं॥ परंतु जिनकैं आचार्यनिकरि दीया उपाध्याय पद भया होइ ते आत्मध्यानादि कार्य
करतैं भी उपाध्याय ही नाम पावै है॥ बहुरि जे पदवीधारक नाहीं ते सर्व मुनि साधु संज्ञा के धारक जानने॥
इहां ऐसा नांही नियम है जो पंचाचारनिकरि आचार्य पद हो है॥ पठनपाठनकरि उपाध्याय पद हो है॥
मूलगुन साधनकरि साधुपद हो है॥ जातैं ए तौ क्रिया सर्व मुनिनिकै साधारण है॥ परंतु शब्दनयकरि

3/4

तैसें

तिनिकाअरहरार्थकरितहै॥समस्तविद्वज्जननकरिपदवीकीअपेक्षाकीआचार्यादिकनामजाननें॥जैसेंप्रसिद्ध

न पकरिमनकेंतो गउकहिए सोगमतोप्रभुत्वादिकनीकरैहै॥परंतुसमस्तीकरिनपकरिपर्यायअपेक्षानाम

है॥तैसेंहीइहांसमझनां इहांसिद्धनिकैंपहलैंअरहंतनिकोंनमस्कारकीयासोकौंनकारन॥ऐसासंदेहउपजै

ताकासमाधानपदहै नमस्कारकरिएहै॥अपनेंप्रयोजनसधनेंकीअपेक्षाकरिएहै॥सोअरहंतनितैंउपदेशा

दिककाप्रयोजनविशेषसिद्धिहै॥तातैंपहलैंनमस्कारकीयाहै॥याप्रकारअरहंतादिकनिकास्वरूप

चिंतवनकीयोंवि~~शेषकार्यसिद्धिहै~~॥तातैंस्वरूपचिंतवनकीएविशेषकार्यसिद्धिहोहै॥बहुरिऐसेंइन

अरहंतादिककोंपंचपरमेष्ठीकहिएहै॥जातैंजोसर्वोत्कृष्टइष्टहोइताकानामपरमेष्टहै पंचजेपरमेष्टितिनि

रि कासमाहारसमुदायताकानामपंचपरमेष्ठीजाननें॥बहुरिऋषभअजितसंभवअभिनंदनसुमतिपद्मप्रभसु

पार्श्वचंद्रप्रभपुष्पदंतशीतलश्रेयांनवासपूज्यविमलअनंतधर्मशांतिकुंथअरमल्लिमुनिसुव्रतनमि

नेमिपार्श्ववर्द्धमाननामधारकचौवीसतीर्थंकरइसभरतक्षेत्रविषैवर्त्तमानधर्मतीर्थकेनायकभए॥गर्भजन्म

तपज्ञाननिर्वाणकल्याणकनिविषैइंद्रादिकनिकरिविशेषपूज्यहोइ॥अबसिद्धालयविषैविराजैहैं तिन

निकोंहमारानमस्कारहोऊ॥बहुरिसीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहुसंजातकस्वयंप्रभवृषभाननअनंतवी

र्यसूरप्रभविशालकीर्तिवज्रधरचंद्राननचंद्रबाहुभुजंगमईश्वरनेमिप्रभुदेवयशअजितवीर्यनामधा री

१९वीरसेनमहाभद्र

रिबीसतीर्थंकरपंचमेरुसंबंधीविदेहक्षेत्रनिविषैअबारकेवलज्ञानविराजमानहैंतिनिकौंहमारानमस्का
रहोउ।यद्यपिपरमेष्टीपदविषैइनकागर्भितपनाहै।।तथापिविद्यमानकालविषैइनकाविशेषजानिजु
दानमस्कारकीयाहै।।बहुरित्रिलोकविषैजेअकृत्रिमजिनबिंबविराजैहैं।।मध्यलोकविषैविधिपूर्वककृत्रिम
जिनबिंबविराजैहैं।।जिनिकेदर्शनादिकतैंएकधर्मोपदेशविनांअन्यआपनेहितकीसिद्धिजैसंतीर्थंक
रकेवलीकेदर्शनादिकतैंहोइतैसेंहीहोइ।तिनिजिनबिंबनिकौंहमारानमस्कारहोउ।।बहुरिकेवलीकीदि
व्यध्वनिकरिदीयाउपदेशताकैंअनुसारिगणधरकरिरचितअंगप्रकीर्णकतिनकैंअनुसारिअन्यआचार्या
दिकनिकरिरचेग्रंथादिकऐसैंएसर्वजिनवचनहै।।स्याद्वादचिह्नकरिपहचाननेयोग्यहैंन्यायमार्गतैं
अविरुद्धहैंतातैंप्रमाणीकहैं।।जीवकौंतत्त्वज्ञानकेकारणहैं।।तातैंउपकारीहैंतिनकौंहमारानमस्कारहोउ
बहुरिचैत्यालयआर्यिकाउत्कृष्टश्रावकआदिद्रव्यअरतीर्थक्षेत्रअरकल्याणककालआदिकालअररत्नत्रय
आदिभावजेमुझकरिनमस्कारकरनेयोग्यहैंतिनकौंनमस्कारकरूंहूं।।अरकिंचितविनयकरनेयोग्यहैंतिनका।
यथायोग्यविनयकरौंहौं।।ऐसैंअपनेइष्टनिकासन्मानकरिमंगलकीयाहै।।अबएअरहंतादिकइष्टकैसै
हैंसोविचारकरिएहै।।जाकरिसुखउपजैवादुःखविनसैतिसकार्यकानामप्रयोजनहै।।बहुरितिसप्र
योजनकीजाकरिसिद्धिहोयसोहीअपनाइष्टहै।।सोहमारैइसअवसरविषैवीतरागविशेषज्ञानकाहोना

5/A

सो ऐसा प्रयोजन है॥ तातैं या करि निराकुल सांचे सुखकी प्राप्ति हो है॥ अर सर्व आकुलता रूप दुःखका नास होइ
बंध रहित रूप प्रयोजनकी सिद्धि अरहंतादिकनि करि हो है॥ कैसें सो विचारिए है॥ आत्माकै परिणाम तीन प्रकार हैं
संक्लेश१ विशुद्ध२ शुद्ध३। तहां तीव्र कषायरूप संक्लेश है। मंद कषायरूप विशुद्ध है॥ विशेषज्ञानरूप कषायरहित शुद्ध है। तहां वीतरा
अपने स्वभावके घातक जे हैं ज्ञानावरणादि घातिया कर्म तिनिका संक्लेश परिणाम करि तौ तीव्र बंध होइ है॥ अर
विशुद्ध परिणाम करि मंद बंध हो है॥ वा विशुद्ध परिणाम प्रबल होइ तौ पूर्वै जो तीव्र बंध भया था ताकौ भी मंद करै है
अर शुद्ध परिणाम करि बंध न हो है॥ केवल तिनकी निर्जरा ही हो है॥ सो अरहंतादि विषै स्तवनादिरूप भाव हो है
सो कषायनिकी मंदता लीएं हो है॥ तातैं विशुद्ध परिणाम है॥ बहुरि समस्त कषाय मिटावनेका साधन है तातैं शुद्ध
परिणामका कारण है॥ सो ऐसे परिणाम करि अपना घातक घातिकर्मका हीनपनाकै होनेतैं सहज ही वीत
राग विशेषज्ञान प्रगट हो है॥ जितने अंशनि करि वह हीन होइ तितने अंशनि करि यह प्रगट होइ॥ ऐसें अ
रहंतादिक करि अपना प्रयोजन सिद्धि हो है॥ अथवा अरहंतादिकका आकार अवलोकना॥ वा स्वरूप विचार
करना वा वचन सुनना वा निकटवर्ती होना वा तिनिकै अनुसारि प्रवर्तना इत्यादि कार्य तत्काल ही निमित्तभूत
होइ रागादिकनिकौं हीन करै है जीव अजीवादिकका विशेषज्ञानकौं उपजावै है॥ तातैं ऐसैं भी अरहंतादिक
करि वीतराग विशेषज्ञानरूप प्रयोजनकी सिद्धि हो है॥ इहां कोऊ कहै कि इनि करि ऐसे प्रयोजनकी तौ सिद्धि

ऐसें होइ है। बहुरि आकरि इंद्रियजनित सुख उपजै है दुःख विनसै ऐसें भी प्रयोजनकी सिद्धि इनकरि हो है।
ताका समाधान। जो अरहंतादि विषै स्तवनादिरूप विशुद्धपरिणाम हो है ताकरि अघातिया कर्मनिकी साता
आदि पुण्यप्रकृतिनि का बंध हो है। बहुरि जो वह परिणाम तीव्र होइ तौ पूर्वैं असाता आदि पापप्रकृति बंधी थी ति
निकौं भी मंद करै है। अथवा नष्ट करि पुण्यप्रकृतिरूप परिणमावै है। बहुरि तिस पुण्यका उदय होतें स्वयमेव इं
द्रियसुखकौं कारणभूत सामग्री मिलै है। अर पापका उदय दूरि होतें स्वयमेव दुःखकौं कारणभूत साम
ग्री मिलै दूरि होइ है। ऐसें इस प्रयोजनकी भी सिद्धि तिनिकरि हो है। अथवा जिनसासनके भक्त देवादिक हैं ते
भक्त तिस पुरुषकैं अनेक इंद्रियसुखकौं कारण सामग्रीनिका संयोग करावै है। दुःखकैं कारण सामग्रीनिकौं दू
रि करै है। ऐसें भी इस प्रयोजनकी सिद्धि तिनि अरहंतादिकनिकरि हो है। परंतु इस प्रयोजनतें किछू अपना
हित होता नांही। तातैं यहु आत्मा कषायभावनितैं बाह्य सामग्रीनिविषै इष्ट अनिष्टपनौं मानि आपही सुखदुःख
की कल्पना करै है। विना कषाय बाह्य सामग्री किछू सुखदुःखकी दाता नांही। बहुरि कषाय है सो सर्व आकुलतामय सर्व
है। तातैं इंद्रियजनित सुखकी इच्छा करनी दुःखतैं डरना सो भ्रम है। बहुरि इस प्रयोजनकै अर्थि अरहंता
दिककी भक्ति [illegible] कीएं भी तीव्रकषाय होनेकरि पापबंध ही हो है। तातैं इस प्रयोजनका अर्थी होना आ(?)
योग्य नां नांही। अरहंतादिककी भक्ति करतैं ऐसे प्रयोजन तौ स्वयमेव ही सधै है। ऐसें अरहंतादिक परम इष्ट मानने

...ं ग्रयैं॥ बहुरि ए अरहंतादिक ही परम मंगल है॥ इनि विषै भक्तिभाव भए परम मंगल हो है॥ जातैं मं
ग कहिए सुख ताहि लाति कहिए देवै॥ अथवा मं कहिए पाप ताहि गालयति कहिए गालै ताका नाम मंगल है॥ सो तिनकरि पूर्वो
क्त प्रकार दोऊ कार्यनिकी सिद्धि हो है॥ तातैं तिनिकै परम मंगलपनौं संभवै है॥ इहां कोऊ पूछै कि प्रथम ग्रंथ की आदि
विषै मंगल करी की पासो कौन कारन॥ ताका उत्तर जो सुष स्यौं ग्रंथ की समाप्तता होइ॥ पाप करि कोऊ विघ्न न होय॥ या वासतैं
इहां प्रथम मंगल कीया है॥ इहां तर्क जो अन्यमती ऐसे मंगल नाहीं करै हैं तिनिकै भी ग्रंथ की समाप्तता अर विघ्न का न
होना देखिए है॥ तहां कहा हेतु है॥ ताका समाधान जो अन्यमती ग्रंथ करै हैं॥ तिस विषैं मोह के तीव्र उदय करि
मिथ्यात्व कषाय भावनिकौं पोषते विपरीत अर्थनिकौं धरै है॥ तातैं ताकी निर्विघ्न समाप्तता तौ ऐसे मंगल विना कीयै ही
होइ॥ जो ऐसे मंगलनि करि मोह मंद होय जाय तौ वैसा विपरीत कार्य कैसें बनै॥ बहुरि हम ग्रंथ करै हैं॥ तिस विषैं मोह
की मंदता करि वीतराग तत्वज्ञान कौं पोषते अर्थनिकौं धरैंगे॥ ताकी निर्विघ्न समाप्तता ऐसे मंगल कीए ही होय॥ जो ऐ
से मंगल न करैं तो मोह का तीव्रपना रहै॥ तब ऐसा उत्तम कार्य कैसें बनै॥ बहुरि वह कहै है॥ जो ऐसें तौ मानेंगे परंतु
कोऊ ऐसा मंगल न करै॥ ताकै भी सुख देखिए है॥ पाप का उदय न देखिए है॥ कोऊ ऐसा मंगल करै है॥ ताकै भी सुख न
देखिए है॥ पाप का उदय देखिए है॥ तातैं पूर्वोक्त मंगलपनौं कैसें बनै॥ ताकौं कहिए॥ तो जीवनिकै संक्लेश विशु
द्ध परिणाम अनेक जाति के हैं॥ तिनि करि अनेक कालनि विषै पूर्वे बंधे कर्म एक काल विषै उदय आवै है॥ तातैं जै
सें जाकै पूर्वैं बहुत धन का संचय होइ ताकै बिना कमाएं भी धन देखिए है॥ अर देणां न देखिए है॥ अर जाकै पूर्वैं
ऋण बहुत होइ ताकै धन कमावतैं भी देणां देखिए है॥ धन न देखिए है॥ परंतु विचार कीएतैं कमावनौं धन

मोक्षमार्ग हीका कारण है॥ सुखका कारण नाहीं॥ तातैं जाकै पूर्वै बहुत पुण्य बंध्या होइ ताकै ऐसा मंगल विना
६ कीएं भी सुख देखिए है॥ पापका उदय न देखिए है॥ बहुरि जाकै पूर्वै बहुत पाप बंध्या होइ ताकै ऐसा मंगल की
एं भी सुख न देखिए है॥ पापका उदय देखिए है परंतु विचार कीएं तैं ऐसा मंगल तौ सुखही का कारण है॥ पाप
ल४ उदयका कारण नाहीं॥ ऐसें पूर्वोक्त मंगलका मंगलपना बनै है॥ बहुरि वह कहै है कि यहु भी मानी परंतु जिनशा
सनके भक्त देवादिक हैं॥ तिनि तिस मंगल करनेवाले की सहायता न करी॥ अर मंगल न करनेवाले कौं दंड न दी
या सो कौन कारण॥ ताका समाधान जो जीवनिकै सुख दुःख होने का प्रबल कारण अपना कर्मका उदय है॥
ताही कै अनुसारि बाह्य निमित्त बनै है॥ तातैं जाकै पापका उदय होइ तिसकै सहायका निमित्त न बनै है॥ अर जाकै
पुण्यका उदय होइ ताकै दंडका निमित्त न बनै है॥ यहु निमित्त कैसें न बनै है॥ सो कहिए है॥ जे देवादिक हैं ते क्षयो
पशम ज्ञान तैं॥ सर्व कौं युगपत् जानि सकते नाहीं॥ तातैं मंगल करनेवाले न करनेवाले का जानपना किसी दे
वादिक कै कोई काल विषै हो है॥ तातैं तिनिका जानपना न होइ तौ कैसें सहाय करै वा दंड दे॥ अर जानपना होय त
ब आपकै जो अति मंद कषाय होइ तौ सहाय करने के वा दंड देने के परिणाम ही न होइ॥ अर तीव्र कषाय होइ तौ
धर्मानुराग होइ सकै नाहीं॥ बहुरि मध्य कषायरूप तिस कार्य करने के परिणाम भए॥ अर अपनी शक्ति नाहीं
ती तौ कहा करै॥ ऐसें सहाय करने का वा दंड देनें का निमित्त नाहीं बनै है॥ जो अपनी शक्ति होय॥ अर आपकै
धर्मानुरागरूप मध्य कषायका उदय तैं॥ तैसे ही परिणाम होइ॥ अर तिस समय अन्य जीवका धर्म अधर्म
रूप कर्त्तव्य जानैं॥ तब केई देवादिक किसी धर्मात्मा की सहाय करै है॥ वा किसी अधर्मी कौं दंड दे

हमतै

है॥ऐसें कार्य होनेका किछ निमित्त तौ है नांही॥ऐसें समाधान कीया॥इहांइ तर्ने ज्ञाननां। समझाने कीं पुरुषनकी
नेंकी सहाय करावनेंकी॥इ षधावनेंकी जोइच्छा है सो कषाय मय है॥तत्काल विषै का ज्ञाना मी का लवि पुरुष
यकरै है॥तातें ऐसी इच्छा कों छोडि एक वीतराग विशेष ज्ञान होनेंके अर्थी होइ॥अरहंतादिककों नमस्कारादि
रूप मंगल कीया है॥ऐसें मंगलाचरण करि॥अब सार्थक मोक्षमार्ग प्रका[redacted]नाक नाम ग्रंथका उद्योत क
रै हैं॥तहां यह ग्रंथ प्रमाण है॥ऐसी प्रतीति आवनें के अर्थि पूर्व अनुसार का स्वरूप निरूपिए है॥अ का
रादि अक्षर हैं॥ते अनादि निधन हैं॥काहू के कीए नांही॥इनेका आकार लिखनां तौ अपनी इच्छा के अनु
सारि अनेक प्रकार है॥परंतु बोलनें मैं आवै है॥अक्षर ते तौ सर्व सर्वदा ऐसें ही प्रवर्त्तै है॥सोई कह्या है
सिद्धो वर्णसमाम्नायः॥याका अर्थ यहु जो अक्षरनिका संप्रदाय है॥सो स्वयंसिद्ध है॥बहुरि तिनि अक्षर
निकरि निपजे सत्यार्थके प्रकाशक पद तिनके समूह का नाम श्रुत है सो भी अनादि निधन है॥जैसें जीव ऐसा
अनादि निधन पद है॥सो जीवका जनावनहारा है॥ऐसें अपनें अपनें सत्य अर्थके प्रकासक अनेक पद
तिनिका जो समुदाय सो श्रुत जाननां॥बहुरि जैसें मोती तौ स्वयंसिद्ध है तिनि विषै कोऊ थोरे मोती
निकों कोऊ घनें मो। ती निकों कोऊ किसी प्रकार कोऊ किसी प्रकार गूंथि गहनां बनावै है॥तैसें पद तौ
स्वयंसिद्ध है॥तिनि विषै कोऊ थोरे पदनिकों कोऊ घनें पदनिकों कोऊ किसी प्रकार कोऊ किसी प्रका
र गूंथि ग्रंथ बनावै है॥इहां मैं भी तिनि सत्यार्थ पदनिकों मेरी बुद्धि अनुसारि गूंथि ग्रंथ बनावूं हूं॥मेरी मति क

रिकल्पित झूठे अर्थ पद न विषै नांही गूंथे हैं। तातैं यहु ग्रंथ प्रमाण जानना॥ इहां प्रश्न जो तिनि ग्रंथ
निकी परंपराइ इस ग्रंथपर्यंत कैसें प्रवर्तै है॥ ताका समाधान॥ अनादितैं तीर्थंकर केवली होते आए हैं। तिनिकै
सर्वका ज्ञान हो है। तातैं तिनि पदनिका वा तिनिके अर्थनिका भी ज्ञान हो है। बहुरि तिनि तीर्थंकर केवलीनिका
जाकरि अन्य जीवनिकैं पदनिका अर्थनिका ज्ञान होय ऐसा दिव्यध्वनि करि उपदेश हो है। ताकै अनुसारि
गणधरदेव अंगप्रकीर्णकरूप ग्रंथ गूंथे हैं बहुरि तिनिकै अनुसारि अन्य अन्य आचार्यादिक नानाप्रकार ग्रंथा
दिककी रचना करे हैं॥ तिनिकौं केई अभ्यासे हैं॥ केई कहै हैं केई सुनै हैं॥ ऐसैं परंपराय मार्ग चल्या आवै है॥ सो
अब इस भरतक्षेत्र विषै वर्त्तमान अवसर्पिणी काल है तिस विषै चौवीस तीर्थंकर भए। तिनि विषै॥
श्री वर्द्धमान नामा अंतिम तीर्थंकर देव भया सो केवलज्ञान विराजमान होइ जीवनिकौं दिव्यध्वनि करि उपदेश दे
ता भया। ताकै सुननेका निमित्त पाइ गौतम नाम गणधर अगम्य अर्थनिकौं भी जानि धर्मानुरागकै वशतैं अंगप्रकी
र्णकनिकी रचना करत भया॥ बहुरि वर्द्धमान स्वामी तौ मुक्त भए। तहां पीछें इस पंचमकाल विषै तीन केवली
भए गौतम॥१॥ सुधर्माचार्य॥२॥ जंबूस्वामी॥३॥ तहां पीछे कालदोषतैं केवलज्ञानी होनेका तौ अभाव भया। ब
हुरि केतेक काल तांई द्वादशांगके पाठी श्रुतकेवली रहे पीछै तिनका भी अभाव भया। बहुरि केते
क काल तांई थोरे अंगनिके पाठी रहे। पीछै तिनिका भी अभाव भया॥ तब आचार्यादिकनि करि तिनिकै अ
नुसारि बनाये ग्रंथ वा अनुसारी ग्रंथनिकै अनुसारि बनाये॥ ग्रंथ तिन ही की प्रवर्त्ति रही। तिनि विषै काल भी x
दोषतैं दुष्टनि करि केतेक ग्रंथनिकी व्युच्छित्ति भई वा महान ग्रंथनिका अभ्यासादि न होनेतैं व्युच्छि

तिनही।। बहुरि केतेक महान ग्रंथ पाइए है तिनिकौं बुधि की मंदतातैं अभ्यास होना नाहीं।। जैसें
रहैं णमें गोमटस्वामी के निकटि मूलविद्रनगर विषैं धवल महाधवल जयधवल पाइए है परंतु दर्शनमात्र
ही है।। बहुरि केतेक ग्रंथ अपनी बुद्धि करि अभ्यास करने योग्य पाइए है।। तिनि विषैं भी केतेक ग्रंथनि
का ही अभ्यास बनै है।। ऐसैं इस निकृष्ट काल विषैं उत्कृष्ट जैनमत का घटना तौ भया परंतु इस परंप
रायकरि अब भी जैनशास्त्रनि विषैं सत्य अर्थ के प्रकाशनहारे पदनि का सद्भाव प्रवर्तै है।। बहुरि ह
म इस काल विषैं इहां अब मनुष्यपर्याय पाया सो इस विषैं हमारे पूर्व संस्कारतैं वा भला होनहारतैं जैनशा
स्त्रनि विषैं अभ्यास करने का उद्यम होत भया।। तातैं व्याकरण न्याय गणित आदि उपयोगी ग्रंथनि का
किंचित अभ्यास करि टीका सहित समयसार पंचास्तिकाय प्रवचनसार नियमसार गोमटसार लब्धि
सार त्रिलोकसार तत्वार्थसूत्र इत्यादि शास्त्र अर क्षपणासार पुरुषार्थसिद्ध्युपाय अष्टपाहुड
आत्मानुशासन आदि शास्त्र अर श्रावक मुनि का आचार के प्ररूपक अनेक शास्त्र अर सुष्टु कथा
सहित पुराणादि शास्त्र इत्यादि अनेक शास्त्र हैं तिनि विषैं हमारे बुद्धि अनुसारि अभ्यास वर्तै है।। ति
सकरि हमारे हू किंचित सत्यार्थ पदनि का ज्ञान भया है।। बहुरि इस निकृष्ट समय विषैं हम सारिखे मंद बु
द्धीनितैं भी हीनबुधि के धनी घने जन अवलोकिए है।। तिनिकौं तिनि पदनि का अर्थ ज्ञान होने कौं अ
र्थि धर्मानुरागके वशतैं देशभाषामय ग्रंथ करने की हमारे इच्छा भई।। ताकरि हम यहु ग्रंथ बनावै हैं।। सो
इस विषैं भी अर्थसहित तिनि ही पदनि का प्रकाशन हो है।। इतना तौ विशेष है।। जैसैं संस्कृत प्राकृत

शास्त्रनिविषैं प्राकृत संस्कृत पद लिखिए है। तैसें इहां अपभ्रंश लीएं वा यथार्थपनाकौं लीएं देशभाषारूप पद लिखिए है। परंतु अर्थविषैं व्यभिचार किछू नांही है। ऐसैं इस ग्रंथपर्यंत सत्यार्थ पदनिकी परंपराय प्रवर्त्तै है। इहां कोऊ पूछै कि परंपराय तौ हम ऐसैं जानी। परंतु इस परंपराविषैं सत्यार्थपदनिकी रचना होती आई। असत्यार्थ पद न मिले ऐसी प्रतीति हमकौं कैसैं होइ। ताका समाधान। असत्यार्थ पदनिकी रचना अति तीव्र कषाय भयें बिना बनै नांही। जातैं जिस असत्य रचनाकरि परंपरा अनेक जीवनिका महा बुरा होइ आपकौं ऐसी महाहिंसाका फलकरि नरक निगोदविषै गमन करनां होइ सो ऐसा महाविपरीत कार्य तौ क्रोध मान माया लोभ अत्यंत तीव्र भएं ही होइ। सो जैनधर्मविषैं तौ ऐसा कषायवान होता नांही। प्रथम मूल उपदेशदाता तौ तीर्थंकर केवली सो तौ सर्वथा मोहके नाशतैं सर्व कषायनिकरि रहित ही हैं। बहुरि ग्रंथकर्त्ता गणधर वा आचार्य ते मोहकौं उदयकरि सर्व बाह्य अभ्यंतर परिग्रहकौं त्यागि महामंद कषायी भए हैं। तिनिकै तिस मंदकषायकरि किंचित् शुभोपयोगहीकी प्रवृत्ति पाइए है और किछू प्रयोजन नांही। बहुरि श्रद्धानी गृहस्थनी कोई ग्रंथ बनावै है। [redacted]। सो भी तीव्र कषाई नांही है। जो वाकै तीव्र कषाय होइ तौ सर्व कषायनिका जिस तिस प्रकार नाश करणहारा जो जिनधर्म तिसविषैं रुचि कैसैं होइ। अथवा जो मोहके उदयतैं अन्य कार्यनिकरि कषाय पोषै है तौ पोषौ परंतु जिनआज्ञा भंगकरि अपनी कषाय पोषै तौ जैनीपना रहता नांही। ऐसैं जिनधर्मविषैं ऐसा तीव्रकषा

यि कोन होता नांही जो असत्य पदनिकी रचना करि परका अर आपका परजाय पर्याय विषै बुरा करै इहां प्रश्न
जो कोऊ जैनाभासी तीव्र कषाई होइ असत्यार्थ पदनिकौं जैन शास्त्रनि विषै मिलावै पीछै ताकी परंप
रा चली जाय तौ कहा करिए॥ ताका समाधान॥ जैसैं कोऊ साचे मोतीनिके गहनें विषै झूठे मोती मिला
वै परंतु झलक मिलै नांही॥ तातैं परीक्षा करि पारखी ठिगावता भी नांही॥ कोई भोला होइ सो ही मोती नाम
करि ठिगावै है॥ बहुरि ताकी परंपरा भी चालै नांही॥ शीघ्र ही कोऊ झूठे मोतीनिका निषेध करै है॥ तै
सैं कोऊ सत्यार्थ पदनिके समूहरूप जैन शास्त्रनि विषै असत्यार्थ पद मिलावै परंतु जिन शास्त्रके पद
नि विषै तौ कषाय मिटावनेका वा लौकिक कार्य घटावनेका प्रयोजन है॥ अर उस पापीनैं जे असत्यार्थ
पद मिलाए हैं॥ तिनि विषै कषाय पोषनेंका वा लौकिक कार्य साधनेका प्रयोजन है॥ ऐसैं प्रयोजन मिल
ता नांही॥ तातैं परीक्षा करि ज्ञानी ठिगावतौ भी नांही॥ कोई मूर्ख होइ सो ही जैन शास्त्र नाम करि ठि
गावै है॥ बहुरि ताकी परंपरा भी चालै नांही॥ शीघ्र ही कोऊ तिनि असत्यार्थ पदनिका निषेध करै
है॥ बहुरि ऐसे तीव्र कषायी जैनाभास इहां इस निकृष्ट काल विषै ही होय है॥ उत्कृष्ट क्षेत्र काल बहुत
है॥ तिस विषै तौ ऐसे होते नांही॥ तातैं जैन शास्त्रनि विषै असत्यार्थ पदनिकी परंपरा चालै नांही॥ ऐ
सा निश्चय करणां॥ बहुरि वह कहै है कि कषायनि करि तौ असत्यार्थ पद न मिलावै परंतु ग्रंथ करनेंवा
लोंकै क्षयोपशम ज्ञान है तातैं कोई अन्यथा अर्थ भासै ताकरि असत्यार्थ पद मिलावै ताकी तौ
परंपरा चलै॥ ताका समाधान॥ मूल ग्रंथकर्त्ता तौ गणधरदेव हैं॥ ते आप च्यारि ज्ञानके धारक है॥ अर

मोक्षमार्ग
१९

सारा ते केवलीका दिव्यध्वनि उपदेश सुनै है॥ ताका अतिशय करि सत्यार्थ ही भासै है॥ अर तातैं गणधरादिकैं अ
नुसारि ग्रंथ बनावै है सो उन ग्रंथनि विषै तौ असत्यार्थ पद कैसैं गूंथे जाय॥ अर अन्य आचार्यादिक ग्रंथ वा
बनावै है ते भी यथायोग्य सम्यग्ज्ञान के धारक है॥ बहुरि ते तिनि मूल ग्रंथनिका परंपरा करि ग्रंथ बना
वै है॥ बहुरि जिनि पदनिका आपकौं ज्ञान न होइ तिनिकी तौ आप रचना करै नांही॥ अर जिनि पदनिका
ज्ञान होइ तिनिकौं सम्यग्ज्ञान प्रमाणतैं ठीक करि गूंथै है॥ सो प्रथम तौ ऐसी सावधानी विषै असत्यार्थ प
द गूंथे जाय नहीं अर कदाचित आपकौं पूर्व ग्रंथनिके पदनिका अर्थ अन्यथा ही भासै॥ अर अपने प्रमा
णता मैं भी तैसें ही आय जाय तौ याका किछू सारा नांही॥ परंतु ऐसैं कोईकौं भासै सब हीकौं तौ न भासै॥
तातैं जिनकौं सत्यार्थ भास्या होइ ते ताका निषेध करि परंपरा चलने देते नांही॥ बहुरि इतनां जा
ननां॥ जिनिकौं अन्यथा जानें जीवका बुरा होइ॥ ऐसा देव गुरु धर्मादिक वा जीव अजीवादिक तत्वनिकौं तौ
श्रद्धानी जैनी अन्यथा जानैं ही नांही॥ इनिका तौ जैन शास्त्रनि विषै प्रसिद्ध कथन है॥ अर जिनकौं भ्रम
करि अन्यथा जानैं भी जिन आज्ञा माननेतैं जीवका बुरा न होइ॥ ऐसे कोई सूक्ष्म अर्थ है तिनि विषै
किसीकौं कोई अन्यथा प्रमाणता मैं ल्यावै तौ भी ताका विशेष दोष नांही॥ सो गोमटसार विषै कह्या
है॥ गाथा॥ सम्माइट्ठी जीवो उवइट्ठं पवयणं तु सद्दहदि॥ सद्दहदि असब्भावं अजाणमाणो गुरुणियोगा॥१॥ याका
अर्थ॥ सम्यग्दृष्टी जीव उपदेश्या सत्य वचनकौं श्रद्धान करै है॥ अर अजाणमाण गुरुके नियोगतैं असत्यकौं
भी श्रद्धान करै है ऐसा कह्या है॥ बहुरि हमारै भी विशेष ज्ञान नांही है॥ अर जिन आज्ञा भंग करनेका व

तम पद है॥ परंतु ऐसा ही विचार केवल तैं ग्रंथ करने का तो साहस करते हैं सो इस ग्रंथ विषैं जैसें पूर्व ग्रंथनि
विषैं वर्नन है तैसें ही वर्णन करैंगे अथवा कहीं पूर्व ~~ग्रंथनि विषैं केवल तैं ग्रंथ करने का साहस करते हैं सो इस~~
~~ग्रंथ विषैं जैसें पूर्व~~ ग्रंथनि विषैं सामान्य गूढ वर्नन था ताका विशेष प्रगट करि वर्णन इहां करैंगे सो ऐसें वर्न
न करने विषैं मैं तौ बहुत सावधानी राखौंगा॥ सावधानी करतैं भी कहीं सूक्ष्म अर्थ का अन्यथा वर्नन होय जा
इ तौ विशेष बुद्धिवान होंइ ते संवारि करि शुद्ध करियो॥ यहु मेरी प्रार्थना है॥ ऐसें शास्त्र करने का नि
श्चय कीया है॥ अब इहां कैसे शास्त्र बांचने सुनने योग्य है॥ अर तिन शास्त्रनि के वक्ता श्रोता कैसे चाहिए
सो वर्णन करिए है॥ जे शास्त्र मोक्षमार्ग का प्रकाश करैं तेई शास्त्र बांचने सुनने योग्य है॥ जातैं जीव सं
सार विषैं नाना दुःखनि करि पीडित है॥ सो शास्त्ररूपी दीपक करि मोक्षमार्ग कों पावैं तौ उस मार्ग वि
षैं आप गमन करि उन दुःखनितैं मुक्त होइ॥ सो मोक्षमार्ग एक वीतराग भाव है॥ तातैं जिन शास्त्रनि
विषैं काहू प्रकार राग द्वेष मोह भावनि का निषेध करि वीतराग भाव का प्रयोजन प्रगट कीया होइ तिनि
ही शास्त्रनि का बांचना सुनना उचित है॥ बहुरि जिन शास्त्रनि विषैं शृंगार भोग कुतूहलादिक पो
षि रागभाव का अर हिंसा युद्धादिक पोषि द्वेषभाव का अर अतत्वश्रद्धान पोषि मोह भाव का प्रयो
जन प्रगट कीया होइ ते शास्त्र नाहीं शस्त्र हैं॥ जातैं जिनि राग द्वेष मोह भावनि करि जीव अनादि
तैं दुःखी भया तिनि की वासना जीव कै बिना सिखाई ही थी बहुरि इनि शास्त्रनि करि तिनि ही का पोषण

णाकी घातले होनेकी कहा मिथ्यादृष्टी जीवका स्वभाव घातही कीया॥ तातें ऐसे शास्त्रनिका बाचनां सुननां उचित नां
ही है॥ इहां बांचनां सुननां जैसें कह्या तैसें ही जोडना सीषनां सिषावनां विचारनां लिषावनां आदि कार्य भी उपलक्षण करि
जान लैनें॥ ऐसें साक्षात वा परंपराय करि वीतराग भाव कौं पोषै ऐसे सास्त्र ही का अभ्यास करनें योग्य है॥ अब इनि
के वक्ता का स्वरूप कहिए है प्रथम तौ वक्ता कैसा चाहिए जो जैन श्रद्धान विषै दृढ होइ॥ जातें जो आप अश्रद्धानी हो
इ तौ औरकौं श्रद्धानी कैसें करै॥ श्रोता तौ आपही तैं हीन बुद्धि के धारक हैं तिनिकौं कोउ युक्ति करि श्रद्धानी कैसें करै
अर श्रद्धान ही सर्व धर्म का मूल है॥ बहुरि वक्ता कैसा चाहिए जाकै विद्याभ्यास करनें तैं शास्त्र बांचनें योग्य बु
द्धि प्रगट भई होइ॥ जातें ऐसी शक्ति विनां वक्तापनेका अधिकारी कैसें होइ॥ बहुरि वक्ता कैसा चाहिए जो स
म्यग्ज्ञान करि सर्व प्रकार के व्यवहार नि श्चयादि रूप व्याख्यान का अभिप्राय पहचानता होइ॥ जातें जो
ऐसा न होइ तौ कहीं अन्य प्रयोजन लि व्याख्यान होइ ताका अन्य प्रयोजन प्रगट करि विपरीत प्रवृत्ति
करावै॥ बहुरि वक्ता कैसा चाहिए जाकै जिनआज्ञा भंग करनें का भय बहुत होइ॥ जातें जो ऐसा न होइ तौ को
६ ई अभिप्राय विचारि सूत्र विरुद्ध उपदेश देइ जीवनिका बुरा करै॥ सोई कह्या है॥ बहुगुणविज्जाणिलओ असुत्त
भासी तहा वि मुत्तव्वो जह वरमणिजुत्तो वि हु विग्घयरो लोए॥१॥ याका अर्थ॥ जो बहुत क्षमादिक गुण अर
व्याकरणादि विद्या का स्थान है तथापि उत्सूत्र भाषी है तौ छोडनें योग्य है॥ जैसें उत्कृष्ट मणि संयुक्त है
तौ भी सर्प है सो लोक विषै विघ्नही का करणहारा है॥ बहुरि वक्ता कैसा चाहिए जाकै शास्त्र बांचि आजीव

विसहरो

काव्यादि लौकिक कार्य साधनेंकी इछा न होइ॥ जातैं जो आसावान होइ तौ यथार्थ उपदेश देइ सकै नांही॥ व
कै तौ किछू श्रोतानिका अभिप्रायकै अनुसारि व्याख्यान करि अपनें प्रयोजन साधनेंही का साधन रहै॥ अर श्रो
तानितैं वक्ताका पद ऊंचा है परि वक्ता लोभी होइ तौ वक्ता आप हीन होइ जाइ श्रोता ऊंचे होइ॥ बहुरि वक्ताकै
साचाहिए जाकै तीव्र क्रोध मान न होइ॥ जातैं तीव्र क्रोधी मांनी की निंदा होइ श्रोता तिस तैं डरते रहैं तब ति
सतैं अपना हित कैसैं करै॥ बहुरि वक्ताकै साचाहिए जो आपही नाना प्रश्न उठाय आपही उत्तर करै अथवा
अन्य जीव अनेक प्रकार करि बहुत बार प्रश्न करै॥ तौ मिष्ट वचन करि जैसैं उनका संदेह दूरि होइ तैसैं समा
धान करै जो आपकै उत्तर देनेंकी सामर्थ्य न होइ तौ याकै मैं याका ज्ञान नांही। जातैं जो ऐसा न होइ
तौ श्रोतानिका संदेह दूरि न होइ। तब कल्याण कैसैं होइ अर जिनमतकी प्रभावना होय सकै नांही॥ बहु
रि वक्ताकै साचाहिए जाकै अनीतिरूप लोकनिंद्य कार्यनिकी प्रवृत्ति न होइ जातैं लोकनिंद्य कार्यनि
करि हास्यका स्थान होइ जाइ तब ताका वचनकौं न प्रमान करै जिनधर्मकौं लजावै॥ बहुरि वक्ताकै
साचाहिए जाका कुल हीन न होइ अंगहीन न होइ स्वरभंग न होइ मिष्ट वचन होइ प्रभुत्व होइ तातैं लोक
विषै मान्य होय॥ जातैं ऐसा न होइ तौ ताकौं वक्तापनांकी महंतता शोभै नांही॥ ऐसा वक्ता होइ वक्तावि
षै ए गुण तौ [illegible] अवस्य चाहिए॥ सो ही आत्मानुशासन विषै कह्या है॥ ७॥ प्राज्ञः प्राप्तसमस्तशा
स्त्रहृदयः प्रव्यक्तलोकस्थितिः प्रास्ताशः प्रति स्पष्टमिष्टाक्षरः॥१॥ याका अर्थ॥ बुद्धिवान होइ

१ परः प्रशमवान्प्रागेवदृष्टोत्तरः प्रायः प्रश्नस
हः प्रभुः परमनोहारी परानिंदया। ब्रूयाधर्मकथां गणी गुणनि
धीः प्र

जानैं समस्त शास्त्रनिका रहस्य पाया होइ॥ लोकमर्यादा जाकै प्रगट भई होइ॥ ऐसा जाकै अति भई होई कांति
मान होइ॥ उपशमी होइ॥ प्रश्न कीएं पहलैं ही जानैं उत्तर देया होइ वाकै लघुपनै प्रश्नका सहनहारा होइ प्रग
होइ॥ परकी वा परिकरि आपकी निंदा रहितपनां करि परमनका हरनहारा होइ॥ गुणनिधान होइ स्पष्ट
मिष्ट जाकै वचन होइ ऐसा सभानायक धर्मकथा कहै॥ ॥बहुरि वक्ताका विशेष लक्षण ऐसा है जो
याकै व्याकरण न्यायादिक वा बडे बडे जैन शास्त्रनिका विशेषज्ञान होय तौ विशेषपनैं ताकौं वक्तापनौं शो
भै॥ बहुरि ऐसा भी होइ अध्यात्मरस करि यथार्थ आपने स्वरूपका अनुभवन जाकै न भया होइ सो जि
नधर्मका मरम जानैं नाहीं पद्धतिही करि वक्ता होइ है। अध्यात्मरसमय सांचा जिनधर्मका स्वरूप वाकरि कैसैं प्र
गट कीया जाय। तातैं आत्मज्ञानी होइ तौ सांचा वक्तापनौं होइ॥ जातैं प्रवचनसार विषैं ऐसा कह्या है। आ
गमज्ञान तत्त्वार्थश्रद्धान संयमभाव एतीनौं आत्मज्ञान करि शून्य कार्यकारी नांही॥ बहुरि दोहापा
हुडविषैं ऐसा कह्या है॥ ॥पंडियपंडियपंडिया कण छोडि वितुस कंडिया॥ अत्थगंत्थे तुट्ठोसि प
रमत्थ न जाणइ मूढोसि॥१॥ याका अर्थः॥ हे पांडे हे पांडे तैं कण छाडि तुस ही कूट्या। तू अर्थ अर शब्द
विषैं संतुष्ट है॥ परमार्थ न जानै है। तातैं तू मूर्ख ही है॥१॥ ऐसा कह्या है॥ अर चौदह विद्यानि विषैं भी प
हलैं अध्यात्मविद्या प्रधान कही है तातैं अध्यात्मरसका रसिया वक्ता है सो जिनधर्मका रहस्यका
वक्ता जानना। बहुरि जे बुद्धि ऋद्धिके धारक हैं वा अवधि मनःपर्ययके केवलज्ञानके धनी वक्ता हैं

बहुत न न्या है हो। अर न मिलै तौ २

तिस महान वक्ता जाननें। ऐसें वक्तानिके विशेष गुन जाननें॥ सो इन विशेष गुननिका धारी वक्ताका संयोग मि
लै तौ भ्रद्धानादिक गुणनिके धारी वक्तानिही के मुखतैं सास्त्र सुननां। या प्रकार गुनके धारी मुनि वा श्रावक
तिनके मुखतैं तौ सास्त्र सुननां योग्य है॥ अर पद्धति बुद्धि करि वा सास्त्र सुननेंके लोभ करि श्रद्धानादि गुण
रहित पापी पुरुषनिके मुखतैं सास्त्र सुननां उचित नांही॥ उक्तं च॥ तं जिणआणपरेण। धम्मो सोयव्व
सुगुरुपासम्मि॥ अह उचिओ सद्दहाउ तस्सुवएसस्स कहगाउ॥ २॥ याका अर्थः॥ जो जिनआज्ञा माननेविषै
सावधान है॥ ताकरि निर्ग्रंथ सुगुरु ही के निकटि धर्म सुननां योग्य है॥ अथवा तिस सुगुरु ही के उपदेशका
कहनेहारा उचित श्रद्धानी श्रावक तातैं धर्म सुननां योग्य है॥ ऐसा जो वक्ता धर्मबुधी करि उपदेशदाता
होइ सो ही अपनां अर अन्य जीवनिकौं स्वरूप करै है॥ भला होनहार है तातैं जिस जीवकै ऐसा विचार आवै
मैं कौन हौं। मेरा कहा स्वरूप है॥ यह चारित्र कैसें बनि रह्या है॥ ए मेरे भाव हो है तिनका कहा फल लागैगा॥
जीव दुखी होइ रह्या है सो दुख दूरि होनेंका कहा उपाय है॥ मुझकौ इतनी बातनिका ठीक करि किछू मेरा
हित होय सो करनां॥ ऐसा विचारतैं उद्यमवंत भया है॥ बहुरि इस कार्यकी सिद्धि सास्त्र सुननेतैं हो
ती जांनि अतिप्रीति करि सास्त्र सुनै है। किछू पूछनां होइ सो पूछै है। बहुरि गुरुनि कह्या अर्थकौं अं
तरंग विषै बारंबार विचारै है। बहुरि अपने विचारतैं सत्य अर्थनिका निश्चय करि जो कर्त्त
व्य होइ ताका उद्यमी होइ है। ऐसा तौ नवीन श्रोताका स्वरूप जाननां। बहुरि जो जैन धर्मके गाढ श्रद्धा
नी हैं अर नाना सास्त्र सुननेंकरि जिनकी बुद्धि निर्मल भई है। अर व्यवहार निश्चयादिकका स्वरूप नीकैं जाननें करि जिस अर्थकौं सुनैं है ताकौं
जैसाका तैसा निश्चय जानि अवधारै है। अर जो कछू जाय बुद्धि करि उपदेश दे है। सो अपनां अर अन्य जीवनिका बुरा करै है। ऐसें जाननां। ऐसैं व
स्वरूप कह्या। अब श्रोताका

सुनैं हैं ताकौं यथावत निश्चै जानि ×

नीक अर नाना शास्त्र सुननें करि जिनकी बुद्धि निर्मल भई है। बहुरि व्यवहार निश्चयादिक का स्वरूप
नीकैं जानि जिस अर्थ कौं [redacted] अवधारैं हैं। बहुरि जब प्रश्न उपजै है तब अति विनयवान होय
प्रश्न करै है। अथवा परस्पर अनेक प्रश्नोत्तर करि वस्तु का निर्णय करै है। शास्त्राभ्यास विषै अतिआ
सक्त है। धर्मबुद्धि करि निंद्य कार्यनि के त्यागी भए हैं। ऐसे तिन शास्त्रनि के श्रोता चाहिए। बहुरि श्रो
तानि के विशेष लक्षण ऐसे हैं जो याकै किछू व्याकरण न्यायादिक का वा बडे जैन शास्त्रनि का ज्ञा
न होइ तौ श्रोतापनौं विशेष सोहै। बहुरि ऐसा भी श्रोता होइ अर वाकै आत्मज्ञान न भया होइ तौ
उपदेश का मरम समझि सकै नांही तातैं आत्मज्ञान करि जो स्वरूप का आस्वादी भया है सो। जिनध
र्म के रहस्य का श्रोता है। बहुरि अतिशयवंत बुद्धि करि वा अवधि मनःपर्यय करि संयुक्त होइ तौ व
ह महान श्रोता जाननां। ऐसे श्रोतानि के विशेष गुण हैं। ऐसे जिन शास्त्रनि के श्रोता चाहिए। बहुरि शास्त्र
सुननें तैं हमारा भला होगा ऐसी बुद्धि करि जो शास्त्र सुनै है परंतु ज्ञान की मंदता करि विशेष समझै नांही ति
नकै पुन्यबंध होय है विशेष कार्य सिद्धि होता नांही। बहुरि जे कुलप्रवृत्ति करि वा पद्धति बुधि करि वा सहज
जोग बननें करि शास्त्र सुनैं हैं वा सुनैं तौ है परंतु किछू अवधारण करते नांही तिनकै परिणाम अनुसार क
दाचित पुन्यबंध होय है कदाचित पापबंध होय है। बहुरि जे मद मत्सर भाव करि शास्त्र सुनै है वा तर्क करनें ही का
जिनका अभिप्राय है। बहुरि जे महंतता के अर्थि वा किसी लोभादिक का प्रयोजन के अर्थि शास्त्र सुनै है। बहुरि जे

सास्त्र तौ घने हैं परंतु सुहावता नांही। ऐसे श्रोतानि कै बहु पाप बंध होहै। ऐसा श्रोतनि का स्वरूप जाननां। ऐसैं ही
यथासंभव सीखनां सिखावनां आदि जिनितैं पाईए तिनिका भी स्वरूप जाननां। या प्रकार सास्त्र का अर वक्ता श्रोता का
स्वरूप कह्या। सो उचित सास्त्र कौं उचित वक्ता होइ बांचनां। उचित श्रोता होइ सुननां योग्य है। अब यहु मोक्षमार्गप्र
काशक नाम सास्त्र रचिए है ताका सार्थकपनां दिखाईए है। इस संसार अटवी विषै समस्त जीव हैं ते कर्मनिमित्त तैं नि
पजे जे नाना प्रकार दुःख तिनि करि पीडित होइ रहे हैं। बहुरि तहां मिथ्या अंधकार व्याप्त होइ रह्या है ताकरि तहां तैं मु
क्त होने का मार्ग पावते नांही। तडफि तडफि तहां ही दुःख कौं सहै हैं। बहुरि ऐसे जीवनि का भला होने कौं कारण तीर्थं
कर केवली भगवान सो ई भया सूर्य ताका उदय भया ताकी दिव्यधुनि रूपी किरणनि करि तहां तैं मुक्त होने का मार्ग
प्रकाशित कीया। जैसें सूर्य कै ऐसी इच्छा नांही जो मैं मार्ग प्रकाशौं परंतु सहज ही वाकी किरण फैले है ताकरि मा
र्ग का प्रकाश होहै। जैसें केवली वीतराग है तातैं ताकै ऐसी इच्छा नांही जो हम मोक्षमार्ग प्रगट करैं। परंतु सहज ही
तैसें ही अघाति कर्मनि का उदय करि तिनिका शरीर रूप पुद्गल दिव्यधुनि रूप परिणमै है। ताकरि मोक्षमा
र्ग का प्रकाश होहै। बहुरि गणधर देवनि कै यहु विचार आया जहां केवली सूर्य का अस्तपनां होइ तहां मोक्षमार्ग [illegible] जीव कू
कौं कैसें पावै। अर मोक्षमार्ग पाए बिनां जीव दुःख सहैंगे। ऐसी करुणाबुद्धि करि अंगप्रकीर्णकादि रूप ग्रंथ तेई
भए महान दीपक तिनका उद्योत कीया। बहुरि जैसें दीपक करि दीपक जोवने तैं दीपकनि की परंपरा वर्तै है
[illegible] तैसें किसी आचार्यादिकनि करि तिनि ग्रंथनि तैं अन्य ग्रंथ बनाए। बहुरि तिनि हू तैं किनहू अन्य

मोक्षमा ग्रंथ बनाए। ऐसे ग्रंथ होने तैं ग्रंथनिकी परंपरा वर्तै है। मैं भी पूर्व ग्रंथनितें इस ग्रंथकौं बनावौ हौं।। बहुरि जैसैं सूर्य
१२ वा सर्व दीपक हैं ते मार्गकौं एकरूप ही प्रकाशै हैं।। तैसें दिव्यध्वनि वा सर्व ग्रंथ हैं ते मोक्षमार्गकौं एकरूप ही प्रकाशै
हैं।। सो यहु भी ग्रंथ मोक्षमार्गकौं प्रकाशै है। बहुरि जैसैं प्रकाशैं भी नेत्ररहित वा नेत्रविकारसहित पुरुष हैं तिनिकौं मा
र्ग सूझता नांही।। तौ दीपकके तौ मार्गप्रकाशकपनेका अभाव भया नांही।। तैसैं प्रगट कीए भी जे मनुष्य ज्ञानरहित हैं वा मिथ्या
त्वादि विकारसहित हैं तिनकौं मोक्षमार्ग सूझता नांही।। तौ ग्रंथकै तौ मोक्षमार्गप्रकाशकपनेका अभाव भया नांही।।
ऐसैं इस ग्रंथका मोक्षमार्गप्रकाशक ऐसा नाम सार्थक जानना।। इहां प्रश्न जो मोक्षमार्गके प्रकाशक ग्रंथ पूर्व तौ थे ही
तुम नवीन ग्रंथ काहेकौं बनावौ हौ।। ताका समाधान।। जैसैं बड़े दीपकनिका तौ उद्योत बहुत तैलादिकका साधनतैं र
है है।। जिनकै बहुत तैलादिककी शक्ति न होइ तिनिकौं स्तोक दीपक जोइ दीजिए तौ वे तिसका साधन राखि ताके उद्योततैं अप
ना कार्य करैं। तैसें बड़े ग्रंथनिका तौ प्रकाश बहुत ज्ञानादिकका साधनतैं रहै है। जिनकै बहुत ज्ञानादिककी शक्ति नांही तिनि
कौं स्तोक ग्रंथ बनाय दीजिए तौ वे वाका साधन राखि ताके प्रकाशतैं अपना कार्य करै। तातैं यहु स्तोक सुगम ग्रंथ बनाइए
है।। बहुरि इहां जो मैं यहु ग्रंथ बनावौ हौं सो कषायनितैं अपना मान बधावनेकौं वा [illegible] लोभ साधनेकौं वा यश होनेकौं वा अप
नी पद्धति राखनेकौं नांही बनावौ हौं। जिनिकै व्याकरण न्यायादिकका वा नय प्रमाणादिकका वा विशेष अर्थनिका ज्ञा
कैवडे न नांही तातैं तिनै ग्रंथनिका अभ्यास तौ बनि सकै नांही। बहुरि कोई छोटे ग्रंथनिका अभ्यास बनैं तौ भी यथार्थ भासै अर्थः
नांही।। ऐसैं इस समय विषै मंदज्ञानवान जीव बहुत देखे तिनिका भला होनेकै अर्थि धर्मबुद्धितैं यहु भाषामय ग्रंथ बना

अहसुहडा भवभयविहूणा॥ स्वाधीन उपदेशदाता गुरुका जोग जुरैं भी जे जीव धर्मवचननिकौं नाहीं सुनै हैं ते धीठ है। अर उन दुष्टचित्त है

कै है। बहुरि जैसैं बडे दरिद्रीकौं अवलोकनमात्र चिंतामणिकी प्राप्ति होइ अर वह न अवलोकै। बहुरि जैसैं कोढीकौं
अमृतपान करावै अर वह न करै तैसैं संसारपीडित जीवकौं सुगम मोक्षमार्गके उपदेशका निमित्त बनै अर वह अभ्या
स न करै तौ वाकै अभाग्यकी महिमा हमतैं तौ होय सकै नाहीं वाका होनहारहीकौं विचारैं अपनैं समता आवै। उक्तं च। सा
हीणे गुरुजोगे जे ण सुणंतीह धम्मवयणाइ। ते धिट्ठदुट्ठचित्ता अथवा जिस संसारभयतैं तीर्थंकरादिक डरे तिस संसा
रभयकरि रहित हैं ते बडे सुभट हैं। बहुरि प्रवचनसार विषैं भी मोक्षमार्गका अधिकार कीया तहां प्रथम आगमज्ञान ही
उपादेय कह्या सो इस जीवका तौ मुख्य कर्तव्य आगमज्ञान है। याकौं होतैं तत्त्वनिका श्रद्धान हो है तत्त्वनिका श्रद्धान

प्रथम

भएं संयमभाव हो है अर तिस आगमतैं आत्मज्ञानकी भी प्राप्ति हो है तब सहज ही मोक्षकी प्राप्ति हो है। बहुरि धर्मके अ
नेक अंग हैं तिनिविषैं एक ध्यान बिना यातैं ऊंचा और धर्मका अंग नाहीं है। तातैं जिस तिस प्रकार आगम अभ्यास करना
जोग्य है। बहुरि इस ग्रंथका तौ बांचना सुनना विचारना घना सुगम है। कोऊ व्याकरणादिकका भी साधन न चाहि
ए। तातैं अवश्य याका अभ्यासविषैं प्रवर्तौ तुम्हारा कल्याण होयगा॥ इति मोक्षमार्गप्रकाशक नाम शास्त्रविषैं पीठबंधप्र
रूपक प्रथम अधिकार समाप्त भया॥ ॥१॥ दोहा॥ मिथ्याभाव अभावतैं। जो प्रगटै निजभाव। सो जयवंत रहौ सदा यह
ही मोक्ष उपाव॥ अथ इस शास्त्रविषैं मोक्षमार्गका प्रकाश करिए है। तहां बंधनतैं छूटनेका नाम मोक्ष है। सो इ
स आत्माकै कर्मका बंधन है बहुरि तिस बंधनकरि आत्मा दुखी होइ रह्या है। बहुरि याकै दुख दूरि करनेहीका निरंतर
उपाय भी रहै है। परंतु सांचा उपाय पाए बिना दुख दूरि होता नांही॥ अर दुख सह्या भी जाता नांही तातैं यहु जीव व्याकुल होइ रह्या है॥

मो

ऐसें जीवकौं समस्त दुःखका मूलकारन कर्मबंधन है ताका अभावरूप मोक्ष है सोही परम हित है। बहुरि याका सांचा उपा
य करनां सोही कर्तव्य है॥ तातैं इसहीका याकौं उपदेश दीजिए है। तहां जैसैं वैद्य है सो रोगसहित मनुष्यकौं प्रथम तौ रोग
का निदान बतावै ऐसैं यहु रोग भया है॥ बहुरि उस रोगके निमित्ततैं याकै जो जो अवस्था होती होइ सो बतावै ताकरि
वाकै निश्चय होइ जो मेरै ऐसैं ही रोग है। बहुरि तिस रोगके दूरि करनेका उपाय अनेक प्रकार बतावै अर तिस उ
पायकी ताकौं प्रतीति अनावै इतना तौ वैद्यका बतावनां है बहुरि जो वह रोगी ताका साधन करै तौ रोगतैं मुक्त होइ अपनां
स्वभावरूप प्रवर्तै सो यह रोगीका कर्तव्य है तैसैं ही इहां कर्मबंधनयुक्त जीवकौं प्रथम तौ कर्मबंधनका निदान बता
इए है॥ ऐसैं यहु कर्मबंधन भया है बहुरि उस कर्मबंधके निमित्ततैं याकै जो जो अवस्था होती है सो सो बताइए है ताकरि जीवकै निश्चय
होइ जो मेरै ऐसैं ही कर्मबंधन है। बहुरि तिस कर्मबंधनके दूरि होनेकौं उपाय अनेक प्रकार बताइए है। अर तिस उपायकी
याकौं प्रतीति अनाइए है इतना तौ शास्त्रका उपदेश है॥ बहुरि यहु जीव ताका साधन करै तौ कर्मबंधनतैं मुक्त होइ अपनां स्वभा भाव
प्रवर्तै सो यहु जीवका कर्तव्य है। सो इहां प्रथम ही कर्मबंधनका निदान बताइए है। बहुरि कर्मबंधन होतैं नाना औपाधिक भावनिवि
षै परिभ्रमणपनौं पाइए है एकरूप रहनौं न हो है तातैं कर्मबंधनसहित अवस्थाका नाम संसार अवस्था है। सो इस संसार अवस्था
विषै अनंतानंत जीवद्रव्य हैं ते अनादिहीतैं कर्मबंधनसहित हैं। ऐसा नाहीं है। जो पहलैं जीव न्यारा था पीछैं इनका संयोग भया अर कर्म न्यारा था।
तौ कैसैं है जैसैं मेरुगिरि आदि अकृत्रिम स्कंधनिविषै अनंते पुद्गलपरमाणु अनादितैं एकबंधनरूप है। पीछैं तिनिमैं केई परमा
णु भिन्न हो हैं केई नए मिलै हैं ऐसैं मिलनां विछुरनां हूवा करै है॥ तैसैं इस संसारविषै एक जीवद्रव्य अर अनंते कर्मरूप पुद्ग

नपरमाणु तिनिका अनादि तैं एक बंधनरूप है। पीछें तिनमैं केई कर्मपरमाणु भिन्न हो हैं केई नये मिलै हैं। ऐसैं मिलना बिछुरना हु
वा करै है। बहुरि इहां प्रश्न जो पुद्गलपरमाणु तौ रागादिक के निमित्त तैं कर्मरूप हो है अनादि कर्मरूप कैसैं हैं। ताका समाधान नि
मित्त तौ नवीन कार्य होइ तिस विषै ही संभवै है। अनादि अवस्था विषै निमित्त का किछू प्रयोजन नाहीं। जैसैं नवीन पुद्गलपरमाणूनि का बं
धान तौ स्निग्ध रूक्ष गुण के अंश निकरि हो है। अर मेरुगिरि आदि स्कंधनि विषै अनादि पुद्गल
परमाणूनि का बंधान है तहां निमित्त का कहा प्रयोजन है। तैसैं नवीन परमाणूनि का कर्मरूप होना तौ रागादिकनि करि ही है।
अर अनादि पुद्गलपरमाणूनि की कर्मरूप ही अवस्था है। तहां निमित्त का कहा प्रयोजन है। बहुरि जो अनादि विषै भी निमित्त मा
निए तौ अनादिपना रहै नाहीं। तातैं कर्म का बंध अनादि मानना। सो तत्त्वप्रदीपिका प्रवचनसार शास्त्र की व्याख्या विषै जो सामान्यज्ञे
याधिकार है तहां कह्या है। रागादिक का कारण तौ द्रव्यकर्म है अर द्रव्यकर्म का कारण रागादिक है। तब उहां तर्क करी जो ऐसैं इ
तरेतराश्रय दोष लागै। वह वाकै आश्रय वह वाकै आश्रय कहीं थंभाव नाहीं। तब उत्तर ऐसा दीया है। नैवं अनादिप्रसिद्धद्रव्यकर्मसंबंधस्य
तत्र हेतुत्वेनोपादानात्। याका अर्थ। ऐसैं इतरेतराश्रय दोष नाहीं है। जातैं अनादि का स्वयंसिद्ध द्रव्यकर्म का संबंध है ताका त
हां कारणपनाकरि ग्रहण कीया है। ऐसैं आगम मैं कह्या है बहुरि युक्ति तैं भी ऐसैं ही संभवै है। जो कर्म निमित्त बिना पह
लैं जीव कै रागादिक कहिए तौ रागादिक जीव का एक स्वभाव होइ जाइ। जातैं पर निमित्त बिना होइ ताही का नाम स्वभाव है। तातैं क
र्म का संबंध अनादि ही मानना। बहुरि इहां प्रश्न जो न्यारे न्यारे द्रव्य अर अनादि तैं तिनिका संबंध ऐसैं कैसैं संभवै। ताका समाधान
जैसैं मूल ही तैं जल दूध का वा सोना किट्टिक का वा तुष कण का वा तेल तिल का संबंध देखिए है। नवीन इनिका मिलाप भया नाहीं।

६ वह वाके आश्रय

तातैं अनादिहीस्यों जीव कर्मका संबंध जानना। नवीन इनका मिलाप भया नांही।

नै बहुरि तुम कहौगे कैसैं मनवैं अनादितैं जैसैं केई जुदे द्रव्य हैं तैसें केई मिले द्रव्य हैं इस संभवनें विषै किछु विरोध तौ भासता
नांही। बहुरि प्रश्न जो संबंध वा संयोग कहना तौ तब संभवै जब पहलैं जुदे होइ पीछैं मिलैं इहां अनादि मिले जीव कर्म-
निका संबंध कैसैं कह्या है। ताका समाधान अनादितैं तौ मिले थे परंतु पीछैं जुदे भए तब जान्यां जुदे थे तौ जुदे भए
तातैं पहलैं भी भिन्न ही थे ऐसैं अनुमान करिवाकै वा केवलज्ञानकरि प्रत्यक्ष भिन्न भासै है तिस करि तिनका बंधान होतैं भी भिन्नपनां
पाइए है ताहि रीति भिन्नता की अपेक्षा तिनका संबंध वा संयोग कह्या है। जातैं नए मिलौ वा मिले ही हो जु भिन्न द्रव्यनिका मिलाप
विषै ऐसैं ही कहना संभवै है। ऐसैं इनि जीव कर्मनिका अनादि संबंध है तहां जीव द्रव्य तौ देखनें जाननें रूप चैतना गुणका धारक है।
अर इंद्रियगम्य होनें योग्य अमूर्तीक है। संकोच विस्तार शक्तिकौं लीए असंख्यातप्रदेशी एक द्रव्य है। बहुरि कर्म है सो चेतनागुण र-
हित जड है अर मूर्तीक है। अनंत पुद्गलपरमाणूनिका पिंड है तातैं एकद्रव्य नांही है। ऐसैं जीव अर कर्म हैं सो इनका अनादि संबंध है तौ
भी जीवका कोई प्रदेश कर्मरूप न होइ है। अर कर्मका कोई परमाणु जीवरूप न होइ है। अपनें अपनें लक्षणकौं धरैं जुदे जुदे ही रहै हैं।
जैसैं सोना रूपाका एक स्कंध होइ तथापि पीततादि गुणनिकौं धरैं सोना जुदा रहै है। स्वेततादि गुणनिकौं धरैं रूपा जुदा रहै है तैसैं जुदे
जाननें। इहां प्रश्न जो मूर्तीक मूर्तीकका तौ बंधान होना बनै। अमूर्तीक मूर्तीकका बंधान कैसैं बनै। ताका समाधान। जैसैं व्यक्त इंद्रियगम्य
नांही ऐसे सूक्ष्मपुद्गल अर व्यक्त इंद्रियगम्य है ऐसे स्थूल पुद्गल तिनिका बंधान होना मांनिए है तैसैं इंद्रियगम्य होनें योग्य नांही
ऐसा अमूर्तीक आत्मा अर इंद्रियगम्य होनें योग मूर्तीक कर्म इनका भी बंधान होना माननां। बहुरि इस बंधान विषै कोऊ किसीकौं
नौ करै है नांही। यावत् बंधान रहै तावत् साथि रहैं बिछुरैं नांही। अर कारणकार्यपनां तिनिकै बन्या रहै। इतना ही इहां बंधान जाननां।

तामूर्तीक अमूर्तीक कै ऐसे बंधान होने विषै किछू विरोध है नांही। या प्रकार जैसैं एक जीव कै अनादि कर्म संबंध कह्या तैसैं ही जुदा जुदा अनंत जीवनि कै जाननां। बहुरि सो कर्म ज्ञानावरणादि भेदनि करि आठ प्रकार है। तहां च्यारि घातिया कर्मनि के निमित्त तैं तौ जीव के स्वभाव का घात हो है॥ तहां ज्ञानावरण दर्शनावरण करि तौ जीव के स्वभाव दर्शन ज्ञान तिन की व्यक्तता नांही हो है तिनि कर्मनि का क्षयोपशम कै अनुसारि किंचित ज्ञान दर्शन की व्यक्तता रहै है। बहुरि मोहनीय करि जीव कै स्वभाव नांही ऐसे मिथ्याश्रद्धान वा क्रोध मान माया लोभादिक कषाय तिनि की व्यक्तता हो है। बहुरि अंतराय करि जीव का स्वभाव दीक्षा लेने की समर्थता रूप वीर्य ताकी व्यक्तता न हो है। ताका क्षयोपशम कै अनुसार किंचित शक्ति हो है। ऐसे घातिकर्मनि के निमित्त तैं जीव के स्वभाव का घात अनादि ही तैं भया है। ऐसैं नांही जो पहलै तौ स्वभावरूप शुद्ध आत्मा था पीछैं कर्मनिमित्त तैं स्वभाव घात होने करि अशुद्ध भया। इहां तर्क— जो घात नाम तौ अभाव का है। सो जाका पहलैं सद्भाव होइ ताका अभाव कहनां बनै। इहां स्वभाव का तौ सद्भाव है ही नांही घात किस का कीया। ताका समाधान— जीव विषै अनादि ही तैं ऐसी शक्ति पाईए है जो कर्म का निमित्त न होइ तौ केवलज्ञानादि अपने स्वभावरूप प्रवर्तै परंतु अनादि ही तैं कर्म का संबंध पाइए है। तातैं तिस शक्ति का व्यक्तपनां न भया। सो शक्ति अपेक्षा स्वभाव है ताका व्यक्त न होने देने की अपेक्षा घात कीया कहिए है। बहुरि च्यारि अघातिया कर्म हैं तिनि के निमित्त तैं इस आत्मा के बाह्य सामग्री का संबंध बनै है। तहां वेदनीय करि तौ शरीर विषै वा शरीर तैं बाह्य नाना प्रकार सुख दुख कौं कारण परद्रव्यनि का संयोग जुरै है॥ अर आयु करि अपनी स्थिति पर्यंत पाया शरीर का [illegible] संबंध नांही छूटि सकै है। अर नाम करि गति जाति शरीरादिक निपजै है। अर गोत्र करि ऊंचा नीचा कुल की प्राप्ति हो है। ऐसे अघाति कर्मनि करि बाह्य सामग्री भेली हो है। ताकरि मोह उदय का सहकार होतैं जीव सुखी दुखी हो है। अर शरीरादिकनि के संबंध तैं जीव के अमूर्तत्वादि स्वभाव अप

नेंस्वार्थकोंनांहीकरैहै।जैसेंकोऊशरीरकोंपकरैतौआत्मानींपकस्यानजाय।बहुरिजबतकर्म्मकाउदयरहैतावतबाह्यिसामग्रीतैसैंही
बनीरहै।अन्यथानहोयसकै।ऐसाइनिअघातिकर्म्मनिकानिमित्तजानना।इहांकोऊप्रश्नकरैकिकर्म्मतौजडहै।किछूबलवाननांही
तिनकरिजीवकेस्वभावकाघातहोनाबाह्यसामग्रीकामिलनाकैसैंसंभवैहै।ताकासमाधान।जोकर्म्मआपकर्ताहोइउद्यमकरिजीवके
स्वभावकोंघातैबाह्यसामग्रीकोंमिलावैतौकर्म्मकैचेतनपनौंभीचाहिएअरबलवानपनौंभीचाहिएसोतौहैनांही।सहजहीनिमित्त
निमित्तीकसंबंधहै।जबउनकर्म्मनिकाउदयकालहोइतिसकालविषैआपहीआत्मास्वभावरूपनपरिणमैविभावरूपपरिणमै
[redacted]वाअन्यद्रव्यहैतेतैसैंहीसंबंधरूपहोइपरिणमैं [illegible] जैसेंकाहूपुरुषकेसि
रपरिमोहनधूलिपरीहैतिसकरिसोपुरुषबावलाभयातहांउसमोहनधूलिकैज्ञाननभीनथाअरबलवानपनौंभीनथाअरबावलापनौंति
समोहनधूलिहीकरिभयाहैविर्षैहैमोहनधूलिकातौनिमित्तहैअरपुरुषआपहीबावलाहूवापरिणमैहै।ऐसाहीनिमित्तनैमित्तकबनिरह्याहै।
बहुरिजैसैंसूर्यउदयकाकालविषैचकवाचकवीनिकासंयोगहोइतहांरात्रिविषैकिसीनैंद्वेषबुद्धितैंजोरावरीकरिजुदेकीएनांहीदिवस
विषैकाहूनैंकरुणाबुद्धितैंल्यायकरिमिलाएनांही।सूर्यउदयकानिमित्तपायआपहीमिलेहै।ऐसाहीनिमित्तनैमित्तिकबन्यिरह्याहै।तिसैंहि
कर्म्मकाभीनिमित्तनैमित्तिकभावजानना।ऐसेंकर्म्मकाउदयकरिअवस्थाहै।तहांनवीनबंधकैसैंहोइहैसोकहिएहै।जैसेंसूर्यकाप्रका
शहैसोमेघपटलतैंजितनाव्यक्तनांही।तितनेंकातौतिसकालविषैअभावहै।बहुरितिसमेघपटलकामंदपनांतैंजेताप्रगटहैसो।तिससूर्यकेस्वभा
वकाअंशहै।मेघपटलजनितनांहीहै।तैसैंजीवकाज्ञानदर्शनवीर्यस्वभावहैसोज्ञानावरणदर्शनावरणअंतरायकेनिमित्ततैंजितनेंव्यक्तनां
ही।तितनेंकातौतिसकालविषैअभावहै।बहुरितिनिकर्म्मनिकाक्षयोपशमतैंजेताज्ञानदर्शनवीर्यप्रगटहैसोतिसजीवकेस्वभावका

[illegible]ही है। कर्मजनित उपाधिक भाव नांही है। सो ऐसा स्वभाव के अर्थि ताका अनादितैं लगाय कबहू अभाव न होइ है। याही करि जीव का जीवत्वपना निश्चय कीजिए है। जो यहु दर्शन ज्ञान रूप जानन हारा शक्ति कौं धरै वस्तु है सो ही आत्मा है। बहुरि इस स्वभाव करि नवीन कर्म का बंध नांही है। जातैं निज स्वभाव ही बंध का कारन होइ तौ बंध का छूटना कैसे होइ। बहुरि तिनि कर्मनि के उदयतैं जेता ज्ञान दर्शन वीर्य अभाव रूप है ताकरि भी बंध नांही है। जातैं आप ही का अभाव होतैं अन्य कौं कारण कैसे होइ। तातैं ज्ञानावरण दर्शनावरण अंतराय के निमित्ततैं निपजे भाव नवीन कर्मबंध के कारन नांही। बहुरि मोहनी कर्म करि जीव के अयथार्थ श्रद्धान रूप तौ मिथ्यात्व भाव हो है। बहुरि क्रोध मान माया लोभादिक कषाय हो है। ते यद्यपि जीव के अस्तित्वमय है जीव तैं जुदे नांही। जीव ही इनिका कर्ता है। जीव के परिणमन रूप ही ए कार्य है। तथापि इनिका होना मोह कर्म के निमित्त तैं ही है। कर्म निमित्त दूरि भए इनिका अभाव ही है। तातैं ए जीव के निज स्वभाव नांही। उपाधिक भाव है। बहुरि इनि भावनि करि नवीन बंध हो है। तातैं मोह के उदयतैं निपजे भाव बंध के कारन है। बहुरि अघाति कर्मनि के उदयतैं बाह्य सामग्री मिलै है। तिनि विषै शरीरादिक तौ जीव के प्रदेशनि सौं एक क्षेत्रावगाही होइ एक बंधान रूप हो है। अर धन कुटुंबादिक आत्मा तैं भिन्न रूप है। सो ए सर्व बंध के कारन नांही है। जातैं परद्रव्य बंध का कारन न होइ। इनि विषै आत्मा के ममत्वादि रूप मिथ्यात्वादि भाव हो है सो ई बंध का कारन जानना। बहुरि इतना जानना जो नामकर्म के उदयतैं शरीर वा वचन वा मन निपजे है। तिनिकी चेष्टा के निमित्त तैं आत्मा के प्रदेशनि का चंचलपना हो है। ताकरि आत्मा के पुद्गल वर्गणा सौं एक बंधान होने की शक्ति हो है ताका नाम योग है। ताके निमित्त तैं समय समय प्रति कर्म रूप होने योग्य अनंत परमाणुनि का ग्रहण हो है। तहां अल्प योग होइ तौ थोरे परमाणुनि का ग्रहण होइ। बहुत योग होइ तौ घने परमाणुनि का ग्रहण होइ। बहुरि एक समय विषै जे पुद्गल परमाणु ग्रहे तिनि विषै ज्ञानावरणादि मूल प्रकृति वा तिनिकी उत्तर प्रकृतिनि का जैसे सिद्धांत विषै कह्या है तैसे बटवारा हो है। तिस बटवारा माफि

२प्रकृतिका बंध हूवा विना रहता नांही। इतना विशेष है मोहनीयकी हास्य सोक युगल विषै रति अरति युगल विषै तीनौं वेदन विषै
एकै काल एक एक ही प्रकृतिनका बंध होय है

रूप परमाणु तिनि प्रकृतिनिरूप आप ही परिणमै हैं विशेष इतना योग है सो दोय प्रकार है। शुभयोग।।१।। अशुभयोग।।२।। तहां धर्मके अंगनिवि
षै मनवचनकायकी प्रवर्तना भए तौ शुभयोग होय है अर अधर्मके अंगनिविषै तिनिकी प्रवृत्ति भए अशुभयोग हो है। सो शुभयोग होउ वा अशु
भयोग होउ सम्यक्त पाए विना घातियाकर्मनिकी तौ सर्वप्रकृतिनिका निरंतर बंध हूवा ही करै है। कोई समय कोई [illegible] नहीं
अघातियानिकी प्रकृतिनिविषै शुभयोग होतैं सातावेदनी आदि पुण्यप्रकृतिनिका बंध होय है। अशुभयोग होतैं असातावेदनीय आदि पाप प्र
कृतिनिका बंध हो है। मिश्रयोग होतैं केई पुण्यप्रकृतिनिका केई पापप्रकृतिनिका बंध हो है। ऐसा योगके निमित्ततैं कर्मका आगमन हो है तातैं यो
ग है सो आस्रव है। बहुरि याकरि ग्रहे कर्मपरमाणुनिका नाम प्रदेश है तिनिका बंध भया अर तिनिविषै मूल उत्तर प्रकृतिनिका विभाग भया तातैं यो
गनिकरि प्रदेशबंध वा प्रकृतिबंधका होना जानना। बहुरि मोहके उदयतैं मिथ्यात्व क्रोधादिक भाव हो है तिनि सबनिका नाम सामान्यपनैं कषाय
है। ताकरि तिनि कर्मप्रकृतिनिकी स्थिति बंधै है सो जितनी स्थिति बंधै तिसविषै आबाधाकाल छोडि तहां पीछैं यावत् बंधी स्थिति पूर्ण होइ तावत् स
मय समय तिस प्रकृतिका उदय आया ही करै। सो देव मनुष्य तिर्यंच आयु विना अन्य सर्व घातिया अघातिया प्रकृतिनिका अल्प कषाय होतैं थोरा
स्थितिबंध हो है। बहुत कषाय होतैं घनां स्थितिबंध हो है। तिन तीन आयुनिका अल्प कषायतैं बहुत अर बहुत कषायतैं अल्प स्थितिबंध जाननां।।
बहुरि तिस कषाय ही करि तिनि कर्मप्रकृतिनिविषै अनुभाग शक्तिका विशेष हो है। सो जैसा अनुभाग बंधै तैसा ही उदयकालविषै तिन प्रकृतिनि[का]
का घना वा थोरा फल निपजै है। तहां घातिकर्मनिकी सर्व प्रकृतिनिविषै वा अघातिकर्मनिकी पापप्रकृतिनिविषै तौ अल्प कषाय होतैं थोरा अनुभाग
बंधै है बहुत कषाय होतैं घनां अनुभाग बंधै है। बहुरि पुन्यप्रकृतिनिविषै अल्प कषाय होतैं घनां अनुभाग बंधै है बहुत कषाय होतैं थोरा अनुभाग बंधै है।
ऐसें कषायनिकरि कर्मप्रकृतिनिके स्थिति अनुभागका विशेष भया तातैं कषायनिकरि स्थिति अनुभाग बंध का होना जानना। इहां जैसें बहुत भी

मदिरा है अर तिनि विषै थोरे काल पर्यंत थोरी उन्मत्तता उपजावने की शक्ति है तौ वह मदिरा हीनपना कौं प्राप्त है। बहुरि जो थोरी ही मदिरा है तामैं
बहुत काल पर्यंत घनी उन्मत्तता उपजावने की शक्ति है तौ वह मदिरा अधिकपना कौं प्राप्त है। तैसें घने भी कर्मप्रकृतिनि के परमाणू हैं अर
तिनि विषै थोरे काल पर्यंत थोरा फल देने की शक्ति है तौ वे कर्मप्रकृति हीनता कौं प्राप्त हैं। बहुरि थोरे भी कर्मप्रकृतिनि के परमाणू हैं अर तिनि विषै
बहुत काल पर्यंत बहुत फल देने की शक्ति है तौ वे कर्मप्रकृति अधिकपना कौं प्राप्त हैं। तातैं योगनि करि भया प्रकृतिबंध प्रदेशबंध बलवान नांही कषा
यनि करि किया स्थितिबंध अनुभागबंध ही बलवान है तातैं मुख्यपनै कषाय ही बंध का कारन जानना। जिनिकौं बंध न करना होइ ते कषाय
मति करौ। बहुरि इहां कोऊ प्रश्न करै कि पुद्गलपरमाणू तौ जड हैं उनकै किछू ज्ञान नांही तैसें यथायोग्य प्रकृतिरूप होय परिणमै है। ताका
समाधान। जैसें भूख होतैं मुख द्वारि ग्रह्या हुवा भोजनरूप पुद्गलपिंड सो मांस शुक्र शोणित आदि धातुरूप परिणमै है। बहुरि तिस भोजनके
परमाणूनि विषै यथायोग्य कोई धातुरूप थोरे कोई धातुरूप घने परमाणू हो हैं। बहुरि तिनि विषै केई परमाणूनिका संबंध घने काल रहै है। केई
निका थोरे काल रहै है। बहुरि तिनि परमाणूनि विषै केई तौ अपने कार्य निपजावने की बहुत शक्ति कौं धरै हैं। केई स्तोक शक्ति कौं धरै हैं। सो
ऐसें होने विषै कोऊ भोजनरूप पुद्गलपिंड कै ज्ञान तौ नांही है जो मैं ऐसैं परिणमौं अर और भी कोई परनमावनहारा नांही है। ऐसा ही निमित्त नैमि
त्तिक भाव बनि रह्या है। ताकरि तैसैं ही परिणमन हू पाइए है। तैसें ही कषाय होतैं योग द्वारि ग्रह्या हुवा कर्मवर्गणारूप पुद्गलपिंड ज्ञानावरण
कर्मपरमाणूनि ३ आदि प्रकृतिरूप परिणमै है। बहुरि तिनि विषै यथायोग्य कोई प्रकृतिरूप थोरे कोई प्रकृतिरूप घने परमाणू हो हैं। बहुरि तिनि विषै केई परमाणू
निका संबंध घने काल रहै है केई निका थोरे काल रहै है। बहुरि तिनि परमाणूनि विषै केई तौ अपने कार्य निपजावने की बहुत शक्ति धरै हैं केई थो
री धरै हैं। सो ऐसें होने विषै कोऊ कर्मवर्गणारूप पुद्गलपिंड कै ज्ञान तौ नांही है जो मैं ऐसैं परिणमौं अर और भी कोई परिनमावनहारा नांही है।

ऐसा ही निमित्त नैमित्तिक भाव बनि रह्या है। ताकरि तैसें ही परिणमन पाइए है। सो ऐसें तो लोक विषै निमित्त नैमित्तिक घने ही बनि रहे
है। जैसें मंत्र निमित्त करि जलादिक विषै रोगादिक दूरि करने की शक्ति हो है। वा कांकरी आदि विषै सर्पादि रोकने की शक्ति हो है तैसें ही
जीव भाव के निमित्त करि पुद्गल परमाणूनि विषै ज्ञानावरणादि रूप शक्ति हो है। इहां विचारि करि अपने उद्यम तैं कार्य करै तो ज्ञान चाहि
ए। अर तैसा निमित्त बनें स्वयमेव तैसें परिणमन होइ तौ तहां ज्ञान का किछू प्रयोजन नाहीं। या प्रकार नवीन बंध होने का विधान जानना। अब जे पर
माणू कर्मरूप परिणमें तिनिका यावत् उदयकाल न आवै तावत् जीव के प्रदेशनि स्यों एकक्षेत्रावगाहरूप बंधान रहै है। तहां जीव भाव के
निमित्त करि केई प्रकृतिनि की अवस्था का पलटना भी होइ जाइ है। तहां केई अन्य प्रकृतिनि के परमाणू थे ते संक्रमणरूप होइ अन्य प्रकृति
के परमाणू होइ जाइ। बहुरि केई प्रकृतिनि की स्थिति [illegible] वा अनुभाग बहुत था सो अपकर्षण होइ करि थोरा होइ जाय। बहुरि
केई प्रकृतिनि की स्थिति वा अनुभाग थोरा था सो उत्कर्षण होइ करि बहुत होइ जाय। ऐसें पूर्वे बंधे परमाणूनि की भी जीव भाव का नि
मित्त पाइ अवस्था पलटै है। अर निमित्त न बनें तौ पलटै नाहीं जैसे के तैसे रहै है। ऐसें सत्तारूप कर्म रहै है। बहुरि जब कर्म प्रकृतिनि का उदयका
ल आवै तब स्वयमेव तिनि प्रकृतिनि का अनुभाग के अनुसारि कार्य बनैं। कर्म तिनि कार्यनि कौं निपजावता नाहीं। याका उदयकाल आए वह कार्य
बनै है इतना ही निमित्त नैमित्तिक संबंध जानना। बहुरि जिस समय फल निपज्या तिस का अनंतर समय विषै तिनि कर्मरूप पुद्गलनि के
अनुभाग शक्ति के अभाव होने तैं कर्मत्वपना का अभाव हो है ते पुद्गल अन्य पर्याय रूप परिणमैं है। याका नाम सविपाक निर्जरा है। ऐसें
समय समय प्रति उदय होइ कर्म खिरै है। कर्मत्वपना नास्ति भए पीछैं ते परमाणू तिस ही स्कंध विषै रहौ वा जुदे होउ किछू प्रयोजन रह्या
नाहीं। इहां इतना जानना। इस जीव के समय समय प्रति अनंत परमाणू बंधै है तहां एक समय विषै बंधे परमाणू ते आबाधाकाल छोडि अपनी

स्थितिके जेते समय होंहि तिनि विषै क्रमतैं उदय आवै है। वहुरि वहुत समयनिविषै वंधे परमाणु जे एक समयविषै उदय आवने योग्य हैं
ते एकठे होइ उदय आवै है। तिनि सव परमाणुनिका अनुभाग मिलें जेता अनुभाग होइ तितना फल तीस कालविषै निपजै है। वहुरि अनेक
समयनिविषै वंधे परमाणु वंधसमयतैं लगाय उदयसमयपर्यंत कर्मरूप अस्तित्वकौं धरैं जीवस्यौं संवंधरूप रहै है। ऐसैं कर्मनिकी वं
ध उदय सत्तारूप अवस्था जाननी। तहां समय समय प्रति एक समयप्रवधमात्र परमाणु वंधै है। एक समयप्रवद्धमात्र निर्जरै है। ड्योढ गुण
हानिकरि गुणित समयप्रवंधमात्र सदाकाल सत्ता रहै है। सो इनी सवनिका विशेष आगें कर्म अधिकारविषै लिखैंगे तहां जानना। वहुरि ऐसैं
येह कर्म है सो परमाणुरूप अनंत पुद्गल द्रव्यनिकरि निपजाया कार्य है तातैं तिनका नाम द्रव्यकर्म है। वहुरि मोहके निमित्ततैं मिथ्यात्व क्रो
धादिरूप जीवका परिणाम है सो अशुद्ध भावकरि निपजाया कार्य है तातैं याका नाम भावकर्म है सो द्रव्यकर्मके निमित्ततैं भावकर्म होइ अर
भावकर्मके निमित्ततैं द्रव्यकर्मका वंध होइ वहुरि द्रव्यकर्मतैं भावकर्म भावकर्मतैं द्रव्यकर्म ऐसैं ही परस्पर कारणकार्यभावकरि संसा
रचक्रविषै परिभ्रमण हो है। इतना विशेष जानना। तीव्र मंद वंध होनेतैं वा संक्रमणादि होनेतैं वा एक कालविषै वंध्या अनेक कालविषै वा अनेक
कालविषै वंधे एक कालविषै उदय आवनेतैं काहू कालविषै तीव्र उदय आवै तव तीव्र कषाय होइ तव तीव्र ही नवीन वंध होइ। अर काहू कालवि
षै मंद उदय आवै तव मंद कषाय होइ तव मंद ही वंध होइ। वहुरि तिनि तीव्र मंद कषायनिहीकै अनुसारि पूर्व वंधे कर्मनिका भी संक्रमणादिक
होइ तौ होइ। या प्रकार अनादितैं लगाय धाराप्रवाहरूप द्रव्यकर्मकी प्रवृत्ति जाननी। वहुरि नामकर्मके उदयतैं शरीर हो है सो द्रव्यकर्मवत् किं वाभावकर्म ।८
चित सुखदुखकौं कारण है तातैं सरीरकौं नोकर्म कहिए है। इहां नो शब्द ईषत् कषायवाचक जानना। सो शरीर पुद्गलपरमाणुनिका पिंड है अ
र द्रव्य इंद्रिय वा द्रव्यमन अर सासोस्वास वचन ए भी शरीर ही के अंग हैं। सो ए भी पुद्गलपरमाणुनिके पिंड जानने। सो ऐसे सरीरके अर द्रव्यकर्म
संवंध सहित जीवकै एकक्षेत्रावगाहरूप वंधान हो है। सो शरीरका जन्मसमयतैं लगाय जेती आयुकी स्थिति होइ तितने कालपर्यंत शरीरका संवं
ति

धरै है। बहुरि आयु पूरन होनें मरण होइ है तब तिस शरीर का संबंध छूटै है॥ शरीर आत्मा जुदे जुदे होइ जाइ है। बहुरि ताकै अनंतर समय
तीसरे चौथे
विषै वा दूसरै समय जीव कर्म उदय के निमित्त तैं नवीन शरीर धरै है तहां जी अपने आयु पर्यंत तैसें ही संबंध रहै है बहुरि मरण होइ है तब तिस का
संबंध छूटै है ऐसें ही पूर्व शरीर का छोडनां नवीन शरीर का ग्रहण अनुक्रम तैं हूवा करै है। बहुरि यहु आत्मा यद्यपि असंख्यात प्रदेशी है तथापि
संकोच विस्तार शक्ति तैं शरीर प्रमाण ही रहै है। विशेष इतना समुद्घात होतैं शरीर तैं बाह्य भी आत्मा के प्रदेश फैलै है। बहुरि अंतराल समय
इस: विषै पूर्व शरीर छोड्या था तिस प्रमाण रहै है। बहुरि शरीर के अंगभूत द्रव्य इंद्रिय अर मन तिनिके सहाय तैं जीव कै ज्ञान दर्शन की प्रवृत्ति होहै। बहु
बहुरि
जीव रि शरीर की अवस्था के अनुसारि मोह के उदय तैं सुखी दुखी होइ है। कबहू तौ जीव की इच्छा अनुसारि शरीर प्रवर्तै है। कबहू शरीर की
अवस्था
अन्यथा) अवस्था के अनुसार जीव प्रवर्तै है। कबहू जीव इच्छा रूप प्रवर्तै है। पुद्गल अन्यथा रूप प्रवर्तै है। ऐसें इस नोकर्म की प्रवृत्ति
जाननी। तहां अनादि तैं लगाय प्रथम तौ इस जीव कै नित्य निगोद रूप शरीर का संबंध पाइए है तहां नित्य निगोद शरीर कौं
धरि आयु पूर्ण होनें मरि बहुरि नित्य निगोद शरीर धरै है। बहुरि आयु पूर्ण करि मरि नित्य निगोद शरीर ही कौं धारै है
राशि है तिनि
याही प्रकार अनंतानंत प्रमाण लीयें जीव हैं सो अनादि तैं तहां ही जन्म मरण कीया करै है। बहुरि तहां तैं छ महीनां आठ सम
य विषै छसै आठ जीव निकसै हैं। ते निकसि अन्य पर्यायनि कौं धारै हैं सो पृथ्वी जल अग्नि पवन प्रत्येक वनस्पती रूप एकेंद्रिय प
र्यायनि विषै वा बेंद्रिय तेंद्रिय चौइंद्रिय रूप पर्यायनि विषै वा नारक तिर्यंच मनुष्य देव रूप पंचेंद्रिय पर्यायनि विषै भ्रमण करै है।
बहुरि तहां कितेक काल भ्रमण करि बहुरि निगोद पर्याय कौं पावै सो वाका नाम इतर निगोद है। बहुरि तहां कितेक का
ल रहि तहां तैं निकसि अन्य पर्यायनि विषै भ्रमण करै है। तहां परिभ्रमण करनें का उत्कृष्ट काल पृथ्वी आदि स्थावरनि विषै अ
संख्यात कल्पमात्र है। अर द्वींद्रियादि पंचेंद्रिय पर्यंत त्रसनि विषै साधिक दोय हजार सागर है। अर इतर निगोद विषै अढाई पुद्गल

सो पाय अनंत काल है। बहुरि इतर निगोदतैं निकसि कोई थावर पर्याय पाय पाय बहुरि निगोद जाय ऐसें एकेंद्रिय पर्यायनि विषै उत्कृष्ट परि
भ्रमण काल असंख्यात पुद्गल परिवर्त्तन मात्र है। १

परिवर्त्तन मात्र है। बहुरि जघन्य सर्वत्र एक अंतर्मुहूर्त्त काल है। ऐसें घनां तौ एकेंद्रिय पर्यायनि हीका धरनां है। अन्य पर्याय तौ का पावनां
कतालीयन्यायवत जाननां। या प्रकार इस जीवकै अनादिहीतैं कर्मबंधनरूप रोग भया है। इति कर्मबंधननिदानवर्णनं। अब
इस कर्मबंधनरूप रोगके निमित्ततैं जीवकी कैसी अवस्था होय रही है सो कहिए है। प्रथम तौ इस जीवका स्वभाव चैतन्य है। सो
सबनिका सामान्य विशेष स्वरूपका प्रकाशनहारा है। जो उनका स्वरूप होइ सो आपकौं प्रतिभासै तिसहीका नाम चैतन्य है। तहां
सामान्य स्वरूप प्रतिभासनेंका नाम दर्शन है। विशेष स्वरूप प्रतिभासनेंका नांम ज्ञान है। सो ऐसा स्वभाव करि त्रिकालवर्त्ती सर्व गु
णपर्याय सहित सर्व पदार्थनिकौं प्रत्यक्ष युगपत विनां सहाय देखै जानैं ऐसी आत्मा विषै शक्ति सदा काल है। परंतु अनादिहीतैं
ज्ञानावरण दर्शनावरणका संबंध है ताके निमित्ततैं इस शक्तिका व्यक्तपनां होता नांही। तिनि कर्मनिका क्षयोपशमतैं किंचित म
तिज्ञान श्रुतज्ञान पाइए है। अर कदाचित अवधिज्ञान भी पाइए है। बहुरि अचक्षुदर्शन पाइए है। अर कदाचित चक्षुदर्शन वा
अवधिदर्शन भी पाइए है। सो इनकी भी प्रवृत्ति कैसें है सो दिखाइए है। सो प्रथम तौ मतिज्ञान है सो शरीरके अंगभूत जे जीभ नासि
का नयन कान स्पर्शन ए द्रव्य इंद्रिय अर हृदयस्थान विषै आठ पांखुरीका फूल्या कमलकै आकार द्रव्यमन तिनके सहायहीतैं जा
नै है। जैसैं जाकी दृष्टि मंद होइ सो अपनें नेत्रकरि ही देखै है परंतु चसमा दीएं ही देखै। विनां चसमा कै देखि सकै नांही। तैसें आत्माका ज्ञा
न मंद है सो अपनें ज्ञानहीकरि जानैं है। परंतु द्रव्य इंद्रिय वा मनका संबंध भएं ही जानैं। तिनि विनां जानि सकै नांही। बहुरि जैसैं ने
त्र तौ जैसाका तैसा है अर चसमा विषै किछू दोष भया होइ तौ देखि सकै नांही। अथवा थोरा दीसै अथवा औरका और दीसै। तैसें अपनां क्ष
योपशम तौ जैसाका तैसा है अर द्रव्य इंद्रिय वा मनके परमाणु अन्यथा परिणमें होइ तौ जानि सकै नांही अथवा थोरा जानैं अथवा
औरका और जानैं। जातैं द्रव्य इंद्रिय वा मनरूप परमाणूनिका परिणमनकै अर मतिज्ञानकै निमित्तनैमित्तिक संबंध है सो उनका

रिणमन कै अनुसारि ज्ञान का परिणमन हो है। ताका उदाहरण। जैसैं मनुष्यादिक कै बाल वृद्ध अवस्था विषै द्रव्य इंद्रिय वा मन
शिथिल होइ तब जानपनां भी शिथिल होइ। बहुरि जैसैं शीत वायु आदिक के निमित्ततैं स्पर्शनादि इंद्रियनि कै वा मन के परमाणु अन्य
था होइ तब जानना नांही होइ वा थोरा जानना होइ। बहुरि इस ज्ञान के अर बाह्य द्रव्यनि कै भी निमित्त नैमित्तिक संबंध पाइए है। ताका
उदाहरण जैसैं नेत्र इंद्रिय कै अंधकार के परमाणु वा फूला आदिक के परमाणु वा पाषाणादिक के परमाणु आदि आडे आय जांय
तौ देखि न सकै। बहुरि लाल काच आडा आवै तौ सब लाल ही दीसै हरित आडा आवै तौ हरित दीसै ऐसैं अन्यथा जानना होइ। ब
हुरि दूरबीन चसमा इत्यादि आडा आवै तौ बहुत दीसनैं लगि जाय प्रकाश जल हिलव्वी काच इत्यादिक के परमाणु आडे आवैं तौ
भी जैसा का तैसा दीसै। ऐसैं स्पर्शनादि इंद्रिय वा मन कै भी यथासंभव जानना। बहुरि मंत्रादिक प्रयोगतैं वा मदिरापानादिक तैं वा भूता
दिक के निमित्ततैं न जानना वा थोरा जानना वा अन्यथा जानना हो है। ऐसैं यहु ज्ञान बाह्य द्रव्य कै भी आधीन जानना। बहुरि इस
ज्ञान करि जो जानना हो है सो अस्पष्ट जानना हो है। दूरितैं कैसा ही जानैं समीप तैं कैसा ही जानैं तत्काल कैसा ही जानैं जानतैं बहुत बा
र होइ जाय तब कैसा ही जानैं। काहू कौं संसय लीएं जानैं काहू कौं अन्यथा जानैं काहू कौं किंचित् जानैं। इत्यादि रूप करि निर्म
ल जानना होय सकै नांही। ऐसैं यहु मतिज्ञान पराधीनता लीएं इंद्रिय मन द्वार करि प्रवर्तै है। तहां इंद्रियनि करि तौ जितने क्षे
त्र का विषय होइ तितने क्षेत्र विषै जे वर्त्तमान स्थूल अपनें जाननें योग्य पुद्गल स्कंध होइ तिनही कौं जानैं। तिनि विषै भी जु
दे जुदे इंद्रियनि करि जुदे जुदे काल विषै कोई स्कंध के स्पर्शादिक का जानना हो है। बहुरि मन करि अपनें जाननें योग्य किं
चिन्मात्र त्रिकाल संबंधी दूरि क्षेत्रवर्ती वा समीप क्षेत्रवर्ती रूपी अरूपी द्रव्य वा पर्याय तिनि कौं अत्यंत अस्पष्टपनैं जानैं
है। सो भी इंद्रियनि करि जाका ज्ञान भया होइ वा अनुमानादिक जाका कीया होइ तिस ही कौं जानि सकै है। बहु

२५

रि कदाचित अपनी कल्पनातैं करि असत कौं जानै है जैसें सुपनेविषै वा जागतैं भी जे कदाचित कहीं न पाई
ए ऐसे आकारादिक चिंतवै वा जैसैं नाहीं तैसैं मानै। ऐसे मन करि जानना हो है सो यहु इंद्रिय वा मन करि
जो ज्ञान हो है ताका नाम मतिज्ञान है। तहां पृथ्वी जल अग्नि पवन वनस्पती रूप एकेंद्रियनिकै स्पर्शही का ज्ञान
है। लट संख आदि बेइंद्री जीवनिकै स्पर्श रस का ज्ञान है॥ कीडी मकोडा आदि तेइंद्रिय जीवनकै स्पर्श रस गंध का
ज्ञान है। भ्रमर मक्षिका पतंगादिक चौइंद्री जीवनिकै स्पर्श रस गंध वर्ण का ज्ञान है। ~~बहुरि तिर्यंच~~ मच्छ गऊ कबूत
र इत्यादिक तिर्यंच अर मनुष्य देव नारकी ए पंचेंद्रिय हैं तिनिकै स्पर्श रस गंध वर्ण शब्दनिका ज्ञान है। बहुरि तिर्यं
चनिविषै केई संज्ञी हैं केई असंज्ञी हैं। तहां संज्ञीनिकै मनजनित ज्ञान है असंज्ञीनिकै नाहीं है। बहुरि मनुष्य देवना
रकी संज्ञी ही हैं तिनि सबनिकै मनजनित ज्ञान पाइए है। ऐसैं मतिज्ञान की प्रवृत्ति जाननी। बहुरि मतिज्ञान करि
जिस अर्थ कौं जान्या होय ताकै संबंधतैं अन्य अर्थ कौं जाकरि जानिए सो श्रुतज्ञान है। सो दोय प्रकार है। अक्षरा
त्मक। अनक्षरात्मक। तहां जैसैं घट ए दोय अक्षर सुने वा देखे सो तौ मतिज्ञान भया तिनिकै संबंधतैं घट पदार्थ का
जानना भया सो श्रुतज्ञान है। ऐसैं अन्य भी जानना। सो यहु तौ अक्षरात्मक श्रुतज्ञान है। बहुरि जैसैं स्पर्श करि शी
त का जानना भया सो तौ मतिज्ञान है। ताकै संबंधतैं यहु हितकारी नाहीं यातैं भागि जाना इत्यादि रूप ज्ञान भया
सो श्रुतज्ञान है। ऐसैं अन्य भी जानना। यहु अनक्षरात्मक श्रुतज्ञान है। तहां एकेंद्रियादिक असंज्ञी जीवनिकै तौ
अनक्षरात्मक ही श्रुतज्ञान है। अर संज्ञी पंचेंद्रियकै दोऊ है सो यहु श्रुतज्ञान है सो अनेक प्रकार पराधी
न जो मतिज्ञान ताकै भी आधीन है वा अन्य अनेक कारणनिकै आधीन है तातैं महापराधीन जानना। बहु

रि अपनी मरयादा कै अनुसारि क्षेत्र काल का प्रमाण लीए रूपी पदार्थनि कौं स्पष्टपनैं जाकरि जांनिए सो
अवधिज्ञान है सो यहु देव नारकीनि कै तौ सर्व कै पाईए है अर संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच अर मनुष्यनि कै भी को
ई कै पाईए है॥ असंज्ञी पर्यंत जीवनि कै यहु होता ही नांही। सो यहु भी शरीरादिक पुद्गलनि कै आधीन है। ब
हुरि अवधि के तीन भेद है। देशावधि।१। परमावधि।२। सर्वावधि।३। सो इनि विषैं थोरा क्षेत्र काल की मर्या
दा लीए किंचिन्मात्र रूपी पदार्थ कौं जाननहारा देशावधि है सो ही कोई जीव कै होइ है॥ बहुरि परमावधि सर्वा
वधि अर मनःपर्यय ए ज्ञान मोक्षमार्ग विषैं प्रगटै है केवलज्ञान मोक्षस्वरूप है तातैं इस अनादि संसार अव
स्था विषैं इनिका सद्भाव ही नांही है॥ ऐसैं तौ ज्ञान की प्रवृत्ति पाईए है॥ बहुरि इंद्रिय वा मन कै स्पर्शादि
क विषय तिनिका संबंध होतैं प्रथम काल विषैं मतिज्ञान कै पहलै जो सत्तामात्र अवलोकनरूप प्रतिभा
स हो है ताकौं नाम चक्षुदर्शन वा अचक्षुदर्शन है। तहां नेत्र इंद्रिय करि दर्शन होइ ताका नाम तौ चक्षुदर्शन
है सो तौ चौंद्री पंचेंद्रीय जीवनि ही कै हो है। बहुरि स्पर्शन रसन घ्राण श्रोत्र ए च्यारि इंद्रिय अर मन करि दर्शन
होइ ताका नाम अचक्षुदर्शन है सो यथाजोग्य एकेंद्रियादि जीवनि कै हो है। बहुरि अवधि के विषयनिका
संबंध होतैं अवधिज्ञान कै पहलैं जो सत्तामात्र अवलोकनरूप प्रतिभास होइ ताका नाम अवधिदर्शन है सो जिन
कै अवधिज्ञान संभवै तिन ही कै यहु हो है। सो यहु चक्षु अचक्षु अवधिदर्शन है सो मतिज्ञान वा अवधिज्ञानवत्
पराधीन जानना॥ बहुरि केवलदर्शन मोक्षस्वरूप है। ताका इहां सद्भाव ही नांही॥ ऐसैं दर्शन का सद्भाव पाईए है
ज्ञान या प्रकार दर्शन का सद्भाव ज्ञानावरण दर्शनावरण का क्षयोपशम कै अनुसारि हो है जब क्षयोपशम थोरा हो है

तब बहुत ज्ञान की सामर्थ्य थोरी होइ है। जब बहुत होइ है तब बहुत होइ है। बहुरि क्षयोपशमतैं शक्ति तौ ऐसी बनी रहै
अर परिणमन करि ताकरि जीव एक काल विषै एक ही विषय का देखना वा जानना होइ है। इस परिणमन ही
का नाम उपयोग है। तहां एक जीव कै एक काल विषै कै तौ ज्ञानोपयोग होइ है कै दर्शनोपयोग होइ है। बहुरि एक
उपयोग का भी एक भेद ही की प्रवृत्ति होइ है। जैसें मतिज्ञान होइ तब अन्य ज्ञान न होइ। बहुरि एक भेद विषै भी
एक विषय विषै ही प्रवृत्ति होइ है। जैसें स्पर्श कौं जानै तब रसादिक कौं न जानै। बहुरि एक विषय विषै भी ताके
कोऊ एक अंग ही विषै प्रवृत्ति होइ है। जैसें उष्ण स्पर्श कौं जानै तब रूक्षादिक कौं न जानै। ऐसें एक जीव कै एक का
ल विषै एक ज्ञेय वा दृश्य विषै ज्ञान वा दर्शन का परिणमन जानना। सो ऐसें ही देखिए है। जब सुनने विषै उपयोग
लग्या होय तब नेत्र के समीप तिष्ठता भी पदार्थ न दीसै। ऐसें ही अन्य प्रवृत्ति देखिए है। बहुरि परिणमन विषै शीघ्र
ता बहुत है ताकरि काहू काल विषै ऐसा मानिए है युगपत भी अनेक विषयनि का जानना वा देखना होइ है। सो यु
गपत होता नाहीं। क्रम ही करि होइ है। संस्कार बलतैं तिनिका साधन रहै है। जैसें कागला कै नेत्र कै दोय गोलक हैं पु
तरी एक है। सो फिरै शीघ्र है ताकरि दोऊ गोलकनि का साधन करै है। तैसें ही इस जीव कै द्वार तौ अनेक हैं। अर उपयो
ग एक है। सो फिरै शीघ्र है। ताकरि सर्व द्वारनि का साधन रहै है। इहां प्रश्न जो एक काल विषै एक ही विषय का जानना वा
देखना होइ है तौ इतना ही क्षयोपशम भया कहौ। बहुत काहे कौं कहौ। बहुरि तुम कहो हो क्षयोपशमतैं शक्ति होइ है तौ श
क्ति तौ आत्मा विषै केवलज्ञान दर्शन की भी पाइए है। ताका समाधान। जैसें काहू पुरुष कै बहुत ग्रामनि विषै गमन करने की
शक्ति है बहुरि ताकौं काहूनैं रोक्या अर यहु कह्या पांच ग्रामनि विषै जावौ परंतु एक दिन विषै एक ग्राम कौं जावौ। तहां

उसपुरषकै बहुतग्रामजानेंकी शक्ति तौ द्रव्य अपेक्षा पाईए है। अन्य काल विषै सामर्थ्य होइ वर्त्तमान सामर्थ्यरूप नाहीं
है। परंतु वर्त्तमान पंचग्रामनितैं अधिक ग्रामनिविषै गमन करि सकै नांही। बहुरि पांच ग्रामनिविषै जानेंकी पर्याय
अपेक्षा वर्त्तमान सामर्थ्यरूप शक्ति है। जातैं इन विषै गमन करि सकै है। बहुरि व्यक्तता एक दिन विषै एक ग्रामकौं ग
मन करनेंहीकी पाईए है। तैसैं इस जीवकै सर्वकौं देषनें जाननेंकी शक्ति है। बहुरि याकौं कर्मनैं रोक्या अर इतनां
क्षयोपशम भया जो स्पर्शादि विषयनिकौं जानें वा देषो परंतु एक काल विषै एक हीकौं जानौं कै देषो। तहां इस
जीवकै सर्वकौं देषनें जाननेंकी शक्ति तौ द्रव्य अपेक्षा पाईए है अन्य काल विषै सामर्थ्य होइ। परंतु वर्त्तमान सामर्थ्य
रूप नाहीं। जातैं अपनें योग्य विषयनितैं अधिक विषयनिकौं देषि जानि सकै नांही। बहुरि अपनें योग्य विषयनिकौं
देषन जाननेंकी पर्याय अपेक्षा वर्त्तमान सामर्थ्यरूप शक्ति है। जातैं इनकौं देषि जानि सकै है। बहुरि व्यक्तता एक का
ल विषै एक हीकौं देषनें का जाननेंकी पाईए है। बहुरि इहां प्रश्न जो ऐसैं तौ जान्या परंतु क्षयोपशम तौ पाईए अ
र बाह्य इंद्रियादिकका अन्यथा निमित्त भए देषनां जाननां न होइ वा थोरा होइ वा अन्यथा होइ सो ऐसैं होतैं कर्मही
का निमित्त तौ न रह्या। ताका समाधान। जैसैं रोकनहारानें यहु कह्या जो पांच ग्रामनिविषै एक ग्रामकौं एक दिन
विषै जावो। परंतु इनि किंकरनिकौं साथि लेइ जावो। तहां वै किंकर अन्यथा परिणमैं तौ जानां न होइ वा अन्यथा
जानां होइ। तैसैं कर्मका ऐसा ही क्षयोपशम भया है जो इतने विषयनिविषै एक विषयकौं एक काल विषै देषो वा
जानो। परंतु इतने बाह्य द्रव्यनिका निमित्त भए देषो जानो। तहां वै बाह्य द्रव्य अन्यथा परिणमैं तौ देषनां जाननां
न होइ वा थोरा होइ वा अन्यथा होइ। ऐसा यहु कर्मके क्षयोपशमहीका विशेष है तातैं कर्महीका निमित्त जाननां। जै

सैं कारकै अंधकारके परमाणु आडे आएं देषनां न होइ घूघू मार्जारादिकनिकै तिनिकैं आडे आएं भी देषनां होइ सो ऐसा य
हु क्षयोपशमहीका विशेष है। जैसें जैसें क्षयोपशम होइ तैसें तैसें ही देषनां जांननां होइ। ऐसें इस जीवकै क्षयोपशमज्ञानकी
प्रवृत्ति पाईए है। बहुरि मोक्षमार्ग विषै अवधि मनःपर्यय हैं ते भी क्षयोपशमज्ञान ही हैं। तिनिकौं भी ऐसें ही एक काल
विषै एककौं प्रतिभासनां वा परद्रव्यका आधीनपनां जांननां। बहुरि विशेष है सो विशेष जांननां। या प्रकार ज्ञानावरण
दर्शनावर्णका उदयके निमित्ततैं बहुत ज्ञानदर्शनके अंशनिका तौ अभाव है अर तिनिके क्षयोपशमतैं थोरे अंशनिका
सद्भाव पाईए है। बहुरि इस जीवकै मोहके उदयतैं मिथ्यात्व वा कषायभाव हो है। तहां दर्शनमोहके उदयतैं तौ मिथ्यात्वभा
व हो है। ताकरि यहु जीव अन्यथा प्रतीतिरूप अतत्वश्रद्धान करै है। जैसें है तैसें तौ न मानै है। अर जैसें है तैसें मानै है॥ अमू नांही
र्तीक प्रदेशनिका पुंज प्रसिद्ध ज्ञानादि गुणनिका धारी अनादिनिधन वस्तु आप है। अर मूर्तीक पुद्गलद्रव्यनिका पिंड
प्रसिद्ध ज्ञानादिकनिकरि रहित जिनिका नवीन संयोग भया ऐसे शरीरादिक पुद्गल पर हैं। इनिका संयोगरूप
नानाप्रकार मनुष्य तिर्यंचादि पर्याय हो हैं। तिस पर्याय विषै अहंबुधि धारै है। स्वपरका भेद नांही करि सकै है। जो पर्याय
पावै तिस ही कौं आप मांनै है। बहुरि तिस पर्याय विषै ज्ञानादिक हैं ते तौ आपके गुण हैं। अर रागादिक हैं ते आपकै कर्म
निमित्ततैं उपाधिक भाव भए हैं। अर वर्णादिक हैं ते शरीरादिक पुद्गलके गुण हैं। अर शरीरादिक विषै वर्णादिकनिकी
वा परमाणूनिकी नानाप्रकार पलटन हो है सो पुद्गलकी अवस्था है। सो इनि सबनि ही कौं आपनां स्वरूप जानै है। स्वभाव प
रभावका विवेक नांही होय सकै है। बहुरि मनुष्यादिक पर्यायनि विषै कुटंब धनादिकका संबंध हो है। ते प्रत्यक्ष आपतैं
भिन्न हैं। ~~[illegible]~~ अर ते आपकै आधीन नांही परिणमै हैं तथापि तिनि विषै ममकार करै है ए मेरे हैं। वे काहू प्रकार भी

अपनें होते मांही। बहुरी अपनी मानैं तैं ही अपनें मानें है। बहुरिं मनुष्यादि पर्यायनिविषैं कदाचित् देवादिकका तत्वनिका
(स्वरूप की) अन्यथा कल्पित तौ याताकौ तौ प्रतीति करै है। अर यथार्थ स्वरूप जैसें है तैसैं प्रतीति न करै है। ऐसें दर्शनमोहके उदयकरि
जीवकै अतत्वश्रद्धानरूप मिथ्यात्वभाव हो है। तहां तीव्र उदय होतैं है तहां सत्य श्रद्धानतैं घना विपरीत श्रद्धान हो है। अ
मंद उदय हो है तब सत्य श्रद्धानतैं थोरा विपरीत श्रद्धान हो है। बहुरि चारित्रमोहके उदयतैं इस जीवकै कषायभाव हो
है तब यहु ऐसैं मानता संता पर पदार्थनिविषैं इष्ट अनिष्टपनौ मानि क्रोधादिक करै है तहां क्रोधका उदय होतैं प
दार्थविषैं अनिष्टपनौ मानि ताका बुरा चाहै है। कोउ मंदिरादि अचेतन पदार्थ बुरा लागै तब फोरनां तोरनां इत्यादिरूप करि वा
का बुरा चाहै है। बहुरि मनुष्यादि सचेतन पदार्थ बुरा लागै तब वाकूं वध बंधादिक करि वा मारनेकरि दुष उपजाया चा
है। बहुरि आपका अन्य सचेतन अचेतन पदार्थ कोई प्रकार परिणया। आपकौं सो परिणमन बुरा लागा तब अ
न्यथा परिणमावनें करि तिस परिणमनका बुरा चाहै। या प्रकार क्रोधकरि बुरा चाहनेकी इच्छा तौ होइ बुरा होनां भवि
तव्य आधीन है। बहुरि मानका उदय होतैं पदार्थविषैं अनिष्टपनौं मानि ताकौं नीचा कीया चाहै आप ऊंचा भया चाहै।
मल धूलि आदि अचेतन पदार्थनिविषैं घृणा वा निरादरादिक करि तिनिकी हीनता आपकी उच्चता चाहै। बहुरि पुरुषा
दिक सचेतन पदार्थनिकौं नमावनां अपनै आधीन करनां इत्यादिरूप करि तिनकी हीनता आपकी उच्चता चाहै। बहु
रि आप लोकविषैं जैसें ऊंचा दीसै तैसें शृंगारादिक करनां वा धन षरचनां इत्यादिरूप करि औरनिकौं हीन दिखाय आप
ऊंचा हूवा चाहै। बहुरि अन्य कोई आपतैं ऊंचा कार्य करै ताकौं कोई उपाय करि नीचा दिखावै। अर आप नीचा कार्य क
रै ताकौं ऊंचा दिखावै। या प्रकार मानकरि अपनी महंतताकी इच्छा तौ होइ महंतता होनी भवितव्य आधीन है। बहुरि मा

माका उदय होतैं कोई पदार्थकौं इष्ट मांनि नाना प्रकार छलनि करि ताकी सिद्धि कीया चाहै है। रतन सुवर्णादिक अचेतन पदार्थनिकी। वा स्त्री दासी दासादि सचेतन पदार्थनिकी सिद्धिकै अर्थि अनेक छल करै है। ठिगनेकै अर्थि अपनी अनेक अवस्था करै है अन्य अचेतन सचेतन पदार्थनिकी अवस्था पलटावै है इत्यादि रूप छल करि अपना अभिप्राय सिद्धि कीया चाहै है। या प्रकार माया करि इष्ट सिद्धिकै अर्थि छल तौ करै। अर इष्ट सिद्धि होनी भवितव्य आधीन है॥ बहुरि लोभका उदय होतैं पदार्थनिकौं इष्ट मानि तिनिकी प्राप्ति चाहै है। वस्त्राभरण धन धान्यादि अचेतन पदार्थनिकी तृष्णा होइ। बहुरि स्त्री पुत्रादिक चेतन पदार्थनिकी तृष्णा होइ। बहुरि आपकै वा अन्य सचेतन अचेतन पदार्थकै कोई परिणमन होना इष्ट मानि तिनिकौं तिस परिणमनरूप परिणमाया चाहै है। या प्रकार लोभ करि इष्ट प्राप्तिकी इच्छा तौ होय अर इष्ट प्राप्ति होनी भवितव्य आधीन है। ऐसैं क्रोधादिकका उदय करि आत्मा परिणमै है। तहां ए कषाय च्यारि प्रकार है। अनंतानुबंधी।१ अप्रत्याख्यानावरण।२ प्रत्याख्यानावरण।३ संज्वलन।४। तहां जिनकौ उदय होतैं देशचारित्र न होइ। तातैं किंचित् त्याग भी न होय सकै ते अप्रत्याख्यानावरण कषाय हैं। बहुरि जिनिका उदय होतैं सकल चारित्र न होइ। तातैं सर्वका त्याग न होय सकै। ते प्रत्याख्यानावरण कषाय हैं। बहुरि जिनिका उदय होतैं सकल चारित्रकौं दोष उपज्या करै। तातैं यथाख्यात चारित्र न होइ सकै। ते संज्वलन कषाय हैं। सो अनादि संसार अवस्थाविषैं इनि च्यार्यौं ही निका निरंतर उदय पाइए है। परम कृष्णलेश्यारूप तीव्र कषाय होइ। तहां भी अर परम शुक्ललेश्यारूप मंद कषाय होय तहां भी निरंतर च्यार्यौं ही का उदय रहै है। जातैं तीव्र मंदकी अपेक्षा अनंतानुबंधी आदि भेद नाहीं है। सम्यक्त्वादि घातनेकी अपेक्षा ए भेद हैं। इनि ही प्रकृतिनिका तीव्र अनुभाग उदय होतैं तीव्र क्रोधादिक होय है। मंद अनुभाग उदय होतैं मंद उदय होय है। बहुरि मोक्षमार्ग भए इनि च्या

तातैं काहू काल विषैं नतीनाहै

ल्यौं विषैं तीन दोय एक का उदय होहै। पीछै आरसौं का अभाव होहै। बहुरि क्रोधादि आरसौं कषायनि विषै एकैं कालि
न करी का उदय होहै। इनि कषायनि कै परस्पर कारण कार्यपनौं है। क्रोध करि मानादिक होय जाइ। मान करि क्रो
धादिक होय जाय। काहू काल भिन्नता भासै है। ऐसैं कषाय रूप परिणमन जानना। बहुरि चारित्रमोह ही के उदय सैं नो
कषाय होहै। तहां हास्य का उदय करि कहीं इष्टपनौं मानि प्रफुल्लित होय हर्ष मानै है। बहुरि रति का उदय करि का
हू कौं इष्ट मानि प्रीति करै है। तहां आसक्त होहै। बहुरि अरति का उदय करि काहू कौं अनिष्ट मानि अप्रीति करै है।
तहां उद्वेगरूप होहै। बहुरि शोक का उदय करि कहीं अनिष्टपनौं मानि दिलगीर होहै। विषाद मानै है। बहुरि भय का उ
दय करि किसी कौं अनिष्ट मानि तिसतैं डरै है। वाका संयोग न चाहै है। बहुरि जुगुप्सा का उदय करि पदार्थ कौं अ
निष्ट मानि ताकी घृणा करै है। वाका वियोग चाहै है। ऐसैं हास्यादिक छह जानने। बहुरि वेदनि के उदयतैं याकै का
मपरिणाम होहै। तहां स्त्रीवेद का उदय करि पुरुषसौं रमनें की इच्छा होहै। अर पुरुषवेद का उदय करि स्त्रीसौं
रमनें की इच्छा होहै। नपुंसकवेद के उदय करि युगपत दोऊनिसौं रमनें की इच्छा होहै। ऐसैं ए नव तौ कषाय है। क्रो नोः
धादि सारिखे ए बलवान नाहीं। तातैं इनि कौं ईषत् कषाय कहै हैं। इहां नो शब्द ईषत् वाचक जानना। इनि
का उदय तिनि क्रोधादिकनि की साथि यथासंभव होहै। ऐसैं मोह के उदयतैं मिथ्यात्व वा कषायभाव होहै सो
कारण ही: ए ही संसार का मूल है। इनि ही करि वर्तमान काल विषैं जीव दुखी है। अर आगामी कर्मबंधन के भी कारन ए ही है। बहुरि
इनि ही का नाम राग द्वेष मोह है। तहां मिथ्यात्व का नाम मोह है। जातैं जहां सावधानी का अभाव है। बहुरि माया लो
भ कषाय अर हास्य रति तीन वेदनि का नाम राग है। जातैं तहां इष्टबुद्धि करि अनुराग पाइए है। बहुरि क्रोध मान कषाय

अर... अरतिशोकनिका नाम होय है। यातैं तहां अनिष्ट बुधि करि दोष पाईए है। बहुरि सामान्यप
नै सर्वही का नाम मोह है। तातैं ज्ञानादि विषै सर्वत्र असावधानी पाईए है॥ बहुरि अंतरायके उदयतैं जीव चाहै सो न हो
य। दान दीया चाहै सो न होय। लाभ वस्तुकी प्राप्ति चाहै सो न होय। भोग कीया चाहै सो न होय। उपभोग कीया चाहै सो न
होय। अपनी ज्ञानादि शक्ति कौ प्रगट कीया चाहै सो न प्रगट होय सकै। ऐसैं अंतरायके उदयतैं चाह्या होय नांही। ब
हुरि तिसही का क्षयोपशमतैं किंचिन्मात्र चाह्या भी होय है। चाह तौ बहुत है परंतु किंचिन्मात्र दान देय सकै है
लाभ होय है। ज्ञानादिक शक्ति प्रगट होय है। तहां भी अनेक बाह्यकारन चाहिए है। ऐसैं घातिकर्मनिकै उ
दयतैं जीवकै अवस्था हो है। बहुरि अघातिकर्मनिविषै वेदनीयकै उदयकरि शरीरविषै बाह्य सुखदुःखका कार
न निपजै है। शरीरविषै आरोग्यपनौं शक्तिवानपनौं इत्यादि। अर क्षुधा तृषादि रोग खेद पीडा इत्यादि सुखदु
खनिके कारन हो है। बहुरि बाह्यविषै सुहावनां ऋतु पवनादिक वा इष्ट स्त्रीपुत्रादिक वा मित्र धनादिक अ
सुहावनां ऋतुपवनादिक वा अनिष्ट स्त्रीपुत्रादिक वा शत्रु दारिद्र वधबंधनादिक सुखदुखका कारन हो है। ए बंध
बाह्यकारन कहे तिनिविषै केई कारन तौ ऐसे हैं। जिनिके निमित्ततैं शरीरकी अवस्था सुखदुखकौ कारन हो है।
अर वेही सुखदुखकौ कारन हो है। बहुरि केई कारन ऐसे हैं जे आपही सुखदुखकौ कारन हो है। ऐसे कारनका मिल
ना वेदनीयके उदयतैं हो है। तहां सातावेदनीयतैं सुखके कारन मिलै। असातावेदनीयतैं दुखके कारन मिलै है। सो इ
हां ऐसा जाननां। ए कारन ही तौ सुखदुखकौं उपजावै नांही। आत्मा मोहकर्मकै उदयतैं आप सुखदुख मानै है। तहां
वेदनीयकर्मका उदयकै अर मोहकर्मका उदयकै ऐसा ही संबंध है। जब सातावेदनीयका निपजाया बाह्य कार

रन मिलै तब तौ सुषमाननेंरूप मोहकर्म्म का उदय होय। अर जब असातावेदनीय का निपजाया बाह्य कारन मिलै त
ब दुखमाननेंरूप मोहकर्म्म का उदय होय। बहुरि ही कारन काहूकौं सुषका कारन है काहूकौं दुखका कारन है। जैसे काहू
कै सातावेदनीय का उदय होतैं मिल्या जैसा वस्त्र सुष का कारन हो है। तैसा ही वस्त्र काहूकौं असातावेदनीय का उदय
होतैं मिल्या सो दुषका कारन हो है। तातैं बाह्य वस्तु सुषदुषका निमित्तमात्र हो है। सुषदुष हो है सो मोह के निमित्त तैं हो है।
निर्म्मोही मुनिनि कै अनेक ऋद्धि आदि परीसहादि कारन मिलै तौ भी सुखदुख न उपजै। मोही जीव कै कारन मिलै
वा बिना कारन मिलै भी अपने संकल्प ही तैं सुखदुख हूवा ही करै। तहां भी तीव्र मोही कै जिस कारन कौं मिलैं ती
व्र सुषदुष होइ तिस ही कारन कौं मिलैं मंदमोही कै मंद सुषदुष होइ। तातैं सुषदुष का मूल बलवान कारन मोह का उद
य है। अन्य वस्तु है सो बलवान कारन नाहीं। परंतु अन्य वस्तु कै अर मोही जीव कै परिणामनि कै निमित्त नैमित्ति
क की मुख्यता पाइए है ताकरि मोही जीव अन्य वस्तु ही कौं सुषदुष का कारन मानै है। ऐसे वेदनीय करि सुषदुष का का
रन निपजै है। बहुरि आयुकर्म के उदय करि मनुष्यादि पर्यायनि की स्थिति रहै है। यावत् आयु का उदय रहै ताव
त् अनेक रोगादिक कारन मिलौ शरीर स्यौं संबंध न छूटै। बहुरि जब आयु का उदय न होइ तब अनेक उपाय कीएं
भी शरीर स्यौं संबंध रहै नाहीं। तिसही काल आत्मा अर शरीर जुदा होइ। इस संसार विषै जनम जीवन मरन का कारन आ
युकर्म ही है। जब नवीन आयु का उदय होइ तब नवीन पर्याय हो है। बहुरि यावत् आयु का उदय रहै तावत् तिस पर्याय विषै जनमर
रूप प्राणनि का धारण होनें तैं जीवना हो है। बहुरि आयु का क्षय होइ तब तिस पर्यायरूप प्राण छूटनें तैं मरन हो है। सहज ही ऐ
सा आयुकर्म निका निमित्त है। और कोई उपजावनहारा रूपावनहारा रक्षा करनेहारा है नाहीं ऐसा निश्चय करना।

बहुरि जैसैं नवीन वस्त्र पहरै कितेक काल पहरे रहै। पीछैं ताकूं छोडि अन्य वस्त्र पहरै। तैसैं जीव नवीन शरीर धरै। कितेक काल धरे रहै पीछैं ताकौं छोडि अन्य शरीर धरै है। तातैं शरीर संबंध अपेक्षा जन्मादिक है जीव जन्मादि रहित नित्य ही है॥ तथापि मोही जीवकै अतीत अनागत का विचार नांही। तातैं पाया पर्याय मात्र ही अपनी स्थिति मानि पर्याय संबंधी कार्यनिविषै ही तत्पर होइ रह्या है। ऐसैं आयुकरि पर्याय की स्थिति जाननी। बहुरि नामकर्मकरि यहु जीव मनुष्यादि गतिनिविषै प्राप्त हो है। तिस पर्यायरूप अपनी अवस्था हो है। बहुरि तहां त्रस स्थावरादि विशेष निपजै है। बहुरि तहां एकेंद्रियादि जातिकौं धारै है। इस जाति कर्म का उदय कै अर मतिज्ञानावरण कौ क्षयोपशम कै निमित्त नैमित्तिकपनां जाननां। जैसा क्षयोपशम होय तैसी जाति पावै। बहुरि शरीरनिका संबंध हो है। तहां शरीरनिके परमाणू अर आत्माके प्रदेशनिका एक बंधान हो है। अर संकोच विस्तार रूप होय शरीर प्रमाण आत्मा रहै है। बहुरि नोकर्मरूप शरीर विषै अंगोपांगादिक योग्य स्थान प्रमाण लीएं हो है। इसही करि स्पर्शन रसन आदि द्रव्य इंद्रिय निपजै है। वा हृदयस्थान विषै आठ पांखुड्या का फूल्या कमल कै आकार द्रव्य मन हो है। बहुरि तिस शरीर ही विषै आकारादिक का विशेष होनां अर वर्णादिक का विशेष होनां। अर स्थूल सूक्ष्मतादिक का होनां इत्यादि कार्य निपजै है। सो ए शरीररूप परिणए परमाणू ऐसैं परिणमै है। बहुरि सासोस्वास वा स्वर निपजै है। सो ए भी पुद्गल के पिंड है। अर शरीरस्यों एक बंधानरूप है। इनिविषै भी आत्माके प्रदेश व्याप्त है। तहां सासोस्वास तौ पवन है। सो जैसैं आहार कौं ग्रहै निहार कूं निकासै तब ही जीवनो होइ। तैसैं ही पवन जाननां। बहुरि जैसैं हस्तादिकस्यों कार्य करिए। तैसैं ही पवनतैं कार्य करिए है। मुखमैं ग्रास धर्‍या ताकौं पवनतैं निगलिए है। मलादिक पवन हीतैं बाहरि काढिए है तैसैं ही अन्य जाननां। बहुरि नाड़ी वा

तैसैं बाह्य पवनकौं ग्रहै अर अभ्यंतर पवनकौं निकासै तब ही जीवितव्य रहै है तातैं सोस्वास जीवितव्य का कारन है। इस शरीर विषै जैसैं हाड मांसादिक है। २

नावापरागवाबापर्यो लाइत्यादि एपकनरूप शरीरकै अंगजानैं बहुरि स्वर है सो शब्द है। सो जैसैं बीणाकी तांतिकौं
हलाए नानारूप होनैं ऐसा पुद्गलस्कंध है ते साक्षर वा अनक्षर शब्दरूप परिणमैं है। तैसैं ताल वा होठ इत्यादि
अंगनिकौं हलाएं भाषापर्याप्ति विषै ग्रहे पुद्गलस्कंध हैं ते साक्षर अनक्षर शब्दरूप परिणमैं हैं। बहुरि शुभ अ-
शुभ गमनादिक हो है। इहां ऐसा जानना जैसैं दोय पुरुषनिकै इकदंडी बेडी है। तहां एक पुरुष गमनादि कीया चाहै
अर दूसरा भी गमन करै तौ गमनादि होय सकै। दोऊनि विषै एक बैठि रहै तौ गमनादि होय सकै नांही। अर दोऊनि
विषै एक बलवान होय तौ दूसरेकौं भी घीसि ले जाय। तैसैं आत्माकै अर शरीररूप एक पुद्गलकै एक क्षेत्रा-
वगाहरूप बंधान है। तहां आत्मा हलन चलनादि कीया चाहै अर पुद्गल तिस शक्तिकरि रहित हूवा हलन चलन न क-
रै वा पुद्गलविषै शक्ति पाईए है आत्माकी इच्छा न होय तौ हलन चलनादि होय सकै। बहुरि इनि विषै पुद्गल ब-
लवान होय हालै चालै तौ ताकी साथि विना इच्छा भी आत्मा हालै चालै। ऐसैं हलन चलनादि क्रिया हो है। बहुरि यश
अपजस आदि बाह्य निमित्त बनै है। ऐसैं ए कार्य निपजै हैं तिनिकरि मोहके अनुसारि आत्मा सुखी दुखी भी हो है। उ-
दयतैं स्वयमेव नामकर्मके नाना प्रकार रचना हो है। और कोई करनहारा नांही है। बहुरि तीर्थंकरादि प्रकृति इहां है ही
नांही। बहुरि गोत्रकर्मकरि ऊंचा नीचा कुल विषै उपजना हो है। तहां अपना अधिक हीनपना प्राप्त हो है। मोहके उदय-
करि आत्मा सुखी दुखी भी हो है। ऐसैं अघातिकर्मनिका निमित्ततैं अवस्था हो है। या प्रकार इस अनादि संसार विषै घाति
अघातिकर्मनिका उदयकै अनुसारि आत्माकै अवस्था हो है। सो हे भव्य अपनें अंतरंग विषै विचारि देखि ऐसैं ही
है कि नांही। सो विचार कीए ऐसैं ही प्रतिभासै है। बहुरि ऐसैं है तौ तू यहु मांनि मेरे अनादि संसार रोग पाईए है। ता

के नास करने कौं उपाय करनां। इस विचार तैं तैरा कथन करया है ॥ ॥ इति श्री मोक्षमार्ग प्रकाशक नाम सास्त्र विषैं संसार अवस्था का निरूपक द्वितीय अधिकार संपूर्ण भया ॥२॥ दोहा ॥ सो निज भाव सदा सुखद अपनौं करौं प्रकाश। जो बहुविधि भव दुखनि कौं करि है सत्तानास ॥१॥ अथ इस संसार अवस्था विषैं नाना प्रकार दुख है तिनिका वर्णन करिए है जातैं जो संसार विषैं भी सुख होइ तो संसार तैं मुक्त होने का उपाय काहे कौं करिए। इस संसार विषैं अनेक दुख हैं इस ही तैं संसार तैं मुक्त होने का उपाय कीजिए है। जैसैं वैद्य है सो रोग का निदान अर ताकी अवस्था का वर्णन करि रोगी कौं रोग का निश्चय कराय पीछैं तिसका इलाज करने की रुचि करावै है तैसैं इहां संसार का निदान वा ताकी अवस्था का वर्णन करि संसारी कौं संसार रोग का निश्चय कराय अब तिनिका उपाय करने की रुचि कराईए है। जैसैं रोगी रोग तैं दुखी होय रह्या है परंतु ताका मूल कारण जानै नांही। सांचा उपाय जानै नांही अर दुख सह्या जाय नांही तब आपकौं भासै सोई उपाय करै तातैं दुख दूरि होय नांही। तब तरफि तरफि परवश हूवा तिनि दुखनि कौं सहै है। याकौं वैद्य दुख का मूल कारण बतावै दुख का स्वरूप बतावै तिनि उपायनि कौं झूठे दिखावै तब सांचे उपाय करने की रुचि होय। तैसैं संसारी संसार तैं दुखी होय रह्या है ताका मूल कारन जानै नांही। अर सांचा उपाय जानै नांही। अर दुख सह्या जाय नांही। तब आपकौं भासै सोई उपाय करै तातैं दुख दूरि होय नांही। तब तरफि तरफि परवश हूवा तिनि दुखनि कौं सहै है। याकौं इहां दुख का मूल कारण बताईए है अर दुख का स्वरूप बताईए है अर तिनि उपायनि कौं झूठे दिखाईए तौ सांचे उपाय करने की रुचि होइ तातैं यहु वर्णन इहां करिए है। तहां सर्व दुखनि का मूल कारन मिथ्यादर्शन अज्ञान असंयम है। जो दर्शनमोह के उदय तैं भया अतत्त्वश्रद्धान मिथ्यादर्शन है। ता

करि वस्तस्वरूप की यथार्थ प्रतीति न होय सकै है अन्यथा प्रतीति होय है। बहुरि तिस ही मिथ्यादर्शन ही के निमित्त
तैं क्षयोपशमरूप ज्ञान है सो अज्ञान होय रह्या है। ताकरि। यथार्थ वस्तुस्वरूप का जानना न होय है। अन्यथा
जानना होय है। बहुरि चारित्रमोह के उदय तैं भया कषायभावता का नाम असंयम है। ताकरि जैसैं वस्तुस्वरूप
है तैसैं नाहीं प्रवर्त्तै है। अन्यथा प्रवर्त्तै होय है। ऐसैं ए मिथ्यादर्शनादिक हैं ते ई सर्व दुखनि के मूल कारन हैं। कैसैं
सो दिखाई है। मिथ्यादर्शनादिक करि जीव कै स्वपर विवेक नाहीं होइ सकै है। एक आत्मा अर अनंते पुद् आप
गल परमाणुमय शरीर इनका संयोगरूप मनुष्यादि पर्याय निपजै है। तिस पर्याय ही कौं आपो मानै है। बहुरि आत्मा
का ज्ञानदर्शनादि स्वभाव है ताकरि किंचित जानना देखना होहै है। अर कर्म उपाधि तैं भए क्रोधादिक भाव तिन
रूप परिणाम पाईए है। बहुरि शरीर का स्पर्श रस गंध वर्ण स्वभाव है सो प्रगट है। अर स्थूल कृशादिक होने
वा स्पर्शादिक का पलटना इत्यादि अनेक अवस्था होहै है। इन सबनि कौं अपना स्वरूप जानै है॥
तहां ज्ञानदर्शन की प्रवृत्ति इंद्रिय मन के द्वारै होहै। तातैं यहु मानै है। ए त्वचा जीभ नासिका नेत्र कान मन
ए मेरे अंग है। इनि करि मैं देखौं जानौं हौं। ऐसी मानि तैं इंद्रियनि विषैं प्रीति पाईए है। बहुरि मोह के आवेश तैं
तिनि इंद्रियनि के द्वार विषय ग्रहण करने की इच्छा होहै है। बहुरि तिनि विषयनि का ग्रहण भए तिस इच्छा
के मिटने तैं निराकुल होहै है। तब आनंद मानै है। जैसैं कूकरा हाड चावै ताकरि अपना लोही निकसै ताका
स्वाद लेइ ऐसा मानै यहु हाड का स्वाद है। तैसैं यहु जीव विषयनि कौं जानै ताकरि अपना ज्ञान प्रवर्त्तै ता
का स्वाद लेय ऐसैं मानैं। यहु विषय का स्वाद है। सो विषय मैं तो स्वाद है नाहीं। आप ही इच्छा करी थी अा

नहीं जानि आपही ~~[struck]~~ आनंद मान्यां परंतु मैं ... नाहिं अनंतज्ञानस्वरूप आत्मा हूं ऐसा निकै लेइ ज्ञानकौं
अनुभवन है नाहीं। बहुरि मैं नृत्य देख्या राग सुन्या फूल सूंघ्या ... साका स्वाद्या मोकों इस प्रकार ह्वै यह मिश्रित ज्ञानका (पर्यजाननें)
अनुभवन है। ताकरि विषयनिकरि ही प्रधानता भासै है। ऐसें इस जीवकै मोहके निमित्ततें विषयनिकी इच्छा पाई
ए है सो इच्छा तौ त्रिकालवर्ती सर्व विषयनिके ग्रहण करनेकी है मैं सर्वकौं स्पर्शौं। सर्वकौं स्वादौं। सर्वकौं सूंघूं
सर्वकौं देखौं सर्वकौं सुनौं सर्वकौं जानौं सो इच्छा तौ इतनी है। अर शक्ति इतनी ही है। जो इंद्रियनिकै सन्मुख आए वा
र्तमान स्पर्श रस गंध वर्ण शब्द तिनि विषैं काहूकौं किंचिन्मात्र ग्रहै। वा स्मरणादिकतैं मनकरि किछू जानैं सो
भी बाह्य अनेक कारण मिलें सिद्धि होइ तातैं इच्छा कबहू पूर्ण होय नाहीं ऐसी इच्छा तौ केवलज्ञान भए संपू
र्ण होइ क्षयोपशमरूप इंद्रियकरि तौ इच्छा पूर्ण होय नाहीं। तातें मोहके निमित्ततें इंद्रियनिकै अपनें अपनें विषय ग्रह
णकी अर्थि अपना मरनकौं भी नाहीं गिनैं है। जैसैं हाथीकै कपटकी हथनीका शरीर स्पर्शनेकी। अर मच्छकै बड
सीकै लग्या मांस स्वादनेकी। अर भ्रमरकै कमल सुगंध सूंघनेकी। अर पतंगकै दीपककौ वर्ण देखनेकी। अर हिरणकै राग सु
ननेकी इच्छा ऐसी हो है। जो ततकाल मरना भासै तौ भी मरनैंकौं गिनैं नाहीं। विषयनिका ग्रहण करतें उनके तौ
मरण होता था विषय सेवन कीएं इंद्रियनिकी पीडा अधिक भासै है। इनि इंद्रियनिकी पीडाकरि सर्व जीव पीडित
रूप निर्विचार होय जैसें कोऊ दुखी पर्वततैं गिरि परै तैसें विषयनि विषैं झंपापात लेहैं। नाना कष्टकरि धनकौं
उपजावैं ताकौं विषयनिकै अर्थि खोवै। बहुरि विषयनिकै अर्थि जहां मरण होता जानैं तहां भी जाइ। नरकादिक
कौं कारण तेहिंसादिक कार्य तिनिकौं करैं। वा क्रोधादिक कषायनिकौं उपजावैं। सो कहा करै इंद्रियनिकी पीडा
८ : भिंतरह ~~[struck]~~ ताकरि आकुलता रूप दुखी होय रह्या है। ऐसा दुखी होय रह्या है जो एक विषयका मरणकैं (कोई)
(छाहे काही।९)

सही न जाय, तातैं अन्य विचार किछू आवता नांहीं। इस पीडा ही करि पीडित भए इंद्रिय हैं ते विषयनिविषैं
अति आसक्त होय रहे हैं। जैसैं खाजि रोग करि पीडित हूवा पुरुष आसक्त होइ खुजावै है, पीडा न होइ तौ काहेकौं खु-
जावै। तैसैं इंद्रिय रोग करि पीडित भए इंद्रादिक आसक्त होय विषय सेवन करै हैं। पीडा न होय तौ काहेकौं विष-
य सेवन करै हैं। ऐसैं ज्ञानावरण दर्शनावरणका क्षयोपशमतैं भया इंद्रियजनित ज्ञान है, सो मिथ्या-
दर्शनादिकके निमित्ततैं इच्छासहित होय दुःखका कारण भया है। अब इस दुःख दूरि होने [redacted]
नेंका उपाय यहु जीव कहा करै है सो कहिए है। इंद्रियनिकरि विषयनिका ग्रहण भए मेरी इच्छा पूरण होय
ऐसैं जानि प्रथम तौ नाना प्रकार भोजनादिकनि करि इंद्रियनिकौं प्रबल करै है। अर ऐसैं ही जा-
नै है। इंद्रिय प्रबल रहे मेरैं विषयग्रहणकी शक्ति विशेष होय है। बहुरि तहां अनेक बाह्य कारन चा-
हिए है तिनिका निमित्त मिलावै है। बहुरि इंद्रिय हैं ते विषयकौं सन्मुख भए ग्रहै। तातैं अनेक बाह्य
[redacted]
उपाय करि विषयनिका अर इंद्रियनिका संयोग मिलावै है। नाना प्रकार वस्त्रादिकका वा
भोजनादिकका वा पुष्पादिकका वा मंदिर आभूषणादिकका वा गायन वादित्रादिकका संयोग मि-
लावनेकै अर्थि बहुत ही खेदखिन्न होय है। बहुरि इनि इंद्रियनिकै सन्मुख विषय रहै तावत् तिस वि-
षयका किंचित् स्पष्ट जानना रहै। पीछैं मन द्वारै स्मरणमात्र रहि जाय। काल वितीत होतैं स्म-
रण भी मंद होता जाय, तातैं तिनि विषयनिकौं अपने आधीन राखनेका उपाय करै

रैं सी ग्रही ग्रही तिनिका ग्रहण कीया करै। बहुरि इंद्रियनिकै तौ एक काल विषैं एक विषय ही का ग्रहण होय।
अर यहु बहुत ग्रहण कीया चाहै तातैं आकुलता होइ ऐसी ग्रही ग्रही एक विषयकौं छोडि और कौं ग्रहै। बहुरि वाकौं छोडि
और कौं ग्रहै ऐसैं झपटा मारै है। ऐसैं याकौं उपाय जो भासै है सो करै है। सो यहु उपाय झूठा है जातैं प्रथम तौ इन सबनि
का ऐसैं ही होना अपनैं आधीन नांही। महा कठिन है। बहुरि कदाचित उदय अनुसारि ऐसैं ही विधि मिलै तौ इंद्रियनि
कौं प्रबल कीएं किछू विषयग्रहण की शक्ति बधै नांही यहु शक्ति तौ ज्ञानदर्शन बधै बधै सो यहु कर्मका क्षयोपशम
कै आधीन है। किसी कै शरीर पुष्ट है ताकै ऐसी शक्ति घाटि दीखिए है काहू कै शरीर दुर्बल है ताकै देखिए अधिक
है। तातैं भोजनादिककरि इंद्रिय पुष्ट कीएं किछू सिद्धि है नांही। कषायादि घटनेतैं कर्मका क्षयो
पशम भएं ज्ञानदर्शन बधै तब विषयग्रहणकी शक्ति बधै है। बहुरि विषयनिकौ संयोग मिलावै सो बहुत का
ल ताई रहै है ता नांही अथवा सर्व विषयनिका संयोग मिलता ही नांही। तातैं यहु आकुलता रहिबो ही करै। बहु
रि तिनि विषयनिकौं अपनैं आधीन राखि शीघ्र शीघ्र ग्रहण करै। सो वे आधीन रहते नांही। वे तौ जुदे द्रव्य अपनें
आधीन परिणमै है। वा कर्मोदयकै आधीन है। सो ऐसा कर्मका बंध यथायोग्य शुभभाव भए होइ तब पीछैं उ
दय आवै सो प्रत्यक्ष देखिए है। अनेक उपाय करतैं भी कर्मका निमित्त बिना सामग्री मिलै नांही। बहुरि एक विषयकौं
छोडि अन्यका ग्रहण करै। ऐसैं झपटा मारै है सो कहा सिद्धि होइ है। जैसैं मणकी भूखवाले कौं कण मिल्या तौ कहा भू
ख मिटै है। तैसैं सर्वका ग्रहणकी जाकै इच्छा ताकै एक विषयका ग्रहण भएं इच्छा कैसैं मिटै है। इच्छा मिटै बिना सु
ख होता नांही। तातैं यहु उपाय झूठा है। कोऊ पूछै कि इस उपायतैं कोई जीव सुखी होते देखिए है। सर्वथा झूठ कैसैं क

झू

हो है। ताका समाधानः। सुखी तो न हो है। भ्रमतैं सुख मानै है। जो सुखी भया तो अन्य विषयनिकी इच्छा कैसैं रही। जैसैं रो-
ग मिटै अन्य औषधिकौं काहेकौं चाहै। तैसैं दुःख मिटै अन्य विषयनिकौं काहेकौं चाहै। तातैं विषयका ग्रहणकरि इ-
च्छा थंभि जाय तौ हम सुख मानैं। सो तौ यावत् जो विषय ग्रहण न होइ तावत् तौ तिस ही की इच्छा रहै। अर जिस समय वि-
षयका ग्रहण भया तिस ही समय अन्य विषयग्रहणकी इच्छा होती देखिए है। तौ यहु सुख मानना कैसैं है। जैसैं कोऊ महा-
क्षुधावान रंक ताकौं एक अन्नका कण मिल्या ताका भक्षण करि चैन मानै। तैसैं यहु महातृष्णावान याकौं एक विष-
यका निमित्त मिल्या ताका ग्रहण करि सुख मानै है। परमार्थतैं सुख है नाहीं॥ कोऊ कहै जैसैं कण कण करि अप-
नी भूख मेटै तैसैं एक एक विषयका ग्रहण करि अपनी इच्छा पूरन करै तौ दोष कहा। ताका उत्तर॥ जो कण भे-
ले होय तौ ऐसैं ही है। परंतु जब दूसरा [illegible] शा कण मिलै तब तिस कणका निर्गमन होय जाय तौ कैसैं भूख
मिटै। तैसैं ज्ञानविषै विषयनिका ग्रहण भेले होते जाय तौ इच्छा पूर्ण होय जाय। परंतु
जब दूसरा [illegible] विषयग्रहण करै तब पूर्वै विषयग्रहण कीया था ताका ज्ञान नां रहता नां-
ही तौ कैसैं इच्छा पूर्ण होइ। इच्छा पूरन भए विनां आकुलता मिटै नाहीं। आकुलता मिटें विनां सु-
ख कैसैं कह्या जाय। बहुरि एक विषयका ग्रहण भी मिथ्यादर्शनादिकका सद्भावपूर्वक करै है। ता-
तैं आगामी अनेक दुःखका कारन कर्म बंधै है। तातैं यहु वर्त्तमान [illegible] विषै सुख नाहीं। आगामी सुखका का-
रन नांही। तातैं दुःख ही है। सोई प्रवचनसार विषै कह्या है॥ सपरं बाधासहिदं विच्छिण्णं बंधकारणं विसमं॥
जं इंदिएहिं लद्धं तं सोक्खं दुक्खमेव तहा॥१॥ अर्थ॥ जो इंद्रियनिकरि पाया सुख सो पराधीन है॥

बाधासहित है विनासीक है। बंध का कारन है। कठिन है। सो ऐसा सुख तैसैं इ बहीहै। ऐसैं इस संसारी जीवनि करि कीया
उपाय झूठा जाननां। तौ सांचा उपाय कहा। जब इच्छा तौ दूरि होय अर सर्व विषयनि का युगपत ग्रहण रह्या करै। तब यहु
दुख मिटै सो इच्छा तौ मोह गए मिटै। अर सर्व का युगपत ग्रहण केवलज्ञान भए होइ सो इनि का उपाय सम्यग्दर्शनादि
है। सोई सांचा उपाय जाननां। ऐसैं तौ मोह के निमित्त तैं ज्ञानावरण दर्शनावरण का क्षयोपशम भी दुःखदायक है
ताका वर्णन कीया। इहां कोऊ कहै ज्ञानावरण दर्शनावरण का उदय तैं जाननां न भया ताकौं दुख का कारन कहौ। क्षयोप
शम कौं काहे कौं कहो हो। ताका समाधानः।। जो जाननां न होना दुख का कारण होय तौ पुद्गल कै भी दुख ठहरै तातैं दुख का मू
ल कारण तौ इच्छा है सो इच्छा क्षयोपशम ही तैं हो है। तातैं क्षयोपशम कौं दुख का कारन कह्या है। परमार्थ तैं क्षयोपशम भी
दुख का कारन नांही। जो मोह तैं विषय ग्रहण की इच्छा है सो ही दुख का कारन जाननां। बहुरि मोह का उदय है सो दुखरू
प है ही। कैसैं सो कहिए है। प्रथम तौ दर्शनमोह के उदय तैं मिथ्यादर्शन हो है। ताकरि जैसैं याकै श्रद्धान है तैसैं तौ पदा
र्थ है नांही। जैसैं पदार्थ है तैसैं यहु मानैं नांही। तातैं याकै आकुलता ही रहै जैसैं बाउला कौं काहू नैं वस्त्र पहराया। वह
वस्त्र कू बावला तिस वस्त्र कौं अपनां अंग जांनि आप कौं अर सरीर कौं एक मानैं। वह वस्त्र पहरावनेवाले कै आधीन। कबहू फारै
कबहू जोरै। कबहू षोसै कबहू नवा पहरावै। इत्यादि चरित्र करै। यहु बावला तिस कौं अपनें आधीन मानैं। [illegible]
[illegible] वाकी पराधीन क्रिया होय तातैं महाखेदखिन्न होइ। तैसैं इस जीव कौं कर्मोदय नैं शरीर संबंध क
राया यहु जीव तिस शरीर कौं अपनां अंग जांनि आप कौं अर शरीर कौं एक मानैं। वा शरीर कर्म कै आधीन। कबहू
कृश होइ कबहू स्थूल होय। कबहू नष्ट होय कबहू नवीन निपजै। इत्यादि चरित्र होइ। यहु जीव तिस कौं अपनैं आ

धीनमानैं।वाकीपराधीनक्रियाहोयतातैंमहाखेदखिन्नहोहै।बहुरिजैसैंजहांबावलातिष्ठ्याथातहांमनुष्यघोटकधनादि
ककहीतैंआनिउतरे।यहुबावलातिनिकौंअपनेजानैं।वैतौउनहीकेआधीनकोऊआवैकोऊजावै।कोऊअनेकअवस्था
रूपपरिणमैं।यहुबावलातिनिकौंआपनेआधीनमानैं।उनकीपराधीनक्रियाहोयतबखेदखिन्नहोइ।तैसैंयहुजीवजहांपर्या
यधरैतहांस्वयमेवपुत्रघोटकधनादिककहीतैंआनिप्राप्तभए।यहुजीवतिनिकौंअपनेजानैं।वेतौउनहीकेआधीनकोऊ
आवैकोऊजावै।कोऊअनेकअवस्थारूपपरिणमैं।यहुजीवतिनिकौंअपनैंआधीनमानैउनकीपराधीनक्रियाहोइतबखे
दखिन्नहोइ।इहांकोऊकहैकाहूकालविषैशरीरकीवापुत्रादिककीइसजीवकेआधीनभीतौक्रियाहोतीदेखिएहैतबतौ
सुखीहोहै।ताकासमाधान।शरीरादिककाभवितव्यकीअरजीवकीइछाकीविधिमिलैंकोईएकप्रकारिकोईजैसैंयहुचा
हैतैसैंपरिणमैंतातैंकाहूकालविषैवाहीकाविचारहोतैंसुखकासीआभासाहोइ।परंतुसर्वहीतौसर्वप्रकारकरियहु
चाहैतैसैंनपरिणमैं।तातैंअभिप्रायविषैअनेकआकुलतासदाकालिरह्वौहीकरै।बहुरिकोईकालविषैकोईप्र
कारइछाअनुसारिपरिणमतादेखिकरिकदाचियहुजीवशरीरपुत्रादिकविषैअहंकारममकारकरैहै।सोइसबुद्धिक
रितिनिकेउपजावनेंकीवाबधावनेंकीवारक्षाकरनेकीचिंताकरिनिरंतरव्याकुलरहैहै।नानाप्रकारकष्टसहिकरि
भीतिनिकाभलाचाहैहै।बहुरिजोविषयनिकीइछाहोहैकषायहोहै।बाह्यसामग्रीविषैइष्टअनिष्टपनोंमानैहै।
उपायअन्यथाकरैहै।सांचाउपायकौंनश्रद्दहैहै।अन्यथाकल्पनांकरैहै।सोइनिसबनिकामूलकारणएकमि
थ्यादर्शनहै।याकानासभएंसबनिकानाशहोइजाय।तातैंसबदुखनिकामूलयहुमिथ्यादर्शनहै।बहुरिइस
मिथ्यादर्शनकेनासकाउपायजीनांहीकरैहै।अन्यथाश्रद्धानकौंसत्यश्रद्धानमानैंउपायकाहेकौंकरैं।बहुरिसंज्ञी

६२ बहुरि इस संसारी कै एक यहु उपाय है कि आपकै जैसा श्रद्धान है तैसें पदार्थनि कौं परिणमाया चाहै। सो वै परिणमैं तौ याका सांचा
श्रद्धान होय जाय। ६

पंचेंद्रिय कै कदाचित तत्वनिश्चय करने कौं उपाय विचारै। तहां अभाग्यतें कुदेव कुगुरु कुशास्त्र का निमित्त बनैं तौ अत-
त्वश्रद्धान पुष्ट होइ जाय। आप तौ जानें इनतें मेरा भला होगा। वै ऐसा उपाय करैं जाकरि यहु अचेत होय जाय। वस्तुस्वरू-
पका विचार करने का उद्यमी भया था सो विपरीत विचार विषैं दृढ होय जाय। तब विषय कषाय की वासना वधनेतें अ-
धिक दुखी होइ। बहुरि कदाचित सुदेव सुगुरु सुशास्त्र का भी निमित्त बनि जाय तौ वहां तिनिका निश्चय उपदेश कौं
तौ श्रद्दहै नांही। व्यवहार श्रद्धान करि अतत्वश्रद्धानी ही रहै। तहां मंद कषाय होय वा विषय इच्छा घटै तौ थोरा दुखी होइ पी-
छै बहुरि जैसा का तैसा होइ जाय। तातैं यहु संसारी उपाय करै सो भी झूठा ही होय। परंतु अनादिनिधन वस्तु जुदे जुदे
अपनी मर्यादा लीएं परिणमैं हैं। कोऊ कोऊ कै आधीन नांही। कोऊ किसी का परिणमाया परिणमैं नांही। तिनिकौं
परिणमाया चाहै सो उपाय नांही। यहु तौ मिथ्यादर्शन ही है। तौ सांचा उपाय कहा है। जैसें पदार्थनिका स्वरूप है तैसें श्र-
द्धान होइ तौ सर्व दुख दूरि होइ जाय। जैसें कोऊ मोहित होइ मुरदा कौं जीवता मानैं। वा जिवाया चाहै तौ आप ही दुखी होइ है॥
बहुरि वाकौं मुरदा मानना। अर यहु जिवाया जीवैगा नांही ऐसा मानना। सो ही तिस दुख दूरि होने का उपाय है। तैसैं
मिथ्यादृष्टी होइ पदार्थनिकौं अन्यथा मानैं। अन्यथा परिणमाया चाहै तौ आप ही दुखी होइ है। बहुरि उनकौं यथार्थ मान-
ना। अर ए परिणमाए अन्यथा परिणमैंगे नांही। ऐसा मानना सो ही तिस दुख दूरि होने का उपाय है। भ्रमजनित दुख
का उपाय भ्रम दूरि करना ही है। सो भ्रम दूरि होने तें सम्यक्श्रद्धान होइ सो ही सत्य उपाय जानना। बहुरि चारित्रमोह-
के उदयतें क्रोधादिक कषायरूप वा हास्यादि नोकषायरूप जीव के भाव हो हैं। तब यहु जीव क्लेशवान होइ दुखी हो-
त संतौ विह्वल होइ नाना कार्यनि विषैं प्रवर्तै है। सो ही दिखाइए है। जब याकै क्रोध कषाय उपजै तब अन्य का बु-

[ना]करनेंकी इछा होइ। बहुरि ताकै अर्थि अनेक उपाय विचारै। मरमछेद गालिप्रदानादिरूप वचन बोलै। अपनें अं
गनिकरि वा सस्त्र पाषाणादिककरि घात करै। अनेक कष्ट सहनेंकरि वा धनादि खरचनेंकरि वा मरनादिकरि अ
पना भी बुरा करि अन्यका बुरा करनेंका उद्यम करै। अथवा औरनिकरि बुरा होता जानै तौ औरनिकरि बुरा करावै।
वाका स्वयमेव बुरा होय तौ अनुमोदना करै। वाका बुरा भएं अपना किछू भी प्रयोजन सिद्धि न होय तौ भी वाका बुरा
करै। बहुरि क्रोध होतैं कोई पूज्य वा इष्ट भी बीचि आवै तौ उनकौं भी बुरा कहै। मारनें लगि जाय किछू विचार रहता
नांही। बहुरि अन्यका बुरा न होइ तौ अपनें अंतरंगविषै आप ही बहुत संतापवान होय वा अपने ही अंगनिका घात
करै। वा विषयादिकरि मरि जाय। ऐसी अवस्था क्रोध होतैं हो है। बहुरि जब याकै मानकषाय उपजै
तब औरनिकौं नीचा वा आपकौं ऊंचा दिखावनेकी इछा होइ। बहुरि ताकै अर्थि अनेक उपाय विचारै। अन्यकी
निंदा करै आपकी प्रसंसा करै। वा अनेक प्रकारकरि औरनिकी महिमा मिटावै। आपकी महिमा करै। महाकष्ट
करि धनादिकका संग्रह कीया ताकौं विवाहादि कार्यनिविषै खरचै। वा देना करि भी खरचै। मूएं पीछैं हमारा जस
रहैगा ऐसा विचारि अपना मरन करिकैं भी अपनी महिमा वधावै। जो अपना सन्मानादि न करै ताकौं भयादिक दि
खाय दुख उपजाय अपना सन्मान करावै। बहुरि मान होतैं कोई पूज्य बड़े होंइ तिनिका भी सनमान न करै। किछू
विचार रहता नांही। बहुरि अन्य नीचा आप ऊंचा न दीसै तौ अपनें अंतरंगविषै आप बहुत संतापवान होय वा अप
नें अंगनिका घात करै वा विषादिकरि मरि जाय। ऐसी अवस्था मान होतैं हो है। बहुरि जब याकै मायाकषाय उप
जै तब छलकरि कार्य सिद्ध करनेंकी इछा होइ। बहुरि ताकै अर्थि अनेक उपाय विचारै। नानाप्रकार कपटके वचन कहै

कपटरूप अनेक की अवस्था करै। बाह्य वस्तुनिकौं अन्यथा करि बतावै। बहुरि जिनिविषै अपना मरन जानै ऐसे भी छ
ल करै। बहुरि कपट प्रगट भएं आपका बहुत बुरा होइ। मरनादिक होइ तिनिकौं भी न गिनै। बहुरि माया होतैं कोई पूज्य वा इष्ट
का भी संबंध बनै तौ उनसौं भी छल करै। किछू विचार रहता नांही। बहुरि छल करि कार्यसिद्धि न होइ तौ
आप बहुत संताप पावै। अपनै अंगनिका घात करै वा विषादि करि मरि जाय। ऐसी अवस्था माया होतैं हो है। बहुरि
जब याकै लोभ कषाय उपजै तब इष्ट पदार्थ का लाभ की इच्छा होइ। ताकै अर्थि अनेक उपाय विचारै। ताके साधनरूप वचन
बोलै। शरीर की अनेक चेष्टा करै। बहुत कष्ट सहै। सेवा करै। विदेशगमन करै। जाकरि मरन होता जानै सो भी कार्य
करै। घनां दुख जिनिविषै उपजै ऐसे प्रारंभ करै। बहुरि लोभ होतैं पूज्य वा इष्ट का भी कार्य होइ तहां भी अपना प्रयोजन स
साधै। किछू विचार रहता नांही। बहुरि जिस इष्ट वस्तु की प्राप्ति भई है ताकी अनेक प्रकार रक्षा करै है। बहुरि इष्ट वस्तु की प्रा
प्ति न होइ वा इष्ट का वियोग होइ तौ आप बहुत संतापवान होइ। अपनै अंगनिका घात करै वा विषादि करि मरि जाय।
ऐसी अवस्था लोभ होतैं हो है। ऐसे कषायनिकरि पीड़ित हूवा इनि अवस्थानिविषै प्रवर्तै है। बहुरि इनि कषायनि
की साथि नोकषाय हो है। तहां जब हास्य कषाय हो है तब आप विकसित होय प्रफुलित होइ सो ऐसा जानना। जैसे सं
निपातवाले का हसना। नाना रोग करि आप पीड़ित है। कोई कल्पना करि हसने लगि जाय है। ऐसे यहु जीव अनेक पीडा सहि
त है। कोई झूठी कल्पना करि आपकौं सुहावता कार्य मानि हर्ष मानै है। परमार्थतैं दुखी ही है। सुखी तौ कषायरोग मिटैं
वस्तु होगा। बहुरि जब रति उपजै है तब इष्ट विषै अति आसक्त हो है। जैसे बिल्ली मूसा कौं पकरि आसक्त हो है। कोऊ मारै
तौ भी न छोरै। सो इहां कठिनता करि पाया सो वियोग होने का अभिप्राय लीएं आसक्तता हो है तातैं दुखी है। बहुरि

जब अरति उपजै है। तब अनिष्ट वस्तु का संयोग पाइ महा व्याकुल होइ है। अनिष्ट का संयोग भया सो आपकौं सुहावता नां-
हीं सो इहु पीडा सही न जाय। तातैं ताका वियोग करनेकौं तरफै है सो दुख है। बहुरि जब सोक उपजै है तब इष्ट का वि-
योग वा अनिष्ट का संयोग होतैं अति व्याकुल होइ संताप उपजावै। रोवै पुकारै असावधान होइ जाइ अपना अंग घात
करै। मरि जाय। किछू सिद्धि नांहीं तौ भी आप ही महा दुखी होइ है। बहुरि जब भय उपजै है तब काहूकौं इष्ट वियोग अ-
निष्ट संयोग का कारन जानि डरै है। अति विह्वल होइ भागै वा छिपै वा शिथिल होइ जाइ। कष्ट होनेके ठिकानै प्राप्ति होइ
वा मरि जाय सो यहु दुखरूप ही है। बहुरि जुगुप्सा उपजै है तब अनिष्ट वस्तुकौं घृणा करै। ताका तौ संयोग भया। आ-
प घृणा करि भाग्या चाहै। के वाकूं दूरि कीया चाहै। खेदखिन्न होइ महा दुखकौं पावै है। बहुरि तीनौं वेदनि करि ज-
ब काम उपजै है। तब पुरुषवेद करि स्त्रीसहित रमनेकी। अर स्त्रीवेद करि पुरुषसहित रमनेकी। अर नपुंसक
वेद करि दोऊनिस्यों रमनेकी इछा हो है। तिस करि अति व्याकुल हो है। आताप उपजै है। निर्लज हो है धन खरचै है॥
अपजसकौं न गिनै है। परंपरा दुख होइ वा दंडादिक होय ताकौं न गिनै है। कामपीडा तैं बावला हो है मरि जाय है। प्रतक्ष
कामकरि मरणपर्यंत होते देखिए है। कामांधकै किछू विचार रहता नांही। पिता पुत्री वा मनुष्य तिर्यंचणी इत्यादि-
सौं रमने लगि जाय है। ऐसी काम की पीडा सो महा दुखरूप है। या प्रकार कषाय वा नोकषायनि करि अवस्था हो है। इहां
ऐसा विचार आवै है जो इन अवस्थानि विषै न प्रवर्त्तै तौ क्रोधादिक पीडै। अर इनि अवस्थानि विषै प्रवर्त्तै तौ म-
रन पर्यंत कष्ट होइ। तहां मरन पर्यंत कष्ट तौ कबूल करिए है। अर क्रोधादिक की पीडा सहनी न कबूल कीजि-
ए है। तातैं इहु निश्चय भया जो मरनादिकतैं भी कषायनि की पीडा अधिक है। बहुरि जब याकै कषाय
सो रसग्रंथनि मैं काम की दश दशा कही है। तहां बावला होना मरण होना लिख्या है। वैद्यक शास्त्रनि मैं ज्वर के भेदनि विषै कामज्वर मरन का कारन लिख्या है। ६४

कषाय उदय होय तब कषाय कीएं विनां रह्या जाता नांही। बाह्य कषायनिके कारन मिलै तौ उनकै आश्रय कषाय क-
रै। न मिलै तौ आप कारन बनावै। जैसें व्यापारादि कषायनिके कारन न होइ तौ जूवा खेलना वा अन्य क्रोधादिकके
कारन अनेक ख्याल खेलनां वा दुष्ट कथा कहनी सुननी। इत्यादि कारन बनावै। बहुरि काम क्रोधादि पीडै। सरीर विषै
तिनिरूप कार्य करनेकी शक्ति न होइ तौ औषधि बनावै अन्य अनेक उपाय करै। बहुरि कोई कारन बनै ही नांही तौ
अपने उपयोग विषै कषायनिके कारनभूत पदार्थनिका चितवन करि आप ही कषायनिरूप परिनमै। ऐसें य-
हु जीव कषायभावनिकरि पीडित हुवा महान दुषी हो है। बहुरि जिस प्रयोजन कौं लीएं कषायभाव भया है तिस
प्रयोजनकी सिद्धि होइ तौ यहु मेरा दुख दूरि होइ। अर मोकौं सुख होई। ऐसें विचारि तिस प्रयोजनकी सिद्धि होनेकै अ-
र्थि अनेक उपाय करनां सो तिस दुख दूरि होनेका उपाय मानै है। सो इहां कषायभावनितैं जो दुख हो है सो तौ सांचा ही
है। प्रत्यक्ष आप ही दुखी हो है। बहुरि ए उपाय करै है सो झूठे है। काहेतैं सो कहिए है। क्रोध विषै तौ अन्यका बुरा करनां।
मान विषै औरनिकौं नीचा करि आप ऊंचा होनां। माया विषै छल करि कार्य सिद्ध करनां। लोभ विषै इष्टका पावनां। हास्य
विषै विकसित होनेका कारन बन्या रहनां। रति विषै इष्ट संयोगका बन्या रहनां। अरति विषै अनिष्टका दूरि होनां। शो-
क विषै शोकका कारन मिटनां। भय विषै भयका कारन मिटनां। जुगुप्सा विषै जुगुप्साका कारन दूरि होनां। पुरुषवेद वि-
षै स्त्रीस्यों रमनां। स्त्रीवेद विषै पुरुषस्यों रमनां। नपुंसकवेद विषै दोऊनिस्यों रमनां। ऐसें ए प्रयोजन पाईए है। सो इ-
निकी सिद्धि होइ तौ कषाय उपशमनेतैं दुख दूरि होय जाय सुखी होइ। परंतु इनिकी सिद्धि इसके कीए उपायनिकै आ-
धीन नांही। भवितव्यकै आधीन है। जातैं अनेक उपाय करते देखिए है। बहुरि काकतालीय न्याय करि भवितव्य ऐसा
१ अर सिद्धि न हो है। बहुरि उपाय बनना भी अपने आधीन नांही। भवितव्यकै आधीन है। जातैं अनेक उपाय करनां विचारै अर एक भी उपाय न होता देषिए है। १

हो होइ। जैसा आपनां प्रयोजन होइ तैसा ही उपाय होइ। अर तातैं कार्य की सिद्धि नाहीं होइ जाय तौ तिस कार्य संबंधी कोई
कषाय का उपशम होइ। परंतु तहां थंभाव होता नांही। जावत कार्य सिद्ध न होता तावत तौ तिस कार्य संबंधी कषा
य था। जिस समय कार्य सिद्धि हूवा। तिस ही समय अन्य अन्य कार्य संबंधी कषाय होइ जाइ। एक समय मात्र भी नि
राकुल रहे नांही। जैसैं कोऊ क्रोधकरि काहू का बुरा विचारै था। वाका बुरा होइ चुक्या। तब अन्यसौं क्रोधकरि वाका बु
रा चाहने लग्या। अथवा थोरी शक्ति थी तब छोटे निका बुरा चाहै था। घनी शक्ति भई तब बडे निका बुरा चाहने लागा॥
ऐसैं ही मान माया लोभादिककरि जो कार्य विचार्या था सो सिद्ध होय चुक्या तब अन्य विषै मानादिक उपजाय तिसकी
सिद्धि किया चाहै। थोरी शक्ति थी तब छोटे कार्य की सिद्धि किया चाहै था। घनी शक्ति भई तब बडे कार्य की सिद्धि करने
का अभिलाष भया। कषायनि विषै कार्य का प्रमाण होइ तौ तिस कार्य की सिद्धि भए सुखी होइ जाय सो प्रमाण है नांही॥
इच्छा बधती जाइ। सोई आत्मानुशासन विषै कह्या है॥ ॥आशागर्तः प्रतिप्राणि यस्मिन्विश्वमणूपमं। कस्य किं
कियदायाति वृथा वो विषयैषिता॥१॥ याका अर्थ॥ आशारूपी खाडा प्राणी प्राणी प्रति पाइए है॥ अनंतानंत जीव है
तिनि सबनिकै आशा पाईए है। बहुरि वह आशारूपी कूप कैसा है। जिस एक खाडे विषै समस्त लोक अणु समान है।
अर लोक एक ही सो अब इहां कौनकै कहा कितना बटवारै आवै। तुम्हारै यहु विषयनि की इच्छा है सो वृथा ही है। इच्छा
सिद्धि पूर्ण तौ होती नांही। तातैं कोई कार्य पूर्ण भए भी दुख दूरि न होइ। अथवा कोई कषाय मिटै तौ तिस ही समय अन्य कषा
य होइ जाई। जैसैं काहूकौं मारनेंवाले बहुत होइ। तब वाकौं न मारै। तब अन्य मारनें लगि जाइ। जैसैं जीवकौं दुख
पावनेंवाले अनेक कषाय हैं। जब क्रोध न होइ तब मानादिक होइ जाइ। मान न होइ तब क्रोधादिक होइ जाइ। ऐसै

एक म
ऐसैं कषायका सद्भाव रह्या ही करै। कोई समय भी कषाय रहित होइ नांही। तातैं कोई कषायका कोई कार्य सिद्धि
ए भी दुख दूरि कैसैं होय बहुरि याकै अभिप्राय तौ सर्व कषायनिका सर्व प्रयोजन सिद्ध करनेका है सो होइ तौ सुखी हो-
इ सो तौ कदाचित होइ सकै नांही। तातैं अभिप्राय विषै सासता दुखी ही रहै है। तातैं कषायनिका प्रयोजनकौं साधि
दुख दूरि करि सुखी भया चाहै है सो यहु उपाय झूठा ही है। तौ सांचा उपाय कहा है। सम्यग्दर्शन ज्ञानतैं यथावत्
श्रद्धान वा जानना होइ तब [illegible] इष्ट अनिष्ट बुधि मिटै। बहुरि तिनिही के बलकरि चारित्रमोहका अनुभाग ही-
न होइ ऐसैं होतैं कषायनिका अभाव होइ। तब तिनकी पीडा दूरि होइ तब प्रयोजन भी किछू रहै नांही। निराकु-
ल होनेतैं महा सुखी होइ। तातैं सम्यग्दर्शनादिक ही इस दुख मेटनेका सांचा उपाय हैं। बहुरि अंतरायका उदय
तैं जीवकै मोहकरि दान लाभ भोग उपभोग वीर्य सक्तिका उत्साह उपजै परंतु होइ सकै नांही। तब परम
आकुलता होइ सो यहु दुखरूप है ही। याका उपाय यहु करै है जो विघ्नके बाह्य कारन सूझै तिनिकै दूरि
उपाय
करनेका उद्यम करै। सो यहु झूठा है। उपाय कीए भी अंतरायका उदय होतैं विघ्न होता देखिए है। अंतराय कर्म
का क्षयोपशम भए बिनां उपाय भी विघ्न होहै। तातैं विघ्नका मूल कारन अंतराय है। बहुरि जैसैं कूकराकै पुरुषकी
प्रेरी हुई लाठी की लागी। वह कूकरा लाठी स्यों वृथा ही द्वेष करै है। तैसैं जीवकै अंतरायकरि निमित्तभू-
त कीया बाह्य चेतन अचेतन द्रव्यकरि विघ्न भया। यहु जीव तिनि बाह्य द्रव्यनि स्यों वृथा द्वेष करै है। अन्य द्रव्य या-
कै विघ्न कीया चाहै अर याकै न होय। बहुरि अन्य द्रव्य विघ्न कीया ने चाहै अर याकै होइ तातैं जानिए है। अन्य
द्रव्यका किछू वस नांही जिनिका वस नांही तिनि स्यों काहे कौं लरिए तातैं यहु उपाय झूठा है। तौ सांचा उपाय कहा है।

मिथ्यादर्शनादिक करि इछा करि उत्साह उपजै था सो सम्यग्दर्शनादिक करि दूरि होइ। अर सम्यग्दर्शनादिक
करि अंतराय का अनुभाग घटै तब इछा तौ मिटि जाय शक्ति बधि जाइ तब वह दुख दूरि होइ निराकुल सुख उपजै।
तातैं सम्यग्दर्शनादिक ही सांचा उपाय है। बहुरि वेदनीय के उदयतैं दुख सुख कौ कारन का संयोग हो है। तहां केई तौ श
रीर विषै ही अवस्था हो है केई सरीर की अवस्था कौं निमित्तभूत बाह्य संयोग हो है केई बाह्य ही वस्तुनि का संयो
ग हो है। तहां असाता का उदय करि शरीर विषै तौ क्षुधा तृषा उस्वास पीडा रोग इत्यादि हो है। बहुरि सरीर की अनिष्ट
अवस्था कौं निमित्तभूत बाह्य अतिशीत उष्ण पवन बंधनादिक का संयोग हो है। बहुरि बाह्य शत्रु कुपुत्र आदिक वा
कुवर्णादिक सहित स्कंधनि का संयोग हो है। सो मोह करि इनि विषै अनिष्ट बुद्धि हो है। जब इनि का उदय होई तब
मोह का उदय ऐसा ही आवै जाकरि परिणामनि विषै महाव्याकुल होइ इनि कौं दूरि कीया चाहै यावत् ए दूरि न होइ
तावत् दुखी रहै। सो इनि कौं होतें तौ सर्व ही दुख मानै हैं। बहुरि साता के उदय करि शरीर विषै आरोग्यवानपनौ ब
लवानपनौं इत्यादि हो है। बहुरि शरीर की इष्ट अवस्था कौं निमित्तभूत बाह्य खानपानादिक वा सुहावनां पव
नादिक का संयोग हो है। बहुरि बाह्य मित्र सुपुत्र स्त्री किंकर हस्ती घोटक धन धान्य मंदिर वस्त्रादिक का संयोग हो
है। सो मोह करि इनि विषै इष्ट बुद्धि हो है। जब इनि का उदय होइ तब मोह का उदय ऐसा ही आवै जाकरि परिणाम
नि विषै चैन मानै इनि की रक्षा चाहै। यावत रहै तावत सुख मानैं सो यहु सुख मानना ऐसा है जैसे कोऊ घने रोगनि
करि बहुत पीडित होइ रह्या था। ताकै कोई उपचार करि कोई एक रोग की कितेक काल किछू उपशांतता भई तब व
ह पूर्व अवस्था की अपेक्षा आपकौं सुखी कहै। परमार्थतैं सुख है नाहीं। तैसैं यहु जीव घने दुखनि करि बहुत पीडित होइ रह्या था

अन्य वस्तु का स्वा
द लेने की वा स्पर्श
नादि करने की इच्छा
उपजै अथवा ...
करी वस्तु कौं प
हलै अन्य प्रका
र भोगवने की इ
च्छा होइ वा जाव
त मिलै तावत
वाकी आकुल
ता रहै अर वैसो
सतया आ उस
ही समय अन्य
प्रकार भोगवने
की इच्छा होइ जै
सें स्त्री [illegible] कौं
देख्या चाहै था सु
स समय अवलो
कन भया उसही
समय १२+

ताकै कोई प्रकार करि कोऊ कैं दुःख की किंतक काल किछू उपशांतता न होत्र वय कृ पूर्व अवस्था की अपेक्षा
आपकौं सुखी कहै। परमार्थतें सुख है नाहीं। तैसें [illegible] दुःखनि करि पीडित हो [illegible] कोई प्रकार
~~करि कोई दुःख की किंतेक काल किछू उपशांतता [illegible] पूर्व अवस्था की अपेक्षा आप कौं [illegible]~~
सुख है नाहीं। बहुरि याकौं असाता का उदय होतें जो होइ ता करि तौ दुःख भासै है। तातें ताकौं दूरि करने का उपाय करै है
असाता का उदय होतें जो होइ ता करि [illegible] सुख भासै है। तातें ताकौं होने का उपाय करै है। सो इहां उपाय झूठा है।
प्रथम तौ याका उपाय के आधीन नाहीं। वेदनीय कर्म का उदय के आधीन है। असाता के मेटने के अर्थि ताकी प्राप्ति
के अर्थि तौ सर्व ही के प्रयत्न रहै है। परन्तु काहू कै थोरा यत्न करतें भी वा न कीए भी सिद्धि होइ जाय। काहू कै बहुत यत्न
कीए भी सिद्धि न होइ। तातें जानिए है याका उपाय याके आधीन नाहीं। बहुरि कदाचित उपाय भी करै। अर भली
उदय आवै तौ थोरे काल किंचित काहू प्रकार की असाता का कारन मिटै। अर साता का कारन होइ तहां भी मोह के
सद्भाव तें तिनिकौं भोगवने की इच्छा करि आकुलित होय। एक भोग्य वस्तु कौं भोगवने की इच्छा होइ वा जावत न मिलै
तावत तौ वाकी इच्छा करि आकुल होइ। अर वह मिल्या अर उसही समै अन्य कौं भोगवने की इच्छा होइ जाइ तब ता करि
आकुल होइ। जैसें काहू कौं स्वाद लेने की इच्छा भई थी वाका आस्वाद जिस समय भया तिसही समय रमने की इच्छा होइ
है। बहुरि ऐसें भोग भोगवतें ही तिनि के उपाय करने की आकुलता हो है। तौ तिनकौं छोरि उपाय करने कौं लागै है। तहां
अनेक प्रकार आकुलता हो है। देखो एक धन का उपाय करने मैं व्यापारादि करतें बहुरि वाकी रक्षा करने मैं सावधानी
करतें केती आकुलता हो है। बहुरि क्षुधा तृषा शीत उष्ण मल श्लेष्मादि असाता का उदय आया ही करै। तिनि
~~[illegible]~~

निराकरण कौं सुष मानै है सो काहे का सुष है। यहु तौ रोग का प्रतीकार है। यावत क्षुधादिक रहै तावत तिनिकौ
मिटावने की इछा करि आकुलता होइ। वह मिटै तब कोई अन्य इछा उपजै। ताकी आकुलता होइ। बहुरि क्षुधादि
होइ तब उनकी आकुलता होइ आवै। ऐसैं याकै उपाय करतैं कदाचित असाता मिटि साता होइ तहां भी आकु
लता रह्या ही करै तातैं दुखी ही रहै है। बहुरि ऐसैं भी रहना तौ होता नांही। आपकौं उपाय करतें करतें ही कोई असाता
का उदै ऐसा आवै। ताका किछू उपाय बनि सकै नांही। अर ताकी पीडा बहुत होय सही जाय नांही तब ताकी आ
कुलता करि विह्वल होइ जाय। तहां महादुषी होइ। सोइ इस संसार मैं साता का उदय तौ कोई पुण्य का उदय करि
काहू कै कदाचित ही पाईए है। घने जीवनि कै बहुत काल असाता ही का उदय रहै है। तातैं उपाय करै है सो झूठा है। अ
थवा बाह्य सामग्री तैं सुष दुष मानिए है सो ही भ्रम है। सुष दुष तौ साता असाता का उदय होतैं मोह का निमित्त तैं हो है। प्र
त्यक्ष देखिए है। लक्ष धन का धनी कै सहस्र धन का व्यय भया तब वह तौ दुषी है। अर सत धन का धनी कै सहस्र धन
भया तब वह सुष मानै है। बाह्य सामग्री तौ याकै यातैं निन्याणवे गुणी है। अथवा लक्ष धन का धनी कै अधिक धन की
इछा है तौ वह दुखी है। अर सत धन का धनी कै संतोष है तौ यहु सुषी है। बहुरि समान वस्तु मिलें कोऊ सुष मानै है कोऊ दु
ख मानै है। जैसैं काहू कौं मोटा वस्त्र का मिलना दुषकारी होइ काहू कौं सुषकारी होइ। बहुरि सरीर विषै क्षुधा आदि
पीडा वा बाह्य इष्ट का वियोग अनिष्ट का संयोग भएं काहू कै बहुत दुष होइ काहू कै थोरा होइ काहू कै न होइ। तातैं
सामग्री कै आधीन सुष दुष नांही। साता असाता का उदय होतैं मोह परिणमन कै निमित्त तैं ही सुष दुष मानिए है। इ
हां प्रश्न जो बाह्य सामग्री की तौ तुम कहौ हौ तैसैं ही है। परंतु शरीर विषै तौ पीडा भएं दुखी होइ ही होइ पीडा न भएं सु

वी होइ। यहु तौ शरीर अवस्था ही कै आधीन सुषदुःष भासै है। ताका समाधान। आत्मा का तौ ज्ञान इंद्रियाधीन है। अ
रु इंद्रिय सरीर का अंग है। सो या मैं अवस्था बीतै ताकूं जानने रूप ज्ञान परिणमै ताकी साथि ही मोह भाव होय ता
करि शरीर अवस्था करि सुषदुःष विसेष जानिए है। बहुरि पुत्र धनादिक स्यौं अधिक मोह होइ तौ अपनां शरीर का क
ष्ट सहै। ताका थोरा दुःख मानै। उनकौं दुःख भएं वा संयोग मिटें बहुत दुःख मानै। अर मुनि हैं ते शरीर कौ पीडा होतैं भी किछू दुःष
मांनते नांही। तातैं सुषदुःष ही मानना मोह ही कै आधीन है। मोह कै अर वेदनीय कै निमित्तनैमित्तिक संबंध है। तातैं
साता असाता का उदय तैं सुषदुःष का होना भासै है। बहुरि मुख्यपनैं केतीक सामग्री साता कै उदय तैं हो है केतीक
असाता का उदय तैं हो है। ता करि सामग्रीनि करि सुषदुःष भासै है। परंतु निर्धार कीएं मोह ही तैं सुषदुःष का मानना
हो है। और निकरि सुषदुःष होने का नियम नांही। केवली कै साता असाता का उदय भी है। अर सुषदुःष कौं कारण सा
दूरि मग्री का भी संयोग है। परंतु मोह अभाव तैं किंचिन्मात्र भी सुष दुःष होता नांही। तातैं सुषदुःष ही मोहजनित मानना। तातैं तू सा
मग्री का दूरि करने का वा होने का उपाय करि दुःख मेट्या चाहै सुषी भया चाहै। सो यहु उपाय झूठा है। तौ सांचा उपाय क
हा है। सम्यग्दर्शनादिक तैं भ्रम दूरि होइ तब सामग्री तैं सुषदुःष भासै नांही। अपने परिणाम ही तैं भासै। बहुरि यथा
र्थ विचार का अभ्यास करि अपने परिणाम जैसैं सामग्री के निमित्त तैं सुषी दुःषी न होइ तैसैं साधन करै। बहुरि सम्यग्द
र्शनादि भावनां ही तैं मोह मंद होइ जाइ। तब ऐसी दशा होइ जाइ तो अनेक कारण मिलो आपकौं सुषदुःष होइ नां
ही। तब एक शांत दशारूप निराकुल होइ सांचा सुष कौं अनुभवै तब सर्व दुःख मिटै सुषी होइ। यहु सांचा उपाय है।
बहुरि आयु कर्म के निमित्त तैं पर्याय का धारना सो जीवितव्य है। पर्याय छूटना सो मरन है। बहुरि यहु जीव मिथ्याद

रन जानैं तिनिसौं बहुत डरै है। कदाचित उनका संयोग बनै तौ महा विह्वल होइ जाइ। असैं महा दुःखी रहै है। ताका उपाय यहु करै है जो म[illegible]

र्शनादिकतैं पर्याय ही कौं आपो अनुभवै है। तातैं जीवितव्य रहै अपना अस्तित्व मानै है। मरन भए अपना अभाव होना
मानै है। इस ही कारनतैं सदा काल याकै मरनका भय रहै है। तिस भय करि सदा आकुलता रहै है। जिनिकौं मरनका का
केकारन रनैं [illegible] कौं दूरि राखै है वा उनस्यौं आप भागै है वा औषधादिकका साधन करै है। गढ कोटादिक बनावै है। इत्यादि
उपाय करै है सो यहु उपाय झूठा है। जातैं आयु पूर्ण भयें तौ अनेक उपाय करै है। अनेक सहाई होइ तौ भी मरन होइ ही
होइ। एक समय मात्र भी न जीवै। अर यावत आयु पूरी है तावत् अनेक कारन मिलौ सर्वथा मरन न होइ। तातैं उपा
य कीएं मरन मिटता नांही। बहुरि आयुकी स्थिति पूर्ण होइ ही होइ। तातैं मरन भी होइ ही होइ। याका उपाय करना झूठा
है। तौ सांचा उपाय कहा है। सम्यग्दर्शनादिकतैं पर्याय विषै अहं बुद्धि छूटै। अनादिनिधन आप चैतन्य द्रव्य है ति
स विषै अहं बुधि आवै। पर्याय कौं स्वांग जानैं तब मरनका भय रहै नांही। बहुरि सम्यग्दर्शनादिक ही तैं सिद्धपद
तातैं सम्यग्दर्शनादिक करौ ६ पावै तब मरनका अभाव ही होइ। [illegible] सो सांचा उपाय है। बहुरि नामकर्मके उदयतैं गति जाति शरीरादिक निपजै है
तिनिविषै पुण्यके उदयतैं जे होइ ते तौ सुखके कारन हो हैं पापके उदयतैं होइ ते दुखके कारन हो हैं सो इहां सुख मान
नेका भ्रम है। बहुरि यहु दुख मिटावनेका सुखका कारन होनेका उपाय करै है सो झूठा है। सांचा उपाय सम्यग्दर्शनादि
क है। सो जैसैं वेदनीयका कथन करतैं निरूपण कीया तैसैं इहां भी जानना। वेदनीय अर नामकै सुखदुखकी समान
तातैं निरूपणकी समानता जाननी। बहुरि गोत्रकर्मके उदयतैं उंचा नीचा कुलविषै उपजै है। तहां उंचा कुल वि
षै उपजै आपकौं उंचा मानै। नीचा कुल विषै उपजै आपकौं नीचा मानै। सो कुल पलटनेका उपाय तौ याकौं भासै
नांही। तातैं जैसा कुल पाया तिस ही विषै आपा मानै है। सो कुल [illegible] अपेक्षा उंचा नीचा माननां भ्रम है। उंचा कु

ल का कोई निंद्य कार्य करै तौ वह नीचा होइ जाय। अर नीच कुल विषै कोई श्लाघ्य कार्य करै तौ वह ऊंचा होइ जाइ।
लोभादिकतैं नीच कुलवाले की उच्च कुलवाला सेवा करने लगि जाय। बहुरि कुल कितेक काल रहै है पर्याय छूटें कु-
ल की पलटनि होइ जाइ। तातैं ऊंचा नीचा कुल करि आपकौं नीचा ऊंचा मानै। ऊंचा कुलवाले कौं नीचा होनें के भयका
अर नीचा कुलवाले कूं पाया नीचपनें का दुख ही है। याका सांचा उपाय यहु ही है सम्यग्दर्शनादिकतैं ऊंचा नीचा कुल विषै
हरख विषाद न मानै। बहुरि तिनिही तैं जाकी बहुरि पलटनि न होइ। ऐसा सर्वतैं ऊंचा सिद्धपद पावै। तब सर्व दुख मिटै सु-
खी होइ। या प्रकार कर्म का उदय की अपेक्षा मिथ्यादर्शनादिकके निमित्ततैं संसार विषै दुख ही दुख पाईए है। ताका व-
र्णन कीया। अब इस ही दुखकौं पर्याय अपेक्षा करि वर्णन करिए है। इस संसार विषै बहुत काल तौ एकेंद्री पर्याय ही विषै
बीतै है। तातैं अनादिही तैं तौ नित्यनिगोद विषै रहना। बहुरि तहां तैं निकसना ऐसैं जैसैं भार भूंजनतैं चणा का उछटि
जाना सो तहां तैं निकसि अन्य पर्याय धरै तौ त्रस विषै तौ बहुत थोरा ही काल रहै। एकेंद्री ही विषै बहुत काल व्यतीत क-
रै है। तहां इतर निगोद विषै सो बहुत रहना होइ अर कितेक काल पृथ्वी अप तेज वायु प्रत्येक वनस्पती विषै रहना हो-
इ। नित्यनिगोदतैं निकसैं पीछैं त्रस विषै तौ उत्कृष्ट रहनेका काल साधिक दोय हजार सागर ही है। अर एकेंद्री विषै
उत्कृष्ट रहने का काल असंख्यात पुद्गलपरिवर्त्तन मात्र है। अर पुद्गलपरिवर्त्तन का काल ऐसा है जाका अनंतवां भा-
ग विषै भी अनंते सागर हो है। तातैं इस संसारी कैं मुख्यपनैं एकेंद्रिय पर्याय विषै ही काल व्यतीत हो है। तहां एकेंद्री-
य कै ज्ञानदर्शन की शक्ति तौ किंचिन्मात्र ही रहै है। एक स्पर्शन इंद्रिय के निमित्ततैं भया मतिज्ञान। अर ताके निमि-
त्ततैं भया श्रुतज्ञान। अर स्पर्शन इंद्रिय जनित अचक्षुदर्शन जिनिकरि शीत उष्णादिक कौं किंचित जानै देखै है।।

ज्ञानावरणदर्शनावरणके तीव्र उदय करि यातैं अधिक ज्ञान दर्शन न पाइए है। अर विषयनिकी इच्छा पाइए है
तातैं महादुखी है। बहुरि दर्शनमोहके उदयतैं। मिथ्यादर्शन होइ है ताकरि पर्याय ही कौं आपो सरदहै है। अन्य विचार क
रने की शक्ति ही नाहीं। बहुरि चारित्रमोहके उदयतैं तीव्र क्रोधादिक कषायरूप परिणमै है। जातैं उनकै केवली भग
वान कृष्ण नील कापोत ए तीन अशुभ लेश्या ही कही है। सो ए तीव्र कषाय होतैं ही होय है। सो कषाय तौ बहुत अर श
क्ति सर्व प्रकार करि महाहीन तातैं बहुत दुखी होय रहे है। किछू उपाय करि सकते नांही। इहां कोऊ कहै ज्ञान तौ किं
चिन्मात्र ही रह्या है वे कहा कषाय करै है। ताका समाधान। जो ऐसा तौ नियम है नांही जेता ज्ञान होइ तेता ही कषा
य होइ। ज्ञान तौ क्षयोपशम जेता होइ तेता होइ है। सो जैसें कोऊ आंधा बहरा पुरुषकै ज्ञान थोरा होतैं भी बहुत कषाय
होते देखिए है। तैसें एकेंद्रियकै ज्ञान थोरा होतैं भी बहुत कषायका होना मानना है। बहुरि बाह्य कषाय प्रगट तब
होइ है जब कषायकै अनुसारि किछू उपाय करै। सो वे शक्तिहीन है। तातैं उपाय करि सकते नांही।। तातैं उनकी क
षाय प्रगट नांही होइ है। जैसें कोऊ पुरुष शक्तिहीन है। ताकै कोई कारणतैं। तीव्र कषाय होइ परंतु किछू करि सकता नांही।
तातैं वाका कषाय बाह्य प्रगट नांही होइ है। वा ही अति दुखी होइ। तैसें एकेंद्रिय जीव शक्तिहीन है। तिनिकैं कोई कारणतैं कषा
य होइ है। परंतु किछू करि सकै नांही। तातैं उनकी कषाय बाह्य प्रगट नांही होइ है। वे ही आप दुखी होइ है। बहुरि ऐसा जानना
तहां कषाय बहुत होइ अर शक्ति हीन होइ तातैं एकेंद्रिय जीव महादुखी है। उनके दुख वे ही भोगवे है। अर केवली जानै है।
जैसें सन्निपातीका ज्ञान घटि जाय। अर बाह्य शक्तिहीनपनेतैं अपना दुख प्रगट भी न करि सकै। परंतु वह महादुखी
है। तैसें एकेंद्रियकै ज्ञान तौ थोरा है अर बाह्य शक्तिहीनपनातैं अपना दुखकौं प्रगट भी न करि सकै
है तहां घना दुख होइ है बहुरि जैसें कषाय घटता जाय शक्ति वधती जाइ तैसें दुख घटता होइ है सो एकेंद्रियकै कषाय बहुत अर शक्ति
हीन है

३थी४

21

है। परंतु महादुखी है। बहुरि अंतराय के तीव्र उदयकरि चाह्या होय नाहीं तातैं भी दुखी ही होहै। बहुरि अघा-
ति कर्मनि विषै विशेषपनैं पापप्रकृतिनि कौ उदय है। तहां असाता वेदनीय का उदय होतैं निमित्ततैं महादुखी
होहै। पवनतैं टूटै है। बहुरि शीत उष्णता करि सूकि जाय है। जल न मिलैं सूकि जाय है। अग्नि करि बलै
है। ताकौं कोऊ छेदै है। भेदै है मसलै है। खाय है। तोरै है। इत्यादि अवस्था हो है। ऐसें ही यथासंभव पृथ्वी आदि विषै
अवस्था हो है। तिनि अवस्था कौं होतैं वे महादुखी होहै। जैसैं मनुष्य के शरीर विषै ऐसी अवस्था भए दुख होहै
तैसैं ही उनकै होहै। जातैं इनका जानपना स्पर्शन इंद्रियतैं हो है सो उनकै स्पर्शन इंद्रिय है ही। ताकरि उन-
कौं जानि मोह के वशतैं महाव्याकुल होहै। परंतु भागनेकी वा लरनेकी वा पुकारनेकी शक्ति नाहीं। तातैं अज्ञा-
नी लोक उनके दुख कौं जानते नाहीं। बहुरि कदाचित् किंचित् साता का उदय होइ सो बलवान होता नाहीं॥
बहुरि आयुकर्मतैं इन एकेंद्रिय जीवनि विषै जे अपर्याप्त हैं तिनिकै तो पर्याय की स्थिति उस्वास के अठारहवें भाग
मात्र ही है। अर पर्याप्तनि की अंतर्मुहूर्त आदि कितेक वर्ष पर्यंत है। सो आयु थोरा तातैं जन्म मरण हूवा ही क-
रै। ताकरि दुखी है। बहुरि नामकर्म विषै तिर्यंच गति आदि पाप प्रकृतिनि ही का उदय विशेषपनैं पाईए है
कोई हीन पुण्यप्रकृति का उदय होइ ताका बलवानपना नाहीं। तातैं तिनिकरि भी मोह के वशतैं दुखी होहै। ब-
हुरि गोत्रकर्म विषै नीचगोत्र ही का उदय है। तातैं महंतता होती नाहीं। तातैं भी दुखी ही है। ऐसैं एकेंद्रिय जीव
महादुखी है। अर इस संसार विषै जैसैं पाषाण आधार विषै तौ बहुत काल रहै है। निराधार आकाश विषै तौ

कदाचित किंचिन्मात्र काल रहै। तातैं मैं जीव एकेंद्रिय पर्याय विषै बहुत काल रहै है। अन्य पर्याय विषै तौ क
दाचित किंचिन्मात्र काल रहै है। तातैं यहु जीव संसार विषै महादुखी है। बहुरि द्वींद्रिय त्रींद्रिय चतुरिंद्रिय
असंज्ञी पंचेंद्रिय पर्यायनिकौं जीव धरै तहां एकेंद्रियवत दुख जाननां। विशेष इहां क्रमतैं एक एक इं इतनां ३
द्रिय जनित ज्ञानदर्शन की वा किछू शक्ति की अधिकता भई है। बहुरि बोलने चालने की शक्ति भई है। तहां
४४ भी जे अपर्याप्त हैं वा पर्याप्त भी हीन शक्ति के धारक हैं। छोटे जीव हैं। तिनिकी शक्ति प्रगट होती नांही। बहुरि केई प्रगट ५
पर्याप्त बहुत शक्ति के धारक बडे जीव हैं। तिनिकी शक्ति प्रगट हो है। तातैं ते जीव विषयनिका उपाय करै हैं।
दुख दूरि होने का उपाय करै हैं। क्रोधादिकरि काटनां मारनां लरनां छल करनां अन्नादि का संग्रह करनां भाग
नां इत्यादि कार्य करै हैं। दुखकरि तडफडाट करनां पुकारनां इत्यादि क्रिया करै हैं। तातैं तिनिका दुख किछू प्रगट
भी हो है। सो लट कीडी आदि जीवनिकै सीत उष्ण छेदन भेदनादिकतैं वा भूख त्रषा आदितैं परम दुखी देखिए है। जो प्रत
क्ष दीसै ताका विचार करि लैनां। इहां विशेष कहा लिखैं। ऐसैं द्वींद्रियादिक जीवनिकै भी महादुखी जाननें। बहुरि
संज्ञी पंचेंद्रियनि विषै नारकी जीव हैं। ते तौ सर्वप्रकार घने दुखी हैं। ज्ञानादि की शक्ति किछू है। परंतु विषयनि
की इछा बहुत अर इष्ट विषयनि की सामग्री किंचित भी न मिलै। तातैं तिस शक्ति होने करि भी घने दुखी हैं। ब
हुरि क्रोधादि कषाय का अति तीव्रपनां पाइए है। जातैं उनकै कृष्णादि अशुभ लेश्या ही है। तहां क्रोध मान करि
परस्पर दुख देने का निरंतर कार्य पाइए है। जो परस्पर मित्रता करैं तौ दुख मिटि जाय। अर अन्यकौं दुख दीएं किछ

नका कार्य भी होता नांही। परंतु क्रोध मान का अति तीव्रपना पाईए है। ताकरि परस्पर दुख देनें की ही बुद्धि रहै है। विक्रिया
करी अन्य कौं दुखदायक शरीर के अंग बनावै वा शस्त्रादिक बनावै तिनिकरि अन्य कौं आप पीडै। अर आप कौं कोई और पी
डै। कदाचित कषाय उपशांत होइ नांही। बहुरि माया लोभ की भी अति तीव्रता है। परंतु कोई इष्ट सामग्री तहां दीसै
नांही। तातैं तिनि कषायनि का कार्य प्रगट करि सकते नांही। तिनिकरि अंतरंग विषै महा दुखी है। बहुरि कदाचि
त् किंचित कोई प्रयोजन पाय ईतिनिका भी कार्य होइ है। बहुरि हास्य रति कषाय है। परंतु बाह्य निमित्त नांही। तातैं प्र
गट होते नांही। कदाचित किंचित किसी कारणतैं हो है। बहुरि अरति सोक भय जुगुप्सा इनिके बाह्य कारन बनि रहे
है। तातैं ए कषाय प्रगट तीव्र हो है। बहुरि वेदनि विषै नपुंसक वेद है। सो इच्छा तौ बहुत अर स्त्री पुरुषस्यों रमने का
निमित्त नांही। तातैं महा पीडित है। ऐसे कषायनिकरि अति दुखी है। बहुरि वेदनीय विषै असाता ही का उदय है। ता
करि तहां अनेक वेदना का निमित्त है। शरीर विषै कोढ कास स्वासादि अनेक रोग युगपत पाईए है। अर क्षुधा तृषा
ऐसी है। सर्व का अन्न गिल्या चाहै है। अर तहां की माटी ही का भोजन मिलै है। सो माटी भी ऐसी है। जो इहां आवै तौ ता
की दुर्गंधतैं केई कोशनि के मनुष्य मरि जाय। अर शीत उष्णता तहां ऐसा है। लक्ष जोजन का लोह का गोला होइ सो भी तिनिकरि
भस्म होइ जाइ। कहीं शीत है कहीं उष्ण है। बहुरि पृथ्वी तहां शस्त्रनितैं भी महातीक्षण कंटकनिकरि सहित है। ब
हुरि तिस पृथ्वी विषै वन हैं सो शस्त्र की धारा समान पत्रादि सहित है। नदी है ताका स्पर्श भए शरीर षंड होइ जाइ
ऐसे जल सहित है। पवन ऐसा प्रचंड है। ताकरि शरीर दग्ध हूवा जाय है। बहुरि नारकी नारकी कौं अनेक प्रकार
पीडै। घाणी मैं पेलै। षंड षंड करै। हांडी मैं रांधै। कोरडा मारै। तप्त लोहादिक का स्पर्श करावै इत्यादि वेदना उपजावै

जैसैं पृथ्वी पर्यंत अनुक्रम आरे देनाये ते आपणी होहे। वा परस्पर लडावै। ऐसी वेदना होतैं भी शरीर छूटै नांही। पारावत की
ज्यौं खंड खंड होइ जाइ तौ भी मिलि जाय। ऐसी महापीडा है। बहुरि साता का निमित्त तौ किछू है नांही। कोई अंश कदाचित
कोई कै अपनी मानितैं कोई कारण अपेक्षा साता का उदय है। सो बलवान नांही। बहुरि आयु तहां बहुत। जघन्य दस ह
जार वर्ष। उत्कृष्ट तेतीस सागर। इतने काल ऐसे दुख तहां सहने होंइ। बहुरि नामकर्म की सर्व पापप्रकृतिनि ही का उद
य है। एक भी पुन्यप्रकृति का उदय नांही। तिनि करि महादुखी हैं। बहुरि गोत्र विषै नीचगोत्र ही का उदय है। ता करि मह
तता न होई। तातैं दुखी ही हैं। ऐसैं नरकगति विषै महादुख जानने। बहुरि तिर्यंचगति विषै बहुत लब्धिअपर्याप्त जीव हैं।
तिनि कै तौ उस्वास के अठारहवें भाग मात्र आयु है। बहुरि केई पर्याप्त भी छोटे जीव हैं। सो इन की शक्ति प्रगट भासै नां
ही। तिनि कै दुख एकेंद्रियवत जानने। ज्ञानादिक का विशेष है सो जानना। बहुरि बडे जीव केई सम्मूर्छन हैं। केई ग
र्भज हैं। तिनि विषै ज्ञानादिक प्रगट हो है। सो विषयनि की इच्छा करि आकुलित है। बहुतनि कौं तौ इष्ट विषय की प्राप्ति
नांही है। काहू कौं कदाचित किंचित हो है। बहुरि मिथ्यात्वभाव करि अतत्त्वश्रद्धानी होइ ही रहै हैं। बहुरि कषाय मु
ख्यपनैं तीव्र ही पाइए है। क्रोध मान करि परस्पर लरै हैं। भखै हैं। दुख देइ हैं। माया लोभ करि छल करैं हैं। वस्तु कौं
चाहै हैं। हास्यादिक करि तिनि कषायनि का कार्यनि विषै प्रवर्तै हैं। बहुरि काहू कै कदाचित मंदकषाय हो है। परंतु थो
रे जीवनि कै हो है। तातैं मुख्यता नांही। बहुरि वेदनीय विषै मुख्यपनैं असाता का उदय है। ता करि रोग पीडा क्षुधा तृषा छेदन भेद
न बहुत भार वहन शीत उष्ण अंगभंगादि अवस्था हो है। ता करि दुखी होते प्रतक्ष देखिए है। तातैं बहुत न कहा है।
काहू कै कदाचित किंचित साता का भी उदय हो है। परंतु थोरे जीवन कै हो है। मुख्यता नांही। बहुरि आयुकर्म तैं इ

78

आदि कोटि वर्ष पर्यंत है। तहां घने जीव तौ अल्प आयु के धारक होय हैं। तातें जन्म मरण का दुख पावे हैं। बहुरि भोगभूमियां की बड़ी आयु है। अर उनकै साता का भी उदय है। सो वै जीव थोरे हैं। बहुरि नामकर्म की मुख्यपनैं तौ तिर्यंचगति आदि पापप्रकृतिनि का ही उदय है। काहू कै कदाचित केई पुण्यप्रकृतिनि का भी उदय होय है। परंतु थोरे जीवनिकै थोरा हो है। मुख्यता नांही। बहुरि गोत्र विषै नीचगोत्र ही का उदय है। तातें हीन होय रहे हैं। ऐसैं तिर्यंचगति विषै महादुख जाननें। बहुरि मनुष्यगति विषै असंख्याते जीव तौ लब्धि अपर्याप्त हैं। ते सम्मूर्छन ही हैं। तिनकी तौ आयु उस्वास कै अठारहवें भाग मात्र है। बहुरि केई जीव गर्भ मैं आय थोरे ही काल मैं मरन पावै हैं। तिनकी तौ शक्ति प्रगट भासै नांही है। तिनिकै दुख एकेंद्रियवत जाननां। विशेष है सो विशेष जाननां। बहुरि गर्भजनिकै कितेक काल गर्भ मैं रहनां। पीछैं बाहिर निकसनां होय है। सो तिनिका दुख का वर्णन कर्म अपेक्षा पूर्वै वर्णन कीया है। तैसैं जाननां। वह सर्व वर्णन गर्भज मनुष्यनिकै संभवै है। अथवा तिर्यंचनिका वर्णन कीया है। तैसैं जाननां। विशेष यहु है। इहां कोई शक्ति विशेष पाईए है। इत्यादि विशेष जाननां। अथवा गर्भ आदि अवस्था के दुख प्रगट भासै है। जैसैं विष्टा विषै लट उपजै। तैसैं गर्भ मैं शुक्र सोणित का बिंदु कौं अपनां शरीररूप करि जीव उपजै। पीछैं तहां क्रमतैं ज्ञानादिक की वा शरीर की वृद्धि होइ। गर्भ का दुख बहुत है। संकोचरूप अधोमुख क्षुधा त्रषादि सहित तहां काल पूरन करै। बहुरि बाहिर निकसै तब बाल्य अवस्था मैं महा दुख हो है। कोऊ कहै बालिअवस्था मैं दुख थोरा है सो नांही है। शक्ति थोरी है। तातैं व्यक्त न होइ सकै है। पीछैं व्यापारादिक विषय इच्छा आदि दुखनि की प्रगटता हो है। इष्ट अनिष्ट जनित आकुलता रहबो ही करै। पीछैं वृद्ध होइ तब शक्तिहीन होइ जाइ तब परम दुखी हो है। सो ए दुख प्रत्यक्ष होते देखिए है। हम बहुत कहा कहैं। प्रत्यक्ष जाकौं न भासै सो कहा

वारा आदि कनिकै विशेषपना का उदय होय है वा ह त्रियादिकनिकै उच्चगोत्र का भी उदय होय है। बहुरि धन कुटंब आदिक का निमित्त विशेष पाईए है

कर्म सुनें। काहूकै कदाचित् किंचित् साताका उदय हो है सो आकुलतामय है। अर तीर्थंकरादि पद हैं ते मोक्षमार्ग पा-
ए बिना होइ नांही। ऐसैं मनुष्य पर्याय विषै दुखी ही है। एक मनुष्य पर्याय विषै कोई अपना भला होनेका उपाय करै तौ हो-
य सकै है। जैसें काना साठाका जड़ वा बाड़ तौ चूसने योग्य ही नांही। [struck through] अर बीचि की पो-
ली कानी सानी चूसी जाय नहीं। कोई स्वादका लोभी वाकौं बिगारै तौ बिगारौ। अर जो वाकौं बोइ दे तौ वाके बहुत सा-
ठे होइ। तिनिका स्वाद बहुत मीठा आवै। तैसें मनुष्य पर्याय का बालक वृद्धपनां तौ सुखयोग्य नांही। अर बीचकी अव-
स्था सो रोगक्लेशादि करि युक्त तहां सुख होइ सकै नांही। कोई विषय सुखका लोभी याकौं बिगारै तौ बिगारौ। अर
जो याकौं धर्म साधन विषै लगावै तौ बहुत उंच पदकौं पावै। तहां सुख बहुत निराकुल पाइए। तातैं इहां अपना हि-
त साधनां। सुख होने का भ्रमकरि वृथा न खोवनां। बहुरि देवपर्याय विषै ज्ञानादिककी शक्ति किछू औरनितैं विशे-
ष है। मिथ्या[struck through]त्वकरि अतत्व श्रद्धानी होइ रहे हैं। बहुरि तिनिकै कषाय किछू मंद है। तहां भवनवासी विंत-
र ज्योतिषकनिकै कषाय बहुत मंद नांही। अर उपयोग तिनिका चंचल बहुत अर किछू शक्ति भी है। सो कषायनि-
के कार्यनि विषै प्रवर्तै हैं। कुतूहल विषयादि कार्यनि विषै लगि रहे हैं। सो तिस आकुलताकरि दुखी ही हैं। बहु-
रि वैमानिकनिकै ऊपरि ऊपरि विशेष मंद कषाय हैं। अर शक्ति विशेष है। तातैं आकुलता घटनेतैं दुख भी घटता है।
इहां देवनिकै क्रोध मान कषाय है परंतु कारन थोरा है। तातैं तिनिकै कार्यकी गौणता है। काहूका बुरा करनां भ-
काहूकौं हीन करनां इत्यादि कार्य [illegible] निकृष्ट देवनिकै तौ कुतूहलादि करि होइ है। अर उत्कृष्ट देवनिकै थो- ६२
रा होइ है मुख्यता नांही। बहुरि माया लोभ कषायनिकै कारण पाइए है। तातैं तिनिके कार्यकी मुख्यता है॥

तातैं छलकरि मोहविषयसामग्रीकी हानि करनेका इत्यादि कार्य विशेष होते हैं। सो तौउ थोरे देवनिकै पाइए है। बहुरि हा-
स्य रति कषायके कार्य घने पाइए है तातैं इनका कार्यकी मुख्यता है। बहुरि अरति शोक भय जुगुप्सा इनके
कारन थोरे हैं। तातैं इनिके कार्यकी गौणता है। बहुरि स्त्रीवेद पुरुषवेदका उदय है। अर रमनेका भी निमित्त है।
सो काम सेवन करै हैं। ए भी कायके उपरि उपरि मंद है। अहमिंद्रनिकै वेदनिकी मंदताकरि कामसेवनका अभा-
व है। ऐसैं देवनिकै कषायभाव है। सो कषायही तैं दुख है। अर इनकै कषाय जेता थोरा है तितना दुख भी थोरा
है। तातैं औरनिकी अपेक्षा इनिकौं सुखी कहिए है। परमार्थतैं कषायभाव जीवै है ताकरि दुखी ही है। बहुरि वे-
दनीविषै साताका उदय बहुत है। तहाँ भवनत्रिककै थोरा है। वैमानिकनिकै उपरि उपरि विशेष है। इष्ट शरीर
की अवस्था स्त्री मंदिरादि सामग्री पाइए है। बहुरि कदाचित् किंचित् असाताका भी उदय कोई कारण करि हो
निकृष्ट देवनिकै। है। तहाँ किछू प्रगटनी है। अर उत्कृष्ट देवनिकै विशेष प्रगट नाही है। बहुरि आयु बड़ा है। जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृ-
ष्ट इकतीस सागर है। यातैं अधिक आयुका धारी मोक्षमार्ग पाए बिना होता नाहीं। सो इतना काल विषयसुख
विषै मग्न रहे हैं। बहुरि नामकर्मका देवगति आदि सर्व पुण्यप्रकृतिनिहीका उदय है। तातैं सुखका कारण है। अर गोत्रविषै उं-
चा गोत्रहीका उदय है। तातैं महंतपदकौं प्राप्त हैं। ऐसैं इनकै पुण्य उदयकी विशेषता करि इष्ट सामग्री मिलै है।
अर कषायनिकरि इच्छा पाइए है। तातैं तिनिके भोगवने विषै आसक्त होय रहे हैं। परंतु इच्छा अधिक ही रहे है। ता-
तैं सुखी होते नाहीं। ऊँचे देवनिकै उत्कृष्ट पुण्य उदय है कषाय बहुत मंद है। तथापि तिनिकै भी इच्छाका अभाव होता नां-
सर्वत्र हीं। तातैं परमार्थतैं दुखी ही है। ऐसैं संसारविषै दुख ही दुख पाइए है। ऐसैं पर्याय अपेक्षा दुख वर्णन कीया। अब इ-

स्व
आमर्ई इरवक मामामरूपक हि है। दुःख का लक्षण आकुलता है। सो आकुलता इच्छा होतैं होय है। सो इस संसारी जीव
कै इच्छा अनेक प्रकार पाइए है। एक तौ इच्छा विषय ग्रहण की है। सो देख्या जान्या चाहै। जैसैं वर्ण देखने की राग सु
नने की अव्यक्त कौं जानने की इत्यादि इच्छा हो है। सो इहां अन्य किछू पीड़ा नांही। परंतु यावत देखै जानै नांही। ताव
त महा व्याकुल होइ। इस इच्छा का नाम विषय है। बहुरि एक इच्छा कषायभावनि कै अनुसारि कार्य करने की है। सो
कार्य कीया चाहै। जैसैं बुरा करने की हीन करने की इत्यादि इच्छा हो है। सो इहां भी अन्य कोई पीड़ा नांही। परंतु यावत
वह कार्य न होइ तावत महा व्याकुल होइ। इस इच्छा का नाम कषाय है। बहुरि एक इच्छा पाप के उदयतैं शरीर विषै
बाह्य अनिष्ट कारन मिलैं तब उनके दूरि करने की हो है। जैसैं रोग पीड़ा क्षुधा आदि का संयोग भए उनके दूरि करने
की इच्छा हो है। सो इहां यहु ही पीड़ा मानै है। यावत वह दूरि न होइ तावत महा व्याकुल रहै। इस इच्छा का नाम पाप का
उदय है। ऐसैं इनि तीन प्रकार इच्छा [illegible] होतैं सर्व ही दुःख मानै है। सो दुःख ही है। बहुरि एक इच्छा बाह्य निमित्त बनै है। इनि
तीन प्रकार इच्छानि कै अनुसारि प्रवर्त्तने की इच्छा हो है। सो तीन प्रकार इच्छानि विषै एक एक प्रकार की इच्छा अ
नेक प्रकार है। तहां केई प्रकार इच्छा पूरन होने के कारन पुण्य उदयतैं मिलैं तिनिका साधन युगपत होइ सकै नांही।
तातैं एक कौं छोरि अन्य कौं लागै आगैं भी वाकौं छोरि अन्य कौं लागै। जैसैं काहू कै अनेक सामग्री मिली है। वह काहू
कौं देखै है। वाकौं छोरि राग सुनै है। वाकौं छोरि काहू का बुरा करने लगि [illegible] जाय। वाकौं छोरि भो
जन करै है। अथवा देखने विषै ही एक कौं देखि अन्य कौं देखै है। [illegible] ऐसैं ही अनेक कार्य
नि की प्रवृत्ति विषै इच्छा हो है। सो इस इच्छा का नाम पुण्य का उदय है। या [illegible] कौं जगत सुख मानै है। सो

संपूर्ण नांहीं दुखही है। काहूतैं प्रथम तीन प्रकार इच्छा पूरन होने के कारन काहू कै होय बनैं। अर कोई प्र-
कार इच्छा पूरन के कारन बनैं तौ युगपत तिनिका साधन न होइ। सो एक का साधन जहां तक न होइ तावत वाकी आकुलता
रहै है। वाका साधन भए उसही समय अन्य का साधन की इच्छा होइ। तब वाकी आकुलता होइ। एक समय भी निराकुल न
रहै। तातैं दुखी ही है। अथवा तीन प्रकार इच्छा रोग मिटावने की किंचित उपाय करै है। तातैं किंचित दुख घाटि हो है। सर्व दुख का
तौ नाश न होइ। तातैं दुखी ही है। ऐसे संसारी जीवनि कै सर्व प्रकार दुखी ही है। बहुरि इहां इतना जानना। तीन प्रकार इ-
च्छानि कर सर्व जगत पीडित है। अर चौथी इच्छा तौ पुण्य का उदय आए होइ सो पुण्य का बंध धर्मानुराग तैं होइ सो धर्मानु-
राग विषै जीव थोरा लागै। जीव तौ बहुत पाप क्रियानि विषै ही प्रवर्तै है। तातैं चौथी इच्छा कोई जीव कै कदाचित काल विषै ही
होइ है। बहुरि इतना जानना। जो समान इच्छावान जीवनि की अपेक्षा तौ चौथी इच्छावाला कै किछु तीन प्रकार इच्छा के घ-
टने तैं सुख कहिए है। बहुरि चौथी इच्छावाला की अपेक्षा महान इच्छावाला चौथी इच्छा वाला भी दुखी ही है। काहू कै बहुत वि-
भूति है। अर वाकै इच्छा बहुत है तौ वह बहुत आकुलतावान है। अर जाकै थोरी विभूति है। अर वाकै इच्छा थोरी है तौ व-
ह थोरा आकुलतावान है। अथवा काहू कै अनिष्ट सामग्री मिली है वाकै उसके दूरि करने की इच्छा थोरी है तौ वह थोरा
आकुलतावान है। बहुरि काहू कै इष्ट सामग्री मिली है। परंतु वाकै उनके भोगवने की वा अन्य सामग्री की इच्छा बहुत
है तौ वह जीव घना आकुलतावान है। तातैं सुखी दुखी होना इच्छा के अनुसार जानना। बाह्य कारन कै आधीन नांही है। ना-
रकी दुखी अर देव सुखी कहिए है सो भी इच्छा ही की अपेक्षा कहिए है। तातैं नारकीनि कै तीव्र कषायतैं इच्छा बहुत है। देव-
नि कै मंद कषायतैं इच्छा थोरी है। बहुरि मनुष्य तिर्यंच भी सुखी दुखी इच्छा ही की अपेक्षा जानने। तीव्र कषायतैं जाकै

42

इच्छा व आकुलतता ताकौं दुःखी कहिए है। मंद कषायतैं जाकै इच्छा थोरी ताकौं सुखी कहिए है। परमार्थतैं दुःखही घनां वा थोरा है
सुख नांही है। देवादिककौं भी सुखी मानिए है सो भ्रम है। उनकै चौथी कषायकी अधिकता है। तातैं आकुलित है। या प्रकार जो
इच्छा होय है तो मिथ्यात्व अज्ञान असंयमतैं होय है। बहुरि इच्छा है सो आकुलतामय है अर आकुलता है सो दुःख है। ऐसैं सर्व सं
सारी जीव नाना दुःखनिकरि पीडित होय रहे हैं। अब जिनि जीवनिकौं दुःखतैं छूटना होय सो इच्छा दूरि करनेका उपाय
करौ। बहुरि इच्छा दूरि तबही होय जब मिथ्यात्व अज्ञान असंयमका अभाव होय अर सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रकी प्रा
प्ति होय। तातैं इसही कार्यका उद्यम करना योग्य है। ऐसा साधन करतैं जेती जेती इच्छा मिटै तेता तेता दुःख दूरि होता
जाय। बहुरि जब मोहके सर्वथा अभावतैं सर्व इच्छाका अभाव होय तब सर्व दुःख मिटै। सांचा सुख प्रगटै। बहुरि ज्ञा
नावरण दर्शनावरण अंतरायका अभाव होय तब इच्छाका कारण क्षयोपशम ज्ञान दर्शनका वा शक्तिहीनपनांका भी
अभाव होय। अनंत ज्ञान दर्शन वीर्यकी प्राप्ति होय। बहुरि केतेक काल पीछैं अघातिकर्मनिका भी अभाव
होय तब इच्छाके बाह्य कारन तिनका भी अभाव होय। सो मोह गए पीछैं एकै काल किछू इच्छा उपजावनेकौं समर्थ थे
नाहीं मोह होतैं कारन थे तातैं कारन कहे हैं सो इनिका भी अभाव भया। तब सिद्धपदकौं प्राप्त होय है। तहां दुःखका वा दुःखके
कारननिका सर्वथा अभाव होनेतैं सदाकाल अनौपम्य अखंडित सर्वोत्कृष्ट आनंद सहित अनंतकाल विराजमा
न रहै हैं। सो ही दिखाइए है। ज्ञानावरण दर्शनावरणका क्षयोपशम होतैं (वा उदय होतैं) मोहकरि एक एक विषय देखनें जाननें
कौं इच्छाकरि महाव्याकुल होता था सो अब मोहका अभाव होतैं इच्छाका भी अभाव भया तातैं दुःखका अभा
व भया है। बहुरि ज्ञानावरण दर्शनावरणका क्षय होनैंतैं सर्व इंद्रियनिकौं सर्व विषयनिका युगपत ग्रहण भया

तातैं दुःखका कारण भी दूरि भया है। सो ही दिखाईए है जैसें नेत्रकरि एक विषयकौं देख्या चाहै था। अब त्रिकालवर्ती त्रिलो
कके सर्व वर्णनिकौं युगपत देखै है। कोऊ बिना देख्या रह्या नांही जाके देखनेकी इछा उपजै। ऐसैं ही स्पर्शनादिकरि
एक एक विषयकौं ग्रह्या चाहै था। अब त्रिकालवर्ती त्रिलोककै सर्व स्पर्श रस गंध शब्दनिकौं युगपत ग्रहै है। कोऊ बिना
ग्रह्या रह्या नांही। जाके ग्रहणकी इछा उपजै। इहां कोऊ कहै शरीरादिक बिना ग्रहण कैसैं होइ। ताका समाधान इंद्रिय
ज्ञान होतैं तौ द्रव्य इंद्रियादिक बिना ग्रहण न होता था। अब ऐसा स्वभाव प्रगट भया बिना ही इंद्रिय ग्रहण हो है। इहां कोऊ कहै जै
सैं मनकरि स्पर्शादिककौं जानिए है तैसैं जानना होता होगा। त्वचा जीभ आदिकरि ग्रहण हो है तैसैं न होता होगा। सो ऐसैं नां
ही है। मनकरि तौ स्मरणादि हो है तैसैं अस्पष्ट जानना किछू हो है। इहां तौ स्पर्श रसादिककौं जैसैं त्वचा जीभ इत्यादिककरि स्पर्शै
स्वादै सूंघै देखै सुनैं। जैसा स्पष्ट जानना हो है तिसतैं भी अनंत गुणा स्पष्ट जानना तिनिकै हो है। विशेष इतना भया है। वहां इं
द्रिय विषयका संयोग होतैं ही जानना होता था। इहां दूरि तिष्ठै भी वैसा ही जानना हो है। सो यहु शक्तिकी महिमा है। बहुरि मनकरि
किछू अतीत अनागतकौं वा अव्यक्तकौं जान्या चाहै था। अब सर्व ही अनादितैं अनंतकाल पर्यंत जे सर्व पदार्थनिके द्रव्य क्षेत्र
काल भाव तिनिकौं युगपत जानै है। कोऊ बिना जान्या रह्या नांही। जाके जाननेकी इछा उपजै। ऐसैं इनि दुःख अर दुःखके कारण
तिनिका अभाव जानना। बहुरि मोहके उदयतैं मिथ्यात्व वा कषाय भाव होते थे तिनिका सर्वथा अभाव भया। तातैं दुःखका अभाव भया।
बहुरि इनिके कारणनिका अभाव भया। तातैं दुःखके कारनका भी अभाव भया है। सो कारनका अभाव दिखाईए है। सर्व तत्त्व
यथार्थ प्रतिभासै अतत्त्वश्रद्धानरूप मिथ्यात्व कैसैं होइ। कोऊ अनिष्ट रह्या नांही। निंदक स्वयमेव अनिष्ट पावै ही है। आप क्रोध कौ नां
सौं करैं। सिद्धनितैं ऊंचा कोई है नांही। इंद्रादिक आप ही तैं नमै है। इष्ट पावै है। कौनसौं मान करै। सर्व भवितव्यता

सिगया। कार्य रह्या नांही। काहू स्यौं प्रयोजन रह्या नांही। काहू का लोभ न करै। कोई अन्य इष्ट रह्या नांही। कौन कारन तैं हास्य
होइ। कोऊ अन्य इष्ट प्रीति करने योग्य है नांही। इहां कहा रति करै। कोऊ दुखदायक संयोग रह्या नांही। कहां अरति करै।
कोऊ इष्ट अनिष्ट संयोग वियोग होता नांही। काहे का सोक करै। कोऊ अनिष्ट करनेवाला कारन रह्या नांही। कौन का भ
य करै। सर्व वस्तु अपने स्वभाव लीए भासै। आपकौं अनिष्ट नांही कहा जुगुप्सा करै। कामपीडा दूरि होने तैं स्त्री पुरुष उभय स्यौं रमने दूरि
का किछू प्रयोजन न रह्या नांही। काहे कौं पुरुष स्त्री नपुंसक वेदरूप भाव होइ। ऐसैं मोह उपजने के कारननि का अभाव जानना।
बहुरि अंतराय के उदय तैं शक्तिहीनपनां करि पूरन न होती थी। अब ताका अभाव भया। तातैं दुख का अभाव भया। बहु
रि अनंत शक्ति प्रगट भई। तातैं दुख के कारन का भी अभाव भया। ईहां कोऊ कहै दान लाभ भोग उपभोग तौ करते नां
हीं। इनकी शक्ति कैसैं प्रगट भई। ताका समाधान॥ ए कार्य रोग के उपचार थे। रोग ही नांही। तब उपचार काहे कौं करै।
तातैं इन कार्यनि का सद्भाव तौ नांही। अर इनिका रोकनहारा कर्म्म का अभाव भया। तातैं सक्ति प्रगट कहिए है। जैसैं
कोऊ नांही गमन कीया चाहै। ताकौं काहूनैं रोक्या था तब दुखी था। जब वाकै रोकना दूरि भया। अर कारिज के अर्थि गया
गमन भी न
चाहै था सो कार्य न रह्या। तब कीये। तब वाकै गमन न करतैं भी शक्ति प्रगटी कहिए। तैसैं ही इहां भी जानना। बहुरि ज्ञा
नादिकी शक्तिरूप अनंत वीर्य प्रगट उनकै पाईए है। बहुरि अघाति कर्मनि विषैं मोह तैं पापप्रकृतिनि का उदय होतैं दु
ख मानैं था। पुण्यप्रकृतिनि का उदय कौं सुख मानैं था। परमार्थ तैं आकुलता करि सर्व दुखही था। अब मोह के नास तैं सर्व आ
कारन
कुलता दूरि होने तैं सर्व दुख का नाश भया। बहुरि जिनि कारननि करि दुख मानैं था ते तौ सर्व नष्ट भए। अर जिनि करि किं
चित दुख दूरि होने तैं सुख मानैं था सो अब मूल ही मैं दुख रह्या नांही। तातैं तिनि दुख के उपचारनि का किछू प्रयोजन रह्या
नांही जो तिनि करि कार्य सिद्धि कीया चाहै। ताकी स्वयमेव ही सिद्धि होय रही है। इसही का विशेष दिखाईए है। वेद

नीयविषैं असाताका उदयतैं दुःखके कारन शरीरविषैं रोग क्षुधादिक होतैं तिनका अब शरीर ही नांही तब कहां होय। अर श-
रीरकी अनिष्ट अवस्थाकौं कारन आतापादिक थे सो अब शरीर बिना काकौं कारन होइ। अर बाह्य अनिष्ट निमित्त बनैं था
सो अब इनकै अनिष्ट रह्या ही नांही। ऐसैं दुःखका कारन तौ अभाव भया। बहुरि साताका उदयतैं किंचित् दुःख मेटनेके का-
रन औषधि भोजनादिक थे तिनिका प्रयोजन रह्या नांही। अर इष्ट कार्य पराधीन रह्या नांही। तातैं बाह्य भी आदिककौं
इष्ट माननेका प्रयोजन रह्या नांही। इनिकरि दुःख मेट्या चाहै था वा इष्ट कीया चाहै था सो अब संपूर्ण दुःख नष्ट भया। अ-
र संपूर्न इष्ट पाया। बहुरि आयुके निमित्ततैं मरन जीवन था। तहां मरनकरि दुःख मानैं था सो अविनाशी पद पाया। ता-
तैं दुःखका कारन रह्या नांही। बहुरि द्रव्यप्राणनिकौं धरैं कितेक काल जीवनैं मरनतैं सुख मानैं था। तहां भी नरक
पर्यायविषैं दुःखकी विशेषता करि तहां जीना न चाहै था। सो अब इस सिद्ध पर्यायविषैं द्रव्यप्राण बिना ही अपने चैतन्य
प्राणकरि सदा काल जीवैं हैं। अर तहां दुःखका लवलेश भी न रह्या है। बहुरि नामकर्मतैं अशुभ गति जाति आदि हो-
तैं दुःख मानैं था। सो अब तिनि सबनिका अभाव भया दुःख कहांतैं होइ। अर शुभ गति जाति आदि होतैं किंचित् दुःख दूरि
होनेतैं सुख मानैं था सो अब तिनि बिना ही सर्व दुःखका नाश अर सर्व सुखका प्रकाश पाइए है। तातैं तिनिका भी किछू
प्रयोजन रह्या नांही। बहुरि गोत्रके निमित्ततैं नीच कुल पाएं दुःख मानैं था सो ताका अभाव होनेतैं दुःखका कार-
न रह्या नांही। बहुरि उच्च कुल पाएं सुख मानैं था सो अब उच्च कुल बिना ही त्रैलोक्य पूज्य उच्च पदकौं प्राप्त हैं।
या प्रकार सिद्धनिकै सर्व कर्मके नाश होनेतैं सर्व दुःखका नाश भया है। दुःखका लक्षण तौ आकुलता है। सो आ-
कुलता तब ही होइ है जब इच्छा होइ। सो इच्छाका वा इच्छाके कारननिका सर्वथा अभाव भया। तातैं नि-

निराकुल होइ सर्व दुषरहित अनंत सुषकौं अनुभवै है। जातैं निराकुलपना ही सुषका लक्षण है। संसारविषैं नीके
ई प्रकार निराकुल न होइ सकै ही सुष मांनिए है। जहां सर्वथा निराकुल भया तहां सुष संपूर्ण कैसैं न मानिए
या प्रकार सम्यग्दर्शनादि साधनतैं सिद्धपद पाए सर्व दुषका अभाव हो है। सर्व सुष प्रगट हो है। अब इहां उपदेश
दीजिए है। हे भव्य हे भाई तौकूं संसारके दुष दिषाए ते तुझ विषैं बीतै है कि नांही। सो विचारि। अर तू उपाय करै है ते
झूठे दिषाए। सो ऐसैं ही है कि नांही। सो विचारि। अर सिद्धपद पाएं सुष होइ कि नांही। सो विचारि। जो तेरै प्रतीति जैसैं
कही है तैसैं ही आवै है। तौ तू संसारतैं छूटि सिद्धपद पावनेका हम उपाय कहै हैं सो करि विलंब मति करै। यह उपाय कि
ए तेरा कल्याण होगा॥ इति मोक्षमार्गप्रकाशक शास्त्रविषैं संसारदुषका वा मोक्षसुषका निरूपक तृतीयोधि
कार पूर्ण भया॥३॥ दोहा॥ इस भवके सब दुषनिके। कारन मिथ्याभाव। तिनिकी सत्ता नाश करि। प्रगटै मोक्ष उपा
व॥१॥ अब इहां संसारदुषनिके बीजभूत मिथ्यादर्शन मिथ्याज्ञान मिथ्याचारित्र हैं। तिनिका स्वरूप विशेष नि
रूपण कीजिए है। जैसैं वैद्य है सो रोगके कारननिकौं विशेष कहै तौ रोगी कुपथ्य सेवन न करै। तब रोगरहित होइ। तैसैं इ
हां संसारके कारननिका विशेष निरूपण करिए तौ संसारी मिथ्यात्वादिकका सेवन न करै। तब संसाररहित होइ।
तातैं मिथ्यादर्शनादिकनिका विशेष कहिए है। यह जीव अनादितैं कर्मसंबंध सहित है। याकै दर्शनमोहकै उ
दयतैं भया सो अतत्वश्रद्धान ताका नाम मिथ्यादर्शन है। जातैं तद्भाव तत्व। जो श्रद्धान करने योग्य अर्थ है। ताका जो भा
व स्वरूप ताका नाम तत्व है। तत्व नांही ताका नाम अतत्व है। सो अतत्व है सो असत्य है। तातैं जो इसहीका नाम मिथ्या
व हरि ऐसैं ही यह है। ऐसा प्रतीतिभाव ताका नाम श्रद्धान है। इहां श्रद्धानका नाम दर्शन है। यद्यपि दर्शनका नाम अर्थ

है।

सामान्य अवलोकन है। तथापि इहां प्रकरण के वशतैं इस ही धातु का अर्थ श्रद्धान जाननां। सो ऐसैं ही सर्वार्थसिद्धि नाम ग्रन्थ
की टीका विषै कह्या है। जातैं सामान्य अवलोकन संसार मोक्ष कौं कारन होइ नांही। श्रद्धान ही संसार मोक्ष कौं कारण है।
तातैं संसार मोक्ष का कारण विषै दर्शन का अर्थ श्रद्धान ही जाननां। बहुरि मिथ्यारूप जो दर्शन कहिए श्रद्धान ताका नाम मि-
थ्यादर्शन है। जैसैं वस्तु का स्वरूप नांही। तैसैं माननां। जैसैं है तैसैं न माननां। ऐसा विपरीताभिनिवेश कहिए विपरीत
अभिप्राय ताकौं लीए मिथ्यादर्शन हो है। इहां प्रश्न जो केवलज्ञान बिनां सर्व पदार्थ यथार्थ भासै नांही। यथार्थ भासै
बिनां यथार्थ श्रद्धान न होइ। तातैं मिथ्यादर्शन का त्याग कैसैं बनैं। ताका समाधान। पदार्थनिका जाननां न जाननां अन्यथा
जाननां तौ ज्ञानावरण के अनुसारि है। बहुरि प्रतीति हो है सो जानें ही हो है। बिना जानें प्रतीति कैसैं आवै। यह तौ सत्य है।
परन्तु जैसैं पुरुष है सो जिनिस्यौं प्रयोजन नांही। तिनिकौं अन्यथा जानौं वा यथार्थ जानौं। बहुरि जैसैं जानैं तैसैं ही मानौं। किछू
वाका बिगार सुधार है नांही। तातैं बाउला स्याना नाम पावै नांही। बहुरि जिनिस्यौं प्रयोजन पाईए है। तिनिकौं जो अन्यथा जानैं
अर तैसैं ही मानैं तौ बिगार होइ तातैं वाकौं बाउला कहिए। बहुरि तिनिकौं जो यथार्थ जानैं अर तैसैं ही मानै तौ सुधार होइ तातैं वा-
कौं स्याणा कहिए। तैसैं जीव है सो जिनिस्यौं प्रयोजन नांही तिनि कौं अन्यथा जानौं। वा यथार्थ जानौं। बहुरि जैसैं जानैं तैसैं श्रद्धा-
न करौ। किछू याका बिगार सुधार नांही। तातैं मिथ्यादृष्टी सम्यग्दृष्टी नाम पावै नांही। बहुरि जिनिस्यौं प्रयोजन पाईए
है तिनिकौं जो अन्यथा जानैं। अर तैसैं ही श्रद्धान करै तौ बिगार होइ। तातैं याकौं मिथ्यादृष्टी कहिए। बहुरि तिनिकौं जो
यथार्थ जानै। अर तैसैं ही श्रद्धान करै तौ सुधार होइ। तातैं याकौं सम्यग्दृष्टी कहिए। इहां इतनां जाननां। अप्रयोजनभूत
वा प्रयोजनभूत पदार्थनिका न जाननां। वा यथार्थ अयथार्थ जाननां जो होइ तामैं ज्ञान की हीनता अधिकता होनां इतनां

जीवका विगार सुधार है। ताका निमित्त तौ ज्ञानावरण कर्म है। बहुरि तहां प्रयोजनभूत पदार्थनिकौं अन्यथा वा यथार्थ श्र-
द्धान कीएं जीवका किछू और भी विगार सुधार होवै है। तातैं याका निमित्त दर्शनमोह नामा कर्म है। इहां कोऊ कहै जैसा जानै
तैसा श्रद्धान करै तातैं ज्ञानावरण ही कै अनुसारि श्रद्धान भासै है। इहां दर्शनमोहका विशेष निमित्त कैसें भासै। ताका समा-
धान। प्रयोजनभूत जीवादि तत्त्वनिका श्रद्धान करनें योग्य ज्ञानावरणका क्षयोपशम तौ सर्व संज्ञी पंचेंद्रीयनिकै भया है। प- नै
रंतु द्रव्यलिंगी मुनि ग्यारह अंग पर्यंत पढै। वा ग्रैवेयकके देव अवधिज्ञानादि युक्त है तिनिकै ज्ञानावरणका क्षयोपशम
बहुत होतैं भी प्रयोजनभूत जीवादिकका श्रद्धान न होय। अर तिर्यंचादिकके ज्ञानावरणका क्षयोपशम थोरा होतैं भी प्र-
योजनभूत जीवादिकका श्रद्धान होइ। तातैं जानिए है ज्ञानावरणही कै अनुसारि श्रद्धान नाहीं। कोई जुदा कर्म
है सो दर्शनमोह है। याकै उदयतैं जीवकै मिथ्यादर्शन होवै है। तब प्रयोजनभूत जीवादि तत्त्वनिका अन्यथा श्रद्धान
अप्रयोजनभूत ५९ करै है। इहां कोऊ पूछै कि प्रयोजनभूत पदार्थ कौन है। ताका समाधान। इस जीवकै प्रयोजन तौ एक यहु ही है। दुख न
होय सुख होय। अन्य किछू भी कोई ही जीवकै प्रयोजन है नाहीं। बहुरि दुखका न होना एक ही है। जातैं दुखका अभाव सो सुषका होना
ई सुख है। सो इस प्रयोजनकी सिद्धि जीवादिकका सत्य श्रद्धान कीएं होइ है। कैसें सो कहिए है। प्रथम तौ दुख दूरि करनें विषै आ- १०
पापरका ज्ञान अवश्य चाहिए। जो आपापरका ज्ञान न होइ तौ आपकौं पहचानें विना अपना दुख कैसें दूरि करै। अथवा
आपापरकौं एक जानि अपना दुख दूरि करनैं के अर्थि परका उपचार करै तौ अपना दुख दूरि कैसें होइ। अथवा आ-
पापर भिन्न अर यहु पर विषै अहंकार ममकार करै तातैं दुख ही होइ। तातैं आपापरका ज्ञान भएं ही दुख दूरि होइ है। ब-
हुरि आपापरका ज्ञान जीव अजीवका ज्ञान भएं ही होइ है। जातैं आप जीव है। शरीरादिक अजीव है। जो लक्षणादि-

तातैं बंधकौं जानना। बहुरि आस्रव का अभाव करना सो संवर है। याका स्वरूप न जानै तौ यावि(षै) प्रवर्त्तन करै तब आस्रव ही रहै।
तातैं वर्त्तमान वा आगामी दुःख ही है।

करि जीव अजीव की पहचानि होइ तौ आपा पर का भिन्नपना भासै। तातैं जीव अजीव कौं जानना। अथवा जीव अजी
व का ज्ञान न होइ जिनि पदार्थनि का अन्यथा श्रद्धानतैं दुःख हो था तिनिका यथार्थ ज्ञान होनेतैं दुःख दूरि होइ तातैं जीव अ
जीव कौं जानना। बहुरि दुःख का कारन तौ कर्मबंधन है। अर ताका कारन मिथ्यात्वादिक आस्रव है। सो इनिकौं न पहिचानै
इनिकौं दुःख का मूल कारन न जानै तौ इनिका अभाव कैसे करै। अर इनिका अभाव न करै तब कर्मबंधन होइ। तातैं कैसे
दुःखी होइ। अथवा मिथ्यात्वादिक भाव हैं सो दुःखमय हैं। सो इनकौं जैसे के तैसे न जानै तौ इनिका अभाव न करै तब
दुःखी रहै। तातैं आस्रवकौं जानना। बहुरि समस्त दुःख का कारन कर्मबंधन है। सो याकौं न जानै तब यातैं मुक्त होने का
उपाय न करै तब ताके निमित्ततैं दुःखी होइ। तातैं संवरकौं जानना। बहुरि कथंचित् किंचित् कर्मबंध का अभाव कर
ना ताका नाम निर्जरा है। सो याकौं न जानै तब याकी प्रवृत्ति का उद्यमी न होइ तब सर्वथा बंध ही रहै तातैं दुःख ही होइ। तातैं
निर्जरा का जानना। बहुरि सर्वथा सर्व कर्मबंध का अभाव होना ताका नाम मोक्ष है। सो याकौं न पहिचानै तौ याका उपाय
न करै तब संसार विषै कर्मबंधतैं निपजै दुःखनि ही कौं सहै तातैं मोक्षकौं जानना। ऐसें जीवादि सप्त तत्त्व जानने। बहुरि
शास्त्रादिकरि कदाचित् तिनिकौं जानै अरं भावरूप प्रयोजन की सिद्धि होइ है। तातैं जीवादिक पदार्थ हैं ते ई प्रयोजन
भूत जानने। बहुरि इनिके विशेष भेद पुण्य पापादिक रूप तिनिका भी श्रद्धान प्रयोजनभूत है। जातैं सामान्यतैं
विशेष बलवान है। ऐसें ए पदार्थ तौ प्रयोजनभूत हैं। तातैं इनिकौं यथार्थ श्रद्धान कीएं तौ दुःख न होइ सुख होइ। अर इनिकौं
यथार्थ श्रद्धान कीएं विना दुःख हो है। बहुरि इनि विनां अन्य पदार्थ हैं ते अप्रयोजनभूत हैं। जातैं तिनिकौं यथार्थ श्र
द्धान करौ वा मति करौ उनका श्रद्धान किछु सुख दुःख कौं कारन नाहीं। इहां प्रश्न उपजै है। जो पूर्वैं जीव अजीव पदार्थ क
हे ऐसें हो हैं। ऐसी प्रतीति न आइ तौ जाने कहा होइ तातैं तिनका श्रद्धान करना कारिजकारी है। ऐसैं जीवादि
तत्त्वनि का सत्य श्रद्धान कीए ही दुःख न होने का अ

इ तिनि विषै तौ सर्व पदार्थ आय गए। तिनि विना अन्य पदार्थ कौंन रहै जिनिकौ अप्रयोजनभूत कहै। ताका समाधान
पदार्थ तौ सर्व जीव अजीव विषै ही गर्भित हैं। परंतु तिनि जीव अजीवनिके विशेष बहुत हैं। तिनि विषै जिनि विशे
षनिकरि सहित जीव अजीवकौ यथार्थ श्रद्धान कीएं स्वपरका श्रद्धान होइ रागादिक दूरि करनेका श्रद्धान हो
इ तातैं सुख उपजै अयथार्थ श्रद्धान कीएं स्वपरका श्रद्धान न होइ। रागादिक दूरि करनेका श्रद्धान न होइ। तातैं
दुख उपजै तिनि विशेषनिकरि सहित जीव अजीव पदार्थ तौ प्रयोजनभूत जानने। बहुरि जिनि विशेषन सहित जी
व अजीवकौ यथार्थ श्रद्धान कीएं वा न कीएं स्वपरका श्रद्धान होइ वा न होइ। अर रागादिक दूरि करनेका श्रद्धान होइ
वा न होइ किछू नियम नांही। तिनि विशेषनिकरि सहित जीव अजीव पदार्थ अप्रयोजनभूत जानने। जैसैं जीव अर
शरीरका चैतन्य मूर्त्तत्वादि विशेषनिकरि श्रद्धान करना तौ प्रयोजनभूत है। अर मनुष्यादि पर्यायनिका वा घटप
टादिकका अवस्था आकारादि विशेषनिकरि श्रद्धान करना अप्रयोजनभूत है। ऐसैं ही अन्य जानने। या प्रकार करि प्रयोज
नभूत जीवादिक तत्व तिनिका अयथार्थ श्रद्धान ताका नाम मिथ्यादर्शन जानना। अब संसारी जीवनिकै मिथ्यादर्शनकी
प्रवृत्ति कैसैं पाईए है सो कहिए है। इहां वर्णन तौ श्रद्धानका करना है। परंतु जानै तब श्रद्धान करै तातैं जाननेकी मु
ख्यताकरि वर्णन करिए है। अनादितैं जीव है सो कर्मके निमित्ततैं अनेक पर्याय धरै है। तहां पूर्वपर्यायकौं छोरि न
वीन पर्याय धरै। बहुरि वह पर्याय है सो एक तौ आप आत्मा अर अनंत पुद्गलपरमाणूमय शरीर तिनिका एक पिं
ड बंधानरूप है। बहुरि जीवकै तिस पर्याय विषै यह मैं हौं ऐसैं अहंबुद्धि हो है। बहुरि आप जीव है ताका स्वभाव तौ
ज्ञानादिक है अर विभाव क्रोधादिक है। अर पुद्गलपरमाणूनिके वर्ण गंध रस स्पर्शादि स्वभाव है तिनि सबनि

को अपनां स्वरूप मानैं है ए मेरे हैं। ऐसैं ममबुद्धि होय है। बहुरि आप जीव है ताकै ज्ञानादिक की वा क्रोधादि की
अधिकहीनतारूप अवस्था होय है। अर पुद्गल परमाणूनि की वर्णादि पलटणरूप अवस्था होय है। तिनि सबनि
कौं अपनी अवस्था मानै है। ए मेरी अवस्था है ऐसैं ममबुद्धि करै है। बहुरि जीवकै अर शरीरकै निमित्त नैमित्ति
क संबंध है। तातैं जो क्रिया होय है। ताकौं अपनी मानै है। अपना दर्शन ज्ञान स्वभाव है। ताकी प्रवर्त्ति कौं निमित्तमा
त्र शरीरका अंगरूप स्पर्शनादि द्रव्य इंद्रिय हैं। यहु तिनिकौं एक मांनि ऐसें मानै है। जो हस्तादि स्पर्शनकरि
मैं स्पर्स्या। जीभकरि स्वाद्या। नासिकाकरि सूंघ्या नेत्रकरि देख्या। कानकरि सुन्या ऐसैं मानै है। मनोवर्गणारूप आठ पांखु
का फूल्या कमलकै आकारि हृदयस्थानविषै द्रव्यमन है। दृष्टिगम्य नाहीं ऐसा है। सो शरीर का अंग है। ताका नि
मित्त होतैं स्मर्णादिरूप ज्ञानकी प्रवृत्ति होय है। यहु द्रव्यमनकौं अर ज्ञानकौं एक मानि ऐसैं मानै है। मैं मनकरि जान्या। ब
हुरि अपनै बोलनेकी इच्छा होय है। तब अपने प्रदेशनिकौं जैसैं बोलना बनैं तैसैं हलावै। तब एकक्षेत्रावगाह सं
बंधतैं शरीरके अंग भी हालैं। ताकै निमित्ततैं भाषावर्गणारूप पुद्गल वचनरूप परिणमैं। यहु सबकौं एक मां
नि ऐसैं मानै जो मैं बोलां हों। बहुरि अपनै गमनादिक क्रियाकी वा वस्तुग्रहणादिककी इच्छा होइ तब अपने प्रदेशनि
कौं जैसैं कार्य बनैं तैसैं हलावै तब एकक्षेत्रावगाहतैं शरीरके अंग हालै तब वह कार्य बनैं। अथवा अपनी इच्छा विनां
शरीर हालै तब अपने प्रदेश भी हालै है। यहु सबकौं एक मांनि ऐसैं मानै मैं गमनादि कार्य करौं हों। वा वस्तु ग्रहौं हौं
वा मैं कीया है। इत्यादि रूप मानै है। बहुरि जीवकै कषायभाव होइ। तब शरीरकी ताकै अनुसारि चेष्टा होइ जा
इ। जैसैं क्रोधादिक भए रक्तनेत्रादि होइ जाइ। हास्यादि भए प्रफुल्लित वदनादि होइ जाइ। पुरुषवेदादि भए लिंगकी

दुःख

चिन्हादि होइ जाय। यहु सबकौं एक मानि ऐसा मानै। ए कार्य सर्व मैं करौं हौं। बहुरि शरीर विषै शीत उष्ण क्षुधा तृ
षा रोग इत्यादि अवस्था होइ। ताकै निमित्ततैं मोहभाव करि आप सुख दुःख मानै। इनि सबनिकौं एक जानि शीतादिककौं
वा सुख दुःखकौं अपनैं ही भए मानै है। बहुरि शरीरका परमाणूनिका मिलना बिछुरना आदि होनेकरि वा तिनकी अव
स्था पलटनेकरि वा शरीर स्कंधका खंडादि होनेकरि स्थूल कृशादिक वा बाल वृद्धादिक वा अंगहीनादिक होइ।
अर ताकै अनुसारि अपनैं प्रदेशनिका संकोच विस्तार होइ। यहु सबकौं एक मानि मैं स्थूल हौं। मैं कृश हौं मैं बाल
क हौं। मैं वृद्ध हौं। मेरे इनि अंगनिका भंग भया है। इत्यादिरूप मानै है। बहुरि शरीरकी अपेक्षा गतिकुलादिक होइ
तिनकौं अपने मानि मैं मनुष्य हौं। मैं तिर्यंच हौं। मैं क्षत्रिय हौं। मैं वैश्य हौं। इत्यादिरूप मानै है। बहुरि शरीर सं
योग होने छूटनेकी अपेक्षा जन्म मरण होई। तिनकौं अपना जन्म मरण मानि मैं उपज्या मैं मरूंगा ऐसा मानै है। ब
हुरि शरीरहीकी अपेक्षा अन्य वस्तुनिस्यौं नाता मानै है। जिनि करि शरीर निपज्या तिनिकौं आपके माता पिता मा
नैं है। जो शरीरकौं रमावै ताकौं अपनी रमनी मानै है। जो शरीर
करि निपज्या ताकौं अपना पुत्र मानै है। जो शरीरकौं उपगारी ताकौं मित्र मानै है। जो शरीरका बुरा करै। ताकौं
शत्रु मानै। इत्यादिरूप मानि हो है। बहुत कहा कहिए। जिस तिस प्रकार करि आप अर शरीरकौं एक ही मानै है।
इंद्रियादिकका नाम तौ इहां कह्या है। याकौं तौ किछू गम्य नाहीं। अचेत हूवा पर्यायविषै अहंबुद्धि धारै है। सो
कारन कहा है सो कहिए है। इस आत्माकै अनादितैं इंद्रियज्ञान है। ताकरि आप अमूर्तीक है सो तौ भासै
नाहीं। अर शरीर मूर्तीक है। सो ही भासै अर आत्मा काहूकौं आपा जानि अहंबुद्धि धारै ही धारै। सो आ

पुद्गलपरमाणू अनंत तिनिका समुदायरूप पर्याय विषैं ऐसैं अहंबुद्धि धारै है। बहुरि आपकै अर शरीरकै निमित्तनैमि-
त्तिक संबंध घना ताकरि भिन्नता भासै नाही। बहुरि जिस विचारकरि भिन्नता भासै सो मिथ्यादर्शनके जोरतैं हो-
इ सकै नाही। तातैं पर्याय ही विषैं अहंबुद्धि पाइए है। बहुरि मिथ्यादर्शनकरि यहु जीव कदाचित् बाह्य सामग्रीका
संयोग होतैं तिनिकौं भी अपना मानै है। पुत्र स्त्री धन धान्य हाथी घोरे मंदिर किंकरादि प्रत्यक्ष आपतैं भिन्न
अर सदाकाल अपने आधीन नाही। ऐसैं आपकौं भासै तौ भी तिनि विषैं ममकार करै है। पुत्रादिक विषैं ए है सो
मैं ही हौं। ऐसी भी कदाचित् भ्रमबुद्धि हो है। बहुरि मिथ्यादर्शनतैं शरीरादिकका स्वरूप अन्यथा ही भासै है। अनित्य
कौं नित्य मानै। भिन्नकौं अभिन्न मानै। दुःखकारनकौं सुखका कारन मानै। दुःखकौं सुख मानै। इत्यादि विपरीत भासै
है। ऐसैं जीव अजीव तत्त्वनिका अयथार्थ ज्ञान होतैं अयथार्थ श्रद्धान हो है। बहुरि इस जीवकै मोहके उदयतैं मि-
थ्यात्व कषायादिक भाव हो है। तिनिकौं अपना स्वभाव मानै है। कर्म उपाधितैं भए न जानै है। दर्शन ज्ञान उप-
योग अर ए आस्रवभाव तिनिकौं एक मानै है। जातैं इनिका आधार तौ एक आत्मा अर इनिका परिण-
मन एकै काल होइ। तातैं याकौं भिन्नपनौं न भासै। अर भिन्नपनौं भासनेका कारन जो विचार है। सो मिथ्यादर्शनके
बलतैं होइ सकै नाही। बहुरि ए मिथ्यात्व कषायभाव आकुलता लीए है। तातैं वर्तमान दुःखमय है। अर कर्मबंधके
कारन है। तातैं आगामी दुःख उपजावैंगे। तिनिकौं ऐसैं न मानै है। आप भला जानि इनि भावनिरूप होइ प्रवर्तै है।
बहुरि यहु दुःखी तौ आपनैं इनि मिथ्यात्व कषायभावनितैं होइ अर वृथा ही औरनकौं दुःख उपजावनहारे मानै।
जैसैं दुःखी तौ मिथ्याश्रद्धानतैं होइ अर अपने श्रद्धानके अनुसारि जो पदार्थ न प्रवर्तै ताकौ दुःखदायक मानै

नैं। बहुरि दुखी तौ क्रोधतैं होइ। अर जामैं क्रोध की प्राप्ति होइ ताकौं दुखदायक मानैं। दुखी तौ लोभतैं होइ।
अर इष्ट वस्तु की अप्राप्ति कौं दुखदायक मानैं। ऐसैं ही अन्य जाननां। बहुरि इनिकौ जैसा फल लागै तैसा न
भासै है। इनिकी तीव्रताकरि नरकादिक होइ है। मंदताकरि स्वर्गादिक होइ है। तहां घनी थोरी आकुलता होइ है सो भा
सै नांही तातैं बुरे न लागै है। कारन कहा है। ए आपके कीए भासै तिनिकौं बुरे कैसे मानै है। बहुरि ऐसैं आस्रव तत्त्व
का अयथार्थ ज्ञान होतें अयथार्थ श्रद्धान होइ है। बहुरि इनि आस्रव भावनिकरि ज्ञानावरणादि कर्मनि
का बंध होइ है। तिनिका उदय होतें ज्ञानदर्शन का हीनपनां होनां मिथ्यात्व कषाय रूप परिणमन होनां चाह्या न होनां
सुखदुख का कारन मिलनां। शरीर संयोग रहनां। गतिजातिशरीरादिक का निपजनां नीचा ऊंचा कुल पावनां
होई। सो इनके होने विषै मूल कारन कर्म है। ताकौं पहिचानै नांही। जातैं वह सूक्ष्म है। याकौं सूझता नांही। अ
र वह आपकौं इनि कार्यनिका कर्त्ता दीसै नांही। तातैं इनके होने विषै कै तौ आपकौं कर्त्ता मानै। कै
और
काहूकौं कर्त्ता मानैं। अर आपका वा अन्यका कर्त्तापनां न भासै तौ गहलरूप होइ भवितव्य मानैं। ऐसैं बं
ध तत्त्व का अयथार्थ ज्ञान होतैं अयथार्थ श्रद्धान होइ है। बहुरि आस्रव का अभाव होनां सो संवर है। जो
आस्रवकौं यथार्थ न पहिचानैं। ताकै संवर का यथार्थ श्रद्धान कैसे होइ। जैसैं काहूकै अहित आचरन है
वाकौं वह अहित न भासै तौ ताके अभावकौं हितरूप कैसैं मानै। जैसैं जीवकै आस्रवकी प्रवृत्ति है याकौं
यह अहित न भासै तौ ताकै अभावरूप संवरकौं कैसैं हित मानै। बहुरि अनादितैं इस जीवकै आस्रवभा
व ही भया। संवर कबहू न भया। तातैं संवर का होनां भासै नाही। संवर होतैं सुख होइ है सो भासै नांही

संवर तैं आगामी दुख न होसी सो ऐसें नांही। तातैं आस्रव का तौ संवर करै नांही। अर तिनि अनि पदार्थनि कौं दु
खदायक मानै है। तिनिही के न होने का उपाय किया करै है। सो वै अपने आधीन नांही। वृथा ही खेदखिन्न हो है। ऐसे
संवर तत्त्व का अयथार्थ ज्ञान न होतैं अयथार्थ श्रद्धान हो है। बहुरि बंध का एकदेश अभाव होना सो निर्जरा है। जो बं
यथार्थ ध कौं न पहिचानै ताकै निर्जरा का यथार्थ श्रद्धान कैसे होइ। जैसे भक्षण किया विषादिक तैं दुख हो
ना न जानै तौ ताके उगालने का उपाय कौं कैसें भला जानै। तैसें बंधनरूप कीये कर्मनि तैं दुख होना न जानै तौ
तिनिकी निर्जरा का उपाय कौं कैसें भला जानै। बहुरि इस जीव कै इंद्रियनि तैं सूक्ष्मरूप जे कर्म
तिनिका तौ ज्ञान होता नांही। बहुरि तिनि विषै दुःख कूं कारनभूत शक्ति है। ताका ज्ञान नांही। तातैं अन्य पदा
र्थनि ही के निमित्त कौं दुखदायक जानि तिनि का ही अभाव करने का उपाय करै है। सो अपने आधीन नांही।
बहुरि कदाचित दुख दूरि करने के निमित्त कोई इष्ट संयोगादि कार्य बनै है। सो वह भी कर्म कै अनुसारि बनै है
तातैं तिनिका उपाय करि वृथा ही खेद करै है। ऐसें निर्जरा तत्त्व का अयथार्थ ज्ञान होतें अयथार्थ श्रद्धान हो
है। बहुरि सर्व कर्मबंध का अभाव ताका नाम मोक्ष है। जो बंध कौं वा बंधजनित सर्व दुखकौं न पहचानै। ताकै मो
क्ष का यथार्थ श्रद्धान कैसें होइ। जैसें काहू कै रोग है। वह तिस रोग कौं वा रोगजनित दुख कौं न जानै तौ सर्वथा रो
ग के अभाव कौं कैसें भला जानै। तैसें याकै कर्मबंधन है। यह तिस बंधन कौं वा बंधजनित दुख कौं न जानै तौ सर्वथा
बंध के अभाव कौं कैसें भला जानै। बहुरि इस जीव कै कर्मनि का वा तिनिकी शक्ति का तौ ज्ञान नांही। तातैं बा
ह्य पदार्थनि कौं दुख का कारन जानि तिनिका सर्वथा अभाव करने का उपाय करै है। अर यह तौ जानै सर्वथा दुख

दूरि होनेका कारन इष्ट सामग्रीनिकौं मिलाय सर्वथा सुखी होगा। सो कदाचित होइ सकै नांही। यहु वृथा ही खेद करै है
ऐसें मिथ्यादर्शनतैं मोहतत्त्वनिका अयथार्थज्ञान होतें अयथार्थ श्रद्धान है। याप्रकार यहु जीव मिथ्या-
दर्शनतैं जीवादि सप्त तत्त्व प्रयोजनभूत हैं तिनिका अयथार्थ श्रद्धान करै है। बहुरि पुण्य पाप है ते इनिही
के विशेष हैं सो इनि पुण्यपापनिकी एक जाति है। तथापि मिथ्यादर्शनतैं पुण्यकौं भला जानै है। पापकौं
बुरा जानै है। पुण्यकरि अपनी इच्छाकै अनुसारि किंचित कार्य बनै ताकौं भला जानै है पापकरि इच्छा-
कै अनुसारि कार्य न बनै ताकौं बुरा जानै। सो दोऊं ही आकुलताके कारन है तातैं बुरे ही है। बहुरि यहु अ-
पनी मांनितैं तहां सुख दुख मांनै है। परमार्थतैं जहां आकुलता है तहां दुख ही है। तातैं पुण्यपापके उदयकौं भला
बुरा जानना भ्रम ही है। बहुरि कोई जीव कदाचित पुण्यपापके कारन जे शुभ अशुभ भाव तिनिकौं भले बुरे
जानै है सो भी भ्रम ही है। जातैं दोऊ ही कर्मबंधनके कारन हैं। ऐसें पुण्यपापका अयथार्थज्ञान होतैं अयथार्थ श्रद्धा-
न हो है। याप्रकार अतत्त्वश्रद्धानरूप मिथ्यादर्शनका स्वरूप कह्या। यहु असत्यरूप है तातैं याहीका नाम मि-
थ्यात्व है। बहुरि यहु सत्यश्रद्धानतैं रहित है। तातैं याहीका नाम अदर्शन है। अब मिथ्याज्ञानका स्वरूप कहिए है
प्रयोजनभूत जीवादि तत्त्वनिका अयथार्थ जानना। ताका नाम मिथ्याज्ञान है। ताकरि तिनिके जाननेंविषैं संशय
विपर्यय अनध्यवसाय हो है। तहां ऐसें है कि ऐसें है। ऐसा परस्पर विरुद्धता लीए दोयरूप ज्ञानताका नाम संश-
य है। जैसें मैं आत्मा हौं कि शरीर हौं। ऐसा जानना। बहुरि ऐसें ही है। ऐसें वस्तुस्वरूपतैं विरुद्धता लीए एकरूप ज्ञा-
नताका नाम विपर्यय है। जैसें मैं शरीर हूं ऐसा जानना। बहुरि किछू है ऐसा निर्धाररहित विचार ताका नाम

कैसैं न कहिए। ताका समाधान — जहां जानने ही का साचा झूठा निर्धार करने का प्रयोजन होइ, तहां तौ कोई पदार्थ है ताका सांचा झूठा

अनध्यवसाय है। जैसे मैं कोई है। ऐसा जानना। या प्रकार प्रयोजनभूत जीवादि तत्त्वनि विषैं संशय विपर्यय अनध्यवसायरूप जो जानना होइ। ताका नाम मिथ्याज्ञान है। बहुरि अप्रयोजनभूत पदार्थनिकौं यथार्थ जानै वा अयथार्थ जानै। ताकी अपेक्षा मिथ्याज्ञान सम्यग्ज्ञान नाम नाही है। जैसे मिथ्यादृष्टी जेवरीकौं जेवरी जानी तौ सम्यग्ज्ञान नाम न होई। अर सम्यग्दृष्टी जेवरीकौं सांप जानैं तौ मिथ्याज्ञान नाम न होइ। इहां प्रश्न जो प्रत्यक्ष सांचा झूठा ज्ञानकौं मिथ्याज्ञान सम्यग्ज्ञान नाम पावै है। जैसे प्रत्यक्ष परोक्ष प्रमाण का वर्णन विषै कोई पदार्थ है। ताका सांचा जानने रूप सम्यग्ज्ञान का ग्रहण कीया है। संशयादि रूप जाननेकौं अप्रमाणरूप मिथ्याज्ञान कह्या है। बहुरि इहां संसार मोक्ष के कारनभूत सांचा झूठा जानने का निर्धार करनौं है। सो जेवरी सर्पादिक का यथार्थ वा अन्यथा ज्ञान संसार मोक्ष का कारन नांही। तातैं तिनिकी अपेक्षा इहां मिथ्याज्ञान सम्यग्ज्ञान न कह्या। इहां प्रयोजनभूत जीवादिक तत्त्वनि ही का जानने की अपेक्षा मिथ्याज्ञान सम्यग्ज्ञान कह्या है। इस ही अभिप्राय करि सिद्धांत विषै मिथ्यादृष्टी का तौ सर्व जानना मिथ्याज्ञान ही कह्या अर सम्यग्दृष्टी का सर्व जानना सम्यग्ज्ञान कह्या। इहां प्रश्न जो मिथ्यादृष्टी कै जीवादि तत्त्वनि का अयथार्थ जानना है। ताकौं मिथ्याज्ञान कहै। जेवरी सर्पादिक के यथार्थ जानने कौं तौ सम्यग्ज्ञान कहै। ताका समाधान। मिथ्यादृष्टी जानै है तहां वाकै सत्ता असत्ता का विशेष नांही है। तातैं कारणविपर्यय वा भेदाभेदविपर्ययकौं उपजावै है। तहां जाकौं जानै है ताका मूल कारनकौं न पहिचानै। अन्यथा कारण मानै सो तौ कारणविपर्यय है। बहुरि जाकौं जानै ताका मूल वस्तु तत्त्वरूप स्वरूप ताकौं न पहिचानै। अन्यथा स्वरूप मानै सो स्वरूपविपर्यय है। बहुरि जाकौं जानै ताकौं यहु इनितैं भिन्न है इनितैं अभिन्न है। ऐसा न पहिचानै। अन्यथा भिन्न अभिन्नपनौं मानै सो भेदाभेदविपर्यय है। ऐसैं मिथ्यादृष्टी कै जानन

वा स्वरूपविपर्यय

जाननेकी अपेक्षा मिथ्याज्ञान सम्यग्ज्ञान

ता

नें विषै विपरीतता पाइए है। जैसैं भ्रमितवाला माकौं भार्या मानैं। भार्या कौं माता मानैं। तैसें मिथ्यादृष्टी कै अन्यथा जानना हो है। बहुरि जैसें काहू काल विषै भ्रमतवाला माता कौं माता वा भार्या कौं भार्या भी जानै तौ भी वाकै निश्चयरूप निर्धार करि श्रद्धान लीए जानना न हो है। तातैं वाकै यथार्थ ज्ञान न कहिए। तैसैं मिथ्यादृष्टी काहू काल विषै किसी पदार्थ कौं सत्य भी जानैं तौ भी वाकै निश्चयरूप निर्धार करि श्रद्धान लीए जानना न हो है। अथवा सत्य भी जानै। परंतु तिनि करि अपना प्रयोजन तौ अयथार्थ ही साधै। तातैं वाकै सम्यग्ज्ञान न कहिए। ऐसा मिथ्यादृष्टी कै ज्ञान कौं मिथ्याज्ञान कहिए है। इहां प्रश्न जो इस मिथ्याज्ञान का कारन कौन है। ताका समाधान। मोह के उदय तैं जो मिथ्यात्व भाव होइ सम्यक्त न होइ सो इस मिथ्याज्ञान का कारन है। जैसैं विष के संयोग तैं भोजन भी विषरूप कहिए। तैसें मिथ्यात्व के संबंध तैं ज्ञान है सो मिथ्याज्ञान नाम पावै है। इहां कोऊ कहै ज्ञानावरण का निमित्त क्यों न कहौ। ताका समाधान। ज्ञानावरण के उदय तैं तौ ज्ञान का अभावरूप अज्ञानभाव हो है। बहुरि क्षयोपशम तैं किंचित ज्ञानरूप मति आदि ज्ञान होइ है। जो इनि विषै काहू कौं मिथ्याज्ञान काहू कौं सम्यग्ज्ञान कहिए तौ ए दोऊ ही भाव मिथ्यादृष्टी वा सम्यग्दृष्टी कै पाइए है। तातैं तिनि दोऊनि कै मिथ्याज्ञान सम्यग्ज्ञान का सद्भाव होइ जाइ। तौ सिद्धांत विषै विरुद्ध होइ। तातैं ज्ञानावरण का निमित्त बनै नाहीं। बहुरि इहां पूछै कि जेवरी सर्पादिक का अयथार्थ ज्ञान का कौन कारन है। तिस ही कौं जीवादि तत्त्वनि का अयथार्थ यथार्थ ज्ञान का कारन कहौ। ताका उत्तर जो जाननें विषै जेता अयथार्थपना हो है। तेता तौ ज्ञानावरण का उदय तैं हो है। अर यथार्थपना हो है तेता ज्ञानावरण का क्षयोपशम तैं हो है। जैसैं जेवरी कौं सर्प जान्या सो यथार्थ जानने की शक्ति का बाधक उदय तैं तातैं अयथार्थ जानै है। बहुरि जेवरी कौं जेवरी जानी। यथार्थ जाननें की शक्ति का कारन क्षयोपशम है। तातैं यथार्थ जानैं है। तैसें ही जीवादि तत्त्वनि का

यथार्थ जाननेकी शक्ति होनै न होनैविषैं तौ ज्ञानावरणहीका निमित्त है। परंतु जैसें काहू पुरुषकै क्षयोपशमतैं दुःखकौं वा
सुखकौं कारणभूत पदार्थनिकौं यथार्थ जाननेकी शक्ति होइ। तहां जाकै असातावेदनीयका उदय होइ सो दुःखकौं कार
नभूत जो होइ तिसहीकौं वेदै। सुषका कारनभूत पदार्थकौं न वेदै। जो सुषका कारनभूत पदार्थकौं वेदै तौ सुखी होइ जाइ। सो
असाताका उदय होतैं होय सकै नाहीं। तातैं इहां दुःखकौं कारनभूत अर सुषका कारनभूत पदार्थ वेदनैविषै ज्ञानावरनका
निमित्त नाहीं। असाता साताका उदय ही कारनभूत है। तैसें जीवकै प्रयोजनभूत जीवादिक तत्त्व अप्रयोजनभूत अन्य
तिनिकै यथार्थ जाननेकी शक्ति होइ। तहां जाकै मिथ्यात्वका उदय होइ सो जो अप्रयोजनभूत होइ तिनिहीकौं वेदै जानै। हो६
प्रयोजनभूतकौं न जानै। जो प्रयोजनभूतकौं जानै तौ सम्यग्दर्शन होइ जाइ। सो मिथ्यात्वका उदय होतैं होइ सकै नाहीं। ता
तैं इहां प्रयोजनभूत अप्रयोजनभूत पदार्थ जाननेविषै ज्ञानावरणका निमित्त नाहीं। मिथ्यात्वका उदय अनुदय ही कार
नभूत है। इहां ऐसा जानना। जहां एकेंद्रियादिककै जीवादि तत्त्वनिका यथार्थ जाननेकी शक्ति ही न होइ। तहां तौ ज्ञा
नावरणका उदय। अर मिथ्यात्वका उदयतैं भया मिथ्यादर्शन इनि दोऊनिका निमित्त है। बहुरि जहां संज्ञी मनुष्यादि
कै क्षयोपशमादि लब्धि होतैं शक्ति होइ अर न जानैं तहां मिथ्यात्वके उदयही का निमित्त जानना। यातैं मिथ्याज्ञानका
मुख्य कारन ज्ञानावरण न कह्या। मोहका उदयतैं भया भाव सो ही कारन कह्या है। बहुरि इहां प्रश्न जो ज्ञान भएं श्रद्धा
न होइ है। तातैं पहलैं मिथ्याज्ञान कहौ पीछै मिथ्यादर्शन कहौ। ताका समाधान। है तौ ऐसें ही जानें विना श्रद्धान कैसें होइ। प
रंतु मिथ्या अर सम्यक् ऐसी संज्ञा ज्ञानकैं मिथ्यादर्शन सम्यग्दर्शनके निमित्ततैं हो है। जैसें मिथ्यादृष्टी वा सम्यग्दृष्टी
सुवर्णादि पदार्थनिकौं जानैं तौ समान है। सो ही जानना मिथ्यादृष्टीकै मिथ्याज्ञान नाम पावै। सम्यग्दृष्टीकै सम्यग्ज्ञान ना

म पावै है। ऐसैं ही सर्व मिथ्याज्ञान सम्यग्ज्ञान का अर मिथ्यादर्शन सम्यग्दर्शन जाननां। तातैं जहां सामान्यपनैं ज्ञान श्रद्धान का
निरूपण होइ तहां तौ ज्ञान कारणभूत है। ताकौं पहलैं कहनां अर श्रद्धान कार्यभूत है। ताकौं पीछैं कहनां। बहुरि जहां मिथ्या
सम्यग्ज्ञान श्रद्धान का निरूपण होइ तहां श्रद्धान कारनभूत है ताकौं पहलैं कहनां ज्ञान कार्यभूत है ताकौं पीछैं कहनां। ब
हुरि प्रश्न जो ज्ञान श्रद्धान तौ युगपत होइ है इनि विषै कारन कार्यपना कैसैं कहौ हौ। ताका समाधान। वह होय तौ वह हो
इ इस अपेक्षा कारन कार्यपनां हो है। जैसैं दीपक अर प्रकाश युगपत होय है। तथापि दीपक होइ तौ प्रकाश होइ। तातैं दीपक का
रन है प्रकाश कार्य है। तैसैं ही ज्ञान श्रद्धान कै है। वा मिथ्यादर्शन मिथ्याज्ञान कै वा सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान कै कारण कार्यपना
जाननां। बहुरि प्रश्न जो मिथ्यादर्शन के संयोगतैं ही मिथ्याज्ञान नाम पावै है। तौ एक मिथ्यादर्शन ही संसार का कारन
कहनां था मिथ्याज्ञान जुदा काहे कौं कह्या। ताका समाधान॥ ज्ञान ही की अपेक्षा तौ मिथ्यादृष्टी वा सम्यग्दृष्टी के क्षयो
पशमतैं भया यथार्थ ज्ञान तामैं किछु विशेष नाहीं। अर वह ज्ञान केवलज्ञान विषै भी जाय मिलै है। जैसैं नदी समु
द्र मैं मिलै। तातैं ज्ञान विषै किछु दोष नाहीं। परंतु क्षयोपशम ज्ञान जहां लागै तहां एक ज्ञेय विषै लागै सो यहु मिथ्यादर्शन
के निमित्ततैं अन्य ज्ञेयनि विषै तौ ज्ञान लागै अर प्रयोजनभूत जीवादि तत्वनि का यथार्थ निर्णय करनै विषै न ला
गै सो यहु ज्ञान विषै दोष भया। याकौं मिथ्याज्ञान कह्या। बहुरि जीवादि तत्वनि का यथार्थ श्रद्धान न होइ सो यहु श्र
द्धान विषै दोष भया। याकौं मिथ्यादर्शन कह्या। ऐसैं लक्षण भेदतैं मिथ्यादर्शन मिथ्याज्ञान जुदा कह्या। ऐसैं मि
थ्याज्ञान का स्वरूप कह्या। इस ही कौं तत्वज्ञान के अभावतैं अज्ञान कहिए है। अपनां प्रयोजन न साधै तातैं याही कौं
कुज्ञान कहिए है। अब मिथ्याचारित्र का स्वरूप कहिए है। जो चारित्रमोह के उदयतैं कषायभाव होइ ताका नाम मि

थ्याचारित्र है। बहुरि अपने स्वभावरूप प्रवृत्ति नाहीं। झूठी परस्वभावरूप प्रवृत्ति किया चाहै सो बनै नाहीं। तातैं याकौं
मिथ्याचारित्र है। सोई दिखाईए है। अपना स्वभाव तौ दृष्टा ज्ञाता है। सो आप केवल देखनहारा जाननहारा तौ रहै नाहीं।
जिन पदार्थनिकौं देखै जानै तिनविषै इष्ट अनिष्टपनौं मानैं। तातैं रागी द्वेषी होइ काहूका सद्भावकौं चाहै। सो उन
का सद्भाव अभाव याका कीया होता नाहीं। जातैं कोई द्रव्य कोई द्रव्यका कर्त्ता हर्त्ता है नाहीं। सर्व द्रव्य अपने अपने स्वभा
वरूप परिणमै है। यहु वृथा ही कषायभाव करि आकुलित हो है। बहुरि कदाचित जैसैं आप चाहै तैसैं ही पदार्थ परि
णमैं तौ अपना परिणमाया तौ परिणम्या नाहीं। जैसैं गाडा चालै है। अर वाकौं बालक धु काइकरि ऐसा मानै। याकौं मैं
चलावौ हौं सो वह असत्य मानै है। जो वाका चलाया चलै है तौ वह न चालै तब क्यौं न चलावै। तैसैं पदार्थ परिणमै है।
अर उनकौ यहु जीव अनुसारी होइकरि ऐसा मानैं याकौं मैं ऐसैं परिणमावौं हौं। सो यहु असत्य मानै है। जो याका परि
णमाया परिणमै तौ वह तैसैं न परिणमैं तब क्यौं न परिणमावै। सो जैसैं आप चाहै तैसैं तौ पदार्थका परिणमन कदा
चित ऐसा ही बनाव बनै तब हो है। बहुत परिणमन तौ आप न चाहै तैसैं ही होता देखिए है। तातैं यहु निश्चय है। अपनां
कीया काहूकौं सद्भाव अभाव होता नाहीं। बहुरि जो अपना कीया सद्भाव अभाव होइ ही नाहीं। तौ कषायभाव करनें
तैं कहा होइ। केवल आप ही दुखी होइ। जैसैं कोऊ विवाहादि कार्यविषै जाका किछू कह्या न होइ। अर वह आप कर्त्ता होइ
कषाय करै तौ आप ही दुखी होइ तैसैं जाननां। तातैं कषायभाव करना ऐसा है। जैसा जलका बिलोवनां किछू कार्यकारी नांही।
तातैं इन कषायनिकी प्रवृत्तिकौं मिथ्याचारित्र कहिए है। बहुरि कषायभाव हो है सो पदार्थनिकौं इष्ट अनिष्ट मानें हो
है। सो इष्ट अनिष्ट माननां भी मिथ्या है। तातैं कोई पदार्थ इष्ट अनिष्ट है नांही। कैसैं सो कहिए है। आपकौं सुखदाई उप

काहू का अ
न चाहै
३

कारी होइ ताकों इष्ट करि है। आपकों दुखदायक अनुपकारी होइ ताकों अनिष्ट करि है। सो लोक विषै सर्व पदार्थ अपने अ
पने स्वभाव ही के कर्त्ता हैं। कोऊ काहू कों सुखदुखदायक उपकारी अनुपकारी है नांही। यहु जीव ही अपने परिणाम
नि विषै तिनिकों सुखदायक उपकारी मानि इष्ट जानै है। अथवा दुखदायक अनुपकारी जानि अनिष्ट मानै है। जातैं ए
क ही पदार्थ काहू कों इष्ट लागै है। काहू कों अनिष्ट लागै है। जैसें जाकों वस्त्र न मिलै ताकों मोटा वस्त्र इष्ट लागै है। जाकों म
हीन वस्त्र मिलै ताकों अनिष्ट लागै है। सूकरादिककों विष्टा इष्ट लागै है। देवादिककों अनिष्ट लागै है। काहूकों
मेघवर्षा इष्ट लागै है। काहूकों अनिष्ट लागै है। ऐसें ही अन्य जानने। बहुरि याही प्रकार एक जीव कों भी एक ही पदार्थ
काहू काल विषै इष्ट लागै है। काहू काल विषै अनिष्ट लागै है। बहुरि यहु जीव जाकों मुख्यपनै इष्ट मानै सो भी अनिष्ट हो
ता देखिए है। इत्यादि जानने। जैसें शरीर इष्ट है सो रोगादि सहित होइ तब अनिष्ट होइ जाइ। पुत्रादिक इष्ट है। कारण
पाय अनिष्ट होते देखिए है। इत्यादि जानने। बहुरि यहु जीव जाकों मुख्यपनै अनिष्ट मानै सो भी इष्ट होता देखिए है। जैसें
गाली अनिष्ट है सो सासरै इष्ट लागै है। इत्यादि जानने। ऐसें पदार्थ विषै इष्ट अनिष्टपनो है नांही। जो पदार्थ विषै इष्ट
अनिष्टपनो होतौ तौ जो पदार्थ इष्ट होतौ सो सर्व कों इष्ट ही होता जो अनिष्ट होतौ सो अनिष्ट ही होता सो है नांही। यहु जी
व कल्पना करि तिनकों इष्ट अनिष्ट मानै है। सो यहु कल्पना झूठी है। बहुरि पदार्थ हैं सो सुखदायक उपकारी वा दुख
दायक अनुपकारी हो है सो आप ही नांही हो है। पुण्यपापका उदयकै अनुसारि हो है। जाकै पुण्यका उदय हो है। ताकै प
दार्थनि का संयोग सुखदायक उपकारी हो है। जाकै पापका उदय हो है। ताकै पदार्थनि का संयोग दुखदायक अनुप
कारी हो है। सो प्रत्यक्ष देखिए है। काहूकै स्त्री पुत्रादिक सुखदायक है। काहूकै दुखदायक है। व्यापार कीए काहू

हू कै नफा है। काहू कै टोटा है। काहू कै शत्रु भी किंकर हो है। काहू कै पुत्र भी आज्ञाकारी हो है। तातैं जानिए है। यह पदा-
र्थ आप इष्ट अनिष्ट होते नाहीं। कर्म उदय कै अनुसारि प्रवर्तै है। जैसे काहू के किंकर अपने स्वामी कै अनुसारि कि-
सी पुरुष कौं इष्ट अनिष्ट उपजावै तौ किंकरनि का किछू कर्तव्य नाहीं। उनके स्वामी का कर्तव्य है।
जो किंकरनि ही कौं इष्ट अनिष्ट मानै सो झूठ है। तैसें कर्म के उदय तैं प्राप्त भए पदार्थ कर्म के अनुसारि जी-
व कौं इष्ट अनिष्ट उपजावैं तौ किछू पदार्थनि का कर्तव्य नाहीं। कर्म का कर्तव्य है। जो पदार्थनि ही कौं
इष्ट अनिष्ट मानै सो झूठ है। तातैं ~~कर्म के उदय तैं~~ यह बात सिद्ध भई। पदार्थनि कौं इष्ट अनिष्ट मानि ति-
नि विषै रागद्वेष करना मिथ्या है। इहां कोऊ कहै कि बाह्य वस्तुनि का संयोग कर्म निमित्त तैं बनै है। तौ
कर्मनि विषै तौ रागद्वेष करना। ताका समाधान कर्म तौ जड़ है। उनकै किछू सुख दुख देने की इच्छा नाहीं।
बहुरि वै स्वयमेव तौ कर्मरूप परिणमै नाहीं। याके भावनि के निमित्त तैं कर्मरूप हो है। जैसें कोऊ अपने हाथ
करि भाटा लेइ अपना सिर फोरै तौ भाटा कौ कहा दोष है। तैसें जीव अपने रागादि भावनि करि पुद्गल कौं कर्मरूप प-
रिणमाय अपना बुरा करै तौ कर्म का कहा दोष है। तातैं कर्म सौं भी रागद्वेष करना मिथ्या है। या प्रकार परद्रव्यनि
कौं इष्ट अनिष्ट मानि रागद्वेष करना मिथ्या है। जो परद्रव्य इष्ट अनिष्ट होता अर तहां रागद्वेष करता तौ मिथ्या
नाम न पावतौ। वे तौ इष्ट अनिष्ट नाहीं। अर यहु इष्ट अनिष्ट मानि रागद्वेष करै। तातैं इस परिणमन कौं मिथ्या कह्या
है। मिथ्यारूप जो परिणमन ताका नाम मिथ्याचारित्र है। अब इस जीव कै रागद्वेष हो है। ताका विधान वा विस्तार
दिखाइए है। प्रथम तौ इस जीव कै पर्याय विषै अहंबुद्धि है सो आपकौं वा शरीर कौं एक जानि प्रवर्तै है। बहुरि इस

बहुरि जिनि बाह्य पदार्थनिस्यों राग करै है। तिनिके कारनभूत अन्य पदार्थनि विषै द्वेष करै है। तिनिके घातकनि विषै रागु करै है

शरीर विषै आपकों मनै ऐसी इष्ट अवस्था हो है। तिस विषै राग करै है। आपकों न सुहावै ऐसी अनिष्ट अवस्था हो है
तिस विषै द्वेष करै है। बहुरि शरीरकी इष्ट अवस्थाके कारनभूत बाह्य पदार्थनि विषै तौ राग करै है। अर ताके
घातकनि विषै द्वेष करै है। बहुरि शरीरकी अनिष्ट अवस्थाके कारनभूत बाह्य पदार्थनि विषै तौ द्वेष करै है। अर
ताके घातकनि विषै राग करै है। बहुरि इनि विषै जिनि बाह्य पदार्थनिस्यों राग करै है। तिनिके कारनभूत अन्य
न पदार्थनि विषै राग करै है तिनिके घातकनि विषै द्वेष करै है बहुरि इनि विषै भी जिनिस्यों राग करै है। ति-
निके कारन वा घातक अन्य पदार्थनि विषै राग वा द्वेष करै है। अर जिनिस्यों द्वेष है तिनिके कारन वा घातक
अन्य पदार्थनि विषै वा द्वेष वा राग करै है। ऐसें ही राग द्वेषकी परंपरा प्रवर्त्तै है। तथापि तहां राग करै है जैसें
करा आदिकके विताई आदिकतैं किछू शरीरका अनिष्ट होता नाहीं। तथापि तहां द्वेष करै है। बहुरि केई वर्ण
गंध शब्दादिकके अवलोकनादिकतैं शरीरका इष्ट होता नाहीं। तथापि तिनि विषै [illegible] राग करै है।
केई वर्णादिकके अवलोकनादिकतैं शरीरका अनिष्ट होता नाहीं। तथापि तिनि विषै द्वेष करै है। ऐसें भिन्न
होहै बाह्य पदार्थनि विषै राग द्वेष हो है। बहुरि इनि विषै भी जिनिस्यों राग करै है, तिनिके कारन अर घातक अन्य पदार्थनि
निविषै राग वा द्वेष करै है। अर जिनिस्यों द्वेष करै है तिनिके कारन वा घातक अन्य पदार्थनि विषै द्वेष वा राग करै
परंपरा है। ऐसें ही राग द्वेषकी प्रवर्त्तै है। इहां प्रश्न जो अन्य पदार्थनि विषै तौ राग द्वेष करनेका प्रयोजन जान्या परंतु
प्रथम ही मूलभूत शरीरकी अवस्था विषै वा शरीरकी अवस्था विषै कौ कारन नाहीं। तिनि पदार्थनि विषै
इष्ट अनिष्ट माननेका प्रयोजन कहा है। ताका समाधान। जो प्रथम मूलभूत शरीरकी अवस्था आदिक
बहुरि केई बाह्य पदार्थ शरीरकी अवस्थाकौ कारन नाहीं। तिनि विषै भी राग द्वेष करै है तैसें गऊ आदिकै पुत्रादिकतैं कछू
शरीरका इष्ट होय नाहीं ॥

इति तिनि विषै तौ प्रयोजन ~~वि~~ विचारि रागद्वेष करै तौ मिथ्याचारित्र काहे कौं नाम पावै। तिनि विषै विना ही प्रयोजन रागद्वे
ष करै है। अर तिनि ही कौं अर्थ अनिष्ट मानि रागद्वेष करै। तातैं ऐसैं रागद्वेषपरणतिका नाम मिथ्याचारित्र कह्या है। इ
हां प्रश्न जो शरीर की अवस्था वा बाह्य पदार्थ तिनि विषै इष्ट अनिष्ट माननेका प्रयोजन तौ भासै नाहीं। अर इष्ट अ
निष्ट माने विना रह्या जाता नाहीं सो कारन कहा है। ताका समाधान। इस जीव कै चारित्रमोह के उदय तैं। रागद्वेष भा
व होइ सो ए भाव कोई पदार्थ का आश्रय विना होइ सकै नाहीं। जैसें राग होइ सो कोई पदार्थ विषै होइ द्वेष होइ। सो कोई प
दार्थ विषै होइ। ऐसैं तिनि पदार्थनि कै अर रागद्वेषनि कै निमित्त नैमित्तिक संबंध है। तहां विशेष इतना जो कोई पदार्थ
तौ मुख्यपनैं राग का कारण है। केई पदार्थ काहू कौं काहू काल विषै राग के कारण हो है। काहू कौं काहू काल
विषै द्वेष के कारण होइ है। इहां इतना जानना। एक कार्य होने विषै अनेक कारण चाहिए है सो रागादिक होने वि
षै अंतरंग कारण मोह का उदय है सो तौ बलवान है। अर बाह्य कारन पदार्थ है सो बलवान नाहीं है। महामुनि
निकै मोह मंद होतैं बाह्य पदार्थ का निमित्त होतैं भी रागद्वेष उपजते नाहीं। पापी जीवनि कै मोह तीव्र होतैं बाह्य
कारन न होतें भी तिनिका संकल्प ही करि रागद्वेष हो है। तातैं मोह का उदय होतैं रागादिक हो है। तहां
जिस बाह्य पदार्थ का आश्रय करि रागभाव होना होइ तिस विषै विना ही प्रयोजन वा किछू प्रयोजन लीए
इष्टबुद्धि हो है। बहुरि जिस पदार्थ का आश्रय करि द्वेषभाव होना होइ प्रयोजन वा किछू प्रयोजन लीए अनिष्टबुद्धि हो
है। तातैं मोह के उदय तैं पदार्थनि कौं इष्ट अनिष्ट माने विना रह्या जाता नाहीं है। ऐसैं पदार्थनि विषै इष्ट अनिष्ट बुद्धि होतें
जो रागद्वेषरूप परिणमन होइ ताका नाम मिथ्याचारित्र जानना। बहुरि इनि रागद्वेषनि ही के विशेष क्रोध मा
न

३ होइ इति स विषै वितं

केई पदा... पनैं द्वेष के कारण है

मान माया लोभ हास्य रति अरति शोक भय जुगुप्सा स्त्री पुरुष नपुंसक वेद रूप कषाय भाव हैं। ते सर्व इस मिथ्याचा-
रित्रही के भेद जानने। इनका वर्णन पूर्वैं कीया ही है। बहुरि इस मिथ्याचारित्र विषै स्वरूपाचरणचारित्र का अभा-
व है। तातैं याका नाम अचारित्र भी कहिए। बहुरि इहां परिणाम मिटै नांही। अथवा विरक्त नांही। तातैं याही का नाम
असंयम कहिए है। वा अविरति कहिए है। जातैं पांच इंद्री अर मन के विषयनि विषै बहुरि पंच स्थावर अर त्रस
हिंसा विषै की स्वछंदपना हो है। अर इनिके त्यागरूप भाव न हो है। सोई असंयम वा अविरति बार प्रकार कह्या है सो कषाय भाव भ-
ए ऐसे कार्य हो है। तातैं मिथ्याचारित्र का नाम असंयम वा अविरति जानना। बहुरि इसही का नाम अव्रत जानना।
२ जातैं हिंसा अनृत स्तेय अब्रह्म परिग्रह इन पाप कार्यनि विषै प्रवृत्ति का नाम अव्रत है। सो इनिका मूल कारण
प्रमत्त योग कह्या है। प्रमत्त योग है सो कषायमय है।। तातैं मिथ्याचारित्र का नाम अव्रत भी कहिए है। ऐसैं मिथ्या-
चारित्र का स्वरूप कह्या। या प्रकार संसारी जीवकै मिथ्यादर्शन मिथ्याज्ञान मिथ्याचारित्र रूप परिणमन अना-
दितैं पाईए है। सो ऐसा परिणमन एकेंद्रिय आदि असंज्ञी पर्यंत तो सर्व जीवनिकै पाईए है। बहुरि संज्ञी पंचेंद्रि-
यनि विषै सम्यग्दृष्टी बिना अन्य सर्व जीवनिकै ऐसा ही परिणमन पाईए है। परिणमन विषै जैसा जहां संभवै
तैसा तहां जानना। जैसैं एकेंद्रियादिकनि की हीनता अधिकता पाईए है। वा धन पुत्रादिक का संबंध मनुष्या-
दिक कै ही पाईए है। सो इनके निमित्त तैं मिथ्यादर्शनादिक का वर्णन कीया है। तिस विषै जैसा विशेष संभवै
तैसा जानना। बहुरि एकेंद्रियादिक जीव इंद्रिय शरीरादिक का नाम जानै नांही है। परंतु तिस नाम का अर्थरू-
प जो भाव है तिस विषै पूर्वोक्त प्रकार परिणमन पाईए है। जैसैं मैं स्पर्शकरि स्पर्शौं हौं। शरीर मेरा है। ऐसा नाम न

जानै है। तथा आपका अर्थस्वरूप भासै तिस रूप परिणमै है। बहुरि मनुष्यादिक कै कोई नाम धर्या जानै है। अ
रता का नाम रूप परिणमै है। इत्यादि विशेष सहित सो जो निमित्तनि तैं ऐसा मिथ्यादर्शनादिक भाव जीव कै अ
नादि तैं पाईए है। नवीन ग्रहे नाहीं। देखो याका महिमा जो पर्याय धरै है। तहां बिना ही सिखाए मोहके उदय
तैं स्वयमेव ऐसा ही परिणमन हो है। बहुरि मनुष्यादिक कैं सत्य विचार होने के कारन मिले तौ भी सम्यक
परिणमन होय नाहीं। श्रीगुरु का उपदेश का निमित्त बनै बेर बेर समझावैं। यह किछू विचार करै नाहीं।
बहुरि आपकौं भी प्रत्यक्ष भासै सो तौ न मानै। अर अन्यथा ही मानै। कैसैं सो कहिए है। मरण होतें शरीर
आत्मा प्रत्यक्ष जुदा हो है। एक शरीर कौं छोड़ि आत्मा अन्य शरीर धरै है। सो व्यंतरादिक अपने पूर्वभव का सं
बंध प्रगट करते देखिए है। परंतु याकै शरीर तैं भिन्न बुद्धि न होय सकै है। स्त्री पुत्रादिक अपने स्वार्थ के सगे प्रत्यक्ष
देखिए है। उनका प्रयोजन सधै तब ही विपरीत होते देखिए है। यह तिनि विषै ममत्व करै है। अर तिनके अ
र्थ नरकादिक विषैं गमन कौं कारन नाना पाप उपजावै है। धनादिक सामग्री अन्य की अन्य कै होती देखि
ए है। यह तिनि कौं अपनी मानै है। बहुरि शरीर की अवस्था वा बाह्य सामग्री स्वयमेव होती विनशती दी
सै है। यह वृथा आप कर्त्ता होय है। तहां जो अपने मनोरथ अनुसारि कार्य होय ताकौं तौ कहै मैं किया। अ
र अन्यथा होय तौ कहै मैं कहा करौं। ऐसैं ही होना था वा ऐसैं क्यों भया ऐसा मानै। सो कै तौ सर्व का क
के॰ र्त्ता ही होना था। अक औरहूं न था सो विचार नाहीं। बहुरि मरण अवश्य होगा ऐसा जानै परंतु मरण
का निश्चय करि किछू कर्त्तव्य करै नाहीं। इस पर्याय संबंधी ही यत्न करै है। बहुरि मरण का निश्चय

करि कबहू तौ कहै मैं मरूंगा। शरीर कौं जलावैंगे। कबहू कहै मो कौं जलावैंगे। कबहू कहै जस रहा तो हम जीवते ही हैं। कबहू कहै पुत्रादिक रहैंगे तौ मैं ही जीवोंगा। ऐसैं बाउला की सी नांई बकै। किछू सवधानी नांही। बहुरि आप का परलोक विषै प्रत्यक्ष जाता जांनैं। ताका तौ इष्ट अनिष्ट का किछू ही विकलप नांही। अर इहां पुत्र पोता आदि मेरी संगति विषै घनें काल तांई इष्ट रह्या करै अनिष्ट न होइ। ऐसे अनेक उपाय करै है। काहू का परलोक भए पीछैं इस लोक की सामग्री करि उपकार भया देख्या नांही। परंतु याकैं परलोक होनें का निश्चय भए भी इस लोक की सामग्री ही का ख्याल रहै है। बहुरि विषय कषायनि की परणति करि वा हिंसादि कार्यनि करि आप दुखी होइ। खेद खिन्न होइ है। औरनि का बैरी होइ। इस लोक विषै निंद्य होइ। परलोक विषै बुरा होइ। सो प्रत्यक्ष आप जानैं। तथापि तिनि ही विषैं प्रवर्त्तै। इत्यादि अनेक प्रकार प्रज्ञानासै। ताकौं जो अन्यथा श्रद्धान है॥ जांनैं। आचरै। सो यह मोह का माहात्म्य है॥

(इसके आगे पत्र सं. ५६ पर देखें।)

ऐसें यहु मिथ्यादर्शनज्ञानचारित्ररूप अनादितैं जीव परिणमै है।। इसही परिणमन करि संसार विषै
अनेक प्रकार दुख उपजावनेहारे कर्मनिका संबंध पाइए है।। एई भाव दुःखनिके बीज हैं।। अन्य को
ई नाहीं। तातैं हे भव्य जो दुखतैं मुक्त भया चाहै है तौ [redacted] इन मिथ्यादर्शनादि विभावभावनिका
अभाव करना यह ही कार्य है।। इस कार्य कौं कीए तेरा परम कल्याण होगा।।७।। इति मोक्षमार्ग
प्रकाशक नाम शास्त्र विषै मिथ्यादर्शनज्ञानचारित्रका निरूपण रूप छठा अधिकार संपूर्ण
भया।।७।। ।।दोहा।। [redacted] बहुविधि मिथ्या गहन करि [redacted] मलिन भयो निज भाव।। ताको हो
त अभाव [redacted] है सहजरूप दरसाव।।१।। अथ ~~अनादि मिथ्यादर्शनादि~~ पूर्वोक्त प्रकार ~~करि~~

~~जीव परिणमै है [redacted] ।। जैसें [redacted] कोई [redacted] पुरुष ... अर~~

~~कोई कुपथ्य सेवन करै तौ ... तैसें यहु जीव [redacted] अनादिकाल तैं मि~~

~~[redacted] ... मार्गविषै ... मनुष्यादि पर्याय~~

रूप परिणमै है।। ताकरि संसार
यहु जीव पूर्वोक्त प्रकार करि अनादि हीतैं मिथ्यादर्शनज्ञानचारित्ररूप परिणमै है।। [redacted] ताकि
विषै [redacted] दुःख सहतसंतौ कदाचित् [redacted] मनुष्यादि पर्यायनि विषै वि[redacted] श्रद्धानादिक [redacted]
[redacted] कौं पावै तहां जो [redacted] श्रद्धानादिक कौं पोषै तौ तिस जीवका दुःखतैं मुक्त होना अति दुर्लभ हो है।। जैसें कोई पुरुष
कुरितिनि मिथ्या[redacted]दिककौं पोषै तौ तिस जीवका दुःखतैं मुक्त होना अति दुर्लभ होइ।। जैसें कोई पुरुष
रोगी [redacted] सो [redacted] किछू सावधानीकौं पाइ कुपथ्य सेवन करै तौ उस रोगीका सुलझना कठिन ही
तैसें यहु जीव मिथ्यात्वादि [redacted] सहित है सो किछू ज्ञानादि शक्तिकौं पाइ [redacted] विपरीत श्रद्धा
नादि [redacted] कारणनिका सेवन करै तौ इस जीवका मुक्त होना कठिन ही होइ।। तातैं जैसें वैद्य कुपथ्यनिका
विशेष दिखाइ तिनिके सेवनकौं निषेधै।। तैसें इहां विशेष [redacted] श्रद्धानादिकके कारणनिका विशेष दिखा

तिनिका निषेध करिए है॥ इहां अनादितें जे मिथ्यात्वादि [redacted] भाव पाईए [redacted] ते अगृहीत ज्ञान
जातैं ते नवीन ग्रहण कीए नाहीं॥ बहुरि तिनिकै पुष्ट करनेके कारणनि करि विशेष मिथ्यात्व
भाव होइ ते गृहीत मिथ्यात्वादि जानने॥ तहां [redacted]
त मिथ्यात्वादिक का तौ पूर्वें वर्णन कीया है सो ही जानना॥ गृहीत मिथ्यात्वादिक का [redacted]
अब निरूपण कीजिए हैं॥ कुदेव कुगुरु कुधर्म अर कल्पित तत्त्व तिनिका श्रद्धान सो तौ मि
थ्यादर्शन है॥ बहुरि जिनि विषै विपरीत निरूपण करि रागादि पोषे होइ ऐसे कुशास्त्र तिनि
विषै श्रद्धानपूर्वक अभ्यास सो मिथ्याज्ञान है॥ बहुरि जिस आचरण विषै कषायनि का से
वन होइ अर ताकौं धर्मरूप अंगीकार करै सो मिथ्याचारित्र है॥ अब इनही का विशेष दिखा
इए है॥ [redacted] इत्यादि बहुरि [redacted] भैरूं क्षेत्रपाल देवी दिहाडी [redacted] सती इ
त्यादि बहुरि [redacted] शीतला चौथि सांझी गनगौरि होली इत्यादि बहुरि सूर्य चंद्रमा ग्रह इ
त्यादि बहुरि [redacted] सर्प इत्यादि बहुरि
भूत पितर [redacted] व्यंतर इत्यादि बहुरि [redacted] ऐसे बहुरि
अग्नि जल वृक्ष इत्यादि बहुरि शस्त्र दवात बासण इत्यादि अनेक तिनिकौं [redacted] पूजै बहुरि
तिनिकै अपनी कार्यसिद्धि कीया चाहै सो वे कार्यसिद्धि के कारन नाहीं तातैं ऐसे श्रद्धान कौं
मिथ्या कहिए है॥ तहां तिनिका अन्यथा श्रद्धान कैसे हो है सो कहिए है॥ [redacted]
[redacted] अद्वैत ब्रह्म कौं सर्वव्यापी
[redacted] प्रथम ब्रह्मा कौं स
र्व का कर्ता मानै सो कोई है नाही [redacted]॥ [redacted]
र्वव्यापी [redacted] मानै सो सर्व पदार्थ तो न्यारे न्यारे [redacted] प्रत्यक्ष है वा तिनके स्वभाव न्यारे न्यारे
देखिए है॥ इनिकौं एक कैसैं [redacted] मानिए॥ [redacted]

५ कौ जानने
इंद्र लोकपाल इत्यादि
अन्यथा

१ इनि प्रकार निजोर २

६ [redacted] ।। बहुरि

एक मानिए तौ [redacted] है।। एक प्रकार तौ यहु है जो सर्व न्यारे न्यारे हैं।। तिनके समुदाय की क
ल्पना करि ताका किछू नाम धरिए।। जैसें [redacted] घोटक हस्ती इत्यादि भिन्न भिन्न हैं तिनि
के समुदाय का नाम सेना है।। इनि तैं जुदा कोई सेना वस्तु नाहीं।। सो इस प्रकार करि जो सर्व पदार्थ
[redacted] कौ नाम ब्रह्म है तौ ब्रह्म कोई जुदा वस्तु तौ न ठहरया।। [redacted]
एक प्रकार यहु है जो व्यक्ति अपेक्षा तौ न्यारे न्यारे [redacted] है तिनिकौं जाति अपेक्षा [redacted]
[redacted] करि एक कहिए है।। जैसें [redacted] सौ [redacted] घोटक हैं ते व्यक्ति अपेक्षा तौ जुदे जुदे सौ ही हैं।।
१ अश्वादिक २ तिनके [redacted] की समानता देखि [redacted] एक जाति
कहैं सो वह जाति [redacted] तिनि तैं जुदी ही तौ कोई है नाहीं।। सो इस प्रकार करि जो सबनि की कोई
एक जाति अपेक्षा [redacted] एक ब्रह्म मानिए है तौ ब्रह्म जुदा तौ कोई न ठहरया।। [redacted] ।। बहुरि एक प्रकार यहु है जो [redacted]
[redacted] पदार्थ न्यारे [redacted] हैं तिनिकै मिलाप तैं एक स्कंध होइ ताकौं एक कहिए।। जै
सें जल के परमाणू न्यारे न्यारे हैं तिनिकौं मिलाप भए समुद्र कहिए।। वा जैसें [redacted]
पृथ्वी के परमाणूनिकौं मिलाप भए घटादिक कहिए।। [redacted] सो इहां समुद्रादि वा घटादिक हैं ते
१ परमाणू निं [redacted] तैं भिन्न कोई जुदा तौ वस्तु नाहीं सो इस प्रकार करि जो सर्व पदार्थ न्यारे न्यारे हैं परंतु [redacted]
कदाचित् मिलि एक होइ जाइ है सो ब्रह्म है ऐसैं मानिए तौ इनि [redacted] तैं जुदा तौ कोई ब्रह्म
न ठहरया।। बहुरि एक प्रकार यहु है [redacted] अंग [redacted] तौ न्यारे हैं अर [redacted] जाके [redacted] अंग
होंइ सो अंगी [redacted] कहे जैसें [redacted] भिन्न [redacted] है।। जाके ए हैं सो [redacted] एक है।। [redacted]
सो इस प्रकार करि जो सर्व पदार्थ तौ अंग है।। [redacted] जाके ए हैं सो अंगी ब्रह्म है।। [redacted] यहु सर्व

[redacted] २ नेत्र हस्त पादादिक २ २ मनुष्य २

लोकविराटस्वरूपब्रह्मकाअंगहै।।ऐसैं मांनिएहैतौं [redacted] केपरस्परअंत
रालनएँतौएकत्वपनीरहतानांही [redacted] जुरेरहैं [redacted]
एकशरीरनाम पावैसोलोकविषैतौपदार्थनिकैअंतराल परस्पर जासैहै।।याकाएकत्वप
नौकैसैं मांनिए।।अंतरालनएँ जीएकत्वमांनिएहै तौ नन्नप [redacted] लोकहीमांनिएगा।।इही
कोऊकहैमध्यविषैसूक्ष्मरूपब्रह्मकेअंगहैं तिनिकरिंसर्वजुरिरहेहैं ताकौं कहिए है।। [redacted]
[redacted]
जो अंगजिसअंगतें जुरयाहै तिसहीतें जुरयारहै है कि
[redacted] कोई अंग [redacted] जो अंगजिसअंगतैं जुरयाहै तिसहीतें जुरयारहै है कि
टूटि टूटि अन्यअन्यअंगनिस्यों जुर्याकरैहै।।जो प्रथमपक्ष ग्रहैगातौ सूर्य [redacted] काम
नकरैहैं तिंकीसाथि [redacted] जिनिसूक्ष्मअंगनितैंवहजुरे हैं ते भीगमनकरैं बहुरिउनकौंगमन
करतैंवेसूक्ष्मअंग अन्यस्थूलअंगनितैंजुरेहैं ते भीगमनकरैं ऐसैं सर्वलोकअस्थिरहोइजाइ। जै
सैंशरीरकाएकअंगखींचैंसर्वअंगखींचजाय तैसैं एकपदार्थकौंगमनादिकरतैं सर्वपदार्थ
निकागमनादिहोइसो [redacted] भासैनांही।।बहुरि जो द्वितीयपक्षग्रहैगातौ अंगटूटिनेतैं
भिन्नपनौहोइ ही जाय तबएकत्वपनौंकैसैंरह्या तातैं सर्वलोककाएकत्वमाननौं [redacted]
वहरि एकप्रकार यहहै जो पहलैं एकथा पीछैं अनेकभया बहुरिएक होइजाइ तातैं एकहै।।जैसैं जल
एकथा सो [redacted] वासणनिमैं जुदाजुदा भया बहुरि मिलै तब एकहोइ [redacted] जैसैं सोनौं कागदा एकथा सो
कंकणकुंडलादिरूपभया बहुरिएकसोनौं कागदा होइजाइ [redacted] तैसैं ब्रह्मएक

(कैसैं जानैं)

कोंब्रल ६०

भिन्न न रहै

कथा पीछैं अनेकरूप भया बहुरि एक होइगा तातैं एक ही है॥ इस प्रकार एकत्व मानै है तौ जब अनेक
रूप भया तब जुदा रह्या कि भिन्न भया जो जुदा रह्या कहैगा तौ पूर्वोक्त दोष आवैगा॥ भिन्न भया
कहैगा तौ तिस काल तौ एकत्व न रह्या॥ बहुरि जल सुवर्णादि कौं एक कहिए सो तौ एक जाति अपेक्षा
कहिए है सो [illegible] सर्व पदार्थनि की एक जाति नाहीं ना
ही॥ [redacted] कोऊ चेतन है कोऊ अचेतन है इत्यादि अनेक रूप है [illegible]
[illegible]
[illegible] भिन्न स्वरूप [illegible]
[illegible] अपने स्वरूप करि भिन्न ही है॥ अर जो एक स्वरूप है तौ अचेतन [illegible]
[illegible] तिनिकी एक जाति कैसैं कहिए [illegible]
[redacted]॥ बहुरि पहलैं एक था पीछैं भिन्न भया मानै है तौ [redacted]
[redacted] जैसैं एक पाषाण फूटि टूक होइ जाइ है तैसैं ब्रह्म के खंड होइ गए॥ बहुरि [redacted]
[redacted] तिनिका एकठा होना मानै है तौ तहां तिनिका स्वरूप भिन्न रहै है कि एक होइ जाइ है [redacted] चे
जो भिन्न रहै है तौ तहां अपने अपने स्वरूप करि भिन्न ही है॥ अर एक होइ जाइ है तौ [redacted] जड़ जात [redacted] काहू काल विषै [redacted] जड़ जीव
तन होइ जाइ [redacted] अनेक वस्तुनि का एक वस्तु [redacted] ऐसा कहना तौ बनै [redacted] अनादि अनंत एक ब्रह्म है ऐसा
[redacted] एक वस्तु का काहू काल विषै एक वस्तु [redacted] लोकरचना होतें वा न होतें ब्रह्म जैसा का तैसा ही रहै है
कहनी बनै नाहीं॥ [redacted] बहुरि जो कहैगा लोक विषै पृथ्वी जलादिक देखिए हैं ते न्यारे जुदे
है तातैं ब्रह्म अनादि अनंत है॥ सो हम [redacted] पूछैं हैं नवीन उत्पन्न भए हैं तो ए न्यारे नए ब्रह्म न्या
नवीन उत्पन्न भए हैं कि ब्रह्म ही इनि स्वरूप भया है॥ जो न्यारे नवीन उत्पन्न भए हैं

अचेतन जड होइ जाइ तौ [illegible]

रारह्या॥ सर्वव्यापी अद्वैत ब्रह्म न मानना ॥ बहुरि जो ब्रह्म ही इनि स्वरूप नयाते लोक का चित [redacted]
लोक [redacted] नया का चित [redacted] रूप नया तौ जैसा का तैसा कैसें रह्या॥ बहुरि वह कहै है जो [redacted]
[redacted] सर्व ही ब्रह्म तौ लोक स्वरूप न होइ है वा का कोई ऐसा होइ है॥ ताकों [redacted] कहिए है॥ जैसें
समुद्र का एक बिंदु [redacted] नया तहाँ स्थूल दृष्टि करि तौ गम्य नाहीं परंतु सूक्ष्म दृष्टि
दीएं [redacted]॥ तैसें ब्रह्म का एक अंश भिन्न होइ लोक रूप नया तहाँ स्थूल
[redacted] विचार करि तौ किछु गम्य नाहीं परंतु सूक्ष्म विचार कीए तौ [redacted] घट्या॥
एक अंश अपेक्षा ब्रह्म के अन्यथापना नया॥ यहु अन्यथापना और तौ काहू कै नया नाहीं
ऐसें [redacted] रूप ब्रह्म कों मानना भ्रम ही है॥ बहुरि एक प्रकार यहु है॥ जैसें [redacted] आकाश
सर्वव्यापी [redacted] है तैसें ब्रह्म सर्वव्यापी [redacted] है॥ सो इस प्रकार मानै है तौ आकाशवत् बडा ब्रह्म
कों मानि वा जहाँ घटपटादिक है तहाँ [redacted] आकाश [redacted] है तैसें [redacted] ब्रह्म
[redacted] नाहीं है॥ ऐसा भी मानि परंतु [redacted] जैसें घटपटादिक कों अर आकाश कों एक ही
कहिए तौ कैसें बनै तैसें लोक कों अर ब्रह्म कों एक मानना कैसें संभवै॥ बहुरि आकाश का तौ
[redacted] लक्षण सर्वत्र भासै है तातैं [redacted] का तौ सर्वत्र
[redacted] सद्भाव है॥ ब्रह्म का तौ लक्षण सर्वत्र भासता नाहीं तातैं ताका सर्वत्र सद्भाव कैसें मानिए॥
ऐसें इस प्रकार करि भी सर्व [redacted] रूप ब्रह्म नाहीं है॥ ऐसें ही [redacted] वि
चार करतैं किसी भी प्रकार करि एक ब्रह्म संभवै नाहीं॥ [redacted] सर्व पदार्थ
भिन्न भिन्न ही भासै है॥ इहाँ प्रतिवादी कहै है जो [redacted] सर्व एक ही है परंतु तुम्हारे [redacted]
भ्रम है तातैं तुम कों एक भासै नाहीं॥ बहुरि तुम युक्ति कही सो ब्रह्म का स्वरूप युक्तिगम्य नाहीं

एतौ एक बिं
दु अपेक्षा
समुद्र के अ
न्यथाप
नी नया॥

ऐसें

मानिए

हौं लोक

६१

१ ऐसा मानै है जो २   २ तुम्हकौ वा हमकौं वा सबनिकौं नासै ४

वचन अगोचर है॥ एक नाही है अनेक नाही है जुदा नाही है मिल्या नाही है वाकी महि
मा ऐसा ही है॥ ताकौं कहिए है॥ जो प्रत्यक्ष ताकौं तौ न भ्रम करै है अर युक्ति करि अनुमा
न करिए सो तत्काल ही सांचा स्वरूप युक्तिगम्य है ही नाही बहुरि कहै सांचा स्वरूप वच
न अगोचर है तौ वचन बिना कौं निर्णय करै॥ बहुरि कहै एक नाही है
अनेक नाही है॥ जुदा नाही है॥ मिल्या नाही है॥ सो तिनिकी अपेक्षा बतावै नाही॥
॥ बाउले की नांई ऐसे भी नाही है ऐसे भी नाही है याकी महिमा बतावै सो   १ ऐसा माको
न्याय होय है तहां झूठ ऐसे ही वाचालपना करै है॥ सो करो॥ न्याय तौ जैसे सांच है तैसे ही
होयगा॥ बहुरि अब तिस ब्रह्मकौं लोक का कर्त्ता मानै है ताकौं मिथ्या दिखाईए है॥ प्र
थम तौ ब्रह्म के ऐसी इच्छा भई॥ एकोऽहं बहुस्यां॥ कहिए मैं एक हौं सो बहुत होस्यां॥
तहां पूछिए है पूर्व अवस्था मैं दुःखी होइ तब अन्य अवस्था कौं चाहै सो ब्रह्म
एकरूप अवस्थातैं बहुरूप होने की इच्छा करी सो तिस एक अवस्था विषै कहा दुःख था॥ तब
वह कहै है जो दुःख तौ न था कुतूहल उपज्या॥ ताकौ कहिए जो पूर्वै थोरा सुखी होइ
कुतूहल कीए घना सुखी होइ सो कुतूहल करना विचारै सो ब्रह्म के
एक अवस्थातैं बहु अवस्था भए सुख घना होना कैसे संभवै॥ बहुरि पूर्वै ही संपूर्ण सुखी होइ तौ
अवस्था काहे कौं पलटै॥ प्रयोजन बिना तौ कोई किछू कर्त्तव्य करै नाही॥ बहुरि
पूर्वैं जो सुखी होगा इच्छा अनुसारि कार्य निपजै ब्रह्म के
सुखी होइ परंतु इच्छा भई तिस काल तौ दुःखी होइगा॥ तब वह कहै है॥
जिस काल इच्छा होइ है तिस काल ही कार्य होइ है तातैं दुःखी न होइ है॥ तहां कहिए है॥ स्थूल काल अपेक्षा

४ कैसैंदवै

तो ऐसें मांनौं परंतु सूक्ष्मकाल अपेक्षा तौ [redacted] इछा का अर कार्य का होना युगपत् संभवै नांही। इछा तौ तब ही होइ जब कार्य न होइ कार्य होइ तब इछा न रहै। तातैं सूक्ष्मकालमात्र इछा रही तब तौ दुखी भया होगा। जातैं इछा है सोई दुःख है और कोई दुख का स्वरूप है नांही। तातैं ब्रह्मकै इछा [redacted]। बहुरि वै कहै है इछा [redacted] होतैं ब्रह्म [redacted] की माया प्रगट भई सो ब्रह्मकै माया भई तब ब्रह्म भी मायावी भया शुद्धस्वरूप कैसें रह्या। बहुरि ब्रह्मकै अर मायाकै [redacted] दंडी दंडवत् संयोग संबंध है कि अग्नि उष्णवत् समवाय संबंध है। जो संयोग संबंध है तौ ब्रह्म भिन्न है माया भिन्न है अद्वैत ब्रह्म कैसें रह्या। बहुरि [redacted] जैसें दंडी दंडकौं उपकारी जांनि ग्रहै है तैसें ब्रह्म मायाकौं उपकारी जांनै है तौ ग्रहै है नांही काहेकौं ग्रहै [redacted] बहुरि जिस मायाकौं ब्रह्म ग्रहै ताका निषेध करना कैसें संभवै वह तौ उपादेय भई। बहुरि जो समवाय संबंध है तौ जैसें अग्निका उष्णत्व स्वभाव है तैसें ब्रह्मका मायास्वभाव ही भया [redacted] जो ब्रह्मका स्वभाव ताका निषेध करना कैसें संभवै यहु तौ उत्तम भई। बहुरि वै कहै है ब्रह्म तौ चैतन्य है माया जड है सो समवाय संबंध विषै ऐसे दोय स्वभाव संभवै नांही। [redacted] जैसें प्रकाश अर अंधकार [redacted] एकत्र [redacted] कैसें संभवै। बहुरि वह कहै है मायाकरि ब्रह्म आप तौ भ्रमरूप होता नांही ताकी मायाकरि [redacted] जीव भ्रमरूप हो है। ताकौं कहिए जैसें कपटी अपने कपटकौं आप जांनै सो आप भ्रमरूप न होइ वाकै कपटकरि अन्य भ्रमरूप होइ जाय तहां कपटी तौ वाही कौं कहिए जानैं कपट कीया। ताकै कपटकरि अन्य भ्रमरूप भए तिनिकौं तौ कपटी न कहिए तैसें ब्रह्म अपनी मायाकौं आप जांनै भ्रमरूप न होइ वाकी मायाकरि अन्य जीव भ्रमरूप होइ ६२

१-८ इहां तैं [redacted] पदस्थैं तिष्ठता॰

८ माया होतैं लोकनिपज्यात हो जीवनिकै जो चेतना है सो तो ब्रह्मस्वरूप है।। शरीरादिक माया है।। तहां जैसें॥

है तहां मायावी तौ ब्रह्म ही कौं कहिए ताकी माया करि अन्य जीवनि उपजाए तिनिकौं मायावी काहेकौं कहिए है।। बहुरि पूछिए है जो वे जीव ब्रह्मतैं [redacted] एक है कि न्यारे हैं।। जो एक है तो जैसें कोऊ आपही आपके अंगनिकौं पीडा उपजावै [redacted] तैसें ब्रह्म आपही [redacted] आपतैं [redacted] भिन्न नाहीं ऐसे अन्य जीव तिनिकौं माया करि दुखी करे [redacted]।। [redacted]।। बहुरि जो न्यारे हैं तो जैसें कोऊ [redacted] विना ही प्रयोजन औरनिकौं पीडा उपजावै [redacted]।। तैसें ब्रह्म विना ही प्रयोजन जीवनिकौं पीडा उपजावै [redacted]।। ऐसैं माया ब्रह्मकी कौं कहिए है [redacted]।। बहुरि वे कहै

१८ न्यारे उपजाए॥ अर जीवन मैं नाहीं

है [redacted] पदार्थ जीवनिविषै ॥ सो विचारिए ... ॥ जातैं [redacted]

[redacted]

[redacted] जैसें बहुत पात्रनिविषै जल भर्या है तिनि सबनिविषै चंद्रमाका

जुदे जुदे १

प्रतिबिंब जुदा जुदा पडे है।। चंद्रमा एक है।। तैसें [redacted] जुदे जुदे बहुत शरीरनिविषै ब्रह्मका चेतन्य प्रकाश [redacted] जुदा जुदा पाईए है ब्रह्म एक है।। [redacted] सो ऐसा कहनां भ्रम है।। [redacted] जल विषै स्वच्छता है तिस विषै [redacted]।। [redacted] ।। जो तैं शरीर जड है या विषै ब्रह्मका प्रतिबिंबतैं चेतना भई तो घट पटादि जड है तिनिविषै ब्रह्मका प्रतिबिंब क्यों न पड्या अर चेतना क्यों न भई।। [redacted]

[redacted]

[redacted]

[redacted]

८ तातैं जीवनिकै चेतना है सो ब्रह्मकी है।।१

है।। तहांजै से॥ ; है तिनतैं ; माया उपजाय॥

[redacted]

[illegible] नाहीं है

तैसैं जल विषै चन्द्रमा का प्रतिबिंब भासै है कोई चंद्रमा का अंश तौ जलविषै
आवै है नाहीं ।। तैसैं शरीर विषै तौ [redacted] सै नाहीं [redacted] विषै [illegible] ज्ञान स
[illegible] का अंश तौ । बहुरि [illegible]
[illegible] [redacted] [illegible] है ।। तैसैं ही ब्रह्म का अर जीवनि का [illegible] भिन्न भिन्न है तौ
।।बहुरि वह कहै है शरीर कौं तौ चेतन नाहीं करै है जीव कौं करै है ।। याकौं पूछिए है ।। जीव का स्व
रूप चेतन है कि अचेतन है जो चेतन है तौ चेतन का चेतन कहा करैगा अचेतन है तौ शरीर [redacted]
[redacted] की वा घटादिक की वा जीव की एक जाति भई ।। बहुरि [redacted]
[redacted] वाकौं पूछिए है ब्रह्म की अर जीवनि की चेत
ना एक है कि भिन्न है ।। जो एक है तौ [redacted] ज्ञान का अधिक
हीनपना कैसैं देखिए है ।। बहुरि [redacted] ए जीव परस्पर वह वाकी जानी कौं न जानैं वह वाकी
जानी कौं न जानैं सो कारण कहा ।। [redacted] जो तू कहैगा यहु घटउपाधि का भेद है तौ घटउ
पाधि [redacted] होतैं तौ चेतना भिन्न भिन्न ठहरी ।। घटउपाधि
मिटैं याकी चेतना ब्रह्म मैं मिलैगी कै नाश होय जायगा तौ यहु जीव तौ अचेतन रहि जायगा
अर तू कहैगा जीव ही ब्रह्म मैं मिलि जाय है तौ तहां [redacted] ब्रह्म विषै मिलैं याका अस्तित्व रहै है
कि नाहीं रहै है जो रहै है तौ यहु रह्या याकी चेतना याकै रही ब्रह्म विषै कहा मिल्या अर जो अ
अस्तित्व स्तित्व न रहै है तौ याका नाश ही भया ब्रह्म विषै कौन मिल्या ।। बहुरि तू कहैगा ब्रह्म की अर जीव
[redacted] ब्रह्म अर
निकी चेतना भिन्न है तौ [redacted] चेतना ब्रह्म की है ऐसैं
सर्व [illegible] जीव [illegible] आपही भिन्न भिन्न ठहरे ।। ऐसैं जीवनि कै चेतना है ब्रह्म की है ऐसैं [illegible] ६३
[illegible] ।। बहुरि [illegible] जीवनैं
[illegible]

~~लोरैसोकि ... मायाके ... भया~~

~~रूपलोरेसोकि शरीररूपतौ और कोई है हु र्निमित्तमात्र ही है जो ... है माते~~ [redacted]
शरीरादिक माया के कहौ सो माया ही हाड मांसादिरूप होहै कि माया के निमित्त तें और कोई तिनरू
प होहै॥ जो माया ही होइ है तौ माया [redacted] के वर्ण गंधादिक पूर्वै
ही [redacted] कि नवीन भए जो पूर्वै ही थे तौ पूर्वै तौ माया ब्रह्म की थी ब्रह्म अमूर्तीक है तहां वर्णादि कैसें सं
भवैं॥ बहुरि जो नवीन भए तौ अमूर्तीक कौ मूर्तीक [redacted] भया तब [redacted] अमूर्तीक [redacted] स्वभाव सास्वता
न ठहरया॥ बहुरि जो कहैगा माया के निमित्ततें और कोई होहै [redacted] तौ और पदार्थ तौ तू ठहरावता ही
नाहीं भया कौन॥ जो तू कहैगा नवीन पदार्थ [redacted] निपजे तौ ते माया तें भिन्न निपजे कि अभिन्न
निपजे माया तें भिन्न निपजे तौ मायामई शरीरादिक काहे कौं कहै तिनि पदार्थमय भए॥ अर अभि
न्न निपजे तौ माया ही तद्रूप भई नवीन पदार्थ निपजे काहे कौं कहै॥ ऐसें शरीरादिक माया [redacted] स्वरूप है
ऐसा कहना भ्रम है॥ बहुरि वे कहै है माया तें तीन गुन निपजे॥ [redacted] राजस तामस सात्विक
सो यहु भी कहना [redacted]॥ जातें ~~मंदकषाय रूप भाव कौं सात्विक कहिए है~~ मानादिक षायरूप भाव कौं
राजस कहिए है क्रोधादि कषायरूप भाव कौं तामस कहिए है सो ए तौ भाव चेतनामई प्रत्यक्ष देखिए
है॥ अर माया का स्वरूप जड कहौ हो सो जड तैं ए भाव कैसें निपजे जो जड कै भी होइ तौ पाषाणादिक
कै भी होइ सो तौ चेतना स्वरूप जीव तिनि ही कै ए भाव दीसै है तातें ए भाव माया तें निपजे नाहीं॥
जो माया कौं चेतन ठहरावै तौ यहु मानें सो माया कौं चेतन ठहराएं शरीरादिक माया तें निपजे कहैगा
तौ न मानेंगे तातें निर्धार करि [redacted] भ्रमरूप मानें नफा कहा है॥ बहुरि वे क
हैं है [redacted] तिनि गुननि तें ब्रह्मा विष्णु महेश ए तीन देव प्रगट भए
सो [redacted]॥ जातें गुनी कै तौ गुन होइ गुन तें गुनी कैसें निपजे॥ पुरष कै तौ क्रोध होइ क्रोध तें
पुरष कैसें निपजे॥ बहुरि इनि गुननि की तौ निंदा करिए है इनि करि निपजे ब्रह्मादिक तिनि कौं पूज्य कैसें
२२ कैसें संभवै

Margin notes: के सबनै (left, beside line 12); सात्विक (right, beside line 11); मंदकषाय रूपभाव कौं सात्विक कहिए है (right, beside lines 13–15)

मांनिए है ।। बहुरि गुन तौ माया मई अर इनिकौं [redacted] ब्रह्म के अवतार कहिए है सो ए तौ माया के
अवतार भए इनिकौं ब्रह्म के अवतार कैसें कहिए है ।। बहुरि ए गुन जिनिकै थोरे भी पाईए तिनि [redacted]
[redacted] कौं ई निके छुडावने का उपदेश दीजिए [redacted] । जे इनि ही की मूर्त्ति तिनिकौं पूज्य मांनिए [redacted] यह क
हा भ्रम है ।। बहुरि तिनिका कर्त्तव्य भी [redacted] इनिमई भासै है ।। स्त्री सेवनादिक वा [redacted] युद्धादि
क कार्य करै हैं सो तिनि [redacted] राजसादि गुननि करि ही ए क्रिया हो है सो इनि कै राजसादिक पाईए है
ऐसा कहौ इनिकौं पूज्य कहनां परमेश्वर कहनां तौ बनें नांही जैसें अन्य संसारी हैं तैसें ए भी हैं ।। बहु
रि कदाचित् तू कहैगा । [redacted] संसारी तौ माया के आधीन है [redacted] सो विना जानें ति
निकार्यनिकौं करै है ।। ब्रह्मादिक कै माया [redacted] आधीन है सो ए जानतें ही इनि कार्यनिकौं करै है । सो
यह भी भ्रम ही है ।। केवलीनिकै प्रत्यक्ष नांही [redacted] माया [redacted] रवन ए कासने के [redacted]
[redacted] यातें माया के आधीन भएं तौ काम क्रोधादिक ही निपजै है अ
र [redacted] काम की तीव्रता करि स्त्री नि
र विह्वल होते है सो ए ब्रह्मादिक कै तौ काम क्रोधादिक की तीव्रता पाईए है ।। [redacted] काम की तीव्रता करि स्त्री नि
कैवशीभूत भए [redacted] नृत्य गानादि करत भए [redacted] विह्वल होत भए नाना प्रकार
कुचेष्टा करत भए बहुरि क्रोध के वशीभूत भए अनेक युद्धादि कार्य करत भए मान के वशीभूत भए आ
पकी उच्चता प्रगट करने कै अर्थि अनेक उपाय करत भए माया के वशीभूत भए अनेक छल करत भए
लोभ के वशीभूत भए परिग्रह का संग्रह करत भए ।। इत्यादि बहुत कहा कहिए ऐसे वशीभूत भए चीर हर
णादि निर्लज्जनिकी क्रिया अर दधि लूटनादि चौर [redacted] निकी क्रिया अर रुंड माल धारणादि बाउलेनिकी क्रि
या बहुरूप धारणादि भूत निकी क्रिया गऊ चारणादि नीच कुलवालों की क्रिया इत्यादि जे [redacted] निंद्य क्रि
या तिनिकौं तौ करत भए ।। यातें अधिक माया के वशीभूत भए कहा क्रिया हो है सो जानी न परी जैसें कोऊ [redacted]

कुतूहला
दिकवार

६४

ऐसे प्रकार सहित

मेघपटल सहित अमावस्या की रात्रि कौं [redacted] मानें तैसें बालकचेष्टा सहित [redacted] तीव्र कामक्रोधादिकनिके
धारी [redacted] अमादिकनिकौं मायारहित माननौं है।। बहुरि वह कहै है इनिकौं कामक्रोधादि [redacted] व्याप्त नाही है
ए ऐसी परमेश्वर की लीला है।। [redacted] याकौं कहिए है।। ऐसे कार्य करै [redacted] है ते इच्छा करि
करै है कि विना इच्छा करै है जो इच्छा करि करै है तौ स्त्रीसेवन की इच्छा ही का नाम काम है युद्ध करनें की इच्छा ही
का नाम क्रोध है इत्यादि ऐसैं ही जानने। बहुरि विना इच्छा करै है तौ आप जाकौं न चाहै ऐसा कार्य तौ
परवश भए ही होइ [redacted] सो परवशपनौ कैसैं संभवै।। बहुरि तू लीला बतावै है सो परमेश्वर [redacted] अवतार
धारि इनि कार्य [redacted] निकरि लीला करै है तौ [redacted] अन्य जीवनिकौं इनि कार्यनितैं छुडाय मुक्त करनें का
उपदेश काहेकौं दीजिए है।। क्षमा संतोष शील संयमादिक का उपदेश सर्व झूठा भया।। बहुरि वह
कहै है [redacted] परमेश्वर कौं तौ किछू प्रयोजन नाही।। लोकरीति के प्रवृत्तिकै अर्थि वा भक्तनिकी रक्षा दुष्ट
निका निग्रह तिस अर्थि अवतार धरै है।। [redacted] याकौं पूछिए है।। प्रयोजन विना चींटी हू कार्य न करै
परमेश्वर काहेकौं करै।। बहुरि तैं प्रयोजन भी कह्या लोकरीति की प्रवृत्ति के अर्थि करै है।। सो जैसैं कोई
पुरुष [redacted] आप कुचेष्टा करि अपनें पुत्रनिकौं सिखावै बहुरि वह तिस चेष्टारूप [redacted] प्रवर्तै तब
उनकौं मारै तौ ऐसे पिता कौं भला कैसें कहिए [redacted] आप कामक्रोधरूप चेष्टा करि अ
प[redacted]नें निपजाए लोकनिकौं प्रवृत्ति करावै बहुरि वे लोक तैसें प्रवर्तें तब उनकौं नर
कादिकविषै डारै नरकादिक इनि ही भावनिका फल शास्त्रविषै लिख्या है सो ऐसे प्रभुकौं भला कैसैं मा
निए।। बहुरि तैं यहु प्रयोजन कह्या भक्तनिकी रक्षा दुष्टनिका निग्रह करना सो भक्तनिकौं दुखदायक जे दु
ष्ट भए ते परमेश्वर की इच्छा करि भए कि विना इच्छा भए जो इच्छा करि भए तौ जैसैं कोऊ अपनें सेवककौं आप ही
[redacted] काहूकौं कहि करि मरावै बहुरि पीछैं तिस मारनेंवालाकौं आप मारै सो ऐसे

सेवामीकोंनत्वाकैसैंकाहएतैसैं जोअपनेंभक्तकोंआपहीइच्छाकरिदुष्ट [redacted]
निकरिपीडितकरावैवहुरिपीछैंतिनदुष्टनिकोंआपअवतारधारिमारैतौऐसे [redacted] ईश्वरकों कैसैं
भलाकैसैं मानिए।।वहुरिजोतूंकहैगाविनाइच्छादुष्टनएतौकैतौपरमेश्वरकैऐसीआगामीज्ञानन
होगाजोएदुष्ट [redacted] मेरेभक्तनिकोंदुखदेवैंगे।।केपहलैं [redacted] ऐसीशक्तिनहोसीजोइनिकों
ऐसैंनहोनेंदेवौं [redacted] वहुरि [redacted] वाकोंपूछिएहैजो ऐसेकार्यकैअर्थिअवतारधार्‍या।सोकहावि
नाअवतारधारेंशक्तिथीकिनांही।।जोथीतौ [redacted] अवतारकाहेकोंधारे।।अरनथीतौ
[redacted] पीछैंसामर्थ्य [redacted] होनेंकाकारनकहांभया।।तववहकहैहैऐसैंकीएविनापरमेश्वरकी [redacted] के अनुस
महिमाप्रगटकैसैंहोइ।। [redacted] याकोंपूछिएहै।। [redacted] अपनीमहिमाकेअर्थिअपनेंअनु [redacted] कों
पालनकरै [redacted] प्रति [redacted] पक्षीनिकानिग्रहकरैसोहीरागद्वेष [redacted] है।।सो [redacted]
[redacted] परमेश्वरकैभीरागद्वेषपाईएहैतौअन्यजीवनिकोंरागद्वेषछोरिसम
¹रागद्वेष तौलक्षण संसारीजी वकाहैजो ताभावकरनेंकाउपदेशकाहेकोंदीजिए।।वहुरिरागद्वेषकेअनुसारिकार्यकरनांविचार्या [redacted]
सोकार्यथोरेवाबहुतकाललागेंविनाहोइनांही।तावत्काल आकुलतापरमेश्वरकै [redacted] होती
होसी।।वहुरिजैसैं [redacted] जिसकार्यकों
छोटाआदमीहीकरिसकैतिसकार्यकोंराजाआपआइकरैतौकिछूराजाकामहिमाहोतानांहीनिंदा ²ऐसामानी निए ६५
हीहोइ तैसैंराजा [redacted] तदेवादिककरिसकैतिसकार्यकोंपरमेश्वरआपअवतारधारिकरैतौ
²जिसका र्यकों किछूपरमेश्वरकीमहिमाहोतानांहीनिंदाहीहै। [redacted]

[redacted] आहतैंहसीकोंछुडायोर

२ नेका फल ना ४ अर आपके स्तुति करावनें की इच्छा है तौ ५

[redacted]। बहुरि महिमा तौ कोई और होइ ताकौं दिखाईए है तू तौ अद्वैत ब्रह्म मानै है कौन कौं महिमा
दिखावै है॥ अर महिमा दिखा [redacted] स्तुति करावनी है सो कौन पै स्तुति कराया चाहै है॥ बहुरि [redacted]
तू तौ कहै है सर्व जीव परमेश्वर की इछानुसारि प्रवर्तें है [redacted] सब कौं अपनी स्तुति रूप प्रवर्त्ती तौ काहे
कौं अन्य कार्य करनौ परै॥ तातैं महिमा के अर्थि भी कार्य करनौं न बनैं॥ बहुरि वह कहै है परमेश्वर
इनि कार्यनि कौं कर्त्ता संता ही अकर्त्ता है॥ वाका निर्धार होता नाहीं॥ ० याकौं कहिए है॥ तू कहै है मेरी ४ यह ४
माता है अर बांझ भी है तौ [redacted] तेरा कहा कैसैं मानैं गे॥ [redacted] जो कार्य करै ताकौं अकर्त्ता कैसैं मानि
ए अर तू कहै है निर्धार होता नाहीं सो निर्धार [redacted] बिना [redacted] मानि लेना ठहर्या तौ आकाश के फूल ग
धे के सींग भी मानौं॥ ऐसा असंभव कहनौं युक्त नाहीं॥ ऐसैं ब्रह्मा विष्णु महेश का होना कहै है सो
मिथ्या जाननौं॥ बहुरि वे कहै है ब्रह्मा तौ सृष्टि कौं उपजावै है विष्णु रक्षा करै है। महेश संहार करै है
सो ऐसा कहनौं भी [redacted] है॥ [redacted] जातैं [redacted] इनि कार्यनि कौं करतैं परस्पर विरोध होइ॥ अर ४ कोऊ किछु कीया चाहै ऊ किछू कीया चाहै तब ४
तू कहैगा ए तौ एक परमेश्वर का ही स्वरूप है विरोध काहे कौं [redacted] होय तौ आप ही उपजावै आप ही क्षपावै
ऐसा कार्य [redacted] मैं कौन फल है जो सृष्टि [redacted] आप कौं [redacted] अनिष्ट [redacted] है तौ उपजाई का
हे कौं अर [redacted] इष्ट है तौ क्षपाई काहे कौं॥ अर [redacted] जो पहलैं इष्ट लागी तब
उपजाई पीछैं अनिष्ट लागी तब क्षपाई ऐसें है तौ [redacted] परमेश्वर का स्वभाव
अन्यथा भया कि सृष्टि का स्वरूप अन्यथा भया॥ जो प्रथम पक्ष ग्रहैगा तौ परमेश्वर का एकस्व भाव न ठहर्या
[redacted] ५ ~~अनूपसैं इष्ट लागी पीछैं अनिष्ट लागनें लगि संहार ताका कारन कहा है~~ सो एक स्वभाव न रहनें
का कारन कौन है सो बताय विना कारन स्वभाव [redacted] की पलटनि काहे कौं होइ॥ अर द्वितीय पक्ष

है गा तौ सृष्टि तौ परमेश्वर कै आधीन थी वाकौं ऐसी कहा कौं होने दी कौं [redacted] जो आप कौं अनिष्ट लागै॥ बहु
रि हम पूछै हैं ब्रह्मा सृष्टि उपजावै है सो कैसे उपजावै है॥ एक तौ प्रकार यहु है जैसे मंदिर चुननेवाला
[redacted] चूना पत्थर [redacted] आदि सामग्री एकठी करि [redacted] आकारादि बनावै है तैसे ही
ब्रह्मा सामग्री एकठी करि सृष्टि रचना करै है तो ए सामग्री [redacted] जहां तैं ल्याय एकठी करी सो
ठिकाना बताय अर एक ब्रह्मा ही [redacted] एती रचना बनाई [redacted] सो पहलैं पीछै बनाई होगी कै अपनी शरी
र के हस्तादिक बहुत कीए होंगे सो कैसे है सो [redacted] बताय॥ जो बतावै तिसही मैं विरुद्ध भासैगा॥ बहुरि

एक प्रकार यहु है॥ जैसे राजा आज्ञा करै ताकै अनुसारि कार्य होय तैसे
ब्रह्मा आज्ञा करि सृष्टि निपजै है तो आज्ञा कौन कौं दई अर जिनिकौं आज्ञा दई वे कहां तैं सामग्री ल्या
य कैसे रचना करै है सो बताय॥ बहुरि एक प्रकार यहु है जैसे ऋद्धिधारी इच्छा करै ताकै अनुसारि कार्य
स्वयमेव बनै तैसे ब्रह्मा इच्छा करै ताकै अनुसारि सृष्टि निपजै है तो ब्रह्मा तो इच्छा ही का कर्ता भया लो
क तौ स्वयमेव ही निपज्या॥
[redacted] इच्छा तौ परमब्रह्म कीनी थी ब्रह्मा का कर्तव्य कहा भया जातैं ब्रह्मा
कौं सृष्टि का निपजावनहारा कह्या॥ बहुरि तू कहैगा परमब्रह्म भी इच्छा करी अर ब्रह्मा भी इच्छा करी तब
लोक निपज्या तो जानिए है केवल परमब्रह्म की इच्छा कार्यकारी नाहीं तहां शक्तिहीन [redacted] आया
॥ बहुरि हम पूछै हैं॥ जो लोक बनाया हुवा बनै है तो बनावनहारा तो [redacted]
[redacted] के अर्थि [redacted] बनावै सो [redacted] ही रचना करै इस लोक विषै तो इष्ट [redacted] पदार्थ थोरे देखिए है
[redacted] घने देखिए है॥ जीवनि विषै देवादिक बनाए सो तो बनाए अर लट कीडी [redacted]

२ सुख

रमने के अर्थि वा [redacted] भक्ति करावने के अर्थि इष्ट

२ सर्व प्रकार अनिष्ट ही है २

कुकरे सूरसिंहादिक बनाए सो किसै अर्थि बनाए ॥ [redacted]
पुतौर मनीक नीही न क्लि करते नी हीं ॥ बहुरि [redacted] दरिद्री दुःखी नारकी नि
कोंदिबे आपको जुगुप्सा आदि दुःख उपजे ऐसे अनिष्ट काहे कौं बनाए ॥ तहाँ वह कहै है जो जीव अप
ने पाप करि लट कीडी दरिद्री नारकी आदि पर्याय नि भुगतै है ॥ याकौं [redacted] पूछिए है पीछे तौ पाप ही
का फल [redacted] ए पर्याय नए कहे ॥ पहलें ही लोक रचना करते ही इनिकौं बनाए सो किसै अर्थि बनाए ॥
बहुरि पीछें [redacted] जीव पापरूप परिणए सो [redacted] कैसें परिणए [redacted] जो आप ही परिणए कहोगे तौ [redacted]
[redacted] जानिए है ब्रह्मा पहलें तौ नि
पजाए पीछें वै याके आधीन न रहे इस कारणतें ब्रह्मा कौं दुःख ही भया ॥ बहुरि जो कहोगे ब्रह्मा
के परिणमाए परणमें है तौ तिनिकौं पापरूप काहे कौं परिणमाए ॥ [redacted] जीव [redacted] तौ आपकी नि
पजाए थे उनका बुरा [redacted] किसै अर्थि किया ॥ [redacted] तातें [redacted] ऐसें भी न बनैं ॥ बहुरि
सुगंधादि सहित वस्तु — अजीव निविषै [redacted] सुवर्ण [redacted] बनाए [redacted] मरण कै अर्थि बनाए ॥ [redacted] कवर्ण दुर्गंधा
दि [redacted] सहित [redacted] वस्तु दुःख [redacted] सो किसै अर्थि बनाए ॥ [redacted]
[redacted] इनिनादिक रि ब्रह्मा लोकें किछू सुख
उपजता होगा — तौ नाहीं ॥ बहुरि तू कहेगा पापी ... अर्थि बनाए तो आप ही के निपजाए जीव ति
निस्यों ऐसी [redacted] काहे कौं करी ... निकौं दुःखदायक सामग्री पहलें ही बनाई ॥ बहुरि धूलि
पर्वता
[redacted] दि वस्तु केती ... नाहीं अर दुःखदायक भी नाहीं तिनिकौं किसै अ
र्थि बनाई ॥ नावन हारा तौ ... सो प्रयोजन ... तातें ब्रह्मा सृष्टि का कर्त्ता [redacted] — ऐसैं भी काहे है
स्वयमेव तौ जैसें तैसें होइ अर — [redacted]

~~२ ऐसैं ही २~~

इसविषैकेई [redacted] ग्राकारादिकतोजैसेंकीमेरसै हैं ॥ केइउपजे विनसे हे ॥ कोऊ ग्रनिक
कर्त्ता [redacted] ॥ वहुरि विष्णुकौं लोककारक्षककहै है [redacted] ॥ [redacted] रक्षकहोइ सो तो दोय ही
कार्यकरै ॥ [redacted] एकतौ दुः [redacted] उपजावनें के कारण न होनें दे ग्रर एकवि
नशानें के कारन न होनें दे ॥ सो तो लोकविषै दुःखही [redacted] के उपजनें के कारण जहाँ तहाँ देषिए है
ग्ररतिनिकरि जीवनिकौं दुषही देषिए है ॥ क्षुधा तृषादिक लगिरहे हैं शीत उष्णादिक करि दुःखी हो है
जीवपरस्पर दुष उपजावे है ॥ [redacted] शस्त्रादि दुषकेकारन [redacted] वनिरहे हैं ॥ वहुरि [redacted]
जीवपरस्पर दुष उपजावे है ॥ [redacted] शस्त्रादि दुषकेकारन [redacted] वनिरहे हैं जीवनिके रोगादिक वाग्रग्निविषशस्त्रा
दि कारण [redacted] विनशानें केकारण ग्रनेकवनिरहे हैं
[redacted] ॥ [redacted] ग्रजीव [redacted] पें फेर विनशानें के कारण देषिए है ॥ [redacted] सो ऐसें
[redacted] ॥ [redacted] ॥ ग्रजीव [redacted] विनशानें के कारणदेषिए है ॥ वहुरि कहै है विष्णु रक्षक ही है ॥ दूसरु
[redacted] ॥ विष्णु रक्षक है इक ताकीया ॥ [redacted] कहै है विष्णु रक्षकही है ॥ ऽ
ऽ क्षुधा तृषादिक के ग्रर्थि ग्रन्नजलादिक [redacted] कीए हैं ॥ ऽ [redacted] संकटमैं सहायकरै है ॥
मरणके कारणवनें [redacted] टीटोडीकी मीनावत् वारे है इत्यादिप्रकारकरि विष्णु रक्षा करै है ॥ [redacted]
[redacted] याकौं कहिए है ॥ ऽ जहाँ जीवनिके क्षुधा तृषादिक [redacted] वहुत पीडै ग्रर ग्रन्नजलादिक मिले
नाहीं संकट पडै सहाय न होय किंचित् कारण पाइ मरण होइजाइ तहाँ [redacted] शक्तिहीन भई कि
[redacted] लोकविषै वहुत तौ ऐसें ही दुखी होहै मरणपावे है [redacted]
वाकौं [redacted] ज्ञानहीन भया ॥ [redacted] तब वह कहै है यहु जीवनिके ग्रपनें कर्त्तव्यका फल है ॥ [redacted] तब वाकौं
विष्णुरक्षा काहेकौं न करी ॥ [redacted] तब वह कहै है यहु जीवनिके ग्रपनें कर्त्तव्यका फल है ॥
कहिए [redacted] जैसें शक्तिहीन लोभी [redacted] ऽ वैद्य रोगकाहूके किछू भला होइ ताकौं तो कहै मेराकीयाभया है ॥
ग्ररजहाँ बुराहोइ मरण होइ तब कहै याका ऐसा ही होनहार था ॥ तैसें तू कहै है भला भया तहाँ तो
विष्णुका कीया भया ग्रर बुराभया सो याका कर्त्तव्यका फल भया ॥ ऐसी [redacted] कल्पना काहेकौं की
जिए के तो बुरा वा भला दोऊ विष्णुका कीया कहो के ग्रपनी कर्त्तव्यका फल कहो जो विष्णुका कीया

ऽ क्ष्प वा यकताग्रा कोंकारण देषिए हैं ग्रर ?

ऽ ऐसें तो

ऽ देषो ऽ

ऽ कोई कोंक एकै जरकों मरण पहोंचावै है ऽ

६७

१ विषैवासी करै सहाय होनें विषै वा मरण न होनें २

मया तौ घनें जीव दुःखी अर शीघ्र मरते देखिए है सो ऐसा कार्य करै ताकौं रक्षक कैसैं कहिए है॥ बहु
रि अपनें कर्तव्य का फल है तौ करैगा सो पावैगा विष्णु कहा रक्षा करैगा॥ तब वह कहै है जे विष्णु
के भक्त हैं तिनि की रक्षा करै है॥ [redacted] याकौं कहिए है कीडी कुंजर आदि [redacted] भक्त नाहीं उनकै अन्ना
दि पहुंचावनें विषै विष्णु का कर्तव्य [redacted] मांनि सर्व का रक्षक काहे कौं
मांनैं॥ भक्तनि ही का रक्षक मांनि॥ सो भक्तनि का भी रक्षक दीसता नाहीं॥ [redacted] अभक्त भी भक्तपुरुषनि कौं पीडा उपजावते देखिए है॥ तब वह कहै है
घनी ही जायगा [redacted] प्रहलादादिक की सहाय करी है॥ [redacted] याकौं कहै है
जहां सहाय करी तहां तौ तुम तैसैं ही मांनि [redacted] परन्तु हम तौ प्रत्यक्ष म्लेछ मुसलमान आदि
अभक्त पुरुषनि करि भक्त पुरुष पीडित होते देखि वा मंदिरादि विघ्न करते देखि पूछै हैं इहां
सहाय न करै है सो शक्ति ही नाहीं कि खबरि ही नाहीं॥ [redacted] जो शक्ति नाहीं तौ इन
तैं भी हीन शक्ति का धारक भया॥ खबरि नाहीं तौ जाकौं एती भी खबरि नाहीं सो अज्ञान भया अ
र जो तू कहैगा शक्ति भी है और जानैं भी है इच्छा ऐसी ही भई तौ भक्तवत्सल काहे कौं कहै॥ [redacted]
ऐसैं विष्णु कौं लोकका रक्षक मानना [redacted]॥ बहुरि वे कहै है महेश संहार करै है सो [redacted]।
प्रथम तौ महेश संहार सदा करै है कि महाप्रलय होहै तब ही करै है जो सदा करै है तौ जैसैं विष्णु की रक्षा
करनें करि स्तुति कीनी तैसैं याकी संहार करनें करि निंदा करो [redacted] यह संहार कैसैं करै है। [redacted]
जातें रहा अर संहार स्वतिपूरी है॥ बहुरि [redacted] महेश आप [redacted] संहार करै है तौ लहलहण मैं [redacted]
सें पुरुष [redacted] दिक रिकाहू कौं मारै तैसैं [redacted]

१ हस्ता २ — १ वा कहि करि मरावै २ — १ तें अंगनि करि २ — १ वा आज्ञा करि मरावै है ४

१ बाकीं नकोंनकों आह्लादयुगपत् १

संहारतौ घनें जीवनिकौं सर्वलोक मैं होहै। यह कैसें कै संयोग निकरि कैसें संहार करै है। बहुरि [redacted]
मैं ज्ञाता इच्छा ही करै अर याकी इच्छातैं स्वयमेव उनका संहार होहै तौ याकै सदा काल मारनें रूप [redacted]
परिणाम ही रहा करते होंगे अर अनेक जीवनिकै युगपत् मारनें की इच्छा कैसें होती होगी [redacted]
[redacted] ॥ बहुरि जो महाप्रलय होतैं संहार
होहै तौ [illegible]
[illegible] परमब्रह्म की इच्छा तैं ऐसें करै है कि बाकी बिना इच्छा ही करै है।
जो इच्छा तैं करै है तौ परमब्रह्म [redacted] कै असा क्रोध कैसें भया जो सर्व का प्रलय करनें की इच्छा
भई कोई कारण बिना [redacted] ह्नों ही [redacted] नाश करनें की इच्छा [redacted] ही का नाम क्रोध है॥ [redacted]
रनवताय॥ [redacted]॥ बहुरि तू कहेगा परमब्रह्म [redacted]
इष्ट्याल बनाया था बहुरि दूरि कीया कारन [redacted] कि ४ नाहीं तौ ख्याल बनावनें वाला कौं जो ख्याल
इष्ट लागै है तब बनावै है अनिष्ट लागै है तब दूरि करै है॥ याकौं यह लोक इष्ट अनिष्ट लागै है तौ या
कै लोकस्यौं रागद्वेष तौ न भया॥ [redacted] साक्षीभूत ब्रह्म का स्वरूप काहे कौं कहौ हो॥ [redacted] साक्षी
भूत तौ वाका नाम है। जो स्वयमेव जैसें होइ तैसें देख्या जो त्यौं करै॥ जो इष्ट अनिष्ट मानि उपजावै नष्ट
करै ताकौं साक्षीभूत कैसें कहिए॥ जातैं साक्षीभूत रहनां अर कर्ता हर्ता होनां ए दोऊ [redacted] परस्पर
विरोधी है एक कै दोऊ संभवै नाहीं॥ बहुरि [redacted] परमब्रह्म कै [redacted] पहलें तौ इच्छा यह भई थी मैं एक हौं
सो बहुत होस्यौं तब बहुत भया अब [redacted] असी इच्छा भई होसी जो मैं बहुत हौं सो एक होस्यौं सो जैसें ६८
कोऊ [redacted] भोलपतैं कार्य करि पीछैं तिस कार्य कौं दूरि कीया चाहै तैसें [redacted] परमब्रह्म नैं [redacted]
[redacted] बहुत होइ एक होनें की इच्छा करी सो जानिए है बहुत होनें का कीया होइ सो भोल
पहीतैं कीया॥ आगामि ज्ञानकरि कीया होता तौ काहे कौं दूरि करनें की इच्छा होती [redacted] बहुरि जो [redacted] परम

१ नाशक रनें की इच्छा होइ १

ब्रह्मकी इच्छा बिना ही महेश संहार करै है तौ यहु परमब्रह्म का वा ब्रह्मा का विरोधी भया॥ बहु
रि पूछैं हैं यहु महेश लोक कों कैसें संहार करै है। [redacted] जो अपने अंग
निकरि संहार करै तौ सर्व का युगपत् संहार कैसें करै है॥ बहुरि याकी इच्छा होतैं स्वयमेव संहार
होहै तौ इच्छा तौ परमब्रह्म की कीही थी याने संहार कहा कीया॥ बहुरि हम पूछै हैं। संहार भए सर्व
लोक विषै जीव अजीव थे ते कहां गए॥ तब वह कहै है जीवनि विषै भक्त तौ ब्रह्म विषै मिले अन्य मा
या विषै मिले [redacted] अब याकों पूछिए है माया ब्रह्म तैं जुदी रहै है कि [redacted] पीछैं एक होय [redacted] जो जुदी रहै है
तौ [redacted] ब्रह्मवत् माया भी नित्य भई तब अद्वैत ब्रह्म न रह्या
अर माया [redacted] ब्रह्म मैं एक होय जाय है तौ जे जीव माया मैं मिले थे ते भी माया की साथि ब्रह्म मैं
मिलि गए॥ [redacted] तौ महाप्रलय होतैं तौ सर्व का परमब्रह्म मैं मिलना ठहर्‍या ही तौ मोक्ष का उपाय
काहे कों करिए॥ बहुरि जे जीव माया मैं मिले ते बहुरि लोक रचना भए वे ही जीव लोक विषै आ
वैंगे कि वे तौ ब्रह्म मैं मिलि गए थे नए उपजैंगे॥ जो वे ही आवैंगे तौ जानिए है जुदे जुदे रहै हैं।
मिले काहे कों कहो अर नए उपजैंगे तौ जीव का [redacted] अस्तित्व थोरा काल पर्यंत ही रहै है
[redacted] काहे कों [redacted] होने का उपाय कीजिए॥ बहुरि वह कहै है पृथ्वी आदि कहैं ते माया विषै मिलै है
सो माया अमूर्तीक [redacted]॥ जो अमूर्तीक है तौ [redacted] मैं मूर्तीक कैसें मिले अर मूर्तीक अचेतन
है तौ यहु ब्रह्म मैं मिलै है कि नांही जो मिलै है तौ याके मिलने तैं ब्रह्म भी मूर्तीक [redacted] भया। जो न मिलै है तौ
अद्वैतता न रही॥ अर तू कहैगा ए सर्व अमूर्तीक [redacted] चेतन होइ जाय है तौ [redacted]
आत्मा अर शरीरादिक की एकता भई [redacted] सो यहु संसारी एकता मानै ही है॥ याकों [redacted]
अज्ञानी काहे कों कहिए॥ बहुरि [redacted] पूछै हैं लोक का प्रलय होतैं महेश का प्रलय हो

मूर्तीक सचेतन है कि मूर्तीक अचेतन है।

अचेतन कहिए स्थित भया अर

४करि वा अन्य अनेक प्रकार निकरि८

[redacted] होइ है ॥ जो होइ है तौ युगपत् होइ है कि आगैं पीछैं होइ है जो युगपत् होइ है तौ आप नष्ट होता लोककौं
नष्ट कैसैं करै ॥ अर आगैं पाछैं होइ है तौ [redacted] महेश लोककौं नष्ट करि आप [redacted] कहाँ र
ह्या ॥ आप भी तौ सृष्टिविषैं ही था ॥ ऐसैं महेशकौं [redacted] सृष्टिका संहारकर्ता मानै है सो [redacted]
[redacted] ॥ या प्रकार ब्रह्मा विष्णु महेशकौं [redacted] सृष्टिका उपजावनहारा रक्षा करनहारा संहारक
रनहारा मानना [redacted] लोककौं अनादिनिधन मानना ॥ इस लोकविषैं जे जीवादि प
दार्थ हैं ते अनादिनिधन हैं बहुरि तिनकी अवस्थाकी पलटनि हुवा करै है ॥ तिस अपेक्षा उपजते
विनसते कहिए है ॥ बहुरि जे स्वर्ग नरक द्वीपादिक हैं ते अनादि [redacted] ऐसे ही
हैं अर [redacted] सदा काल ऐसैं ही रहै हैं ॥ कदाचित् तू कहैगा बिना बनाए ऐसे आकारादिक कैसैं
न ए सो न एहोइ तौ बनाए ही होइ अनादितैं ही जिपाईए तहाँ तर्क कहा ॥ जैसैं तू परमब्रह्मका स्वरू
प अनादिनिधन मानै है तैसैं [redacted] स्वर्गादिक [redacted] अनादिनिधन मानि एहु है ॥ तू कहैगा स्वर्गादिक
कैसैं न ए हम कहैंगे परमब्रह्म कैसैं भया ॥ तू कहैगा इनिकी रचना ऐसी कौन करी हम कहैंगे परमब्र
ह्मकौं ऐसा कौन बनाया ॥ तू कहैगा परमब्रह्म स्वयंसिद्ध है हम कहैं हैं स्वर्गादिक स्वयंसिद्ध है ।
तू कहैगा इनिकी अर परमब्रह्मकी समानता कैसैं संभवै तौ संभवनेविषै दूषण बताय ॥ [redacted]
लोककौं नवा उपजावना ताका नाश करना तिसविषै तौ हम अनेक दोष दिखा[redacted]ए ॥ लोककौं अ
नादिनिधन मानैं कहा दोष लागै सो तू बताय ॥ ~~जो [...] न मकरि [...] सौ [...] तूं क~~
~~विर्जय [...] बकै तौ तैसा फल तू पावैगा ॥ बहुरि बल कहै है [...] कलै गम सा मानै ॥ परन्तु तैसा~~
~~सप है ॥ एक तौ मुक्त नर~~ ॥ जो तू परमब्रह्म मानै है सो जुदा ही कोई है नाहीं ॥ इस संसारविषै जीव हैं ते ई
यथार्थ ज्ञानकरि मोक्षमार्गका साधनतैं [redacted] सर्वज्ञ वीतराग हो हैं ॥ [redacted] इहाँ प्रश्न

१ तौ निराकार कहना :

जो [redacted] तुम तौ न्यारे न्यारे जीव अनादि निधन कहौ हौ। मुक्त भए पीछैं [redacted] न्यारे न्यारे कै सं
सै जवै ताका समाधान यहु है जो [redacted] मुक्त भए पीछैं सर्वज्ञ कौं दीसै है कि नाहीं दीसै है जो
दीसै है तौ किछू आकार दीसता ही होगा बिना आकार दीखे कहा देख्या। अर न दीसै है तौ कै तौ वस्तु ही
नाहीं कै सर्वज्ञ नाहीं। तातैं इंद्रियज्ञानगम्य आकार नाहीं तिस अपेक्षा निराकार है [redacted]।
अर सर्वज्ञ ज्ञानगम्य है तातैं आकारवान है। आकारवान का हस्या तब जुदा जुदा होय तौ कहा हो
आंवागी। बहुरि जो तु जाति अपेक्षा एक कहै है तौ हम भी मानै हैं। जैसें गोहूं भिन्न भिन्न है तिनकी जाति
एक है। ऐसैं एक मानें तौ किछू दोष है नाहीं। बहुरि सर्व लोक विषैं मूर्तीक वस्तु सर्व पुद्गल है। सो
[redacted]
याप्रकार [redacted] यथार्थ श्रद्धान करि लोक विषैं सर्व पदार्थ अकृत्रिम जुदे जुदे अनादि नि
धन मानने। बहुरि जो वृथा ही भ्रम करि सांच झूठ का निर्णय न करै तातैं जानै तेरा श्रद्धान का फल
तू पावैगा। बहुरि वे ही ब्रह्मा तैं पुत्र पौत्रादिक करि [redacted] कुलप्रवृत्ति कहै है। [redacted]
अकरै है। तिनि विषैं केई अवतारनि कौं पूज्य कहै हैं। केइ देव मनुष्य देवांगनानि के परस्पर प्रसूति बतावै है।
[redacted] बहुरि कुलनि विषैं राक्षस मनुष्य देवांगनानि के परस्पर प्रसूति बतावै है।
विकों अवतार कहै हैं। बहुरि मन ही करि वा पवनादिक करि वा
तैं देवतैं मनुष्य वा मनुष्यतैं [redacted] बहुरि मन ही करि वा पवनादिक करि वा
[redacted] ऐसें होतें पुत्र पौत्रादि
वीर्य संघनें आदिक करि प्रसूति होनी बतावै है सो प्रत्यक्ष विरुद्ध भासै है। ऐसें होतें पुत्र पौत्रादि
कका नियम कैसें रह्या। बहुरि बडे बडे महंतनिकौं अन्य [redacted] अन्य मातापितातें भए कहै है सो महंत पुरुष
कुशील माता पिता कैं [redacted] कैसें उपजैं यहु तौ लोक विषैं गालि है। ऐसा कहि उनकी
महंतता काहेकौं कहिए है। बहुरि [redacted] गल आदिक की मैल आदिक करि उत्पत्ति बतावै है वा का
हूकै अंग काहूकै जुरे बतावै हैं। [redacted] इत्यादि अनेक प्रत्यक्ष विरुद्ध कहै है। बहुरि

१ देवा तिर्यंचतें मनुष्य इत्यादि कोई माता कोई पिता कौं पुत्र की उपजनी बतावै सो

२ देव वा तिर्यंचतें मनुष्य इत्यादि कोई माता कोई पिता कूं पुत्र की उपजनी बतावै सो

६ जातैं जो कार्य स्तोक उद्यमतैं होइ तहीं बहुत उद्यम [redacted] काहेकों करिए ...

वोईस अवतार भए कहै हैं।। तहाँ केई अवतारनिकों पूर्णावतार कहै है केईनिकों अंशावतार कहै है
सो पूर्णावतार भए [redacted] तब ब्रह्म अन्यत्र व्यापक रह्या कि न रह्या जो रह्या तौ इ
नि अवतारनिकों पूर्ण काहेकों कहौ न रह्या तौ एतावन्मात्र ही ब्रह्म रह्या बहुरि अंशावतार भए तौ
ही [redacted] ब्रह्म का अंश तौ सर्वत्र कहो हो इनि विषै कहा अधिकता भई।। बहुरि कार्य तौ तु — २जाभिए है
छ तिसकै वास्तै आप ब्रह्म अवतार धार्या कहै सो [redacted] विना अवतार धारें ब्रह्म की शक्ति
तिस कार्य करने की न थी।। [redacted] बहुरि अवतार निविषै [redacted] मछकछादि
२ऐसे केत्र दिसेन२ — अवतार भए सो किंचित् कार्य कूं [redacted] तिर्यंच [redacted] पर्यायरूप भए [redacted] सो
[redacted] कैसैं से न बने बहुरि प्रह्लाद के अर्थि नरसिंह अवतार भए सो हरिणाकुश कों ऐसा काहेकों हो
नें दीया अर कितेक काल अपने भक्त कों काहेकों दुख द्याया [redacted] बहुरि [redacted]
ऐसा रूप२ — [redacted] काहेकों धर्या।। बहुरि नाभि राजा के वृषभावतार भया बतावै है।। सो नाभि कों पुत्र
पनें का सुख उपजावनें कों अवतार धार्या [redacted]।। घोर तपश्चरण किसै अर्थि कीया।। [redacted]
उनकों तो किछू साध्य था ही नहीं।। अर कहैगा जगत के दिखावनें कों कीया तौ कोई अवतार तौ तपश्च
रण दिखावै कोई अवतार भोगादि कदिखावै।। जगत् किसकों भला जांनि लागै।। [redacted]
[redacted]।। बहुरि कहै है एक अरहंत नाम राजा भया सो वृषभावतार का मत अंगीकार करि
जैन मत प्रगट [redacted] कीया सो जैन विषै [redacted] कोई एक अरहंत भया नाहीं। जो सर्वज्ञ पद पाइ पू
जनें योग्य होइ ताही का नाम अर्हत् है।। बहुरि राम कृष्ण इनि दोय अवतारनिकों मुख्य कहै है।। सो
रामावतार कहा कीया।। सीता के अर्थि विलाप करि रावण स्यों लरि [redacted] वाकों मारि राज कीया ७०
[redacted]।। अर कृष्णावतार [redacted] पहलैं गुवालिया होइ परस्त्री [redacted] गोपिकानि
के अर्थि नाना विपरीत [redacted] निंद्य चेष्टा करि री पीछैं [redacted] जरासंधु आदि कों मारि राज कीया सो ऐसे का

[redacted]
३ दासीकामुख्य ॰

[redacted]कार्यकरनेंमैंकहासिद्धिनई।। वहुरि राम कृस्न कूं एक (हिक) स्वरूप कहे है सो वीचि मैं इतनों काल कहां रहे
जो ब्रह्म विषै रहे तो जुदे रहे [redacted] कि एक रहे जुदे रहे तो जानिए है एब्रह्म तें जुदे है एक रहे तो राम ही
कृस्न भया सीता ही रुकमिणी भई [redacted] इत्यादि कैसे कहिए है।। वहुरि [redacted] रामावतार विषै
तौ सीता कों मुख्य [redacted] (कैं)।। कृस्नावतार विषै सीता कों [redacted] रुकमिणी भई कहे है ताकों तौ प्रधान न कहे है।
राधिकाकुमारी ताकों मुख्य [redacted] करे।। वहुरि [redacted] निज स्त्री कों
[redacted] पूछे तब कहे राधिका न कथी सो [redacted]
कारि [redacted] करनां कैसैं वनै।। वहुरि [redacted] कृस्न कै तौ राधिका सहित पर ॰ वहुरि ॰
स्त्री [redacted] सर्व विधान [redacted] ए।। यहु नकिं कैसी।। ऐसे कार्य तौ महानिंद्य है।। [redacted]
[redacted] रुकिमिनी कों छोरि राधा [redacted] कों मुख्य करी सो परस्त्री सेवन कों नभ्रा जानि करी होसी।। ॰ अनेक परस्त्रीनि
वहुरि एक राधा विषै ही आसक्त न भया अन्य [redacted] गोपिका वा कुब्जा आदि विषै भी आसक्त
भए सो यहु अवतार ऐसे ही कार्य का अधिकारी भया।। वहुरि [redacted] कहे लक्ष्मी स्त्री है।। [redacted]
धनादिक कों लक्ष्मी कहे सो ए तौ पृथ्वी आदि विषै जैसे पाषाण धूलि है तैसे ही मुवर्णादि धन है
जिए हे जुदी ही लक्ष्मी कौं न जाकार भर्तार नारायण [redacted] है।। [redacted] कहीं तीर्थ कहिए जो
निरूपण करै सो वि[redacted]द्ध करै परंतु जीवनि कों भोगादिकं की वार्त्ता सुहावे तातें तिनकौ कहनौ वा इमले
लागि है।। [redacted] ऐसैं अवतार कहे है।। [redacted] इनि कों [redacted] ब्रह्म स्वरूप कहे है।।
वहुरि औरनि कों भी ब्रह्मस्वरूप कहे है।। महादेव कों ब्रह्मस्वरूप मानै है।। [redacted]
[redacted] ताकों योगी कहे है।। सो योग किसे
अर्थि [redacted] ग्रहा।। वहुरि मृगछाला नग्न भी धारै है सो किसै अर्थि धारी है।। वहुरि रुंडमाला पहरे

॰ सेवन कूं

६ वहुरि सीतादिक कों माया का स्वरूप है सो इनि विषे आसक्त भए माया हो ... आप ... [illegible]

२ त्रिशूलादि राखै है सो कौन का भय है ॥ ५

है सो हाडकौं जीवनी जीनिंद्यता कौं गलेमैं किसे अर्थि धारै है ॥ सर्पादि सहित है [redacted] सो या
मैं कौन [redacted]ई है ॥ आक धतूरा खाय है सो यामैं कौन भलाई है ॥ बहुरि पार्वती संग लीए है सो यो
गी होइ स्त्री राखै है ऐसा विपरीतपनौ काहेकौं कीया ॥ [illegible] विपरी
[redacted] का मात्रा था तो घर ही मैं रहा होता ॥ बहुरि वानैं नाना प्रकार विपरीत चेष्टा की
[redacted] वाउले [redacted] कासा कर्त्तव्य जासे ताकौं
कीता कौं प्रयोजन तौ किछू भासै नाही ॥ याकौं कृष्ण का सेवक कहै कबहू
ब्रह्मस्वरूप कहै ॥ बहुरि कबहू कृष्ण कौं या का सेवक कहै कबहू
दोऊनि कौं एक ही कहै है किछू ठिकानौ नाही ॥ बहुरि [redacted] [illegible]
[illegible]
[illegible] सूर्यादिक कौं [redacted] ब्रह्म का स्वरूप कहै है [redacted]
[redacted] बहुरि ऐसा कहै है जो विष्णु कहै सो धातुनि विषै सुवर्ण [redacted]
वृक्षनि विषै कल्पवृक्ष रूज़ें वा विषै हूं म इत्यादि [redacted] मैं ही हौं ॥ सो [redacted] किछू पूर्वापर विचारै नाही ॥
कोई एक अंग करि [redacted] कोई जाकौं महंतपनौ ताही कौं ब्रह्म का स्वरूप कहै है ॥ सो ब्रह्म सर्वव्या
पी है तो ऐसा विशेष काहेकौं कीया ॥ अर सूर्यादि विषै वा सुवर्णादि विषै ही ब्रह्म [redacted]
है तो सूर्यवत् दीपादिक भी उजाला करै है सुवर्णवत् रूपा लोहा आदि भी धन [redacted] है ॥ इत्यादि गुण
अन्य पदार्थनि विषै भी है तिनिकौं भी ब्रह्म मानौ बडा छोटा [redacted] मानौ ॥ परंतु जाति तौ एक भई ॥ सो झूठी
महंतता ठहरावने के अर्थि अनेक प्रकार युक्ति बनावै है ॥ बहुरि [illegible] अनेक [redacted] ज्वालामालिनी आदि देवी ७१
[illegible] तिन कौं पूज्य कहै है ॥
तिनिकौं माया का स्वरूप कहि हिंसादिक पूजनौ ठहरावै ॥ गऊ आदि पशु अभक्ष्य भक्षन [redacted]

४ सूर्यवत् उजाला करै है सुवर्ण धन है इत्यादि गुणनि करि [redacted] ब्रह्म मानौ [redacted] तासो ५

७ देवताहू

१ हिंसादिक पाप उपजाय ५

१ सो माया तौ निंद्य है ताका पूजना कैसे संभवै ॥ अर हिंसादिक करना कैसे भला होइ ॥ बहुरि २

१ गादि सहित २

अग्नि[redacted]दिकौं देव[redacted] ठहराय पूज्य कहै है॥ ब्रह्मादिककौं मुक्ति बनाय पूज्य कहै है[redacted] [redacted]काहिए पुरुषलिंगी नाम सहित जे[redacted]तिनि विषै[redacted] ब्रह्मकी कल्पना करि अर स्त्रीलिं गी नाम सहित[redacted] होइ तिनि विषै माया की कल्पना करि अनेक वस्तुनिका पूजन ठहरावै है[redacted] [redacted] इनिके पूजें कहा होगा सो किछू विचार नाहीं। झूठे लौकिक प्रयोजन के कारण ठहरै है॥ बहुरि यम मारे है॥ बहुरि [redacted]राय जगतकों भ्रमावै है॥ बहुरि वै[redacted] करै है॥ विधाता शरीरकौं घडै है॥ बहुरि यम मारै है॥ बहुरि [redacted]तही पुण्यपापका ले[redacted] मूए पीछें मार्ग विषै बहुत काल लागै है॥ बहुरि तहाँ पुण्यपापका ले[redacted] सो एकलित झूठी युक्ति है जी खा करै है बहुरि तहाँ दंडादिक दे है॥[redacted] सो एक लित झूठी युक्ति है जी [redacted]तिनिका युगपत् कैसें[redacted] ऐसैं ते व तौ[redacted] समय समय अनंते उपजे मरे[redacted]तिनिका युगपत् कैसें[redacted] ऐसें मानने का कोई कारण भी भासै नाहीं॥ बहुरि मूए पीछें श्राद्धादिककरि तिनका भला होना कहै सो जीवतां तौ काहूकै पुण्यपापकरि कोई सुखी दुखी होता दीसै है नाहीं मूए पीछें होइ॥ ए युक्ति मनुष्यनिकौं भ्रमाइ अपने लोभ साधनेंकै अर्थि बनाई है॥[redacted] कीडी पतंग सिंहादिक जीव भी तौ उपजे मरै है[redacted] उनकौं[redacted] प्रलयके जीव ठहरावै[redacted] [redacted] सो[redacted] जैसैं मनुष्यादिककै जन्म मरण होते देखिए है तैसैं ही उनके होते देखिए है। [redacted] [redacted] झूठी कल्पना कीएं कहा सिद्धि है॥ बहुरि[redacted] वै शास्त्रनि विषै[redacted] कथादिक निरूपै है तहाँ विचार कीएं विरुद्ध भासै है॥ बहुरि यज्ञादिक[redacted] करनौ धर्म ठहरावै है सो तहाँ बडे जीव तिनका होम करै है अग्न्यादिकका महा आरंभ करै है तहाँ जीवघात होय है॥ सो उनही के शास्त्र विषै वा लोक विषैं हिंसाका निषेध है सो ऐसे निर्दयी हैं॥ किछू गिनें नाहीं॥ अर कहै है यज्ञार्थ पशवः सृष्टाः॥ ए यज्ञ हीकै अर्थि पशु बनाए हैं॥ तहाँ घात करनेंका दोष नाहीं॥ [redacted] बहुरि मेघादिकका होना शत्रु आदिका विनशना इ[redacted]

मरती यमकेह तलेनूंसुअ वेहै

३ तो ४ ३ उनकी का हकों पीरनी हो ५
४ बहुरि पाप का भय पनो होता तातें ४ ६ = पहलां आगें ज्ञान योग का निरूपण करै है सो लिखिए है याकों लिखनूं

मो०३० ७२ त्यादिक लिखा इस अपने लोनकै आछि राजादिकनिकौं भ्रमावै॥ सो कोई विषतैं जीवनी कहै [redacted]
सो प्रत्यक्ष विरुद्ध है तैसैं हिंसा कीए धर्म और कार्यसिद्धि कहनी प्रत्यक्ष विरुद्ध है॥ परंतु [redacted] जिना
निकी हिंसा करनी कही [redacted] तिनिकी किछू शक्ति नांही जो किसीकौ शक्तिवान का [redacted] इष्ट
का होम करनी न ठहराया होता तौ ठीक पडता॥ पापी दुर्बलके घातक [redacted] हो इस अपने [redacted] कूं अ
छि अपनी वा अन्यका बुरा करनेंविषै तत्पर भए हैं॥ बहुरि मोक्षमार्ग [redacted] २ लोभ २
भक्तियोग [redacted] कूं [redacted] योगकरि दोय प्रकार प्ररूपै हैं॥ तहां भक्ति [redacted] निर्गुण [redacted]
सगुण भेदकरि दोय प्रकार कहै है॥ तहां अद्वैत परब्रह्मकी भक्ति करनी सो निर्गुण भक्ति [redacted] है
[redacted] सो ऐसें करै है॥ तुम निरंजन हो निराकार हो सर्वव्यापी हो॥ १ मनवचनकेअगोचर हो अपार हो २
[redacted] एक हो सर्वके प्रतिपालक हो॥ अधमउधारक हो॥ सर्वकाकर्ता हर्ता हो॥
इत्यादि विशेषणनिकरि गुणगावै है सो इनि [redacted] विषै केई तौ निराकारादि [redacted] विशेषण है सो
१ ऐसा ... स्वरूप है २ तिनिकौं सर्वथा मानें [redacted] अभावही भासै॥ [redacted] आकार विना वस्तु कैसैं होइ
बहुरि केई [redacted] सर्वव्यापी आदि विशेषण असंभवी है सो तिनका असंभवपनौं पूर्वें [redacted]
[redacted] दिखाया ही है॥ [redacted]॥ बहुरि ऐसा कहै है जो जीवबुद्धिकरि मैं तिहारा दास हौं॥
शास्त्रदृष्टिकरि तिहारा अंश हौं॥ तत्वबुद्धिकरि तूही मैं हौं॥ सो ए तीनौं ही भ्रम है॥ [redacted]
[redacted] ७२
[redacted] चेतनगुणका धारक जीव कहा रहे है॥ [redacted]
[redacted]॥ चेतन है कि जड है॥ जो चेतन है तौ यह चेतना इसहीकी है [redacted]

१ यह भक्ति कारन हाय २ ब्रह्म कहिये कि २

१ जोबुध ३ पदार्थ १ चेतना

[redacted]की है तौ मैं दास हौं ऐसा मानना तौ चेतना ही कै होइ है ॥ सो [redacted] ज्ञान [redacted] का स्वभाव [redacted] गहस्वरूप
[redacted] स्वभाव सनादी के [redacted] तादात्म्य संबंध [redacted] है ॥ तहाँ दास अर स्वामी का संबंध कैसैं बनैं।
दास स्वामी का संबंध तौ भिन्न [redacted] होइ तबही बनैं ॥ ~~[redacted]~~ बहुरि जो चेतना ई ५ यहु
सही की है तौ यहु [redacted] अपनी चेतना का [redacted] नी जुदा पदार्थ गहस्या तौ मैं अंश हौं वा [redacted]
जो तू है सो मैं हौं ऐसा कहनौं ऊ न बन्या ॥ बहुरि जो [redacted] भक्ति करण हारा जड है तौ जड कै [redacted] बु
द्धि का होनां असंभव है ऐसी बुद्धि कैसें भई ॥ तातैं मैं दास हौं ऐसा कहनी तौ तबही बनैं जब जु
दे जुदे पदार्थ होइ ॥ अर तेरा मैं अंश हौं ऐसा कहनां बनैं ही नाही ॥ जातैं तू अर मैं ऐसा तौ भिन्न
होइ तबही बनैं सो अंश अंशी भिन्न कैसें होइ ॥ [redacted] अंशनि [redacted] का समुदाय सो ही अं ४ अंशी तौ कोई दावस्तु नाही
शी है [redacted] ॥ [redacted]
[redacted] अर तू है सो मैं हौं ऐसा [redacted] वचन ही विरुद्ध है ॥ ए-
क पदार्थ विषैं आपो भी मानैं अर वाकौं पर भी मानैं सो [redacted] कैसैं संभवै ॥ तातैं [redacted]
भ्रम छोडि निर्णय करनां ॥ बहुरि केई [redacted] नाम ही जपै है सो [redacted] जाका नाम जपै ता
का [redacted] स्वरूप पहचानें विना केवल नाम ही का जपनां कैसें कार्यकारी होइ ॥ [redacted] जो तू कहैगा
नाम ही का अतिशय है तौ जो नाम ईश्वर का है सो ही नाम किसी पापी पुरुष का धरया तहाँ दोऊ नि
का नाम उच्चारण विषैं फल की समानता होइ सो कैसें बनैं ॥ तातैं स्वरूप का निर्णय करि पीछैं भक्ति
करनें योग्य होइ ताकी भक्ति करनी ॥ ऐसैं निर्गुण भक्ति का स्वरूप दिखाया ॥ बहुरि जहाँ [redacted] क २ कामधादि
रि निपजे कार्यनिका वर्णन करि स्तुत्यादि करिए [redacted] ताकौं सगुण भक्ति कहै है सो [redacted] के का
~~[redacted] जिनिकी लोकविषै वा शास्त्रविषैं अतीत नि~~
~~र्दी स्तुति योग्य न एतौ निंद्य [redacted] हसी ॥ [redacted] समान का साकर्तव्य न या ॥~~
~~[redacted] निका कार्यनिका वर्णन करि स्तुति [redacted] की कहै सो यहु तौ [redacted]~~

~~[redacted]~~

तिनिकी स्तुति करिए है

रसं अनुमान तिनिविषै पूर्वोक्त कामनि के कार्य [redacted] कों से हुए हैं सो कहिए है ॥ युद्धादिक [redacted]
[redacted] क्रोधकौ कार्य है ॥ अपनी महिमा दिखावने कौं उपाय कीए सो मान के कार्य हैं ॥ [redacted]
अनेक छल कीए [redacted]
[redacted] तैसें [redacted] ॥ तहां अनुमान कीजिए है लो कि कहीं शृंगार वर्णन जैसें
नायक नायिका का करिए तैसें ही करना। कुराणी का वर्णन कि [redacted] रै है।
१ संयोग वियोग पूर्व — स्वकीया परकीया स्त्री सेवें भी [redacted] सर्व व्यवहार तहां निरूपै है ॥ बहुरि स्नान करती स्त्रीनि — स्त्रीनिके आगें नाचनां ४
का वस्त्र चुरावनां दधि लूटनी [redacted] स्त्रीनिके पगां पड़नां इत्यादि [redacted] जिनि कार्यनि
कौं [redacted] भी सारी नीकरते [redacted] ऐसे होइ तिनि कार्यनिका करनां ठहरावै है ॥ सो
[redacted] ऐसे कार्य [redacted] अति काम पीड़ित भए ही बनें ॥ बहुरि युद्धादिक कीए [redacted] कहै
सो [redacted] क्रोधके कार्य [redacted] हैं ॥ अपनी महिमा दिखावने के अर्थि उपाय कीए [redacted] कहै सो ए मान — २ विषय सामग्री कीए २
के कार्य हैं ॥ [redacted] अनेक छल कीए कहे सो माया के कार्य हैं ॥ [redacted] प्राप्ति के अर्थि यत्न कीए कहै सो ए
लोभ के कार्य हैं ॥ कुतूहल [redacted] दिक कीए कहै सो हास्यादिकके कार्य हैं [redacted] ऐसें कार्य क्रोधा
दिकरि युक्त भए ही बनें ॥ [redacted] या प्रकार काम क्रोधादि [redacted] करि निपजे कार्यनिकौं प्रग
ट करि कहै हम स्तुति करै हैं सो काम क्रोधादिके कार्य ही स्तुति योग्य भए तो निंद्य कौन ठहरैंगे जिनिकी
लोक विषै वा शास्त्र विषै अत्यंत निंदा पाईए तिनि कार्यनिकौं वर्णन करि कहै स्तुति [redacted] करनी तौ — ७३
हस्तचुगल का सा कार्य भया ॥ हम पूछैं हैं कोऊ किसी का नाम तौ कहै नहीं अर ऐसे कार्यनिकौं
निरूपण करि कहै कि किसीनैं ऐसे कार्य कीए हैं [redacted] तब तुम वाकौं भला जानौं कि बुरा जानौं जो
भला जानौं तौ पापी भले भए बुरा कौन रह्या ॥ बुरे जानौं तौ ऐसे कार्य का कर्ता सो ही बुरा भया।

तातैं ठाकुर कै ऐसा कार्य करना संभवै नाहीं ५

पक्षपात रहित न्याय करो॥ जो पक्षपात करि कहोगे ठाकुर का ऐसा वर्णन करना भी स्तुति है तौ
ठाकुर [redacted] ऐसे कार्य किसै अर्थि कीए निंद्य कार्य करने मैं कहा [redacted] सिद्धि भई [redacted] कोइसि
~~जानी नीच कार्य करै तौ वाकी भी निंदा ही होय~~ कहोगे प्रवृत्ति चलावने कै अर्थि कीए तौ निंद्य
कार्यनिकी प्रवृत्ति चलावने मैं कौंन हानि फायदा भया॥ बहुरि जो ठाकुर कार्य न कीए तुम ही कहो हो
तौ [redacted] जामैं दोष न था ताकौं दोष लगाया॥ तातैं ऐसा वर्णन करनां तौ निंदा है स्तुति नाहीं॥
बहुरि स्तुति करतैं जिनि गुननिका वर्णन करिए [redacted] तिसरूप ही परिणाम होइ वा तिनि ही
विषै अनुराग आवै सो काम क्रोधादि कार्यनिका वर्णन करतां आप भी काम क्रोधादिरूप होइ अथ
वा काम क्रोधादि विषै अनुरागी होइ॥ तौ ऐसे भाव तौ भले नाहीं॥ जो कहोगे [redacted] ऐसे भा
व न करै [redacted] है॥ तौ परिणाम भए बिना वर्णन कैसैं कीया? अनुराग भए बिना भक्ति कैसैं करी॥ सो
ए भाव ही न भले होइ तौ ब्रह्मचर्य कौं वा क्षमादिक कौं भले काहे कौं कहिए इनिकै तौ परस्पर प्रति
पक्षीपना है॥ बहुरि सगुण भक्ति करने कै अर्थि राम कृष्णादिक की [redacted] मूर्ति भी [redacted]
[redacted] शृंगारादिकी ए [redacted] वक्रत्वादि [redacted] बनावै है॥ जाकौं देखतै ही काम क्रो
धादि भाव प्रगट होइ आवै॥ और महादेव कौ लिंग [redacted] ही का आकार बनावै है॥
जाका नाम लीए [redacted] लाज आवै जगत् जिसकौं [redacted] ढांकि राखै ता
कै आकार का पूजन करावै है॥ कहा अन्य अंग [redacted] वाकै न थे॥ परंतु [redacted] घनी
विटंबना ऐसे ही कीए प्रगट होइ॥ बहुरि [redacted] नाना प्रकार विषयसा
मग्री भेली करै॥ बहुरि नाम तौ ठाकुर का करै और तिनिकौं आप भोगवै॥ भोजनादिक [redacted] बनावै बहुरि
ठाकुरकौं भोग लगावै पीछैं आप ही [redacted] प्रसाद की कल्पना करि ताका भक्षण करै॥ सो [illegible]

१ आकरै ः

४ आपकै वा अन्यकै ५

३ परस्त्री सेवन आदि ५

५ तरक ५

१ सहित ... आदिक लीए ५

६ देवोविर्द्ध बनाय ५

१ सगुण भक्ति के अर्थि ५

एहै॥ प्रथम तौ ठाकुर कै क्षुधा तृषादिक की पीडा होसी॥ [redacted] न होइ तौ ऐसी कल्पना कैसैं संभवै॥ अर क्षुधादिकरि पीडित [redacted] होइ सो [redacted] व्याकुल होइ तब ईश्वर दुखी भया और का दुख कैसें दूरि करै॥ बहुरि भोजनादि सामग्री आप तौ उनकै अर्थि अर्पण करी सो करी पीछैं प्रसाद [redacted] तौ ^ठाकुर^ [redacted] दे तब होइ आप ही का तौ कीया न होइ॥ जैसें कोऊ राजा की भेंट करै पीछैं राजा बकसै तौ याकौं ग्रहण करनी योग्य अर आप [redacted] राजा की [redacted] भेंट करै ^अर^ राजा किछू [redacted] कहै नाहीं आप ही [redacted] राजा सौं बकसी ऐसा कहि [redacted] वाकौं अंगीकार करै तौ यहु [redacted] ख्याल भया॥ [redacted]॥ तैसें इहाँ भी [redacted] ऐसें की ऐं भक्ति [redacted] तौ न भई हास्य करनी भया॥ बहुरि तू [redacted] ठाकुर अर तू दोय है कि एक है॥ दोय है तौ तैनैं भेंट करी ^पीछें^ ठाकुर बकसै तौ [redacted] ग्रहण कीजै॥ [redacted] तू कहैगा ठाकुर की तौ मूर्ति है तातैं मैं ही कल्पना करौं हौं [redacted] तौ ठाकुर का करने का कार्य तैं ही कीया तब तू ही ठाकुर भया। बहुरि जो एक है तौ भेंट करनी प्रसाद कहनी [redacted] झूंठ भया॥ एक [redacted] ^कै^ यहु व्यवहार संभवै नाहीं॥ तातैं [redacted] [redacted] भोजनादि शक्त पुरुषनि करि ऐसी कल्पना करिए है॥ [redacted] बहुरि ठाकुर ^के^ नृत्य गानादि कराव नौं [redacted] शीत ग्रीषम ^बसंत^ आदि ऋतुनि [redacted] विषै संसारी निकै संभवती विषय सामग्री मेली करनी इत्यादि कार्य करै [redacted] रै तहाँ नाम तौ ठाकुर का लै नौं अर इंद्रियनि ^कै^ विषय अपने पोषनें॥ सो विषयासक्त जीवनि करि ऐसा उपाय कीया है॥ बहुरि जन्म विवाहादिक की वा सोवनी जागनी इत्यादिक की कल्पना तहाँ करै है सो [redacted] [redacted] जैसें लरका गुडा गुडी निका ख्याल करि कुतूहल करै तैसें यहु भी कुतूहल करनी है। किछू परमार्थरूप गुण [redacted] है नाहीं॥ [redacted] ^लरके^ [redacted] ठाकुर का स्वांग बनाइ ^बहुरि^

ऐसैं [left margin insertion mark]

आप ही तौ ग्रहण काहे कौं करै है अर [right margin insertion]

ठाकुर कै अर्थि [right margin insertion]

७४

२ और भी अनेक ॰ — १ उ याकौं पहलैं लिषनी

७ आपकू शुद्ध ब्रह्म मानना तब कर्त्तव्य कहा रह्या । ८ बहुरि ॰

वेष्टादि पावै ता[redacted] करि अपनें विषय पोषै कहै यहु भी भक्ति है इत्यादि कहा क
हिए असैं विपरीतता [redacted] सगुण भक्ति विषै पाईए है ॥ असैं दोय प्र
कार भक्ति करि मोक्ष मार्ग कहै है ताकौं मिथ्या दिखाया ॥ अब ज्ञान योग करि [redacted] मोक्षमा
र्ग कहै है ताका स्वरूप कहिए है ॥ एक अद्वैत सर्वव्यापी परब्रह्म कौं जानना ताकौं ज्ञान कहै है
सो ताका मिथ्यापनौं पूर्वैं कह्या ही है ॥ [redacted] बहुरि आपकौं सर्वथा शुद्ध ब्रह्मस्वरूप माननां ॰ [redacted]दिकौं भी शरीरा ॰कामक्रोधा॰
दिककौं भ्रम जानना ताकौं ज्ञान कहै है सो यहु भ्रम है ॥ आप [redacted]शुद्ध है तौ मोक्ष का उपाय काहेकौं
करै है ॥ [redacted] प्रत्यक्ष आपकै [redacted] कामक्रोधादिक होते देषिए अर शरीरादिक का संयोग देषिए है ॥ [redacted]
॰वर्तमान विषै॰ सो [redacted] इ[redacted]का अभाव होगा तब होगा ॰ [redacted] इनिकौं [redacted] सदाव माननां भ्रम कैसैं भया
बहुरि कहै है मोक्ष का उपाय करनां भी भ्रम है ॥ जैसें जेवरी तौ जेवरी ही है [redacted] ताकौं सर्प जानै था
सो [redacted] भ्रम था भ्रम मिटें जेवरी ही है ॥ तैसें आप तौ ब्रह्म ही है [redacted] आपकौं अशुद्ध जानै था सो भ्रम था
भ्रम मिटें आप ब्रह्म ही है ॥ सो असा कहनां मिथ्या है ॥ [redacted] जो आप शुद्ध होइ अर ताकौं अशु
द्ध जानै तौ भ्रम अर आप काम क्रोधादि सहित अशुद्ध होइ रह्या ताकौं ॰[redacted]शुद्ध जानै [redacted] ॰अशुद्ध मानै तौ भ्रम है इ॰
भ्रम ॰होइ ॥ सो [redacted] ॰गा भ्रम [redacted] रि आपकौं शुद्ध ब्रह्म मानै कहा [redacted] सि
द्धि है ॥ बहुरि तू कहैगा ए काम क्रोधादिक तौ मन के धर्म्म है ब्रह्म न्यारा है ॥ तौ [redacted] तू [redacted] ॥ [redacted]
[redacted] तुझकौं पूछिए है [redacted] मन तेरा स्वरूप है कि नाहीं ॥ जो है तौ काम क्रो
धादिक भी तेरे ही भए ॥ अर नाहीं है तौ तू ज्ञानस्वरूप है कि जड है ॥ जो ज्ञानस्वरूप है तौ तेरै तौ ज्ञा
न मन इंद्रिय द्वारि ही होता दीसै है इनि विना [redacted] कोई ज्ञान बतावै तौ ताकौं जुदा तेरा स्वरूप
मानैं ॰ बहुरि मन ज्ञानें धातु का मन [redacted] शब्दनि पजै है सो मन तौ ज्ञानस्वरूप है सो यहु [redacted] ज्ञान कि

१ सो नास्तिपनौं ही ॰

सका है ताकौं बताय॥ सो कोई जासै नाही॥ बहुरि [redacted] जो तू जड है तौ [redacted] ज्ञान विना
आपनें स्वरूप का विचार कैसें करै है॥ [redacted] यह बनैं नाही॥ बहुरि तू कहै [redacted]
है ब्रह्म न्यारा है सो वह न्यारा ब्रह्म तू ही है कि और है॥ जो तू ही है तौ तेरै [redacted]
[redacted] मैं ब्रह्म हौं ऐसा माननैंवाला जो ज्ञान है सो तौ मनस्वरूप ही है मनतैं जुदा नाही॥ अर [redacted] आपा मा-
ननौं आपही विषै होइ [redacted] जाकौं न्यारा जानै तिसविषै आपो मान्या जाय नाही सो [redacted] मनतैं न्यारा
ब्रह्म [redacted] है तौ मनरूप ज्ञान आपा काहेकौं मानै है॥ बहुरि जो ब्रह्म और ही है तौ तू ब्रह्म वि-
१ ब्रह्म विषै ४ षै आपो काहेकौं मानै॥ तातैं भ्रम छोडि ऐसा जानि [redacted] जैसें स्पर्शनादि
इन्द्रिय तौ शरीर का स्वरूप है सो जड है॥ याकै द्वारि जो जानपनौं होइ सो आत्मा का स्वरूप है। तैसें ही
मन [redacted] भी सूक्ष्म परमाणूनिका पुंज है सो शरीर ही का अंग है ताकै द्वारि जानपनौं हो है वा कामक्रो-
धादि भाव हो है सो सर्व आत्मा का स्वरूप है॥ विशेष इतना जो [redacted] जानपनौं तौ [redacted] निजस्वभाव है का-
१ [redacted]ति सकहि आत्मा शुद्ध है मानवा म क्रोधादि उपाधिक भाव हैं॥ कालपाइ कामक्रोधादि [redacted] मिटैंगे [redacted] अर जानपनौं [redacted] कै
मन इन्द्रिय का आधीनपनौं मिटैगा तब केवलज्ञानस्वरूप आत्मा शुद्ध होगा॥ [redacted] ऐसें ही
बुद्धि अहंकारादि [redacted]क भी जानि लेनें॥ जातैं मन अर बुद्ध्यादिक एकार्थ है॥ अर अहंकारादि
कर्म कहैं ते क्रोधादिकवत् उपाधिक भाव हैं॥ [redacted]
इनिकौं आपतैं भिन्न जाननौं उत्तम है॥ इनिकौं अपनें जानि उपाधिक भावनिकै अभाव करनें का उद्य-
म करनौं योग्य है॥ बहुरि [redacted] जिनितैं इनिका अभाव होइ सकै अर अपनी मह-
नता चाहैं ते जीव इनिकौं अपनें न ठहराय स्वछंद [redacted] प्रवर्त्तैं हैं॥ कामक्रोधादि भाव [redacted] निकौं ब-
धाइ विषय सामग्रीनि विषै वा हिंसादि कार्यनि विषै तत्पर हो है॥ [redacted]

७५

२ मिथ्या है जातैं ४

वहुरि अहंकारादिकका त्यागकौं भी अन्यथा मांनै है ॥ सर्व्वकों परमब्रह्म माननं ॥ कहीं आ
पौ न मांननौ [redacted] ताकौं अहंकारका त्याग बतावै ॥ सो [redacted] कोई आपहै कि नांही जो है तौ आपवि
षैं आपौ कैसैं न मांनिए ॥ [redacted] जो आप नांही है तौ [redacted]
[redacted] शरीरादि परविषै अहंबुद्धि न करनी तहां कर्त्ता नि होनौ सो
अहंकारका त्याग है ॥ [redacted] आपविषै अहंबुद्धि करनेका दोष नांही ॥ वहुरि सर्व्वकौं समा
न जाननौ कोई विषै भेद न करनौं ताकौं [redacted] रागद्वेषका त्याग बतावै है सो [redacted] भी मिथ्या है ॥
जातैं सर्व्व पदार्थ समान है नांही कोई चेतन है कोई अचेतन है कोई कैसा है कोई कैसा है ॥
तिनिकौं समान [redacted] कैसैं मांनिए ॥ तातैं [redacted]
[redacted] परद्रव्यनि [redacted] कौं इष्ट अनिष्ट न मांननौ सो रागद्वेषका त्याग है ॥
पदार्थनिका विशेष जांननें मैं तौ किछू दोष नांही ॥ ऐसैं ही अन्य [redacted] मोक्षमार्गरूप भा
वनिकी अन्यथा कल्पना करै है ॥ वहुरि ऐसी कल्पना करि [redacted] कुशील सेवै है ॥ अभक्ष्य भ
खै है ॥ वर्णादि भेद [redacted] नांही करै है ॥ हीन क्रिया आचरै है ॥ इत्यादि विपरीतरूप प्रवर्त्तै है ॥ [redacted]
जब कोऊ पूछै तब कहै ए तौ शरीरका धर्म्म है ॥ [redacted] अथवा जैसी प्रालब्ध है तैसैं होहै ॥ अथ
वा जैसैं ईश्वरकी इछा हो है तैसैं होहै ॥ हमकौं तौ विकल्प न करनौं सो [redacted]
[redacted] आप जांनि जांनि प्रवर्त्तै ताकौं शरीरका धर्म्म बतावै आप उद्यमी होइ कार्य करै ताकौं प्राल
ब्धि कहै आप इछा करै [redacted] रि [redacted] सेवै ताकौं ईश्वरकी इछा बतावै ॥ सो [redacted] ध
र्म्म कौ आश्रय करि विषय कषाय [redacted] सेवनें तातैं ऐसी झूठी युक्ति बनावै है ॥ जो अपनें परिणाम

१ सर्व्वकौं ब्रह्मकौं न मानै है तातैं ४

[redacted]

३ देखो अब

१ लेय ४

२ विकल्प करै अर कहै हमकौं तौ विकल्प न करनौ ४

बहुरि५ उरिपेल्टं

किछू नीनमिलावै तौ हम [redacted] याका कर्त्तव्य न मानै। जैसें आप ध्यान धरै [redacted] कौ

कूँ वस्त्रै गेरि गयो आप किछू सुखी [redacted] न भया नहीं तौ ताका कर्त्तव्य नहीं सो साच॥ अर आप [redacted] २अपनेउ वरि६

[redacted] वस्त्र कौं अंगीकार कर [redacted] अपनी शीतादिक वेदना मिटाइ सुखी होइ तहां जो

अपनी कर्त्तव्य मानै नी ही सो कैसें संभवै। कुशील सेवनी अनरुचन पणां इत्यादि कार्य तौ परिणा

म मिलें बिना होते नाही॥ तहां अपना कर्त्तव्य कैसें न मानिए॥ तातें जो [redacted] १कामक्रोधादिका अनावही नयार

होइ तौ नहीं किं [redacted] नि विषै प्रवृत्ति संभवै ही नाही अर जो [redacted] कामक्रोध ५नीकि या२

दिपाइए है तौ जैसें ए नाव धोर होइ तैसें प्रवृत्ति करनी॥ स्वछंद होइ इनकौं वधावनी युक्त नी

ही॥ बहुरि केई जीव पवनादिक का साधन करि आपकौं [redacted] ज्ञानी मानै है॥ तहां [redacted]

[redacted] इडा पिंगला सुषुम्ना रूप नाडिका द्वारि पवन निकासै [redacted]

[redacted] इडा पिंगला सु [redacted] अणारूप नाडिका द्वारि पवन निकासि कल्पना करी है ताका विज्ञान करि किछू

तहीं वर्णादिक भेदनि तें पवन ही कौं पृथ्वी तत्वादिक रूप कल्पना करी है ताका विज्ञान करि किछू

साधन तैं निमित्त का ज्ञान होइ तातैं [redacted] जगत कौं इष्ट अनिष्ट बतावै आप महंतक हावै सा य

हु तौ लौकिक कार्य है किछू मोक्ष मार्ग नाही॥ जीवनि कौं इष्ट अनिष्ट बताय उनकै रागद्वेष वधावै अर

अपनै मान लोभादिक निपजावै यामैं कहा सिद्धि है॥ बहुरि प्राणायामादिक का साधन करै [redacted] २तैंलौकिककरि१

पवनकौं चढाय समाधि लगाई कहै है सो यहु तौ जैसें नट [redacted] साधन [redacted] क्रि

याकरै तैसें इहां भी साधन तैं [redacted] पवन करि क्रिया करी॥ हस्तादिक अर पवन ए तौ शरीर ही के अंग है

इनिके साधन तैं आत्महित कैसें सधै॥ बहुरि तू कहैगा तहां मन का विकल्प मिटै है सुख उपजै है॥ [redacted] ७६

यम कौं वशीभूतपनौं न होहै॥ सो यहु मिथ्या है॥ [redacted] जैसें [redacted] निद्रा विषै [redacted] चेतना की प्रवृ

त्ति मिटै [redacted] तैसें पवन साधन तैं इहां चेतना की प्रवृत्ति मिटै है॥ [redacted]

~~तहां मन कौं रोकि राख्या है किछू मन की वासना तौ मिटी नाही॥~~ जो [redacted]

तहाँ मनकौं रोकि राख्या है किछू वासना तौ मिटी नाहीं तातैं मनका विकल्प मिट्या न कहिए अर [redacted]
चेतना बिना सुखकौं न [redacted] भोगवै है॥ [redacted] तातैं सुख उपज्या न कहिए॥ अर इस साधनवालौं तौ [redacted] इ
स क्षेत्रविषै भए हैं तिनि विषै कोई अमर दीसता नाहीं [redacted] अग्नि
लगाएँ ताकौं भी [redacted] मरता दीसै है तातैं यमके वशी न त [redacted] नाहीं [redacted] यहु झूठी कल्पना है॥ बहुरि [redacted]
जहाँ साधनविषै किछू चेतना रहै अर तहाँ साधनतैं [redacted] शब्द सुनै ताकौं अनहदनाद बतावै [redacted]
सो जैसैं [redacted] वीणादिकके शब्द सुननेतैं सुख मानना तैसैं तिसके सुननेतैं सुख मानना है॥ इ
हाँ तौ विषय पोषण भया परमार्थ तौ किछू नाहीं॥ बहुरि [redacted] पवनका निकसने पैठनेविषै सोहं [redacted]
[redacted] ऐसे शब्दकी कल्पना करि ताकौं अजपा जाप कहै है सो जैसैं तीतरके शब्दविषै तू ही शब्दकी [redacted]
कल्पना करै किछू तीतर अर्थ अवधारि ऐसा शब्द कहता नाहीं॥ तैसैं इहाँ सोहं शब्दकी कल्पना है
ः पवन ः किछू अर्थ अवधारि ऐसा शब्द [redacted] कहता नाहीं॥ बहुरि [redacted] शब्द [redacted] के जपने सुननेहीतैं तौ कि
छू फलप्राप्ति नाहीं॥ [redacted] अर्थ अवधारें फलप्राप्ति हो है सो सोहं शब्दका तौ अर्थ यहु है॥ सो हूं
छूं॥ इहाँ ऐसी अपेक्षा चाहिए [redacted] सो कौन तब ताका निर्णय कीया चाहिए॥ जातैं तत् शब्दकै अर यत्
शब्दकै नित्य संबंध है॥ तातैं [redacted] वस्तुका निर्णय करि ताविषै अहंबुद्धि धारनें
विषै सोहं शब्द बनै॥ तहाँ भी आपकौं आप अनुभवै तहाँ तौ सोहं शब्द संभवै ही नाहीं॥ः जैसैं पुर ः परकौं अपना स्वरूप बतावनेविषै सोहं शब्द संभवै है ः
ष आपकौं आप जानै तहाँ सोहं छूं ऐसा काहेकौं विचारै॥ कोई अन्य जीव आपकौं न पहचानता हो
इ अर कोई अपनी लक्षण पहचानता होइ तब वाकौं कहिए जो ऐसा सो मैं हौं॥ तैसैं ही इहाँ जाननी॥
बहुरि केई [redacted] ललाट भौंहारा नासिकाका अग्र [redacted] कौ देखनेका साध
न करि [redacted] त्रिकुटी [redacted] आदिका ध्यान भया कहि परमार्थ मानै सो [redacted]॥ नेत्र

१४७

की पूतरी फिरै मूर्ति कै वस्तु देखौ या मैं कहा सिद्धि है॥ बहुरि ऐसे साधननितैं [redacted] किंचित्
अतीत अनागतादिक का ज्ञान होइ वा वचन सिद्धि होइ वा पृथ्वी आकाशादि विषै गमनादिक
शक्ति होइ वा शरीर विषै आरोग्यतादिक होइ तौ ए तौ सर्व लौकिक कार्य हैं॥ देवादिक कै स्वय
मेव ही ऐसी शक्ति पाइए है॥ इनितैं किछू अपना भला तौ होता नाहीं॥ भला तौ विषय कषाय
की वासना मिटैं होइ सो ए तौ विषय कषाय पोषने के उपाय हैं॥ तातैं ए सर्व साधन किछू हित
कारी है नाहीं॥ इनि विषै कष्ट बहुत मरणादि पर्यंत होइ अर हित सधै नाहीं तातैं ज्ञानी [redacted]
वृथा ऐसा खेद करै नाहीं॥ कषायी जीव ही ~~[illegible]~~ ऐसे साध
न विषै लागै है। बहुरि काहू कौं बहुत तपश्चरणादि करि मोक्ष का साधन कठिन बतावै॥ काहू कौं सुगमप
नैं ही मोक्ष भया कहै॥ उद्धवादिक कौं परम भक्त कहैं तिनकौं तौ तप का उपदेश दीया कहै। वेश्यादिक कै [redacted]
विना परिणाम नामादिक ही तैं तरनी बतावै किछू ठिकाना है नाहीं॥ ऐसैं मोक्षमार्ग कौं
अन्यथा प्ररूपै है॥ बहुरि मोक्षस्वरूप कौं भी अन्यथा प्ररूपै है। तहाँ मोक्ष अनेक प्रकार बतावै है॥
एक तौ मोक्ष ऐसा कहै है जो बैकुंठ धाम विषै ठाकुर ठकुराणी सहित नाना भोग विलास करै है तहाँ
जाय प्राप्त होइ अर तिनकी टहल कीया करै सो मोक्ष है॥ सो यहु तौ जैसैं ~~[illegible]~~
~~[illegible]~~
~~[illegible]~~ विरुद्ध है॥ प्रथम तौ ठाकुर भी संसारीवत् विषयासक्त होइ रह्या है
तौ जैसैं राजादिक है तैसा ही ठाकुर भया॥ बहुरि अन्य पासि टहल करावनी भई तब ठाकुर कै पराधीन
पना भया॥ बहुरि जो यहु मोक्ष कौं पाय तहीं टहल कीया करै तौ जैसैं राजा की चाकरी करनी तैसैं यहु
भी चाकरी भई [redacted] तहाँ पराधीन भए सुख कैसैं होइ॥ यहु बनै नाहीं॥ बहुरि एक मोक्ष ऐसा कहै है

~~[illegible]~~

ईश्वरकेसमानआपहोहैसोभीमिथ्याहै॥ जोउसकेसमानऔरभीजुदाहोइहैतौबहुतईश्वर
भए॥ लोककाकर्त्ताहर्त्ताकौनठहरैगा सबहीठहरैतौ विरुद्धहोइ एकहीहैतौसमा ²भिन्न इछा भई परस्पर
नतानभईन्यूनहैताकेनीचापनैंकरिउच्चहोनेंकीआकुलतारहीतबमुक्तिकैसैंहोइ॥ जैसैं
छोटाराजा वडाराजा
संसारविषैहोहैतैसैंछोटावडाईश्वरमुक्तिविषैभीभया॥ सोबनैंनाही॥ बहुरिएकमोक्ष
ऐसाकहैहैजो वैकुंठविषैदीपककीसीएकज्योतिहैतहांज्योतिविषैज्योतिजायमिलैहैसो
यहुभीमिथ्याहै॥ दीपकज्योतितौमूर्तीकअचेतनहैसोऐसीज्योतितहांकैसैंसंभवै॥ बहुरि
ज्योतिमैंज्योतिमिलें यहुज्योतिर हैहैकिविनशिजायहै जोरहैहै
तौज्योतिवधतीजासीतबज्योतिविषैहीनाधिकपनौंहोसीअरविनशिजायहैतौआपकीसत्ता
नाशहोयऐसाकार्यउपादेयकैसैंमानिए॥ तातैंऐसैंभीबनैंनाही॥ बहुरिएकमोक्षऐसाकहैहै ¹यहु भी मि...
जोआत्माब्रह्महीहैमायाकाआवरणमिटेंमुक्तहीहैसो मायाकाआवरणसहितथातबब्रह्म
स्यों एकथाकिजुदाथा॥ जोएकथातौब्रह्म हीमायारूपभयाअरजुदाथातौ
मायादूरिभएब्रह्मविषैमिलेहैतबयाकाअस्तित्वरहैहैकिनाही जोरहैहैतौसर्वज्ञकौंतौ
याकाअस्तित्वजुदाभासैतब संयोगहोनेंतैंमिल्याकहौपर
न्तुपरमार्थतैंतौ मिल्यानाही॥ बहुरिअस्तित्वनाहीरहैहैतौ आपकाअभा
वहोनौ कौनचाहैतातैंयहुभीनबनैं॥ बहुरिएकप्रकारमोक्षकौंऐसाभीकेईकहैहैजो
 बुद्धिआदिककानाशहोतैंमोक्षहोहै॥ सो¹मनइंद्रिय ¹शरीरके अं गभूत
¹तिनि कैं आधीनज्ञान नरह्या कामक्रोधादिदूरिभए ऐसैंकहनौतोबनैंहैअर तहांचेतनता

१५१

८कल्पनाकरि

कानीग्र [redacted] नावनयामोनिए तौ पाषाणादिसमानजड अवस्थाकों [redacted] कैसें भली मांनिए ।। [redacted]
[redacted] बहुरि भलासाधन करतें तौ ज्ञानपनौ बधै है ।। बहुत भला साधनक
रि जावपनौ का अभाव होनौ कैसें मांनिए ।। बहुरि लोक विषै ज्ञान की महंतता है जडपनौ की तौ म
हंतता नांही तातैं यहु बनें नांही ।। असें ही अनेक प्रकार मोक्षकों बतावें सो किछू [redacted] यथार्थ तौ
जानें नांही संसार अवस्था की मुक्ति अवस्था विषै कल्पना करि [redacted] अपनी इच्छानुसारि बकै है
याप्रकार वेदांतादि मतनि विषै अन्यथा निरूपण करै है ~~...~~
~~कपुष्ट ले है।। तली [redacted] मिथ्यातत्त्व ... लादिक ...~~
यथार्थ ~~दान कल्लें तैं जूँ... [redacted] ... नो दर्शन ... तातैं मिथ्यादर्शन पुष्ट ले है ।। बहुरि~~
~~[redacted] मिथ्या निरूपण विषै ... [redacted] ... जीवादिक कों सम्यग्ज्ञान न होइ तातैं~~
[redacted] ~~मिथ्याज्ञान पुष्ट होहै ।। बहुरि सम्यग्दि [redacted] का न यम ... तातैं मि~~
विसक ~~... [redacted]~~ ।। बहुरि असें ही मुसलमानों के मत विषै अन्यथा निरूपण करै है ।। जै
[redacted] सें ब्रह्मकों सर्वव्यापी एक निरंजन सर्व का कर्त्ता हर्त्ता मांने है तैसें ए षुदा कों मांनै है ।। बहुरि जैसें वे
अवतार भए मांनै है तैसें ए पैकंबर भए मांनै है ।। जैसें [redacted] पुण्य पाप का ले
णा लेनौ यथायोग्य दंडादि देनौ ठहरावै है । तैसें ए [redacted] षुदा के [redacted] ठहरावै है ।
बहुरि जैसें वे ईश्वर की भक्ति तैं मुक्ति कहै है ।। तैसें ए षुदा की भक्ति तैं कहै है ।। बहुरि जैसें वे कहीं द
या पोषै कहीं हिंसा पोषै तैसें ए कहीं महर करनी पापे कहीं जिबै करनी पोषै ।। बहुरि जैसें वे कहीं
तपश्चरण पोषै कहीं विषय सेवन पोषै तैसें ए ~~[redacted]~~ नी
करनी [redacted] पावै है ।। बहुरि जैसें वे कहीं मांस मदिरा [redacted] सिकार आदि का निषेध करै कहीं उत्तम पुरषों करि
आदि
८बहुरि जैसें वे गऊ कों भक्ष्य कहै है तैसें ए सूर आदि कों कहै है तिर्यंचादिक कहै ।। बहुरि ८ ७८

तिनिकौं अंगीकार करनौं बतावै तैसैं एनी कूं निषेधवा अंगीकार करनौं बतावै है॥ ऐसैं अने
क प्रकार करि समानता पाइए है॥ जद्यपि नामादिक और और हैं तथापि प्रयोजन भूत अर्थ की एक
ता पाइए है॥ बहुरि मूल श्रद्धान की तो एकता है अर उत्तर श्रद्धान विषै घनें ही विशेष है तहां

(बहुरि पुराणादि)

उननैं तौ ए विपरीत रूप विषय कषाय के पोषक हिंसादि पाप के पोषक प्रत्यक्षादि
प्रमाणनैं विरुद्ध निरूपण करै है॥ तातैं मुसलमानौं का मत महा विपरीत रूप जाननौं॥ या प्रका
र इस क्षेत्र काल विषै जिनिमतनि की प्रचुर प्रवृत्ति है ताका मिथ्यापनां प्रगट कीया॥ इहां को

(बडे विद्यावान)

ऊ कहै जो ए मत मिथ्या है तो बडे राजादिक वा इनि मतनि विषै कैसें प्रवर्त्तै है ताका समा
धान॥ जीवनि कै मिथ्या वासना अनादि तैं है इनि विषै मिथ्यात्व ही का पोषण है। ब
हुरि जीवनि कौं विषय कषाय रूप कार्यनि की चाहि वर्त्तै है इनि विषै विषय कषाय रूप कार्यनि ही का पोषण है॥

+ विषै विषय कषाय रूप

है॥ बहुरि राजादिकनि का वा विद्यावानौं का ऐसे धर्म विषै विषय कषाय रूप जिनि
प्रयोजन सिद्धि हो है॥ बहुरि जीव तो लोकनिंद्यपनां कौं तौ उलंघि पाप जानि जिनि
कार्यनि कौं कीया चाहै है तिनि कार्यनि कौं करतैं धर्म बतावै तो ऐसे धर्म विषै कौन न लागै
तातैं इनि धर्मनि की विशेष प्रवृत्ति है॥ बहुरि कदाचित तूं कहैगा इनि धर्मनि विषै
विरागता दया इत्यादि भी तो कहै हैं॥ सो जैसैं झोल दीए बिना खोटा द्रव्य चालै नहीं तैसैं सांच
मिलाएं बिना झूठ चालै नाहीं॥ परंतु सर्व कै हित प्रयोजन विषै विषय कषाय का
ही पोषण कीया है॥ जैसैं गीता विषै उपदेशादेई रा उकराव नें का प्रयोजन प्रगट कीया॥

ऐसैं ही अन्य ज्ञान की ५

वेदांत विषै शुद्ध निरूपण करि स्वछंद होनेका प्रयोजन दिखाया।। ज्ञानना।। बहु
रि [redacted] तौ जिनिकों तेरै मत विषै उत्तम
कहे हैं तिनिका [redacted] यह काल तौ निकृष्ट है सो इस विषै तौ निकृष्ट धर्म्म
ही की प्रवृत्ति विशेष होइ। देखो इस काल विषै मुसलमान बहुत प्रधान होइ गए हिंदू
घटि गए।। हिंदूनि विषै और बधि गए जैनी घटि गए।। सो यहु काल का दोष है।। ऐसैं
इहां अबार मिथ्याधर्म्म की प्रवृत्ति बहुत पाईए है।। अब पंडितपना के बलतैं कल्पित युक्ति क
सूत्रप्रतिपादित रि नाना [redacted] मत स्थापे हैं तिनि [redacted] विषै जे [redacted] इक मानिए है तिनिका निरूपण की
जिए है।। तहां सांख्य मत विषै पचीस तत्व मानै है। सत्व, रज, तम, ए तीन गुण कहै है।। तहां [redacted]
[redacted] सत्व करि प्रसाद हो है।। रज करि चित्त की चलता हो है। तम करि मूढता हो है इत्यादि ल
क्षण कहै है इनि रूप अवस्था ताका नाम प्रकृति है।। बहुरि प्रकृति तैं बुद्धि निपजै है।। याही का
नाम महत्तत्व है।। बहुरि तिसतैं अहंकार निपजै है।। बहुरि तिसतैं सोलह मात्रा हो है।। तहां पांच
तौ ज्ञान इंद्रिय हो है।। स्पर्शन रसन घ्राण चक्षु श्रोत्र। बहुरि एक मन हो है।। बहुरि पांच कर्म इं
द्रिय हो है।। वचन चरण हस्त लिंग पायु।। बहुरि पांच तन्मात्रा हो है।। रूप रस गंध स्पर्श
शब्द।। बहुरि रूपतैं अग्नि रसतैं जल गंधतैं पृथ्वी स्पर्शतैं पवन शब्दतैं आ
काश भया कहै है।। ऐसैं चौईस तत्व तौ प्रकृति स्वरूप है इनितैं भिन्न निर्गुण कर्त्ता भोक्ता ए
क पुरुष है।। ऐसैं पचीस तत्व कहै हैं।। सो ए कल्पित है।। जातैं राजसादिक गुण आश्रय विना कै 79
सैं होइ इनका आश्रय तौ चेतन द्रव्य ही संभवै है।। बहुरि इनितैं बुद्धि भई कहै सो बुद्धि तौ नाम ज्ञानका है।
सो [redacted] ज्ञान गुण का धारी पदार्थ विषै ए होते देखिए है

कोऊ कहै बुद्धि जुदी है ज्ञान जुदा है तौ मन तौ आगें कोउ इहा मात्रा निषेध कीया अर ज्ञान जुदा कहोगे तौ बुद्धि

इनितैं ज्ञान भया कैसैं मानिए। बहुरि तातैं अहंकार भया कह्या सो परवस्तुविषै [redacted] मैं करौं हौं ऐसा मान
नेंका नाम अहंकार है।। साक्षीभूत जाननें करि तौ अहंकार होता नाहीं ज्ञान करि उपज्या कैसैं कहिए है।।
बहुरि अहंकार करि पांच ज्ञान इंद्रिय कही सो [redacted] शरीरविषै नेत्रादि आकार हैं सो तौ पृथ्वी आदिवत्
जड देखिए है अर वर्णादिक जाननें रूप भाव इंद्रिय है सो ज्ञानरूप है अहंकार का कहा प्रयोजन है।। अहंका
र बुद्धिरहित काहूकौं देखिए है तहाँ अहंकार करि निपजना कैसैं संभवै।। बहुरि मन कह्या सो इंद्रियवत् ही म
न है।। [redacted] जातैं द्रव्यमन शरीररूप है भावमन ज्ञानरूप है।। बहुरि [redacted] पांच कर्म इंद्रिय कहे सो ए
तौ शरीर के अंग हैं।। मूर्तीक हैं।। अहंकार अमूर्तीक तिसतैं इनिका उपजना कैसैं मानिए। बहुरि [redacted] कर्म
इंद्रिय पांच ही तौ नाहीं। सर्व अंग कार्यकारी है।। बहुरि वर्णन तौ सर्व जीवाश्रित है मनुष्याश्रित ही तौ नाहीं
ही तातैं सूंडि पूंछ इत्यादि अंग भी कर्म इंद्रिय हैं पांच ही की संख्या काहेकौं कहिए है।। बहुरि [redacted] स्पर्शा
दि पांच तन्मात्रा कही सो [redacted] रूपादि किछू जुदे वस्तु नाहीं ए तौ परमाणूनि [redacted] स्यों तन्मय
गुण हैं।। ए जुदे कैसैं निपजे।। बहुरि अहंकार तौ अमूर्तीक जीव का परिणाम है।। तातैं ए मूर्तीक गुण कैसैं नि
पजे मानिए।। बहुरि इनि पांचनितैं अग्नि आदि निपजे कहै सो प्रत्यक्ष झूठ।। रूपादिक अग्न्यादिक कैं तौ सहजत
गुणगुणी संबंध है।। [redacted] कहनें मात्र भिन्न है।। वस्तुविषै भेद नाहीं।। [redacted] किसी प्रकार कोऊ भिन्न हो
ता भासै नाहीं।। कहनें मात्र करि भेद उपजाइए है।। तातैं रूपादि करि अग्न्यादि निपजे कैसैं कहिए। बहुरि
कहनें विषै भी गुणीविषै गुण है।। गुणतैं गुणी निपज्या कैसैं मानिए।। [redacted] ।। बहुरि इनितैं भिन्न एक पुर
ष कहै है सो [redacted] वाका स्वरूप अवक्तव्य कहि [redacted] प्रत्युत्तर न करै तौ कहा बूझें नाहीं कैसा है कहाँ
है कैसैं कर्ता हर्ता है सो बताय।। जो बतावैगा ताहीमैं विचार कीएं अन्यथापनौं भासैगा।। ऐसैं सांख्यम
तकरि कल्पित तत्त्व मिथ्या जाननें।। बहुरि [illegible]

३ पुरुष कों प्रकृति तैं भिन्न ×

३ प्रकृति पुरुष कोई है ही नाहीं ×

[redacted] मानै है॥ केई शिवकों केई नारायणकों देव मानै है॥ सो पूर्वै [redacted] प्रकृति
पुरुष का जुदा होना सो मुक्ति कहै है॥ सो [redacted] कै जुदे जीव मिले जुदी जुदी प्रकृति [redacted] है
[redacted]॥ [redacted] ज्ञानतें मोक्ष मार्ग कहै है सो [redacted] प्रथम तो [redacted] मिथ्या है॥ बहुरि केवल जानें ही
तो सिद्धि होइ नाहीं॥ [redacted] जो निराग रागादिक [redacted] मिटाए सिद्धि होइ सो ऐसैं [redacted] जानें [redacted] किछू रागादिक
घटै नाहीं॥ प्रकृति का कर्त्तव्य मानै आप अकर्त्ता रहै काहे कों आप रागादि घटावै तातैं यहु मोक्ष
मार्ग नाहीं है॥ बहुरि प्रकृति पुरुष का जुदा होना मोक्ष कहै है सो पचीस तत्त्व निविषै चौईस तत्त्व प्र
कृति संबंधी कहे एक पुरुष भिन्न कह्या सो ए तौ जुदे हैं ही॥ अर जीव कोई पदार्थ [redacted] पचीस तत्त्वनि विषै
कह्या ही नाहीं॥ [redacted] अर पुरुष ही कों प्रकृति संयोग भए जीव [redacted] सैं कहा
है तौ पुरुष न्यारे न्यारे [redacted] प्रकृति सहित हैं [redacted] पीछैं साधन करि कोई रहित हो है ऐसे
मानि सिद्ध भया॥ एक पुरुष न गह्या॥ बहुरि प्रकृति पुरुष की न लिहै है कि कोई अंतरी वस्तु ही है सो
जीव कों आनि लागै है॥ जो या की न लिहै तो प्रकृति तैं [redacted] तत्त्व उपजे कैसैं मानिए॥ [redacted]
अर जुदी है तौ [redacted] वह भी एक वस्तु है॥ सर्व कर्त्तव्य वाका ठहर्‍या॥ पुरुष का कि
छू [redacted] कर्त्तव्य ही रह्या नाहीं काहे कों उपदेश दीजिए है॥ ऐसैं यहु मोक्ष माननां मिथ्या है॥ बहुरि तहां
प्रत्यक्ष अनुमान आगम ए तीन प्रमाण कहै है सो तिनिका सत्य असत्य का निर्णय जैन के न्यायग्रं
थनितैं जाननां॥ बहुरि इस सांख्य मत विषै केई ईश्वर कों न मानै है॥ केई एक पुरुष कों ईश्वर मानै है॥ केई
शिव कों केई नारायण कों देव मानै है॥ अपनी इच्छानुसारि कल्पना करै है॥ किछू निश्चय है नाहीं
बहुरि इस मत विषै केई जटा धारै है केई चोटी राखै है॥ केई [redacted] मुंडित हो है॥ केई काथे वस्त्र पहरैं है॥
[redacted] इत्यादि अनेक प्रकार भेष धारि तत्त्वज्ञान का आश्रय करि महंत कहावै है॥ ऐसे

१ कोई पुरुष १ प्रकृति

१ इंद्रियादि कवा सर्वादिक ×

८०

ऐसैं बौद्धमतका निरूपण कीया॥ बहुरि शिवमतविषै भेद है॥ नैयायिक। वैशेषिक। तहां नै
यायिक मतविषै सोलह तत्व कहे हैं॥ प्रमाण। प्रमेय। संशय। प्रयोजन। दृष्टांत। सिद्धांत। अव
यव। तर्क। निर्णय। वाद। जल्प। वितंडा। हेत्वाभास। छल। जाति। निग्रहस्थान॥ तहां प्रमाण च्या
रि प्रकार कहे हैं॥ प्रत्यक्ष। अनुमान। शब्द। उपमा। [illegible]
[illegible]॥ बहुरि आत्मा देह अर्थ बुद्धि इत्यादि प्रमेय कहे हैं [illegible]
[illegible]
[illegible] बहुरि आत्मादिकका स्वरूप [redacted]
[illegible] [redacted] बहुरि यहु कहा है ताका नाम संशय है।
[redacted] [illegible] जाको वादी प्रतिवादी मानै सो दृष्टांत है॥
जाके अर्थि प्रवर्त्ति होइ सो प्रयोजन है॥ [redacted] प्रति [redacted]
[redacted] दृष्टांतकरि जाको ठहराईए सो सिद्धांत है॥ बहुरि अनुमानके [redacted] प्रतीति
अादि पंच अंगते अवयव है॥ संशय दूरि भए किसी विचारतें ठीक होय सो तर्क है॥ [redacted] जाननेंकी इ
रूप जाननी सो निर्णय है॥ आचार्य शिष्यके पक्ष प्रतिपक्ष करि अभ्यास सो वाद है॥ जाननेकी इ
छारूप कथाविषै जो छल जाति आदि दूषण होइ सो जल्प है॥ प्रतिपक्षरहित वाद सो वितंडा है॥
सांचे हेतु नांही ते असिद्ध आदि भेद लीएं हेत्वाभास हैं॥ छल लीएं वचन सो छल है॥ सांचे दूषण नांही
ऐसे दूषणाभास सो जाति है॥ जाकरि परका निग्रह होय सो निग्रहस्थान है॥ या प्रकार संशया
दि तत्व कहे सो ए तौ ज्ञानके निर्णय करनेकौं वा [redacted] वादकरि पांडित्य प्रगट करनेकौं कारणभ
ऊत तत्व कहे सो इनितैं परमार्थ कार्य कहा होइ॥ [illegible] सो तौ इहां प्रयोजन कि छू दिखाया नाही
[redacted] कामक्रोधादि भावकौं मेटि निराकुल होनां सो कार्य है॥ तातैं ए तत्व तत्व ही नांही॥
नांही॥ पंडिताईकी नाना युक्ति बनाई सो यह भी एक चातुर्य है॥
४ कोई वस्तु स्वरूप रूप तो तत्व है नांही॥

५ विचार रूप ५

[redacted] दूजे मैं इन्द्रियादिकके जानने कौं प्रत्यक्षादि प्रमाणकोइ बापू

जांनें

बहुरि कहोगे इनिकौं [redacted] प्रयोजनभूत तत्वनिका [redacted] निर्णय करिसकै तातैं ए तत्व कहे हैं। सो
ऐसें [redacted] परंपरा तौ व्याकरणवाले भी करे हैं पहैं अर्थ निर्णय होइ वा जोग
नादिकके अधिकारी भी करै है भोजनकी ए शरीरकी स्थिरता भएं [redacted] तत्व निर्णय करनेकौं समर्थ
होइ सो ऐसी [redacted] युक्ति कार्यकारी नाही ॥ बहुरि जो कहोगे व्याकरण भोजनादिक तो अवश्य
तत्वज्ञानकौं कारण नाही ॥ लौकिक कार्य साधनेंकौं भी कारण है ॥ सो [redacted] जैसें ए हैं तैसें ही जुमत
ल कहे सो भी लौकिक साधनेंकौं कारण हो है ॥ [redacted] जैसैं स्वर्ग पुर कादि विषें दीसया
दिकका निरूपण कीया ॥ तातैं जीवकौं जानें अवश्य [redacted] काम क्रोधादि दूरि होइ [redacted] निराकु
लता निपजै [redacted] वै ही तत्व कार्यकारी हैं ॥ बहुरि [redacted] ~~प्रमाणादिक तत्व कहे तिनिका सत्य असत्य~~
~~पनाका निर्णय जैन ...~~ [redacted] कहोगे जे प्रमेयतत्व विषें आत्मादिकका निर्णय
हो है सो कार्यकारी है सो प्रमेय तौ सर्व ही वस्तु है ॥ [redacted] प्रमितिविषय नाही ऐसा कोई भी नाही ॥
तातैं प्रमेयतत्व काहेकौं कह्या ॥ आत्मादि तत्व कहनें थे ॥ बहुरि आत्मादिकका भी स्वरूप अन्यथा
पक्षपात रहित प्ररूपण कीया ॥ सो विचार कीऐं भासै है ॥ [redacted] ~~बहुरि ... आत्मादिकका भी स्वरूप अन्यथा~~
~~हैं जैन [redacted] ग्रंथनितैं पक्ष ... कीऐं भासै है ॥ ऐसैं नैयायिक ... तत्व निर्णय जाननें ॥~~
~~बहुरि वैशेषिक~~ मतविषें ~~... तत्व कहे हैं ॥ ...~~
जैसें आत्माकै द्वैत भेद करे हैं ॥ परमात्मा जीवात्मा ॥ तहां परमात्माकौं सर्वका कर्त्ता [redacted] बतावै है ॥
तहां [redacted] ऐसा अनुमान करै है ॥ जो यहु जगत् कर्त्ता करि निपज्या है ॥ जातैं यहु कार्य है
जो कार्य है सो कर्त्ता करि निपज्या है जैसें घटादिक ॥ सो यहु अनुमानाभास है ॥ जातैं ऐसा अनुमानांत ८१
र संभवै है ॥ यहु जगत् सर्व कर्त्ता करि निपज्या नाही ॥ जातैं या विषें कोई अकार्यरूप [redacted] भी पदार्थ है
जो अकार्य है सो कर्त्ता करि निपज्या नाही जैसें सूर्यबिंबादिक ॥ [redacted] तातैं [redacted] अनेक पदार्थ मि

२ यहु प्रत्यक्षादि प्रमाणकै गोचर है ः

निका समुदाय रूप जगत् तिस विषै कोई पदार्थ कृत्रिम है सो मनुष्य [redacted] ादिक करि कीए हो है ।। कोई अकृ-
त्रिम है सो ताका कर्त्ता नाही ।। २ तातैं ईश्वर कौं कर्त्ता माननां मिथ्या है ।। वहुरि जीवात्मा कौं प्रति शरीर भि-
न्न कहै है सो यहु सत्य है ।। परंतु मुक्त भएं पीछैं [redacted] नी भिन्न ही माननी योग्य है
विशेष पूर्वैं कह्या ही है ।। [redacted] ऐसैं ही अन्य तत्वनि कौं मिथ्या प्ररूपै है ।। वहुरि प्रमाणादिक का
भी स्वरूप अन्यथा कल्पै है ।। सो जैन [redacted] ग्रंथनि तैं परीक्षा कीएं भासै है ।। [redacted] ऐसैं नै-
यायिक मत विषै कहे कल्पित तत्व जाननें ।। वहुरि [redacted] वैशेषिक मत विषै [redacted] छह तत्व कहै हैं ।। द्रव्य १
गुण १ कर्म १ सामान्य १ विशेष १ समवाय १ तहां द्रव्य नव प्रकार ।। पृथ्वी जल अग्नि पवन आका-
श काल दिशा आत्मा मन ।। तहां पृथ्वी जल अग्नि पवन के परमाणु भिन्न भिन्न [redacted] है ।। ते परमा-
णू नित्य है ।। तिनि करि कार्य रूप पृथ्वी आदि हो है सो अनित्य है ।। सो [redacted] ऐसा कहनां प्रत्यक्षादि तैं
विरुद्ध है ।। ईंधन रूप पृथ्वी के परमाणु अग्नि रूप होते देखिए है अग्नि के परमाणु राख रूप पृथ्वी होते
देखिए है ।। जल के परमाणु मुक्ताफल रूप पृथ्वी होते देखिए है ।। वहुरि जो तू कहैगा वै परमाणु जाते
रहै है और ही परमाणु तिनि रूप हो है सो प्रत्यक्ष कौं असत्य [redacted] ठहरावै है ऐसी कोई प्रबल युक्ति कहै
तो ऐसैं [redacted] ही मानें कहै ही तो ऐसैं ठहरै नाही ।। तातैं [redacted] सब परमाणुनि की एक पुद्गल
मूर्तीक जाति है ।। [redacted] सो पृथ्वी आदि अनेक अवस्था रूप परिणमै है ।। वहुरि इनि पृथ्वी आदिक
१ कहीं जुदा ः का १ शरीर ठहरावै है सो मिथ्या ही है जातैं वाका कोई प्रमाण नाही अर पृथ्वी आदि तौ [redacted]
परमाणु पिंड है ।। इनि [redacted] का शरीर [redacted] अन्यत्र ए अन्यत्र ऐसा संभवै नाही ।।
तातैं यहु मिथ्या है ।। वहुरि [redacted] पोलि तू कौं आकाश कहै है [redacted]
[redacted] क्षण पल आदि कौं काल कहै है सो ए तौ आकाश ही वस्तु [illegible]
[redacted] है सत्तारूप ए पदार्थ नाही पदार्थनि का [redacted] क्षेत्र परिणमनादिक का ३

३ जो ही पदार्थ अरकै नाही ऐसी जो ः

पूर्वापरविचारकरनेंकै अर्थि [redacted] इनिकी कल्पना कीजिए है।। बहुरि दिशा किछू है ही नाही।। आ
काशविषै खंड कल्पना [redacted] करि दिशा मानिए है [redacted]।। बहुरि आत्मा दोय प्रकार कहै है सो पू
र्वै निरूपण कीया ही है।। बहुरि मन कोई जुदा पदार्थ नाही।। भाव मन तौ ज्ञानरूप है सो आत्माका
स्वरूप है द्रव्यमन परमाणूनिका पिंड है सो शरीरका अंग है।। [redacted] ऐसैं ए [redacted] द्रव्य कल्पित जान
नें।। बहुरि गुण चौईस कहै है।। स्पर्श। रस। गंध। वर्ण। शब्द। संख्या। विभाग। संयोग। परिमाण।
पृथक्त्व। परत्व। अपरत्व। बुद्धि। सुख। दुःख। इच्छा। धर्म। अधर्म। प्रयत्न। संस्कार। द्वेष। स्नेह।
स्पर्शादि कर गुरुत्व। द्रव्यत्व। [redacted]।। सो इनिविषै स्पर्शादि गुण तौ [redacted] परमाणूनिविषै पाईए है।।
परंतु पृथ्वीकौं गंधवती ही कहनी।। जलकौं शीतस्पर्शवान् कहनी इत्यादि मिथ्या है जातैं कोई पृथ्वी
विषै गंधकी मुख्यता न भासै है कोई जल उष्ण देखिए है इत्यादि प्रत्यक्षादितैं विरुद्ध है।। बहुरि श
ब्दकौं आकाशका गुण कहै है सो मिथ्या है।। शब्द तौ भीति इत्यादिस्यौं रुकै है तातैं मूर्तीक है।। आका
श अमूर्तीक सर्वव्यापी है।। भीतिविषै आकाश रहै है शब्दगुण न प्रवेश करि सकै यह कैसैं बनै।।
बहुरि संख्यादिक है सो [redacted] वस्तुविषै तौ किछू है नाही।। अन्य पदार्थ अपेक्षा अन्य पदार्थकै ही
संख्यादि ककी नाधिक जाननेंकौं अपने ज्ञानविषै कल्पनाकरि विचार कीजिए है।। बहुरि बुद्धि आदि है सो आत्मा
का परिणमन है।। ~~यहां बुद्धि~~ [redacted] ~~ज्ञानका नाम है कि मनका नाम है।। जो ज्ञानका नाम है तो ज्ञान~~ यहां बुद्धि
नाम ज्ञानका है तौ आत्माका गुण है ही।। अर मनका नाम है तौ मन तौ द्रव्यनिविषै कह्या था इहां गुण काहे
कौं कह्या।। बहुरि सुखादिक है सो आत्माविषै कदाचित् पाईए है।। [redacted] आत्मा [redacted] के लक्षणभूत तौ ए 82
गुण है नाही।। अव्याप्तपनेंतैं लक्षण न भासै है।। बहुरि [redacted] स्निग्धादि पुद्गल परमाणूविषै पाईए है सो
स्निग्ध गुरुत्व इत्यादि तौ स्पर्शन इंद्रियकरि जानिए तातैं स्पर्शगुणविषै गर्भित भए जुदा काहेकौं कहे।। बहुरि
द्रवत्वगुण जलविषै कह्या सो ऐसैं तौ अग्निविषै ऊर्ध्वगमनत्व आदि पाईए है।। कै तौ सर्व कहनें थे कै [redacted]

सामान्यविषै ग्लनितकरनैंथै ।। ग्रैसैं ए गुण कहे ते नी कल्पित हैं ।। बहुरि कर्म पाँच प्रकार कहे हैं ।। उत्क्षेपण
अवक्षेपण आकुंचन प्रसारण गमन । सो ए तौ शरीरकी चेष्टा है ।। इनिकौं जुदी कहनेंका अर्थ कहा ।। बहुरि एती
ही चेष्टा तौ होती नीं ही चेष्टा तौ घनी ही प्रकारकी होइ है ।। बहुरि जुदी ही इनिकौं तत्व [redacted] संज्ञा कही सो जुदा पदा
र्थ [redacted] होइ तौ ताकौं जुदा तत्व कहनौ था कैं विशेष प्रयोजन [redacted] भूत होइ तौ तत्व कहनौ था [redacted]
सो दोऊ ही नीं ही । ग्रर ग्रैसैं ही कहि दैनी तौ पाषाणादिककी अनेक अवस्था होइ है सो कहा करो किछू साध्य
नीं ही ।। बहुरि सामान्य दोय प्रकार है ।। पर । अपर । तहाँ पर तौ [redacted] सत्तारूप है ।। अपर द्रव्यत्वादिरूप है ।

[illegible]

[illegible] तौ वस्तु कौं सामान्य [illegible]

[illegible]

[illegible] ।। बहुरि नित्य द्रव्य विषै [illegible]

[illegible]

[illegible]

ही [illegible] विशेष [illegible] इनिकौं जानें [redacted] [illegible]

[illegible] ।। बहुरि [illegible] ग्रयुतसिद्ध [illegible] संबंध ताका नाम समवाय है [illegible]

[illegible] ।। बहुरि [redacted] ग्रयुतसिद्ध [redacted] निके जो संबंध ताका नाम समवाय है सो [illegible]

हा ।। बहुरि ग्रयुतसिद्ध संबंधका नाम स
[redacted] ।। बहुरि नित्य द्रव्य विषै प्रवृत्ति जिनकी होइ ते विशेष है ।। बहुरि ग्रयुतसिद्ध संबंधका नाम स
[redacted] तौ बहुतनिकौं एकप्रकार करिवा एक [redacted]
मवाय है सो [redacted] ग्रपनें विचार
करि वस्तु विषै भेदकल्पना करिवा भेदकल्पना अपेक्षा संबंध माननें करि [redacted] ग्रपनें विचार
वस्तु विषै भेद कल्पना करिवा भेदकल्पना अपेक्षा संबंध माननें करि [redacted]
ही विषै हो है ।। कोई एजुदे पदार्थ तौ नीं ही ।। बहुरि [redacted] इनिके जानें कामक्रोधादि मेटनें रूप वि
शेष प्रयोजनकी भी सिद्धि नीं ही ।। तातैं इनिकौं तत्व काहेकौं कहे । ग्रर ग्रैसे ही तत्व कहनें तौ प्रमेयत्वादि
वस्तुके अनंत धर्म्म हैं वा संबंध आधारादिक कारकनिके अनेक प्रकार वस्तु विषै संभवै हैं [redacted]

159

२ नैयायिक तौ कहै है॥

२ बुद्धि वैशेषिककै यही प्रमाण मानै है। प्रत्यक्ष अनुमान। [illegible] निका मत प्रमाण का निर्णय [illegible] इनितैं [illegible]

कै तौ सर्व कहनें थे कै प्रयोजन जानि कहनें थे तातैं ए सामान्यादि तत्त्व वृथा ही कहे। ऐसें [redacted]
वैशेषिकनिकरि कहे कल्पित तत्त्व जानने॥ बहुरि विषय इंद्रिय बुद्धि शरीर सुष दुष इनिका अभा-
वतैं आत्माकी स्थिति सो मुक्ति है॥ ऐसैं वैशेषिक कहै है॥ सो चौईस गुणनि विषै बुद्धि आदि नव गुण
तिनिका अभाव सो मुक्ति है सो इहां बुद्धिका अभाव कह्या सो बुद्धि नाम ज्ञानका है तौ ज्ञानका अधि-
करणपना आत्माका लक्षण कह्या था ज्ञानका अभाव भए लक्षणका अभाव होतैं लक्ष्यका भी अ-
भाव होइ तब आत्माकी स्थिति कैसैं रही॥ अर बुद्धि नाम मनका है तौ भाव मन तौ ज्ञानरूप है ही द्र-
व्यमन शरीररूप है [redacted] सो मुक्त भए द्रव्यमनका संबंध छूटै ही है द्रव्यमन [redacted]
जडताका नाम बुद्धि कैसैं होइ॥ बहुरि [redacted] मनवत् ही इंद्रिय जानने॥ बहुरि विषयका
अभाव होइ सो स्पर्शादि विषयनिका जानना मिटै है तौ ज्ञान काहेका नाम ठहरैगा॥ [redacted] अर
तिनि विषयनि हीका अभाव होइगा तौ लोकका अभाव होगा॥ बहुरि [redacted] सुषका अभाव कह्या सो
सुषहीकै अर्थि उपाय कीजिए है ताका जहां अभाव होय सो उपादेय कैसैं होइ॥ बहुरि जो आकुलतामय
[redacted] सुषका तहां अभाव भया कहै है तौ यहु सत्य है अर निराकुलता लक्षण अतींद्रिय सुष तौ तहां संपूर्ण

१ इंद्रिय जनित सु

संभवै है तातैं सुषका अभाव नाहीं॥ बहुरि शरीर दुष द्वेषादिकका तहां अभाव कहै है सो सत्य ही है॥ बहुरि
शिवमत विषै कर्त्ता निर्गुण ईश्वर शिव है ताकौं देव मानै है सो याके स्वरूपका अन्यथापनौ पूर्वोक्त प्रकार
जानना॥ बहुरि इहां भस्म कौपीन जटा जनेऊ इत्यादि चिह्न सहित भेष हो है सो [redacted] आचारादि भेद-
तैं च्यारि प्रकार हैं॥ शैव पाशुपत१ महाव्रती१ कालमुख१ सो ए रागादि सहित हैं तातैं सुलिंग नाहीं॥ ऐसैं शि- ८३
वमतका निरूपण कीया॥ [redacted] अब मीमांसक मतका स्वरूप कहिए है॥ मीमांसक दोय प्रकार हैं॥ ब्रह्म-
[redacted] वादी१ कर्मवादी१ तहां ब्रह्मवादी तौ सर्व यहु ब्रह्म है दूसरा कोई नाहीं ऐसा वेद विषै अद्वै-
त ब्रह्मकौं निरूपै है॥ बहुरि आत्मा विषै लय होनी सो मुक्ति कहै है सो इनिका मिथ्यापनौ पूर्वैं दिषाया है सो विचारनां॥

साहनि कासंस्याम स्थपनाजैन शास्त्रनितै जाननी॥

बहुरि कर्म्मवादी क्रियाआचारयज्ञादिक कार्यनि का कर्त्तव्यपनां प्ररूपै है॥ [redacted] सो इनि क्रियानि विषै रागादिक का सद्भाव पाईए है तातैं ए कार्य किछू कार्यकारी हैं नाहीं॥ बहुरि तहीं [redacted] तहां और प्रमाणा करकरि करी है ईदोसप्रकृतिहै॥ तहीं तहां तौ छह प्रमाण मांनै है॥ प्रत्यक्ष अनुमान वेद उपमा अर्थापत्ति अभाव। बहुरि प्रमाणाकर अभावविना पांच ही प्रमाण मांनै है बहुरि तहीं षट्कर्म्म सहित ब्रह्मसूत्र का धारक [redacted] ते ग्रहस्थाश्रम [redacted] हैं नाम जिनिका ऐसे गृहस्थ हैं॥ बहुरि वेदांत विषै [redacted] यज्ञोपवीत रहित विप्र अन्नादिक के ग्राही भगवत् है नाम जिनिका ऐसे [redacted] आरि प्रकार हैं॥ कुटीचर बहूदक हंस परमहंस। सो ए किछू त्याग करि संतुष्ट भए हैं परंतु [redacted] ज्ञान श्रद्धान मिथ्या और रागादिकका सद्भाव पाईए है तातैं ए भेष कार्यकारी नाहीं॥ बहुरि इहां जैमनीय मत सौं भेद है सो कहै है॥ [redacted] नित्य वेद वचन है॥ तिनितैं यथार्थ निर्णय [redacted] सर्वज्ञदेव कोई है नाहीं॥ [redacted] नित्यवेदवचन है॥ तिनितें यथार्थनिर्णय हो है॥ तातैं पहलैं वेद पाठकरि क्रियाप्रति प्रवर्त्तनां सो नोदना सोई है लक्षण जाका ऐसा धर्म ताका साधनकरनां॥ जैसैं कहै है॥ स्वःकामोऽग्निं यजेत॥ स्वर्गाभिलाषी अग्निकौं पूजै॥ इत्यादि निरूपण करे है॥ इहां पूछिए है॥ शैव सांख्य नैयायिकादिक सर्व ही वेदकौं मांनै है॥ तुम भी मांनौ हो॥ तुम्हारै वा उनसबनिकै तत्त्वादि निरूपण विषै परस्पर विरुद्ध पाईए है सो है कहा॥ जो वेद ही विषै कहीं किछू कहीं किछू निरूपण कीया है तो वाकी प्रमाणता कैसैं रही॥ अर जो मतवालो ही कहीं किछू कहीं किछू निरूपण करै है तो तुम परस्पर झगरि निर्णयकरि [redacted] एक कौं वेद का अनुसारी अन्य कौं वेदतैं पराङ्मुख [redacted] ठहरावो॥ सो हमकौं तो यहु भासै है॥ वेद ही विषै पूर्वापर विरुद्धता लीए निरूपण है॥ तिस तैं ताका अपनी अपनी इच्छा अनुसारि अर्थ ग्रहि जुदे जुदे मतके अधिकारी भए हैं॥ सो ऐसे वेदकौं प्रमाण कैसैं कीजिए है। बहुरि अग्नि पूजें स्वर्ग होइ सो अग्नि

सिमनुष्यतैंउत्तमकैसैंमांनिए प्रत्यक्ष विरुद्ध बहुरि विष्णु स्वर्गदाताकैसैंहोइ। ऐसैंहीअन्यभी
वचनप्रमाणविरुद्ध है॥ [redacted] बहुरि वेद विषै ब्रह्म कह्या है॥ सर्वज्ञ [redacted] कै संन माने
हैं इत्यादिप्रकारकरि जैमनीयमत कल्पित जानना॥ [redacted] अब बौद्ध मत का स्वरूप कहिए है।
[redacted] बौद्धमतविषै च्यारि आर्य्यसत्य प्ररूपै है॥ दुःख। आयतन। समुदाय। मार्ग। तहां संसारी
के स्कंधरूप सो दुःख है सो पांच प्रकार॥ विज्ञान। वेदना। संज्ञा। संस्कार। रूप। तहां रूपादिक का
जानना सो विज्ञान॥ सुख दुःख का अनुभवना सो वेदना। सूता का [redacted] जागना सो संज्ञा। पढ्या था
सो यादि करना सो संस्कार। रूप का धारना सो रूप॥ इहां विज्ञानादिक कौं दुःख कह्या सो मिथ्या
है॥ दुःख तौ काम क्रोधादिक है॥ ज्ञान दुःख नाहीं प्रत्यक्ष देखिए है॥ काहू के ज्ञान थोरा है॥ क्रोध लो
भादि बहुत है सो दुःखी है॥ काहू कै ज्ञान बहुत है काम क्रोधादि स्तोक है वा नाहीं है सो सुखी है॥
~~हैं तौ ऐसैं ही पर दुःख काम क्रोधतैं हरिकैं सरे नां भी~~ [redacted] ~~असतिनितै दुःखी होइ है~~
~~सो पाप आदि विकल्प बंधबंध कथा नाहै॥ सो ज्ञानसैं का दुःखी होइ प्रकाश~~॥ तातैं विज्ञानादि
क दुःख नाहीं है॥ बहुरि आयतन बारह कहै है॥ पांच तौ इंद्रिय अर तिनि कै पांच विषय अर [redacted] रागादिक
एक मन। एक धर्मायतन॥ सो ए आयतन किस अर्थि कहे है क्षणिक सब कौं कहै है इनिका कहा
प्रयोजन है॥ बहुरि जातैं रागादिक का [redacted] गण निपजै [redacted] ऐसा आत्मा अर आत्मी
य है नाम जाका सो समुदाय है॥ तहां अहं रूप आत्मा अर ममरूप आत्मीय जाननी॥ सो क्षणिक मा
नैं इनिका भी कहनै का किछू प्रयोजन नाहीं॥ बहुरि सर्व संस्कार क्षणिक है ऐसी वासना सो मार्ग है॥ ७४
सो प्रत्यक्ष [redacted] बहुत काल स्थायी वस्तु अवलोकिए है॥ बालक वृद्ध अवस्था विषै एक आत्मा का अस्तित्व
भासै है जो एक नाहीं है तौ पूर्व [redacted] उत्तर [redacted] कार्य्य का एक कर्त्ता कैसैं मानै है॥ जो तू कहै है सो

~~संस्कारपर्याय~~ [redacted] ~~भासै है प्रत्यक्ष नवकर्त्तै दीसै है सौ मानौ~~ [redacted]

तू कहै है सो एक अवस्था रहै है तौ यहु हम भी मानैं हैं [redacted]
यहूं तिस वस्तु का [redacted] नाश होत नाहीं दीसै है [redacted] कैसैं मांनै॥ बहुरि

कारतें है तौ संस्कारको [redacted] नके [redacted] है।। जाकै है सो नित्य है विज्ञान कहै नित्य है तौ सर्व ज्ञानि कके संकर है है।। ज्ञानि कहै तौ जाका आधार ही ज्ञानिक तिस संस्कार कौं [redacted] के सकै है।। बहुरि सर्व ज्ञानिक तब आप ही ज्ञानिक न यातें अमीका सनाको मार्ग कहै है सो [redacted] इस मार्ग का फल कौ आप तौ पावै ही नाहीं काहेकौ [redacted] इस मार्ग विषै प्रवर्त्ते बहुरि तैं निरर्थक शास्त्र [redacted] काहे कौं कीए।। [redacted] उपदेश तौ किछू कर्तव्य करि फल पावने के अर्थि दीजिए है। [redacted] ऐसें यहु मार्ग मिथ्या है। बहुरि [redacted] निरोधका नाम मोक्ष कहै है सो [redacted] ज्ञानकै नयातव मोक्ष कौन कै कहै है। अर [redacted] ज्ञानादिक [redacted] अपने स्वरूपका अभाव नहीं आपका अभाव [redacted] होइ ताका उपाय करना कैसैं [redacted] हितकारी हो।। [redacted] ।। बहुरि बौद्धमतविषै च्यार प्रमाण मानै है।। प्रत्यक्ष। अनुमान। सो इनिकै सत्यासत्यका निरूपण जैनशास्त्रनितै जाननां।। जो ए दोय ही प्रमाण है तौ [redacted] ।। बहुरि तिनकै सुगत कौं देव मानै है सो ताका स्वरूप नग्न वा विक्रियारूप स्थापै है सो [redacted] विटंबनारूप है।। बहुरि कमंडलु रक्तांबर के धारी पूर्वाह्न विषै भोजन करै इत्यादि लिंगरूप [redacted] बौद्धमतके भिक्षुक हैं सो [redacted] क्षणिककौं भेष धरनेका कहा प्रयोजन।। [redacted] परंतु महंतताकै अर्थि कल्पित निरूपण करनां अर भेष धरना ताहै।। बहुरि बौद्ध हैं [redacted] ते च्यारि प्रकार है।। [redacted] वैभाषिक। सौत्रांतिक। योगाचार। मध्यम। तहां वैभाषिक तौ ज्ञान सहित [redacted] पदार्थको मानै है।। सौत्रांतिक प्रत्यक्ष यहु दीखै है सो ई है [redacted] परै किछू नाहीं ऐसा मानै है।। योगाचारनिकै आचार सहित बुद्धि पाई है।। मध्यम है ते पदार्थका आश्रय बिना ज्ञानही कौं मानै हैं।

[redacted] इनिकै शास्त्र प्रमाण नव।। तिनिका विरूपण किसके अर्थि कीया।। प्रत्यक्ष अनुमान तौ जीव आपही करि लेगा तमशास्त्र काहे कौं।।

सो अपनी अपनी कल्पना करै है विचार कीएं किछू ठिकाना की बात नाहीं ॥ ऐसैं बौद्धमत का निरूपण कीया

[redacted] अब चार्वाक

का मत कहिए है ॥ [redacted] ॥ कोई देव धर्म अधर्म मोक्ष पुन्य पाप का फल है नाहीं ॥ यहु इंद्रियगोच

र जितना है सो ही लोक है ॥ ऐसैं चार्वाक कहै है सो वाकौं पूछिए है सर्वज्ञ देव इस काल [redacted] क्षेत्र विषै नाहीं कि

सर्वत्र नाहीं ॥ इस काल क्षेत्र विषै तौ हम भी नाहीं मानै हैं ॥ अर सर्व काल क्षेत्र विषै नाहीं ऐसा [redacted] स

र्वज्ञ बिना जानना किसकै भया ॥ जो सर्व क्षेत्र काल की जानै सो ही सर्वज्ञ ॥ अर न जानै है तौ निषेध कैसें करै

है ॥ बहुरि धर्म अधर्म [redacted] लोक विषै प्रसिद्ध है । जो ए कल्पित होइ तौ सर्वजन सुप्रसिद्ध कैसें होइ ॥

[redacted] बहुरि धर्म अधर्म रूप परण

ति होती देखिए है ता करि वर्त्तमान ही सुखी दुखी हो है ॥ [redacted] इनिकौं कैसें न मानिए ॥ अर [redacted] मोक्ष का हो

ना अनुमान विषै आवै है ॥ क्रोधादिक दोष काहू कै [redacted] हीन है काहू कै अधिक है सो जानिए है काहू कै

[redacted] इनिकी नास्तिता भी होती होसी ॥ अर ज्ञानादिक गुण काहू कै हीन काहू कै अधिक भासै है ताते जानिए है

काहू कै संपूर्ण भी होते होसी ऐसें जाकै समस्त दोष की हानि गुणनि की प्राप्ति होइ सोई मोक्ष अवस्था है ॥ बहु

रि पुन्य पाप का फल भी देखिए है ॥ कोऊ [redacted] उद्यम करै तौ भी दरिद्री रहै ॥ कोऊ कै

स्वयमेव लक्ष्मी होइ कोऊ शरीर का यत्न करै तौ भी रोगी रहै काहू कै बिना ही यत्न नीरोगता रहै इत्यादि प्रत्य

क्ष देखिए है सो या का कारण कोई तौ होगा ॥ जो या का कारण सोई पुन्य पाप है ॥ बहुरि परलोक भी प्रत्य

अनुमान तैं भासै है ॥ व्यंतरादिक हैं है मैं अमुक था सो देव भया हूं ॥ बहुरि तू कहैगा यहु तौ पवन है सो हम

तौ [redacted] मैं हौं इत्यादि चेतना भाव जाकै आश्रय पाईए ताही कौं आत्मा कहै हैं तू वाका नाम पवन कहै

है [redacted] परंतु पवन तौ भीति आदि करि अटकै है आत्मा [redacted] मूंध्या हूवा भी अटकै नाहीं तातैं पवन कैसें

मानिए है ॥ बहुरि [redacted] जितना इंद्रियगोचर है तितना ही लोक कहै है [redacted] तौ इंद्रि

२ सर्वज्ञ २

२ तेज अबलो कि एहे २

८५

यगोचर तौ थोरे क्षेत्रकालवर्ती भी पदार्थ नाहीं हो इसके अर [redacted] इ रि दूरि काल की बात
हूत काल की बातें [redacted] परंपरा तैं सुनिए ही है तातैं सब का जानना
तैरै भी ऐसे इतना ही लोक कैसे कहैं है।। बहुरि [redacted] चार्वाक मत विषे कहै है पृथ्वी अप तेज वायु आकाश मिले
चेतना होइ आवै है सो मरतैं पृथ्वी आदि [redacted] इहां रही चेतनावान पदार्थ गया सो व्यंतरादि भया।। ●प्रत्य
क्ष जुदे जुदे देखिए।। बहुरि एक शरीर विषै पृथ्वी आदि [redacted] तो भिन्न भिन्न भासै है चेतना एक भासै
है।। [redacted] जो पृथ्वी आदि कै [redacted] आधारि चेतना होइ तौ जुदी जुदी चेतना होइ।। बहुरि हस्तादि काटैं जैसें वाकी
साथि वर्णादि रहै तैसें चेतना भी रहै [redacted]।। [redacted] बहुरि अहंकार बुद्धि तौ चेतना कै है सो [redacted]
[redacted] पृथ्वी आदि रूप शरीर तौ इहां ही रह्या।। व्यंतर [redacted] पर्याय विषै पूर्व पर्याय का अहं पना मानना देखिए
है सो कैसे [redacted] हो है।। [redacted] बहुरि पूर्व पर्याय के [redacted] गुप्त समाचार प्रगट करै सो यहु जानना
नी कि सकी साथि गया।। जाकी साथि जानना सोई आत्मा है।। बहुरि चार्वाक मत विषै खानों पीनों भोग वि
लास करनी इत्यादि स्वछंद वृत्ति कौ उपदेश है सो ऐसैं तो जगत स्वयमेव ही प्रवर्ते है तहां शास्त्रादि बनाय कहा
भला होने का उपदेश दीया।। बहुरि तू कहैगा [redacted] तपश्चरण शील संयमादि छुटावने कै अर्थि उपदेश दीया तो इ
नि कार्यनि विषै तो कषाय घटनै तैं [redacted] आकुलता घटै है तातैं इहां ही सुखी [redacted] होना हो है बहुरि यश आदि हो है तू इनि
कौ छुडाय [redacted] कहा भला करै है।। विषयासक्त जीवनि कौ सुहावती बातें कहि अपना वा औरनि
का बुरा करनें का भय नाहीं स्वछंद होइ विषय सेवनें कै अर्थि ऐसी [redacted] झूठी युक्ति बनावै है।। ऐसैं चार्वाक
मत का निरूपण कीया।। इस ही प्रकार अन्य अनेक मत हैं ते झूठी [redacted] कल्पित युक्ति बनाय पापी जीवनि करि
प्रगट कीए है तिनिका श्रद्धानादिक करि जीवनि का बुरा हो है।। बहुरि एक जिनमत है सो ही सत्यार्थ का स्वरूप
कहै है सर्वज्ञ [redacted] वीतराग देव करि भाषित है तिसका श्रद्धानादिक करि ही जीवनि का भला हो है सो जिनमत [redacted] विषै जीव
ादितत्व निरूपण कीए हैं तहां सर्वज्ञ वीतराग [redacted] अरहंत देव है।। वा सत्यअंतर परिग्रह रहित निर्ग्रंथ ●गुरु है।

ऽप्रत्यक्ष परोक्ष प्रमाण कहै हैं ऽ

ऽ [margin, left] ...नी योग्य बहुरि वर्ती ...अरु परोक्ष राता भूतीत अनागत काल... भी

ऽ [margin, right] हस्तादिक उस्वासा दिकैं

ऽ [margin, right] विषयक यादरूऽ

सो इनिका वर्नन इस ग्रंथ विषै आगैं वि[redacted]शेष लिखेंगे सो जाननौ।। इहां कोऊ कहै।। तुम्हारे रागद्वेष है ता १ रूपणकरनें
तें तुम अन्यमत का निषेध करि अपने मत कौं स्थापो हो।। ताकौं कहिए है।। यथार्थ वस्तु के प्र[redacted]नें विषै
रागद्वेष नाहीं।। [redacted] किछू अपनौ प्रयोजन विचारि अन्यथा प्ररूपण करै तौ रागद्वेष नाम
पावै।। बहुरि वह कहै है जो रागद्वेष नाहीं है तौ अन्यमत बुरे जैनमत भला ऐसा कैसें कहो हो।। साम्यभाव होइ तौ
सर्वकौं समान जानौं मतपक्ष काहेकौं करो हो।। याकौं कहिए है बुराकौं [redacted] बुरा कहै हैं भलाकौं भला कहै हैं।। या
मैं रागद्वेष कहा कीया।। बहुरि बुरा भलाकौं समान जाननौ तौ अज्ञान भाव है साम्यभाव नाहीं।। बहुरि वह
१ प्रयोजन कहै है जो सर्व मतनिका [redacted] तौ एक ही है।। तातैं सर्वकौं समान जाननौ।। ताकौं कहिए है।। जो [redacted] प्रयोज १ एकमतवि षैतो
न एक होइ तौ नाना मत काहेकौं कहिए।। [redacted] एक प्रयोजन [redacted] लीएं अनेक
प्रकार व्याख्यान होइ [redacted] ताकौं जुदा मत कौन कहै है।। परंतु प्रयोजन ही भिन्न भिन्न है।। सो दिखाइए है।। जैनमत
विषै एक वीतराग भाव पोषनें का प्रयोजन है।। सो कथानि विषै वा [redacted] लोकादिका निरूपण विषै
वा आचरन विषै वा तत्त्वनि विषै [redacted] जहां तहां वीतरागता की ही पुष्टता करी है।। बहुरि अन्यमतनि
विषै सराग भाव पोषनें का प्रयोजन है।। [redacted] कषाय
[redacted] जातैं कल्पित रचना कषायी जीव ही करै सो अनेक युक्ति बनाय [redacted] कषाय
भाव ही कौं पोषै।। जैसैं अद्वैत ब्रह्मवादी सर्वकौं ब्रह्म [redacted] माननें करि अर सांख्यमती [redacted] प्र १ सर्वकार्य
कृति [redacted] का मानि आप [redacted] कौं अकर्त्ता माननें करि अर शिवमती [redacted] तत्त्वज्ञाननें
ही तैं सिद्धि होनी माननें करि मीमांसक कषायजनित आचरनकौं धर्म माननें करि बौद्ध क्षणिक माननें करि ७६
चार्वाक परलोकादि न माननें करि [redacted] विषयभोगादिरूप कषाय कार्यनि [redacted] विषै स्वछंद होनौं ही
पोषै है।। [redacted] यद्यपि कोई ठिकानें

१ कोई कषाय घटावने :

[redacted] कों भी निरूपण करै तौ [redacted] छल करि अन्य कोई कषाय का पोषण करै है ।। [redacted]

[redacted] जैसें [redacted] गृहकार्य छोडि परमेश्वर का भजन करनां ठहराया ।। अर परमेश्वर कौ स्वरूप

सरागी ठहराय उनके आश्रय अपनें विषय कषाय पोषे ।। बहुरि जैनधर्म्म विषै देव गुरु धर्म्मादिक का स्व

रूप वीतराग ही निरूपण करि केवल वीतरागता ही कौ पोषै है ।। सो यहु प्रगट है हम कहा कहैं । अन्यमती भर्तृ

हरि ताहूनैं वैराग्य [redacted] प्रकरण विषैं ऐसा कह्या है ।। श्लोक ।। एको रागिषु राजते प्रियतमा देहार्द्ध [redacted] धारी हरो

नीरागेषु जिनो विमुक्त ललना संगो न यस्मात्परः ।। दुर्वारस्मरबाणपन्नगविषव्यासक्तमुग्धोजनः

शेषः कामविडंबितो हि विषयान् भोक्तुं न मोक्तुं क्षमः ।। १ ।। या विषै सरागीनि विषै महादेव कौ प्रधान कह्या

वीतरागीनि विषैं जिनदेव कौं प्रधान कह्या [redacted] है ।। [redacted] बहुरि सराग भाव वीतराग

भावनि विषै परस्पर प्रतिपक्षीपनौ है ।। सो ए दोऊ भले नाहीं इन विषै एक ही हितकारी है ।। सो वीतरागभा

व ही हितकारी [redacted] है जाकौं होतैं तत्काल आकुलता मिटै स्तुति योग्य होइ आगामी भला

होना सर्व कहै है ।। सरागभाव होतैं तत्काल आकुलता होइ निंदनीक होइ आगामी बुरा होना भासै तातैं या मैं

वीतरागभाव का प्रयोजन ऐसा जैनमत सो ही [redacted] इष्ट है ।। जिनि मैं सरागभाव के प्रयोजन ऐसे अन्य

अन्यमत अनिष्ट हैं ।। इनिकौं समान कैसैं [redacted] मांनिए ।। बहुरि वह कहै है जो यहु तौ सांच परंतु अन्यमत की

निंदा कीए [redacted] अन्यमती दुख पावै [redacted] विरोध उपजै [redacted] तातैं काहे कौं निंदा करिए ।। तहां कहिए है

जो हम कषाय करि निंदा करैं वा औरनि कौं दुख उपजावैं [redacted] तौ हम पापी ही हैं । अन्यमत

के श्रद्धानादिक करि जीवनि कै अतत्त्वश्रद्धान दृढ होइ तातैं संसार विषै जीव दुखी होइ तातैं करुणाभा

व करि यथार्थ निरूपण कीया है ।। [redacted] कोई विना दोष दुख [redacted] पावै विरोध उपजावै तौ हम कहा करैं

जैसें कुशील की निंदा करतैं वेश्यादिक दुख [redacted] कहा करिए ।। जो पापीनि के भय करि धर्मोपदेश न

१ अन्य की निंदा करतैं कलह उपजै :

१ [redacted] कोई पर [redacted] पहचानने कौं परीक्षा वतावतैं विरोध उपजे तो कहा करिए ।। जैसैं :

ऐसा तो कोई [redacted] नाँ ई जाकरि सर्व ही दैन पावै॥

दीजिए तौ जीवनिका भला कैसे होइ॥ [redacted] बहुरि वह विरो
धरूप जावै सो [redacted] विरोध तौ परस्पर होहै॥ हम भलैं नाँही वैं आप ही उपशांत होइ जाँ
हिंगे॥ हमकौं तौ हमारे परिणामनि का फल होगा॥ [redacted] बहुरि कोऊ कहै प्रयोजनभूत जीवादिक
तत्वनिका अयथार्थ श्रद्धान कीएं मिथ्यादर्शनादिक होहै॥ अन्य मतनिका श्रद्धान कीएं कैसैं मिथ्या
५ विपरीत मुक्ति व नायं२ दर्शनादिक होइ॥ ताका समाधान अन्य मतनि विषैं जीवादिक तत्वनिका स्वरूप [redacted] यथार्थ भासै
यह ही उपाय कीया है॥ सो किसै अर्थि कीया है॥ जीवादि तत्वनिका यथार्थ स्वरूप भासै तौ वीतराग भाव [redacted] एही महंतपनौ ५
[redacted] भासै॥ बहुरि जे जीव वीतरागी नाही अर अपनी महंतता चाहैं तिनि [redacted]
[redacted] सराग भाव होतैं महंतता मनावनेके अर्थि कल्पित युक्ति करि अन्यथा निरूपण कीया
है॥ सो अद्वैत ब्रह्मादिकका निरूपण करि जीव अजीवका अर स्वछंद वृत्ति पोषनेंकरि आस्रव [redacted] संवरा
२ सकला यीर दिकका अर [redacted] वत्वा अचेतनवत् मोक्ष [redacted] कहनेंकरि मोक्षका यथार्थ श्रद्धानकौं [redacted]
पोषै है तातैं [redacted] अन्य मतनिका अन्यथापनौ प्रगट कीया है॥ इनिका अन्यथापनौ भासै तौ तत्व श्र
द्धान विषैं रुचिवंत होइ॥ उनकी युक्ति करि भ्रम न उपजे॥ ऐसैं अन्य मतनिका निरूपण कीया॥ अब
अन्य मतनिके शास्त्रनि की ही साषि करि जिनमतकी समीचीनता वा प्राचीनता प्रगट कीजिए है॥ बडो यो
गवासिष्ठ छत्तीस हजार ताका प्रथम बैराग्य प्रकरण तहां अहंकार निषेध अध्याय विषैं वसिष्ठ राम का सं
वाद विषैं ऐसा कह्या है॥ रामोवाच॥ नाहं रामो न मे वांछा भावेषु च न मे मनः॥ शांतिमास्थितुमिच्छा
मि। स्वात्मन्येव जिनो यथा॥१॥ या विषैं रामजी जिन समान होनेंकी इच्छा करी तातैं रामजीतैं जिन [redacted]
देवका उत्तमपनौ प्रगट भया अर प्राचीनपनौ प्रगट भया॥ [redacted] बहुरि दक्षिणामूर्ति सहस्रना
म विषैं कह्या है॥ शिवोवाच॥ जैनमार्गरतो जैनो जितक्रोधो जितामयः॥ इहां भगवत्का नाम

जैनमार्गविषै अरहंत जैन कह्या सो यामैं जैनमार्ग की प्रधानता वा प्राचीनता प्रगट भई॥ बहु
रि वैशंपायन सहस्रनाम विषै कह्या है॥ कालनेमिर्महावीरः शूरः शौरिर्जिनेश्वरः॥ इहाँ भगवा
न् का नाम जिनेश्वर कह्या॥ तातैं जिनेश्वर भगवान् है॥ बहुरि दुर्वासा ऋषिकृत महिम्नस्तोत्र विषै
ऐसा कह्या है॥ तत्तद्दर्शनमुख्यशक्तिरिति च त्वं ब्रह्मकर्मेश्वरी॥ कर्त्तार्हन् पुरुषो हरिश्च सविता
बुद्धः शिवस्त्वं गुरुः॥ इहाँ [redacted] अरहंत तुम हो ऐसें भगवंत की स्तुति करी तातैं अरहंत कै
भगवंतपनौ प्रगट भयो॥ बहुरि हनुमन्नाटक विषै ऐसैं कह्या है॥ यं शैवाः समुपासते शिव इति
ब्रह्मेति वेदांतिनः। बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्त्तेति नैयायिकाः॥ अर्हन्नित्यथ जैनशास
नरताः कर्मेति मीमांसकाः॥ सोयं वो विदधातु वांछितफलं त्रैलोक्यनाथः प्रभुः॥१॥ इहाँ छहों मतनि
विषै एक ईश्वर कह्या तहाँ अरहंतदेव कौं भी ईश्वरपनौ प्रगट कीया॥ इहाँ कोऊ कहै जैसें इहाँ सर्व मतवि
षै इहाँ एक ईश्वर कह्या तैसें तुम भी मानौं॥ ताकौं कहिए है॥ तुम नैं यह कह्या है हम तौ न कह्या॥ तातैं तुम्हार
१ रेमतविषै २ मतकरि अरहंत कै ईश्वरपनौ सिद्ध भया॥ हमैं भी ऐसें ही कहै तौ हम भी शिवादिक कौं ईश्वर मानैं।
जैसें कोई व्यापारी साँचा रत्न दिखावै कोऊ झूठा रत्न दिखावै॥ तहाँ झूठा [redacted] रत्नवाला तौ सर्व रत्ननिकौं
समान कहै साँचा रत्नवाला कैसें समान मानै॥ तैसें जैनी साँचा [redacted] निरूपै अन्यमती झूठा [redacted] निरूपै २ देवादिक ३
१ समान मोललेने के अर्थि
तहाँ अन्यमती अपनी समान महिमा कै अर्थि सर्व कौं समान कहै॥ जैनी कैसें मानै॥ बहुरि रुद्रयामल
तंत्र विषै भवानीसहस्रनाम विषै ऐसैं कह्या है॥ कुंडासना जगद्धात्री॥ बुद्धमाता जिनेश्वरी। जिनमाता जि
नेंद्रा च। शारदा हंसवाहिनी॥ इहाँ भवानी के नाम जिनेश्वरी इत्यादिक कह्या तातैं जिन का उत्तमपनौ
प्रगट कीया॥ बहुरि गणेशपुराण विषै ऐसैं कह्या॥ जैनं पाशुपतं सांख्यं॥ बहुरि व्यासकृत सूत्र विषै ऐसे
कह्या है॥ जैना एकस्मिन्नेव वस्तुनि उभयं प्ररूपयंति स्याद्वादिनः॥ इत्यादि तिनिके शास्त्रनिविषै जैन निरू

पणा है तातैं जैनमतका प्राचीनपनौ भासै है॥ बहुरि भागवतका पंचम स्कंध विषै [redacted] ऋषभावतार
का वर्णन है॥ तहां यह करुणामय [redacted] तृष्णादिरहित ध्यानमुद्राधारी सर्वाश्रमकरि पूजित कह्या
है ताकै अनुसारि अरहंत राजा [redacted] प्रवृत्ति करी ऐसा कहै है सो [redacted] जैसें राम [redacted] कृष्णादि अव-
तारनिकै अनुसारि अन्यमत तैसें ऋषभावतारकै अनुसारि जैनमत॥ ऐसें तुम्हारे मतही करि
जैन प्रमाण भया॥ इहां इतनौ विचार और कीया चाहिए॥ कृष्णादि अवतारनिकै अनुसारि विषय
[redacted] कषायनिकी प्रवृत्ति हो है॥ ऋषभावतारकै अनुसारि वीतराग साम्यभावकी प्रवृत्ति हो है॥ इहां दोऊ
प्रवृत्ति समान मानें धर्म्म अधर्म्मका विशेष न रहै अर विशेष मानें भली होइ सो अंगीकार करनी॥
~~सो विषयकषाय प्रवृत्ति भली होइ तौ संसारी भले हैं वीतराग प्रवृत्ति भली है~~ [redacted] ॥ बहुरि दशा-
वतारचरित्र विषै [redacted] ॥ [redacted] बद्धपद्मासनो यो नयनयुगमिदं न्यस्य
नासाग्रदेशे॥ इत्यादि [redacted] बुद्धावतारका स्वरूप [redacted] अरहंतदेवसारिखा लिख्या है सो
ऐसा स्वरूप पूज्य है तौ अरहंतदेव पूज्य सहज ही भया॥ बहुरि काशीखंड विषै देवदास राजानैं
संबोधि राज छुडायो तहीं नारायण तौ विनयकीर्ति यती भया लक्ष्मीकौं विनयश्री आर्यिका करी
गरुडकौं श्रावक कीया॥ ऐसा कथन है॥ सो जहां [redacted] संबोधन करनौ भया तहीं जैनी भेष
बनाया तातैं जैन हितकारी प्राचीन प्रतिभासै है॥ बहुरि प्रभासपुराण विषै ऐसा कह्या है॥ भवस्य प 88
श्चिमे भागे। वामनेन तपः कृतं। तेनैव तपसाकृष्टः। शिवः प्रत्यक्षतां गतः॥१॥ पद्मासनसमासीनः।
श्याममूर्त्तिर्दिगंबरः॥ नेमिनाथः शिवेत्येवं। नाम चक्रेस्य वामनः॥२॥ कलिकाले महाघोरे। सर्वपा
पप्रणाशकः॥ दर्शनात्स्पर्शनादेव। कोटियज्ञफलप्रदः॥३॥ इहां वामनकौं [redacted]
पद्मासन दिगंबर नेमिनाथका दर्शन भया कह्या वाहीका नाम शिव कह्या॥ बहुरि ताकै

दर्शनादिकतैं कोटि यज्ञ का फल कह्या सो ऐसा नेमिनाथ का स्वरूप तौ [redacted] जैनी प्रत्यक्ष मानै है। सो
प्रमाण ठहरया॥ बहुरि प्रभासपुराण विषै कह्या है॥ रैवताद्रौ जिनो नेमिः। युगादिर्विमलाचले। ऋषीण
माश्रमादेव। मुक्तिमार्गस्य कारणं॥१॥ इहां नेमिनाथ कौं जिन संज्ञा कही ताकै स्थान [redacted] कौं ऋषिका
आश्रम मुक्ति कारण कह्या॥ अर युगादि के स्थान कौं भी ऐसैं ही कह्या॥ तातैं उत्तम पद [redacted] ठहरे॥ ब
हुरि नगर [redacted] पुराणविषै [redacted] भवावतार रहस्य विषै ऐसा कह्या है॥ अकारादि हकारान्त
मूर्ध्वाधोरेफसंयुतं॥ नादबिंदुकलाक्रांतं। चंद्रमंडलसन्निभं॥१॥ एतद्देवि परं तत्वं। यो विजानाति तत्व
तः॥ संसारबंधनं छित्वा। सगच्छेत्परमांगतिं॥२॥ इहां अर्हं [redacted] ऐसे पद कौं परमतत्व कह्या याके जानें प
रमगति की प्राप्ति कही सो [redacted] अर्हं पद जैनमत [redacted] उक्त है॥ बहुरि नगरपुराण विषै कह्या है
दशभिर्भोजितैर्विप्रैः। [redacted] यत्फलं जायते कृते॥ मुनेरर्हत्सुभक्तस्य। तत्फलं जायते [redacted] कलौ॥१॥ इहां
कृतयुग विषै दश ब्राह्मण कौं भोजन कराए का सा फल कलियुग विषै अरहंत भक्त मुनि कै भोजन क
राए का कह्या तातैं जैनी मुनि [redacted] उत्तम ठहरे॥ बहुरि मनुस्मृति विषै ऐसा कह्या है॥ कुलादिबीजं स
र्वेषां। प्रथमो विमलवाहनः॥ चक्षुष्मान् यशस्वी [redacted] वाभिचंद्रोथ प्रसेनजित्॥१॥ मरुदेवी च नाभिश्च।
भरते कुलसत्तमाः॥ अष्टमो मरुदेव्यां तु नाभेर्जात उरुक्रमः॥२॥ दर्शयन् वर्त्म वीराणां। सुरासुरनम
स्कृतः॥ नीतित्रितयकर्ता यो। युगादौ प्रथमो जिनः॥३॥ इहां विमलवाहनादिक मनु कहिए [redacted] सो जैन विषै कुलकर
नि [redacted] कै ए नाम कहे हैं अर इहां प्रथम जिन युग की आदि विषै मार्ग का दर्शक अर सुरासुर करि पूजित कह्या सो
ऐसैं ही [redacted] है तो जैनमत युग की आदि ही तैं [redacted] अर प्रमाणभूत कैसैं न कहिए॥ बहुरि
[redacted] ऋग्वेद विषै [redacted] ऐसा कह्या है॥ ॐ त्रैलोक्य प्रतिष्ठितान् चतुर्विंशति तीर्थंकरान् ऋषभाद्यान् वर्द्धमानान्तान्
सिद्धान् शरणं प्रपद्ये॥ ॐ पवित्रं नग्नमुपस्पृशामहे येषां नग्नं येषां जातं येषां वीरं सुवीरं इत्यादि बहुरि यजुर्वे

द विषै ऐसा कह्या है। ॐ नमो अर्हतो ऋषभाय॥ बहुरि ऐसा कह्या है॥ ॐ ऋषभं पवित्रं पुरुहूतमध्वरं यज्ञेषु नग्नं

परमं माहसंस्तुतं वारं शत्रुंजयंतं पशुरिंद्रमाहुतिरिति स्वाहा॥ ॐ त्रातारमिंद्रं ऋषभं वदंति। अमृतारमिं

द्रं हवे सुगतं सुपार्श्वमिंद्रं हवे शक्रमजितं तद्वर्द्धमान पुरुहूतमिंद्रमाहुरिति स्वाहा॥ ॐ नग्नं सुधीरं दिग्वास

सं ब्रह्मगर्भं सनातनं उपैमि वीरं पुरुषमर्हंतमादित्यवर्णं तमसः पुरस्तात् स्वाहा। ॐ स्वस्ति नः इंद्रो वृद्धश्रवाः

स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु दीर्घायुर्बलायुर्वा शुभजातायु

ॐ रक्ष रक्ष अरिष्टनेमि स्वाहा। वामदेव शांत्यर्थमनुविधीयते सोऽस्माकं अरिष्टनेमि स्वाहा॥ सो इहां जैनतीर्थंकरनिकैं नाममूर्तिका पूजनादिक स्या बहुरि यहु जान्या जो इनिकै पीछैं वेद रचना भई है॥

ऐसैं अन्यमत के ग्रंथनिकी साखितैं जो जिनमतकी उत्तमता अर प्राचीनता दृढ भई। अर जिनमतकों देखें वे मत कल्पित ही जानें। तातैं अपनां हितका इच्छक होइ सो पक्षपात छोरि सांचा जैनधर्मकों अंगीकार करौ॥ बहुरि अन्यमतनिविषै पूर्वापरविरोध भासै है॥ पहलै अवतार वेदका उद्धार कीया तहां यज्ञादिकविषैं हिंसादिक पोषे॥ अर बुद्धावतार यज्ञका निंदक होइ हिंसादिक निषेधे॥ वृषभावतार वीतराग संयमका मार्ग दिखाया। कृष्णावतार परस्त्री रमणादि विषय कषायनिका मार्ग दिखाया॥ सो अब यहु संसारी कौनका कह्या करै कौनकै अनुसारि प्रवर्त्तै अर इनि सर्वनिकों एक अवतार कहै सो एक ही कदाचित् कैसैं कदाचित् कैसैं कहै वा प्रवर्त्तै तौ याकै उनके कहनेकी वा प्रवर्त्तनेकी प्रतीति कैसैं आवै॥ बहुरि कहीं क्रोधादिक कषायनि का वा विषयनिका निषेध करै कहीं लरनेका विषयादि सेवनेका उपदेश दे तहां प्रालब्धि बतावै सो बिना क्रोधादि भए आपही तैं लरनां आदि कार्य होइ तौ यहु भी मानिए सो तौ होइ नाहीं। ८९

अवतार

वहुरि लरनौं आदि कार्य करतें क्रोधादि न एवमोनिए तौ जुद्धादिकों कहा है जिनिका निषेध कीया
तातैं वनैं नाही पूर्वापरविरोध है।। गीतानिविषै वीतरागता दिषाइ लरनें का उपदेश दीया सो यहु
प्रत्यक्ष विरोध भासै [illegible] बहुरि ऋषीश्वरनिकरि श्राप दीया वताया सो ऐसा क्रोध कीएँ
[illegible] निंद्यपनौ कैसैं न भया।। इत्यादि जाननां।। बहुरि अपुत्रस्य गतिर्नास्ति ऐसा भी कहै अर
भारतविषै ऐसा भी कह्या।। अनेकानि सहस्राणि। कुमारब्रह्मचारिणां। दिवंगतानि राजेंद्र। अकृत्वा कुलसं
ततिं।।१।। इहां कुमारब्रह्मचारीनिकौं स्वर्ग गए बताए।। सो [illegible] यहु परस्परविरोध है।। बहुरि भारतवि
षै तौ ऐसा कह्या।। मद्यमांसाशनं रात्रौ। भोजनं कंदभक्षणं। ये कुर्वंति वृथा तेषां। तीर्थयात्रा जपस्तपः।।
वृथा एकादशी प्रोक्ता। वृथा जागरणं हरेः।। वृथा च पौष्करी यात्रा। कृत्स्नं चांद्रायणं वृथा।।२।। चतुर्मासे तु सं
प्रा प्ते रात्रिभोज्यं करोति यः।। तस्य शुद्धिर्न विद्येत। चांद्रायणशतैरपि।।३।। इनि विषै मद्यमांसादिक
का वा रात्रिभोजन का वा चौमासे विषै विशेषपनैं रात्रिभोजन का [illegible] वा कंदभक्षण का निषेध कीया।। बहु
रि बडे पुरुषनिकै मद्यमांसादिक का सेवन करना कहै व्रतादिविषै रात्रिभोजन स्थापै वा कंदादि भ
क्षण स्थापै ऐसैं विरुद्ध [illegible] निरूपै है।। [illegible] ऐसैं ही अनेक [illegible] पूर्वापरविरुद्ध वचन अन्यमत के शास्त्रनि
विषै है सो करै कहा कहीं तौ [illegible] इ द्वापरैवरा जो नि ~~निंद्यका निषेध उनमें की प्रशंसा करी~~।। अर
कहीं [illegible] विषयकषाय पोषनें के अर्थि अन्यथा कह्या।। [illegible]
[illegible] सो जहाँ पूर्वापरविरोध है तिनका वचन प्रमाण कैसैं करिए।। [illegible]
इहां जो अन्यमतनिविषै क्षमाशीलसंतोषादिककौं पोषते वचन है सो तौ जैनमतविषै पाईए है अर
विपरीत वचन है सो [illegible] उनका कल्पित है [illegible] जिनमत

फलं

विश्वास अनावनें कै अर्थि यथार्थ कि ला

अनुसारीवचननिकाविश्वासतैंउनका विपरीतवचनका श्रद्धानादिक होइजाइ तातैं
अन्यमतका कोऊ अंग नीका देखि तौहू श्रद्धानादिक न करनी ।। जैसैं विषमिलित भोजन हितकारी नाँ
ही तैसैं जाननी ।। बहुरि जो कोऊ उत्तमधर्मका अंग जिनमत विषै न पाईए अर अन्यमत विषै पाईए अथवा कोई
निषिद्ध अधर्मका अंग जैनमत विषै पाईए अन्यत्र न पाईए तो अन्यमतकों आदरौ सो सर्वथा ऐसे हो
इ नाँही सर्वज्ञका ज्ञानतैं किछू छिप्या नाँही है तातैं अन्यमतनिका श्रद्धानादि छोरि जिनमतका दृढ
श्रद्धानादिक करनी ।। बहुरि कालदोषतैं कषायी जीवनि करि जिनमत विषै भी कल्पित रचना क
रीहै सो दिखाईए है ।। स्वेतांबरमतवाले काहूनैं सूत्र बनाए तिनकों गणधरके कीए कहै हैं सो उनकों
पूछिए है गणधरनैं आचारांगादिक तुम्हारै अबार पाईए है सो इतने प्रमाण लीए ही
कीए थे कि बहुतप्रमाण लीए कीए थे ।। जो इतने प्रमाण ही लीए कीए थे तौ तुम्हारे शास्त्रनि विषै आ
चारांगादिकनिके पदनिका प्रमाण अठारह हजार आदिक कह्या है सो तिनकी विधि मिलाय द्यो ।। पद
का प्रमाण कहा जो विभक्तिका अंतकों पद कहौगे तो कहे प्रमाणतैं बहुत पद होइ जाँहिगे जो
प्रमाणपद कहौगे तो तिस एक पदके साधिक इक्यावन कोडि श्लोक हैं सो ए तो बहुत छोटे शास्त्र हैं
सो बनै नाँही ।। बहुरि कहौगे आचारांगादि बडे थे कालदोषजीवनिकी मति हीन भई जानि तिनतैं केतइक सूत्र
काढि ए शास्त्र बनाए हैं ।। तौ प्रथम तौ टूटकग्रंथ प्रमाण नाँही ।। बहुरि यहु प्रबंध है सो बडाग्रंथ बनावै
तौ वा विषै सर्व वर्णन विस्तार लीए करै अर छोटा ग्रंथ बनावै तो तहाँ संक्षेप वर्णन करै परंतु सं ९०
बंध टूटै नाँही ।। अर कोई बडाग्रंथमैं थोरासा कथन काढि लीजिए तौ तहाँ संबंध मिलै नाँही कथनका अनु
क्रम टूटि जाय सो तुम्हारे सूत्रनि विषै तौ कथादिककौं भी संबंध मिलता भासै है ।। टूटकपना भासै नाँही ।।
बहुरि आचारांगादिकतैं दशवैकालिकादिकका प्रमाण अधिक है तुम्हारे वधता है सो कैसैं बनै

बहुरि अन्यकविनितैं गणधरकी तौ बुद्धि अधिक होती। ताके कीए ग्रंथनिमैं थोरे शब्दमैं बहुत अर्थ चा
हिए सो तौ अन्य कविनिकीसी भी जघन्यता नाहीं [redacted]।। बहुरि [redacted] जो [redacted] ग्रंथ बनावै सो अपनी ना
म ऐसैं धरै नाहीं जो अमुका कहै है।। मैं कहौं हौं ऐसा कहै है। सूत्रनिविषै है गोतम वा श्रेणिक कहै
है ऐसे वचन है सो ऐसे वचन तौ उनहींके वचन वैत्त वा और कोई कर्त्ता होय।। तातैं ए सूत्र गणधरकृत नाहीं
और केकीए है।। गणधरका नाम करि [redacted] कल्पितरचनाकौं प्रमाण कराया चाहै है सो [redacted]
[redacted] विवेकी तौ परीक्षाकरि मानै [redacted]।। कहा ही तौ न मानै।। बहुरि वै ऐसा भी कहै है जो गणधरसूत्रनि
कै अनुसारि कोई दशपूर्वधारी भया है तानैं ए सूत्र बनाए है तहां [redacted] पूछिए है।। जो नए ग्रंथ बनाए छै तौ न
वा नाम धरनी था। अंगादिकके नाम काहेकौं धरे।। [redacted] जैसैं कोऊ बडा साहूकारकी [redacted]
कोठीका नाम करि अपनी साहूकारा प्रगट करै तैसैं यहु कार्य भया।। सांचेकौं तौ जैसैं दिगंबरविषै
ग्रंथनिके और नाम धरे अर अनुसार पूर्वग्रंथनिका कह्या तैसैं कहनी योग्य था।। [redacted] अंगादिकका
नाम धरि गणधरकृतका भ्रम काहेकौं उपजाया।। [redacted]
~~जिनमतअनुसारि है सो तौ दिगंबरविषै भी है।। तामैं तौ किछू विवाद नाहीं।। बहुरि जो कथा~~
तातैं
गणधरके वा पूर्वधारीके वचन [redacted] पूर्वापरविरुद्ध होइ नाहीं ~~इनि सूत्रनिविषै पूर्वापरविरुद्ध~~
[redacted] नाहीं।। बहुरि इनि सूत्रनिविषै जो [redacted] विश्वास आवनेकै अर्थि जिनमत
अनुसारि कथन है सो तौ सांचा है ही।। दिगंबर [redacted] भी ऐसैं ही कहै है।। बहुरि जो कल्पितरचनाक
री है तामैं पूर्वापरविरुद्धपनौं वा प्रत्यक्षादिप्रमाणतैं विरुद्धपनौं भासै है।। सो दिखाईए है।। अन्यलिंग

कौवा गृहस्थकौंवा स्त्रीकौंवा वीडा लादि संयुक्तनिकौं [redacted] साक्षात् मुक्ति की प्राप्ति होनी मानै है सो वनैं नांही
सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रकी एकता [redacted] मोक्षमार्ग है सो वै सम्यग्दर्शनिका स्वरूप तौ ऐसा कहै [redacted] है ।। अ
रहंतो महद्देवो। जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।। जिणपण्णत्तं तत्तं। एस सम्मत्तं मए गहियं ।। सो अन्यलिंगीकै
अरहंत देव साधु गुरु जिनप्रणीत तत्वका [redacted] माननो कैसें संभवै तब सम्यक्त्व भी न होइ तौ
मोक्ष कैसें होइ ।। [redacted] जो कहोगे अंतरंग विषै श्रद्धान होनें तैं सम्यक्त्व [redacted] तिनिकै होइ है सो [redacted] ×सो ५
[redacted] विपरीत लिंगधारककी प्रशंसादिक कीएं भी सम्यक्त्वकों अतीचार कह्या है सो सांचा श्र
द्धान भए पीछैं आप विपरीत लिंगका धारक कैसें रहै [redacted] श्रद्धान भए पीछैं महाव्रतादि अंगीकार कि
ए सम्यक्चारित्र होइ सो अन्यलिंग विषै कैसें बनै ~~[illegible]~~ । बहुरि गृहस्थकैं मोक्ष कहै सो
हिंसादिक सर्व सावद्ययोगका त्याग कीए सामायिक चारित्र होइ सो [redacted] सर्व सावद्य योगका त्या
गकीए गृहस्थपनों कैसैं संभवै जो कहोगे [redacted] अंतरंग त्याग भया है तौ [redacted] इहां तौ तीनों
योगकरि त्याग करै है काय करि त्याग [redacted] कैसें भया ।। बहुरि बाह्य परिग्रहादिक राखें भी महाव्रत हो है
तौं ~~[illegible]~~
है ।। ~~[illegible]~~
[redacted] ~~[illegible]~~ बहुरि अंतरंग मूर्छा भी तो [redacted] बाह्य
~~त्याग करनें के परिणाम नंर~~ हिंसादिकका त्याग ~~होइ है बहुरि परिग्रह~~ [redacted] ~~[illegible]~~
[redacted] है तातैं गृहस्थकौं मोक्ष कहना मिथ्यावचन है ।। बहुरि स्त्रीकौं मोक्ष कहै सो जाकरि [redacted] सप्तम नरकगम
न योग्य पाप न होइ सकै ताकरि मोक्षका कारन [redacted] भाव कैसें होइ ।। जातैं जाकै भाव दृढ होइ सो ही उत्कृष्ट पा
द महाव्रतनि विषै तौ बाह्य त्याग करनें ही की प्रतिज्ञा करिए है।। त्याग कीए बिना महाव्रत न होइ महाव्रत बिना ४ आदि गुणस्थान
न होइ है तब मोक्ष कैसें होइ ।। ५

५ जो अन्यलिंग विषै भी सम्यक्चारित्र होइ है तौ जैनलिंग अन्यलिंग समान भया ।। तातैं अन्यलिंगकौं मोक्ष कहना मिथ्या

स्त्रीकै निःशंक [redacted] कीतविषै ध्यान धरनी सर्वपरिग्रहादिका त्याग करनी [redacted] नाहीं है

पर्वा धर्म्म उपजाइ सकै है॥ बहुरि [redacted] जो कहोगे एक समय विषै [redacted]
[redacted] पुरषवेदी वा स्त्रीवेदी वा नपुंसकवेदी कौं सिद्धि होनी सिद्धांत विषै कही है॥ तातैं स्त्रीकौं मोक्ष
मानिए है॥ सो इहाँ भाववेदी है कि द्रव्यवेदी है॥ जो भाववेदी है तो हम मानैं ही हैं द्रव्यवेदी है तो [redacted]
[redacted] पुरष स्त्रीवेदी तो लोक विषै प्रचुर दीसै हैं नपुंसक तो कोई विरला दीसै है [redacted] एक समय
विषै मोक्ष जानेंवाले इतने नपुंसक कैसें संभवै तातैं द्रव्यवेद अपेक्षा कथन बनैं नाहीं॥ बहुरि जो
कहोगे नवम गुणस्थान ताईं वेद कहे हैं सो भी भाववेद अपेक्षा ही कथन है। द्रव्यवेद अपेक्षा होइ तो
चौदहौं गुणस्थान पर्यंत वेद का सद्भाव कहनों संभवै॥ [redacted] तातैं स्त्रीकै मोक्ष कहनी मिथ्या है॥ बहु
रि सूद्रनिकौं मोक्ष कहै सो नीचगोत्र कर्म्म का उदय तौ पंचम गुणस्थान पर्यंत ही [redacted] है ऊपरि के गुणस्था
न चढें विना मोक्ष कैसें होइ॥ जो कहोगे [redacted] संयम धारें पीछें वाकौं उच्चगोत्र ही का उदय कहि
ए तो संयम धारनें न धारनें की अपेक्षा तैं उच्च नीचगोत्र का उदय ठहर्‍या ऐसें होतें असंयमी मनु
ष्य [redacted] तीर्थंकर क्षत्रियादिक तिनकै भी नीचगोत्र का उदय ठहरे जो उनकै [redacted] कुल अपेक्षा उच्चगो
त्र का उदय कहोगे तौ चौडालादिककै भी कुल अपेक्षा ही नीचगोत्र का उदय कहो ताका सद्भाव [redacted]
तुम्हारे सूत्रनि विषैं भी पंचम गुणस्थान पर्यंत ही कह्या है सो कल्पित कहनें मैं पूर्वापर विरुद्ध होइ है
हो इतातैं सूद्रनिकै मोक्ष कहनी मिथ्या है॥ ऐसें तिन्हनें सर्वकै मोक्षकी प्राप्ति कही सो [redacted]
[redacted] ताका प्रयोजन यहु है जो सर्वकौं भला मनावनों मोक्षका लालच देनों अर अपनां कल्पित म
तकी प्रवृत्ति करनी॥ परंतु विचार कीएं मिथ्या भासै है॥ बहुरि तिनकै शास्त्रनि विषै अछेरा कहै हैं
सो कहै है हुंडावसर्पिणी के निमित्त तैं भए है। इनिकौं छेडनें नाहीं॥ सो कालदोषतैं केई बात होइ

१ चौडालादि कर्कौ ग्रहस्थ सम्मानादि करि हीनादि ककैं देलो कबिठ होय बहुरि नीच कुलवालों कै उत्तम पदवि प्राप्त न होय सकै॥ बहुरि

काहू का गर्भ काहू कै धर्या प्रत्यक्ष ना सैनी ही उन्मानादिक मैं आवैनी ही बहुरि तीर्थंकर कै नया कहिए तौ

परंतु प्रमाणविरुद्ध तौ न होइ जो प्रमाणविरुद्ध नी होइ तौ आकाश का फूल गधे के सींग इत्यादि [redacted]
का होना भी बनै सो सैं नबनै नी ही ।। बहुरि [redacted] जो बे अछेरा कहै है सो प्रमाणविरुद्ध है ।। काहे तैं सो
कहिए है ।। वर्द्धमान जिन केतेक काल ब्राह्मणी के गर्भ विषै रहे पीछैं क्षत्रियाणी के गर्भ विषै [redacted] वधे
[redacted] ऐसा कहै है सो गर्भकल्याण काहू कै घरि भया जन्मकल्याण काहू कै घरि भया केतेक दिन रत्नवृष्टि आदि
काहू कै घरि भए केतेक दिनि काहू कै घरि भए [redacted] सोलह स्वप्न [redacted] किसी कौं आए पुत्र काहू कै भया इ
त्यादि [redacted] असंभव भासै बहुरि माता तौ दोय भई अर पिता तौ एक ब्राह्मण ही रह्या ।। जन्मकल्याणा
दि विषै वाका सन्मान [redacted] न कीया अन्य [redacted] कल्पित [redacted] पिता का सन्मान कीया सो तीर्थंकर कै दो
य पिता कहना महाविपरीत भासै है ।। [redacted] सर्वोत्कृष्ट पद के धारक कै ऐसा [redacted] वचन सुनने भी यो
ग्य नाही ।। बहुरि तीर्थंकर अन्य कै गर्भ भया [redacted] स्त्री कै धरि दे गौ ठहरै [redacted]
[redacted] । वे कहै [redacted] ऐसे अनेक प्रकार पुत्र पुत्री का उपजना बतावै है [redacted] ते संभवत न
कार्य [redacted] न भया ।। [redacted]
[redacted] सो ऐसे निकृष्ट काल विषै [redacted] तौ तौ होनी
कैसें संभवै ताते यहु मिथ्या है ।। बहुरि मल्लि तीर्थंकर कौं कन्या कहै है ।। सो मुनि देवादिक की सभा विषै स्त्री का [redacted]
स्थिति करना उपदेश देना न संभवै वा [redacted]
[redacted] स्त्री पर्याय हीन है सो उत्कृष्ट तीर्थंकर पद [redacted] धारक कै न बनै ।। बहुरि तीर्थंकर कै नग्न लिंग ही कहै है सो
स्त्री कै नग्नपनौ न संभवै ।। इत्यादि विचार कीए असंभव भासै है ।। बहुरि हरि क्षेत्र का भोगभूमियां कौं नरक
गया कहै है सो [redacted] भोगभूमियां [redacted] कौं देव [redacted] गति [redacted] देवायु ही का बंध कहै है नरक कैसे

बंध वर्णन विषै तौ

तीर्थंकर कै भी ऐसा कार्य भया तौ [redacted] संभवै है ५

[redacted] सैं होइ हीनो दीसै

९२

सिंगया सिद्धांत विषै तौ अनंतकाल विषै जो बात होइ सो नीकै है जैसें तीसरे नरक [redacted] तीर्थंकर का सत्त्व कह्या॥
[redacted] तो गतम्रिया के नरक आयुगति का बंधन कह्या सो केवली न ले तौ नाहीं तातें यहु मिथ्या है॥ असें ही सर्व
अछेरे असे नव जाननें॥ बहुरि वे कहै है [redacted] मुनि कौं छेदनें नाहीं से। ऐसें कहनें वाला असें ही कहै है॥ बहुरि
[redacted] जो कहोगे दिगंबर विषै जैसें तीर्थंकर के पुत्री चक्रवर्त्ति का मान भंग इत्यादि कार्य कालदोषतें भया
कहै है तैसें इनीं न एसा एक कार्य तौ प्रमाण विरुद्ध नाहीं॥ अन्य के होते थे महंतनि के न एतान्तें कालदो
ष कह्या॥ गर्भहरणादि कार्य प्रत्यक्ष अनुमानादितें विरुद्ध तिनिका होना कैसें संभवै॥ बहुरि अन्य
तीर्थनें ही कथन प्रमाण विरुद्ध करै है। जैसें कहै। सर्वार्थसिद्धि के देव मन हीतैं प्रश्न करै है केवली मन हीतें
उत्तर दे है॥ सो सामान्य जीव के मन की बात मनःपर्ययज्ञानी बिना जानि सकै नाहीं केवली का मन [redacted]
की सर्वार्थसिद्धि के देव कैसें जानैं॥ बहुरि केवली के भाव मन का तौ अभाव है द्रव्य मन जड [redacted]
आकार मात्र है॥ [redacted] उत्तर कौन दीया तातें मिथ्या है॥ असें अनेक प्रमाण विरुद्ध कथ
न कीए है तातें तिनि के आगम कल्पित ही जाननें॥ बहुरि श्वेतांबर मत वाले देव गुरु धर्म का स्वरूप
अन्यथा निरूपै है॥ तहाँ केवली कै क्षुधादिक दोष कहै है सो यहु देव का स्वरूप अन्यथा है॥ काहेतें।
क्षुधादिकतैं [redacted] आकुलता होइ तब अनंत सुख कैसें बनैं॥ बहुरि जो कहोगे शरीर कौं
क्षुधा लागै है आत्मा तद्रूप न होहै है तौ क्षुधादिक का उपाय आहारादिक का है कौं ग्रहण कीया कहो हो
क्षुधा करि पीडित होइ तब ही आहार ग्रहण करै॥ बहुरि कहोगे जैसें कर्मोदयतैं विहार होहै है तैसें ही
ू विहायोगतिप्रकृतिका उदयतैं होहै अरु× आहार ग्रहण हो है। सो विहार तौ पीडा का उपाय नाहीं [redacted] अर बिना इछा जी ू[redacted] हो ू किसी जीवकै×
ता देखिए है॥ ूआहार [redacted] ूक्षुधा करि पीडित न एरी ग्रहण करै॥ बहुरि [redacted] आत्मा पवनादिक कौं
प्रेरै तब ही निगलनौं होहै तातें विहारवत् आहार नाहीं॥ जो कहोगे साता वेदनीय के उदयतैं आहार ग्रहण हो है

'२ बहुरि॰ २ है सो प्रकृति का उदयतैं नाहीं॰ १ के उदय॰

[redacted]

सोवनैं नाही॥ जो जीव क्षुधादिक करि पीडित होइ पीछैं आहारादिक ग्रहणतैं सुख मानै ताकै आहारादिक सा

ताकै उदयतैं कहिए [redacted] आहारादिक कार्य

४ साता वेद नीयकेउद यतैं मुख्यपनैं होइ ऐसैं तौ है नाही ४ हणौं [redacted]॥ ... उपवासादिक करै हैं तिनिकै ...

... भोजनादिक करै हैं तिनिकै साताका उदय ... सिद्धांत विषैं ...

... [redacted]॥ जो ऐसैं [redacted] तौ साता

वेदनीयका मुख्य उदय देवनिकैं है ते निरंतर आहार क्यौं न करै॥ [redacted]

[redacted] बहुरि महामुनि उपवासादि करै हैं तिनिकै साताकौ उदय अर निरंतर भोजन करनें

वालौंकै असाताकौ उदय [redacted] संभवै है [redacted]

५ जैसैं विना इच्छा विहा योगादिकेउ दयतैं विहार संभवै है तैसैं ५ [redacted] तातैं विना इच्छा केवल सातावेदनीय [redacted] कै उदय हीतैं आहारका

ग्रहण संभवै नाही॥ ... केवलीकै परीषह कहे हैं॥ ...

[redacted]

बहुरि वह कहै है सिद्धांतविषै केवलीकै क्षुधादिक ग्यारह परीषह कहे हैं॥ तातैं तिनिकै क्षुधाका स

द्भाव संभवै है बहुरि आहारादिक विना तिसकी उपशांतता कैसैं होइ तातैं तिनिकै आहारादिक मानै है।

ताका समाधान॥ कर्मप्रकृतिनिका उदय मंद तीव्र भेद लीए हैं॥ तहां अति मंद उदय होतैं [redacted]

६ सक्त नाम मैथुनादि नातैं ६ तिस [redacted] उदयजनित कार्यकी मुख्यपनैं अभाव कहिए॥ तारतम्य विषै सद्भाव कहिए॥ जैसैं नवम गु

णस्थानविषै वेदका उदय [redacted] मैं रहै तहां [redacted] मैथुना[redacted]दिक्रिया व्यक्त नाही तातैं तहां ब्रह्मचर्य

ही कह्या॥ तारतम्य विषै मैथुना[redacted]दिकका सद्भाव कहिए है॥ तैसैं केवलीकै असाताका उदय अति मंद है ९३

१ का सद्भाव

१एकएककी [redacted] विषैअनंतवैं भागिअनुभागरहे ऐसेवहुत५

जातैं अनुभागकी उदीरणा [redacted] निकरि वा गुणसंक्रमादिककरि [redacted] सत्ताविषै असातावेद
नीयका अनुभाग अत्यंत मंद भया ताका उदय विषै क्षुधा ऐसी व्यक्त होती नाहीं जो शरीर [redacted] कौं
[redacted] क्षीण करै अर मोहके अभावतैं क्षुधाजनित दुःख [redacted] भी नाहीं तातैं क्षुधादिककौं अभाव कहिए है
तारतम्य विषै तिनिका सद्भाव कहिए है॥ बहुरि तैं कह्या आहारादिक विना तिनिकी उपशांतता कैसें हो
इसो [redacted] आहारादिककरि उपशांत होनें योग्य क्षुधा लागै [redacted] तौ मंद उदय काहेका रह्या। भोग
भूमियां आदिककै [redacted] उदय होतैं ही बहुत काल पीछैं [redacted] किंचित् आहार ग्रहण हो है तौ इनि
कै तौ अति मंद उदय भया है॥ [redacted] तातैं इनिकै आहार का अ
भाव संभवै है॥ बहुरि वह कहै है देव भोगभूमियां का तौ शरीर ही वैसा है [redacted] जाकौं बहु थोर
बाधनेकाल [redacted] पीछैं लागै॥ इनिका तौ शरीर कर्मभूमिका औदारिक है [redacted]
[redacted] ॥ तातैं इनिका शरीर आहार बिना देसोन कोटि पूर्व
पर्यंत उत्कृष्टपनैं कैसें रहै॥ ताका समाधान॥ देवादिकका भी शरीर वैसा [redacted] सो कर्म
ही के निमित्ततैं है [redacted] केवलज्ञान [redacted] भए ऐसा ही कर्मका उदय भया जाकरि शरीर ऐसा भ
या जाकी भूख प्रगट होती ही नाहीं॥ जैसें [redacted] केवलज्ञान भए पहलैं केश नख बधै थे अब बधै नाहीं
छाया होती [redacted] थी सो होइ नाहीं॥ शरीर विषै निगोद थी ताका अभाव भया [redacted]
बहुत प्रकार करि जैसें शरीर की अवस्था अन्यथा भई॥ तैसैं आहार विना ही शरीर [redacted]
जैसा का तैसा रहै ऐसी भी अवस्था भई। [redacted] औरनिकौं जरा व्यापै तब शरीर शिथिल होइ जाइ
इनिका आयु का अंत पर्यंत शरीर शिथिल न होइ तातैं अन्य मनुष्यनिकै अर इनिका शरीरकी समान

नूकहैमार् २मैदहोनैं

तासैं न बनै नाहीं।। बहुरि [redacted] जो दुग्धादिककै आहार ही ऐसा है जाकरि बहुत कालकी क्षुधा मिटै है
निकैं क्षुधा काहेतैं मिटी।। [redacted] असाता तौ ताका [redacted] उदयतैं मिटी अर समय समय परमऔदारिक शरी
रवर्गणाका [redacted] ग्रहण हो है सो वह नोकर्म आहार है सो ऐसी वर्गणा [redacted] का ग्रहण हो है
जाकरि क्षुधादिक व्यापै नाहीं वा शरीर शिथिल होइ नाहीं।। सिद्धांतविषै याहीकी [redacted] अपेक्षाकै
केवलीकौं आहारक कह्या है।। अर अन्नादिकका आहार तौ [redacted] शरीर [redacted] की पुष्टता का मुख्य
कारण नाहीं।। प्रत्यक्ष देखो कोई थोरा आहार ग्रहै शरीर पुष्ट बहुत होइ।। कोई बहुत आहार ग्रहै
शरीर क्षीण रहै।। बहुरि पवनादि साधनेवाले बहुत कालताई आहार न लें शरीर पुष्ट रहै वा
ऋद्धिधारी मुनि उपवासादिक करै शरीर पुष्ट बन्या रहै।। सो केवलीकै तौ सर्वोत्कृष्टपना है उनकै [redacted] अन्नादि
[redacted] शरीर पुष्ट बन्या रहै तौ [redacted] कहा आश्चर्य भया।।
बहुरि केवली कैसैं आहारकौं जाइ कैसैं [redacted] जाचैं [redacted] बहुरि वै आहारकौं जाय तब समवसरण [redacted]
पाली कैसैं रहै।। अथवा अन्य का ल्याइ देनौं ठहरावोगे तौ कौन ल्याइ दे उनके मनकी कौन जानै
पूर्वै उपवासादिककी प्रतिज्ञा करी थी [redacted] ताका कैसैं निर्वाह होइ जीव अंतराय सर्व प्रति भासै
कैसैं आहार ग्रहै इत्यादि विरुद्धता भासै है।। बहुरि वै कहै हैं आहार ग्रहै है परंतु काहूकौं दीसै नाहीं
सो [redacted] आहार ग्रहणकौं निंद्य जान्या तब ताका न देखनां अतिशय विषै लिख्या सो उनकै निंद्यपनां रह्या
अर और न देखै है तौ कहा भया।। ऐसैं अनेक प्रकार विरुद्ध ताउपजै है।। बहुरि अन्य अविवेकता की वा
तैं सुनौं।। केवलीकै नीहार कहै है रोगादिक भया कहै हैं अर कहै हैं [redacted] काहूनें तेजोलेश्या छोरी ताकरि वर्द्धमान
स्वामीकै पेढूका रोग भया ताकरि बहुत बार नीहार होने लागा सो तीर्थंकर केवलीकौं भी ऐसा कै
र्मका उदय रह्या अर अतिशय न भया तौ इंद्रादिककरि पूज्यपनां कैसैं सोभै।। बहुरि [redacted] नीहा

शरीर पुष्ट कैसैं रहै तौ मुनिः

अन्नादि कविना

९४

(जैसें)

रकैसें करै कहौ करै कोऊ सैं नवती बातें नांही ॥ बहुरि रागादियुक्त [redacted] छद्मस्थ कै क्रिया होइ तैसें केव
लीकैं क्रिया ठहरावै है ॥ वर्द्धमान स्वामी का उपदेश विषै हे गौतम ऐसा बारंबार कहनां ठहरावै सो उनकै
तौ अपनें काल विषै सहज दिव्यध्वनि हो है तहां सर्व कौं उपदेश हो है ॥ गौतम कौं संबोधन कैसैं बनै ॥ बहु
रि केवली कै नमस्कारादि क्रिया ठहरावै सो [redacted] अनुराग बिना वंदना संभवै नांही ॥ बहुरि गु
णाधिक कौं वंदना संभवै उनसेती गुणाधिक कोई रह्या नांही ॥ सो कैसैं बनै ॥ बहुरि हाटि विषै समोस
रण उतस्या कहै है सो इंद्र [redacted] कृत समवसरण हाटि विषै [redacted] कैसें रहै ॥ इतनी रचना तहां कैसें
समावै ॥ बहुरि हाटि विषै काहे कौं रहै ॥ कहा इंद्र हाटि सारिखी रचना करनें कौं भी समर्थ नांही ॥ जातैं हा
टिका आश्रय लीजिए ॥ बहुरि कहै है केवली उपदेश दैनें कौं गए सो धरि जाय उपदेश दैनां [redacted] अ
ति रागतैं होइ सो मुनि कैं भी संभवै नांही केवली कै कैसें बनै ॥ ऐसें ही अनेक विपरीतता तहां प्ररूपै है
केवली प्रभु कैं केवलज्ञान [illegible] मय रागादि रहित भए हैं तिनकैं अघातिनिके उदयतैं संभवती क्रि
याकोई हो है। ^ उपयोग मिलें जो क्रिया होइ सकै [redacted]
क्रिया [redacted] सैं बनै नांही ॥ [redacted] मो [redacted] पापप्रकृति का अनु
भाग अतीव मंद भया है ऐसा मंद अनुभाग अन्य कोई कै नांही तातैं अन्य जीवनिकै पाप उदयतैं जो
क्रिया होती देखिए है सो केवली कै न होइ ॥ ऐसें केवली भगवान कै सामान्य मनुष्य की सी क्रिया का
[redacted] सद्भाव कहि देव का स्वरूप कौं अन्यथा प्ररूपै है ॥ बहुरि गुरु का स्वरूप कौं अन्यथा प्ररूपै है ॥ मु
नि कैं ^ चौदह उपकरण कहै है ॥ सो हम पूछै हैं ॥ मुनि कौं निर्ग्रंथ कहै अर मुनिपद लेतैं नवप्रकार [redacted]
सर्व परिग्रह का त्याग करि महाव्रत अंगीकार करै सो ए वस्त्रादिक परिग्रह है कि नांही ॥ जो है तौ त्याग
कीए पीछैं काहे कौं राखै अर नांही है तौ [redacted] वस्त्रादिक गृहस्थ राखै ताकौं

(left margin, beside line 11: ^ केवली कै मोहादिक का अभाव भया है तातैं ^)

(left margin, beside line 16: ^ वस्त्रादिक ^)

(right margin, beside line 11: [illegible])

मुनिपद अंगीकार करतें

परिग्रह समान कहे सुवर्णादिक ही कौं परिग्रह कहै॥ बहुरि जो कहोगे जैसें क्षुधा के अर्थि आहार ग्रहण
कीजिए है तैसें शीत उष्णादिक के अर्थि वस्त्रादिक ग्रहण कीजिए है॥ सो मुनि आहार का त्याग कीया नाहीं
परिग्रह का त्याग कीया है॥ बहुरि अन्नादिक का तौ संग्रह करना परिग्रह है॥ भोजन करने जाइए सो
परिग्रह [redacted] नाहीं॥ अर वस्त्रादिक का संग्रह करना वा पहरना सर्व ही परिग्रह है सो लोकविषै प्रसि
द्ध है॥ बहुरि कहोगे शरीर की स्थिति कै अर्थि वस्त्रादिक राषिए [redacted] ममत्व [redacted] नाहीं है॥ तातैं
इनिकौं परिग्रह न कहिए है॥ सो श्रद्धानविषै तौ जब सम्यग्दृष्टी भया तब ही समस्त परद्रव्यविषै ममत्व
का अभाव भया। अर प्रवृत्तिविषै ममत्व नाहीं तौ कैसें ग्रहण करै है तातैं वस्त्रादिक ग्रहण [redacted] धारण
का अभाव भया तब ही निःपरिग्रह होगा॥ बहुरि कहोगे वस्त्रादिक कौं कोई लेइ जाइ तौ क्रोध न करे वा [redacted]
छूटै ना तब ही निःपरिग्रह होगा॥ बहुरि कहोगे वस्त्रादिक कौं कोई लेइ जाइ तौ क्रोध न करे वा
क्षुधादिक लागै तौ वेचै नाहीं [redacted] वा वस्त्रादिक पहरि
प्रमाद करै नाहीं [redacted] परिणामनि की थिरता करि धर्म ही साधै है॥ तातैं ममत्व नाहीं सो बाह्य
क्रोध मति करौ परंतु जाका ग्रहण विषै इष्टबुद्धि होइ तब [redacted] ताका वियोगविषै अनिष्टबुद्धि होइ ही
होइ जो अनिष्टबुद्धि न भई तौ बहुरि ताकै अर्थि याचना काहे कौं करिए है॥ बहुरि वेचते नाहीं सो
[redacted] धातु राषने तैं अपनी हीनता जानि नाहीं वेचिए है॥ जैसें [redacted] धनादिक
नैं तैसे ही वस्त्रादि राषनें लोकविषै परिग्रह के चाहक जीवनि कै दोऊनि की इच्छा है तातैं चौरादिक के
भयादिक के कारण दोऊ समान है॥ बहुरि परिणामनि [redacted] की थिरता करि धर्म साधनें हीतैं
परिग्रह पनौ न होइ तौ कोइ हकौं बहुत शीत लागैगा सो सौडि राषि परिणामनि की थिरता करै
गा तौ वाकौं भी निःपरिग्रह कहौ॥ [redacted] ~~परिणाम तौ कोई दुःख के कारणतैं जो दुःखी होवे है तिसके~~
~~निमित्त ही थिरता के अर्थि जो परिग्रह राषिए है तो तौ परिणामनि की दुःख मिटावने के अर्थि~~

अर धर्म साधैगा

हीनपिए [redacted] है ग्रर ऐसा नाम धरै तौ पद ठेकडी हक जाति है [redacted] सो कोई जीमणाव ए रिस्यर स ला धै ताकौं
नीति: परिग्रह हूँ ।। कि हू जे म कारै तो मायने ही ग्रवो न नन मुनि जा माय ढेकडी [redacted]
ग्रैसैं गृहस्थधर्म मुनिधर्म विषै विशेष कहा रहेगा ।। [redacted] जाके परीषह सहनेंकी शक्ति
न होइ सो परिग्रह राखि धर्म साधै ताका नाम गृहस्थधर्म ग्रर जाके परिणाम निर्मल भए परीषह तें
रि व्याकुल न होइ सो परिग्रह न राखै ग्रर धर्म साधै ताका नाम मुनिधर्म इतनी ही विशेष है ।। बहुरि
कहौगे [redacted] शीतादिकी परीषह करि [redacted] व्याकुलकैसें न होइ सो व्याकुलता तौ मोहकेउदयके
निमित्ततें है सो मुनिकै [redacted] गुणस्थानि तीनचौकडीका उदय नीही ग्रर संज्वलनके सर्वघाती [redacted] स्प
र्द्धकनिका उदय नीही ।। देशघाती स्पर्द्धकनिका उदय है सो किछू बल नीही ।। [redacted]
[redacted] जैसैं वेदक सम्यग्दृष्टीकै सम्यक्मोहनीका उदय [redacted] है सो सम्यक्त्वकों घात न करि सकै
तैसें देशघाती संज्वलनका उदय परिणामनिकों ग्राकुल करि सकै नीही ।। ग्रहो मुनिनिकै [redacted]
ग्रर ग्रौरनिकै परिणामनिकी समानता है नीही ।। ग्रौर [redacted] सबनिकै सर्वघात
का उदय [redacted] इनिकै देशघातीका उदय तातैं ग्रौरनिकै [redacted] जैसे परिणाम होइ तैसे उन
कै कदाचित् न होइ तातैं जिनिकै [redacted] सर्वघाती [redacted] कषायनिका उदय होइ ते गृहस्थ रहै है ग्रर जि
निकै देशघातीका उदय होइ सो मुनिधर्म ग्रंगीकार करै ताकैं शीतादिककै [redacted] रि परिणा
म व्याकुल न होइ तातैं [redacted] वस्त्रादिक राखै नीही ।। [redacted]
[redacted] ।। बहुरि कहौगे [redacted] जैनशास्त्रनिविषै चौदह उपकरण मुनि राखै ग्रैसा कह्या है
सो तुम्हारे ही शास्त्रनिविषै कह्या है [redacted] दिगंबर जैनशास्त्रनिविषै तौ कहै नीही ।। तहाँ तौ [redacted]
लंगोट मात्र परिग्रह रहे भी ग्यारही प्रतिमाका धारक कों श्रावक ही कह्या ।। सो ग्रब इहां विचारो दो

कविमें [redacted] कल्पितवचनकौं नहै।। प्रथम जो कल्पितरचना [redacted] कषायी होइ सो करै [redacted]॰क ॰बहुरि॰
॰होइ सो॰ षायी तौ वीं पदविषैं स्त्र [redacted] पदपनौं प्रगट करै [redacted]
[redacted]। सो इही [redacted] दिगंबर विषैं वस्त्रादि राखें धर्म [redacted] होइ ही नाहीं ऐसा
तौ न कह्या परंतु श्रावक धर्म [redacted] कह्या।। स्वेतांबर विषैं [redacted] मुनिधर्म कह्या।। सो [redacted] इ हो जा
नैं नीची क्रिया होतैं उच्च पद प्रगट कीया सो ही कषायी है।। [redacted] इस कल्पित कहनें करि आप कौं वस्त्रा
दि राखतैं भी लोक मुनि माननें लागे तातैं मान कषाय पोष्या गया।। अर औरनिकौं सुगम क्रिया विषै
उच्च पद का होना दिखाया [redacted] तातैं घनें लोक लगि गए।। जे कल्पित मत भए हैं ते ऐसे
ही भए है। [redacted] तातैं कषायी होइ वस्त्रादि होतैं मुनिपनौ
कह्या है [redacted] सो पूर्वोक्त [redacted] युक्ति करि विरुद्ध भासै है तातैं ए कल्पित वचन हैं ऐसे
जानना।। बहुरि कहोगे दिगंबर विषै भी [redacted] शास्त्र पीछी आदि उपकरण [redacted] मुनिकै कहे हैं।। [redacted]
[redacted] तैसे हमारे चौदह उपकरण कहे है।। ताका समाधान।। जाकरि उपकार होइ ताका नाम
उपकरण है सो इहां [redacted] उपकरण ठहराइए तौ [redacted]
॰जो ताहि कदाचित वस्त्र हूरि करणें तैं॰ [redacted] सर्व परिग्रह सामग्री उपकरण नाम पावै [redacted]
[redacted] सो धर्म [redacted] विषैं इनिका कहा प्रयोजन।। ए तौ पाप के कारण है।। धर्म विषै तौ धर्म
के उपकारी जे होइ तिनिका नाम उपकरण है।। सो शास्त्र ज्ञान कौं कारण पीछी दया कौं कारण कम
डलु शौच कौं कारण सो ए तौ धर्म के उपकारी भए [redacted] वस्त्रादिक कैसें धर्म के उपकारी होइ वै तौ श ९६
रीर का सुख ही कै अर्थि धारिए है।। बहुरि [redacted] जो शास्त्र [redacted] राखि महंतता दिखावै पीछी करि [redacted]
बुहारी देइ कमंडलु करि जलादिक पीवै वा मैल उतारै तौ शास्त्रादिक भी परिग्रह ही है।। [redacted]

२सुनौं॰ ॰सो मुनि ऐसे कार्य कि रैसी है॰

तातैं [redacted] धर्म के साधन कों [redacted] परिग्रह संज्ञा नाहीं। भोग के साधन कों [redacted] परिग्रह
संज्ञा होहै॥ ऐसा जानना॥ बहुरि कहोगे कमंडलु तैं तौ शरीर ही का मल दूरि करिए सो मुनि मैल दूरि कर
नेंकी इच्छा करि कमंडलु [redacted] नाहीं राखै है॥ शास्त्र [redacted] बांचनां आदि कार्य करै अर मललिप्त
होइ तौ तिनि का अविनय होइ लोकनिंद्य होइ तातैं इस धर्म के अर्थि कमंडलु राखिए है॥ ऐसैं [redacted]
पीछी आदि उपकरण संभवै॥ वस्त्रादिक कों उपकरण संज्ञा संभवै नाहीं॥ [redacted] काम अरति
आदि मोह का उदय तैं विकार बाह्य प्रगट होइ अर शीतादिक सह्या न जाय॥ [redacted]
[redacted] तातैं विकार ढांकनें कों वा शीतादि मिटावनें कों वस्त्रादिक राखै अर [redacted] के उदय रमान४
यतैं अपनी महंतता चाहै है तातैं कल्पित युक्ति करि उपकरण ठहराए है॥ बहुरि घरि घरि याच
ना करि आहार ल्यावनां ठहरावै है सो प्रथम तौ यह पूछिए है याचना धर्म का अंग है कि पाप का अंग है।
जो धर्म का अंग है तौ मांगनें वाले सर्व धर्मात्मा होय॥ अर पाप का अंग है तौ मुनि कै कैसैं संभवै॥ बहुरि
जो तूं कहैगा लोभ करि किछू [redacted] धनादिक याचै तौ पाप होय॥ यह तौ धर्म साधन के अर्थि शरीर की स्थिर
ता कीया चाहै है तातैं [redacted] आहारादिक याचै है॥ ताका समाधान॥ आहारादिक करि धर्म होता नाहीं
शरीर का सुख हो है सो शरीर का सुख कै अर्थि अति लोभ भए याचना करिए है जो अति लोभ न होता तौ आप
तौ काहे कों मांगता वे ही देते तौ देते न देते तौ न देते॥ बहुरि अति लोभ भए इहां ही पाप भया और धर्म का हास भया॥ तब मुनिधर्म नष्ट भया
[redacted]॥ अर तू कहै है मन विषै तौ आहार की इच्छा होय अर याचै नाहीं तौ मायाकषाय भया अ
र याचनें मैं हीनता आवै है सो गर्व करि याचै नाहीं तब मान कषाय भया॥ आहार लेना था [redacted] सो मांगि ली
या या मैं अति लोभ कहा भया॥ अर यातैं मुनिधर्म कैसैं नष्ट भया सो कहो॥ याकों कहिए है॥ [redacted]

१०ार६६

जो ग्रिया वैको ग्रैसी स्योधारे तो माया नाही है [redacted] तो मुनि है ... नाही हे

कार्यनिकै अर्थि छिपाव करनौ सो माया कषाय है ॥ बहुरि मंदकषायतैं काहू के [redacted]
[redacted] मनविषै कोई विकल्प उपजै अर वचन करि न कहै तो ताके [redacted] मायाकषाय नाही ॥ [redacted] काम विकार ... न ॥ ...स्यादि [redacted] ॥ जैसैं व्यापारी हाटि ऊपरि बैठा है मनविषै इच्छा [redacted] वस्तु [redacted] वेचनें लेनें का है परन्तु कोई स्वयमेव आवै तासौं व्यापार करै तो ताकै माया [redacted] नाही ॥ [redacted] वचनें लेनें वालों कों जाचै [redacted]
[redacted] ॥ तैसैं मुनि आहार कै अर्थि आवै मनविषै आहार की इच्छा है परन्तु स्वयमेव कोई देतो ले तो ताके माया नाही ॥ लोभकी मंदता है ॥ जो [redacted] याकै तीव्र इच्छा होइ तो आहार दैनें वालों को जाचै अर [redacted] ॥ बहुरि [redacted] मानकषाय तो तहाँ होइ है जहाँ अपनी बडाई कै अर्थि कोई कार्य करै ॥ जहाँ मंदकषायतैं नीच [redacted] वृत्ति को अंगीकार न करै तो तहाँ मानकषाय नाही ॥
जैसैं ... पुरुष [redacted] निकों नमै [redacted] है ... के अर्थि अपना मान कराव ... कोई कषाय
[redacted] कोई राजा तिको [redacted] का कार्य करनै के अर्थि कोई कषाय ... नाही कषाय
नीचवृत्ता नाही है ॥ बहुरि [redacted] कि लोभ की मंदता है तातैं [redacted] राजादिक कों नमन ... अपनी
अपमान करावै नाही [redacted] तातै मानकषाय नाही ॥ तैसैं ही आहारकालो भी लेना गनै कै ... अपनी
अपमान करावै [redacted] कषाय निकी तीव्रता है ॥ अर [redacted] आहारकालो न [redacted] तातैं जाचते नाही
जैसैं व्यापारी हाटि ऊपरि बैठा है [redacted] कुभावनें की अति आकुलता नाही है तातैं को [redacted] कों नाचै नाही है
जो [redacted] हमसौं व्यापार करो ॥ स्वयमेव [redacted] कोई आवै अर अपनी विधि मिलै व्यापार करै है ताकै [redacted]
[redacted] मान नाही लोभ की मंदता है ॥ जो याकै तीव्र लोभ होइ तो व्यापार करनें की प्रार्थना करै ॥ बहुरि जो ...

२ वस्तु [redacted] लेना छो

~~परीग्रह तिनकै अर्थि ऐसा स्वांग धरै तौ मान [redacted] होइ सो मुनिनिकै ऐसा प्रयोजन है नाहीं तातैं मा [redacted] नाहीं~~
~~[redacted]।। जैसैं कोऊ व्यापारी [redacted] व्यापार के अर्थि हाटि उपरि बैठै है।। अर मन विषै~~
~~व्यापार करनेंकी इछा नाहीं है परंतु कोऊ कौं ऐसें [redacted] नाहीं करै है जो [redacted]~~।। जो
~~आन नाहीं तौ कोऊ आवै तौ [redacted]~~।। जैसैं काहू व्यापारी कै [redacted] कुमावनेंकी इछा मंद है सो हाटि उपरि
तौ बैठै अर मन विषै व्यापार करनेंकी इछा नाही है परंतु काहू कौं वस्तु लेनें देनें रूप व्यापार के अर्थि प्रार्थना
१ अपनी विधि मिलें नाहीं करै है स्वयमेव कोई आवै तौ [redacted] व्यापार करै है तौ ताकै लोभ की मंदता है [redacted] माया [redacted]
[redacted] नाहीं।। माया मान कषाय तौ तब होइ जब [redacted]
१ छल करनें कै अर्थि वा [redacted] आपनी महंतता के अर्थि ऐसा स्वांग करै।। सो [redacted] न ले व्यापारी कै ऐसा प्रयो
जन नाहीं तातैं वाकै माया मान न कहिए।। [redacted] तैसें मुनिनिकै आहारादिक की इछा मंद है।। सो आहार
लेनें कौं आवै अर मन विषै आहार लेनें की इछा नाहीं है।। परंतु आहार के अर्थि प्रार्थना नाहीं करै है स्वय
मेव कोई दे तौ अपनी विधि मिलें आहार ले हैं तौ उनकै लोभ की मंदता है माया वा मान नाहीं है माया
मान तौ तब होइ जब [redacted] छल करनें के अर्थि वा महंतता के अर्थि ऐसा स्वांग करै सो मुनिनिकै ऐ
से प्रयोजन है नाहीं तातैं इनिकै माया मान नाहीं है।। जो ऐसैं ही माया मान होइ तौ [redacted] जो मन ही करि पा
१ सबनि प करै वचन काय करि न करै [redacted] तिनिकै माया ठहरै अर जे उच्च पदवी के धारक [redacted] नीचवृत्ति न अंगीका
र करै हैं तिनि सबनिकै मान ठहरै ऐसैं अनर्थ होइ।। बहुरि तैं कह्या आहार मांगनेंमैं अतिलोभ भ १ अंगीकार
या सो अति कषाय होइ तब लोकनिंद्य [redacted] कार्य कीया चाहै सो [redacted] करि कैं भी म
[redacted] मांगनां लोकनिंद्य है ताकौं भी अंगीकार करि आहार की इछा पूर्ण करनें की चाहि भई तातैं इहां अ नोरथ पूर्ण
तिलोभ भया।। बहुरि तैं कह्या मुनिधर्म कैसें नष्ट भया सो मुनिधर्म विषै ऐसी तीव्र कषाय संभवै नाहीं।।

बहुरि काहू का आहार दैनें के परिणाम न था यानैं वाका घर मैं जाय याचना करी तहां वाकै सकुचना भया
वा न दीये लोक निंद्य होनें का भय भया तातैं वाकौं आहार दीया सो वाका प्राण पीडनें तैं हिंसा
का सद्भाव [redacted] आया ॥ जो आप [redacted] वाका घर मैं न जाते [redacted] उस ही कै दैनें का उपाय होता तौ
देते वाकै हर्ष होता यहु तौ दबाय करि [redacted] कार्य करावनी भया ॥ बहुरि याचना रूप वचन
है सो पाप रूप है ॥ सो इहां असत्य वचन भी भया ॥ बहुरि वाकै दैनें की इच्छा न थी यानें [redacted] जा
चा तब वानैं अपनी इच्छा तैं दीया नाहीं तातैं अदत्तग्रहण भी भया ॥ बहुरि [redacted] गृहस्थ के घर मैं
स्त्री जैसैं तैसैं तिष्ठै थी यहु चल्या गया तहां ब्रह्मचर्य की बाडि का भंग भया ॥ बहुरि आहार ल्याइ केतेक
काल राख्या [redacted] आहारादिक राखनें कौं पात्रादिक राखे सो परिग्रह भया। ऐसैं पंच महाव्रतनि का
भंग होनें तैं मुनिधर्म नष्ट हो है तातैं याचना करि आहार लेनां मुनि कौं युक्त नाहीं ॥ बहुरि वह कहै है मु
निकै बाईस परीषहनि विषै याचना परीषह कही है सो मांगें बिना तिस परीषह का सहनां कैसैं होइ ॥ ताका
समाधान ॥ याचना करनें का नाम याचना परीषह नाहीं है ॥ याचना न करनी ताका नाम याचना परी
षह है ॥ जातैं अरति करनें का नाम अरति परीषह नाहीं ॥ अरति न करनें का नाम अरति परीषह है तै
सैं जाननी ॥ जो याचना करनी परीषह ठहरै तौ रंकादिक घनी याचना करै है तिनकै घनी धर्म होइ ॥ अर
कहौगे मान घटावनें तैं याकौं परीषह कहै हैं तौ कोई कषाय कार्य कै अर्थि कोई कषाय [redacted] छोरैं भी ९०
पाप ही होइ ॥ जैसैं कोई लोभ कै अर्थि अपना अपमान [redacted] कौं भी न गिनै तौ वाकै लोभ की तीव्रता है उ
स अपमान करावनें तैं भी महापाप हो है ॥ अर आपकै इच्छा किछू नाहीं कोई स्वयमेव अपमान करै है तौ वा
कै महाधर्म है सो इहां तौ भोजन का लोभ कै अर्थि याचना करि अपमान कराया तातैं पाप ही है धर्म नाहीं ॥

बहुरि वस्त्रादि [redacted] कके नीं अर्थियाचना करै है सो वस्त्रादिक कोई धर्म्म का अंग [redacted] नाहीं शरीर [redacted] सुख का
कारण है तातैं पूर्वोक्त प्रकार ताका निषेध जाननां ॥ देखो अपनां धर्म्मरूप उच्च पद कौं याचना करि नी
चा करै है सो यामैं धर्म्म की [redacted] हीनता [redacted] हो है इत्यादि अनेक प्रकार करि मुनिधर्म्म विषै
याचना आदि नांहीं संभवै है ॥ [redacted] सो ऐसी अनैं नती क्रिया के धारक [redacted] साधु गुरु [redacted] कहै
है तातैं गुरु का स्वरूप अन्यथा कहै है ॥ बहुरि धर्म्म का स्वरूप अन्यथा कहै है ॥ सम्यग्दर्शन ज्ञान चारि
त्र मोक्षमार्ग है ॥ [redacted]
[redacted] सोई धर्म्म है ॥ सो इनिका स्वरूप अन्यथा प्ररूपै है ॥ सोई कहिए है ॥ तत्वार्थश्रद्धान
सम्यग्दर्शन है ॥ ताकी तौ प्रधानता नाहीं [redacted] आप जैसें अरहंत देव साधु गु
रु दया धर्म्म निरूपै है तिनिका श्रद्धान कौं सम्यग्दर्शन कहै है सो प्रथम तौ अरहंतादिक का स्वरूप
अन्यथा कहै है बहुरि इतनें ही श्रद्धान तैं तत्वश्रद्धान न होइ बिना सम्यक्त कैसें होइ तातैं मिथ्या कहै है ॥ बहु
रि तत्वनिका नी [redacted] श्रद्धान कौं सम्यक्त कहै है तौ प्रयोजन [redacted] लीए तत्वनिका श्रद्धान नाहीं करै है
है [redacted] ॥ गुणस्थान मार्गणादिरूप जीव का [redacted] अणुस्कंधादिरूप अजीव का पाप पुण्य के स्थान
निका [redacted] अविरति आदि आस्रवनि का [redacted] व्रतादिरूप संवर का तपश्चरणादिरूप निर्जरा का [redacted] सि
द्ध होनें के लिंगादिक भेदनि करि [redacted] मोक्ष का स्वरूप जैसैं उनके शास्त्रनि विषै कह्या है तैसें
सीखि लीजिए [redacted] अर केवली का वचन प्रमाण है [redacted] ऐसें तत्वार्थश्रद्धा
न करि सम्यक्त भया मानै है ॥ सो हम पूछैं हैं ग्रैवेयक जानें वाला द्रव्यलिंगी मुनि कै ऐसा श्रद्धान हो है कि नांहीं
[redacted] जो हो है तौ वा कौं मिथ्यादृष्टी काहे कौं कहिए ॥ अर न हो है तौ [redacted]

मूलकी एक [redacted] ता

वानैं (तौ) जैन लिंग [redacted] धर्मबुद्धि करि धर्‌या है॥ ताकै देवादिक की प्रतीति कैसैं भी होनई अर वाकै वहुत शास्त्राभ्यास है सो वानैं जीवादिक के भेद कैसैं न जानें॥ अर अन्यमत का लवलेश भी अभिप्राय नाही (ताकै) अरहंत वचन की कैसें प्रतीति नाही भई॥ तातैं [redacted] वाकै [redacted] ऐसा श्रद्धान तो होहै परंतु [redacted] सम्यक्त न भया [redacted]॥ वहुरि नारकी भोगभूमिया तिर्यंच आदिकै ऐसा श्रद्धान होनें का निमित्त नाही अर तिनिकै वहुत काल पर्यंत सम्यक्त रहै है [redacted] तातैं वाकै ऐसा श्रद्धान नाही होहै तौ भी सम्यक्त भया तातैं सम्यक् श्रद्धान का स्वरूप [redacted] यहु नाही॥ [redacted] [redacted] साचा स्वरूप है सो आगैं वर्णन करैंगे सो जानना॥ वहुरि जो उनके शास्त्रनिका अभ्यास करना ताकौं सम्यग्ज्ञान कहै है॥ सो द्रव्यलिंगी मुनिकै शास्त्राभ्यास होतैं भी मिथ्याज्ञान कह्या असंयत सम्यग्दृष्टीकै विषयादिकरूप जानना ताकौं सम्यग्ज्ञान कह्या॥ तातैं यहु स्वरूप नाही साचा स्वरूप आगैं कहैंगे सो जानना॥ वहुरि उनकरि [redacted] निरूपित [redacted] (अणुव्रत) महाव्रतादि आचरनें करि सम्यक्चारित्र भया मानै सो द्रव्यलिंगी कै महाव्रत होतें भी सम्यक्चारित्र न [redacted] अर उनका मत के अनुसारि गृहस्थादिक कै महाव्रत (आदि) विना अंगीकार कीए भी सम्यक्चारित्र [redacted] तातैं यहु स्वरूप नाही साचा स्वरूप अन्य है सो आगैं कहैंगे॥ इहाँ वे कहै है [redacted] द्रव्यलिंगकि अंतरंग विषै पूर्वोक्त श्रद्धानादिक न भए वाह्य ही [redacted] भए॥ तातैं सम्यक्त्वादि न भए॥ ताकौं उत्तर जो अंतरंग नाही अर वाह्य धारै सो तौ कपट करि धारै सो वाकै कपट होइ तौ ग्रैवेयक कैसैं जाय नरकादिक विषै जाइ विना ग्रैवेयक जानी संभवै वंधतौ अंतरंग परिणामनितैं होहै सो अंतरंग जिनधर्मरूप परिणाम भए विना ग्रैवेयक जाना संभवै नाही॥ [redacted] वहुरि व्रतादिरूप शुभोपयोग ही तैं देवका वंध मानै अर या ही कौं मोक्षमार्ग मानै सो वंध

१ अथवा तौ व्रतादिक स्वरूप अन्यथा कहै है सो किछू पूर्वै गुरु वर्णन विषै कह्या है वहुरि

१ अथवा रूप प्रतीत [redacted] धर्म

९९

धर्मार्ग मोक्षमार्ग कों एक [redacted] कीया सो यह मिथ्या है।। [redacted] बहुरि व्यवहार धर्म्म विषै अनेक वि
परीत निरूपै है।। [redacted] निंदक कों मारनें मैं पाप नाहीं ऐसा कहै है सो अन्यमती निंदक तीर्थंकरादि
कै होतें भी भए तिन कौं इंद्रादिक मारैं नाहीं सो पाप न होता तौ क्यों न मारे।। बहुरि [redacted]
[redacted] प्रतिमाजी कै आभरणादिक बनावै है सो प्रतिबिंब तौ वीतराग भाव बधावनें कों कारण स्थापन कीं
या था आभरणादि बनाए [redacted] अन्यमतमूर्तिवत यहु भी भए।। [redacted] इत्यादि कहां ताई
कहिए अनेक अन्यथा निरूपण करै है।। या प्रकार स्वेतांबर मत कल्पित जाननां इहां सम्यग्दर्शनादि
क का अन्यथा निरूपणतें मिथ्यादर्शनादिक ही की पुष्टता हो है तातैं याका श्रद्धानादि न करनां।।
बहुरि इनि स्वेतांबरनि विषै ही ढूंढिए प्रगट भए हैं।। ते [redacted] आपकों सांचे धर्मा
त्मा मानै हैं।। सो भ्रम है।। काहेतैं सो कहिए है।। केई तौ भेष धारि साधु कहावै है सो उनके ग्रंथनि
के अनुसारि भी व्रत समिति गुप्ति आदिका साधन नाहीं भासै है बहुरि देखो मन वचन काय कृत कारि
त अनुमोदना करि सर्व सावद्य योग त्याग करनें की प्रतिज्ञा करै पीछैं पालैं नाहीं बालकों [redacted] कों वा [redacted] भोलाकों वा शूद्रादिककौं
हीं दीक्षा दे सो ऐसें त्याग करै अर त्याग करतें ही किछू विचार न करै जो कहा त्याग करौं हौं पीछैं पालै
भी नाहीं अर ताकों सर्व साधु मानें।। बहुरि यहु कहै पीछैं धर्म्मबुद्धि होइ जाइ तब तौ याका भला हो
[redacted] है सो पहलैं ही दीक्षा देनें वाले नें प्रतिज्ञा भंग होती जो प्रतिज्ञा कराई सो [redacted] पाप कौंन कों ला
गा पीछैं [redacted] धर्म्मात्मा होनें का निश्चय कहा।। ~~बहुरि कोऊ कहैं [illegible] जिनकै [illegible] आचर~~
~~[illegible] देखैं मैं तिनि कों साधु मानें सो।।~~ [redacted] ~~जाके यथार्थ आचरण देखैं ते ताकों साधु मानें मैं सो तुम~~ जो साधु का धर्म्म अंगीकार करि यथार्थ
[redacted]।। बहुरि [redacted]

बहुरि मूर्ति का अंगीकार करि यानैं भंग करी सो
कहा

१ जैसा धु मुनि नाम धरावै है [redacted] स्वच्छंद हैं तिनि स नवनिकौं साधु मानौं १

नपालै ताकौं साधु मानिए कि न मानिए जो मानिए तौ [redacted] ।। न मानिए तौ इ[redacted]निकै साधु
पना न रह्या ।। [redacted] तुम जैसे आचरणतैं साधु मानौं हौ [redacted] ताका भी पालना कोई विरला कै पाइए [redacted] है सब
वनिकौं साधु काहे कौं मानौं हौ ।। इहां कोऊ कहै हम तौ जाकै यथार्थ आचरण देषैंगे ताकौं साधु मानैं
गे और कौं न मानैंगे याकौं पूछिए है एक संघ विषै बहुत भेषी हैं तहां [redacted] जाकै यथार्थ आचरण मानौं
हौ सो वह औरनिकौं साधु मानै है कि न मानै है जो मानै है तौ तुमतैं भी अश्रद्धानी भया ।। ताकौं पूज्य कै
सैं मानौं हौ ।। अर न मानै है तौ उनसेती साधु का व्यवहार काहे कौं बरतै है ।। बहुरि आप उनकौं साधु न मानै
अपनैं संघ विषै राषि औरनि पासि साधु मनावै है और निकौं अश्रद्धानी करै ऐसा कपट काहे कौं करै
बहुरि तुम वाकौं साधु न मानौंगे तब अन्य जीवनिकौं भी ऐसा ही उपदेश करौगे इनिकौं साधु मति मानौं
ऐसैं [redacted] धर्मपद्धति विषै [redacted] विरुद्ध हो [redacted] इ ।। अर जाकौं तु
म साधु मानौं हौ [redacted] तिसतैं भी तुम्हारा विरुद्ध भया ।। जातैं वह वाकौं साधु मानै है ।। बहु
रि तुम जाकै यथार्थ आचरण मानौं हौ सो विचार करि देषो [redacted] वह भी यथार्थ मुनिधर्म भी ही पालै है
कोऊ कहै ।। अन्य भेषधारीनितैं तौ घनें आछे हैं ।। तातैं हम मानैं है सो अन्य मत [redacted] विषै तौ [redacted]
[redacted] नाना प्रकार भेष संभवै जातैं तहां रागभाव का निषेध नाहीं ।। इस जैन मत विषै
तौ जैसा कह्या है तैसा ही भएं साधु संज्ञा होइ ।। इहां कोऊ कहै शील संयमादि पालै है तपश्चरणादि करै है
तौ जेता करै है तितना ही भला है ।। ताका समाधान ।। यह सत्य है धर्म थोरा भी पाल्या हूवा भला है १००
है परंतु प्रतिज्ञा [redacted] तौ बडे धर्म की करिए अर पालिए थोरा तौ तहां प्रतिज्ञाभंगतैं महापाप हो है ।। जैसैं
कोऊ उपवास की प्रतिज्ञा करि एक बार भोजन करै तौ [redacted] ताकै बहुत बार भोजन का संयम

होतैं भी प्रतिज्ञा भंगतैं पापी कहिए तैसैं [redacted] मुनिधर्मकी प्रतिज्ञा करि कोई किंचित् [redacted] धर्म न पालै तौ वाकौं शीलसंयमादि होतैं भी पापी ही कहिए। [redacted] जैसैं एकंत [redacted] की प्रतिज्ञा करि एकबार भोजन करै तौ धर्मात्मा ही है तैसैं अपना श्रावकपद धारि [redacted] धर्मसाधन करै तौ धर्मात्मा ही है। इहाँ तौ ऊँचा नाम धराइ नीची क्रिया करनेतैं पापीपना संभवै है। [redacted] नाम धराय [redacted] क्रिया करतैं तौ [redacted] पापीपना होता नाहीं। जेता धर्म साधै तितना ही भला है। इहाँ कोऊ कहै पंचमकालका अंत पर्यंत चतुर्विध संघका सद्भाव कह्या है इनिकौं साधु न मानिए तौ [redacted] किसकौं मानिए। [redacted] ताका उत्तर। जैसैं इस कालविषै हंसका सद्भाव कह्या [redacted] है अर [redacted] हंस नाहीं दीसै है तौ [redacted] औरनिकौं तौ हंस मान्या जाता नाहीं हंसका लक्षण मिलें ही हंस मान्या जाय। तैसैं इस कालविषै साधुका सद्भाव है अर गम्य क्षेत्रविषै साधु न दीसै है तौ [redacted] औरनिकौं तौ साधु मान्या जाता नाहीं साधु लक्षण मिलें ही साधु मान्या जाय। [redacted] बहुरि इनिका भी प्रचार थोरे ही क्षेत्रविषै दीसै है [redacted] तहाँतैं परैं [redacted] क्षेत्रविषै कोई साधुका सद्भाव कैसैं मानै जो लक्षण मिलें मानै तौ इहाँ भी ऐसैं ही मानौं अर विना लक्षण मिलें ही मानै तौ तहाँ कोऊ कहै इहाँ अन्य कुलिंगी [redacted] हैं तिनही कौं साधु मानौ। ऐसैं विपरीत होइ तातैं बनै नाहीं। विना ही [redacted] सद्पंचमकालमैं [redacted] ऐसैं भी साधुपद होइ है तौ ऐसा सिद्धान्तका वचन [redacted] । बिना ही सिद्धान्त तुम मानौ हौ तौ पापी [redacted] होगा। ऐसैं अनेक युक्तिकरि [redacted] इनिकैं साधुपनौ बनै नाहीं है अर [redacted] साधुपनौ विना साधु मानैं मिथ्यादर्शन हो है जातैं [redacted] भले साधुकौं गुरु मानें ही सम्यग्दर्शन हो है। बहुरि श्रावकधर्मकी अन्यथा प्रवृत्ति करावै है। त्रसकी हिंसा मूल [redacted] महापापिक

Margin notes: थोरा भी; गम्यक्षेत्र विषैं; बनता वेष; गुरु मानें

तातैं भी जाका किछू प्रयोजन नाहीं ऐसा किंचित् त्याग करायवा कौं दशौं व्रत भी नया [redacted] कहै। सो वह
त्रसघातादिक [redacted] जामैं होइ ऐसा कार्य करै [redacted] थ है कि नाहीं [redacted]
देशव्रत गुणस्थान विषै तौ ग्यारह अविरति कहे हैं। त्रसघात [redacted]
101 [redacted] का॥ [redacted] कैसैं
संभवै॥ बहुरि ग्यारह प्रतिमा भेद श्रावक के हैं तिन विषै दशमी ग्यारही प्रतिमाधारक श्रावक तौ कोई
होता ही नाहीं अर साधु होइ [redacted] पूछै तब कहै पडिमाधारी श्रावक अबार होइ सकता नाहीं सो देखौ
[redacted] श्रावक धर्म तौ कठिन अर मुनिधर्म सुगम ऐसा विरुद्ध भाषै है। बहुरि ग्यारही प्रतिमाधारक कै
थोरा परिग्रह मुनि कै बहुत परिग्रह बतावै सो संभवता वचन नाहीं॥ बहुरि कहै ए प्रतिमा तौ थोरे ही
काल पालि छोडि दीजिए है सो ए कार्य उत्तम है तौ धर्मबुद्धि ऊंची क्रिया कौं काहे कौं छोरै अर नीचे का
र्य है तौ काहे कौं अंगीकार करै यह संभवै ही नाहीं॥ बहुरि [redacted] कुदेव कुगुरु कौं नमस्कारादिक
रतैं भी श्रावकपना बतावै कहै धर्मबुद्धि करि तौ नाहीं वंदै है लौकीक व्यवहार है सो सिद्धांत विषै तौ ति
निकी प्रशंसा स्तवन [redacted] कौं भी सम्यक्त्व का अतीचार कहै है अर [redacted] गृहस्थनि का भला मनावनें
कै अर्थि [redacted] वंदना करतैं भी किछू न कहै॥ बहुरि कहौगे भयलज्जा कुतूहलादिक करि
वंदै है तौ इनि ही कारणनि करि कुशीलादि सेवन करतैं भी पाप मति कहौ अंतरंग विषै पाप जान्यां चाहि [redacted] देखौ
[redacted] एसैं सर्व आचरन विषै विरुद्ध होगा॥ [redacted] तौ मुख्यता नाही अर पावनकाम
मिथ्यात्व सारिषे महापाप [redacted] की प्रवृत्ति छुडावनें की [redacted] क १०१
की हिंसा बहुत अयत्न उपारे मुखबोलनें की मुख्यता पाई एसो [redacted]

छुडावनें की

मलीग उपदेश्या है।।बहुरि [redacted] धर्म्मके अंग अनेक हैं तिनि विषै एक परजीवकी दया ता [redacted] कों मुख्य कहै है
ताका भी विवेक नांही।।जलका छाणनां अन्नका सोधनां सदोष वस्तुका भक्षण न करनां हिंसादिकरू
प व्यापार [redacted] करनां इत्यादि दयाके अंगनिकी तौ मुख्यता नांही।।बहुरि पाटीका बांधनां शौचादिक थोरा क
10/A रनां इत्यादि कार्यनिकी मुख्यता करै है।।सो मैलयुक्त पाटीके थूकका संबंधतें जीव [redacted] उपजें तिनिका तौ
(यत्न) [redacted] नांही (अर) [redacted] पवनकी हिंसाका यत्न बतावै सो नासिकाकरि [redacted] रिवहुत पवन निकसै ताका तौ यत्न
[redacted] हीं नांही।।बहुरि जो [redacted] बोलनें हीका यत्न कीया तौ सर्वदा काहेकों राखिए। ःउनका शास्त्र केअनुसारि
ःकरते। बोलिए तब यत्न करि लीजिए।।बहुरि जो कहै भूलि जाइए तौ इतनी भी याद न रहै तौ अन्य धर्म्म साधन
कैसें होगा।।बहुरि शौचादिक थोरे करि एसा [redacted]
सैं नवता शौच मुनि भी करै हैं।।तातें गृहस्थकों अपनें योग्य शौच करनां।।स्त्रीसंगमादिकरि [redacted] शौ
(बिना) [redacted] की एं सामायिकादि क्रिया [redacted] करनां तें अविनय विक्षिप्तता आदिक रि पाप उपजे [redacted] अ
सें जिनिकी मुख्यता करै तिनिका भी ठिकानां नांही।।अर केई दयाके अंग योग्य पालें हैं हरितकाय [redacted]
का त्याग आदि करै हैं [redacted] जल थोरा नाषै हैं [redacted] रनिका हम निषेध करते नांही।।[redacted] बहुरि
(अहिंसा) [redacted] की एकांत [redacted] पकडि प्रतिमा चैत्यालय पूजनादि क्रियाका उत्थापन करै है सो
तिनही के शास्त्रनि विषै प्रतिमा आदिका निरूपण है ताकों आग्रहकरि लोपै है।।भगवती सूत्र विषै ऋद्धि
धारी मुनिका निरूपण है तहां मेरुगिरि आदि विषै [redacted] जाय तहां चैत्य वंदै ऐसा पाठ है
या का अर्थ यहु [redacted] तहां चैत्यनिकों वंदै है सो चैत्य नाम प्रतिमाका प्रसिद्ध है।।बहुरि वि [redacted] करि
करै है चैत्य शब्दके ज्ञानादिक अनेक अर्थ निपजै है सो अन्य अर्थ है प्रतिमाका अर्थ नांही।।याकों

पूछिए है मेरुगिरि नंदीश्वर द्वीप विषै जाय जाय तहाँ चैत्य वंदना करी सो उहाँ ज्ञानादिक की वंदना
१०२ करने का [redacted] अर्थ कैसैं संभवै [redacted] ज्ञानादिक कों वंदना तौ सर्वत्र संभवै जो वंदने योग्य है [redacted]
उहाँ संभवै और सर्वत्र न संभवै ताकौं तहाँ वंदना करने का विशेष संभवै सो [redacted] ऐसा संभ
व तो [redacted] अर्थ प्रतिमा ही है और [redacted] चैत्य शब्द का मुख्य अर्थ प्रतिमा ही है सो प्रसिद्ध है
५ इस ही अर्थ करि चैत्य वंदना संभवै है [redacted] या कौं हठ करि काहे कौं लोपिए॥ बहुरि नंदीश्वर द्वी
पादिक विषै जाय देवादिक पूजनादि क्रिया करै है। ताका व्याख्यान उनकै जहाँ तहाँ पाइए है॥ [redacted]
बहुरि लोक [redacted] विषै जहाँ तहाँ अकृत्रिम [redacted] प्रतिमा का निरूपण है सो या रचना अनादि है [redacted]
~~[illegible] प्रतिमा का पूजन सिद्ध भया॥ [illegible]~~
[redacted] सो यह रचना भोग [redacted] कुतूहलादिक के अर्थि तौ है नाँहीं [redacted]
और [redacted] इन्द्रादिक के स्थाननि विषै निःप्रयोजन रचना संभवै नाँहीं॥ [redacted] सो इन्द्रादिक तिनिकौं दे
खि कहा करै है॥ कै तौ [redacted] अपने मंदिरनि विषै निःप्रयोजन रचना देखि उसतैं उदासीन होते होंगे
तहाँ दुःखी होते होंगे सो संभवै नाँहीं॥ कै आछी रचना देखि विषय पोषते होंगे सो अरहंत मूर्ति
करि सम्यग्दृष्टी अपनौ विषय पोषै यहु भी संभवै नाँहीं तातैं तहाँ तिनकी भक्त्यादिक ही करै है यहु ही
संभवै है॥ सो उनकै सूर्याभदेव का व्याख्यान है तहाँ प्रतिमाजी के पूजने का विशेष वर्णन कीया
है॥ याकौं गोपने कै अर्थि कहै है देवनि का ऐसा ही कर्त्तव्य है सो सांच परंतु कर्त्तव्य का तौ फल होय १०२
ही होय सो तहाँ धर्म हो है कि पाप हो है जो धर्म हो है तौ अन्यत्र पाप होता था यहाँ धर्म भया॥ या
कौं औरनिकै सदृश कैसैं कहिए॥ यहु तौ योग्य कार्य भया॥ अर पाप है तौ तहाँ णमोत्थुणं का पा

102/A

उजोवं

उपज्या [redacted] सो पापके ठिकानें ऐसा पापका हेतो पज्या॥ बहुरि त्रि मोहुली के पाठ विषै तो अरहंतकी भक्ति है सो प्रतिमाजी के आगें नाय यहु पाठ पढ्या तातें प्रतिमाजी के आगें [redacted] जो अरहंत भक्तिकी क्रिया करनी युक्त भई॥ बहुरि [redacted] ऐसी कहै॥ देवनिकै ऐसी [redacted] कार्य [redacted] मनुष्यनिकै नाहीं॥ तो उनहीके शास्त्रनिविषै ऐसा कथन है द्रोपदी [redacted] राणी प्रतिमाजीका पूजनादिक जैसें सूर्याभदेव कीया॥ तैसें करत भई॥ [redacted] तातें मनुष्यनिकै नी ऐसा कार्य कर्त्तव्य है॥ इहां एक यहु विचार आया [redacted] चैत्यालय प्रतिमा बनावने की प्रवृत्ति न थी तो द्रोपदी [redacted] कै प्रतिमा का पूजन कीया॥ बहुरि प्रवृत्ति थी तौ बनावने वाले धर्मात्मा थे कि पापी थे जो धर्मात्मा थे तौ [redacted] गृहस्थनिकौं ऐसा कार्य करनां॥ [१ हिंसा] ऐसें पापी थे तौ तहां भोगादिकका तौ प्रयोजन था नाहीं काहेकौं बनाया॥ [redacted] बहुरि [redacted] द्रोपदी मोहुलीका पाठ कीयां सो कृतहल कीया कि धर्म कीया जो कुतूहल कीया तौ महापापी भई॥ धर्म [redacted] कुतूहल करना अर धर्म कीया तौ औरनिकौं भी प्रतिमाजीकी स्तुति पूजा करनी युक्त [redacted] है॥ बहुरि वै ऐसी [redacted] मिथ्या युक्ति बनावै है॥ [redacted] जैसें इंद्रकी स्थापनांतें इंद्रका कार्य सिद्धि नाहीं तैसें अरहंत प्रतिमा करि कार्यसिद्धि नाहीं॥ सो [redacted] अरहंत [redacted] करते होइ तौ तौ ऐसें भी मानें सो तौ [redacted] वे तौ वीतराग है॥ यहु जीव भक्तिरूप आपनें भावनि तें शुभफल पावै है॥ जैसें [redacted] स्त्रीका आकाररूप काष्ठ पाषाणकी मूर्त्ति देखि तहां विकाररूप होइ अनुराग करै तौ ताकै पापबंध होइ तैसें अरहंतका आकाररू

४ जातें मनुष्यनिकै प्रतिमा आदिकनाव विषैहिंसा होहै।

१ वा पूजनादिकीया।

१ एक विचार इहां यहु आया।

१ आप काहूकौं भक्ति मानि तिनका।

६८ इनावनितें

पधानुपाषाणादिककी मूर्त्तिकों देषि धर्म्मबुद्धितैं न हीं अनुराग करै तौ शुभकी प्राप्ति कैसैं न होइ।। तहीवे
103 कहै है।। विना प्रतिमा तौ हम अरहंतविषै अनुराग क[redacted] रि शुभ न [redacted] उपजावैंगे।। तौ इनकौं कहिए है।। [redacted] ऐसा हीतें
[redacted] आकार देखें जैसा भाव होइ तैसा परोक्ष स्मरणकीएं भाव होइ नाहीं।। लोकविषै भी स्त्रीका अनु
रागी [redacted] स्त्रीका चित्र बनावै है।। [redacted] तातैं प्रतिमाका आलंबन करि भक्ति विशेष होनेतैं विशेष शु
भकी प्राप्ति हो है।। बहुरि कोऊ कहै प्रतिमाकों देखो [redacted] परन्तु पूजनादि करनेका कहा प्रयोजन है।। ताका उस जीवको
जैसे उत्तर।। कोऊ [redacted] किसी जीवका आकार बनाय [redacted] घात करै तौ वाकै हिंसाकी
ऐसी पाप निपजै।। वा कोऊ काहूका आकार बनाय [redacted] द्वेषबुद्धितैं वाकी बुरी अवस्था करै तौ जाका आ
कार बनाया ताकी बुरी अवस्था कीएं का सा फल निपजै।। तैसें अरहंतका आकार बनाय रागबुद्धितैं पूज
नादि करै तौ अरहंतके पूजनादिक [redacted] कीएं का सा शुभ निपजै वा तैसा ही फल होइ।। अति अनु
राग भएं प्रत्यक्ष [redacted] दर्शन न होतैं आकार [redacted] बनाय पूजनादि करिए है।। इस धर्म्मानुरागतैं महा
पुण्य उपजै है।। [redacted] बहुरि ऐसी कुतर्क करै है।। जे जाकै जिस वस्तुका त्याग होइ ताकै
आगैं तिस वस्तुका धरना हास्य करना है।। [redacted]
[redacted] तातैं [redacted] दिक करि अरहंतका पूजन युक्त नाहीं।। ताका [redacted] समाधान १८
मुनिपद लेतैं ही सर्व परिग्रहका त्याग कीया था केवलज्ञान भएं पीछैं तीर्थंकरदेवकै समवसरणादि विभू
छत्रचामरादि [redacted] कीए [redacted] सो हास्य करी कि भक्ति करी।। हास्य करी तौ इंद्र महापापी भया।। सो बनै नाहीं
भक्ति करी तौ पूजनादिकविषै भी भक्ति ही करिए है।। छद्मस्थकै आगैं त्याग करी वस्तुका धरना [redacted] हा
स्य है जातैं वाकै विक्षिप्तता होइ आवै है।। केवलीकै वा प्रतिमाकै आगैं [redacted] अनुराग करि [redacted] उत्तम व

103

सुधरनेंकादोषनाहीं॥ उनकैविशिषतामेहोइनाहीं॥ [redacted] धर्मा
नुरागतैंजीवकाभलाहोइ॥ बहुरिवैकहैहैं प्रतिमाबनावनेंविषैचैत्यालयादिकरावनेंविषैपूजनादिक
रनेंविषैहिंसाहोइअरधर्मअहिंसाहै॥ [redacted] तातैंहिंसाकरिधर्ममाननेंतैंमहापापहोहै तातैंहमइ
निकार्यनिकौंनिषेधैंहैं॥ ताकाउत्तर॥ उनहीकेशास्त्रविषैऐसावचनहै॥ सुच्चाजाणइकल्लाणं।
सुच्चाजाणइपावगं॥ उभयंपिजाणएसुच्चा जंसेयंतंसमायर॥१॥ इहांकल्याणपापउभयएतीन
रा॥ सुनिकरिजानैंऐसाकह्या॥ सो [redacted] उभयतौपापअरकल्याणमिलैंहोइ सोऐसाकार्य [redacted]
ऽकाभलाहोनी गहल्याऽ [redacted] तहींपूछिएहैकेवलधर्मतैंतौउभयघाटिहैही॥ अरकेवलपापतैंउभयबुराहैकिभलाहैजो
बुराहैतौयामैंतौकिछू [redacted] कल्याणकाअंशमिल्यापापतैंबुराकैसेंकहिए॥ भलाहैतौकेवलपाप
छांडिऐसाकार्यकरनौठहर्या॥ ~~सो ऐसे कार्य तौ प्रतिमा चैत्यालय पूजनादिक का ही करनौ ऐसा र~~
~~[illegible]~~ ऽयइतौहम ~~[illegible]~~
~~[illegible]~~
~~[illegible]~~ ॥ बहु
~~[illegible] प्रवर्त्तनायुक्त है कि नाहीं॥ [illegible]~~
रि [redacted] युक्तिकरिनौऐसेंहीसंभवैहै॥ कोऊसामायिकादिकनिरवद्यकार्यनिविषैप्रव
र्त्तैहै॥ ताकौंतौप्रतिमादिकरावनौवापूजनादिकरनौउचितनाहीं॥ परन्तुकोईअपनेंरहनेंकेवा
स्तैंमंदिरबनावैतिसतैंतौ [redacted] चैत्यालयादिकरावनेंवालाहीननाहीं॥ [redacted] हिंसातौभईपरि
[redacted] वाकैतौलोभपापानुरागकीवृद्धिभई॥ याकैलोभछूट्या
धर्मानुरागभया॥ [redacted] बहुरिकोई [redacted] व्यापारादिकार्यकरैतिसतैंतौपूजनादि

[redacted]लादि [redacted] ऽधारि

ऽत्यागीहोइ मंदिरादिक नाहींकरावैहै [redacted]ऽ

पबहुरि तुम कहोगे निरवद्य सामायिकादिकार्य ही क्यों न करें ।। धर्म विषैं काल गमावनां तहां ऐसें कार्य करो ।। ताका उत्तर जो शरीर करि पाप छांड़ें ही निरवद्य पनौं होइ तो ऐसें ही करें परंतु परिणाम विषैं पाप छूटैं निरवद्यपनौं हो सो

कार्य करनों ही न नीही ।। उहां तौ हिंसादि बहुत हो है ला ना दिवधे है ।। पाप [redacted] ही की प्रवृत्ति है । इहां हिं सादिक नीकिंचित हो है ।। लोभादिक घटै है ।। धर्मानुराग वधै है ।। ऐसें [redacted] जे त्यागी न होइ [redacted] अपनें धन कौं पाप विषैं खरचै तें होइ तिनकौं चैत्यालयादि कराव [redacted] नां अर जे निरवद्य सामायिकादिकार्य निविषैं उपयोग कौं नीही लगाय सकै तिनिकौं पूजनादि करनौं निषेध नीही ।। [redacted] कार्य की अपेक्षा [redacted] म [redacted] कार्य कों [redacted] सर्व था निषेध करी ऐ [redacted]

[redacted] ।। बहुरि तुम कहो हो धर्म के अर्थि [redacted] हिंसा कीए तौ महापाप हो है अन्यत्र हिंसा कीए थोरा पाप है सो यहु प्रथम तौ सिद्धांत का वचन नांही ।। अर युक्ति तें नी मिलै [redacted] नांही ।। [redacted] [redacted] जातैं ऐसैं मानें इंद्र जन्म कल्याणक विषैं बहुत जल करि अभिषेक करै है समव सरण विषैं देव [redacted] पुष्पवृष्टि चमर ढालनां इत्यादि कार्य करै है ।। सो [redacted] महापापी होइ ।। जो तु मकहोगे उनका [redacted] साही व्यवहार है तौ क्रिया का फल तौ भए बिना रहता नांही ।। जो पाप है तौ इंद्रादिक तो [redacted] सम्यग्दृष्टि हैं ऐसा कार्य काहे कों करै ।। जो धर्म है तौ काहे कों निषेध करो हो ।। बहुरि तुमहीकों पूछै हैं ।। तीर्थंकर की वंदनां कों राजादिक गए ।। साधुनि की वंदनां कौं दूरि भी जाइए है ।। सिद्धांत सुननें [redacted] आदि कार्य करनें कौं गमनादि करिए है ।। तहां मार्ग विषैं हिंसा भई [redacted] ।। बहुरि साधर्मी जिमाइए है ।। साधु का मरण भएं ताका संस्कार करिए [redacted] ।। बहुरि साधर्मी जिमाइए है ।। साधु होतें उत्सव करिए है इत्यादि प्रवृत्ति अब भी दीसै है सो इहां [redacted] भी हिंसा हो है ।। सो ए कार्य तौ धर्म ही के अर्थि है अन्य कोई प्रयोजन नीही । जो इहां महापाप उपजै [redacted] है तौ पूर्वैं ऐसे कार्य कीए तिनका निषेध करो अर [redacted] निका त्याग करौ ।। बहुरि जो धर्म उपजै है तौ धर्म के अर्थि हिंसा विषैं महा

अब भी ऐसे कार्य करै है तिन

ताका विनाअभ्यास लैवनसामायिकादि [redacted] विषैं ना का परिणाम लगै नीही ।। ताकूं पूजनादि करि तहां अपनां उपयोग लगावै है ।। उहां नांनां [redacted] वर्णवन करि उपयोग लगाय है ।। जो तहां उपयोग कौं न लगावै [redacted] तौ पापकार्य विषैं उपयोग भटकै तब बुरा होइ तातें तहां प्रवृत्ति करनी युक्त है

१०४

104/A

पापवताय काहे कों भ्रमावो है॥ तातें ऐसें माननां युक्त है। जैसें थोरा धन ठिगाएं बहुत धन का लाभ
होइ तौ वह कार्य करनां तैसें थोरी हिंसादिक पाप भएं बहुत धर्म निपजै तौ वह कार्य करनां॥ जो थोरा
धन [redacted] का लोभ करि कार्य बिगारै तौ मूर्ख है तैसें थोरी हिंसा का भयतें [redacted] बडा धर्म छोरै तौ
पापी ही होइ॥ बहुरि कोई बहुत धन ठिगावै [redacted] अर स्तोक
धन उपजावै वा न उपजावै तौ वह मूर्ख ही है॥ तैसें [redacted] बहुत हिंसादिक करि बहुत पाप उपजावै अ
र भक्ति आदि धर्म [redacted] विषै थोरा प्रवर्तै वा न प्रवर्तै तौ पापी ही है॥ बहुरि जैसें [redacted] विना ठिगा
ऐं [redacted] ही धन का लाभ होतें ठिगावै तौ मूर्ख है तैसें निरवद्य धर्मरूप उपयोग होतें सावद्य धर्म विषै उपयो
ग लगावनां युक्त [redacted] नाहीं॥ ऐसें अपने [redacted] परिणामनि की अवस्था देखि भला होइ सो करनां एकां
त पक्ष कार्यकारी नाहीं॥ बहुरि अहिंसा ही केवल धर्म का अंग नाहीं है [redacted] रागादिक [redacted] निका [redacted]
[redacted] घटनां [redacted] धर्म का अंग मुख्य है ता[redacted]तें जैसें परिणामनि विषै रागादिक घटै सो कार्य करनी॥
अणुव्रतादिक का साधन भएं विना ही॥
बहुरि गृहस्थनि कौं [redacted] सामायिक पडिकमणा पोसह आदि क्रियानि कौं मुख्य आचरन क
रावै है॥ सो सामायिक तौ रागद्वेष रहित साम्यभाव भएं होइ॥ पाठ मात्र पढें वा [redacted] उठना बैठना कीएं ही
तौ होइ नाहीं॥ [redacted] बहुरि कहोगे अन्य कार्य [redacted] करता तातें तौ भला है॥ सो सत्य परंतु सामायिक
पाठ विषै प्रतिज्ञा तौ ऐसी करै जो मन वचन काय करि [redacted] सावद्य कों [redacted] न करौं न करावौंगा
अर मन विषै तौ विकल्प हुवा ही करै अर वचन काय विषै भी कदाचित् अन्यथा [redacted] प्रवृत्ति होइ तहां प्रतिज्ञा
भंग होइ प्रतिज्ञाभंग करनेतें न करनी भला जातें प्रतिज्ञाभंग का महापाप है॥ बहुरि हम पूछै हैं कोऊ
[redacted] प्रतिज्ञा भी न करै है अर भाषा पाठ पढै है ताका अर्थ जानि तिस विषै उपयोग राखै है॥ कोऊ प्रति
ज्ञा करै ताकौं तौ नीकैं पालै नाहीं अर [redacted] प्राकृतादिक का पाठ पढै ताके अर्थ का आपकों ज्ञान नाहीं बि

105

नाअर्थ जानें तौ ही उपयोग रहै नाहीं तौ उपयोग अन्यत्र भटकै। ऐसैं इनि दोऊनि विषैं [illegible] विशेष धर्म्मात्माकौ
न।। जो पहलेकौं कहौगे तौ ऐसा ही उपदेश क्यौं न दीजिए।। दूसरेकौं कहौगे तौ प्रतिज्ञाभंगकौ पाप भया
वा [illegible] परिणामनिकै अनुसारि धर्म्मात्मापनौ न रह्या।। पाठादि करनेंकै अनुसारि रह्या
तातैं अपना उपयोग जैसैं निर्मल होइ सो कार्य करनी [illegible] सधै सो प्रतिज्ञा करनी।। जाका अर्थ जानिए सो पाठ पढनी
पद्धतिकरि [illegible] नाम धरावनेंमैं नफा नाहीं।। बहुरि पडिकमणो नाम पूर्वदोषनि[illegible]रा
करणकरनेंका है।। सो मिछामि दुक्कडं इतना कहें ही तौ दुःकृत मिथ्या न होइ [illegible] कीया दुःकृत मिथ्या हो
नें योग्य परिणाम भए होइ तातैं पाठ ही कार्यकारी नाहीं।। बहुरि पडिकमणा का पाठविषैं बारह व्रतादिक ऐसा अर्थ है जो
विषैं जो दुःकृत लग्या होइ सो मिथ्या होहु।। सो व्रत धारें बिना ही तिनिका पडिकमणा करना कैसैं संभवै जो
कै उपवास न होइ सो उपवास [illegible] विषैं लाग्या दोषका निराकरण करै तौ असंभवपनौ होइ तातैं यहु पाठप
ढनीकौं न प्रकार बनै।। बहुरि [illegible] पोसहविषैं भी सामा
यिकवत् प्रतिज्ञा करि नाहीं पालैं हैं।। तातैं पूर्वोक्त ही दोष है।। बहुरि पोसह नाम तौ पर्वका है सो पर्वकौ द
निनी केताइक काल पर्यंत पापक्रिया करै पीछैं पोसहधारी होइ सो जेते कालि बनैं तेते कालि साधन
करनेंका तौ दोष नाहीं परंतु पोसहका नाम [illegible] करिए सो युक्त नाहीं। संपूर्ण पर्व [illegible] विषैं निरवद्य रहैं
ही पोसह होइ।। जो थोरा भी कालतैं पोसह नाम होइ तौ सामायिककौं भी पोसह कहौ।। नाहीं शास्त्र विषैं प्रमा
णबताबो जघन्य पोसहका इतना काल है।। [illegible] सो बडा नाम धराय लोगनिकौं भ्रमावनौ यहु प्रयोजन [illegible] २०५
भासै है।। बहुरि आखडी लेनेंका पाठ तौ और [illegible] पढै अंगीकार और करै सो पाठविषैं तौ मेरे त्याग ऐसा बनै है
[illegible] तातैं जो त्याग करै सोई पाठ पढै यहु चाहिए जो पाठ न आवै तौ भाषा हीतैं कहै [illegible]
परंतु पद्धतिकै अर्थि यहु रीति है।। [illegible]

१०६/२

द्का स्वरूप आगे कहै हैं।

बहुरि प्रतिज्ञा ग्रहण करने करावने की तो मुख्यता अर यथाविधि पालने की शिथिलता वा भाव निर्मल होने का विवेक नाहीं॥ आर्त्त परिणामनि करि वा लोभादिक करि भी उपवासादिक करै तहां धर्म्म मानै सो फल तो परिणामनि तैं हो है॥ इत्यादि अनेक कल्पित बातें करै हैं सो जैनधर्म्म विषै संभवै नाही॥ ऐसैं यहु जैन विषै श्वेताम्बर मत है सो भी [redacted] देवादिक का वा तत्वनि का वा मोक्षमार्गादिक का अन्यथा निरूपण करै है तातैं मिथ्यादर्शनादिक का पोषक है सो त्याज्य है। सांचा जिनधर्म्म [redacted] करि मोक्षमार्ग विषै प्रवर्त्तना योग्य है [redacted] ॥ तहां प्रवर्त्तैं तुम्हारा कल्याण होगा॥ ७॥ इति मोक्षमार्गप्रकाशक शास्त्र विषै अन्यमत निरूपण समाप्त भया॥ ५॥ ॥ॐनमः॥ मिथ्यादेवादिक भजें॥ [redacted] हो है मिथ्याभाव॥ तजि तिनकौं सांचे भजो॥ यहु हित हेतु उपाव॥ १॥ अथ अनादि तैं जीवनिकै मिथ्यादर्शनादिक भाव पाईए है तिनिकी पुष्टता कौ कारण कुदेव कुगुरु कुधर्म्म का सेवन है॥ [redacted] ता का त्याग भए मोक्षमार्ग विषै प्रवृत्ति होइ तातैं इनिका [redacted] निरूपण कीजिए है। ~~[redacted] निरूपण की~~ ~~[redacted] नमतैं ना~~

~~जिए है॥ जो सम्यग्दर्शनादिक भाव उपजावने कौ कारण लेइ काहू प्रकार हितकारी न होइ~~

~~कौं हित का कर्त्ता मानि सेवै कुदेव जान नौ [redacted] अन्यमत निविषे~~

~~तिनकी [redacted] ऐसे परम प्रसिद्ध [redacted] इत्यादि है [redacted] ति~~

~~निकौं मोक्ष कै अर्थि सेवन करिए है [redacted]~~ मोक्ष का दाता नाहीं॥ सो ति

~~[redacted] तातैं इनिका सेवन [redacted]~~

~~[redacted]~~

~~एसंसार मुक्तिकौकर्त्ता [redacted]~~

205

106

[redacted]

तहीं जे हित का कर्त्ता नाहीं अर तिनिकौं भ्रमतैं हित का कर्त्ता जांनि सेवै [redacted] ई एसा कुदेव॥ [redacted]
तांका वा महित है सो तीन प्रकार है॥ तैसा स्तु ... तैं कूटि मोहस्तु ... एक परलोक विषै
[redacted] ॥ तिनिका सेवन तीन प्रकार प्रयोजन लीएं करिए है॥ [redacted]
[redacted] कहीं तौ मोक्ष का प्रयोजन है।
कहीं परलोक [redacted] प्रयोजन है॥ कहीं इस लोक का प्रयोजन है॥ [redacted]
सो ए प्रयोजन तौ सिद्धि होइ नाहीं॥ किछू विशेष हानि होइ तातैं तिनिका सेवन मिथ्याभाव [redacted] है सोई
[redacted] दिखाईए है॥ अन्यमत निविषै जिनिके सेवनतैं मुक्ति होनी कही है तिनिकौं [redacted] मोक्ष के ¹ केई जीव:
अर्थि सेवन करै है॥ सो मोक्ष होइ नाहीं॥ तिनका वर्णन पूर्वैं अन्यमत [redacted] अधिकार विषै कह्या ही है॥
बहुरि अन्यमत विषै कहे देव तिनिकौं केई परलोक विषै सुख [redacted] होइ दुःख न होइ [redacted] ऐसे प्रयोजन लि-
ए सेवै है॥ सो ऐसी सिद्धि तौ [redacted] पुण्य उपजाएं अर पाप न उपजाएं हो है॥ सो [redacted]
[redacted] आप पाप उपजावै है [redacted] अर कहै ईश्वर हमारा भला करैगा तौ तहीं अन्याय ठहर्या॥ [redacted]
[redacted] काहू कौं पाप का फल दे काहू कौं न दे सो ऐसें तौ है नाहीं। जैसा आपना परिणा-
म करैगा तैसा ही फल पावैगा॥ [redacted] काहू का बुरा भला करने वाला [redacted] ईश्वर है नाहीं॥ बहुरि १०६
तिनि देवनि का सेवन करतैं हिंसा करै वा [redacted] भोजन नृत्यादि करि अपनी इंद्रियनि का विषय पोषे
¹ तिनि देवनिका तौ भला करै अर जो बुरा करि: — सो [redacted] पाप परिणामनि का फल तौ लागे बिना रहने का नाहीं [redacted]
[redacted] हिंसा विषय कषाय निकौं सर्व पाप कहै है॥ अर पाप का फल भी खोटा ही सर्व मानै है। –५

206

106

[redacted] बहुरि कुदेवनिका सेवन विषै [redacted] हिंसा विषयादिक ही का अधिकार है ताते कुदेवनि
के सेवनतें परलोक विषै भला न होइ है॥ बहुरि घने जीव इस [redacted] पर्याय संबंधी [redacted]
[redacted] शत्रुनाशादिक [redacted] रोगादि मिटावना [redacted]
[redacted] धनादिककी प्राप्ति [redacted] पुत्रादिककी प्राप्ति [redacted] इत्यादि अनेक प्रयोजन लीए कुदेव
निका सेवन करै है॥ [redacted]॥ [redacted] हनुमा
नादिककौं [redacted] पूजै है॥ [redacted] देवीनिकौं पूजै है॥ [redacted]
[redacted] गणगौरि सांझी आदि बनाइ पूजै है॥ [redacted]
[redacted] अवतपि
[redacted] शीतला [redacted] दिहाडी आदिकौं पूजै है॥ बहुरि [redacted] पीर पैकंबर
तरवीतरादिककौं पूजै है॥ [redacted] सूर्य चंद्रमा शनैश्चरादि ज्योतिषीनिकौं पूजै है॥ अग्नि जलादिककौं पूजै है॥ बहु
रि [redacted] कनिकौं पूजै है॥ [redacted] बहुरि गऊ घोटकादि तिर्यंचनि कौं पूजै है॥ अग्नि जलादिककौं पूजै है॥ बहु
रि शस्त्रादिककौं पूजै है॥ सो ऐसे कुदेवनिका सेवन मिथ्यादृष्टितें हो है॥ काहेतें॥ प्रथम ते
तक हाकहिए रोडी इत्यादिककौं पूजै है सो ऐसे कुदेवनिका सेवन मिथ्यादृष्टितें हो है॥ [redacted] सो
[redacted] जिनिका सेवन करै सो केई तौ कल्पनामात्र ही देव है॥ [redacted] सो
तिनिका सेवन कार्यकारी कैसे होइ॥ बहुरि केई व्यंतरादिक है॥ सो एक काहू का बुरा भला करने कौं समर्थ
नाही॥ [redacted] जो वे ही समर्थ होइ तौ वे ही कर्ता ठहरे [redacted] सो तौ उनका कीया किछू होता दीसता नाही॥ [redacted]
[redacted] प्रसन्न होइ [redacted] धनादिक देइ सकै नाही॥ [redacted] द्वेषी होइ बुरा क
[redacted] रि सकते नाही॥ इहां कोऊ कहै दुःख तौ देते देखिए है [redacted] माननेतें दुःख देते रहि जाय है॥ ताका उत्तर॥ याकै पा
पका उदय होइ तब ऐसी ही उनकै कुतूहल बुद्धि होइ [redacted] सो करिवे चेष्टा करै चेष्टा करतें यह दुःखी होइ॥ [redacted]

107 बहुरि वैक्रत हलतें किछू कहे यह कला करे तब वे चेष्टा करनें तें रहि जाय॥ बहुरि याकों छिपल जो निकु
तहल कीया करे॥ बहुरि जो याकै पुन्य का उदय होइ तौ किछू करि सकते नाहीं॥ सो भी देखिए है कोऊ उन
कौं पूजै नाहीं वा उनकी निंदा करै वा वे भी उससौं द्वेष करै परंतु ताकौं दुख दे सकै नाहीं वा ऐसे भी कहते देखि
ए है जो फलाना हमकौं मानै नाहीं परंतु उससौं किछू हमारा वश नाहीं॥ तातैं व्यंतरादिक किछू करने कौं
समर्थ नाहीं याका पुन्य पाप ही तैं सुख दुःख हो है॥ [redacted] उनके मानें पूजें उलटा रोग लागै है किछू कार्य
सिद्धि नाहीं॥ बहुरि ऐसा जानना जो [redacted] कल्पित देव हैं तिनिका भी कहीं अतिशय चमत्कार होता दे
खिए है सो व्यंतरादिक [redacted] करि कीया हो है॥ [redacted]
[redacted] कोई [redacted] पूर्व पर्याय विषै उनका सेवक था पीछै [redacted]
मरि व्यंतरादि भया था [redacted]
[redacted] तहां ही कोई निमित्ततें ऐसी बुद्धि भई॥ तब वह लोक विषै तिनके सेवनें की प्रवृत्ति करावनें [redacted] जगत
कै अर्थि कोई चमत्कार दिखावै है॥ [redacted]
तो लोक किंचित् चमत्कार देखि [redacted] तिसका अर्थ विषै लगि जाय है॥ जैसें [redacted]
[redacted] जिन प्रतिमादिक का भी अतिशय होइ है सो जिनकृत नाहीं [redacted] जैनी व्यंतरादिकृत
हो है तैसें ही कुदेवनिका कोई चमत्कार होइ सो उनके [redacted] अनुचरी व्यंतरादिकनि करि कीया हो है॥
ऐसा जानना॥ बहुरि अन्यमत विषै भक्तनि की सहाइ परमेश्वर करी वा प्रत्यक्ष दर्शनादि [redacted] दीए
इत्यादि कहै है तहां केई तौ कल्पित बातें कही हैं॥ केई [redacted] उनके अनुचरी व्यंतरादिक करि कीए कार्य नि
कौं परमेश्वर के कीए कहै हैं॥ जो परमेश्वर के कीए होइ तौ परमेश्वर तौ त्रिकालज्ञ छै सर्व प्रकार समर्थ छै 107
भक्तकौं दुख काहेकौं होनें दे॥ बहुरि अब हू देखिए है म्लेछ आय भक्तनिकौं उपद्रव करै है धर्म विध्वंस करै है

२०८

107 A

मूर्तिविघ्न करै है॥ सो परमेश्वर [redacted] कौं ऐसे कार्यका ज्ञान न होइ तौ सर्वज्ञपनौ रहै नहीं॥ जानैं पीछैं सहाय न करै तौ भक्तवत्सलता गई वा सामर्थ्यहीन भया॥ बहुरि साक्षीभूत रहै है तौ आगैं भक्तनिकौं सहाय करी कहिए है सो झूठ है॥ उनकी तौ एकसी वृत्ति है॥ बहुरि जो कहोगे वैसी भक्ति नाहीं है तौ म्लेछनितैं तौ भले हैं वा मूर्ति आदि [redacted] तौ उनहीका [redacted] स्थापन था तिनिकौं तौ विघ्न होने न देना था॥ बहुरि म्लेछ पापीनिका उदय हो है सो [redacted] परमेश्वरका कीया है कि नाहीं। जो परमेश्वरका कीया है तौ निंदकनिकौं सुखी करै, भक्त[redacted]निकौं दुःखदायक करै [redacted] तहां भक्तवत्सलपनौ कैसें रह्या॥ अर परमेश्वरका कीया न हो है तौ परमेश्वर [redacted] सामर्थ्यहीन भया॥ तातैं परमेश्वरकृत कार्य नाहीं॥ कोई अनुचरी व्यंतरादिक ही चमत्कार दिखावै है॥ ऐसा ही निश्चय करनी॥ बहुरि इहां कोऊ [redacted] पूछै कि कोई व्यंतर अपना प्रभुत्व कहै है वा [redacted] अप्रत्यक्षकौं बताइ दे, कोऊ कुस्थान वासादिक बताइ अपनी हीनता कहै॥ पूछिए सो न बतावै॥ भ्रमरूप वचन कहै [redacted] परंतु जो है॥ ताका उत्तर॥ व्यंतरनिविषै प्रभुत्वकी [redacted] अधिकहीनता तौ है॥ [redacted] परंतु जो कुस्थानविषै वासादिक बताइ हीनता दिखावै है सो तौ कुतूहलतैं वचन कहै है॥ व्यंतर बालकवत् कुतूहल कीया करै सो जैसें बालक कुतूहल करि आपकौं हीन दिखावै चिड़ावै गाली सुनै हार पाडै पीछैं हँसने लगि जाय॥ तैसें ही व्यंतर चेष्टा करै है॥ जो कुस्थानहीके वासी होइ तौ उत्तमस्थानविषै [redacted] आवै है तहां कौनके ल्याए आवै है॥ आपहीतैं आवै है तौ अपनी शक्ति होतैं कुस्थानविषै काहेकौं रहै॥ तातैं इनिका ठिकाना तौ जहां उपजै है तहां इस पृथ्वीकै नीचै वा ऊपरि है सो मनोज्ञ है॥ कुतूहलकौं रहै है तातैं [redacted] रोवते रोवते हँसने कैसें लगि जाय॥ बहुरि जो इनकौं पीड़ा होती होइ तौ लकी लीए बाहै सो कहै है। [redacted]॥ इतनी है मंत्रादिककी अचिंत्यशक्ति है सो कोई सो है।

पूछा औरनि कौं अन्यथा परिणमावै औरनिकौं दुख द्द इत्यादि विचित्रताके सें।

१०७

२ वाकोई प्रबल वाकों मनैं करै तब [redacted] रहि जाय ॥ वा [redacted] आप ही रहि जाय इत्यादि मंत्रकी शक्ति है ×

या मंत्रके निमित्त नैमित्तिक संबंध होइ तौ वाकै किंचित् गमनादि [redacted] न होइ सकै वा किं
चित् दुःख उपजै पूर्वैं जलो [redacted] वनो आदि न होहै [redacted] ॥ मंत्रवालो [redacted] जलाया कहै ॥ वह
विवह प्रगट होइ जाइ ॥ जातैं वैक्रियिक शरीरका जलावना आदि संभवै नाहीं ॥ बहुरि व्यंतरनिकै अवधि
ज्ञान है सो स्तोक क्षेत्र कालजाननेंका है ॥ काहूकै बहुत काहैं तहीं ॥ आपकै बहुत ज्ञान होइ तौ [redacted] अप्रत्यक्षकों
१ ताकाहूके
पूछै ताका उत्तर देत या [redacted] आपकैं स्तोक ज्ञान होइ तौ अन्य महत् ज्ञानीकों पूछि
आय करि जवाब दे ॥ बहुरि आपकै स्तोक ज्ञान होइ वा इच्छा न होइ तौ पूछै ताका उत्तर न दे ॥ ऐसा जा
नना ॥ बहुरि स्तोकज्ञानवाला (व्यंतरादिक)कैं उपजतां केतेक काल ही पूर्वजन्मका ज्ञान होइ सकै तातैं [redacted] होकों
इच्छा करि आय किछू चेष्टा करै ता करै ॥ बहुरि पूर्वजन्मकी बातें कहै कोऊ अन्य बार्ता पूछै तौ अवधि तौ
थोरा बिना जानें कैसें करै ॥ बहुरि जाका उत्तर आप न दे सकै वा इच्छा न होइ तौ मानादिकतैं उत्तर न दे
[redacted] कौतूहलादिकतैं झूठ बोलै ॥ ऐसैं [redacted] जाननी ॥ बहुरि [redacted] देवनिमें ऐसी शक्ति है
जो अपनी (बा) [redacted] अन्यके शरीरकों वा पुद्गलस्कंधकों इच्छा होय तैसैं परिणमावै [redacted]
तातैं नाना आकाररूप आप होइ वा
अपनी शक्ति ... रोगादियुक्त करै ॥ इहाँ इतनी है ॥ अपनें शरीरकों
अन्य नाना चरित्र दिखावै बहुरि अन्य जीवके शरीरकों ... परिणमाइ सकै तातैं सर्व कार्य करनेंकी शक्ति नाहीं
वा अन्य पुद्गलस्कंधनिकों तौ जेती शक्ति होइ तितनें ही परिणमाइ सकै वाकै पुण्यउदय होइ तौ
बहुरि अन्य जीवके शरीरादिककों वाका पुण्यपापकै अनुसारि परिणमाइ सकै वाकै पुण्यउदय होइ तौ [redacted] वाकों इष्ट कार्य नहिं करि सकै ॥ ऐसें
आप रोगादिरूप न परिणमाइ सकै ॥ अर पापउदय होइ तौ [redacted] वाकों इष्ट कार्य नहिं करि सकै ॥ ऐसें व्यंतरादिकनिकी शक्ति जाननी ॥ इहाँ कोऊ कहै इतनी जिनकी शक्ति पाइए तिनके मानने पूजनेमें दोष कहा
ता ॥ ताका उत्तर ॥ आपकै पापउदय होतैं सुख न दे सकै पुण्यउदय होतैं दुःख न दे सकै [redacted]

४ वाकै इच्छा होइ ... ॥
१ पीछै ताका उत्तरदे ॥ तातैं १
कौतूहलादि कहूं

१०८

108

विशेष

[redacted]।।बहुरि तिनिकै पूजनेतैं कोई पुण्यबंध होइ नांही रागादिककी वृद्धि तैं पाप ही हो है तातैं तिनिका
माननां पूजनां कार्यकारी नांही बुरा करनेंवाला है।।बहुरि व्यंतरादिक मनावै है पुजावै है सो कुतूहल करै है।
किछू प्रयोजन नांही राखै है।।जो उनकौं मानैं पूजै तिससेती कुतूहल कीया करै।।जो न मानै पूजै तासौं किछू
न कहै है।।जो उनकै प्रयोजन ही होइ तौ न माननें पूजनेवालोंकौं घनां दुखी करै सो तो जिनकै न माननें पूजनें
का अवगाढ है तासौं किछू भी कहते दीसते नांही।।[redacted] बहुरि प्रयो
जन तौ [redacted] क्षुधादिककी पीडा होइ तौ होइ सो उनकै [redacted] व्यक्त है नांही।।जो होइ तौ उनकै अर्थि नैवे
द्यादिक दीजिए ताकौं नांही ग्रहण क्यौं न करै वा औरनिकै ही जिमावनैं आदि [redacted] क
रनें ही कौं काहे कौं कहै है तातैं उनकै कुतूहल मात्र क्रिया है सो आपकौं उनकै कुतूहलका ठिकाना भए दुख
होइ हीनता होइ तातैं उनकौं माननां पूजनां योग्य नांही।।बहुरि कोऊ पूछै कि व्यंतर [redacted] ऐसैं कहै है [redacted]
[redacted] गया आदि विषै पिंड प्रदान करौ तौ हमारी गति होइ हम बहुरि न आवैं सो कहा है ताका उत्तर।।जीव
निकै पूर्वभवका संस्कार तौ रहै ही है व्यंतर[redacted]निकै [redacted] पूर्वभवका स्मरण [redacted] तैं विशेष संस्कार है
तातैं पूर्वभवकै विषै ऐसी ही वासना थी गयादिक विषै पिंडप्रदानादिककी सुगति होइ है तातैं [redacted] ऐसे कार्य क
रनेंकौं कहै है।।जो [redacted] मुसलमान मरि व्यंतर होहै ते [redacted] ऐसैं
कहै [redacted] नांही वे अपनें संस्कार रूप ही वचन कहै।।तातैं सर्व व्यंतरनिकी गति तिनिमैं होती ही होइ तौ सब
ही समान प्रार्थना करैं [redacted] सो है नांही ऐसा जाननां।।[redacted] ऐसैं व्यंतरादिकनिका स्वरूप जाननां।।ब
हुरि सूर्य चंद्रमा ग्रहादिक ज्योतिषी है।।तिनिकौं [redacted] पूजै है सो भी भ्रम है।।सूर्यादिककौं [redacted] परमेश्वरका
अंश मानि पूजै है।।[redacted] सो वाकै तौ एक प्रकाश ही की अधिकता भासै है सो प्रकाशवान तौ अन्य रत्नादिक भी
हो है।।अन्य कोई [redacted] ऐसा लक्षण नांही जातैं वाकौं [redacted] परमेश्वरका अंश मानिए।।बहुरि [redacted]

109

स्वयमेव गमनादि करै है पूरपके

[illegible] वैइ मांत्रिक कों धनादिक की प्राप्ति के अर्थि पूजै है सो उसके पूजने तैं ही धन होता होइ तौ सर्व स्व-
दी इस कार्य कों करै तातैं मिथ्याभाव है। बहुरि ज्योतिष के विचार तैं खोटा ग्रहादिक आऐ तिनका पूजनादि
करै है वाके अर्थि दानादिक दे है सो [illegible] जैसें हिरणादि
कहा हिरण वांवैं आऐ सुख दुख होने का आगामी ज्ञान कों कारण है [illegible] किछु सुख दुख देनें कों समर्थ नाहीं
तैसें ग्रहादिक पूर्वोक्त थाका [illegible] योग कों प्राप्त होतैं सुख दुख होने का आगामी ज्ञान कों कारण हो
है किछू सुख दुख देनें कौं समर्थ नाहीं। कोई तौ उनका पूजनादि करै ताकै भी इष्ट न होइ कोई न करै ताकै भी इ-
ष्ट होइ तातैं तिनका पूजनादि करनौं मिथ्याभाव है। इहां कोऊ कहै [illegible] देनों तौ पुन्य है सो
भला ही है ताका उत्तर धर्म के अर्थि देनौं पुन्य है। यह तौ दुःख [illegible] का भय करि दे है तातैं पाप ही है
[illegible] इत्यादि अनेक प्रकार ज्योतिषी देवनि कों पूजै है। सो मिथ्याभाव है। [illegible]
[illegible]
बहुरि देवी दिहाडी आदि हैं ते केई तौ व्यंतरी [illegible] वा ज्योतिषणी हैं तिनकौं अन्यथा स्वरूप मानि पूजनादि
करै हैं। केई कल्पित हैं सो तिनकी कल्पना करि पूजनादि करै है। ऐसें व्यंतरादिक के पूजनें का निषेध
कीया। इहां कोऊ कहै क्षेत्रपाल दिहाडी पद्मावती आदि देवी यक्ष यक्षणी आदि जे [illegible] जिन
[illegible] मत कों अनुसरै है तिनके पूजनादि करनें मैं तौ दोष नाहीं। ताका उत्तर। जिन
मत विषै संयम धारैं पूज्यपनौ हो है सो देवनि कै संयम होता ही नाहीं। बहुरि इनिकों सम्यक्ती मांनि पू-
जिए है तौ भवनत्रिक मैं सम्यक्त्व की [illegible] मुख्यता नाहीं। जो सम्यक्त्व करि ही पूजिए तौ सर्वार्थसिद्धि
के देव लौकांतिक देव तिनिकौं ही क्यों न पूजिए। बहुरि कहोगे इनिकै जिनभक्ति विशेष है सो [illegible] भक्ति

स्वयमेव गमनादि करै है। [illegible]

बालुषका लोनकरि [illegible]

१०९

कौ विशेषपना है। सौधर्म इन्द्रकै है बहु सम्यग्दृष्टी भी है वाकौं छोरि इनिकौं काहेकौं पूजिए। बहुरि जो
कहोगे जैसें राजाके प्रतीहारादिक हैं तैसें तीर्थंकरकै ए हैं सो समवसरणादि विषैं इनिका अधिकार
नाहीं। यहु झूठी मानि है। बहुरि जैसें प्रतीहारादिकका मिलाया राजासौं मिलिए तैसें [redacted]
ए तीर्थंकरकौं मिलावते नाहीं। उहां तौ [redacted] जाकै भक्ति होइ सोई तीर्थंकरका दर्शनादिक करौ किछू
किसीकै आधीन नाहीं। [redacted] ~~ऐसें क्षेत्रपालादिकका मानना भी मिथ्याभाव ही है~~ बहुरि देखो अ
ज्ञानता आयुधादिक लीए रौद्रस्वरूप जिनिका गाय गाय भक्ति करै सो जिनमत विषै रौद्ररूप पूज्य
भया तौ यहु भी अन्यमतहीकै समान भया। तीव्र मिथ्यात्वभावकरि जिनमतविषैं ऐसी विपरीत
प्रवृत्तिका मानना हो है। ~~ऐसैं~~ क्षेत्रपालादिककौं भी पूजना योग्य नाहीं। बहुरि गऊ सर्पा
दि तिर्यंच [redacted] प्रत्यक्ष ही आपतैं हीन भासै है। इनिका तिरस्कारादिक करि सकिए है।
[redacted] इनकी निंद्यदशा प्रत्यक्ष देखिए है। ~~[redacted] किछू~~
~~मिथ्यात्व अनुमानगोचर है नाहीं तातैं तिनिका पूजना महामिथ्याभाव है~~ वृक्ष अग्नि
जलादिक स्थावर [redacted] ~~मिथ्याभाव है~~ [redacted] तिर्यंचहूनितैं अत्यंत ही
न अवस्थाकौं प्राप्त देखिए है। बहुरि शस्त्र दवाति आदि अचेतन [redacted]
सर्वशक्तिकरि हीन प्रत्यक्ष भासै है। पूज्यपनेका उपचार भी संभवै नाहीं। तातैं इनिका पूज
ना महामिथ्याभाव है। इनिकौं पूजें प्रत्यक्ष वा अनुमान करि किछू भी फलप्राप्ति नाहीं भासै है। ता
तैं इनिकौं पूजना योग्य नाहीं। या प्रकार सर्व ही कुदेवनिका पूजना मानना निषेध [redacted] है।
[redacted] देखो मिथ्यात्वका महिमा। [redacted] लोकविषै तौ [redacted]

110

आपतैं नीचकौं नमतैं [redacted] आपकौं निंद्य मानै॥ अर मोहित होइ रोटी पर्यंतकौं पूजता नीतिं आप
कौं न मानै॥ बहुरि लोकविषै तौ [redacted] जातैं प्रयोजन सिद्धि होता जानै ताहीकी सेवा करै। अर मोहि
त होइ कुदेवनितैं मेरा प्रयोजन कैसैं सिद्धि होगा ऐसा विना विचारें ही [redacted] कुदेवनिका सेवन करै।
बहुरि कुदेवनिका सेवन करतैं हजारौं विघ्न होइ ताकौं गिनैं नाहीं कोई पुण्यके उदयतैं इष्ट कार्य हो
इ जाइ ताकौं कहै इसके सेवनतैं यहु कार्य भया॥ बहुरि कुदेवादिकका सेवन कीयें विना जे इष्ट कार्य
होइ [redacted] तिनकौं गिनैं नाहीं अर कोई अनिष्ट होइ तौ कहै याका सेवन न कीया तातैं अनिष्ट भया॥ इ
तना नाहीं विचारै है जो [redacted] इनिहीकै आधीन इष्ट अनिष्ट करना होइ तौ जे पूजै तिनकै इष्ट होइ न
पूजै तिनकै अनिष्ट होइ सो तौ दीसता नाहीं॥ जैसैं काहूकै शीतलाकौं बहुत मानैं भी पुत्रादि मरैं ते देखि
ए काहूकै विना मानैं भी जीवते देखिए है। [redacted] तातैं शीतलाका माननां किछू कार्यकारी
नाहीं। ऐसैं ही सर्व कुदेवनिका माननां किछू कार्यकारी नाहीं॥ इहां कोऊ कहै॥ कार्यकारी नाहीं तौ मति
होहु किछू तिनिकै [redacted]नतैं बिगार भी तौ होता नाहीं॥ ताका उत्तर॥ जो बिगार न होइ तौ हम काहेकौं निषेध
करैं॥ परंतु [redacted] एक तौ मिथ्या[redacted]दृढ होनेतैं मोक्षमार्ग दुर्लभ होइ जाइ है सो यहु [redacted] बडा बिगार है
एक पापबंध होनेतैं आगामी दुख पाईए है॥ यहु बिगार है॥ इहां [redacted] पूछै कि मिथ्यात्वादिभाव तौ अत
त्वश्रद्धान भएं होइ अर पापबंध [redacted] खोटे कार्य कीएं होइ॥ तिनकै माननेतैं मिथ्यात्वादिक पापबंध कैसैं
होइ॥ ताका उत्तर॥ प्रथम तौ परद्रव्यनिकौं इष्ट अनिष्ट माननां ही मिथ्या है। बहुरि [redacted] जो इष्ट अनिष्ट + ११०
[redacted] तौ ताका कारन पुण्य पाप [redacted] है॥ तातैं जैसैं पुण्यबंध होइ
पापबंध न होइ सो करै॥ बहुरि [redacted] जो कर्म उदय [redacted] का तौ निश्चय न होइ इष्ट अनि

बुद्धिपाई ए है

जातैं कोऊ कुदेवादिका मित्र शत्रु है नाहीं

110

२केवल२

इत्यादि कारन तिनिकै संयोग वियोग का उपाय करै॥ सो कुदेव के मानने तैं इष्ट अनिष्ट बुद्धि हरि
होती नाही वृद्धि को प्राप्त होहै॥ बहुरि पुण्य बंध भी नाही होता पाप बंध होहै॥ बहुरि [redacted] कुदेव काहू कौं
धनादिक देते खोसते देखे नाही तातैं ए बाह्य कारन भी नाही इनका मानना किसै अर्थ कीजिए है
जब अत्यंत [redacted] भ्रम बुद्धि होइ जीवादि तत्त्वनिका श्रद्धान ज्ञान का अंश भी न होइ
अर रागद्वेष की अति तीव्रता होइ तब जे कारण नाही तिनकौं भी [redacted] इष्ट अनिष्ट का कारण मानै
तैं तब कुदेवनि का मानना हो है॥ ऐसा तीव्र मिथ्यात्वादि भाव भए मोक्षमार्ग [redacted] अति
दुर्लभ होहै॥ आगैं कुगुरु के श्रद्धानादिक कौं निषे[redacted]धिए है॥ जे जीव विषय कषायादि अधर्मरूप
तौ परिणमै अर आप कौं धर्मात्मा मनावै धर्मात्मा [redacted] योग्य नमस्कारादि क्रिया करावै
अथवा किंचित् धर्म का कोई अंग धारि बडे धर्मात्मा कहावै बडे धर्मात्मा योग्य क्रिया करा
वैं ते सर्व कुगुरु जानने॥ जातैं धर्म पद्धति विषै तौ विषय कषायादि छूटैं जैसा धर्म कौं धारै
[redacted] तैसा ही अपना पद [redacted] मानना योग्य है॥ तहाँ केई तौ कुल करि आप कौं गुरु मानै हैं॥
[redacted]
[redacted] तिनि विषै केई ब्राह्मणादिक तौ कहै हैं हमारा कुल ही ऊंचा है हम सर्व के गुरु हैं॥ सो [redacted]
[redacted] उसकुल की उच्चता तौ धर्मसाधन तैं [redacted] है [redacted] उच्चकु
लविषै उपजि हीन आचरन करै तौ वा कौं उच्च कैसें मानिए॥ जो कुल विषै उपजने ही तैं उच्चपनो रहै
तौ मांसभक्षणादिकी ए भी वा कौं उच्च ही मानौ॥ सो बनै नाही॥ [redacted] भारत विषै भी अनेक प्रकार
ब्राह्मण कहे हैं तहाँ जो ब्राह्मण होइ चांडाल कार्य करै ताकौं चांडाल ब्राह्मण कहिए ऐसा कह्या है॥
सो कुल ही तैं [redacted] उच्चपनो होइ तौ ऐसी हीन संज्ञा काहे कौं दई है॥ बहुरि [redacted] शास्त्रनि

२केवल२

Margin notes:

२मानादि
कतैं२

२ऐसें धर्म
का आश्रय
करि आप
कौं बड़ा मना
वैं२

ऐसें है तौ

विषै ऐसा नीकहै है ॥ वेदव्यासादिक मछली आदिकतें उपजे तहाँ कुलका अनुक्रम कैसें रह्या ॥ बहुरि मूल उत्पत्ति तौ ब्रह्मातैं कहै है तातैं सर्व्वका एककुल है भिन्न कुल कैसें रह्या ॥ बहुरि उच्चकुलकी स्त्रीनिकै नीचकुलके पुरुषतैं कैं
वा नीचकुलकी स्त्रीकै उच्चकुलके पुरुषतैं संगम होतैं संतति होती देखिए तहाँ कुलका थे
प्रमाण कैसें रह्या ॥ जो कदाचित् कहैगा ऐसैं तौ उच्च नीच कुलका विभाग काहेकौं मानौं हौ सो लौकिक कार्यनि विषै असत्य भी प्रवृत्ति संभवै धर्म्मकार्य्य विषैं तौ असत्यता संभवै नाहीं ॥ तातैं धर्म्मपद्धति विषै कुल अपेक्षा महंतपना नाहीं संभवै है ॥ धर्म्मसाधन हीतैं महंतपना हो तै है
है ॥ ब्राह्मणादि कुलनि विषै धर्म्म प्रवृत्ति सो धर्म्मकी प्रवृत्ति छोडि हिंसादिक पाप विषै प्रवर्त्तैं महंतपनौ कैसें रहै ॥ बहुरि केई कहै है जो हमारे वडे महंतता है सो
भक्त भए हैं सिद्ध भए हैं धर्म्मात्मा भए हैं हम उनकी संतति विषै हैं तातैं हम गुरु हैं ॥ सो उन वडेनिके वडे तौ ऐसे उत्तम थे नाहीं। तिनकी संतति विषै उत्तम कार्य कीए उत्तम मानौं हौ तौ उत्तम पुरुषकी संतति विषै उत्तम
जो उत्तम कार्य न करै ताकौं उत्तम काहेकौं मानौं हौ ॥ बहुरि शास्त्रनि विषै वा लोक विषै यहु प्रसिद्ध है ॥ पिता शुभ कार्य करि उच्च पदकौं पावै पुत्र अशुभ कार्य करि नीचपदकौं पावै अथवा पिता अशुभ कार्य करि नीचपदकौं पावै पुत्र शुभ कार्य करि उच्च पदकौं पावै तातैं वडेनिकी अपेक्षा महं १११
तापना मानना योग्य नाहीं ॥ ऐसें कुलकरि गुरुपनौ माननां मिथ्याभाव जाननां ॥ बहुरि केई पट्ट करि गुरुपनौं मानै है ॥ कोई पूर्वैं महंत पुरुष भया होइ ताकै पाटि जे शिष्य प्रतिशिष्य होते आए तहाँ तिनि विषै तिस महंत पुरुषकेसे गुन न होतैं भी गुरुपनौं मानिए सो

महापाप

जो ऐसे ही होइ तौ उस पाटविषै कोई परस्त्रीगमनादि कार्य करैगा सो भी धर्मात्मा होगा सुगति को प्राप्त होगा सो ऐसें बनै नाहीं। अर वह पापी [redacted] तो पाट का अधिकार कहा रह्या॥ जो [redacted] गुरुपदयोग्य कार्य करै सो ही गुरु है॥ बहुरि केई [redacted] पहलैं तौ स्त्री आदि के त्यागी थे पीछैं [redacted] भ्रष्ट होइ विवाहादि कार्य करि गृहस्थ भए॥ तिनिकी संतति आपकौं गुरु मानै है। सो भ्रष्ट भए पीछैं गुरुपनो कैसें रह्या और गृहस्थवत् ए भी भए॥ इतनो विशेष भया जो ए भ्रष्ट होइ गृहस्थ भए इनिकौं मूल गृहस्थ धर्मी [redacted] गुरु कैसें मानैं॥ बहुरि केई अन्य तौ सर्व पापकार्य करै एक स्त्री परणैं नाहीं इस ही अंगकरि [redacted] गुरुपनो मानै है॥ सो एक [redacted] अब्रह्म ही तौ पाप नाहीं हिंसा परिग्रहादिक भी पाप हैं तिनकौं करतैं धर्मात्मा गुरु कैसें मानिए॥ बहुरि वह [redacted] धर्मबुद्धितैं विवाहादिक का त्यागी नाहीं भया है॥ कोई [redacted] आजीविका वा लज्जा आदि प्रयोजनकौं लीएँ विवाह न करै है जो धर्मबुद्धि होती तौ हिंसादिककौं काहेकौं बधावता॥ बहुरि जाकै धर्मबुद्धि नाहीं ताकै शीलकी भी [redacted] दृढता रहै नाहीं अर विवाह करै नाहीं तब परस्त्रीगमनादि महापापकौं उपजावै॥ ऐसी क्रिया होतैं गुरुपनौ माननौ महा भ्रमबुद्धि है॥ [redacted] बहुरि केई काहू प्रकार का भेष धारनेतैं गुरुपनो मानै है सो भेष धारैं कौन धर्म भया॥ जातैं धर्मात्मा गुरु मानै॥ तहाँ केई [redacted] टोपी दे हैं [redacted] केई गूदरी राखै हैं केई चोला पहरैं हैं केई [redacted] चादरि ओढैं हैं केई लाल वस्त्र राखै है केई स्वेत वस्त्र राखै है केई भगवा राखै है केई टाट [redacted] पहरैं है केई मृगछाला राखै हैं इत्यादि अनेक स्वांग बनावैं है सो जो

केई राख लगावैं हैं

112

शीतउष्णादिक सहे न जाते थे लज्जा [redacted] न छूटै थी तो [redacted] पाघ जामा इत्यादि [redacted] प्रवृत्तिरूप
वस्त्रादिक का त्याग काहे कौं कीया॥ उनकौं छोरि ऐसे स्वांग बनावने मैं कौं न धर्म का अंग भया॥
[redacted] ॥ गृहस्थनिकौं ठिगनै कै अर्थि [redacted] ऐसे भेष
अजाननें॥ जो गृहस्थ सारिखा अपना स्वांग राखै तौ गृहस्थ कैसें ठिगावै॥ अर याकौं उन करि
जीविका वा [redacted] धनादिक वा [redacted] वा मानादिक का प्रयोजन साधना, तातैं ऐसा
स्वांग बनावै है॥ जगत भोला [redacted] तिस स्वांग कौं [redacted] देखि ठिगावै अर [redacted] धर्म भया मानै॥
सो यह भ्रम है॥ सो ई कह्या है॥ ७॥ जह कुवि वेस्सारत्तो, मुसिज्जमाणो विमण्णए हरिसं। तह
मिच्छवेसमुसिया, गयं पि ण मुणंति धम्मणिहिं॥१॥ याका अर्थ जैसें कोई विरुपा आसक्त पुरुष [redacted]
धनादिक कौं मुसावता हवा भी हर्ष मानै है। तैसें मिथ्या॰ भेष करि [redacted]
[redacted] ठिगाए जीव ते [redacted] नष्ट होतैं धर्म धन कौं नाहीं जानै है॥ भावार्थ यहु मिथ्याभे
ष वाले जीवनिकी [redacted] सुश्रूषा आदि तैं अपना धर्म धन नष्ट होइ ताका विषाद नाहीं [redacted]
[redacted] हर्ष करै है॥ [redacted]॥ तहाँ
केई तौ [redacted] मिथ्याशास्त्रनिविषै [redacted] भेष निरूपण कीए हैं तिनिकौं धारै हैं॥ सो [redacted]
[redacted] सुगम क्रिया तैं उच्च पद प्ररूपणतैं मेरी मानि होइ वा अन्य जीव इस मार्गवि ११२
उनशास्त्रनिका करता पापी है॥ षै बहुत लागै॰ इस अभिप्राय तैं मिथ्या॰ उपदेश्या दीया ताकी परंपरा करि विचार रहित जीव [redacted]
इतना तौ विचारै नाहीं॥ जो सुगम क्रियातैं उच्च पद होना बतावै है सो इहां किछू दगा है॥ [redacted]

११८

त्रमकरि तिनिका कह्या मार्गविषे प्रवर्त्तै है।। बहुरि केई शास्त्रनिविषै तौ मार्ग कठिन निरूपण कीया
सो तौ सधै नाही अर अपना [redacted] ऊंचा नाम धराएँ बिना लोक मानै नाही।। [redacted] इस अभिप्राय
तैं [redacted] यती मुनि [redacted] आचार्य उपाध्याय साधु भट्टारक सन्यासी
योगी तपस्वी नग्न इत्यादि [redacted] नाम तौ ऊंचा धरावै है अर इनिका [redacted] आचरन
कौं नाही साधि सकै है तातैं • इच्छा अनुसारि नाना भेष बनावै है।। बहुरि केई अपनी इच्छा अनुसारि
ही तौ नवीन नाम धरावै है अर इच्छा अनुसारि ही भेष बनावै है।। ऐसैं अनेक भेष [redacted] गुरुपनौं १धारने तैं२
मानै है सो यहु मिथ्या है।। इहाँ कोऊ पूछै कि [redacted] भेष तौ बहुत प्रकार के दीसै तिनि विषै
साँचे झूठे भेष की पहचानि कैसैं होइ ताका समाधान।। जिनि भेषनिविषै विषय कषाय किछू लगा
व नाही ते भेष साँचे हैं सो साँचे भेष तीन प्रकार है अन्य सर्व भेष मिथ्या है।। सो ई षट्पाहुड विषै
कुंदकुंदाचार्य करि कह्या है।। गा।। एगं जिणस्स रूवं। बिदियं उक्किट्ठसावयाणं तु।। अवरट्ठियाणं
४याका अर्थ२ तियं। चउत्थं पुण लिंग दंसणं णत्थि।।१।। एक तौ जिन का स्वरूप निर्ग्रंथ दिगंबर मुनि लिंग अर
दूसरा उत्कृष्ट श्रावकनि का रूप दशाईग्यारही प्रतिमा का [redacted] धारक श्रावक • का लिंग अर तीसरा
आर्यिकानि का रूप यहु स्त्रीनिका लिंग ऐसैं ए तीन लिंग तौ श्रद्धानपूर्वक है।। बहुरि चौथा लिंग स
म्यग्दर्शन स्वरूप नाही है। ताका अर्थ यहु इन तीन लिंग विना अन्य लिंग कौं मानै सो श्रद्धानी नाही मि
थ्यादृष्टि है।। बहुरि इनि भेषीनि विषै [redacted] केई भेषी अपने भेष की • प्रतीति करावनें कै अ
र्थि किंचित [redacted] धर्म कौं भी पालै है।। जैसें [redacted] खोटा • रूपैया • चलावनें

१कार्यगर२

113

वाला तिस विषै किछू रूपा का भी [redacted] असा राखै है।। तैसै धर्म का कोई अंग दिखाय आपनी उच्च पदम
नावै है।। इहां कोऊ कहै कि जो धर्म साधन कीया ताका तौ फल होगा।। ताका उत्तर।। जैसै उच्च पद मका ना
म धराय कलममात्र भी निरूण करै तौ पापी है।। अर एक तका नाम धराय किंचित् ऊन भोजन करै तौ
भी धर्मात्मा है।। तैसैं उच्च पदवी का नाम धराय तामैं किंचित भी अन्यथा प्रवर्ते तौ महा पापी है अर
नीची पदवी का नाम धराय किछू भी धर्म साधन करै तौ धर्मात्मा है।। तातैं धर्म साधन तौ जे
६। ता बनै तेता कीजिए किछू दोष नांही।। परंतु ऊंचा धर्मात्मा नाम धराय नीची क्रिया कीए महापाप ही
हो है।। ~~इहां कोऊ कहै यह तौ सत्य परंतु कोई आपकौं इहां मुनि नाम धारि इहां मुनि ... ऐसा~~
[redacted] सोई षट् [redacted] पाहुड विषै कुंदकुंदाचार्य करि कह्या है। जिहजायरूवसरिसो।
तिलतुसमित्तं ण गहदि हत्थेसु।। जइ लेइ अप्पबहुयं। तत्तो पुण जाइ णिग्गोयं।।१।। याका अर्थ।।
मुनिपद है सो यथाजातरूप सदृश है।। [redacted]
जैसा जन्म होते था तैसा नग्न [redacted] है।। सो ऐसा मुनि अर्थ जो [redacted] धन वस्त्रादिक वस्तु तिनि विषै
तिलका तुसमात्र भी ग्रहण न करै।। बहुरि जो कदाचित् अल्प वा बहुत [redacted] वस्तु ग्रहै तौ। तिसतैं निगो
द जाइ।। सो इहां देषो गृहस्थपनै मैं [redacted] बहुत परिग्रह राषि किछू प्रमाण करै तौ भी [redacted]
५.३४ [redacted] स्वर्ग मोक्षका अधिकारी है अर मुनिपनै मैं किंचित् परिग्रह [redacted] अंगीकार कीए ११२
भी निगोद जानेवाला होहै तातैं ऊंचा नाम धराय नीची प्रवृत्ति युक्त नांही।। [redacted] देखो हुंडावसर्पि
णी काल विषै यह कलिकाल प्रवर्तै है ताका दोषकरि जिनमत विषै [redacted] मुनि का स्वरूप तौ असा
सही बाह्य अभ्यंतर परिग्रह का लगाव नांही।। अर सब विषय कषाय रहित जीव मुनि [redacted]
केवल अपने आत्मा कौं आप अनुभवते शुभाशुभ भावनि तैं उदासीन होय रहै

113

१बहुरि

पदधारै तहाँ [redacted] सर्वसावद्यका त्यागी होइ पंचमहाव्रतादि अंगीकार करै ॥ [redacted] स्वेतरक्तादि वस्त्र [redacted] निकों
ग्रहैं वा [redacted] भोजनादि विषै लोलुपी होइ वा आपनी पद्धति विधा
वनें के उद्यमी होइ ॥ वा केई धनादिक नी राषै वा [redacted] हिंसादिक करैं आरंभ करैं सो लोक परिग्रह
ग्रहणेंका फल निगोद कह्या है तो ऐसे पापनिका फल तौ अनंत संसार होइ ही होइ ॥ बहुरि लोक
निकी अज्ञानता देखो कोई एक प्रतिज्ञा भंग करै ताकौं तौ पापी कहै ऐसी बडी प्रतिज्ञा भंग करते देषै
बहुरि तिनिकौं गुरु मांनैं मुनिवत तिनिका सन्मानादि करै सो शास्त्रविषै कृत कारित अनुमोदनीका
फल कह्या है तातैं इनिकौं भी विसा ही फल लागै है ॥ [redacted] मुनिपद लेनेंका तौ क्रम यहु है पहलैं तत्वज्ञा
न होइ पीछैं उदासीन परिणाम होइ [redacted] परीषहादि सहनेंकी शक्ति होइ तब वह स्वयमेव
मुनि [redacted] भया चाहै तब श्रीगुरु मुनि [redacted] धर्म अंगीकार करावै ॥ यह कौंन विपरीत जे [redacted] तत्वज्ञान
रहित विषयकषायासक्त जीव तिनिकौं [redacted] मायाकरि वा लोभ दिषाइ मुनि
[redacted] पद दैनां पीछैं अन्यथा प्रवृत्ति करावनी ॥ [redacted] सो [redacted] यहु बडा अन्याय है ॥ ऐसैं कुगुरु का वा तिनिके से
वनका निषेध कीया ॥ अब इस कथनके [redacted] दृढ करनेंकों शास्त्रनिकी साषि दीजिए है ॥ उपदेशसि
द्धांतरत्नमाला विषै ऐसा कह्या है । गुरुणो भट्टा जाया सद्दे थुणिऊण लिंति दाणाइं ॥ दोण्णवि
अमुणियसारा दूसमिसमयम्मि बुड्डंति ॥१॥ [redacted] कालदोषतैं गुरु हैं ते भाट भए ॥ [redacted] भाटवत्
शब्दकरि दातारकी स्तुति करि दानादिक ग्रहैं [redacted] हैं सो इस दुःषमा

२बारहै

।।५

कालविषै होऊ ही दातार वा पात्र सीमा रविषेइ वै है ॥ बहुरि तहीं कह्या है। सप्पे दिट्ठे णासइ। लोऊ
णहि को वि किंपि अरकेइ॥ जो चयइ कुगुरु सप्पं। हा मूढा भणंति तं दुट्ठं ॥१॥ [redacted] याका अर्थ
सर्प कौं देखि कोऊ भागे ताकौं तौ लोक कछु कहै नाही ॥ हाय हाय देखो जो कु
गुरु सर्प कौं छोडै ताहि मूढ दुष्ट कहै बुरी बोलै ॥७॥ सर्पादिक मरण। कुगुरु अनंता इंद्र मर
णाई। तो बरस प्यगाहियै। मा कुगुरु सेवली नद्द ॥१॥ अहो सर्प करि तौ एक ही बार मरण होइ अर *हे नइ
कुगुरु अनंत मरण दे है अनंत वार जन्म मरण करावै है ॥ तातैं सीप [redacted] का ग्रहण भला। अर
कुगुरु का सेवन [redacted] भला नाही ॥७॥ और भी गाथा तहां [redacted] इस
श्रद्धान दृढ करनें कौं कारण बहुत कही है सो तिस ग्रंथतैं जानि लेनी ॥ बहुरि संघपट्ट विषै ऐसा कहा
है ॥७॥ क्षुत्क्षामः किल कोऽपि रंकशिशुकः प्रव्रज्य चैत्ये क्वचि[redacted]त्। कृत्वा किंचन पक्षमक्षतकलिः
प्राप्तस्तदाचार्यकं॥ चित्रं चैत्यगृहे गृहीयति निजे गच्छे कुटुंबीयति। स्वं शक्रीयति बालिशीयति बुधान्
विश्वं वराकीयति ॥१॥ याका अर्थ ॥ देखो क्षुधाकरि कृश कोई रंक का बालक सो कहीं चैत्यालयादि
विषै दीक्षा धारि कोई पक्षकरि पापरहित न होता संता आचार्यपद कौं प्राप्त भया ॥ बहुरि वह [redacted] चै
त्यालय विषै अपनैं गृहवत् प्रवर्तै है निज गच्छ विषै कुटुंबवत् प्रवर्तै है ॥ आपकौं इंद्रवत् महान् मानै
है ॥ [redacted] ज्ञानीनि कौं बालकवत् अज्ञानी मानै है सर्व गृहस्थनि कौं रंकवत् मानै है ॥ सो यह ११४
बडा आश्चर्य भया है ॥ बहुरि यैर्जातो न च वर्द्धितो न च न च क्रीतो इत्यादि काव्य है ताका अर्थ ऐसा है।
[redacted] जिनि करि जन्म न भया ॥ वध्या नाही। मोलि लीया नाही। देणदार भया नाही ॥ इत्यादि [redacted] को
ई प्रकार ताल कनी री ॥ अर गृहस्थनि कौं वृषभवत् वहावै [redacted] जोरावरी दानादिक लेसो

[redacted] लायलायय बहुजगतरागाकरिरहित है कोई न्याय पूछनेंवाला नाही ।। असैं ही इहां अन्य
नके पोषक [redacted] है सो तिनग्रंथनैं जाननां ।। इहां कोऊ कहै ।। एतो स्वेतांबर विरचित उपदेश है ति
निकी [redacted] ई ।। ताका उत्तर ।। जैसैं [redacted] नीचा पुरुष जाका निषेध करै ताका उत्तमपुरुष कै तौ
सहज ही निषेध कीया ।। तैसैं जिनि कै वस्त्रादि उपकरण कहे तेऊ जाका निषेध करैं तौ दिगंबर धर्म्म विषै
तौ अैसी विपरीतिका सहज ही निषेध भया ।। बहुरि दिगंबर ग्रंथनि विषैं जो इस अश्रद्धान के पोषक वचन
है ते ही श्री कुंदकुंद आचार्य कृत षट्पाहुड विषैं अैसा कह्या है ।। ७।। दंसणमूलो धम्मो। उवइट्ठो जिण
वरेहिं सिस्साणं। तं सोऊण सकण्णे। दंसणहीणो ण वंदिव्वो।।१।। याका अर्थ ।। जिनवर करि सम्यग्
दर्शन है मूल जाका असा धर्म्म उपदेश्या है ।। ताकौं सुनिकरि हे कर्ण सहित हौ यह मांनौं [redacted] सम्यक्त रहित
जीव वंदनें योग्य नाही ।। जे आप कुगुरु ते कुगुरु का श्रद्धान रहित सम्यक्ती कैसैं होइ विना सम्यक्त अन्य धर्म्म
भी न होइ धर्म्म बिना वंदनें योग्य कैसैं होइ ।। ७।। [redacted] जे दंसणेसु भट्ठा। णाणे भट्ठा चरित्तभट्ठाय।।
एदे भट्ठविभट्ठा। सेसं पि जणं विणासंति।। [redacted] २।। जे दर्शन विषैं भ्रष्ट है। ज्ञान विषै भ्रष्ट है। चारित्र भ्रष्ट है
ए जीव भ्रष्ट तैं भ्रष्ट है।। और भी जीव जे उनका उपदेश मानै है। तिन जीव कौं [redacted] नाश करै है बुरा करै है
।। जे दंसणेसु भट्ठा। पाए पाडंति दंसणधराणं। ते हुंति लल्लमूया। बोही पुण दुल्लहा तेसिं ।।३।। जे
[redacted] आप तौ सम्यक्त भ्रष्ट है अर सम्यक्तधारकनिकौं अपनें पगौं पडाया चाहै है ।। ते लू
ले गूंगे हैं ।। भाव यहु स्थावर हो है ।। बहुरि तिनि कै बोधि की प्राप्ति महादुर्लभ हो है ।। ७।। जे वि पडंति
तिय तेसिं। जाणंता लज्जागारवभएण।। तेसिं पि णत्थि बोही। पावं अणुमोयमाणाणं।।१।। जे जानता
हूवा भी लज्जा गारव भय करि तिनिकै पगां पडै है ।। तिनिकै भी बोधि [redacted] जो सम्यक्त सो नाही है ।। [redacted]

116

ए जे पावमोहियमई। लिंगं घत्तूण जिणवरिंदाणं॥ पावं कुणंति पावा। ते चत्ता मोक्खमग्गंमि॥ ११॥ याका अर्थ॥ पाप करि मोहित भई है बुद्धि जाकी ऐसा जो जीव जिनवरनि का लिंग धारि करि पाप करै है ते पापमूर्ति मोक्षमार्ग विषै भ्रष्ट जानने॥ ११॥ बहुरि [redacted] कह्या है।

तिस

कैसे हैं ए जीव पाप की अनुमोदना करते हैं। पापीनि का सन्मानादिक करि पाप की अनुमोदना का फ
ल लागै है॥ ७॥ [redacted] परिग्गहगहणे अप्पो बहुयं च हवइ लिंगस्स॥ सो गरहिउ जिणवयणे। परिगह
रहिउ निरायारो॥ जिस लिंग कै थोरा वा बहुत परिग्रह का अंगीकार होइ सो जिनवचन विषै निंदा
योग्य है परिग्रह रहित ही [redacted] अनगार होहै॥ ७॥ धम्ममि णिप्पवासो। दोसावासो य उच्छुफुल्लसमो॥
णिप्फलणिग्गुणयारो॥ णडसवणो णग्गरूवेण॥ ८॥ जो धर्म विषै निरुद्यमी है। दोषनि का घर है॥ ई
ख के फूल समान निःफल है॥ गुण का आचरण करि रहित है॥ सो नग्नरूप करि नटश्रमण है नीउ
वत् भेषधारी है॥ सो नग्न नर ही नीउ का दृष्टांत संभवै है॥ परिग्रह धारै [redacted] तौ यह नीह दृष्टांत बनै नाहीं
७॥ जे पंचचेलसत्ता। गंथग्गाही य जायणासीला॥ आधाकम्मंमि रया। ते चत्ता मोक्खमग्गंमि॥
जे पंच प्रकार वस्त्र [redacted] विषै आसक्त है परिग्रह के ग्रहण हारे हैं॥ याचना [redacted] सहित है अधः
कर्म आदि दोष [redacted] नि विषै रत है॥ ते मोक्षमार्ग विषै भ्रष्ट जानने॥ ९॥ और गाथा
या सूत्र तहीं तिस श्रद्धान के दृढ़ करने कौं कारण कहे हैं ते न ही तें जानने॥ बहुरि कुंदकुंद आचार्य
कृत लिंगपाहुड है॥ तिस विषै मुनि लिंग धारि जो हिंसा आरंभ यंत्र मंत्रादि करै है ताका निषेध
बहुत कीया है [illegible]
[redacted] ॥ बहुरि गुणभद्राचार्य कृत आत्मानुशासन विषै ऐसा कह्या है॥ ८॥ इतस्त ११५
तश्च त्रस्यन्तो विभावर्यां यथा मृगाः॥ वनाद्विशन्त्युपग्रामं कलौ कष्टं तपस्विनः॥ १॥ [redacted] कलि
काल विषै तपस्वी मृगवत् इधर उधर तैं भयवान होइ वन तैं नगर के समीप वसै है॥ यह महा खे
दकारी कार्य भया है॥ इहां नगर समीप ही रहनौ निषेध्या तौ नगर विषै रहनौ तो निषिद्ध भया ही [redacted]

॥७॥ वरंगाईं स्त्रीम्वेवा इ तपसो ना विजिनमन ॥ स्वः स्त्रीकटाक्ष लुटाक लुंपि वैराग्यसंपत ॥२॥ अवा
र [redacted] होनहार है अनंत संसार जातें ऐसे तपतें गृहस्थपनां ही नला है ॥ कैसा है
वह तप ॥ अन्नातही स्त्रीनिके कटाक्षरूपी लुटेरेनिकरि लुटी है वैराग्यसंपदा जाकी ॥ [redacted] ऐसा है
॥७॥ बहुरि योगीन्द्रदेवकृत परमात्मप्रकाशविषें ऐसा कह्या है ॥७॥ चिल्लाचिल्लीपुत्थियहिं ।
तूसइ मूढ णिभंतु ॥ एयहिं लज्जइ णाणियउ । बंधहं हेउ मुणंतु ॥ ॥ चेलाचेली पुस्तकनिकरि मू
ढ संतुष्ट हो है ॥ भ्रांतिरहित ऐसें ही है ॥ बहुरि ज्ञानी बंधका कारण इनिकों जानता संता इनिकरि
लज्जायमान हो है ॥ ॥ केणवि अप्पउ वंचियउ । सिरु लुंचिवि छारेण ॥ सयलु वि संग ण परिहरिय
जिणवरलिंगधरेण ॥ ॥ [redacted] किसी [redacted] जीवकरि अपनां आत्मा ठिग्या ॥ जिहिं जीवकरि ... करि
मीथाकी लौंचकरि समस्त परिग्रह छौड्या नांही ॥७॥ जे जिणलिंगु धरेवि मुणि । इट्ठपरिग्गह लिंति
छद्दिकरेविणु ते विजिय । सो पुणु छद्दि गिलंति ॥ ॥ जे मुनि जिनलिंग धारि इष्ट परिग्रहकों ग्रहै हैं ते
छर्दि करि तिसही छर्दिकों बहुरि भषै हैं ॥ ॥ इत्यादि तहां कहे हैं ॥

१ जिनवरका लिंगधारया अर

१ [redacted] नाव यहां निदनी यहै १

116

२धात्री दूत आदि२

ऐसैं शास्त्रनि विषै कुगुरु का वा तिनिके आचरन का वा तिनकी सुश्रूषा का निषेध कीया है सो जाननां॥ बहु
रि जहां मुनिकै छियालीस दोष आहारादि विषै कहे हैं तहां गृहस्थनिके बालकनिकों प्रसन्न करनां [illegible] स
माचार कहनां मंत्र औषध ज्योतिषादि [illegible] कार्य बतावनां इत्यादि [illegible] बहुरि [illegible] कीया कराया अनुमोद्या
भोजन लैनां इत्यादि क्रिया का निषेध कीया है सो अब काल दोषतैं इनिही दोषनिकों लगाय आहारा
दि [illegible] ग्रहै है॥ बहुरि पार्श्वस्थ कुशील आदि भ्रष्टाचारी मुनिनिका निषेध कीया है तिनिही का लक्षणनि
कों धरै हैं॥ इतनां विशेष वे द्रव्य तौ नग्न रहै हैं॥ ए [illegible] नाना परिग्रह राषै हैं॥ बहुरि तहां मुनिनिकै भ्रमरी
आदि आहार लैनैंकी विधि कही है॥ ए आसक्त होइ दातारके प्राण पीडि आहारादि ग्रहै है॥ बहुरि
१शास्त्र गृहस्थ [illegible] धर्म विषै भी उचित नांही वा अन्याय लोकनिंद्य कार्य तिनिका करते प्रत्यक्ष देषिए हैं॥ बहुरि १पापरूप१
जिन बिंबादिक सर्वोत्कृष्ट पूज्य तिनिका तौ अविनय करै हैं आप तिनितैं भी महंतता राषि [illegible] ऊं २बहुरि२
चा बैठनां आदि [illegible] प्रवृत्तिकों धारै है॥ इत्यादि अनेक विपरीतता प्रत्यक्ष भासै अर आपकों मु
नि मानै॥ मूलगुणादिकके धारक कहावैं॥ ऐसैं ही अपनी महिमा करावै॥ बहुरि गृहस्थ भोले उन
करि प्रशंसादिककरि ठगे हूए धर्मका विचार करै नांही॥ उनकी भक्ति विषै तत्पर हो है॥ सो बडे
पापकों बडा धर्म माननां॥ इस मिथ्यात्वका फल कैसें अनंत संसार न होइ॥ एक जिनवचनकों
अन्यथा मांनें महापापी होनां शास्त्र विषै कह्या है॥ इहां तौ जिनवचनकी किछू बात राषी नांही॥
इस समान और पाप कौन है॥ अब इहां कुयुक्ति करि जे तिनि कुगुरुनिका स्थापन करै है तिनकौ
निराकरण कीजिए है॥ तहां वह कहै है गुरु विना तौ निगुरा होइ अर वैसे गुरु अवार दीसै नांही तातैं

117

इनिही कों गुरु मानने ।। ताका उत्तर ।। जगुरा तौ वाका नाम है जो [redacted] गुरु मानै ही नाही ।। बहुरि जो गुरु कों तौ मानै अर इस क्षेत्र विषै [redacted] गुरु काल दोष [redacted] न देषि काहू कों गुरु न मानै तौ इस श्रद्धान तैं तौ नगुरा होता नांही ।। जैसें [redacted] जो नास्तिक है तौ वाका नाम है जो परमेश्वर कों मानै ही नांही ।। बहुरि जो परमेश्वर कों तौ मानै अर इस क्षेत्र विषै परमेश्वर का लक्षण न देषि काहू कों परमेश्वर न मानै तौ [redacted] नास्तिक तौ होता नांही ।। तैसें ही यहु जानने ।। बहुरि वह कहै है जैन शास्त्रनि विषैं [redacted] अवार केवली का तौ अभाव कह्या है मुनिका तौ अभाव कह्या नांही ।। ताका उत्तर ।। ऐसा तौ कह्या नांही [redacted] इनि देशनि विषै सद्भाव रहैगा भरत क्षेत्र विषै कहै हैं सो भरत क्षेत्र तौ बहुत बड़ा है कहीं सद्भाव होगा तातैं अभाव न कह्या है ।। जो तुम रहौ हौ तिस ही क्षेत्र विषै सद्भाव मानोगे तौ जहां ऐसे भी गुरु न पावोगे तहां [redacted] जावोगे तब किसकों गुरु मानोगे ।। जैसें हंसनि का सद्भाव अवार कह्या है अर हंस दीसते नांही तौ औरनि पक्षीनि कों तौ हंस मान्या जाय नांही ।। तैसें मुनिनि का सद्भाव अवार कह्या है अर मुनि दीसते नांही तौ औरनि कों तौ मुनि मान्या जाय नांही ।। बहुरि वह कहै है एक अक्षर के दाता कों गुरु मानै है ।। [redacted] शास्त्र सिषावै वा सुनावै तिनि कों गुरु कैसें न मानिए ।। ताका उत्तर ।। [redacted] गुरु नाम बड़े का है सो जिस प्रकार की महंतता जाकै संभवै तिस प्रकार ताकों गुरु संज्ञा संभवै ।। [redacted] लोक विद्या अपेक्षा गुरु [redacted] विद्या पढावने वालों कों विद्या अपेक्षा गुरु संज्ञा [redacted] है ।। इहां तौ [redacted] का [redacted] अधिकार है ।। तातैं जाकै धर्म अपेक्षा महंतता संभवै सोई गुरु जानना ।। १२

धर्म:

जैसें कुल अपेक्षा माता पिता कों गुरु संज्ञा है तैसें ही।

117

सो धर्म नाम चारित्र का है "चारित्तं खलु धम्मो" ऐसा शास्त्र विषै कह्या है तातैं [redacted] चारित्र का धारक ही कौं गुरु संज्ञा है बहुरि जैसे तैं पू

गुरु जाननां ॥ [redacted] न्तादिक का ही नाम देव है तथापि इहां देव का श्रद्धान विषै अरहंत देव ही
का ग्रहण है [redacted] तैसैं और निका भी नाम गुरु है तथापि इहां गुरु श्रद्धान विषै [redacted] निर्ग्रंथ गुरु ही का ग्र
हण है ॥ सो जिन धर्म विषै अरहंत देव निर्ग्रंथ गुरु ऐसा प्रसिद्ध वचन है ॥ इहां प्रश्न जो निर्ग्रंथ वि ऽ सर्व
ना और [redacted] गुरु न मानिए सो कारण कहा ॥ ताका उत्तर ॥ निर्ग्रंथ विना अन्य [redacted] जीव [redacted] प्रकार
अ व्याख्यानों करि महंतता नांही धरे है ॥ जैसैं लोभी शास्त्र [redacted] करै तहां [redacted] वह वाकौं शास्त्र सु
नावनेतैं महंतता ज्याकौं वह वाकौं धन वस्त्रादि देनेतैं महंतता ज्या ॥ [redacted] यद्य
पि [redacted] बाह्य [redacted] शास्त्र सुनावने का काम महंत रहै तथापि अंतरंग लोभी होइ सो दातार कौं उंचा मांनै अ
र दातार लोभी कौं नीचा मांनै तातैं वाकै सर्वथा महंतता न भई [redacted]
[redacted] इहां कोऊ कहै निर्ग्रंथ भी तौ आहार ले है ताका उत्तर लोभी होइ दातार की [redacted] सुश्रूषा करि दीन तातैं
आहार न ले है ॥ तातैं महंतता घटै नांही ॥ जो लोभी होइ सो ही हीनता पावै है ॥ ऐसैं ही अन्य जीव जानने
तातैं निर्ग्रंथ ही सर्व प्रकार महंतता युक्त है [redacted] ॥ बहुरि निर्ग्रंथ बिना अन्य जीव
सर्व प्रकार गुणवान नांही ॥ तातैं गुणनि की [redacted] अपेक्षा महंतता अर दोषनि की अपेक्षा
हीनता [redacted] नासै तब निःशंक स्तुति कीनी जाय नांही ॥ बहुरि निर्ग्रंथ बिना अन्य जी
व जैसा धर्म साधन करै तैसा वा तिसतैं अधिका गृहस्थ भी धर्म साधन करि सकै तहां गुरु संज्ञा किसकौं
होइ तातैं बाह्य अभ्यंतर परिग्रह रहित निर्ग्रंथ मुनि है सोई गुरु जाननां ॥ इहां कोऊ कहै ऐसे गुरु
तौ [redacted] अबार इहां नांही तातैं जैसैं अरहंत की स्थापना प्रतिमा है तैसैं गुरुनि की स्थापना एं भेष
धारी है ॥ ताका उत्तर ॥ जैसैं राजा की स्थापना चित्रा [redacted] मादिक करि करै तौ [redacted] नांही

राजा का प्रतिपक्षी

229

११८

१ सामान्य मनुष्य   ६ श्रावक सैं तौ यास्थाविषै सर्वज्ञनीको है ॥ अलिकनीअसीयमी प्र

अर कोई [redacted] आपकौं राजा [redacted] मनावै तौ वह राजाका प्रतिपक्षी होय है ॥ [redacted] तैसैं अरहं-
तादिककी पाषाणादिविषै [redacted] स्थापना बनावै तौ तिनिका प्रतिपक्षी नाहीं । अर कोई सामान्य मनुष्य
आपकौं मुनि मनावै तौ वह मुनिनिका प्रतिपक्षी भया ॥ ऐसैं भी स्थापना होती होइ तौ अरहंत भी आप-
कौं मनावो ॥ बहुरि जो उनकी स्थापना न एहीं तौ बाह्यतौ वैसे ही [redacted] न एवा हि एवै निर्ग्रंथ
एवं बहुत परिग्रहके धारी यह [redacted] कैसैं बनै ॥ बहुरि कोई कहै है अब श्रावक भी तौ जैसे [redacted]
संभवै तैसे नाहीं तातैं जैसे श्रावक तैसे मुनि ॥ ताका उत्तर ॥ [redacted]
[redacted] मनावै नाहीं तौ नाममात्रमैं कोई दोष नाहीं ॥ अर कोई सामान्य पुरुष आप
[redacted] कौं राजा मानै नाम मनावै नचीन अपनी नाम राजा धरै तौ वह दुःख ही पावै ॥ तैसैं श्राव-
कतौ कुलकी नाम [redacted] कहलावै है ॥ [redacted] आपकौं श्रावक मानै मनावै नाहीं तातैं नाममात्रै है
कोई दोष नाहीं ॥ बहुरि एते भी श्रावककौं मुनि मानै मनावै है नाम मानै नाम मुनि मनावै है तातैं
[redacted] सौ सारसि बेडुव लीनावै है ॥ बहुरि श्रावकके तौ आठ मूलगुन कहे हैं सो मद्य मांस मधु पंच उ-
दंबरादि फलनिका भक्षण श्रावकनिकै [redacted] है नाहीं [redacted] अर मुनिकै अठाईस मूलगुन है [redacted]
[redacted] सो तैसे भी निकै [redacted] दीसतै नाहीं ॥ तातैं मुनिपनौं काहू प्रकार संभवै नाहीं ॥ बहुरि
गृहस्थ अवस्थाविषै तौ पूर्वैं जंबूकुमारादिक बहुत हिंसादिक कार्य कीए सुनिए है [redacted]
मुनि होइ करि तौ काहूनैं हिंसादिक कार्य कीए नाहीं परिग्रह राखे नाहीं ॥ [redacted]
[redacted] ॥ तातैं ऐसी युक्तिकार्यकारी नाहीं ॥ ब-
हुरि देखौ आदिनाथजीकी साथि च्यारि हजार राजा दीक्षा लेइ बहुरि भ्रष्ट भए तब देव उनकौं कहते भए

× तातैं काहू प्रकार श्रावकपनौं तौ संभवै भी है ×

ीअसीयमी प्र-
ताकौं उत्तर पु-
राणविषै श्रा-
वकोत्तमक-
ह्या ॥ बारह
सभाविषै श्रा-
वकके हतहीं
सर्वव्रतधारीन
घे जो सर्वव्रत-
धारी होते तौ ऐ-
से यतमनुष्यनि
की जुदी संख्या
कहते सो कहीं
नाहीं ॥ तातैं
गृहस्थ जैनी
श्रावक नाम
[redacted]
[redacted] पावै है
अर मुनि सी
हातौ निर्ग्रं-
थ बिना कहीं
कही नाहीं ॥

118

५ पद्मपुराण विषै यहु कथा है जो [redacted] श्रेष्ठी धर्मात्मा चारणमुनिनिकैं [redacted] अन्यमतीनिके [redacted]
तो मत्स्य [redacted] तिनकौं दानादिक देना कैसैं संभवै ×
जिनलिंगी होइ, अन्यथा प्रवर्तैगे तौ हम दंड देंगे।। जिनलिंग धारि कुमार्गी इछा होइ सो तुम जानौ।। ता-
तैं जिनलिं[redacted]गी कुहाइ अन्यथा प्रवर्तैं तौ दंड योग्य हैं।। वंदनादि योग्य कैसैं होइ।। [redacted]
[redacted] अब बहुत कहा कहिए जे जिनमत विषै कुभेष
धारै हैं ते महापाप उपजावै है, अन्य जीव उनकी [redacted] सुश्रूषा आदि करै हैं ते भी पापी हो हैं।
ई ही कोऊ कहै हमारै श्रद्धान तौ सत्य है।। परंतु बाह्य [redacted] करि शिष्टाचार करै हैं सो फल तौ अं- (अंतरंग विषैं)
तरंग का होगा।। ताका उत्तर।। [redacted] षट्पाहुड विषै [redacted]दिक करि वंदनादिक का निषेध दिखाया
था सो पहिलै ही कहा था।। बहुरि कोई जोरावरी मस्तक नमाय हाथ जुड़ावै तब तौ यहु संभवै हमारा
अंतरंग न था।। आप ही मानादि [redacted] तैं [redacted] नमस्कारादि करैं तहां अंतरंग [redacted]
कैसैं न कहिए जैसैं [redacted] कोऊ राजादिक का लोभ मनावने कौं वेश्यासेवन करै तौ वाकौं व्रती कैसैं मा-
निए।। तैसैं अंतरंग विषै तौ [redacted] कुगुरु [redacted] सेवन कौं बुरा जानैं अर तिनिका वा लोकनिका ला-
लाभ मानवने कौं सेवन करै तौ श्रद्धानी कैसैं कहिए।। बाह्य त्याग कीए ही अंतरंग त्याग संभवै है।। तातैं
जे श्रद्धानी जीव है तिनिकौं काहू प्रकार करि भी कुगुरुनिकी सुश्रूषादि करनी योग्य नाहीं।। [redacted]
[redacted] या प्रकार कुगुरुसेवन का निषेध कीया।। इहां कोऊ कहै कुगुरुसेवन तैं मिथ्यात्व कैसैं भया।।
ताका उत्तर। जैसैं शीलवती स्त्री परपुरुष सहित [redacted] भरतारवत् रमणक्रिया सर्वथा करै ना-
हीं।। तैसैं तत्त्वश्रद्धानी पुरुष कुगुरु सहित सुगुरुवत् नमस्कारादि क्रिया सर्वथा करै नाहीं।। काहे तैं
यहु तौ [redacted] जीवादि तत्त्वनिका श्रद्धानी भया है तहां रागादिक कौं निषेध श्रद्धहै है।। वीतरागभाव कौं
[redacted] श्रेष्ठ मानै है।। तातैं जिनिकै वीतरागता पाईए ऐसे ही गुरु कौं उत्तम जानि नमस्कारादि करै है

काहेतैं नमस्कार करैं ×

अंतरंग विषैं तौ मीसकौं बुरा मानैं अरु

[redacted]

119

जिनिकै रागादिक पाईए तिनिकौं निषेध जो नमस्कारादिक ताका चितवन करै नांही। कोऊ कहै जैसैं राजादिककौं करै तैसैं इनिकौं भी करै है ताका उत्तर। राजादिक धर्मपद्धति विषै नांही। [redacted] गुरुका सेवन धर्मपद्धति विषै है। सो राजादिकका सेवन तौ लोभादिकतैं हो है तहां चारित्रमोहहीका उदय संभवै है। अर गुरुनिकी जायगा कुगुरुनिकौं सेवै [redacted] तत्त्वश्रद्धानके कारण गुरु थे तिनतैं [redacted] प्रतिकूली भया। [redacted] सो लज्जादिकतैं [redacted] जानैं कारण विषै विपरीतता निपजाई ताकै कार्यभूत तत्त्वश्रद्धानविषै दृढता कैसैं संभवै तातैं तहां दर्शनमोहका उदय संभवै है। ऐसैं कुगुरुनिका निरूपण कीया। अब कुधर्मका निरूपण कीजिए है। जहां विषय कषायनिकी वृद्धि होइ [redacted] तहां धर्म मानिए सो कुधर्म जानना। [redacted] तहां यज्ञादिक क्रियानिविषै [redacted] महाहिंसादिक उपजावै [redacted] बडे जीवनिका घात करै अर तहां [redacted] इंद्रियनिके [redacted] विषय पोषै तिनि जीवनिविषै दुष्टबुद्धि करि रौद्रध्यानी होइ [redacted] औरनिका बुरा करि अपना कोई प्रयोजन साध्या चाहै [redacted] ऐसा कार्य करि तहां धर्म मानै सो कुधर्म है। बहुरि तीर्थ [redacted] निविषै वा अन्यत्र स्नानादि कार्य करै तहां [redacted] बडे छोटे घने जीवनिकी हिंसा होइ। शरीरकौं चैन उपजै तातैं विषय पोषण होइ तातैं कामादिक बधै। कुतूहलादिक करि तहां कषाय भाव बधावै बहुरि तहां धर्म मानै सो यहु कुधर्म है। बहुरि [redacted] संक्रांति ग्रहण [redacted] दि विषै दान दे वा पात्र ग्रहादिकके अ-

हिंसादि कषाय उपजावै

औरनिकौ नै

११९

व्यतीपातादि

119

१ बहुरि

छि दान देंइ [redacted] पात्र जांनि लोभी पुरषनिकों दान दे॥ बहुरि दान देनें विषैं सुवर्ण हस्ती
घोडा तिल आदिक [redacted] वस्तुनिकों दे [redacted] सो संक्रांति आदि पर्व धर्मरूप नां
हीं ज्योतिषी [redacted] संचारादिक करि [redacted] संक्रांति आदि हो है॥ बहुरि [redacted] दुःख ग्रहादिक
कै अर्थि दीया [redacted] सो भी भय लोभादिकका आधिक्य भया॥ तातें तहां दान देनें मैं धर्म नाहीं॥ बहुरि
लोभी पुरष [redacted] देनें योग्य पात्र नाहीं॥ जातें [redacted] लोभी नाना
असत्य युक्ति करि ठिगै है किछू भला करते नाहीं॥ भला तो तब होइ जब याका दानका सहाय करि वह धर्म
साधै। वह तौ उलटा पापरूप प्रवर्त्तै पापका सहाई कैसैं भला कैसैं होइ॥ सो ईरयणसार शास्त्र विषैं कहा है
॥ सप्पुरिसाणं दाणं कप्पतरूणं फलाणसोहंवा। लोहीणं दाणं जइ विमाणसोहा सवस्स जाणेह
याका अर्थ ॥१॥ सत्पुरषनिकौं दान दैना कल्पवृक्षनिके फलनिकी सोभा समान है॥ सोभा भी है अर सुषदायक भी है॥
बहुरि लोभी पुरषनिकों दान देना होइ सो शव जो मड़ा ताका विमान जो चकडोल ताकी सोभा समा
न जानहु॥ सो [redacted] भी होइ परन्तु धनीकों परम दुःखदायक हो है॥ तातें लोभी पुरषनिकों दान देनें मैं ध
र्म नाहीं॥ बहुरि द्रव्य तौ ऐसा दीजिए जाकरि वाकै धर्म वधै सुवर्ण हस्ती आदि दीजिए तिनिकरि हिं
सादिक उपजै वा मान लोभादिक वधै ताकरि महापाप होइ॥ ऐसी वस्तुनिका देनेंवालाकों पुण्य कैसैं
होइ॥ बहुरि विषयासक्त जीव रतिदानादिक विषैं पुण्य ठहरावै है सो प्रत्यक्ष कुशीलादि पाप जहां
होइ तहां पुण्य कैसें होई अर युक्ति मिलावनेंकों कहै जो वह स्त्री संतोष पावै है तौ [redacted] स्त्री तो वि
षय सेवन कीए सुख पावै ही पावै शीलका उपदेश काहेकौं दीया॥ रति समय बिना भी वाका मनोरथ
अनुसारि न प्रवर्त्तै दुःख पावै॥ [redacted] सो ऐसी असत्य युक्ति बनाय [redacted] विषय पोषनेंका उपदेश दे है

२ हिंसादिकवाविषयादिक रहिं

ऐसैंही दया दान वा पात्र दान विना अन्य दान देइ धर्म मानैं ॥ सो कुधर्म है ॥ बहुरि व्रतादिक
करिकैं तहां [redacted] बधावै है सो [redacted] व्रतादिकतैं तिनिका [redacted]। घटावनेंकै अर्थि
कीजिए है ॥ बहुरि जहां अन्नका तौ त्याग करै अर कंदमूलादिकनिका भक्षण करै तहां हिंसा विशेष
भई [redacted] स्वादादिक विषय विशेष भए ॥ बहुरि दिवस विषैं तौ भोजन करै नाहीं अर रात्रि विषैं क
रै सो प्रत्यक्ष दिवस भोजनतैं रात्रि भोजन विषैं हिंसा विशेष भासै प्रमाद विशेष होइ ॥ बहुरि व्रतादिक
करि नाना शृंगार बनावै कुतूहल करै जूवा आदि [redacted] रूप प्रवर्तै इत्यादि पापक्रिया करै बहुरि व्रतादि
कका फल [redacted] लोकीक [redacted] इष्ट की प्राप्ति अनिष्ट का नाश ताकौं चाहै तहां कषायनिकी तीव्रता [redacted]
विशेष भई ॥ ऐसैं व्रतादिक करि धर्म मानै है सो कुधर्म है ॥ बहुरि भक्त्यादि कार्यनि विषैं हिंसादिक
पाप बधावै । वा गीत नृत्य गानादिक [redacted] वा इष्ट भोजनादिक [redacted]
[redacted] वा अन्य सामग्रीनिकरि विषयनिकौं पोषै ॥ कुतूहल प्रमादादि
रूप प्रवर्तै तहां [redacted] पाप तौ बहुत उपजावै अर धर्मका किछू साधन नाहीं ॥ तहां धर्म मानै सो
सर्व कुधर्म है ॥ बहुरि केई शरीरकौं तौ क्लेश उपजावै अर तहां हिंसादिक निपजावै वा कषायादिरूप
प्रवर्तैं ॥ जैसैं पंचाग्नि तापै [redacted]
[redacted] सो अग्निकरि [redacted] बडे छोटे जीव जलैं हिंसादिक बधैं ॥ बहुरि औंधे मुखि झूलै ऊर्द्ध बाहु राखै — या मैं धर्म कहा नयां
इत्यादि साधन करैं तहां क्लेश ही होइ किछू धर्मका अंग नाहीं ॥ बहुरि पवन साधन करै तहां नेती धोती इ — १२०
त्यादि कार्यनि विषैं जलादिककरि हिंसादिक उपजै चमत्कार कोई उपजै तातैं मानादिक बधै किछू तहां
धर्म साधन नाहीं ॥ इत्यादि क्लेश [redacted] करै [redacted] विषय कषाय घटावनेंका कोई साधन करै नाहीं ।

120 P

[redacted] २ इस लोक विषै १

ही॥ औसें राग विषै क्रोध मान [redacted] माया लोभ का अभिप्राय है। इत्या अनेरा करि धर्म मांनै है सो कुध
र्म है॥ बहुरि केई [redacted] ²दुख सह्या न जाय वा परलोक [redacted] विषै इष्ट की इछा वा
[redacted] अपनी पूजा पउावनें कै अर्थि वा कोई क्रोधादिक करि अपघात करै॥ जै
सें [redacted] पति वियोग तैं अग्नि विषै जलि करि सती कहावै है वा हिमालै गलै है कासी करोत लै है
जीवत मांटी लै है इत्यादि कार्य करि धर्म मांनै है सो अपघात का तौ बडा पाप है जो शरीरादिक तैं
[redacted] अनुराग घट्या था तौ तपश्चरणादिक किया होता मरि जांनें मैं कौन धर्म का अंग भया तातैं
अपघात करनां कुधर्म है॥ [redacted] औसें ही अन्य भी घनें कुधर्म के अंग है कहां तांई कहिए जहां
[redacted] विषय कषाय [redacted] बधै अर धर्म मांनिए सो सर्व कुधर्म जांनने देखो काल का दोष॥ जैन ध
र्म विषै भी [redacted] कुधर्म की प्रवृत्ति [redacted] भई॥ जैनमत विषै जे धर्मपर्व कहे हैं॥ तहां विष — २ तौ
य कषाय छोरि संयमरूप प्रवर्त्तनां योग्य है ताकौं तौ आदरैं नांही अर [redacted] ब्रतादिक का नाम ध
१ वा कुतूह-लादिक करै १ — राय तहां नाना शृंगार बनावै वा इष्ट भोजनादिक रैं वा कषाय बधावनें के कार्य करै॥ ¹बहुरि पू — १ [redacted] वा इ-त्यादि महापाप-रूप प्रवर्तैं [redacted]
जनादि कार्यनि विषै उपदेश तौ यहु था सावद्यलेशो बहुपुण्यराशौ दोषायन॥ पाप का अंश बहुत पुण्य
१ रस छल करि १ — समूह विषै दोष कै अर्थि नांही॥ ¹[redacted] पूजा प्रभावनादि कार्यनि विषै रा
त्रि विषै दीपकादि करि वा [redacted] अनंतकायादिक का संग्रह करि वा अयत्नाचार प्रवृत्ति करि हिंसा
दिक रूप पाप तौ बहुत उपजावैं अर [redacted] स्तुति भक्ति आदि शुभ परिणामनि विषै प्रवर्त्तैं नांही
वा थोरे प्रवर्त्तैं सो टोटा घनां नफा थोरा वा नफा किछू नांही। औसा कार्य करनें मैं तौ बुरा ही दीषनी होइ
बहुरि जिन मंदिर [redacted] तौ धर्म का ठिकानां है तहां नाना कुकथा करनी [redacted]

३ तौ वीतराग भावरूप हैं तिस

121 सो वनां इत्यादि प्रमादरूप प्रवर्त्तै हैं तहां बागवाडी इत्यादि बनाय विषय कषाय पोषै ।। बहुरि लोभी पुरुष
निकों गुरु मानि दानादिक दे । [redacted] तिनिकी असत्य स्तुति करि महंतपनों मानें ।। [redacted] इत्यादि प्रकारकार
विषयकषायनिकों तौ वधावै अर धर्म्म मानै सो जिनधर्म्म विषै असी विपरीत प्रवृत्ति काल दोषतें [redacted]
[redacted] ही देखिए है ।। या प्रकार कुधर्म्म सेवन का निषेध कीया ।। अब इस विषै मिथ्यात्व भाव कैसें
भया सो कहिए है ।। तत्वश्रद्धान करनें विषै प्रयोजनभूत एक यहु है रागादिक छोडनां [redacted] इस
ही भाव का नाम धर्म्म है ।। जो रागादिक भावनिकों वधाइ धर्म्म मानै तहां तत्वश्रद्धान कैसें रह्या ।। बहु
रि जिनआज्ञातें प्रतिकूली भया ।। बहुरि रागादिक भाव तौ पाप तिनिकौं धर्म्म मान्या सो यहु झूठ श्रद्धा
न भया तातें कुधर्म्म सेवन विषै मिथ्यात्व भाव है ।। ऐसें कुदेव कुगुरु कुशास्त्र सेवन विषै मिथ्या
त्व भाव की पुष्टता होती जांनि याका [redacted] निरूपण कीया ।। सो ईहां षट्पाहुड विषै कह्या है । कुच्छि
यदेवं धम्मं । कुच्छियलिंगं च वंदए जो दु ।। लज्जाभयगारवदो । मिच्छादिट्ठी हवे सो दु ।। १ ।। याका अर्थ ।।
जो लज्जा वा भय वा बडाई तैं भी कुत्सित देवकों वा [redacted] कुत्सित धर्म्मकों वा कुत्सित
लिंगकों वंदै है सो मिथ्यादृष्टी होइ ।। तातें जो मिथ्यात्व का त्याग कीया चाहे सो पहले कुदेव कुगुरु
२ कुत्याग विषै कुधर्म्म का त्यागी होइ ।। सम्यक्त्व के पचीस मलनि [redacted] तीन मूढदृष्टि [redacted] विषै वा षडायतन [redacted]
विषै इनिही का [redacted] त्याग कराया है ।। तातें इनिका अवश्य त्याग करनां ।। बहुरि कुदेवादिक के से
वन तैं जो मिथ्यात्व भाव हो है सो [redacted] यहु [redacted] हिंसादि पापनितें बडा महापाप है 12
याके फलतें निगोद नरकादि पर्याय पाइए है तहां अनंतकाल पर्यंत महासंकट पाइए है ।। सम्य
ग्ज्ञान की प्राप्ति महादुर्लभ होइ जाय है ।। सो ईहां षट्पाहुड विषै कह्या है । कुच्छियधम्मम्मि रओ । कुच्छिय

121 पासंडिभत्तिसंजुत्तो ॥ कुछियतवं कुणंतो । कुछियगइभायणो होइ ॥१॥ याका अर्थ ॥ जो कुत्सित ध
र्म्मविषै रत है ॥ कुत्सित पाखंडीनिकी भक्ति करि संयुक्त है ॥ कुत्सित तपकौं करता है सो जीव कुत्सित जो
खोटी गति ताका भोगनहारा होहै ॥ [redacted] ॥ सो हे भव्य हो किंचित् मात्र [redacted] लो भतैं वा
[redacted] भयतैं कुदेवादिकका सेवन करि जातैं अनंतकालपर्यंत महादुःख सहनौ होइ ऐसा मिथ्यात्व
[redacted] भाव करनी योग्य नाहीं ॥ जिनधर्म्मविषै [redacted] यहु आम्नाय है ॥ पहलै बडा पाप
छुडाया पीछैं छोटा पाप छुडाया ॥ सो इस मिथ्यात्वकौं सप्तव्यसनादिकतैं भी बडा पाप जानि पहलै
छुडाया है ॥ तातैं जे पापके फलतैं डरै हैं अपने आत्माकौं दुःखसमुद्रमैं न डुबाया चाहै हैं ते जीव इस
मिथ्यात्वकौं अवश्य छोडो ॥ निंदा प्रशंसादिकके विचारतैं शिथिल होनौ योग्य नाहीं ॥ जातैं नी
तिविषै भी ऐसा कह्या है ॥ निंदंतु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवंतु । लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा य
थेष्टं ॥ अद्यैव वा मरणमस्तु युगांतरे वा । न्यायात्पथः प्रविचलंति पदं न धीराः ॥१॥ [redacted]
जो निंदै है तौ निंदौ अर स्तवै है तौ स्तवौ ॥ बहुरि लक्ष्मी आवो वा [redacted] जहीं तहीं जावो ॥ बहुरि अब
ही मरण होहु वा युगांतरविषै होहु ॥ परंतु नीतिविषै निपुण पुरुष न्यायमार्गतैं पैंड हू चलै नाहीं
[redacted] ॥ ऐसा [redacted] न्याय विचारि निंदा[redacted] प्रशंसादिकका भय लोभादिकतैं अन्यायरूप मि
थ्यात्वप्रवृत्ति करनी युक्त नाहीं ॥ अहो देव गुरु धर्म्म तौ सर्वोत्कृष्ट पदार्थ हैं । इनि[redacted]विषै
शिथिलता राखैं अन्य धर्म्म कैसैं होइ ॥ तातैं बहुत कहनें करि कहा ॥ सर्वथा प्रकारि कुदेव कुगुरु
कुधर्म्मका त्यागी होनौ योग्य है ॥ कुदेवादिकका त्याग न कीएं मिथ्यात्वभाव बहुत पुष्ट हो है ॥ [redacted]
[redacted] अर अबार इहां इनिकी प्रवृत्ति विशेष पाईए है तातैं इनिका निषेधरूप निरूपण कीया है ॥

इनिकै आधारि धर्म्म है

ताकौं जानि मिथ्याभाव छोरि अपनां कल्याण करौ ॥ ॥ इति मोक्षमार्गप्रकाशक नाम शास्त्र विषै कुदेव कुगुरु कुधर्म निषेध वर्णनरूप अधिकार समाप्त भया ॥ ७ ॥ ॐ नमः ॥ दोहा ॥
३२का.जान इस भवतरुको मूल इक मिथ्याभाव [redacted] ॥ ताकौं करि निर्मूल [redacted]
५५ अब करिए मोक्षउपाव ॥ १ ॥ अथ जे जीव [redacted] [illegible] जैनी हैं जिनआज्ञाकौं मानै हैं ॥ [redacted] अर तिनिकै भी मिथ्यात्व रहै है ताका वर्णन कीजिए है जातैं इस मिथ्यात्व बैरीका अंश भी बुरा है तातैं सूक्ष्म मिथ्यात्व भी त्यागनेयोग्य है ॥ तहां जिनआगमविषै निश्चय [redacted] व्यवहार रूप वर्णन है ॥ तिनि विषै यथार्थ [redacted] का नाम निश्चय है ॥ उपचार का नाम व्यवहार है ॥ [redacted] सो इनिका स्वरूप कौं न जानते अन्यथा प्रवर्त्तै हैं ॥ सो ई कहिए है ॥ केई जीव निश्चय कौं न जानते निश्चयाभास के श्रद्धानी होइ आपकौं मोक्षमार्गी मानै है ॥ अपने आत्माकौं सिद्धसमान अनुभवै है ॥ सो आप प्रत्यक्ष संसारी है [redacted] भ्रम करि आपकौं सिद्ध मानै सो ई मिथ्यादृष्टि है ॥ शास्त्रनि विषै जो सिद्धसमान आत्माकौं कह्या है सो द्रव्यदृष्टि करि कह्या है ॥ [redacted] पर्याय अपेक्षा समान नाहीं है
जैसे राजा अर रंक मनुष्यपनेकी अपेक्षा समान हैं राजापनो रंकपनोकी अपेक्षा तौ समान नाहीं ॥ तैसे सिद्ध अर संसारी जीवत्वपनेकी अपेक्षा समान हैं ॥ सिद्धपनो संसारीपनाकी अपेक्षा तौ समान नाहीं ॥ यहु जैसे सिद्ध शुद्ध हैं तैसे ही आपाकौं शुद्ध मानै सो शुद्ध अशुद्ध अवस्था पर्याय है इस पर्याय अपेक्षा समानता मानी सो यहु मिथ्यादृष्टि है ॥ बहुरि आपकै केवलज्ञानादिकका सद्भाव मानै सो आपकै तौ क्षयोपशमरूप मतिश्रुतादि ज्ञानका सद्भाव है ॥ क्षा

238

122

यिकभाव तो कर्मका क्षय भए होइ यहु भ्रमतैं [redacted] कर्मका क्षय भए बिना ही क्षायिकभाव मानै सो यहु मिथ्यादृष्टि है।। शास्त्रविषै सर्व जीवनिका केवलज्ञान स्वभाव कह्या है सो शक्ति अपेक्षा कह्या है सर्व जीवनिविषै केवलज्ञानादिरूप होनेकी शक्ति है।। वर्तमान व्यक्तता तौ व्यक्त भए ही कहिए।। [redacted] केवलज्ञानका अभाव तौ कर्मनिमित्ततैं है।। तातैं कर्मका निमित्त [redacted] कोऊ ऐसा मानै है।। आत्माके प्रदेशनिविषै तौ केवलज्ञान ही है।। ऊपरि आवरणतैं प्रगट न हो है सो यहु भ्रम है।। जो केवलज्ञान होइ तौ [redacted] वज्रपटलादि आडे [redacted] भी वस्तुकौं जानै कर्मकी आडि आएं कैसे अटकै तातैं कर्मके निमित्ततैं केवलज्ञानका अभाव ही है।। जो याका सर्वदा सद्भाव रहै तौ याकौं पारिणामिकभाव कहते सो यहु तौ क्षायिकभाव है।। [redacted] सर्वभेद जामैं गर्भित ऐसा चैतन्यभाव सो पारिणामिकभाव है याकी अनेक अवस्था [redacted] मतिज्ञानादिरूप [redacted] वा केवलज्ञानादिरूप है सो ए [redacted] पारिणामिकभाव नाही।। तातैं केवलज्ञानका सर्वदा सद्भाव न मानना।। बहुरि जो शास्त्रनिविषै सूर्यका दृष्टान्त दीया है ताका इतना ही भाव लेना।। जैसैं [redacted] मेघपटल होतैं सूर्यप्रकाश प्रगट न हो है तैसैं कर्म [redacted] उदय होतैं केवलज्ञान न हो है।। बहुरि सूर्यविषै प्रकाश रहै है तैसैं [redacted] आत्माविषै केवलज्ञान रहै है [redacted] जातैं दृष्टान्त सर्व प्रकार मिलै [redacted] नाही।। [redacted] जैसैं पुद्गलविषै वर्णगुण है [redacted] ताकी हरित पीतादि अवस्था है।। सो [redacted] वर्तमानविषै कोई अवस्था होतैं अन्य अवस्थाका अभाव है।। तैसैं आत्माविषै चैतन्यगुण है ताकी मतिज्ञानादिरूप अवस्था है सो वर्तमान कोई अवस्था होतैं अन्य अवस्थाका अभाव ही है।। [redacted] बहुरि [redacted] कोऊ कहै कि आवरण नाम तौ [redacted] वस्तुके आच्छादनेका है।। केवल

(हाशिया: ऐसा भाव न लेना जैसैं)

239

123

जातें ऐसी शक्ति सदा पाईए है॥ बहुरि व्यक्त भए स्वभाव व्यक्त भया कहिए॥

ज्ञानका सद्भाव नांही है तौ केवलज्ञानावरण काहेकौं कहा है॥ ताका उत्तर॥ इहां शक्ति है ताकौं व्यक्त न होनें देइ सो अपेक्षा आवरण कहा है॥ जैसें [redacted] देशचारित्रका अभाव होतें शक्ति घातनेकी अपेक्षा अप्रत्याख्यानावरण कषाय कहा तैसें जाननां॥ बहुरि ऐसें जानौं॥ वस्तुविषै जो परनिमित्ततैं भाव होइ ताका नाम औपाधिक भाव है॥ अर परनिमित्त विना जो भाव होइ ताका नाम स्वभाव भाव है सो जैसें जलकै अग्निका निमित्त होतैं उष्णपनौं भयो॥ तहां शीतलपनांका अभाव ही है परंतु अग्निका निमित्त मिटें शीतलता [redacted] होइ जाइ तातैं [redacted] जलका स्वभाव शीतलकौं [*सदाकालि]
हिए [redacted]। कदाचित् व्यक्तरूप होहै॥ तैसें आत्माकौं कर्मका निमित्त होतैं अ [redacted] भयो॥ तहां केवलज्ञानका अभाव ही है॥ परंतु कर्मका निमि- [*स्वरूप]
त्त मिटें सर्वदा केवलज्ञान [redacted] होइ जाइ तातैं सदाका-
लि आत्माका [redacted] भाव केवलज्ञान कहिए है॥ जातैं ऐसी शक्ति सदा पाईए है॥ व्यक्त भए स्वभाव व्यक्त
भया कहिए॥ बहुरि जैसें [redacted] शीतल स्वभावं करि [redacted] उष्ण [redacted] जलकौं [redacted] [*[redacted]]
[redacted] शीतल मांनि पानादिक करै तौ दाझनौ ही होइ।
तैसें केवलज्ञान स्वभाव करि अशुद्ध [redacted] आत्माकौं केवलज्ञानी मांनि
[redacted] अनुभवै तौ दुखी ही होइ॥ ऐसें जे केवलज्ञानादिक [redacted] रूप आत्माकौं अनुभवै हैं ते मि-
थ्यादृष्टी है॥ बहुरि रागादिक भाव आपकै प्रत्यक्ष होतैं भ्रम करि आत्माकौं रागादिरहित मांनै।
सो पूछिए है ए रागादिक तौ होते देखिए है ए किस द्रव्यके अस्तित्व विषै है जो शरीर वा कर्म [redacted] रूप
[redacted]

123

२५०

123

।रागादिक।

पुद्गलकै [redacted] अस्तित्वविषै होइ तौ ए भाव अचेतन वा मूर्तीक होइ सो तौ ए प्रत्यक्ष चेतनता लीए अमूर्तीक भा

व नासै है॥ [redacted] आत्मा [redacted] ॥ तातैं ए भाव आत्मीक [redacted]

हैं॥ सोई समयसारके कलशा विषै कह्या है ॥७॥ कार्यत्वादकृतं न कर्म न च तज्जीवप्रकृत्योर्द्वयो ॥ [redacted]

[redacted] रज्ञायाः प्रकृतेः स्वकार्यफलभुग्भावानुषंगात्कृतिः ॥ नैकस्याः प्रकृतेरचित्त्वलसना

ज्जीवोऽस्य कर्ता ततो ॥ जीवस्यैव च कर्म तच्चिदनुगं ज्ञाता न यत्पुद्गलः ॥१॥ याका अर्थः॥ यहु [redacted] रागादि

रूप भावकर्म है सो काहू करि न कीया [redacted] नांही है ॥ जातैं यहु कार्यभूत है॥ बहुरि जीव अर कर्मप्रकृति [redacted]

इन दोऊनिका भी कर्त्तव्य नांही॥ जातैं ऐसैं होइ तौ अचेतन कर्मप्रकृतिकै भी तिस भावकर्मका फलसु

खदुःखताका भोगवनां होइ सो असी नबहै॥ बहुरि एकली कर्मप्रकृतिका भी यहु कर्त्तव्य नांही॥ जातैं [redacted] वा

[redacted] कै अचेतनपनौं प्रगट है तातैं इस रागादिक [redacted] का जीवही कर्त्ता है॥ अर [redacted] रागादिक जीवहीका कर्म है।

जातैं भावकर्म तौ चेतना का अनुसारी हैं॥ अर पुद्गल ज्ञाता [redacted] है नांही॥ ऐसैं [redacted] रागादिक भाव जी

वकै अस्तित्वविषै है॥ अब [redacted] जो रागादिक भावनिका निमित्त कर्महीकौं मानि आपकौं रा

गादिक [redacted] का अकर्त्ता मानै है सो [redacted] कर्त्ता तौ आप अर आपकौं निरुद्यमी होइ प्रमादी रहनौं तातैं

कर्महीका दोष ठहरावै है सो यहु दुःखदायक भ्रम है॥ सोई समयसारके कलशा विषै कह्या है॥७॥

रागजन्मनि निमित्ततां परद्रव्यमेव कलयंति ये तु ते॥ उत्तरंति न हि मोहवाहिनीं शुद्धबोधविधुरां

धबुद्धयः॥१॥ जे जीव रागादिककी उत्पत्ति विषै परद्रव्यहीकौं निमित्तपनौं मानै है ते जीव [redacted]

[redacted] शुद्धज्ञानकरि रहित है अंधबुद्धि जिनिकी ऐसे होत संते मोहनदीकौं [redacted] नाही उ

तरै है॥ बहुरि [redacted] समयसारका म

चेतनादि भाव होइ

व्याख्या है

२पश्चात कर्म तैं हिंसा है४

सर्वविशुद्धि अधिकार विषै जो आत्मा कौं अकर्त्ता मानै है अर यहु कहै है कर्म ही जगावै [redacted] सुवावै है।
[redacted] वेदकर्म [redacted] तैं अब्रह्म है ।। [redacted] तातैं कर्म [redacted] हीक
र्त्ता है तिस जैनी कौं सांख्यमती [redacted] कह्या है ।। [redacted] जैसैं सांख्यमती आत्मा कौं शुद्ध मानि [redacted]
स्वछंद [redacted] हो है तैसैं ही यहु भया ।। बहुरि इस श्रद्धान तैं यहु दोष भया जो रागादिक अपनें न जानें आ
प कौं अकर्त्ता मान्या तब रागादिक होनें का भय रह्या नाहीं वा रागादि मिटनें का उपाय करना रह्या नाहीं
तब स्वछंद होइ [redacted] खोटे कर्म बांधि अनंत संसार विषै रुलै है ।। [redacted] इहां प्रश्न जो समयसार विषै ही ऐसा क
ह्या है ।। वर्णाद्या वा रागमोहादयो वा भिन्ना भावाः सर्व एवास्य पुंसः ।। ७ ।। याका अर्थ ।। वर्णादिक
वा रागादिक भाव हैं ते सर्व ही इस आत्मा कै भिन्न है ।। बहुरि तहां ही रागादिक कौं पुद्गल [redacted] मय
कहै है ।। बहुरि अन्य शास्त्रनि विषै भी रागादिक [redacted] तैं भिन्न [redacted] आत्मा कौं कह्या है सो यहु कैसैं है ताका उ
त्तर ।। [redacted] रागादिक भाव [redacted] पर
द्रव्य के निमित्त तैं औपाधिक भाव हो है ।। अर यहु जीव तिनि कौं स्वभाव जानै है ।। [redacted] ताकौं स्व
भाव जानैं ताकौं बुरा कैसैं मानै वा ताके नाश का उद्यम काहे कौं करै सो यहु अश्रद्धान भी विपरीत है ताके छु
२५ डावनें कौं स्वभाव की अपेक्षा रागादिक कौं भिन्न कहे हैं अर निमित्त की मुख्यता करि पुद्गलमय कहे हैं १२४
जैसैं [redacted] वैद्य रोग मिटाया चाहै है ।। जो शीत की अधिकता देखै तौ [redacted] उष्ण औषधि बतावै ।। [redacted] आ
ताप का आधिक्य देखै तौ शीतल औषधि बतावै ।। तैसैं श्रीगुरु रागादिक छुड़ाया चाहै है जो रागादिक कौं प
र का मानि स्वछंद [redacted] होइ [redacted] निरुद्यमी होइ ताकौं रागादिक आत्मा का है ऐसा श्रद्धान कराया ।। [redacted]

१उपादान कारण की मुख्यता करि४

242

124/2

बहुरि जो रागादिक [redacted] आपका स्वभाव मानि तिनिका नाशका उद्यम नाही करै है ताकौं निमित्त
कारणकी मुख्यता करि [redacted] रागादिक पर भाव है ऐसा श्रद्धान कराया है। ऐसैं विपरीत श्रद्धान
तें रहित भएं सत्य श्रद्धान होइ तब ऐसा मानै [redacted]। ए रागादिक भाव आत्माका स्वभाव तौ
नाही है। कर्मके निमित्ततैं [redacted] आत्माकै अस्तित्व
विषै [redacted] विभाव पर्याय निपजै है। नि
मित्त मिटें इनका नाश होतें स्वभाव भाव रहि जाय है तातैं [redacted] इनिके नाशका उद्यम करनां।
इहां प्रश्न जो कर्मका निमित्ततैं [redacted] ए हो है तौ कर्मका उदय रहै [redacted] ताव तू ए दूरि कैसे होइ यातैं याका उद्यम क
रनौं निरर्थक है ताका उत्तर। [redacted]।। एक कार्य होनें विषै अनेक कारण चाहिए है [redacted] तिनि विषै जे [redacted]
कारण बुद्धिपूर्वक होइ तिनिकौं तौ उद्यम करि मिलावै अर अबुद्धिपूर्वक कारण स्वयमेव मिलै
तब कार्य सिद्धि होइ। जैसैं [redacted] पुत्र होनें का कारण विवाहादिक करना है अर
अबुद्धिपूर्वक भवितव्य है। तहां पुत्रका अर्थी विवाहादिककौ तौ उद्यम करै अर भवितव्य स्वयमे
व होइ तब पुत्र होइ। तैसैं [redacted] कारण बुद्धिपूर्वक तौ [redacted] तत्व विचारादिक है अर अबुद्धिपू
र्वक [redacted] अर्थी तत्व विचारादिककौ तौ उद्यम करै अर मोह कर्मका उप
शमादिक स्वयमेव होइ तब रागादिक दूरि होइ। इहां ऐसा कहै है कि जैसैं विवाहादिक भी भवितव्य
आधीन है तैसैं तत्वविचारादिक भी कर्मका क्षयोपशमादिकके आधीन है। तातैं उद्यम करना नि

विभाव दूरि करनेके

मोह कर्मका उपशमादिक [redacted] है सो ताका

बुद्धिपूर्व कतौ

२ याहीतैं ५ २ तैंकाउद्यमकराईएहै ५

१६१

र्थकहै।। ताकाउत्तर।। ज्ञानावरणकातौ क्षयोपशमतत्त्व[redacted] विचारकरनेंयोग्यतेरेंभयाहै [redacted]
उपयोगकोंइही [redacted] लगावैं [redacted]।। असैंहीजीवनिकेक्षयोपशमनांहीहै तौउ
नकोंकाहेकोंउपदेशदीजिएहै।। बहुरिवहकहेहै [redacted] होनहार होइतौतहींउपयोगलागै
बिनाहोनहारकैसैंलागै।। ताकाउत्तर जोअैसाश्रद्धानहैतौ सर्वत्रकोईहीकार्यकाउद्यममतिकरै।
तू [redacted] षानपानव्यापारादिकका तौउद्यमकरैअरइहांहोनहारबतावैसो [redacted] जांनि
एहैतेरा अनुरागइहांनांही। [redacted] मानादिककरिअैसैं [redacted] झूंठीबातैंबनावैहै।। याप्रकार
जेरागादिक [redacted] होतेंतिनिकरिरहितआत्माकोंमांनेंहैंतेमिथ्यादृष्टीजाननें।। बहुरिकर्म
नोकर्मकासंबंधहोतें [redacted] आत्माकोंनिर्बंधमानैंसोप्रत्यक्षइनिकाबंधनदेषिएहै।। ज्ञानावरण
दिकतैंज्ञानादिककाघातदेषिएहै।। शरीरकरिताकेअनुसारिअवस्थाहोतीदेषिएहै बंधनकै
सैंनांही।। जोबंधननहोइतौमोक्षमार्गीइनिकेनाशकाउद्यमकाहेकोंकरै।। इहांकोऊकहैशास्त्र
निविषैआत्माकोंकर्मनोकर्मतैंभिन्न [redacted] अबद्धस्पृष्टकैसैंकह्याहै।। ताकाउत्तर।। संबंध [redacted]
[redacted] अनेकप्रकारहै।। तहां [redacted] तादात्म्यसंबंधअपेक्षाआत्मा
कोंकर्मनोकर्मतैंभिन्नकह्याहै।। जातैं [redacted] द्रव्यपलटिकरिएकनांहीहोइजाइहै अरइसही
अपेक्षाअबद्धस्पृष्टकह्याहै।। बहुरिनिमित्तनैमित्तिकसंबंधअपेक्षाबंधनहैही।। उनकेनिमित्त
तैंआत्माअनेकअवस्थाधरैहीहै।। तातैंसर्वथा [redacted] निर्बंधआपकोंमाननांमिथ्यादृष्टिहै।। इहां
कोऊकहैहमकोंतौबंधमुक्तिकाविकल्पकरनांनांही।। जातैंशास्त्रविषैअैसाकह्याहै।। जोबंधउ
मुक्कउमुणइ।। सोबंधइणिभंतु।। याकाअर्थ।। जोजीवबंध्याअरमुक्तभयामानैहैसोनिःसंदेहबंधैहै

१२५

१२५

ताकों [redacted] कहिए है।। जे जीव केवल पर्यायदृष्टि होइ बंधमुक्त अवस्था हीकों मानै है द्रव्यस्वभा
वका ग्रहण नाहीं करै है तिनिकों ऐसा उपदेश दीया है जो [redacted]
[redacted] द्रव्यस्वभावकों न जानता जीव बंधा मुक्त भया [redacted] मानै सो दैधै है।। बहु
रि जो सर्वथा ही बंधमुक्ति न होइ तौ सो जीव बंधै है ऐसा काहेकों कहै अर बंधके नाशका मुक्त हो
नेका उद्यम काहेकों करिए है काहेकों आत्मानुभव करिए है तातैं द्रव्यदृष्टि करि [redacted] एक दशा है
पर्यायदृष्टि करि अनेक अवस्था हो है ऐसा मानना योग्य है।। [redacted] ऐसैं ही अनेक प्रकार करि
केवल निश्चयनयका अभिप्रायतैं [redacted] विरुद्ध [redacted] श्रद्धानादिक करै है।। जिनवानी विषै तौ [redacted]
[redacted] नाना नय अपेक्षा कहीं कैसा कहीं कैसा निरूपण कीया है
यहु अपने अभिप्रायतैं निश्चयनयकी मुख्यता करि जो कथन कीया होइ ताहीकों ग्रहि करि [redacted]
मिथ्यादृष्टिकों धारै है।। बहुरि जिनवांनी विषै तौ सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रकी एकता भएँ मोक्षमा
र्ग किया है सो [redacted] पाके सम्यग्दर्शन ज्ञान विषै सप्ततत्व + अर चारित्र विषै रागादिक दूरि कीए चाहिए [redacted] ताका उद्यम नाहीं।।
निका श्रद्धान वा जानना भया चाहिए सो तिनिका विचार नाहीं।। एक अपने आत्माकों शुद्ध अनुभ
वनां इस हीकों मोक्षमार्ग जांनि संतुष्ट भया है।। ताका अभ्यास [redacted]
[redacted] करनेंकों अंतरंग विषै ऐसा चितवन कीया करै है।। मैं शुद्ध हौं केवलज्ञा
नादि सहित हौं।। द्रव्यकर्म नोकर्म रहित हौं।। परमानंदमय हौं।। जन्म [redacted] मरणादि दुख मेरै नाहीं
हौं।। इत्यादि चितवन करै है।। सो [redacted] इहां पूछिए है।। यहु चितवन जो द्रव्यदृष्टि

२४५

126

करि कह्यौ हो तौ द्रव्य तौ शुद्ध अशुद्ध सर्व पर्यायनिका समुदाय है। तुम शुद्ध ही अनुभवन काहे कौं करौ हौ।
अर पर्याय दृष्टि करि कह्यौ हो तौ तुम्हारै तौ वर्त्तमान अशुद्ध पर्याय है। तुम आपाकौं शुद्ध कैसें मानौ
हौ। बहुरि जो शक्ति अपेक्षा शुद्ध मानौ हौ तौ मैं असा होनें योग्य हौं असा मानौ॥ मैं असा हौं असैं काहे
कौं मानौ हौ॥ तातैं आपकौं शुद्ध [redacted] रूप चिंतवन करनौ भ्रम है॥ काहेतैं तुम आपाकौं सिद्ध समान
मान्या तौ यहु संसार अवस्था कौंन की है॥ अर तुम्हारै केवलज्ञानादिक है तौ ए मतिज्ञानादिक कौंन के
है अर द्रव्यकर्म नोकर्म [redacted] रहित हौ तौ [redacted] ज्ञानादिक की व्यक्तता क्यौं न हो॥ परमानंद
मय हौ तौ अब कर्त्तव्य कहा रह्या॥ जन्म [redacted] मरणादि दुःख नांही तौ दुःखी कैसें होत हो तातैं अन्य अव
स्था विषै अन्य अवस्था मानना भ्रम है॥ इहां कोऊ कहै शास्त्र विषै शुद्ध चिंतवन करनें का उपदेश कैसें
दीया है॥ ताका उत्तर॥ [redacted] एक तौ द्रव्य अपेक्षा शुद्धपनौ है एक
पर्याय अपेक्षा शुद्धपनौ है॥ तहां द्रव्य अपेक्षा तौ परद्रव्यतैं भिन्नपनौ वा अपनें [redacted] भावनितैं अभिन्नप
नौं ताका नाम शुद्धपनौ है॥ अर पर्याय अपेक्षा [redacted] औपाधिक भावनिका अभाव होनौ
ताका नाम शुद्धपनौ है॥ सो शुद्ध चिंतवन विषै द्रव्य अपेक्षा शुद्धपनौ ग्रहण कीया है। सोई समयसा
र व्याख्या विषै कह्या है॥ एष एवाशेषद्रव्यांतरभावेभ्यो भिन्नत्वेनोपास्यमानः शुद्ध इत्यभिलप्य १२६
ते॥ याका अर्थ॥ जो आत्मा [redacted] प्रमत्त अप्रमत्त नांही है सो यहु ही समस्त परद्रव्य
के भावनितैं भिन्नपनैं करि सेया हुवा शुद्ध असा कहिए है॥ बहुरि तहां ही असा कह्या है॥ समस्ता का
रकचक्रप्रक्रियोत्तीर्णनिर्मलानुभूतिमात्रत्वाच्छुद्धः॥ याका अर्थ॥ समस्त ही कर्त्ता कर्म आदि

२५८

126

१कासम६१

दिकारकनिकीप्रक्रियातैंपररंगतऐसीजोनिर्म्मलअनुभतिजोअभेदज्ञानतन्मात्रहैतातैंशुद्धहै।
तातैंऐसैंशुद्धशब्दकाअर्थजाननां॥वहुरिऐसैंहीकेवलशब्दकाअर्थजाननांजो पर[redacted]नांवतैं
भिन्न निकेवलआपहीताकानामकेवलहै॥ऐसैंहीअन्ययथार्थअर्थअवधारनां॥पर्यायअ
पेक्षाशुद्धपनांमांनैंवाकेवलीआपकोंमांनैंमहाविपरीतहोइ॥तातैंआपकोंद्रव्यपर्यायरूपअवलो
५ अवस्था कनां॥द्रव्यकरिसामान्यस्वरूपअवलोकनांपर्यायकरिविशेषअवधारनां ऐसैंहीचितवनकीए
सम्यग्दृष्टिहोहै॥जातैंसांचअवलोकेंविनासम्यग्दृष्टिकैसैंनामपावै॥वहुरिमोक्षमार्गविषै
तौरागादिकमेटनेंकाश्रद्धानज्ञानआचरनकरनांहैसोतौविचारहीनांही॥आपकौंशुद्ध[redacted]
[redacted]अनुभवनतैंहीआपकोंसम्यग्दृष्टीमांनि[redacted]अन्यसर्वसाधननिकानिषेध
करैहै॥शास्त्र[redacted]अभ्यासकरनांनिरर्थकवतावैहै।गुणस्थानमार्ग ८ द्रव्यादिका कावा
१ त्रिलोका णादिकाविचारकोंविकल्पठहरावैहै॥तपश्चरणकरनांवृथाक्लेशकरनौ मांनैहै॥व्रतादिकका
धारनांवंधनमैंपरनांठहरावैहै॥इत्यादिसर्वसाधनकोंउठाइप्रमादीहोइपरिणमैहै॥सोशास्त्र
भ्यासनिरर्थकहोइतौमुनिनिकैंभीतौध्यानअध्ययनदोयहीकार्यमुख्यहैध्यानविषैउपयोग
नलागैतवअध्ययनहीविषैउपयोगकौंलगावैहै॥अन्यठिकानांवीचिमैंउपयोगलगावनेंयोग्यहै
नांही॥वहुरिशास्त्रअभ्यासमैं[redacted]रितत्वनिकाविशेष
जाननेंतैंसम्य[redacted]ग्दर्शन[redacted]ज्ञाननिर्मलहोइ॥वहुरितहां[redacted]यावत्उपयो
गरहैतावत्कषायमंदरहै॥[redacted] वहुरि आगामीवीतरागभावनिकीवृद्धिहोइऐसेकार्यकोंनिरर्थ
ककैसैंमांनिए॥वहुरिवहकहैहैजोजिनशास्त्रनिविषैअध्यात्मउपदेशहैतिनिकाअभ्यासकरनौ

७ पूजनादिकार्यनिकोंशुभास्रवजांनि हेयप्ररूपैहै॥८

२५७

127

४चउपयोगकों [redacted] मंदकषायरूपराखनेकेंअर्थि४ ३के त४

अन्यशास्त्रनिका अभ्यास करि किछू सिद्धि नाहीं। ताकों कहिए है। जो तेरै सांची दृष्टि भई है तौ सर्व ही जैन शास्त्र कार्यकारी है। [redacted] तहाँ भी मुख्यपनैं [redacted] अध्यात्मशास्त्रनिविषै तौ आत्मस्वरूप का मुख्य कथन है सो सम्यग्दृष्टि भए आत्मस्वरूप का तौ निर्णय होइ चुक्या [redacted] तब तौ [redacted] ज्ञान की निर्मलता के अर्थि अन्यशास्त्रनिका अभ्यास मुख्य चाहिए। [redacted]

[illegible] [redacted] अर आत्मस्वरूप का [redacted] १निर्णय१

[redacted] भया है ताका स्पष्ट राखनेकौं अर्थि अध्यात्मशास्त्रनिका भी अभ्यास चाहिए। परंतु अन्यशास्त्रनि विषै अरुचि न चाहिए। जाकै अन्यशास्त्रनि की अरुचि है [redacted] ताकै [redacted]

[redacted] अध्यात्म की [redacted] रुचि सांची नाहीं। [redacted] जाकै विषयासक्तपना होइ सो विषयासक्तपुरुषनि की कथा भी रुचितैं सुनै। वा विषय [redacted] का विशेष कौं भी [redacted] जानै। वा विषय का आचरन विषै जो साधन होइ ताकौं भी [redacted] हितरूप मानै। वा विषय का स्वरूप कौं भी [redacted]। तैसैं जाकै १जैसें१ १पहिचानैं१ १आत्मा

१आत्म१ [redacted] रुचि भई होइ सो [redacted] रुचि के धारक तीर्थंकरादिक तिनिका पुराण भी जानै। बहुरि [redacted] के

१जाननेंकों विशेष गुणस्थानादिक [redacted] कौं भी जानै। बहुरि आत्म आचरण विषै जे व्रतादिक साधन हैं तिनकौं भी [redacted] हितरूप मानै। बहुरि आत्मा के स्वरूप कौं भी पहिचानै। तातैं च्यारौं ही अनुयोग कार्यकारी है। बहुरि तिनिका नीका ज्ञान होने के अर्थि शब्द न्याय शास्त्रादिक कौं भी जानना चाहिए। सो अपनी शक्ति के अनुसारि सबनिका थोरा वा बहुत अभ्यास करना योग्य है। बहुरि [redacted] वह कहै है [redacted] 127

[redacted] पद्मनंदिपचीसी विषै ऐसा कह्या है। जो [redacted] स्वरूपतैं निकसि बाह्यशास्त्रनि विषै बुद्धि विचरै है

२आत्म२

३ न रहा जाय:

तो बहु बुद्धि व्यभिचारिणी है ताका उत्तर।। बहु सत्य कहा है।। बुद्धि तो आत्मा की है ताकों छोरि पर
द्रव्य शास्त्रनि विषै अनुरागिणी भई ताकों व्यभिचारिणी ही कहिए।। परंतु जैसें स्त्री शीलवती र
है तो योग्य ही अर [redacted] तो उत्तम पुरुष [redacted] कों छोरि चांडालादिक का सेवन कीए तो अत्यं
त निंदनीक होइ।। तैसें बुद्धि आत्मस्वरूप विषै प्रवर्त्तै तो [redacted] योग्य ही है।। अर [redacted] नर [redacted] ला
जाय तो प्रशस्त शास्त्रादि परद्रव्य कों छोरि अप्रशस्त विषयादि विषै लगै तो महानिंदनीक
१ मुनिनि कै भी: होइ।। सो स्वरूप विषै बहुत काल बुद्धि रहै नाहीं [redacted] तो तेरी कैसें रह्या करै ताते शास्त्राभ्या
स विषै उपयोग लगावना युक्त है।। बहुरि जो [redacted] द्रव्यादिक का वा गुणस्थानादिक का विचा
र कों विकल्प ठहरावै है सो विकल्प तो है।। परंतु [redacted] निर्विकल्प उपयोग न रहै तब इनि विकल्प
नि कों न करै तो अन्य विकल्प होइ ते बहुत [redacted] रागादि गर्भित हो है [redacted] बहुरि निर्विकल्पदशा सदा
रहै नाहीं।। जातें छद्मस्थ का उपयोग एकरूप [redacted] उत्कृष्ट रहै तो अंतर्मुहूर्त रहै है।। बहुरि तू कहै
गा मैं आत्मस्वरूप ही का चिंतवन अनेक प्रकार कीया करौंगा।। सो सामान्य चिंतवन विषै तो
अनेक प्रकार बनै नाहीं।। अर विशेष करैगा तब द्रव्य गुण पर्याय गुणस्थान मार्गणा शुद्ध अशु
द्ध अवस्था इत्यादि विचार होइगा।। [redacted] ।। बहुरि सुनि केवल आत्मज्ञान ही तें तो
मोक्षमार्ग होइ नाहीं।। सप्त तत्वनि का श्रद्धान ज्ञान भएं वा रागादिक दूरि कीएं मोक्षमार्ग होगा
सो सप्त तत्वनि का विशेष जाननें कों जीव [redacted] अजीव के विशेष वा कर्म का आस्रव
बंधादिक का विशेष अवश्य जानना योग्य है।। [redacted] जातें सम्यग्दर्शन ज्ञान की प्राप्ति होइ।। बहु
रि तहां पीछें रागादिक दूरि करनें सो जे रागादि बधावनें के कारण तिनि कों छोरि जे रागादि घटावनें के

128

ऽबहुरिवहकहैहैस्वर्ग [illegible]

[illegible]

कारणहोइतहांउपयोगकोंलगावनांसोद्रव्यादिककागुणस्थानादिककाविचाररागादिक [illegible] घटा
वनेंकोंकारणहै॥इनिविषैकोईरागादिककानिमित्तनांही ताते सम्यग्दृष्टी नए वीछैंजीइहांहीउपयो
गलगावनां॥बहुरिवहकहैहैरागादिमिटावनेंकोंकारण [illegible] होइतिनिविषैतोउपयोगल
गावनां परंतुत्रिलोकवर्तीजीवनिकागतिआदिविचारकरनां [illegible] वाकर्मका
बंधउदयसत्तादिककाघणांविशेषजाननांवात्रिलोककाआकारप्रमाणादिकजाननांइत्यादिविचा
रकोंनकार्यकारीहै॥ताकाउत्तर॥इनिकोंभीविचारतैंरागादिकवधतेनांही॥जातैंए [illegible] ज्ञेय रागादि
ककोंकारणनांही॥बहुरि [illegible] इनिकोंविशेषजानें [illegible] तत्वज्ञाननिर्मलहोइतातेंआ
गामीरागादिघटावनेंकोंहीकारणहैतातें [illegible] कार्यकारीहै॥ [illegible]
[illegible] नरकादिक [illegible] कोंजानेंतहांरागद्वेषहोहैताकासमाधान [illegible] पापछोरि
पुण्यकार्यविषैलागे [illegible]॥तहांकिछूरागादिकघटैहीहै॥ [illegible] बहुरिवहकहैहै॥शास्त्रविषै
ऐसाउपदेशहै [illegible]॥ [illegible] प्रयोजनभूत [illegible] थोराहीजान
नांकार्यकारीहै॥ताते बहुत [illegible] विकल्पका [illegible] कोंकीजिए॥ताकाउत्तर॥जेजीव [illegible] अन्यबहुतजानें
अरप्रयोजनभूतकोंनजानैंअथवाजिनकीबहुतजाननेंकीशक्तिनांहीतिनकोंयहउपदेशदीयाहै
[illegible] बहुरिजाकीबहुतजाननेंकीशक्तिहोइताकोंतोयहकह्यानांहीजो [illegible]
[illegible] बहुतजानेंबुराहोगा॥ [illegible] जेताबहुतजानैंगातितनांप्रयोजनभू
तजाननांनिर्मलहोगा॥ [illegible] जातैंशास्त्रविषैऐसाकह्याहै॥सामान्यशास्त्रतोनूनं।विशेषोबलवा
नूनंवत्॥याकाअर्थयहसामान्यशास्त्रतैंविशेषबलवानहै॥विशेषहीतैंनीकैंनिर्णयहोहै॥तातैंविशे

ऽयाकेइष्ट अनिष्टरू पहैनांहीता तैंवर्त्तमानऽ

ऽज्ञानीकैतो ऐसीबुद्धिहै इनांहै॥अ ज्ञानीकैहोइ तही

१२९

128

३ राग छोडनेंकै अर्थि १   ३ अरद्वेष छोडनेंकै अर्थि २
३ भोजनादिक २

पर्जाननौ योग्य है ॥ बहुरि [redacted] तपश्चरणकौं वृथा क्लेश ठहरावै है सो [redacted] मोक्षमार्गी
एं तौ संसारी जीवनितैं उलटी परणति चाहिए ॥ संसारीनिकै इष्ट अनिष्ट सामग्रीतैं रागद्वेष हो है याकै रागद्वेष न चाहिए ॥ [redacted] इष्ट सामग्रीका त्यागी हो है अनिष्ट सामग्री अनशनादिक ताका अंगीकार करै है ॥ स्वाधीनपनैं ऐसा साधन होइ तौ पराधीन इष्ट अनिष्ट सामग्री मिलें भी रागद्वेष न होइ ॥ सो चाहिए तौ ऐसें अर तैं [redacted] अनशनादिकतैं [redacted] द्वेष भया ताकैं तैं ताकौं क्लेश ठहराया ॥ [redacted] जब यहु क्लेश भया तब भोजन करनां सुख [redacted] स्वयमेव भया तहां राग आया तौ ऐसी परणति तौ संसारीनिकै पाईए ही है तैं मोक्षमार्गी होइ कहा कीया ॥ बहुरि जो तू कहैगा केई सम्यग्दृष्टी भी तपश्चरण नांही करै है ताका उत्तर यहु [redacted] कारणविशेष तैं तप न होइ सकै है परंतु श्रद्धानविषै तौ तपकौं भला जानै है ताके साधनका उद्यम राखै है तेरै तौ श्रद्धान यहु है तप करनी क्लेश है बहुरि तप [redacted] का तेरै उद्यम नांही तातैं तेरै सम्यग्दृष्टि कैसें होइ ॥ बहुरि वह कहै है शास्त्रविषै ऐसा कह्या है ॥ [redacted] तपआदिकका क्लेश करै है तौ करौ ज्ञान विना सिद्धि नांही ॥ [redacted] ताका उत्तर यहु [redacted] जे जीव तत्वज्ञानतैं तौ पराङ्मुख हैं ॥ तपहीतैं मोक्ष मानै है तिनकौं ऐसा उपदेश दीया है [redacted] तत्वज्ञान [redacted] विना केवल तपहीतैं मोक्षमार्ग नहीं है ॥ बहुरि तत्वज्ञान भए रागादि मेटनेंकै अर्थि तप करनेंका तौ निषेध है नांही ॥ जो निषेध होइ तौ गणधरादिक तप काहेकौं करै ॥ तातैं अपनी शक्ति अनुसारि तप करनी योग्य है ॥ [redacted] बहुरि बहुव्रतादिककौं बंधन मानै है सो स्वछंद वृत्ति तौ अज्ञान अवस्था ही विषै भी ज्ञान पाएं [redacted]

प्रमादरूप

तौ परणतिकौं रोके ही है॥ [redacted] जैसें कोऊ अन्तरंगमाहीं [redacted] वाकौं कुसंगतिका निमित्त
कारेंअरएकैं मा भिखूं हैं नीठीतब क्रमतें घटावै॥ तैसें जीवैं [redacted] प्रवर्त्तै आपतें [redacted]
कुसंगतिका निमित्त आर एकैं माभिखूं हैं नीठी तब क्रमतें [redacted] अतातें
समाधि छूटै तैतातें ताघटावै॥ बहुरि सम्यग्दृष्टि [redacted] तातें अन्य
बाह्य निमित्त बलमाताः [redacted] तातें अन्य बाह्यक निमित्त कोंमनें कीमा
[redacted] ॥ अथवा विचारी अन्यबाह्यकनिकास संयोग दिके रैनकैं निमि
त बिना अपवेवाह्यक कानी निमित्तनौ छूटि जाय॥ तैसें अपनी परिणाम परद्रव्य निमित्त प्रमादरूप
होता था॥ ताकौं तत्वज्ञानकरि समझायेंतव यानें परद्रव्यका त्याग कीया॥ अब ताकौं आत्मा ही परद्रव्य निमित्त
[redacted] होतें कैसें तबकुनके निमित्त बिना अपने परिणामकामी समादिक मिटि जाय॥ जैसें
[redacted] ॥
तैसें स्वछंद [redacted] तिसपरणतिरोकनैं कैं अर्थि बा
ह्य हिंसादिककारणनिका त्यागी अवश्य भया चाहिए॥ [redacted] बहुरि वह कहै है [redacted]
[redacted] हमारे परिणाम तौ शुद्ध है॥ बाह्य त्याग न कीया तौ न कीया॥ ताकौं उत्त
र जेए हिंसादिक कार्य तिरे परिणाम बिना स्वयमेव होते होइ तौ तौ हम ऐसें मानैं बहुरि [redacted]
जो तू [redacted] अपनी परिणाम करि कार्य करै तहां तेरे परिणाम शुद्ध कैसें कहिए॥ [redacted] १२९
[redacted] दिक्रिया [redacted] प्रमादरूप गमनादिक्रिया परिणाम बिना कैसें
होइ क्रिया तौ आप उद्यमी होइ तू करै अर तहां [redacted] हिंसादिक होइ ताकों
गिनैं नाही परिणाम शुद्ध मानै सो [redacted] ऐसी मांनितैं तेरे परिणाम अशुद्ध ही रहैंगे

१ विषयसेवनाः

१ ६९

बहुरि वह कहै है ॥ [redacted] परिणामनि कों रोकै बाह्य हिंसादिक भी घटावै ॥ परंतु प्रतिज्ञा करनें मैं बंधन होहै [redacted] तातैं प्रतिज्ञारूप व्रत न अंगीकार करनां ॥ ताका समाधान ॥ जिस कार्य करनैं की आशा रहै है ताकी प्रतिज्ञा न लीजिए है ॥ अर आशा रहैं तिसतैं राग रहै है ॥ तिस रागभावतैं बिना कार्य कीऐं भी अविरतितैं [redacted] तातैं प्रतिज्ञा अवश्य करनी युक्त है ॥ अर [redacted] कार्य करनें का बंधन भऐ बिना परिणाम कैसैं रुकैंगे ॥ प्रयोजन पडें तद्रूप परिणाम होइ ही होइ ॥ वा बिना प्रयोजन पडें ताकी आशा रहै तातैं प्रतिज्ञा करनी युक्त है ॥ [redacted] बहुरि वह कहै है न जानिए कैसा उदय आवै पीछैं प्रतिज्ञा भंग होइ तौ [redacted] महापाप लागै तातैं [redacted] प्रारब्ध [redacted] अनुसारि कार्य बनैं सो बनौं ॥ प्रतिज्ञा का विकल्प [redacted] न करनी ॥ ताका समाधान ॥ [redacted] प्रतिज्ञा ग्रहण करतैं जाका निर्वाह होता न जानैं तिस प्रतिज्ञा कों तौ करै नाही ॥ प्रतिज्ञा लेतें ही [redacted] यहु अभिप्राय रहै प्रयोजन पडें छोडि द्यौंगा तौ वह प्रतिज्ञा कौन कार्यकारी भई ॥ अर प्रतिज्ञा ग्रहण करतैं तौ यहु परिणाम है मरणांत भऐ भी न छोडौंगा तौ ऐसी प्रतिज्ञा करनी युक्त ही है ॥ बिना प्रतिज्ञा कीऐं अविरति संबंधी बंध मिटै नाही ॥ [redacted] बहुरि आगामी उदय का भय करि प्रतिज्ञा न लीजिए सो [redacted] उदय कों विचारें सर्व ही [redacted] कर्तव्य का नाश होइ ॥ जैसैं [redacted] आपकों पचता जानै तितना भोजन करै ॥ कदाचित् काहू कैं भोजन तैं अजीर्ण भया होइ तौ तिस भयतैं [redacted] तैसें आपकै निर्वाह होता जानै तितनी प्रतिज्ञा करै ॥ कदाचित् काहू कै प्रतिज्ञा तैं भ्रष्टपनां भया होइ तौ तिस भयतैं [redacted] प्रतिज्ञा करनी छांडै [redacted] असंयम ही होइ तातैं बनैं सो प्रतिज्ञा लैनी युक्त है ॥

२ भोजन करनी छांडै तौ मरण ही होइ ॥ ८

४ कर्मकांड महत्ता करै ॥

बहुरि मैं पराल त्रि अनुसारि तौ कार्य बनें ही है ... तू उद्यमी होइ जो जनादिक काहेकों करै है जो तहाँ उद्यम करै है तौ ... त्याग करनें का तौ उद्यम करनां युक्त ही है॥ जो प्रतिमावत् तेरी दशा होइ जाइ तौ हम परालत्रि ही मांनैंगे तेरा कर्त्तव्य नं मांनैंगे॥ तातैं काहेकों स्वछंद होनें की युक्ति बनावै है॥ ... बनैं सो प्रतिज्ञा करि तिनकौ आरनौ योग्य ही है॥ बहुरि वह पूजनादि कार्य कौं शुभास्रव जांनि हेय ... मांनै है सो यहु सत्य ही है॥ परंतु जो इनि कार्यनि कौं छोरि शुद्धोपयोगरूप होइ तौ भलें ही है अर विषयकषाय रूप अशुभरूप प्रवर्त्तै तौ अपनां बुरा ही कीया॥ शुभोपयोग तैं स्वर्गादि होइ वा भली वासना तैं ... वा भला निमित्त तैं ... कर्म्म अनुभाग घटि जाइ तौ सम्यक्त्वादिक की प्राप्ति होइ जाइ॥ बहुरि अशुभोपयोग तैं नरक निगोदादि होइ॥ वा बुरी वासना तैं वा बुरा निमित्त तैं कर्म्म अनुभाग बधि जाइ तौ सम्यक्त्वादिक महादुर्लभ होइ जाइ॥ ... बहुरि ... शुभोपयोग होतैं कषाय मंद हो है अशुभोपयोग होतैं तीव्र हो है सो मंदकषाय का कार्य छोरि तीव्रकषाय का कार्य करनौ तौ ऐसा है जैसें ... कडवी वस्तु न खांनी अर विष खानां सो यहु अज्ञानता है॥ बहुरि वह कहै है शास्त्र विषैं ... कों समान कहा है ... तातैं हमकौं तौ विशेष जानना युक्त नांही॥ ताका समाधान॥ जे जीव ... मोक्ष का कारण मांनि उपादेय मांनै है॥ शुद्धोपयोग कौं नांही पहिचानैं है तिनिकों ... शुभ अशुभ दोऊनि कौं अशुद्धता की अपेक्षा वा बंधकारण की अपेक्षा समान दिखाए हैं॥ बहुरि शुभ अशुभनि का परस्पर विचार कीजिए तौ शुभभावनि विषै कषाय मंद हो

Margin notes: ×का स्थिति; ×का स्थिति; ×शुभ अशु भ; १३० (?); ×शुद्धोप योगकौं; १दिखाए हैं×

25-4

130

२की अपेक्षा मिश्रीन विषै शुभकों भला जानी [redacted] ५

है तातैं [redacted] विवेध [redacted] हीन होहै ।। अशुभ भावनि विषै कषाय तीव्र होहै तातैं बंध बहुत होहै ।। ऐ
सें विचार कीए अशुभतैं [redacted] कहिए है ।। ~~बहुरि जो जीव इंद्रिय सुख कों भला जानि मोहनीय का उपशम~~
~~नाही करै है तिनि कों~~ [redacted] ~~[illegible]~~ [redacted]
~~[illegible]~~ बहुत रोग बुरा ही है। परंतु [redacted]
जैसैं रोग तौ थोरा वा बहुत बुरा ही है ।। परंतु बहुत रोग की अपेक्षा थोरा रोग कों भला भी कहिए है ।। [redacted] तातैं
शुद्धोपयोग नाही होइ तब अशुभतैं छूटि शुभ विषै प्रवर्त्तन युक्त है ।। शुभ कों छोरि अशुभ विषै प्रवर्त्तन युक्त
नाही ।। बहुरि वह कहै है जो कामादिक वा क्षुधादिक मिटावने कों अशुभ रूप प्रवृत्ति तो भए बिना रहती नाही
अर शुभ प्रवृत्ति चाहि करि करनी परै है ज्ञानी कै चाहि चहिए नाही ।। तातैं शुभ [redacted] का उद्यम नाही ।। करना
ता का उत्तर ।। [redacted] ~~[illegible]~~
~~[illegible]~~ [redacted] ~~[illegible]~~
~~[illegible] तातैं तहां उपयोग लगावने~~
~~करि वा विषय [illegible] करि कामादिक हीन होय है।~~ [redacted]
[redacted] ~~[illegible]~~ ।। [redacted]
[redacted] ~~तैं अशुभोपयोग [illegible] ।। बहुरि क्षुधादिक~~ [redacted] ~~तैं भी शुभोप~~
~~योग तैं [illegible] साता [illegible] होय है ।। [illegible] रसादिक की चाहि [illegible] है ।।~~ [redacted]
बहुरि आयु [redacted] अवशेष है तौ अन्नादिक मिलै ही मिलै तातैं क्षुधादि मेटने कों किंचित् उद्यम क[redacted] रि
[redacted] ।। शुभ प्रवृत्ति विषै उपयोग लागने करि वा ताके निमि
त्ततैं विराग ता बंधने करि कामादिक हीन होहै ।। [redacted] अर क्षुधादिक [redacted] सं क्ले

शेष थोरा

२५५

131

त्रा घोरा होय है।। तातैं शुभोपयोग का अभ्यास करनां।। उद्यम कीए जीवकै कामादिक वा क्षुधादिक पी
डै है तौ ताकै अर्थि [redacted] जैसैं घोरा पाप लागै सो करनां।। [redacted] शुभोपयोग कौं छोरि [redacted]
निःशंक पापरूप प्रवर्त्तनां तौ युक्त नांही।। बहुरि तू कहै है ज्ञानीकै चाहि नांही [redacted] अर शुभोपयोग चा
हि कीए होय है सो जैसैं [redacted]
[redacted] पुरुष किंचिन्मात्र भी रोग कौ [redacted]
[redacted] पुरुष किंचिन्मात्र भी अपनां धन दीया
चाहै नांही।। परंतु जहां बहुत द्रव्य जाता जानै तहां चाहि करि स्तोक द्रव्य देनेंका उपाय करै है।। तैसैं
ज्ञानी किंचिन्मात्र भी कषाय [redacted] रूप कार्य कीया चाहै नांही।। परंतु जहां बहुत कषाय होता जा
नैं तहां चाहि करि स्तोक कषायरूप शुभकार्य [redacted] करनें का उद्यम करै है।। [redacted]
[redacted] ऐसैं यह बात सिद्धि भई जहां शुद्धोपयोग हो तहां तौ शुभ [redacted]
कार्य का निषेध ही [redacted] है।। अर जहां अशुभोपयोग होता जानैं तहां शुभ कौं [redacted] उपाय करि अंगी
कार करनां युक्त है।। या प्रकार अनेक व्यवहार कार्य कौं उथापि स्वच्छंदपनौं कौं स्थापै है ताका निषेध
कीया।। अब [redacted] केवल निश्चयालंबी की प्रवृत्ति दिखाइए है।। एक शुद्धात्मा कौं [redacted] जानें [redacted]
[redacted] ज्ञानी होय है अन्य किछू चाहिए नांही ऐसा जांनि कबहू एकांत [redacted] तिष्टि करि ध्यान मुद्रा धा
रि मैं सर्व कर्म उपाधि रहित सिद्ध समान आत्मा हौं इत्यादि विचार करि संतुष्ट होय है [redacted] अथवा अच
ल अखंड अनोपम्यादि विशेषण करि आत्मा कौं ध्यावै है।। सो [redacted] ए विशेषण अन्य द्रव्यनि विषै भी संभवै है।। बहुरि [redacted] ए विशे
[redacted] षण किस अपेक्षा है सो विचार नांही।। बहुरि कदाचित् सूतां बैठ्यां जिस तिस अवस्था विषै ऐसा विचार रा

ऽ रूप कार्यऽ

ऽता जानैंऽ

१३१

ऽतिमरीऽ

सो ए विशेषण केसे संभवै ऐसा विचार नांही

२५६

१३१

३ विकं १

३ समयसारविषै

वहुरि कह्या है। सम्यग्दृष्टिः स्वयमयम् इत्यादि तुस्ताना पुलकवदना रागिलाप्याचरंतु। आ

पिआपकों ज्ञानी मांनै है॥ वहुरि ज्ञानी कै आश्रव बंध नाही ऐसा आगमविषै कह्या है तातैं कदाचित विषय कषायरूप होते भी बंध होनेंका भय नाही है॥ स्वछंद भया रागादिरूप प्रवर्त्तै है सो आपापर कों जानने का तौ [illegible] वैराग्य नाव है॥ सो कह्या है॥ सम्यग्दृष्टेर्भवति नियतं ज्ञानवैराग्यशक्तिः॥ याका अर्थ यहु सम्यग्दृष्टी कै निश्चय सौं ज्ञानवैराग्यशक्ति होइ॥ बहुरि पूछिए है [illegible] परकों पर जान्यां तो [illegible] रागादि करनेंका कहा प्रयोजन रह्या॥ तहाँ वह कहै है मोह के उदयतैं रागादि हो है॥ पूर्वे भरतादिक ज्ञानी तिनकै भी विषय कषायरूप कार्य भया सुनिए है॥ ताका उत्तर॥ ज्ञानी कै भी मोह के उदयतैं रागादिक हो है यहु सत्य परन्तु [illegible] वुद्धिपूर्वक रागादि होते [illegible] नाही सो विशेष वर्णन आगैं करैंगे॥ वहुरि जाकै रागादि होनें का किछू विषाद नाही तिनिके नाशका उपाय नाही [illegible] ताकै रागादिक वुरे हैं ऐसा श्रद्धान भी नाही संभवै है॥ ऐसे श्रद्धान विना सम्यग्दृष्टी कैसे होइ॥ [illegible] भी वाज्जीवादि तत्त्वनिके श्र[द्धान]... वहुरि भरतादिक [illegible] सम्यग्दृष्टिनिकै विषय सेवनकरनेंका प्रयोजन तो इतना ही श्रद्धान है॥ वहुरि भरतादिक सम्यग्दृष्टिनिकै विषय कषायकी प्रवृत्ति जैसे हो है सो भी विशेष आगैं कहैंगे तउनका उदाहरण करि स्वछंद होगा तो तेरै तीव्र आश्रव बंध होगा॥ [illegible] सो समयसार विषै कह्या है॥ सम्यग्दृष्टिः स्वयमयम् इत्यादि [illegible] इत्यादिक [illegible] वार्द कह्या है॥ मग्नाः ज्ञान नयैषिणोपि यदि ते स्वछंद मंदोद्यमाः॥ याका अर्थ यहु॥ ज्ञाननयके अवलोकन हारे भी जे स्वछंद मंद उद्यमी होहैं ते संसारविषै डूवै॥ और भी तहाँ निनू कर्म्मनजानुकम्नु

दीर्घ संसारी तिनविषै ज्ञानवैराग्यशक्ति नाही। आ पर [illegible] कहा है॥ यातैं

सम्यग्दृष्टी होय मोह के उदयतैं बंध नाही॥ ऐसे उद्वाफला या सुष जिनि [illegible] जी श्रीवरणैं कै है तो कहा॥

वहुरि पंचसमितिका सावधानीको [illegible] प्रबलै वहै तो प्रवलै वो मातैं वैराग्यशक्ति विनाशज है पापी ही है॥ एतै आत्मा अनात्मा का ज्ञान रहि

उप शुद्धोपयोगी प्रमाद

२५७

१३२

मो.मा.प्र. ७. अशुभ विषै लगावो निषेध

चिंत इत्यादि कलशा विषै। वा तथापि न निरर्गलं चरितुमिष्यते ज्ञानिनां इत्यादि कलशा विषै स्वछं
द होने का निषेध्या है।। बिना चाहि जो कार्य होइ सो कर्म बंध कारण नाहीं।। अभिप्राय तैं
करै अर ज्ञाता रहै यहु तौ बनै नाहीं इत्यादि निरूपण कीया है।। तातैं रागादिक कौं बुरे अहितकारी
जानि तिनिका नाश कै अर्थि उद्यम राखनां।। तहां अनुक्रम विषै पहलैं तीव्र रागादि छोडनें कै अर्थि
अशुभ कार्य छोरि शुभ विषै लागनां।। पीछैं मंद रागादि भी छोडनें कै अर्थि शुभ कौं भी छोरि शुद्धो
पयोगरूप होनां।। बहुरि केई जीव
व्यापारादि कार्य वा स्त्रीसेवनादि कार्यनि कौं भी घटावै है।। बहु
रि शुभ कौं हेय जानि शास्त्राभ्यासादि कार्यनि विषै नाहीं प्रवर्तै है।। वी
तराग भावरूप शुद्धोपयोग कौं प्राप्त भए नाहीं।। ते जीव अर्थ काम मोक्ष रूप पुरुषार्थ
तें रहित होत संतें आलसी निरुद्यमी हो है।।
तिनिकी निंदा पंचास्तिकाय की व्याख्या विषै कीनी है तिनि कौं दृष्टांत दीया है जैसैं बहुत
खीर खांड खाइ पुरुष आलसी हो है।। वा जैसैं वृक्ष निरुद्यमी है तैसैं ते जीव आलसी
निरुद्यमी भए हैं।। चिंतवन करै।। कबहू वैसी ही वार्ता करै।। कबहू इत्यादि
ध्यानमुद्रा धारै।। कबहू एकांत बैठि रहै।। अब इनिकौं पूछिए है तुम बाह्य
अवस्था ... आलंबन बिना रहता नाहीं सो
तौ शुभ अशुभ कार्यनि कौं घटाया।। परंतु उपयोग तौ ... आत्मा का चिंतवन करै हैं।। तो
तुम्हारा उपयोग कहां रहै है सो कहो।। कहै है आत्मा का चिंतवन करै हैं

१३२

258

१५ [illegible] बहुरि जैसें कहीं अरतिमान मिटावना महोइ तैसें व्यापारादिक पुत्रादिक कों खेद का कारण जोनि तिनतें [illegible] उदास रहै है ताकों वैराग्य मानै है सो ऐसा ज्ञान वैराग्य

न्याप्यादिकरि अनेक प्रकार आत्मा का विचार कोंतो तुम विकल्प ठहराया अर कोई विशेष ग्रात्मा का जांननें मैं बहुतकाल जाते नाहीं बार बार एक रूप चितवन [illegible] विषै छदमस्थ का उपयोग लगता नाहीं ॥ [illegible] गणधरादिक का उपयोग [illegible] जैसें तरहि सके ताते वे नीशास्त्रादि कार्यनि विषै प्रवर्त्तै है ॥ तेरा [illegible] उपयोग [illegible] जैसें तरहि सके ताते वे नीशास्त्रादि कार्यनि विषै प्रवर्त्ते है ॥ तेरा [illegible] योग कैसें शुद्ध रहसा [illegible] मानिए ताते [illegible] तेरा कहनी प्रमाण नाहीं ॥ जैसें [illegible] कोऊ व्यापारादि [illegible] विषै निरुद्यमी होइ [illegible] गला जैसें तैसें काल गुमावै ॥ तैसें तू धर्मविषै निरुद्यमी होइ प्रमादी होइ यूंही काल गमावै है ॥ कबहू किछू चितवन सा करै ॥ कबहू बातें बनावै कबहू भोजनादि करै ॥ [illegible] अपना उपयोग निर्मल करनें को शास्त्राभ्यास तपश्चरण भक्ति आदि कार्यनि विषै प्रवर्त्तता नाहीं ॥ [illegible] शुद्धोपयोग ठहराय [illegible] सतती केते [illegible] सूनी साहोइ [illegible] प्रमादी होनें का नाम शुद्धोपयोग ठहराय [illegible] आनंद मानै है ॥ अथवा [illegible] थोरा होनें तैं जैसें कोई [illegible] सुख मानै तैसें [illegible] आनंद मानै है ॥ अथवा [illegible] नि सुखी होइ तैसें आपकों [illegible] शुद्ध मानि [illegible] जैसें सुपनें [illegible] विषै आपकों [illegible] मानि [illegible] निसुखी होइ [illegible] ॥ आपही सुख आनंद मानै है ॥ [illegible] विषै रति मानि सुखी होइ ताकों अनुभव अथवा जैसें कहीं रति मानि सुखी होइ तैसें किछू विचार करनें विषै रति मानि सुखी होइ ताकों अनुभव जनित आनंद कहै है [illegible] तो कषाय गर्भित है ॥ जो [illegible] वीतराग रूप उदासीन दशा विषै निराकुलता [illegible] सो सांचा आनंद [illegible] ज्ञानी जीवनि कै चारित्र मोह की हीनता भए प्रगट होइ है [illegible] ॥ [illegible] बहुरि [illegible] क्रियानि विषै प्रवर्त्तै है अर [illegible] तनपर्यंत [illegible] जो केवल निश्चयाभासके सेवक [illegible] तिनि की प्रवृत्ति पाई एहै ॥ या प्रकार जे जीव केवल निश्चय के सुखी होइ रहै [illegible] तो [illegible] तिनि की प्रवृत्ति पाई ए है ॥ या प्रकार जे जीव केवल निश्चय [illegible]

२ बहुरि व्यापारादिक कों छोडि यथेष्ट भोजनादिकरि सुखी हुवा प्रवर्त्तै है ॥ आपकों तहां कषाय रहित मानै है सो ऐसें आनंदरूप भए तो रौद्रध्यान होइ है ॥ जहां सुख सामग्री छोडि दुख सामग्री का संयोग [illegible] भए [illegible] ध्यान होइ [illegible] निश्चय शय भाव होइ है ॥

१ गणधरादिक तैं भी

२ प्रमादी

आलसी होइ आरहनें मैं

१ अमतें सिद्ध समान

[illegible] रति मानि उ[illegible]

[illegible] वैराग्य

ऐसें भ्रमरूप

अवलेवीजीव है [redacted] मिथ्यादृष्टी जाननें ॥ जैसें वेदान्ती वा सांख्य
मतवाले जीव [redacted] केवल शुद्ध आत्माके श्रद्धानी है ॥ तैसें ए भी जाननें ॥ [redacted] जातैं उनका उपदेश आइ
नकौं इष्ट लागै है ॥ इनका उपदेश उनकौं इष्ट लागै है ॥ [illegible] सप्ततत्त्वनिका यथार्थ श्रद्धान इन
कै नाही है ॥ कैसें सो कहिए है ॥ जीवका स्वरूप तौ शुद्ध अशुद्ध [redacted] [illegible] रूप [redacted] कै एक शुद्ध भी
ही का श्रद्धान नाही ॥ बहुरि अजीव का स्वरूप [redacted] कर्मादिक अवस्था लीए [illegible] तिनिकों गिनतौ [illegible]
ही ॥ आस्रव का स्वरूप रागादिरूप तिनिकों [redacted] ॥ बंध का स्वरूप कर्म
का संबंधता कों आपके मानते नाही ॥ संवरका स्वरूप समादिभिटनी ताका उपाय भी ही ॥ निर्जरा का स्वरू
प कर्म विपाक तौ ताका उद्यम नाही ॥ मोक्ष का स्वरूप सर्व कर्म [illegible] ॥ बहुरि तिनि जीवनि
कै ऐसा श्रद्धान है जो केवल शुद्धात्माका चितवनतें तो [redacted] संवर निर्जरा हो है ॥ वा मु
क्त आत्मा [redacted] का सुष का अंश तहां प्रगट हो [redacted] है ॥ बहुरि जीव [redacted] के गुणस्थानादि [illegible] अ
शुद्ध भावनिका वा आप बिना अन्य जीव पुद्गलकौं चितवन कीएं आस्रवबंध हो है ॥ तातैं अन्य बिचारतैं परा
ङ्मुख रहै है ॥ [redacted] ॥ सो यह भी सत्य श्रद्धान नाही ॥ जातैं [redacted] शुद्ध [redacted]
कौं [redacted] चितवन करौ वा अन्य चितवन करौ जो वीतराग भावलीएं भाव होइ तौ तहां संवर निर्जरा ही है
बहुरि जहां रागादिरूप भाव होइ तहां आस्रवबंध ही है ॥ जो परद्रव्य के जाननें [redacted] ही तैं आस्रवबंध होइ तौ
केवली [redacted] हैं तिनिकै भी आस्रवबंध होइ ॥ बहुरि वह कहै है जो छद्मस्थ
कै परद्रव्य चितवन होतैं [redacted] रागादिक होइ [illegible] आस्रवबंध हो है ॥ सो भी नाही ॥ जातैं शुक्लध्या
नविषै भी मुनिनिकै छहौं द्रव्यनिका द्रव्य गुण पर्यायका [redacted] चितवन होनां निरूपण कीया है ॥ वा
अवधि मनःपर्ययादिविषै परद्रव्यके जाननें ही की विशेषता हो है ॥ बहुरि चौथा गुणस्थानविषै कोई अपने स्वरूप का चितवन
करै है ताकै भी आस्रवबंध अधिक है ॥ पंचम षष्ठ गुणस्थानविषै आहारविहारादि क्रिया होतैं [redacted] परद्रव्य चितवनतैं
भी आस्रवबंध थोरा है ॥ वा गुणश्रेणि निर्जरा हुवा करै है ॥ तातैं [redacted] परद्रव्यका चितवनतैं निर्जरा [redacted] नाही ॥ रागादिक घटें

१ अपनेंकों ज्ञान नाहीं

२ अज्ञानकी समानताकरि

१ केवली तौ समस्त परद्रव्यकों जानें

[illegible]

[redacted]

तहांवह पूछै है कि ऐसें है तौ निर्विकल्प अनुभवदशा विषै नय प्रमाण निक्षेपादिकका वा [redacted] दर्शन [redacted] ज्ञाना
दिकका भी विकल्पका निषेध कीया है सो कैसें है॥ ताका उत्तर॥ जे जीव इनिही विकल्पनि विषै लगि रहे हैं
अभेदरूप एक आपकौं अनुभवैं नाहीं है तिनिकौं ऐसा उपदेश दीया है जो ए सर्व विकल्प वस्तु का निश्चय
करनेंकौं कारन है॥ वस्तु का निश्चय भएं इनिका प्रयोजन किछू रहता नांही॥ तातें इनि भी विकल्पनिकौं
छोडि अभेदरूप एक आत्मा का [redacted] अनुभवन करनौं॥ इनिके विचाररूप विकल्पनि ही विषै फसि रहनौं जु
नाही॥ बहुरि वस्तुका निश्चय भएं पीछें ऐसा नाही जो [redacted] सामान्यरूप स्वद्रव्य हीका चितवन रह्या करै
स्वद्रव्यका वा परद्रव्य का सामान्यरूप वा विशेषरूप जानना होइ परंतु वीतरागता लीएं होइ तिसही का
नाम निर्विकल्पदशा है॥ तहीं वह पूछै है॥ इहां तौ बहुत विकल्प भएं निर्विकल्प संज्ञा कैसें संभवै॥ ताका उत्तर
निर्विचार होनेंका नाम निर्विकल्प नाही है जातें छद्मस्थ कै जानना विचार लीएं है॥ ताका अभाव मानें ज्ञा
नका अभाव होइ तब जडपना [redacted] भया॥ सो आत्मा कै होता नाही॥ तातें [redacted] विचार तौ रहै है॥ बहुरि जो
कहिए एक [redacted] सामान्य [redacted] का ही विचार रहता है [redacted] विशेष का नाही [redacted] तौ सामान्य का विचार तौ बहुत काल
रहता नाही॥ वा विशेष की अपेक्षा बिना सामान्य का स्वरूप भासता नाही॥ बहुरि [redacted]
कहिए आपही का विचार रहता है पर का नाही तौ पर विषै परबुद्धि भएं बिना आप विषै निजबुद्धि कैसें आवै
तहां वह कहै है॥ [redacted] समयसार विषै ऐसा कह्या है॥ भावयेद्भेदविज्ञान। मिदमच्छिन्नधारया॥ तावद्या
वत्पराच्च्युत्वा॥ ज्ञानं ज्ञाने प्रतिष्ठिति॥१॥ याका अर्थ यहु भेदविज्ञान तावत् निरंतर भावनौं यावत् परतें
छूटि ज्ञान है सो ज्ञान विषै स्थित होइ॥ तातें भेदविज्ञान छूटें पर का जानना मिटि जाय है॥ केवल आप ही
कौं आप जान्या करै है॥ सो इहां तौ यहु कह्या है पूर्वें [redacted] आप परकौं एक जानै था॥ पीछें [redacted] जुदा जाननें
कौं भेदविज्ञान [redacted] कौं तावत् भावना ही जोग्य है यावत् ज्ञान [redacted] पररूपकौं भिन्न जानि अपनें ज्ञानस्वरूप ही विषै निश्चित होइ

134 261

१ करनें:

पीछें
[illegible]नें इ विज्ञानकूं का प्रयोजन रह्या नाहीं। स्वयमेव परकौं पररूप आपकौं आपरूप जान्या करै है। ऐसा नाहीं है
जो परद्रव्यका जाननां ही मिटि जाय है। [illegible]
[illegible] परद्रव्यनिका जाननां [illegible]। तातैं परद्रव्यकौं जानतां वा स्वद्रव्य
कौं जानतां रागादिक कै अनुसारि [illegible]। वो गुण ज्ञान विषै कोई अपनें स्वरूप का चिंतवन करै है
[illegible] की विशेषता तातैं बंध [illegible]। बहुरि कोई [illegible]
[illegible]
[illegible]। तातैं रागादिक [illegible] अनुसारि [illegible]
परद्रव्य स्वद्रव्य का [illegible] अनुसारि बंध वा निर्जरा नाहीं है। तैसे रागादिक [illegible]
[illegible]। इहां [illegible]
[illegible]। बहुरि [illegible]
[illegible]
[illegible]
तातैं परद्रव्यका जाननां वा स्वद्रव्यका विशेष जाननेंका नाम विकल्प नाहीं है तौ कैसें है सो कहिए है। रागद्वेषके
वशतैं किसी ज्ञेयके जाननें विषै उपयोग लगावनां किसी ज्ञेयके जाननेंतैं छुडावनां। ऐसें बारंबार उपयो
गकौं भ्रमावनां ताका नाम विकल्प है। बहुरि जहां वीतरागरूप होइ जाकौं जानै है ताकौं यथार्थ जानै है। अ १२८
न्य अन्य ज्ञेयके जाननेंकै अर्थि उपयोगकौं नाहीं भ्रमावै है। [illegible] तहां निर्विकल्प दशा जाननी। इहां कोऊ क
है छद्मस्थका उपयोग [illegible] तौ नाना ज्ञेयविषै भ्रमै ही भ्रमै तहां निर्विकल्पता कैसें संभवै है। ताका उत्तर। जेतै काल
एक जाननेंरूप रहै तावत् निर्विकल्प नाम पावै [illegible] सिद्धांतविषै ध्यानका लक्षण

१३४

३ बहुरि [redacted] ऐसी भी विविक्षा है जो ४ ४ यह कहे है ऐसे है तो ५

ऐसा ही कीया है ।। एकाग्रचिंतानिरोधो ध्यानं ।। एककामुख्य चितवन होइ अर अन्य चिंता रुकै ताकै नाम ध्या
न है ।। सर्वार्थसिद्धी सत्रटीका विषै यहु विशेष कह्या है जो सर्व चिंता रुकनेका नाम ध्यान होइ तौ अचेतन
पनो होइ जाइ ।। १ [redacted] सी तान अपेक्षा नाना ज्ञेयका नी जानतो है । इपरि ऊ यावत्त वीतरागता रहै आप
नु पयोगको भ्रमावै नी ही [redacted] तावत् निर्विकल्प दशा कहिए है ।। बहुरि [redacted] पर
द्रव्यतैं छुडाय स्वरूप विषै उपयोग लगावनेका उपदेश काहेकों दीया है ।। ताका समाधान ।। [redacted]
[redacted] जे शुभ अशुभ भावनिकों [redacted] कारण परद्रव्य है तिनि विषै उपयोग लगैं [redacted]
कै राग द्वेष होइ आवै है ।। [redacted] अर स्वरूप वि
तवन करतैं राग द्वेष घटै है [redacted] ऐसे नीचली अवस्थावाले जीवनिकों पूर्वोक्त उ
पदेश है ।। [redacted]
[redacted]
[redacted] ताकों मनैं कीया [redacted] मति जाय [redacted]
[redacted] ।। जैसे कोऊ [redacted] यथायोग्य प्रवर्त्तता
लरनेंको [redacted] ताकों मनै कीया ।। बहुरि जो [redacted] परद्रव्यनि
परघरि जाय [redacted] तौ ताकों किछू दोष है नाहीं ।। जैसे कोऊ जीव राग द्वेष करवेकों परद्रव्यनि
[redacted] ताकों मनै कीया [redacted] उपयो [redacted] ।। [redacted] रहो ।। बहुरि
जैसे कोऊ स्त्री विकार भाव करि पर घरि जाती थी ताकों मनै करी ।। पर घरि मति जाय ।। घरमै बैठी रहो ।। बहुरि
जो स्त्री निर्विकार भाव करि [redacted] किछू दोष है नाहीं ।। तैसें [redacted] राग द्वेष भाव करि
जो उपयोग परद्रव्यनि विषै प्रवर्त्तै था ताकों मनै करी पर द्रव्यनि विषै मति प्रवर्त्तै स्वरूप विषै मग्न रहो ।। बहुरि जो उपयोग
रूप परणति वीतराग भाव करि [redacted] पर द्रव्यकों [redacted] प्रवर्त्तै तो किछू दोष है नाहीं ।। [redacted]

३ काहूकै परि जाय यथायोग्य प्रवर्त्ते तौ ५ १ जो निय यथायोग्य ५

१ रागादिक रहित ५

१ जिनि ५

बहुरि

१ अर्थ [redacted]

[redacted]

१ [redacted]

उपयोग रूप परणति ५

[redacted]

263

135

उ शीलके कारण परघरनि ३

[illegible]

[redacted] बहुरि वह कहै है ऐसे है तो महामुनि परिग्रहादिक का [redacted] (चिंतवन) त्याग काहे कौं करै है। ताका समा

धान। जैसैं विकाररहित स्त्री [redacted] पुरुषनि का [redacted] का त्याग करै। तैसैं वीतरागपरण

ति रागद्वेषके कारण परद्रव्यनिका त्याग करै है। बहुरि जे व्यभिचारकौं कारन नाहीं ऐसे परघर जानेका [redacted]

त्याग है नाहीं। तैसैं जे रागद्वेषकौं कारण नाहीं। ऐसें परद्रव्य जाननेका त्याग है नाहीं। [redacted]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ बहुरि वह कहै है जो जैसें

स्त्री प्रयोजन जानि पितादिकके घरि जाय तौ जावो॥ बिना प्रयोजन जिस तिसके घरि जानौ तौ योग्य नाहीं।

तैसें परणतिकौं प्रयोजन जानि सप्ततत्त्वनिका विचार करनां॥ बिना प्रयोजन [redacted] गुणस्थाना

दिकका [redacted] विचार करनां तौ योग्य नाहीं॥ ताका समाधान। जैसैं स्त्री पितादिकके [redacted] केनी

प्रयोजन नाहिं

134

मित्रादिक

135
P

१परणति५ ३कुशीलनसेवै तौ स्त्री शीलवती ही है४

घरिजाय ।। तैसैं तत्व [redacted] निका विशेष जाननें कौं कारण गुणस्थाना [redacted] नादिक कर्मादि ककौं भी जानै ।। बहुरि इहां ऐसा जाननां जैसैं शीलवती स्त्री उद्यम करि तौ विटपुरुषनिके स्थानि न जाय [redacted] जो परवश तहां जानौ बनि जाय तौ तहां [redacted] ।। तैसैं वीतराग परणति उपाय करि तौ रागादिकके कारण परद्रव्यनि विषैं न लागै ।। जो स्वयमेव तिनिका जाननां होइ जाइ तौ तहां [redacted] रागादिक न करै तौ परणति शुद्ध ही है ।। तातैं स्त्री आदिकी परीषह मुनिनिकै होइ तिनिकौं जो नै ही नाहीं अपनें स्वरूप [redacted] ।। उनकौं जानें तौ है परंतु रागादिक नाहीं करै है

याप्रकार परद्रव्यकौं जानतैं भी वीतराग भाव हो है [redacted] ऐसा श्रद्धान करना ।। बहुरि वह कहै है ऐसैं है तौ शास्त्र विषैं ऐसैं कैसैं कह्या है जो आत्माका श्रद्धान ज्ञान [redacted] आचरन सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र है ।। ताका समाधान ।। अनादितैं परद्रव्य विषैं [redacted] आपा का श्रद्धान ज्ञान आचरन था ताके छुडावनें कौं यह उपदेश है आपही विषैं आपका श्रद्धान ज्ञान आचरन भए [redacted] परद्रव्य विषैं रागद्वेषादि परणति करनेंका श्रद्धान वा ज्ञान वा आचरन मिटि जाय तब सम्यग्दर्शनादि हो है ।। जो परद्रव्यका परद्रव्यरूप श्रद्धानादि करनें [redacted] तैं सम्यग्दर्शनादि न होते होइ तौ केवली [redacted] कै भी तिनिका अभाव होइ ।। [redacted] ।। जहां परद्रव्यकौं बुरा जानना निजद्रव्यकौं भला जानना ।। तहां तौ रागद्वेष सहज ही भया ।। [redacted] जहां आपकौं आपरूप परकौं पररूप [redacted] यथार्थ जान्या करै तैसैं ही श्रद्धानादिरूप प्रवर्त्तै तब ही सम्यग्दर्शनादि हो है ऐसैं जानना ।। तातैं बहुत कहा कहिए जैसैं रागादि मिटावनेंका श्रद्धान होइ सो ही श्रद्धान सम्यग्दर्शन है ।। जैसैं रागादि मिटावनेंका जानना होइ सोई जानना सम्यग्ज्ञान है ।। जैसैं रागादि मिटै सो ही आचरन सम्यक्चारित्र है ।। ऐसा ही मोक्षमार्ग मानना योग्य है ।। याप्रकार निश्चयनयका आभास लीऐं एकांत पक्षके धारी जैनाभास तिनिकै [redacted] मिथ्यात्वका निरूपण कीया ।।६

२हीका जान
नाव है है ऐ
सा मानना मि
थ्या है।२

265

136

अब अंतरंग ... के धारक जैनाभासनिकौं मिथ्यात्वका निरूपण कीजिए है। जिन आगम विषै [redacted]
जहां व्यवहार की मुख्यता करि उपदेश है ताकौं मानि बाह्यसाधनादिक ही का श्रद्धानादिक करै हैं। [redacted]
तिनिकै सर्व धर्म्म के अंग [redacted] अन्यथारूप होइ मिथ्याभावकौं प्राप्त होहै है। सो [redacted] विशे
ष कहिए है। इहां [redacted] ऐसा जानि लेनां [redacted] व्यवहार धर्म्म की प्र[redacted]वृत्ति तैं पुण्यबंध होहै है तातैं [redacted]
पापप्रवृत्ति अपेक्षा तौ याका निषेध है नाहीं। परंतु इहां [redacted] जो जीव व्यवहारप्र
वृत्ति ही करि संतुष्ट होइ सांचा मोक्षमार्ग विषै उद्यमी न हो है ताकौं मोक्षमार्ग विषै सन्मुख करनेंकौं
तिस शुभरूप मिथ्याप्रवृत्ति का [redacted] भी निषेधरूप निरूपण की[redacted]जीए है। [redacted] जो यह कथन कीजि
ए है ताकौं सुनि [redacted] शुभप्रवृत्ति छोरि अशुभ विषै प्रवृत्ति करोगे तौ तुम्हारा बुरा होगा। और जो यथार्थ श्र
द्धान करि मोक्षमार्ग विषै प्रवर्त्तौगे तौ तुम्हारा भला होगा। [redacted]
^निर्मूल^ जैसैं कोऊ रोगी [redacted] ऊषधिका निषेध सुनि ऊषधिसाधन छोरि कुपथ्य करैगा तौ वह मरै ^पुण्यरूप^
[redacted] गा वैद्य का किछू दोष नाहीं। तैसैं कोऊ संसारी [redacted] धर्म्म का निषेध सुनि धर्म्मसाधन छोरि वि
षयकषायरूप प्रवर्त्तैगा तौ वह ही [redacted] नरकादि विषै दुख पावैगा। उपदेशदाता का तौ दोष है नाहीं।
^असत्यश्र द्धानादिहु ऊय^ उपदेश देनेंवाला का तौ अभिप्राय मोक्षमार्ग विषै लगावनें का जाननां। सो ऐसा अभिप्राय तैं इ
हां [redacted] निरूपण कीजिए है। तहां केई जीव तौ कुलं[redacted] क्रम करि ही जैनी है। जैनधर्म्म का स्वरूप जानैं १३६
तै नाहीं परंतु कुल विषै [redacted] जैसैं प्रवृत्ति चली आई तैसैं प्रवर्त्तै है। [redacted]
[redacted] सो जैसैं अन्यमती अपनें कुलधर्म्म विषै प्रवर्त्तै [redacted]
है तैसैं ही यह [redacted] प्रवर्त्तै है। [redacted]

~~तौनिकैं लौकिकी प्रवृत्ति विसेष है। इहां थोरी होहै। परंतु मोक्षमार्ग प्रकरणि कीनी है।। इतनी तोहै प्रत्यक्ष~~

जो कुलक्रम ही तैं धर्म होइ तौ मुसलमान आदि सर्व ही धर्मात्मा होइ। जैन धर्म का विशेष कहा रह्या।। सोई [redacted] कह्या है।। लोयम्मि रायणीई। णायं ण कुलक्कमम्मि कइयावि।। किं पुण तिलोयपहुणो। जिणिंद धम्माहिगारम्मि।।१।। याका अर्थ।। लोकविषै यह राजनीति है।। कदाचित् कुलक्रम करि न्याय नाहीं हो है। जाका कुल [redacted] चोर होइ ताकौं चोरी करता पकरै तौ वाका कुलक्रम जानि छोडै नाहीं दंड ही दे।। तौ त्रिलोक प्रभु जिनेंद्रदेव के धर्म का अधिकार विषै कहा कुलक्रम अनुसारि न्याय संभवै।। [redacted] बहुरि [redacted] जो पिता दलिद्री होइ आप धनवान् होइ तहां तौ कुलक्रम विचारि आप दरिद्री रहता नाहीं। धर्म विषै कुल का कहा प्रयोजन है।। बहुरि पिता नरकि जाय पुत्र मोक्ष जाय। जो कुल ऊपरि दृष्टि होइ तौ पुत्र भी नरकगामी होइ। तातैं [redacted] धर्म विषै कुलक्रम का किछू प्रयोजन नाहीं।। [redacted] शास्त्रनि का अर्थ विचारि [redacted] जो कालदोषतैं जिनधर्म विषै भी [redacted] पापी पुरुषनि करि [redacted] कुदेव कुगुरु कुधर्म सेवनादि वा [redacted] विषय कषाय पोषणादिरूप विपरीत प्रवृत्ति चलाई होइ ताका त्याग करि जिन आज्ञा अनुसारि प्रवर्त्तनो योग्य है।। इहां कोऊ कहै परंपरा छोडि नवीन [redacted] नी युक्त नाहीं। ताकौं कहिए है जो अपनी बुद्धि करि नवीन मार्ग पकरै तौ [redacted] युक्त नाहीं। [redacted]

[redacted] बीचि में पापी पुरुषां [redacted]

जो परंपरा अनादिनिधन जैनधर्म का स्वरूप शास्त्रनि विषै लिख्या है ताकी प्रवृत्ति मेटि बीचि में [redacted] पापी पुरुषां अन्यथा प्रवृत्ति चलाई तौ ताकौं परंपरा मार्ग कैसें कहिए।। बहुरि ताकौं छोडि पुरातन जैन शास्त्रनि विषै जैसा धर्म लिख्या था तैसैं [redacted] प्रवर्त्तै तौ ताकौं नवीन मार्ग [redacted] कैसैं कहिए।। बहुरि

(margin:) २न हीं कुल क्रम कै संस्कार

(margin:) मार्ग विषै प्रवर्तै

जो कुल विषै जैसैं जिनदेव की आज्ञा है तैसैं ही धर्म्म की प्रवृत्ति है तौ आपकौं भी तैसैं ही प्रवर्त्तनौ योग्य है।
२ ताको ४ परंतु कुलाचार न जाननौ धर्म्म जांनि ताके स्वरूप फलादिक का निश्चय करि अंगीकार करनौ।
जो साँचा भी धर्म्म कौं कुलाचार जांनि प्रवर्त्ते है तौ वाकौं धर्म्मात्मा न कहिए।। जातें
सर्व कुल के उस आचरन कौं छोरै तौ आप भी छोरि दे।।
२ बहुरि ४ जो वह आचरन करै है सो कुल का भय करि करै है।। किछू धर्म्म बुद्धि तैं नाहीं करै है
तातैं वह धर्म्मात्मा नाहीं।। तातैं विवाहादि कुल संबंधी कार्यनि विषै तौ कुल क्रम का वि-
चार करनौ।। अर धर्म्म संबंधी कार्यनि विषै कुल का विचार न करनौ।। जैसैं धर्म्म मार्ग साँचा है तै-
सैं प्रवर्त्तनौ योग्य है।। बहुरि केई आज्ञा अनुसारि जैनी हो है।। जैसैं शास्त्र विषै आज्ञा है तै-
सैं मानै है।। परंतु आज्ञा की परीक्षा करते नाहीं।।
सो आज्ञा ही माननौ धर्म्म होइ तौ सर्व मतवाले अपने अपने शास्त्र की आ-
ज्ञा मांनि धर्म्मात्मा होइ तातैं परीक्षा करि जिनवचनि कौं सत्यपनौं
पहचांनि जिन आज्ञा माननी योग्य है।। बिना परीक्षा कीएं सत्य असत्य का निर्णय कैसैं हो-
इ अर बिना निर्णय कीएं जैसैं अन्यमती अपने शास्त्रनि की आज्ञा मानै है तैसैं यानैं जैन शास्त्रनि की आ-
ज्ञा मांनी।। यह तौ पक्ष करि आज्ञा का माननौ है।। कोऊ कहै शास्त्र विषै दश प्रकार सम्यक्-
विषै आज्ञा सम्यक्त कह्या है वा आज्ञाविचय धर्म्मध्यान का भेद कह्या है वा निःशंकि-
त अंग विषै जिन वचन विषै संशय करनौ निषेध्या है सो कैसैं है।। ताका समाधान।। शास्त्रनि विषै क- 132

१३७

१ जिनिकी २

थन कोई तो ऐसे हैं जो प्रत्यक्ष अनुमानादि करि परीक्षा करि सकिए है। [illegible]

[illegible]

बहुरि कोई कथन ऐसे हैं जो प्रत्यक्ष अनुमान गोचर नाहीं तातैं आज्ञा ही करि प्रमाण हो है। तहां

नाना शास्त्रनि विषै जो कथन समान होइ तिनकी तो परीक्षा करने का प्रयोजन नाहीं। बहुरि जो क

थन परस्पर विरुद्ध होइ तिनि विषै जो [illegible]

[illegible] जो कथन प्रत्यक्ष अनुमानादि

गोचर होइ तिनिकी परीक्षा करनी तहां [illegible] जिस शास्त्र [illegible] के कथन की

प्रमाणता ठहरै [illegible] तिस शास्त्र विषै जो प्रत्यक्ष अनुमान गोचर नाहीं ऐसे क

थन कीए होइ तिनिकी भी प्रमाणता करनी। बहुरि जिनि शास्त्रनि के कथन की प्रमाणता न ठहरै तिनि

के सर्व ही कथन की अप्रमाणता माननी। इहां कोऊ कहै, कोई कथन कोई शास्त्र विषै प्रमाण भासे

कोई कथन कोई शास्त्र विषै अप्रमाण भासे तो कहा करिए। ताका समाधान। जो आप्त के भाषे शास्त्र

हैं तिनि विषै कोई ही कथन प्रमाण विरुद्ध न होइ जातैं कै तो जानपना ही न होइ कै रागद्वेष होइ तो असत

त्य कहै सो आप्त ऐसा होइ नाहीं। तैं परीक्षा नीकी नाहीं करी है तातैं भ्रम है। बहुरि वह कहै है

छद्मस्थ कै अन्यथा परीक्षा होइ जाइ तो कहा करै। ताका समाधान। सांची झूठी दोऊ वस्तुनि कौं मीं

डै अर प्रमाद छोरि परीक्षा कीए तौ सांची ही परीक्षा होइ। जहां पक्षपात करि नीकैं परीक्षा न क

रै तहां ही अन्यथा परीक्षा हो है। बहुरि वह कहै है जो शास्त्रनि विषै परस्पर विरुद्ध कथन तो घने कौ

न कौन की परीक्षा करिए। ताका समाधान। मोक्षमार्ग विषै [illegible] देव गुरु धर्म वा जीवादि तत्त्व

Margin notes: [illegible] २ ; २ परीक्षा कीए २ ; +

बाधंध मोक्षमार्ग [redacted] प्रयोजनभूत है सो इनिकी तौ परीक्षा करि लैंनी।। जिनि शास्त्रनि विषै ए
सांचे कहे तिनिकी सर्व आज्ञा मांननी।। जिनि विषै ए अन्यथा प्ररूपे तिनिकी आज्ञा न मांननी।
जैसें लोक विषै जो पुरुष प्रयोजनभूत कार्यनि विषै झूठ न बोलै सो [redacted] प्रयोजनरहित कार्यनि विषै
कैसें झूठ बोलैगा।। तैसें [redacted] जिस शास्त्र विषै प्रयोजनभूत देवादिक का [redacted] स्वरू
प अन्यथा न कह्या।। तिस विषै [redacted] प्रयोजनरहित द्वीपसमुद्रादिक का कथन अन्यथा कैसें हो
गा।। जातैं देवादिक का कथन अन्यथा कीए [redacted] वक्ता के विषय कषाय पोषे जाय।। [redacted]
[redacted] ।। इहां प्रश्न [redacted] देवादिक का कथन तौ
अन्यथा [redacted] विषय कषाय तैं कीया।। तिनि ही शास्त्रनि विषै अन्य कथन अ
न्यथा काहे कौं कीया।। ताका समाधान।। जो एक ही कथन अन्यथा कहै वाका अन्यथापनौ शीघ्र
प्रगट होइ जाइ।। जुदी पद्धति गाहरै नाहीं।। तातैं घनें कथन अन्यथा करनें तैं जुदी पद्धति गाहरै
नहीं [redacted] तुच्छबुद्धी भ्रम मैं पडि जाय।। यहु भी मत है।। यहु भी मत है।। तातैं [redacted] प्रयोज
नभूत का अन्यथापनौं का मेलनें कै अर्थि अप्रयोजनभूत भी अन्यथा कथन घनें कीए।। बहुरि
प्रतीति अनावनें कै अर्थि कोई कोई सांचा भी कथन कीया।। परंतु स्यांनां होइ सो भ्रम मैं पडै नाहीं
प्रयोजनभूत [redacted] कथन की परीक्षा करि [redacted] जहां सां १२८
च भासैं तिनिकी सर्व आज्ञा मांनैं [redacted] आज्ञा मानें जो [redacted] सांचा श्रद्धान होइ ताका नाम आ
ज्ञा सम्यक्त्व है।। बहुरि तहां [redacted] एकाग्र चिंतवन होइ ताही का नाम आज्ञाविचय धर्मध्यान है।। जो ऐ
सैं न मानिए अर [redacted] विना परीक्षा कीए ही आज्ञा मानें सम्यक्त्व वा धर्मध्यान होइ जाइ तौ जो द्रव्यलिंगी सो

उस मत की ४

४ सो परीक्षा कीए जैन मत ही सांचा भासै अन्य नाहीं।। जातैं या का वक्ता सर्वज्ञ वीतराग है सो झूठ काहे कौं कहै।। जैसें जिन [redacted]

138 P

[redacted] ४ जिनवचन विषै

आज्ञा मांनि मुनिनि या आज्ञा अनुसारि साधन करि ग्रैवेयक पर्यंत प्राप्त होइ ताकै मिथ्यादृष्टि पनौ कैसैं रह्या॥ तातैं किछू परीक्षा करि आज्ञा मांनें ही सम्यक्त्व वा धर्म्म प्रान होहै॥ लोकविषै भी कोई प्रकार परीक्षा न ऐ ही पुरुषकी प्रतीति कीजिए है॥ बहुरि तैं कह्या जिनवचनतैं [redacted] मौं [redacted] है॥ बहुरि जो निर्णय करनें कौं विचार [redacted] रतैं ही सम्यक्त्व कौं दोष लागै तौ [redacted] अष्टसहस्री विषै आज्ञा प्रधानतैं परीक्षा प्रधान कौं उत्तम काहे कौं कह्या॥ पृच्छना आदि स्वाध्याय के अंग कैसैं कहे॥ प्रमाण नयतैं पदार्थनिका निर्णय करनें का उपदेश काहे कौं दीया॥ [redacted] तातैं परीक्षा करि आज्ञा मानिनी योग्य है॥ बहुरि [redacted] कई पापी पुरषौं अपनौं कल्पित कथन कीया है अर तिनिकौं जिनवचन ठहराया है [redacted] जैन मतका शास्त्र जांनि प्रमाण न करनी॥ तहां भी परीक्षा करि [redacted] परस्पर शास्त्रनितैं विधि मिला [redacted] यौं विरुद्ध अर्थ कौं मिथ्या ही जाननौं॥ [redacted] जैसें ठिग आप पत्र लिखि तामैं साहूकार [redacted] धस्या॥ तिस नामके भ्रमतैं धन कौं ठिगावै तौ [redacted] हीन होइ॥ तैसैं पापी आप ग्रंथा दिवनाय तहां जिन गणधर आचार्यनिकौं [redacted] धस्या तिस नामके भ्रमतैं ग्रंथ श्रद्धान करै तौ

२ कर्त्ताका नाम॥ ५ यातैं [redacted] मैं जव है कि नौ ही ऐसा विचार करि॥

४ जांनें के मैं हूं ऐसा मानि निर्णय करने विषै तर्कै कीया जाना मानिगर हैं॥

३ तैं सम्यक्त्वकौं [redacted] कानामात्र दोष है॥

१ तिनिकौं॥

१ प्रमाणादिक तैं॥

[redacted]

१ [redacted]

१ दरिद्री॥

१ लिखनवालेका नाम॥ किसी॥

मिथ्यादृष्टी ही होइ। बहुरि वह कहै है ।। गोमट्टसार विषै ऐसा कह्या है ।। [redacted] सम्यग्दृष्टी जीव अज्ञानगुरुके निमित्ततैं झूठ भी श्रद्धान करै तो [redacted] आज्ञा माननेतैं सम्यग्दृष्टी हो है ।। सो यहु कथन कैसें किया है जे प्रत्यक्ष अनुमानादि गोचर नाहीं सूक्ष्मपनेतैं निर्णय जिनिका न होइ सकै [redacted] [illegible] ~~जातैं ... पुरुषका प्रमाणकीयाहै ... तिस पुरुष प्रमाणतैं ताके वचनका प्रमाण कीजिए है~~ ऐसा नाहीं [redacted] ~~... तैसें ... ऐसा कथन है।। जो देवगुरुधर्म्मादि तत्वादिकका तौ अन्यथा~~ [redacted] ~~कथन करि है ताकों जिनवचन मानै~~ [redacted] ~~ताका तौ श्रद्धानकों ऐं सम्यग्दृष्टी मानौ हे तो~~ [redacted] ~~किसका भी ... श्रद्धान न होइ सम्यक ... विना तो अश्रद्धान सम्यक्त्व ... पाइये नाहीं~~ [redacted] ति निकी अपेक्षा यहु कथन है ।। मूलभूत देवगुरुधर्म्मादिवा तत्वादिकका अन्यथा श्रद्धान भए तौ सर्वथा सम्यक्त्व रहै नाहीं यहु निश्चय करनां ।। तातैं केवल आज्ञा ही करि जैनी है [redacted] ते भी मिथ्यादृष्टी जाननें ।। बहुरि केई परीक्षा भी करि जैनी हो है ।। परंतु [redacted] मूलपरीक्षा नाहीं करै है ।। दया शील तप संयमादि क्रियानिकरि वा पूजा प्रभावनादि कार्यनिकरि वा अतिशय [redacted] दिकरि जिनमतकों [redacted] उत्तम जानि प्रीतिवंत होइ जैनी हो है ।। सो अन्यमतविषै भी ~~[illegible]~~ [redacted] ~~उपदेश पाईए है ... तिनका साधन भी ... प्रभावना ... ही~~ [redacted] ~~अतिशय ... धर्म्म साधन ... के ... होते है~~ ताते इनि लक्षणनिविषै तौ अतिव्याप्ति पाईए है ।। कोऊ कहै जैसें जिनधर्म्मविषै ए कार्य है तैसें अन्यमतविषै नाहीं पाईए है ।। तातै अतिव्याप्ति नाहीं ।। ताका समाधान ।। यहु तौ सत्य है ।। ऐसें ही है ।। परंतु जैसें तुम

Margin notes:

१ विनापरीक्षाकीए १

२ बाजिनधर्मविषैइहप्राप्तिहोनेकरि २

२ एतो कार्य पाईएहै २

139

दयादिक मानें हैं तैसें तो वै भी निरूपै हैं।। पर जीवनिकी रक्षाकों दया कहै है [redacted]
[redacted] सो ई विवेक है है ऐसैं ही
अन्य माननें।। बहुरि वह कहै है उनकै ठीक नाही कबहू दया प्ररूपै कबहू हिंसा प्ररूपै।। ताका उत्तर।। तहाँ भी १ दयादिकका १
शुभमात्र ही आया तातैं [redacted] अतिव्याप्तिपना [redacted] इनि लक्षणनिकै पाईए है।। इनिकरि साँची परीक्षा होइ नाही
है।। तौ कैसैं होइ।। जिनधर्म विषै सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र मोक्षमार्ग कह्या है।। तहाँ [redacted] साँचे देवादिक १ चे १
का वा जीवादिकका श्रद्धान कीएं सम्यक्त्व होइ वा तिनकौं जानें सम्यग्ज्ञान होइ।। वा [redacted]
१ साँचा १ [redacted] रागादिक मिटें सम्यक्चारित्र होइ।। [redacted] जैसें जिन [redacted] मत विषै नि १ इनिका स्वरूप के
रूपण कीया है तैसैं कहीं निरूपण कीया नाही।। वा जैनी बिना अन्यमती ऐसा कार्य करि सकते नाही।।
तातैं यहु जिनमतका साँचा लक्षण है।। इस लक्षणकौं पहिचानि जे परीक्षा करै ते ई श्रद्धानी है।। इस बि
ना अन्य प्रकार करि [redacted] परीक्षा करै है ते मिथ्यादृष्टी ही रहै है।। [redacted]
[redacted] ।। बहुरि केई संगतिकरि [redacted] जैनधर्म धारै है केई महान् पुरुषकौं जिनधर्म विषै प्रवर्त्तता
देखि आप भी प्रवर्तै है।। [redacted] केई देख्यादेखी [redacted] जिनधर्मकी शुद्ध वा अशुद्ध क्रिया
निविषै प्रवर्तै है आप विचारकरि जिनधर्मका [redacted] रहस्य नाही पहिचानै है अर जैनी नाम धरावै है ते
१ इत्यादि अनेकप्रकारके जीव १ सर्व मिथ्यादृष्टी ही जाननें।। [redacted] इतनी तौ है जिनमत विषै पापकी प्रवृत्ति विशेष न होइ सकै अर पुण्य
के निमित्त घनें हैं।। [redacted] अर साँचा मोक्ष
मार्गका भी कारण तहाँ बनि रहे हैं तातैं जे कुलादिककरि भी जैनी हैं ते भी औरनितैं तौ भले ही हैं।। बहुरि
जे जीव कपटकरि आजीविकाकै अर्थि वा [redacted] बडाईकै अर्थि वा किछू [redacted] विषयकषाय संबंधी प्रयोजन
विचारि जैनी हो है ते तौ पापी ही है।। अति तीव्र कषाय भए ऐसी बुद्धि आवै है।। [redacted] उनका सुलझना भी

273

140

कठिन है। जैन धर्म्म तौ संसार का नाश कै अर्थि सेईए है ता [redacted] करि जो संसारीक प्रयोजन साध्या चाहै सो
बड़ा अन्याय करै है तातैं ते तौ मिथ्यादृष्टी है ही॥ [redacted] इहाँ कोऊ कहै हिंसादि करि
जिनि कार्यनिकौं करिए ते कार्य धर्म्मसाधन [redacted] करि सिद्धि कीजिए तौ बुरा कहा भया॥ दोऊ प्रयोजन सधैं॥
ताकौं कहिए है॥ पापकार्य धर्म्मकार्यका एक साधन कीए [redacted] पाप ही होय॥ जैसैं कोऊ चैत्यालय बनाय [redacted] ※धर्म्मका [redacted] साधनर
तिस ही कौं [redacted] स्त्रीसेवनादि पापका भी साधन करै तौ [redacted] पापी होइ॥ [redacted] हिंसादि करि [redacted] भोगादि
※चैत्तीवन कौ परेउ करै अर्थि जुदा [redacted] मंदिर [redacted] बना [redacted]॥ चैत्यालय विषै भोगादि करना युक्त नाहीं॥ तैसैं धर्म्मका साधन [redacted]
[redacted] पूजा शास्त्रादि कार्य हैं॥ तिस ही कौं आजीविका आदि पापका भी साधन करै तौ पापी ही होइ॥ हिंसादि
करि [redacted] आजीविकादि कै अर्थि व्यापारादि करै तौ करौ परंतु पूजा [redacted] दिकार्यनि विषै तौ आजीविका आ
दिका प्रयोजन विचारना युक्त नाहीं॥ इहाँ [redacted] प्रश्न जो ऐसैं है तौ मुनि भी धर्म्म साधि पर घरि भोजन करै है
[redacted] वा साधर्म्मी साधर्म्मीका उपकार करै करावै है सो कैसैं बनैं॥ ताका उत्तर॥ जो आप
तौ [redacted] किछू आजीविका आदिका प्रयोजन विचारि धर्म्म नाहीं साधै है॥ [redacted]
[redacted] आपकौं धर्म्मात्मा जानि कोई स्वयमेव भोजन [redacted] उपकारादि करै है तौ तौ कि
छू दोष है नाहीं॥ बहुरि जो आप ही [redacted] भोजनादिकका प्रयोजन विचारि धर्म्म साधै है तौ पापी है ही॥ १४०
[redacted] जो विरागी होइ मुनिपनौं अंगीकार करै है तिनकै भोजनादिकका प्रयोजन नाहीं॥ शरीरकी
स्थितिकै अर्थि स्वयमेव भोजनादिक कोई दे तौ ले नाहीं ममता राखै [redacted] संक्लेशरूप होइ नाहीं॥ बहुरि
[redacted] आप हितकै अर्थि धर्म्म साधै है॥ कोई साधर्म्मी स्वयमेव उपकार करै तौ [redacted]
[redacted] करौ [redacted]॥ अर न करै तौ आपकै किछू [redacted]
[redacted] संक्लेश होता नाहीं॥ [redacted]
अर आपकै जाका त्याग नाहीं ऐसा उपकार करावै।
इ: उपकार करावनेका [illegible]

सो ऐसें तौ योग्य है।। अर आपही आजीविका आदिका प्रयोजन विचारि बाह्य धर्म्मका साधन करै [redacted]।। जहां भोजनादिक [redacted] उपकार कोई न करै तहां संक्लेश करै।। याचना करै।। उपाय करै।। सो पापी ही जाननां।। ऐसें संसारीक प्रयोजन लीयें जे धर्म्म साधै है ते [redacted] पापी भी हैं अर मिथ्यादृष्टी हैं।। [redacted] या प्रकार [redacted] जिनमतवाले भी [redacted] मिथ्यादृष्टी जानने।। [redacted]

[redacted] मूढ़देवगुरुधर्म्मका सेवन [redacted] सेसा [redacted] विशेष दिखाईए है।। तहां [redacted] जीवनके [redacted] धर्म्मका साधन [redacted] कैसें पाईए है सो [redacted] विशेष दिखाईए है।। तहां [redacted] जीव कुलप्रवृत्ति करि वा देख्यां देखी वा लोभादिकका अभिप्राय करि धर्म्म साधै है तिनके तौ [redacted]

जीव कुलप्रवृत्ति करि वा देख्यां देखी वा लोभादि [redacted] का अभिप्राय करि धर्म्म साधै है तिनके तौ [redacted] धर्म्मदृष्टि नाहीं।। जो भक्ति करै है तौ चित्त तौ कहीं है दृष्टि फिर्या करै है।। अर मुखतैं [redacted] पाठादि करै है।। यहु ठीक नाहीं। कि मैं कोन हौं किसकी स्तुति करौं हौं [redacted] किस प्रयोजनकै अर्थि स्तुति करौं हौं।। पाठविषै कहा अर्थ है सो किछू ठीक नाहीं।। बहुरि [redacted] कुदेवादिककी भी [redacted] सेवा करनें लगि जाय [redacted]।। तहां [redacted] सुदेवगुरु [redacted] [redacted] शास्त्रविषै वा कुदेवगुरु शास्त्रादिविषै विशेष पहिचानें नाहीं।। बहुरि जो दान दे है तौ पात्र अपात्रका विचार रहित जैसें अपनी प्रशंसा होइ तैसें दान दे है।। बहुरि तप करै है तौ भूषा रहनेंकरि महंतपनों होइ सो कार्य करै है।। [redacted] परिणामनिकी पहचानि नाहीं।। बहुरि व्रतादिक धारै है तहां बाह्यक्रियाऊपरि दृष्टि है।। [redacted] सो भी कोई सांची क्रिया करै है कोई झूठी करै है।। अर अंतरंग रागादिभाव पाईए [redacted] है तिनका विचार ही नाहीं।। बहुरि पूजा प्रभावनादि कार्य [redacted] करै है तहां जैसें [redacted] लोकविषै बडाई होइ वा

वा बाह्य भी रागादि पोषनेंका साधन करै है।

बाह्य धर्म्म साधन विषै शिथिल होइ जाइ।

कदाचित्

मान मानादिक कै अपरै उ।

१४१

विषयकषायपोषे जायतैसैं कार्य करै है बहुरि बहुत हिंसादि निपजावै है ॥
सो ए कार्य तौ अपना वा अन्य जीवनिका परिणाम सुधारनें कै अर्थि कहे हैं ॥ बहुरि तहाँ किंचित् हिंसा
दिक भी निपजै है तौ थोरा अपराध होइ गुण बहुत होइ सो कार्य करना कह्या है ॥ सो परणामनिकी पह
चानि नाही ॥ अर इहाँ अपराध केता लागै है गुण केता हो है सो नफा टोटाका ज्ञान नाही ॥ वा विधि अवि
धिका ज्ञान नाही ॥ बहुरि शास्त्राभ्यास करै है तहाँ पद्धतिरूप प्रवर्त्ते है ॥
इतै सुनाइ देहैं जो बाँचै है तौ औरनिकौं सुनाइ दे है
पढ़ै है तौ आप पढ़ि जाय है ॥ सुनै है तौ कहै है सुनि ले है ॥ जो शास्त्राभ्यासका प्रयोजन है ताकौं
आप अंतरंग विषै नाही अवधारै है ॥ इत्यादि धर्म्मकार्यनिका मर्म्मकौं नाही पहिचानता के तौ कु
ल विषै जैसैं बडे प्रवर्त्ते तिसैं हमकौं भी करना अथवा और करै है तैसें हमकौं भी करना वा ऐसैं कीए ह
मारा लोभादिककी सिद्धि होसी इत्यादि विचारली ऐं अभूतार्थ धर्मकौं साधै है ॥ बहुरि केई जीव ऐ
से हैं जिनिकै किछू तौ कुलादिरूप बुद्धि है किछू धर्म्मबुद्धि नाहि है ॥ तातैं पूर्वोक्त प्रकार भी धर्म्मका साधन क
रै है अर किछू अपनें परणामनिकौं भी सुधारै है ॥ मिश्रपनौ पाईए है ॥ बहुरि
केई धर्म्मबुद्धि करि धर्म्म साधै है ॥ परंतु निश्चय धर्म्मकौं न जानै है तातैं अभूतार्थरूप धर्म्मकौं साधै
है ॥ तहाँ व्यवहार सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रकौं मोक्षमार्ग जांनि तिनिका साधन करै है ॥
तहाँ शास्त्र विषै देव गुरु धर्म्मकी प्रतीति कीऐं सम्यक्त होना कह्या है ऐसी आज्ञा मांनि अरहंत
देव निर्ग्रंथ गुरु जैनशास्त्र विना औरनिकौं नमस्कारादि करनेका त्याग कीया है ॥ परंतु
तिनिका गुण अगुणकी परीक्षा नाही करै है ॥ अथवा परीक्षा भी करै है तौ तत्वज्ञानपूर्वक सांची परीक्षा नाही

Left margin: ऽ आगैं कहि ए है तिस प्र कार करि ऽ

Right margin: १४२ ऽ आज्ञा ऽ

१४१

करै है ॥ बाह्य लक्षणनिकरि परीक्षा करै है ॥ [redacted]
[redacted] ऐसैं प्रतीतिकरि सुदेवगुरुशास्त्रनिकी भक्तिविषै प्रवर्तै है ॥ तहां अरहं-
तदेवकौं इंद्रादिकरि पूज्य [redacted] अनेक अतिशयसहित क्षुधादि दोषरहित [redacted] है ॥ [redacted]
दिव्यध्वनिकरि उपदेश दे है ॥ केवलज्ञानकरि लोकालोक जानै है ॥ काम क्रोधादि नष्ट कीए है ॥ [redacted]
इत्यादि विशेषण कहै है ॥ तहां इनिविषै केई विशेषण पुद्गलके आश्रय है ॥ केई जीवकै आश्रय
है ॥ तिनिकौं भिन्न भिन्न नाही पहिचानै है ॥ जैसैं [redacted]
[redacted] असमानजातीय मनुष्यादि पर्यायनिविषै [redacted]
[redacted] भिन्न न जांनि मिथ्यादृष्टि धरै है ॥ तैसैं [redacted] असमान-
जातीय अरहंत पर्यायविषै जीव [redacted] पुद्गलके विशेषणनिकौं भिन्न न जांनि मिथ्यादृष्टि धारै है ॥ बहु-
रि जे बाह्य विशेषण है तिनिकौं तौ [redacted] जांनि तिनिकरि अरहंतदेवको महंतपनो विशेष मानै है अर जे
जीवके विशेषण है तिनिकौं यथावत न जांनि [redacted] तिनिकरि अरहंतदेवको महंतपनों आज्ञा अनु-
सारि मानै है ॥ जातैं [redacted] यथावत् जीवका
विशेषण जानैं [illegible] मिथ्यादृष्टीकौं [illegible]
[illegible] मिथ्यादृष्टि रहै नाही ॥ बहुरि तिनि अरहंतनिकौं स्वर्गमोक्षका दा-
ता दीनदयाल अधमउधारक पतितपावन मानै है ॥ सो [redacted] अन्यमती कर्तृत्वबुद्धितैं ईश्वरकौं जैसें
मानै है तैसैं ही ए अरहंतकौं मानै है ॥ ऐसा नाही जानै है ॥ [illegible]
[redacted] ॥ फल तौ अपनें परिणामनिका लागै है ॥ [redacted] तिनिकौं निमित्तमात्र [redacted]

हैं सो ॥

शरीरकी सुंदरताकौं धरै हैं स्त्रीसंगमादि रहित है ॥

[illegible]

यह ॥

अथवा अयथा मानै है

277

142

है तातैं उपचार करिकै दिखाये पापसैं जबै है॥ अपनें परिणाम सुद्ध भएँ विना अरहंतादिकका नाम लीयें ही स्वर्गनि काहि ..का दा
ताली ही॥ बहुरि अरहंतादिकके नामादिकतैं स्वानादिक स्वर्ग पाया तहाँ [illegible] नामादिकका ही
अतिशय मांनै है॥ [illegible]
[illegible] विना
परिणाम नाम लेनेवालोंके भी स्वर्गकी प्राप्ति न होइ तौ सुननेवालेकै कैसैं होय॥ स्वानादिकैं कै नाम
सुननेके निमित्ततैं कोई मंदकषायरूप भाव भए हैं [illegible] तिनिका फल स्वर्ग [illegible] भया है॥ उपचार
करि नामहीकी मुख्यता करी है॥ बहुरि अरहंतादिकके नाम पूजनादिकतैं अनिष्ट सामग्रीका नाश होइ
इष्ट सामग्रीकी प्राप्ति मांनिये॥ ...॥ दिमि टनेकै अर्थि वा धनादिकी प्राप्तिकै अर्थि नाम लेहैं वा पूजनादि करै है
[illegible] सो इष्ट अनिष्टकातौ
कारण पूर्वकर्मका उदय है॥ अरहंत तौ कर्ता है नाही॥ [illegible] अरहंतादिककी भक्तिरूप शुभोपयोगपरि
णामनितैं पूर्व पापकासंक्रमणादिक होइ जाइ है [illegible]
[illegible] है॥ तातैं उपचार करि [illegible] अनिष्टका नाशका वा इष्टकी प्राप्तिका कारण
कहिए है॥ अर जो जीव पहलैं ही सांसारिक प्रयोजन लीएं भक्ति करै ताकै तौ पाप [illegible]॥ [illegible]
[illegible] कांक्षा विचिकित्सारूप भाव भए तिनिकरि पूर्व पापका संक्रमणादिक भी होइ [illegible]
[illegible] नाशकै अर्थि वा पुत्रादिप्राप्तिकै अर्थि पूजनादिकी ... जि ए हैसो कैसैं ...॥ तातौ का
... [illegible]
[illegible] अर्थि पूजनै ... [illegible]

*अरहंता दिककी भक्ति

*होइ तातैं अनि ...

१४२

*बहुरि तिनका कार्य सिद्धि न्याय

[illegible] विचारनौं

~~मोह का उदय घनां होहै तौ [redacted] संसारीक प्रयोजनकै अर्थि धर्म सेवै है। [redacted]~~
~~[redacted] जीवनमैं भी [redacted] उनके [redacted] प्रहीन [illegible] अरजो~~
~~उनका कार्य सिद्धि भया जानि पूर्व कर्म तैसा उदय आवनी था तातैं भया है। [redacted] पुराणनि विषै ऐसे~~

वहुरि केई जीव भक्ति कौं मुक्ति का कारण जानि तहां अति अनुरागी होइ प्रवर्त्तै है। सो अन्यमती जैसें भक्ति
तैं मुक्ति मानै है। तैसें याकै भी श्रद्धान भया सो भक्ति तौ रागरूप है रागतैं बंध है तातैं [redacted]
का मोक्ष [redacted] कारण नांही। [redacted] जब राग का उदय आ[redacted]वै तब [redacted] भक्ति न
करै तौ पापानुराग होइ तातैं अशुभ राग छोडनें कौं ज्ञानी भक्ति विषै प्रवर्त्तै है। [redacted]
[redacted] वा मोक्षमार्ग कौं वाह्य निमित्तमात्र भी जानै है। परंतु
इहां ही उपादेयपनौं मांनि संतुष्ट [redacted] न हो है। शुद्धोपयोग का उद्यमी रहै है। सोई पंचास्तिकाय व्याख्या
विषै कह्या है। इयं भक्तिः केवलभक्तिप्रधानस्याज्ञानिनो भवति। तीव्ररागज्वर विनोदार्थमस्थानरागनिषे
धार्थं कदाचित्ज्ञानिनोपि भवति॥ ॥ याका अर्थ॥ यहु भक्ति केवल भक्ति ही है प्रधान जाकै ऐसा अज्ञानी जी
वकै हो है॥ वहुरि तीव्ररागज्वर मेटनें कै अर्थि वा कुठिकानें राग निषेधनें कै अर्थि कदाचित् ज्ञानी कै भी हो है
तहां वह पूछै है ऐसें है तौ ज्ञानीतैं अज्ञानी कै भक्ति की अधिकता होती होगी॥ ताका उत्तर॥ यथार्थपनें की अ
पेक्षा तौ ज्ञानी कै सांची भक्ति है॥ अज्ञानी कै नांही है॥ अर रागभाव की अपेक्षा अज्ञानी कै श्रद्धान विषै भी
मुक्तिकारण जाननें तैं अति अनुराग है॥ ज्ञानी कै श्रद्धान विषै [redacted] शुभबंधकारण जाननें तैं तैसा अनुराग नां
ही है॥ वा कदाचित् ज्ञानी कै अनुराग घनां हो है॥ कदाचित् अज्ञानी कै हो है। ऐसा जाननां॥ ऐसें [redacted]
[redacted] देवभक्ति का स्वरूप दिखाया॥ अब गुरुभक्ति वाकै कैसें है सो कहिए है॥ केई जीव आज्ञानुसारी हैं ते
तौ ए जैन के साधु हैं हमारे गुरु हैं तातैं इनकी भक्ति करनी ऐसें विचारि भक्ति करै है॥ वहुरि केई जीव परीक्षा करै

है।। तहां ए मुनि दया पालै है।। शील पालै है।। धनादि नांहीं राखै है।। उपवासादि तप करै है।। क्षुधादि परीष
ह सहै है।। क्रोधादि नांहीं करै है।। उपदेश देइ औरनिकौं धर्म्म विषै लगावै है।। इत्यादि गुण विचारि तिनि विषै
भक्ति [redacted] भाव करै है सो ऐसे गुण तो परमहंसादिक अन्यमती है तिनि विषै [redacted]
१ इनि विषै १ पाईए है।। तातैं अतिव्याप्तपनौ [redacted] है।। [redacted] इनि करि सांची परीक्षा होइ नांहीं।। बहुरि इनि गु
णनिकौं विचारै है।। तिनि विषै केई जीवाश्रित है।। केई पुद्गलाश्रित है।। तिनिकौं विशेष न जानता [redacted]
१ असमान जातीय १ [redacted] मुनि पर्याय विषै [redacted] विषै एकत्वबुद्धितैं मिथ्यादृष्टी ही रहै है।
[illegible]
ह्यानै है।। [illegible]
१ शुभोपयोगी मुनि [illegible] निमित्त [illegible] शुभोपयोगी भी नांहीं।। तातैं रत्नत्रय विषै अव्याप्तिपणा आया।। ताका उत्तर।। केवल शुभोपयोगी जीव
मुनि होता नांही।। केवल शुभोपयोगी [illegible] [redacted]
आपही कौं [illegible]
पद [illegible] है।। [redacted] ।। बहुरि सम्यग्दर्शनज्ञा
१ मोक्षमार्ग [illegible] १ नचारित्रकी एकतारूप मुनिनिका सांचा लक्षण है ताकौं पहिचानैं नांही।। जातें यहु पहिचानि भए मिथ्याद
ष्टी रहता नांही।। ऐसैं मुनिनिका सांचा स्वरूप ही न जानैं तौ सांची भक्ति कैसें होइ।। [redacted]
[illegible] [redacted] पुण्यबंधकौ कारण जानि शुभक्रियारूप गुणनिकौं १४३
पहचानि तिनिकी सेवातैं अपनौ भला होनौ जानि तिनि विषै अनुरागी होइ [redacted] भक्ति करै है।। ऐ
सें गुरुभक्तिका स्वरूप कह्या।। अब शास्त्रभक्तिका स्वरूप कहिए है।। केई जीव तौ यहु केवली भगवानकी बानी है

143 P

तातैं केवली के पूज्यपनौं तैं याकै हू ग्रहण भी पूज्य है ऐसा जांनि निकौं करैं है ॥ बहुरि केई ऐसें परीक्षा करी है । इनि शास्त्रनि विषैं (विरागता) दया क्षमा शील संतोषादिक का निरूपण है तातैं [redacted] उत्कृष्ट है ऐसा जांनि निजकौं करैं है ॥ सो ऐसा कथन तौ अन्य शास्त्रनि विषैं भी पाइए है । इहां अनेकांतरूप सांचा जीवादि तत्त्वनिका निरूपण है अर सांचा रत्नत्रय स्वरूप मोक्षमार्ग दिखाया है ॥ ताकरि जैन शास्त्रनि की उत्कृष्टता है ताकौं नाहीं पहिचानैं है ॥ जातैं यहु पहचांनि भएं मिथ्यादृष्टि रहै नाहीं ॥ [redacted] ऐसैं शास्त्रनि का स्वरूप कह्या ॥ याप्रकार याकै देव गुरु शास्त्र की प्रतीति भई तातैं व्यवहार सम्यक्त्व भया [redacted] ॥ परंतु [redacted] तिनका सांचा स्वरूप भास्या नाहीं तातैं प्रतीति भी सांची भई नाहीं सांची प्रतीति बिना सम्यक्त्व की प्राप्ति नाहीं तातैं मिथ्यादृष्टी ही है ॥ बहुरि [redacted] शास्त्र विषैं तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनं ऐसा वचन कह्या है ॥ तातैं [redacted] शास्त्रनि विषैं जीवादि तत्त्व लिखे हैं तिनकौं आप सीखि ले है ॥ [redacted] तहां उपयोग लगावै है औरनिकौं उपदेशै है परंतु तिनि तत्त्वनि का भाव भासता नाहीं ॥ अर [redacted] इहां [redacted] तिस वस्तु के भाव ही का नाम तत्त्व कह्या ॥ सो भाव भासें बिना तत्त्वार्थश्रद्धान कैसें होइ ॥ भाव भासना कहा सो कहिए है ॥ जैसैं कोऊ पुरुष चतुर होनें के अर्थि [redacted] शास्त्र करि स्वर ग्राम मूर्छना रागनिका रूप ताल तान के भेद तिनिकौं सीखै है ॥ परंतु [redacted] स्वरादिक [redacted] का स्वरूप नाहीं पहिचानै है । [redacted] स्वरूप पहचांनि भएं बिना अन्य स्वरादिक कौं अन्य स्वरादिक रूप [redacted] भी मा [redacted] वाकै चतुरपनौं होइ नाहीं ॥ तैसैं कोऊ जीव सम्यक्त्वी होनें के अर्थि शास्त्र करि जीवादिक तत्त्वनि का स्वरूप कौं सीखै है ॥ परंतु तिनिका स्वरूप नाहीं पहिचानै है ॥ स्वरूप पहचांनि बिना अन्य तत्त्वनि कौं अन्य तत्त्वरूप मांनि ले है ॥ [redacted] वा सत्य भी मांनै है तौ [redacted] निर्णय करि नाहीं मांनै है ॥ तातैं वाकै सम्यक्त्व होइ नाहीं ॥ [redacted] बहुरि कोई शास्त्रादि पढ्या है वा न पढ्या है ॥ [redacted] परंतु [redacted] स्वरा

जो॰

है वा सत्य भी मांनै है तौ [redacted] निर्णय करि नाहीं मांनै है ॥ तातैं॰

३ बहुरि इनि शास्त्रनि विषै त्रिलोकादिक का गंभीर निरूपण है तातैं उत्कृष्टता जांनि निकौं करै है सो इहां अनुमानादिक का तौ प्रवेश नाहीं सत्य असत्य का निर्णय करि महिमा कैसैं जांनिए । तातैं ऐसी परीक्षा हूई नाहीं ॥

281

144

दिकका [illegible] स्वरूप कौं पहिचानै है। तौ वह चतुर ही है। तैसें शास्त्र [illegible] पढ्या है वा न पढ्या है जो
जीवादिक का स्वरूप पहिचानै है तौ वह सम्यग्दृष्टी ही है। जैसे हिरण स्वर रागादिक का नाम न जानै है
[illegible] अर [illegible] ताकौं [illegible] स्वरूप कौं पहिचानै है। तैसें तुच्छबुद्धी जीवादिक का [illegible] नाम न जानै है।
अर तिनका स्वरूप कौं पहिचानै है। यह [illegible] मैं हौं। [illegible] पर है। [illegible] भाव बुरे हैं। [illegible] भले हैं। [illegible]
ऐसे स्वरूप पहिचानै ता का नाम भाव भासना है। शिवभूति मुनि जीवादिक का नाम न जानै था।
अर तुषमाष भिन्न ऐसा घोषने लागा सो यहु सिद्धांत का शब्द था नाहीं। परंतु [illegible] आपापर का
भावरूप ध्यान कीया तातैं केवली भया। अर ग्यारह अंग के पाठी जीवादिक तत्वनि का विशेष भेद
जानैं परंतु भाव भासै नाहीं तातैं मिथ्यादृष्टी ही रहै है। अब [illegible] याकै तत्वश्रद्धान किस प्र
कार हो है सो कहिए है। जीव के [illegible] त्रस स्थावरादि रूप वा गुणस्थानादि रूप भेदनि कौं जा ॰मार्गणा॰
नै है। अजीव के पुद्गलादि भेदनि कौं वा तिनिके वर्णादि विशेषनि कौं जानै है। परंतु अध्यात्मशास्त्र
निविषैं भेदविज्ञान कौं कारणभूत वा वीतराग दशा होने कौं कारणभूत जैसें निरूपण कीया है तैसें ॰आस्रवादु
न जानै है। बहुरि किसी प्रसंगतैं तैसें भी जानना होइ तौ [illegible]। परंतु सारि जानितो
आपकौं आपरूप जानि परकौं पर जानि आपु विषैं न मिलावनी [illegible] आपका अंश पर विषैं न मिलावनी ऐसा लै॰ 144
सांचा श्रद्धान [illegible]
[illegible] तातैं ऐसें यहु भी आत्माश्रित ज्ञानादि विषैं
[illegible]

॰नीकरै है [illegible] प्रवृत्तीन

॰[illegible]

283

144 A

आत्मादि: जीवादि:

नाही करै है। जैसैं अन्य मिथ्यादृष्टी निर्धार विना [illegible] भावनि विषै अहंबुद्धि धरै है। तैसें यहु भी आत्मादि [illegible] जानपनादि विषै वा वर्णादि विषै अहंबुद्धि धारै है। तैसें यहु [illegible] आपा मानै है। जैसैं अन्य मिथ्यादृष्टी [illegible] विषै वा शरीराश्रित उपदेश उपवासादि क्रियानि विषै आपा मानै है। [illegible] ऐसा श्रद्धान नाही ऐसा नाही।। [illegible] सांची वात नीव नावे परंतु अंतरं [illegible] कोई सांची नीकै परंतु [illegible] मातुं नाही कहै तो [illegible] स्यानागनि [illegible] श्रद्धान [illegible] नाही तातैं जैसैं मतवाला माता कों माता भी कहै तो [illegible] नाही तैसें याकों सम्यक्त्वी न कहिए।। [illegible] पर्याय विषै अहंबुद्धि [illegible] जीव के जानने का तौ [illegible] पर्याय विषै अहंबुद्धि सो छूटि केवल आत्मा [illegible] पर्याय विषै अहंबुद्धि [illegible] जीव अजीव के संयोगतैं पर्याय [illegible] यहु एक द्रव्य [illegible] अहंबुद्धि [illegible] जीव अजीव [illegible] अपनें भाव [illegible] विषै अहंबुद्धि [illegible] नाही [illegible] प्रयोजन [illegible] कार्य [illegible] नाही [illegible] कथन करै है। परन्तु यहु मैं हौं।। ऐसा बहुरि जैसैं कोई और ही की वातैं करता होइ तैसें आत्मा का कथन करै है। परन्तु यहु मैं हौं।। ऐसा भाव नाही भासै।। बहुरि जैसैं कोई और [illegible] कों और तैं भिन्न बतावता होइ तैसें आत्मशरीर की भिन्नता प्ररूपै परंतु मैं इन शरीरादिक तैं भिन्न हौं ऐसा भाव भासै नाही।। बहुरि पर्याय विषै [illegible] जीव पुद्गल के परस्पर निमित्ततैं अनेक क्रिया हो है तिनकों [illegible] दोय द्रव्य करि निपजी जानैं।। यहु जीव की क्रिया है [illegible] ता का पुद्गल निमित्त है।। यहु पुद्गल की क्रिया है ता का जीव निमित्त है।। ऐसा भिन्न भिन्न भाव भासै नाही।। इत्यादि भाव भासे विना [illegible] जीव अजीव का सांचा श्रद्धानी न कहिए।। जातैं जीव अजीव

२पर्यायबुद्धिकरि:

१आत्माश्रित:

१बहुरि आत्म के अनुसारि वह:

१आत्मा

१कामिलाप

145 २८३

वजानिनेंकातौयहुहीप्रयोजनथासोनभयानाहीं॥ बहुरिआस्रवतत्त्वविषैजेहिंसादिरूपपापास्रवहैं
तिनकौंहेयजानैहै॥अहिंसादिरूपपुण्यास्रवहैंतिनकौंउपादेयमानैहै॥सोएतौदोऊही [redacted] कर्म
बंधकेकारणइनिविषैउपादेयपनौंमाननौंसोहीमिथ्यादृष्टिहै॥सोहीसमयसारकाबंधाधिकारवि
षैकह्याहै॥सर्वजीवनिकै [redacted] जीवन मरणसुखदुखअपनेकर्मकेनिमित्ततैंहोहै॥जहाँ अन्यजीवअ
न्यजीवकेइनिकार्यनिकाकर्त्ताहोइसो [redacted] ईमिथ्याध्यवसायबंधकाकारणहै॥तहाँ [redacted]
[redacted] जिवावनेंकावासुखीकरनेंकाअध्यवसायहोइसोतोपुण्यबंधकाकारणहै॥अर [redacted]
मारनेंकावादुखीकरनेंकाअध्यवसायहोइसोपापबंधकाकारणहै॥ऐसैंहिंसावत् असत्यादिकतो
पुण्यबंधकौंकारणहै॥अर [redacted] हिंसावत्असत्यादिकपापबंधकौंकारणहै॥एसर्वमिथ्याध्यवसाय
[redacted] है [redacted] त्याज्यहै॥तातैंहिंसादिवत्अहिंसादिककौंभीबंधकाकारणजानिहेय
हीमाननौं [redacted]॥~~...दिकपालतौजीवकेअ...~~ [redacted]
[redacted] हिंसाविषैमारनेंकीबुद्धिहोइसोवाकाआयुपूराहुवाबिनामरै [redacted] नाहींअपनी
द्वेषपरणतिकरिआपहीपापबांधैहै॥अहिंसाविषैरक्षाकरनेंकीबुद्धिहोइसोवाकाआयुअवशेष
बिनावहजीवैनाहीं अपनी प्रशस्तरागपरणतिकरिआपहीपुण्यबांधैहै॥ऐसैंएदोऊहेयहै॥जहाँ
वीतरागहोइदृष्टाज्ञाताप्रवर्त्तैतहाँनिर्बंधहैसोउपादेयहैसोऐसीदशानहोइतावत् [redacted] प्रश
स्तरागरूपप्रवर्त्तौपरंतुश्रद्धानतौऐसाराखौयहुभीबंधकाकारणहैहेयहै॥श्रद्धानविषैयाकौंमोक्ष
मार्गजानैंमिथ्यादृष्टिहीहोहै॥बहुरिमिथ्यात्वअविरतिकषाययोगएआस्रवकेभेदहैंतिनकौं
बाह्यरूपतौमानैअंतरंगइनिभावनिकीजातिकौंपहिचानैंनाहीं॥तहाँ [redacted]
[redacted] गृहीतमिथ्यात्वकौंमिथ्यात्वजानैंअरअनादिअगृहीतमिथ्यात्व [redacted] हैताकौंन

१अन्यदेवादिकेसेवनेंरूप

१अन्यजीवनिकौं१

१६५

१ हिचानैं॥ बहुरि त्रस स्थावर की हिंसा का इंद्रिय मन के विषयनि विषै प्रवृत्ति ताकौं अविरति
जानैं॥ [illegible]
[illegible] हिंसा विषै [illegible] प्रमाद परणति मू ¹प्रमाद¹
ल है अर विषय सेवन विषै अभिलाष मूल है ताकौं न अवलोकै॥ बहुरि बाह्य क्रोधादि करनो ताकौं
कषाय जानैं॥ [illegible] अभिप्राय [illegible] विषै राग द्वेष बसै ताकौं न पहिचानैं॥ बहुरि बाह्य [illegible]
चेष्टा होइ ताकौं योग जानैं॥ शक्तिभूत योगनिकौं न जानैं॥ ऐसें आस्रवनिका स्वरूप अन्यथा जानैं
बहुरि [illegible] राग द्वेष मोहरूप जे आस्रव भाव हैं तिनिका तौ नाश करने की चिंता नाहीं अर बाह्य क्रि
या वा बाह्य निमित्त मेटने का उपाय राखै सो तिनिकै मेटैं आस्रव मिटता नाहीं॥ द्रव्यलिंगी मुनि अन्य
देवादिक की सेवा न करै है॥ [illegible] हिंसा वा विषयनि विषै न प्रवर्तै है॥ क्रोधादि न करै है॥
[illegible] मन वचन काय कौं रोकै है॥ [illegible] तौ भी वाकै मिथ्यात्वादि च्यारौं आस्रव
पाइए है॥ [illegible]॥ बहुरि कपट करि भी ए कार्य न करै है कपट करि करै तौ ग्रैवेयक पर्यंत
कैसें पहुंचै [illegible] तातैं जो [illegible] अंतरंग अभिप्राय विषै मिथ्यात्वादि भाव है सो ही आस्रव है ¹रूप रागादि¹
ताकौं न पहिचानैं तातैं याकै आस्रवतत्त्व का भी सत्य श्रद्धान नाहीं॥ बहुरि बंधतत्त्व विषै जे अशुभ भाव
निकरि नरकादिरूप पाप का बंध होइ ताकौं तौ बुरा जानैं॥ अर शुभ भावनि करि देवादि [illegible] रूप पुण्य
का बंध होइ ताकौं भला जानैं [illegible] सो सर्व ही जीव [illegible]
[illegible] निकैं दुख सामग्री विषै द्वेष सुख सामग्री विषै राग पाइए है सो ही याकै राग द्वेष करने
का श्रद्धान भया॥ जैसें इस [illegible] पर्याय विषै सुख दुख सामग्री [illegible] राग द्वेष करै [illegible] तैसें ही आगामि पर्या

[illegible] ¹सेवै भी¹ ¹विषै¹

यसैवैं भी मुख्य सामग्री विषै रागद्वेष करनौ।। [redacted]

[redacted] शुभ अशुभ ला २ बहुरि २

वनि करि पुण्य पाप का विशेष हो है सो अघातिकर्म आत्मगुण के घातक नाहीं।। बहुरि शुभ अशुभ भावनि

२ तौ अघाति कर्मनि विषै विषै [redacted] घाति कर्मनि का तौ निरंतर बंध होइ ते सर्व पापरूप ही है अर तेई आत्मगुण के घातक हैं।

तातैं अशुद्ध भावनि करि कर्म बंध होइ [redacted] तिस विषै भला बुरा जाननां सोई मिथ्या अज्ञान है।। [redacted] सो यह २

[redacted] ।। ऐसे अज्ञान तैं बंध का भी याकै सत्य श्रद्धान नांही।। +

बहुरि संवर तत्त्व विषै अहिंसादि रूप शुभास्रव भाव तिनिकौं संवर जानै है।। [redacted] ।। सो २ बनैं नाही २

एक कारणतैं पुण्यबंध भी [redacted] मानै अर संवर भी मानै सो [redacted] ।। इहां प्रश्न जो मुनिनिकै एकैं कालि

एक भाव हो है [redacted] तहां उनकै बंध भी हो है अर संवर निर्जरा भी हो है।। सो कैसे है।। ताका समाधान।। वह भा

व मिश्ररूप है।। [redacted] किछू वीतराग भया है किछू सराग रह्या है।। जे [redacted] अंश [redacted] वीतराग भए तिनि करि

संवर [redacted] है जे अंश सराग रहे तिनि करि बंध है।। सो एक भावतैं तौ दोय कार्य बनैं।। परंतु एक प्रशस्त रा १५६

ग [redacted] ही तैं [redacted] पुण्यास्रव भी माननां अर संवर निर्जरा भी माननी [redacted]

[redacted] सो भ्रम है।। [redacted] मिश्र भाव विषै [redacted] यह सरागता है यह विरागता है ऐसी [redacted] मिथ्यादृष्टी कै ऐसी पर

पहचानि सम्यग्दृष्टी ही कै होइ तातैं अवशेष सरागता [redacted]

[redacted] कौं हेय [redacted] श्रद्दहै है।। ४

या निनी ही तातैं सराग भाव विषै संवर का भ्रम करि प्रशस्त रागरूप कार्यनि कौं उपादेय [illegible]
[illegible] श्रद्दहै है।। बहुरि [illegible] गुप्ति समिति [illegible] धर्म अनुप्रेक्षा परीषहजय चारि
त्र इनि करि संवर हो है ऐसा कह्या है।। सो इनि कौं भी यथार्थ न श्रद्दहै है।। कैसें सो कहिए है।। बाह्य
मन वचन काय की चेष्टा मेटै [illegible] पाप चितवन न करै।। मौन धरै।
गमनादि न करै सो गुप्ति मानै है।। सो [illegible]
[illegible]। इहां तो मन विषै तो भक्ति आदिरूप प्रशस्त राग [illegible]
१ता ता१ रिं विकल्प हो है।। वचन काय की चेष्टा आप रोकि राखी है।। तहां शुभ प्रवृत्ति है।। [illegible]
अर प्रवृत्ति विषै गुप्तिपनौ बनैं नांही तातैं वीतराग भाव भए जहां मन वचन काय की चेष्टा [illegible]
न होय सो सांची गुप्ति है।। बहुरि परजीवनि की रक्षा कै अर्थि यत्नाचार प्रवृत्ति ताकौं समिति मानै
है सो हिंसा के परणामनि तैं तौ पाप हो है रक्षा के परिणामनि तैं संवर कहोगे तौ पुण्यबंध का कारण कौन
ठहरैगा। बहुरि एषणा समिति विषै दोष टालै है तहां रक्षा का प्रयोजन है नांही तातैं [illegible]
चितु सागर भए [illegible] गमनादि क्रिया हो है तहां तिनि क्रियानि विषै अतिआसक्तता का अभा
वतैं प्रमादरूप प्रवृत्ति न हो है।। बहुरि और जीवनि कौं दुखी करि अपना गमनादि प्रयोजन [illegible]
[illegible] न साधै है।। तातैं स्वयमेव ही दया पलै है।। ऐसें सांची समिति है।। बहुरि [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] धर्मादिक कै जय तैं क्रोधादि न क

१रक्षा ही के अर्थि समिति नांही है तौ समिति कैसे होइ है।। मुनिनि के किं२

२वा बाह्य समिति हस्ती चाहिजे१

147

रहै है सो इही क्रोधादि करनेंका अभिप्राय तौ गया नाहीं ।। जैसैं
कोई राजादिककरि न यातें वा महैत पनीका लोभतैं
परस्त्रीन सेवै है तौ वाकौं त्यागी न कहिए ।। तैसें ही यहु क्रोधादिका त्यागी नाहीं ।।
तौ कैसैं होइ ।। पदार्थ अनिष्ट इष्ट लासैं
क्रोधादिक हो है ।। जब तत्त्वज्ञानके अभ्यासतें कोई इष्ट अनिष्ट न भासि तब स्वयमेव ही क्रो-
धादिक न उपजे तब सांचा धर्म्म हो है ।। बहुरि अनित्यादि चितवनतें कौं बुरा
जानि हितकारी न जानि तिनितें उदास होनौं ताका नाम अनुप्रेक्षा कहै है ।। सो यहु तौ जै-
सैं कोऊ मित्र था तब उस सैं राग था पीछें वाका अवगुण देखि उदा-
सीन भया तैसैं शरीरादिकतैं राग था पीछें अनित्यत्वादि अवगुण अवलोकि उदासीन भया
सो ऐसी उदासीनता तौ द्वेषरूप है ।। जहां जैसा अपना वा शरीरादिकका स्वभाव है तैसा पहचानि
भ्रम कौं मेटि नला जांनि राग न करनां बुरा जानि द्वेष न करनां ।।
ऐसी सांची उदासीनताकै अर्थि यथार्थ अनित्यत्वादिकका चितवन सो ई सांची अनुप्रे-
क्षा है ।। बहुरि क्षुधादिक भएं तिनके नाशका उपाय न करनां ताकौं परीषहसहनौं कहै है सो उपाय
तौ न कीया अर अंतरंग क्षुधादि अनिष्ट सामग्री मिलें दुखी भया ।। रति
आदिकाकारण मिलें सुखी भया तौ सो दुख
सुखरूप परिणाम है सोई आर्त्तध्यान रौद्रध्यान है ।। ऐसे भावनितें संवर कैसैं होइ ।। तातैं दुख
का कारण मिलें दुखी न होइ सुखका कारण मिलें सुखी न होइ ज्ञेयरूप करि तिनि-

त्यागी [right margin]
रागादिक [right margin]
१४७ [right margin]

1147/A

२ महाव्रतादिरूप

का ज्ञान न होता ही रहै है सो ऐसा पापी महत्ता [redacted] सहनी है॥ बहुरि हिंसादि सावद्ययोग का त्याग कौं चारित्र मानै है॥ तहाँ शुभ योग कौं उपादेय [redacted] पनैं करि ग्रहण मानै है सो [redacted]

[redacted] देशघाती स्पर्द्धकनि का उदयतैं निर्विषै उपादेयपनौ मानना [redacted]

४ निरूपण करतें तत्वार्थसूत्र विषैं आस्रव पदार्थ का [redacted] महाव्रत अणुव्रत भी आस्रवरूप कहे हैं॥ [redacted] ए उपादेय कैसैं होइ॥ अर आस्रव तौ बंध का साधक है॥ चारित्र मोक्ष का साधक है तातैं महाव्रतादिरूप आस्रवभावनिकौं चारित्रपनौ संभवै नाहीं॥ सकल कषाय [redacted] रहित जो [redacted] उदासीनभाव ताही का नाम चारित्र है॥ जो चारित्रमोह के देशघाती स्पर्द्धकनि के उदयतैं महामंद प्रशस्तराग होय है सो चारित्र का मल है॥ याकौं छूटता न जानि याका त्याग न करै है॥ सावद्ययोग [redacted] ही का त्याग करै है॥ [redacted]

[redacted] जैसैं कोई पुरुष कंदमूलादि बहुत दोषीक हरितकाय का त्याग करै है अर कई हरितकायनिकौं [redacted]॥ परंतु ताकौं धर्म न मानै है॥ तैसैं [redacted] मुनि हिंसादि तीव्र कषायरूप भावनि का त्याग करै है॥ अर कई मंद कषायरूप महाव्रतादि [redacted] कौं पालै है॥ परंतु [redacted] ताकौं मोक्षमार्ग न मानै है॥ यहाँ प्रश्न जो ऐसैं है तौ चारित्र के तेरह भेद निविषै महाव्रतादि कैसैं कहे हैं ताका समाधान॥ यहु व्यवहारचारित्र कह्या है॥ व्यवहार नाम उपचार का है॥ सो [redacted] महाव्रतादि [redacted] भएं ही वीतरागचारित्र हो है ऐसा [redacted] जानि महाव्रतादि विषैं चारित्र का उपचार कीया है॥ [redacted]

261

148

१ निश्कषाय४

[illegible] निश्चयकरि [illegible] लावहै सोई
सौचाचारित्र है।। यप्रकार संवरका कारणनिकौं अन्यथा जानता संवरका सांचा श्रद्धानी न होइ
बहुरि यहु अनशनादि तपतें निर्जरा मानै है।। सो केवल बाह्य तप ही तौ कीएं निर्जरा होइ नाही बाह्य
तप तौ शुद्धोपयोग बधावनेकौं अर्थि कीजिए है शुद्धोपयोग निर्जराका कारण है तातें उपचारकरि
तपकौं भी निर्जराका कारण कह्या है।। जो बाह्य दुःख सहनी ही निर्जराका कारण होइ तौ तिर्यंचादि
भी भूख त्रषादि सहै है।। तब वह कहै है वैतौ पराधीन सहै है।। स्वाधीनपनैं धर्म्मबुद्धितें उपवासादि ॥ २ बाल२
रूप तप करै ताकै निर्जरा हो है।। ताका समाधान।। धर्म्मबुद्धितें उपवासादिक तौ कीएं [illegible]
[illegible] बहुरि तहाँ उपयोग [illegible] अशुभ शुभ शुद्ध
रूप जैसैं परिणमै तैसैं परिणमौ।। घनें उपवासादि कीएं घनी निर्जरा होइ थोरे कीएं थोरी निर्जरा
होइ ऐसैं नियम ठहरै तौ तौ उपवासादिक ही मुख्य निर्जराका कारन ठहरै सो तौ बनैं नाही
परिणाम दुष्ट भएं उपवासादिकतैं निर्जरा होनी कैसैं संभवै।। बहुरि जो कहिए जैसा अशुभ शुभ
शुद्धरूप उपयोग परिणमै ताकै अनुसारि बंध निर्जरा है तौ उपवासादि तप [illegible]
मुख्य निर्जराका कारन कैसैं रह्या।। [illegible] अशुभ शुभ परिणाम बंधके कारन ठहरे। शुद्ध परिणाम ॥ १४८
निर्जराके कारन ठहरे [illegible]।। इहाँ प्रश्न जो तत्वार्थसूत्रविषै तपसा निर्जरा च।। ऐसा कैसैं कह्या है।।
ताका समाधान।। [illegible] इच्छानिरोधस्तपः ऐसा कह्या है।। इच्छा को रोकनी
ताका नाम तप है [illegible]

148/P

ऽहां यउपवासहीकैसैं ग्र [redacted]

[redacted] का वियोग करिए निश्चय [redacted]
[redacted] ।। सो शुभ अशुभ इच्छा मिटैं उपयो
ग शुद्ध होइ तब ही निर्जरा होइ है तातैं तप करि निर्जरा कही है।। इहां कोई कहै आहारादि रूप अशुभ की तौ इच्छा [redacted]
दूरि भएं ही तप होइ।। परंतु उपवासादि [redacted] करवा प्रायश्चित शुभ कार्य हैं तिनि की इच्छा तौ रहे।। ताका
समाधान।। ज्ञानीजन निकै उपवासादिक की [redacted] इच्छा नाही है।। ए
क शुद्धोपयोग की इच्छा है [redacted] उपवासादि करें शुद्धोपयोग बधै है तौ उपवा
सादि करै है।। बहुरि [redacted] की शिथिलता करि शुद्धोपयोग शिथिल होता जानै तहां
[redacted] आहारादिक ग्रहै है।। जो उपवासादिक ही तैं सिद्धि होइ तौ अजितनाथादिक तेईस तीर्थंकर दीक्षा
लेइ [redacted] रते।। उनकौ तौ शक्ति भी बहुत थी परंतु [redacted] जैसे परिणाम भए
तैसैं बाह्य साधन [redacted] करि एक वीतराग शुद्धोपयोग [redacted] का अभ्यास किया।। [redacted] इहां प्र
जो ऐसैं है तौ अनशनादिक कौं तप संज्ञा कैसैं भई।। ताका समाधान।। इनिकौं बाह्य तप कहे है।। सो बाह्य
का अर्थ यहु [redacted] जो बाह्य औरनिकौं दीसैं [redacted]
[redacted] फल [redacted] जैसा अंतरंग परिणाम होगा तैसा ही पावैगा।। [redacted]
[redacted] जातैं [redacted] परिणाम शून्य शरीर की [redacted] क्रियाफल दाता नाही है।। बहु
रि इहां प्रश्न जो शास्त्र विषै तौ अकाम निर्जरा कही है तहां बिना चाहि भूख प्यासादि सहैं निर्जरा होय है
तौ उपवासादि करि कष्ट सहें कैसैं निर्जरा न होय।। ताका समाधान।। अकाम निर्जरा विषै भी बाह्य
निमित्त तौ बिना चाहि भूख प्यास का सहना भया है अर [redacted] तहां मंदकषायरूप भाव [redacted]

जो उपवासादिकतैं हारी रवा परिणामनिके

[redacted]

[redacted] सो तपस्वी है।। ब हरि आपतो

होइ तौ पापकी निर्जरा होइ [illegible] देवादिपुण्यका बंध होइ॥ अर जो तीव्र कषाय न होनी कष्ट सहै पुण्य
बंध होइ तौ सर्व तिर्यंचादिक देव ही होइ॥ [illegible] सो
वनैं नाहीं॥ तैसैं ही बाहिकरि [illegible] उपवासादिकी एतौ नृषा आदिक कष्ट सहिए है सो यह बाह्य निमि
त है॥ इहां [illegible] जैसा परिणाम होइ तैसा फल पावै है॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] जैसे अन्न कों प्राण कह्या
[illegible]
सो [illegible] अन्न ही तैं प्राण नाहीं [illegible]
[illegible] कोई अन्न ही कों प्राण जानि [illegible]
प्राणनि कों न पोषै तौ [illegible] पावै॥ तैसैं [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ऐसा जाननां॥ यहां [illegible] अंतरंग तप विषैं नी [illegible]॥ ऐसा बाह्य
[illegible] तपतौ
साधन भए अंतरंग तपकी वृद्धि हो है तातैं उपचारकरि इनि कों तप कहै है। जो [illegible] बाह्य तप
करै अर अंतरंग तप न होइ तौ उपचारतैं भी वाकों तपसंज्ञा नाहीं॥ सोई कह्या है॥ कषायविषया
हारत्यागो यत्र विधीयते॥ उपवासः स विज्ञेयः शेषं लंघनकं विदुः॥१॥ जहां कषाय विषय आ
हारका त्याग [illegible] कीजिए सो उपवास जाननां॥ अवशेषकों लंघन कहै है॥ इहां कहैगा तौ ऐसें है

श्रीगुरु

149

४ इसतैं निर्जरा मानि

तौ हम उपवासादि न करैंगे ताकौं कहिए है।। उपदेश तौ ऊंचा चढनेकौं दीजिए है तू उलटा नीचा प
ड़ैगा तौ हम कहा करैंगे।। जो तू मानादिकतैं उपवासादि करै है तौ करि वा मति करै।। किछू सिद्धि
नाहीं। अर जो धर्मबुद्धितैं आहारादिकका अनुराग छोडै है तौ जेता राग छूट्या तेता ही छूट्या परन्तु
इसही कौं [illegible] तप जानि संतुष्ट मति होहु।। [illegible] बहुरि अंतरंग तपनि विषै प्राय
श्चित विनय वैयावृत्य स्वाध्याय, त्याग ध्यानरूप जो क्रिया ता विषै बाह्य प्रवर्त्तन सो तौ बाह्य
तपवत् ही जानना।। जैसैं [illegible] अनशनादि बाह्यक्रिया है तैसैं ए भी बाह्य क्रिया है।
तातैं प्रायश्चितादि बाह्य साधन अंतरंग तप नाहीं है।। ऐसा बाह्य प्रवर्त्तन होतैं जो अंतरंग परि
णामनि की शुद्धता होइ ताका नाम अंतरंग तप जानना।। तहां भी इतना विशेष है।। बहुत शुद्धता
भए शुद्धोपयोगरूप परणति होइ तहां तौ निर्जरा ही है बंध नाहीं हो है।। अर स्तोक शुद्धता भए शु
भोपयोग [illegible] का भी अंश रहै तौ जेती शुद्धता भई ताकरि तौ निर्जरा है।। जेता शुभभाव
है ताकरि बंध है।। ऐसा मिश्रभाव युगपत् हो है तहां बंध वा निर्जरा दोऊ हो है।। इहां को
ऊ कहै [illegible]
[illegible] ।। शुभभावनितैं पापकी निर्जरा हो है पुण्यका बंध हो है।। शुद्धभावनितैं दोऊनि
की निर्जरा हो है ऐसैं क्यों न कहो।। ताका उत्तर।। मोक्षमार्गविषै स्थितिका तौ घटना सर्व ही प्रकृतिनिका
होइ तहां पुण्य पापका विशेष है ही नाहीं।। अर अनुभागका घटना पुण्य प्रकृतिनिका शुद्धोपयोगतैं
भी होता नाहीं।। उपरि उपरि पुण्यप्रकृतिनिके अनुभागका तीव्र बंध उदय हो है।। अर पा
पप्रकृति परमाणू पलटि शुभप्रकृतिरूप होइ ऐसा संक्रमण शुभ वा शुद्ध दोऊ भाव होतैं होइ तातैं पूर्वोक्त नियम

१ केवरमाल

सेवै तो नीहैं।। विशुद्धता हीकै अनुसारि नियम संभवै है।। [redacted]
देखो चतुर्थ गुणस्थान वाला शास्त्राभ्यास आत्मचिंतवनादि कार्य करै तहाँ भी निर्जरा नाहीं बंध भी घना होय
अर पंचम गुणस्थान वाला विषय सेवनादि कार्य करै तहाँ भी वाकै गुणश्रेणि निर्जरा हुवा करै बंध
भी थोरा होइ।। [redacted] बहुरि पंचम गुणस्थानवाला उपवासादि वा
प्रायश्चित्तादि तप करै तिस काल विषै भी वाकै निर्जरा थोरी।। अर छठा गुणस्थानवाला आहार विहारा
दि क्रिया करै तिस काल विषै भी वाकै निर्जरा घनी।। तातैं जीव बंध थोरा होइ तातैं बाह्य प्रवृत्तिकै अनु
सारि निर्जरा नाहीं है।। अंतरंग कषाय शक्ति घटैं विशुद्धता भए निर्जरा होइ है।। सो इसका प्रगट
स्वरूप आगैं निरूपण करैंगे तहाँ जानना।। ऐसैं अनशनादि क्रियाकौं तपसंज्ञा उपचारतैं
जाननी।। याहीतैं इनकौं व्यवहार तप कह्या है।। व्यवहार उपचार का एक अर्थ है।। बहुरि ऐसा सा
धनतैं जो वीतराग भावरूप विशुद्धता होइ सो साँचा तप निर्जरा का कारण जाननी।। इहाँ दृष्टांत जै
सैं [redacted] धनकौं वा अन्नकौं प्राण कह्या।। सो धनतैं अन्न ल्याय इनकौं प्राण पोषे जा
यतातैं धन अन्नकौं प्राण कह्या।। कोई इंद्रियादिक प्राणकौं न जानैं अर इनहीकौं प्राण जानि संग्रह करै *उपचारकरि
तौ मरण ही पावै तैसैं अनशनादिकौं वा प्रायश्चित्तादिककौं तप कह्या सो अनशनादि साधन तैं प्रा [redacted] १५०
यश्चित्तादिरूप प्रवृत्ति वीतराग भावरूप सत्य तप पोष्या जाय तातैं उपचार करि
अनशनादिकौं वा प्रायश्चित्तादिकौं तप कह्या।। कोई वीतराग भावरूप तपकौं न जानै अर इनही
कौं तप जानि संग्रह करै तौ संसार हीमैं भ्रमै।। बहुत कहा इतना समझि लेना धर्म तौ [redacted] वीतराग भा *निश्चय
वहै।। अन्य नाना विशेष बाह्य साधन अपेक्षा उपचारतैं कीए हैं तिनिकौं व्यवहार मात्र धर्म संज्ञा जाननी।।

४ दूरि करनें कौं ४ २ कारि जो का लोक [redacted] कौ जाननां भया २

इस रहस्य कौं न जानैं तातैं वाकै निर्जरा का भी सांचा श्रद्धान नाहीं है ।। बहुरि सिद्ध होनां ताकौं मोक्ष [redacted] मानै है तहां जन्म जरा मरण रोग क्लेशादि दुख दूरि भए अनंत ज्ञानां [redacted] त्रैलोक पूज्यपनां भया इत्यादि रूप करि ताका महिमा जानै है ।। [redacted] सो सर्व जीवनि कौं दुख [redacted] ज्ञेय जाननें की [redacted] वा पूज्य होनें की चाहि है ।। इनि ही कै अर्थि मोक्ष की चाहि कीनी तौ याकै और जीवनिकौं श्रद्धानतैं कहा विशेष भया ।। बहुरि याकै ऐसा भी अभिप्राय है स्वर्ग विषै [redacted] सुख है तिनि तैं अनंत गुणां मोक्ष विषै सुख है सो इस गुणकार विषै स्वर्ग मोक्ष सुख की एक जाति जानै है ।। तहां स्वर्ग विषै तौ विषयादि सामग्री जनित सुख हो है ताकी जाति याकौं भासै है ।। अर मोक्ष विषै [redacted] विषयादि सामग्री है नाहीं सो उहां का सुख की जाति याकौं भासै तौ नाहीं परंतु [redacted] महान पुरुष स्वर्ग तैं भी मोक्ष कौं उत्तम कहै है तातैं यहु भी उत्तम ही मानै है ।। जैसें कोऊ गान [redacted] का स्वरूप न पहिचानैं ।। परंतु सर्व सभा के सराहैं हैं तातैं आप भी सराहै है तैसें यहु मोक्ष कौं उत्तम मानै है ।। इहां कोऊ [redacted] जे कहै है शास्त्र विषै भी तौ इंद्रादिक तैं अनंत गुणां सुख सिद्धनिकै प्ररूपै है ।। ताका उत्तर ।। जैसें तीर्थंकर का शरीर की प्रभा कौं सूर्यप्रभा तैं को [redacted] गुणी कही ।। तहां तिनकी एक जाति नाहीं परंतु लोक विषै सूर्यप्रभा की महिमा है तातैं भी बहुत महिमा जनावनें कौं उपमालंकार की [redacted] जिए है ।। तैसें सिद्ध सुख कौं इंद्रादि सुख तैं अनंत गुणां कह्या तहां तिनि की एक जाति नाहीं परंतु लोक विषै इंद्रादि सुख की महिमा है ।। तातैं भी बहुत महिमा जनावनें कौं उपमालंकार [redacted] कीजिए है ।। बहुरि प्रश्न जो सिद्ध सुख अर इंद्रादि सुख की एक जाति वह जानै है ऐसा निश्चय तुम कैसैं कीया ।।

२९५

151

ताका समाधान।। जिस धर्म्म [illegible] साधन का फल स्वर्ग मानै है।। तिस धर्म्म साधन ही का फल मोक्ष मा
नै है।। [illegible] कोई जीव इन्द्रादि पद
पावै कोई मोक्ष पावै तहां तिनि दोऊनिकै एक जाति धर्म्म का फल भया मानै।। ऐसा तौ मानै जो अ
ल्प साधन थोरा होहै सो इन्द्रादि पद पावै है।। [illegible] जाकै संपूर्ण साधन होइ सो मोक्ष पावै है।। परंतु [illegible]
[illegible] तहां धर्म्म की जाति एक जानै है।। सो जो कारण की एक जाति जानै ताकै कार्य की भी एक जाति का
श्रद्धान अवश्य होइ।। जातैं कारण विशेष भए ही कार्य विशेष हो है।। तातैं हम यहु निश्चय कीया [illegible]
याकै अभिप्राय विषै इन्द्रादि सुख अर सिद्ध सुख की एक जाति का श्रद्धान है।। बहुरि कर्म्म निमित्त तैं
आत्मा कै औपाधिक भाव थे तिनका अभाव होतैं शुद्ध स्वभाव रूप केवल आत्मा आप भया।। [illegible]
[illegible] इन्द्रादि पर्यंत सर्व संसारी जीवनिकै
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] निराकुल लक्षण अनंत सुख की प्राप्ति भई।। इन्द्रादिकनिकै जो सुख है सो कषाय [illegible] भावनि
करि आकुलता रूप है सो वह परमार्थ तें दुःख ही है तातैं वाकी याकी एक जाति नाहीं।। बहुरि स्व
र्ग सुख का कारण प्रशस्त राग है।। मोक्ष का कारण [illegible] वीतराग भाव है [illegible] तातैं कारण विषै भी विशे
ष है सो ऐसा भाव याकौं भासै नाहीं [illegible] तातैं मोक्ष का भी याकै सांचा श्रद्धा
न नाही है।। या प्रकार याकै सांचा तत्त्व श्रद्धान नाहीं।। [illegible]
[illegible]
[illegible] विशेष इतना बहुरि जो अवस्था विषै दुःख ही
[illegible] ताके अभाव होने तैं

151

151 A

तोकों बुरा कैसैं [redacted] इस लोकके इंद्रियसुषकों बुरा कहै।। [redacted] देवादिकका सुषकों भला कहै।। सो जानितौ इंद्रियसुषनिकौं एकसा बुरा व हलनला कैसैं मांनिए।। वहुरि अहुं लौकिक सुष पाप ते बुरे सैं देवादिक सर्व पर्याय ही कारन पद सो [redacted] सुषते भला कहै।। परंतु मोक्षमार्गका विरुद्ध ... [redacted] ... [redacted] ... व्यवहार सम्यग्दर्शनकी ... तिनिका श्रद्धान ही मानकैं।। अब यहु सम्यग्ज्ञानके अर्थि [redacted] इसही वासतै समयसार विषै कह्या है। अन्यकै तत्त्वश्रद्धान भऐं भी मिथ्यादर्शनही रहै है। वा प्रवचनसार विषै कह्या है आत्मज्ञान शून्य तत्त्वश्रद्धान कार्यकारी नाहीं।। वहुरि यहु सम्यग्दर्शनके आठ अंग कहे हैं तिनिकों [redacted] पालै है।। पचीस दोष कहे हैं तिनिकों टालै है।। संवेगादिक [redacted] गुण कहे हैं तिनिकों धारै है।। परंतु [redacted]।। जैसैं बीज बोऐं बिना षेतका सब साधन कीऐं भी [redacted] नाहीं तैसैं सांचा तत्त्वश्रद्धान भऐं बिना सम्यक्त्व [redacted] होता नाहीं।। सो पंचास्तिकाय व्याख्या विषै [redacted] जहां अंत विषै व्यवहाराभासवालेका वर्णन कीया है तहां [redacted] ऐसाही कथन कीया है।। या प्रकार याकै सम्यग्दर्शनिकौ अर्थि साधन करतैं भी सम्यग्दर्शन न होइ है।। अब यहु सम्यग्ज्ञानकै अर्थि शास्त्र [redacted] विषै शास्त्राभ्यास कीऐं सम्यग्ज्ञान होना कह्या है तातैं शास्त्राभ्यास विषै तत्पर रहै है।। [redacted] तहां [redacted] सीषनां [redacted] सिषावनां [redacted] यादि करनां [redacted] वांचनां पढनां आदि क्रिया विषै तौ उपयोगकौं रमावै है परंतु वाका प्रयोजन [redacted] उपरि दृष्टि नाही है।। इस उपदेश विषै मुझकौं कार्यकारी कहा है सो [redacted] अभिप्राय नाहीं है।। आप शास्त्राभ्यास करि औरनिकौं संबोधन देनेंका अभिप्राय राषै है

व्यवहार दृष्टि करि

अन्य तत्त्व

घनें जीव उपदेश मानैं तौ भला ही है सो ज्ञानाभ्यास तौ आपकै अर्थि कीजिए है। अर प्रसंग पाइ परका
भी भला होइ तौ परका भी भला करै। बहुरि कोई उपदेश न सुनैं तौ मति सुनौं
१ आप काहे कौं विषाद कीजिए शास्त्रार्थका भाव जानि आपका भला करनां। बहुरि शास्त्राभ्यास विषै भी कई तौ व्याकरण न्या
यकाव्य आदि शास्त्रनिका बहुत अभ्यास है। सो ए तौ लोकविषै पंडितता प्रगट कर
नेके कारण है। इनि विषै आत्महित निरूपण तौ है नाहीं। इनिका तौ प्रयोजन इतना ही है। थोरा वा बहुत इ १ अपनी बुद्धि बहुत होइ तौ
नका अभ्यास करि पीछैं आत्महितके साधक शास्त्रनिका अभ्यास करनां। जो बुद्धि थोरी होइ
तौ आत्महितके साधक सुगम शास्त्रनि ही का
अभ्यास करै। ऐसा न करना जो व्याकरणादिकका ही अभ्यास करतें करतें आयु पूरी होइ जाइ और तत्व
ज्ञानकी प्राप्ति न बनै। इहां कोऊ कहै ऐसैं है तौ व्याकरणादिकका अभ्यास न करनां। ताकौं क
हिए है तिनिका अभ्यास विना महान ग्रंथनिका अर्थ खुलै नाहीं तातैं तिनिका भी अभ्यास करनां यो
ग्य है। बहुरि इहां प्रश्न महान ग्रंथ ऐसे क्यों कीए जि
निका अर्थ व्याकरणादि विना न खुलै, भाषाकरि सुगम रूप हितोपदेश क्यौं न लिख्या। उनकै किछू प्र
योजन तौ था नाहीं। ताका समाधान। भाषा विषै भी प्राकृत संस्कृतादिकके ही शब्द हैं
परंतु अपभ्रंस लीए है। बहुरि देश देश विषै अन्य अन्य प्रकार है। सो महंत पुरुष शास्त्रनि विषै अप
भ्रंश शब्द कैसैं लिखैं। बालक तोतला बोलै तौ बडे तौ न बोलैं। बहुरि एक देशकी भाषारूप शा
स्त्र दूसरे देश विषै जाय तौ तहां ताका अर्थ कैसैं भासै। तातैं शुद्ध शब्दरूप ग्रंथ जोडे।

१ प्राकृत संस्कृतादि

१८४

७ कोईजीवनिकै

बहुरि [redacted] व्याकरण न्यायादिकनिकी आम्नायतैं वस्तु स्वरूप [redacted] नीकै [redacted]॥ व्याकरण विना शब्द का अर्थ [redacted] यथावत न भासै। न्याय विना [redacted] लक्षण परीक्षा आदि यथावत न होइ सकै इत्यादि [redacted] वचन द्वारि वस्तु का स्वरूप निर्णय [redacted] व्याकरणादि विना नीकै न होता जानि [redacted] तिनिकी आम्नाय अनुसारि कथन कीया॥ भाषा विषै तौ तिनिकी थोरी बहुत आम्नाय आएँ ही उपदेश होइ सकै है॥ [redacted] तिनिकी बहुत आम्नायतैं नीकै निर्णय होइ सकै है॥ बहुरि जो कहोगे ऐसैं है तौ अब भाषारूप ग्रंथ काहे कौं बनाईए है॥ ताका समाधान काल दोषतैं जीवनिकी मंदबुद्धि जानि [redacted] निं जेता ज्ञान होगा तेता ही होगा ऐसा अभिप्राय विचारि भाषाग्रंथ कीजिए है॥ सो जे जीव [redacted] व्याकरणादिक का अभ्यास न करि सकै तिनि कौं [redacted] ऐसे ग्रंथनि करि ही अभ्यास करनौ॥ बहुरि [redacted] जे जीव [redacted] शब्दनि की नाना युक्ति लीएं अर्थ [redacted] करने कौं ही व्याकरण अवगाहै है॥ वादादिक करि महंत होने कौं न्याय अवगाहै है॥ [redacted] चतुरपनौ प्रगट करनेकै अर्थि काव्य अवगाहै है॥ इत्यादि लौकिक प्रयोजन लीएं [redacted] इनिका अभ्यास करै है ते धर्मात्मा नाहीं॥ [redacted] बनैं जेता थोरा बहुत अभ्यास इनिका करि [redacted] तत्वादिक का निर्णय करै है सोई [redacted] धर्मात्मा पंडित जाननौ॥ बहुरि केई जीव [redacted] पुण्य पापादिक फलके [redacted] निरूपक पुराणादि शास्त्र वा पुण्य पाप क्रिया के निरूपक आचारादि शास्त्र वा गुणस्थान मार्गणा कर्मप्रकृति त्रिलोकादिक के निरूपक करणानुयोग के शास्त्र तिनि का अभ्यास करै है॥ सो जो [redacted] इनिका प्रयोजन आप न विचारै है॥ [redacted] तौ तो [redacted] सूवा का सा ही पढना भया॥ बहुरि जो इनिका

५ आत्महित कै अर्थि

ऐसे जीव नि

प्रयोजन विचारै है तहाँ पाप कौं बुरा जानना पुण्य कौं भला जानना॥ गुणस्थानादिक का स्वरूप मैं
मिलै नाँही इनि का अभ्यास करैं गे तितना हमारा भला है॥ इत्यादि प्रयोजन विचार्या सो इसतैं इत
ना तौ होसी नरकादिक [redacted] न होसी स्वर्गादिक होसी॥ [redacted] परंतु मोक्षमार्ग की तौ प्राप्ति होइ नाँ
ही॥ पहलैं साँचा तत्वज्ञान होइ तहाँ पीछैं पुण्य पाप का फल कौं संसार जानैं शुद्धोपयोगतैं मोक्ष
मानैं गुणस्थानादि रूप जीव का व्यवहार [redacted] निरूपण जानैं इत्यादि [redacted]
जैसा का तैसा श्रद्धान करैं ता सीताइ इनि का अभ्यास करै तौ सम्यग्ज्ञान होइ॥ सो तत्वज्ञान कौं कार
ण अध्यात्मरूप द्रव्या[redacted]नुयोग के शास्त्र हैं॥ [redacted] बहुरि केई जीव तिनि शास्त्रनि का भी अभ्यास क +
रै हैं॥ परंतु तहाँ [redacted] जैसैं लिख्या है तैसैं [redacted] आप [redacted] करि आप कौं ५ निर्णय करि
आपरूप पर कौं पररूप [redacted] आस्रवादिक कौं आस्रवादि रूप [redacted] न श्रद्धान करै है॥ मुखतैं तौ य
थावत [redacted] निरूपण ऐसा भी करै जाके उपदेशतैं और जीव सम्यग्दृष्टी होइ जाइ॥ परंतु
जैसैं लडका स्त्री का स्वाँग करि [redacted] ऐसा गान करै ताकौं सुनतैं अन्य पुरुष स्त्री कामरूप होइ
जाइ॥ परंतु वह जैसैं सीख्या तैसैं कहै है वाकौं किछू भाव भासै नाँही॥ तातैं आप कामासक्त न हो है
तैसैं यहु जैसैं लिख्या तैसैं उपदेश दे परंतु आप अनुभवन नाँही करै है॥ जो आपकै श्रद्धान भया होता
तौ [redacted] और तत्व का अंश और तत्व विषै [redacted] न मि १५३
लावता सो याकै [redacted]
[redacted] थल नाँही तातैं सम्यग्ज्ञान होता नाँही॥ [redacted] ऐसैं यहु ग्यारह अंग पर्यंत पढै
तौ भी [redacted] सिद्धि होती नाँही॥ [redacted] सो समयसारादि विषै [redacted]

153

[redacted] मिथ्यादृष्टीकै ग्यारह अंगका ज्ञान होना लिख्या है॥ इहाँ कोऊ कहै॥ ज्ञान तौ [redacted] इतना होहै॥ परन्तु जैसें अभव्यसेनकै श्रद्धानरहित ज्ञान [redacted] भया तैसें होहै॥ ताका समाधान॥ वह तौ पापी था जाकै हिंसादिकी प्रवृत्तिका भय नाही॥ परन्तु जो जीव ग्रैवेयक आदि विषै जाय है ताकै ऐसा ज्ञान होहै सो तौ श्रद्धानरहित नाही॥ वाकै तौ [redacted] ऐसा ही श्रद्धान है॥ ए ग्रंथ सांचे हैं॥ परन्तु तत्त्वश्रद्धान सांचा [redacted] न भया॥ समयसार विषै एक ही जीवकै धर्मका श्रद्धान एकादशांगका ज्ञान महाव्रतादिकका [redacted] पालना लिख्या है॥ प्रवचनसार विषै [redacted] ऐसा लिख्या है आगमज्ञान ऐसा भया जाकरि सर्व पदार्थनिकौं हस्तामलकवत् जानै है॥ यह भी जानै है इनिका जाननहारा मैं हौं॥ परन्तु [redacted] मैं ज्ञानस्वरूप हौं ऐसा आपकौं [redacted] परद्रव्यतैं भिन्न केवल चैतन्यद्रव्य नाही अनुभवै है तातैं आत्मज्ञानशून्य आगमज्ञान भी कार्यकारी नाही॥ या प्रकार याकै सम्यग्ज्ञानकै अर्थि [redacted] जैनशास्त्रनिका अभ्यास [redacted] करै है तौ भी याकै सम्यग्ज्ञान नाही॥ बहुरि इनि [redacted] कै सम्यक्चारित्रकै अर्थि कैसें [redacted] प्रवृत्ति है सो कहिए है॥ [redacted] बाह्य [redacted] क्रिया ऊपरि तौ इनिकै दृष्टि [redacted] है। अर परिणाम [redacted] सुधरने बिगरनेका विचार नाही॥ बहुरि जो परिणामनिका भी विचार होइ तौ [redacted] जैसा अपना परिणाम होता दीसै तिनिही कै ऊपरि दृष्टि रहै है॥ परन्तु उन परिणामनिकी परंपरा विचारें अभिप्राय विषै जो [redacted] वासना है ताकौं न विचारै है॥ अर फल लागै है सो अभिप्राय विषै वासना है ताका लागै है। [redacted] सो इसका विशेष व्याख्यान आगैं करैंगे तहाँ स्वरूप नीकैं भासैगा॥ ऐसी पहचानि बिना बाह्य आचरन [redacted] का ही उद्यम है॥ तहाँ केई जीव तौ कुलक्रम करि [redacted] वा देखादेखी वा [redacted] माया लोभादिकतैं आचरन आचरै है [redacted]

क्रोधमान

[redacted] भिन्न [redacted]
[redacted] सो इनिकै तौ धर्म्मबुद्धि ही नाहीं।। सम्यक्चारित्र कहेतैं होइ।। एजीव
कोईतौ जो ल्हे हैं [redacted] कैं बाचीहै सो अज्ञानभाव वा कषायतैं सम्यक्चारित्र होता नाहीं।। वहुरि
केई जीव ऐसा मानै है जो जानने मैं [redacted] कहा है किछू करैगा तौ फल लागैगा।। ऐसैं विचारि व्रततप आ
दि क्रियाही का उद्यमी रहै है।। अर तत्वज्ञान का उपाय न करै है सो [redacted] तत्वज्ञान विना [redacted]
[redacted] महाव्रतादिक का आचरन भी मिथ्याचारित्रही नाम पावै है अर तत्वज्ञान भए किछू भी व्रतादिक
नाहीहै तौ भी असंयत सम्यग्दृष्टि नाम पावैहै।। तातैं पहलैं तत्वज्ञान का उपाय करनां पीछैं कषाय घ
टावनें कौं बाह्यसाधन करनां।। सोई योगीन्द्रदेवकृत श्रावकाचार विषै कह्या है।। दंसणभूमिहबाहि
रा।। जियवयरुक्खणहुंति।। याका अर्थ यहु सम्यग्दर्शन भूमिका विना हे जीव व्रतरूपी वृक्ष न होइ।।
[redacted] वहुरि जिनि जीवनिकै तत्वज्ञान नाही ते यथार्थ आचरन न आचरै है सोई विशेष दिखाईए है।।
केई जीव पहलैं तौ [redacted] वडी प्रतिज्ञा धरि बैठे।। अर अंतरंग विषय कषाय [redacted] वासना मिटी
नाही।। तब [redacted] जैसैं तैसैं प्रतिज्ञा पूरी ~~करी~~ कीया चाहै।। ~~कैतो दुखी होइ~~ [redacted]
[redacted]।। जैसैं वहुत उपवास करि बैठे पीछैं पीडातैं दुखी हुवा रोगीवत् [redacted] काल गमावै धर्म्मसाधन
न करै सो पहलैं ही सधती जो निए तितनी ही प्रतिज्ञा क्यौं न लीजिए।। [redacted] दुखी होनें मैं आर्त्तध्यान होइ ताका
फल भला कैसैं लागैगा।। [redacted]
[redacted] अथवा उस प्रतिज्ञा [redacted] ताकी एवज विषय पोषनें कौं अ

४ तहीतैं सप्रतिज्ञा करि परिणाम दुखी होहै।।   १ का दुख न सह्या जाय तब

न्यउपाय करै।। जैसैं [redacted] मृषा लागै तब पांनी तौ न पीवै अर अन्य शीतल उपचार अनेक प्र
कार करै वा [redacted] घृत तौ छोडै अर [redacted] अन्य स्निग्ध वस्तु कौं उपाय करि नषै [redacted] ऐ
सें ही अन्य जाननी सो परीषह न सह्या जाय था विषय वासना न छूटै थी तो ऐसी प्रतिज्ञा काहे कौं
× विषम करी।। सुगम विषय छोडि दीछें विषयनि [redacted] का उपाय करनी परै [redacted] ऐसा कार्य काहे कौं कीजिए। ऐसी तो उलटी रागतावती बहै है ×
[redacted] अथवा प्रतिज्ञा विषै दुष होइ तब
परिणाम लगावनें कौं कोई आलंबन विचारै।। जैसें उपवास करि पीछें क्रीडा करै।। केई पापी [redacted]
जूवा आदि कुविसन विषै लगै है।। अथवा सोय रह्या चाहै।। यहु जांनै किसी प्रकार करि कालप
रा करनी।। [redacted] ऐसे ही अन्य प्रतिज्ञा विषै जाननी [redacted]
अथवा केई पापी ऐसे भी हैं पहली प्रतिज्ञा करैं।। पीछें तिस तैं दुषी होइ तब प्रतिज्ञा छोडि दे।।
प्रतिज्ञा लेनी छोडनी तिन कै ष्याल मात्र है।। सो प्रतिज्ञा भंग करनें का महापाप है इसतैं तो प्रति
ज्ञा न लैनी ही भली है।। या प्रकार पहलें [redacted] तौ निर्विचार होइ प्रतिज्ञा करै पीछें [redacted] ऐसी द
शा होइ सो जैन धर्म विषै प्रतिज्ञा लेनें का दंड तो है नाहीं।। जैनधर्म विषै तौ यहु उपदेश है।। पहलैं
तौ तत्वज्ञानी होइ।। पीछें जाका त्याग करै ताका दोष पहिचानैं।। त्याग कीएं गुण होइ ताकौं जानैं।
बहुरि अपनें परिणामनि कौं [redacted] ठीक करैं [redacted] वर्त्तमान परिणामनि ही कै भरोसै प्रतिज्ञा न करि बैठ
आगामी निर्वाह होता जानें तौ प्रतिज्ञा करै।। [redacted] बहुरि शरीर की शक्ति वा द्रव्य क्षेत्र का
[redacted]

155

लनोवाहिककाविचारकरै॥ऐसैंविचारिपीछैंप्रतिज्ञाकरनी॥सोभीऐसीकरनीजिसप्रति
ज्ञातैं [redacted] निरादरपनोंनहोइपरिणामचढतेरहैं॥ऐसीजैनधर्म्मकीआम्नायहै॥ [redacted]
[redacted] इहांकोऊकहैचांडालादिकोंनैंप्रतिज्ञाकरीतिनकैइतनोंविचारकहांहोहै॥ताका
समा[redacted]धान॥मरणपर्यंतकष्टहोइतौहोहुपरंतुप्रतिज्ञानछोडनीऐसाविचारिकरि [redacted] प्रतिज्ञाकरैहै
प्रतिज्ञाविषैनिरादरपनोंनाहीं॥अर [redacted] सम्यग्दृष्टीप्रतिज्ञाकरैहैसो [redacted] तत्वज्ञानादिपू
र्वकहीकरैहै॥ [redacted] ॥बहुरिजिनि [redacted] कैअंतरंग [redacted] विरक्ततानभईअरबाह्यप्रति
ज्ञाधरैहैंतेप्रतिज्ञाकेपहलैंवापीछैंजाकीप्रतिज्ञाकरैताविषैअतिआसक्तहोइलागैहै॥जैसैंउपवास
के [redacted] धारनैंपारनैंभोजनविषैअतिलोभीहोइगरिष्टादिभोजनकरै [redacted] शीघ्रतापनीकरै [redacted] सो
जैसैंजलकोंमूंदिराख्याथा छूट्या तबहीबहुतप्रवाहचलनैंलागा॥तैसैंप्रतिज्ञाकरिविषयप्रवृत्तिमूंदी
अंतरंगआसक्तताबधतीगईप्रतिज्ञापूरीहोतैंहीअत्यंतविषयप्रवृत्तिहोनैंलगी॥सोप्रतिज्ञाकाकाल
पू॰ आगैं ५ विषैविषयवासनामिटीनाहींआगैंपीछैंताकीएवजअधिकरागकीयातौफलतौरागभावमिटैंहोगातातैंजे
तीविरक्तताभईहोइ [redacted] तितनीहीप्रतिज्ञाकरनी॥महामुनिभीथोरीप्रतिज्ञाकरैपीछैं
आहारादिविषैउछटिकरै [redacted]॥अर[redacted]सैंबडीप्रतिज्ञाकरैंसोअपनीशक्तिदेखिकरैहै
जैसैंपरिणामचढतेरहैसोकरैहै॥ [redacted] प्रमादीभीनहोइअरआकुलताभीनउपजैऐसीप्रवृत्तिकार्यका १५५
रीजाननी॥बहुरिजिनिकैधर्म्मऊपरिदृष्टिनाहींतेकबहूंतौबडाधर्म्मआचरैं॥कबहूंअधिकस्वछंद
होइप्रवर्त्तैं॥जैसैंकोईधर्म्म[redacted]पर्वविषैतौबहुतउपवासादिकरै॥ [redacted] कोईधर्म्मपर्वविषै [redacted]
[redacted] वारंवारभोजनादिकरैसोधर्म्मबुद्धिहोइतौयथायोग्यसर्वधर्म्मपर्वनिविषैयथायोग्यसंयमादिधरै॥

155

बहुरि कबहू तौ कोई धर्मकार्य विषै बहुत धन खरचै। कबहू कोई धर्मकार्य आ[redacted]नि प्राप्त भया होइ तौ भी
तहां थोरा भी धन न खरचै सो धर्मबुद्धि होइ तौ यथाशक्ति यथायोग्य सर्व ही धर्मकार्यनि विषै धन खर-
च्या करै। ऐसे ही अन्य जाननी। बहुरि जिनिकै सांचा धर्मसाधन नाही ते कोई क्रिया तौ बहुत [redacted]
बडी अंगीकार करै अर कोई [redacted] हीन [redacted] क्रिया (कीया) करै। जैसें [redacted] त्याग कीया अर चो- १धनादिक[redacted] त्याग१
खा भोजन चोखा [redacted] वस्त्र [redacted] इत्यादि विषय[redacted]नि विषै [redacted]
विशेष प्रवर्तै। बहुरि कोई जामा पहरनां स्त्रीसेवन करनां [redacted] इत्यादि कार्यनिका तौ त्याग करि [redacted] धर्मा-
त्मापनां प्रगट करै। अर पीछैं खोटे व्यापारादि कार्य करै। [redacted] लोक-
निंद्य पाप [redacted] क्रियानि विषै प्रवर्तै। [redacted] ऐसे ही कोई क्रिया अति ऊंची कोई क्रिया अति नीची करै तहां लो-
कनिंद्य होइ धर्मकी हास्य करावै देखो अमुका धर्मात्मा ऐसा कार्य करै है। जैसें कोई पुरुष एक वस्त्र तौ
[redacted] (अति) उत्तम पहरै एक वस्त्र [redacted] अति हीन पहरै तौ हास्य ही [redacted] होइ तैसें यहु हास्य पावै है। [redacted] सांचा धर्मकी
तौ यहु आम्नाय है। जेता अपना रागादि दूरि भया होइ ताकै अनुसारि जिस पद विषै जो [redacted] धर्मक्रिया
संभवै सो सर्व अंगीकार करै [redacted]
जो थोरा रागादि मिट्या होइ तौ नीचा ही पद विषै प्रवर्तै। [redacted] परन्तु ऊंचा पद धराइ नीची क्रिया न करै।
इहां प्रश्न जो [redacted] ऊपरिकी प्रतिमा विषै कह्या है सो नीचली अवस्थावाला [redacted] तिनिका त्याग १स्त्रीसेवनादिकका त्याग१
[redacted] करै कि न करै। ताका समाधान। [redacted] (सर्वथा)
सर्वथा [redacted] तिनिका त्याग नीचली अवस्थावाला करि सकता नाहीं। कोई दोष लागै है। तातैं ऊपरि
की प्रतिमा विषै त्याग कह्या है। नीचली अवस्था विषै जिस प्रकार त्याग संभवै तैसा नीचली अवस्थावाला

जिस
भीकरै॥ परंतु [redacted] अवस्थाविषै जो कार्य संभवै ती तौ ही [redacted] ताका करना तौ कषाय भाव नहीं होते हैं।
जैसें कोऊ सप्तव्यसन सेवै स्वस्त्रीका त्याग करै तौ कैसें बनै॥ [redacted] यद्यपि स्वस्त्रीका त्याग करना धर्म है तथापि पहलैं [redacted]
[redacted] त्याग होइ तब ही [redacted] स्वस्त्रीका त्याग करना योग्य है॥ ऐसें ही अन्य जानने। बहुरि [redacted] सर्व प्रकार
धर्मकों न जानै ऐसा जीव कोई धर्मका अंगकों मुख्य करि अन्य धर्मनिकों गौण करै है॥ जैसें के
ई जीवदया धर्मकों मुख्य करि पूजा प्रभावनादि कार्यकों उथापै है॥ [redacted]
[redacted] केई पूजा प्रभावनादि धर्मकों मुख्य
करि [redacted] हिंसाका भय न राखै है॥ केई तपकी मुख्यता करि [redacted]
[redacted]॥ केई दान [redacted] की मुख्यता क
रि बहुत पाप करिकें भी धन उपजाइ दान [redacted] दे है॥ [redacted] केई आरंभ त्यागकी
मुख्यता करि याचना आदि करै है॥ इत्यादि प्रकार करि [redacted] कोई धर्मकों [redacted] मुख्य करि [redacted]
अन्य धर्मकों न गिनैं है वा वाकै आसिरै पाप आचरै है सो [redacted] जैसें अविवेकी व्यापारी कोई व्यापार
का नफाकै अर्थि [redacted] अन्य प्रकार करि बहुत टोटा पाडै तैसें यहु कार्य [redacted] भया॥ चाहिए तौ
ऐसें जैसें व्यापारीका प्रयोजन नफा [redacted] है॥ [redacted] सर्व विचार करि जैसें घना नफा होइ तैसें करै॥ तैसें
ज्ञानीका प्रयोजन वीतराग भाव है॥ सर्व विचार करि जैसें वीतराग भाव [redacted] घना होइ तैसें करै॥ [redacted]
[redacted] जानैं मूल धर्म वीतराग भाव है॥ [redacted] याही प्रकार अविवेकी जीव अन्यथा धर्म अंगीकार करै है।
[redacted]। तिनकै तौ सम्यक्चारित्रका आभास भी न होइ।

= इहाँ त्यागादिरूप धर्मका कथन तथा [redacted] लौ किकका र्य अर्थि धर्म छोडि नहीं लागनाय तिनिका कथन उचित नाहीं

सप्तव्यसन का

आर्त्तध्यानादि करि कैं भी उपवासादि करै वा आपकों तपस्वी मानि निःशंक क्रोधादि करै

१५६

156/8

बहुरि केई जीव अणुव्रत महाव्रतादिरूप यथार्थ आचरन करै है।। बहुरि [redacted] आचरनकै अनुसारि
ही परिणाम है।। कोई माया लोभादिकका अभिप्राय नाहीं है।। इनिकौं धर्म जानि [redacted] मोक्षकै अ
र्थि इनिका साधन करै है।। कोई स्वर्गादिक [redacted] भोगनिकी भी इच्छा न राखै है।। परंतु तत्व
ज्ञान पहलैं न भया।। तातैं आप तौ जानै मैं मोक्षका साधन करौं हौं अर मोक्षका [redacted] साधन [redacted]
[redacted] नाहीं केवल स्वर्गादिकहीका साधन करै सो [redacted] मिश्रीकौं
अमृत जानि भषै तौ अमृतका गुण तौ न होइ [redacted]।। आपकी प्रतीतिकै अनुसा
रि फल होता नाहीं फल जैसा साधन करै तैसा ही लागै है।। शास्त्रविषै ऐसा कह्या है चारित्रवि
षै सम्यक् पद है सो अज्ञानपूर्वक आचरणकी निवृत्तिकै अर्थि है।। [redacted] तातैं पहलैं तत्वज्ञान होइ तहां
ही पीछैं [redacted] चारित्र होइ सो सम्यक्चारित्र नाम पावै है।। जैसें कोई षेतीवाला बीजनै बोवै नाही
अर अन्य साधन करै तौ अन्नप्राप्ति कैसें होइ घास फूस ही होइ तैसें अज्ञानी तत्वज्ञानका तौ अभ्यास करै नां
ही अर अन्य साधन करै तौ मोक्षप्राप्ति कैसें होइ।। देवपदादिक ही होइ।। तहां केई जीव तौ ऐसे हैं
तत्वादिककौं नीकैं नाम भी न जानै केवल व्रतादिक [redacted] विषै ही प्रवर्तै।। केई जीव ऐसे हैं पूर्वोक्त प्रकार
[redacted] सम्यक् दर्शन ज्ञानका अयथार्थ साधन करि [redacted] रि व्रता
दिविषै प्रवर्त्तै है।। सो यद्यपि व्रतादिक यथार्थ आचरै तथापि यथार्थ श्रद्धान ज्ञान विना सर्व आच
रन मिथ्याचारित्र ही है।। सोई समयसारका कलशाविषै कह्या है।। क्लिश्यंतां स्वयमेव दुष्करतरैर्मो
क्षोन्मुखैः कर्मभिः। क्लिश्यंतां च परे महाव्रततपोभारेण भग्नाश्चिरं।। साक्षान्मोक्ष इदं निरामयपदं
संवेद्यमानं स्वयं। ज्ञानं ज्ञानगुणं विना कथमपि प्राप्तुं क्षमंते नहि।।१।। याका अर्थ।। मोक्षतैं पराङ्मुख

भू मो है ताकौं जानैं नीं

५७

ऐसे अति दुष्कर पंचाग्नितपनादि कार्य तिनिकरि आप ही क्लेश करै है तौ करौ ।। बहुरि अन्यकेई जीव
महाव्रत अर तपका भार करि चिरकाल पर्यंत [redacted] क्षीण होते क्लेश करै हैं तौ करौ परंतु यहु
साक्षात् मोक्षस्वरूप सर्व रोगरहित पद जो [redacted] आपैं आप अनुभव मैं आवै ऐसा ज्ञानस्वभाव सो तौ
[redacted] ज्ञानगुण बिना अन्य कोई भी प्रकार करि पावनेंकौं समर्थ नाहीं है ।। बहुरि पंचास्तिकाय विषै
जहां अंत विषै व्यवहाराभासवाले का कथन कीया है तहां तेरह प्रकार चारित्र होतें भी [redacted]
[redacted] ताका मोक्षमार्ग विषै निषेध कीया है ।। बहुरि प्रवचनसार विषै आत्मज्ञान [redacted] शून्य संयम
भाव अकार्यकारी कह्या है ।। [redacted] बहुरि इनिही ग्रंथनि विषै वा अन्य [redacted] परमात्मप्रकाशादि शास्त्रनि
विषै [redacted] इस प्रयोजन लीए [redacted] जहां तहां निरूपण है ।। तातैं पहलैं तत्वज्ञान भए ही आचरन कार्य
कारी है ।। इहां कोऊ जानैंगा बाह्य तौ अणुव्रत महाव्रतादि साधै है अंतरंग परिणाम नाहीं वा स्वर्गा
दिककी वांछा करि साधै है सो ऐसैं [redacted] साधैं तौ पापबंध होइ ।। द्रव्यलिंगी मुनि [redacted] उपरिम
ग्रैवेयक पर्यंत जाय है [redacted] परावर्तनि विषै इकतीस सागर देवायु की प्राप्ति ऊपर्यंत
[redacted] अनंतबार [redacted] होनी लिखी है सो [redacted] ऐसे ऊंचे पद तौ तब ही पावै जब अंतरंग
परिणामपूर्वक [redacted] महाव्रत पालै महामंदकषायी होइ [redacted] इसलोक परलोक का भोगादिक की
चाहि न होइ केवल धर्मबुद्धितैं मोक्षाभिलाषी [redacted] भी हुवा साधन साधै ताते द्रव्यलिंगी कै [redacted] १५
स्थूल तौ अन्यथापनौ है नाहीं सूक्ष्म अन्यथापनौ है सो [redacted] सम्यग्दृष्टीकौं भासै है ।
अब इनिकै धर्मसाधन कैसैं है अर तामैं अन्यथापनौ कैसैं है सो कहिए है ।। प्रथम तौ संसार विषै

नरकादिककादुषजांनिवास्वर्गविषैभीजन्ममरणादिककादुषजांनि संसारतैंउदासहोइमोक्षकोंचाहै हैसोइनिदुषविकोंतौदुषसबहीजांनेहै॥इंद्रअहमिंद्रादिक [redacted] विषय [redacted] यानुराग [redacted] तैंइंद्रियजनितसुषभोगवैहै ताकोंभीदुषजांनि [redacted] निराकुलसुषअवस्थाकोंपहचांनिमोक्षचाहै हैसोई [redacted] सम्यग्दृष्टीजांननो॥बहुरिविषयसुषादिककाफलनरकादिकहै॥ [redacted] शरीरअशुचिविनासीकहै॥कुटंबादिकस्वार्थकेसगेहैं इत्यादिपरद्रव्यनिकादोषविचारितिनिकानौत्यागकरैहै व्रतादिक [redacted] काफलस्वर्गमोक्षहै॥ [redacted] तपश्चरणादि [redacted] त्रोषनेंयोग्यहै॥ [redacted] देवगुरुशास्त्रादिहितकारीहै॥इत्यादिप्रकारकरिकोईपरद्रव्यकोंबुराजांनिअनिष्टश्रद्दहैहै कोईपरद्रव्यकोंभलाजांनिइष्टश्रद्दहैहै॥सोपरद्रव्यविषैइष्टअनिष्टरूपश्रद्धानसोमिथ्याहै॥ [redacted] नइ रिंइसहीश्रद्धानतैंयाकेउदासीनताभी [redacted] द्वेषबुद्धिरूपहोहै॥जातैंकाहूकोंबुराजाननीताहीका नामद्वेषहै॥ [redacted] कोऊकहैगा सम्यग्दृष्टीभीतौबुराजांनि [redacted] परद्रव्यकोंत्यागैहै॥ताकासमाधान॥सम्यग्दृष्टी०परद्रव्यनिकोंबुरा नजांनैहै॥अपनेरागभावकोंबुराजांनैहै॥आपरागभाव [redacted] कोईपरद्रव्यतौबुरा [redacted] नलाहैनीही॥कोऊकहैगानिमित्तमात्रतौहै॥ताका उत्तर॥ [redacted] परद्रव्यजोरावरीतौ [redacted] कोंबिगारतानाही॥ [redacted] अपने [redacted] भावबीगरैतबवहभीबाह्यनिमित्तहै॥ [redacted] वाकानिमित्तबिनाभी भाव बीगरैहैतातैंपरद्रव्यकौंद्वादेषनो [redacted] मिथ्याभावहै॥ [redacted] भावहीबुरे [redacted] हैं [redacted] सोयाकै

१ नियमरूपनिमित्तभीनाही [redacted] कैसें १ ...रागादिक २ बहुरि २

Margin notes (left): [redacted] १ पोषनेंयोग्यनीहै १ — १ इत्यादिपरद्रव्यनिकागुणविचारितिनिकाअंगीकारकरैहै १

Margin notes (right): [redacted] १ पवित्रअविनाशीफलकेदाताहैंतिनिकरिशरीर १ — १ कोंजरैतातैं [redacted] ताकाकारणकाभीत्यागहौंह वस्तुबिचाई १

२ दोषवा गुणन नासैन तैं काहू कों १

ऐसी [redacted] (समझि) नौ ही पर (यह) द्रव्यनि [redacted] का दोष देषिति निविषै द्वेषरूप उदासीनता करै है।। सौ चौ उदासीनता ताका
नाम है।। काई ही द्रव्य कौं बुरा भला न जानैं।। आपकों आप जानै पर कों पर जानै।। पर [redacted] तैं किछू भी प्रयो
जन मेरा नाही।। ऐसा मानि [redacted] ता ही न तर है।। सो ऐसी उदासीनता ज्ञानी ही कै हो
इ।। [redacted] बहुरि यहु उदासीन होइ [redacted] शास्त्र विषै व्यवहार चारित्र अ
[redacted] १ हिंसादि २
णुव्रत महाव्रत रूप कह्या है ताकों अंगीकार करै है।। एक देशवा सर्व्व देश पाप कौं छोड़ै है।। तिनकी जायगा
पुण्यरूप कार्यनि विषै प्रवर्त्तै है।। बहुरि जैसे प [redacted] र्यायाश्रित पाप कार्यनि [redacted] विषै कर्त्तापनौ अपनो
१ अहिंसादि २ मानै था तैसे ही अब पर्यायाश्रित पुण्य कार्यनि विषै कर्त्तापनो अपनो माननै लागा।। [redacted]
ऐसैं पर्यायाश्रित कार्यनि विषै अहंबुद्धि माननै की समानता भई।। [redacted] जैसैं मैं जीव मारौं हो [redacted]
[redacted] मैं परिग्रहधारी हौं इत्यादिरूप मानि थी तैसैं ही मैं जीवनि की रक्षा करौं हौं मैं [redacted]
नग्न परिग्रहरहित हौं ऐसी मानि भई।। सो पर्यायाश्रित कार्य विषै अहंबुद्धि सोई मिथ्यादृष्टि है
[redacted] सोई समयसार [redacted] विषै
[redacted] ॥ सामान्यजनवत्तेषां न मोक्षोपि मुमुक्षुता ॥१॥
कह्या है।। ये तु कर्त्तारमात्मानं पश्यंति तमसा तताः।।
या का अर्थ।। जे जीव मिथ्या अंधकार करि व्याप्त होत संते आपकों [redacted] पर्यायाश्रित क्रिया का कर्त्ता 158
मानै हैं।। [redacted] ते जीव मोक्षाभिलाषी हैं तो ऊ तिनिकौं जैसैं अन्यमती सा[redacted]मान्य मनुष्यनि कै मोक्ष न होइ तैसैं
मोक्ष न होइ है।। जातैं कर्त्तापना का श्रद्धान की समानता है।। बहुरि ऐसैं आप कर्त्ता होइ [redacted] श्रावक धर्म्म
वा मुनिधर्म्म की क्रिया विषै मन वचन काय की प्रवृत्ति निरंतर राखै है।। जैसैं उन क्रियानि विषै भंग न होइ

३ तंदुल:

तैसें प्रशस्त है सो [redacted] ऐसे भाव तौ सराग है। चारित्र है सो वीतराग भावरूप है। तातैं ऐसे साधनकौं मोक्षमार्ग माननी मिथ्याबुद्धि है। इहां प्रश्न जो [redacted] सराग वीतराग भेद करि दोय प्रकार चारित्र कह्या है सो कैसें है। ताका उत्तर। जैसें [redacted] दोय प्रकार है। एक तुषसहित है एक तुषरहित है तहां ऐसा जाननी तुष है सो [redacted] का स्वरूप नाही [redacted] विषै दोष है। अर कोई [redacted] स्याना तुषसहित [redacted] का संग्रह करै था ताकौं देखि [redacted] कोई भोला तुषनिहीकौं तंदुल मानि संग्रह करै तौ वृथा खेदखिन्न ही होइ। तैसें चारित्र दोय प्रकार है। एक सराग है। एक वीतराग है तहां ऐसा जाननी। राग है सो चारित्रका स्वरूप नाही चारित्रविषै दोष है। अर कोई ज्ञानी प्रशस्त रागसहित चारित्र धरै [redacted] हैं तिनकौं देखि कोई अज्ञानी प्रशस्त राग हीकौं चारित्र मानि संग्रह करै तौ वृथा खेदखिन्न ही होइ। [redacted] इहां कोऊ कहै पापक्रिया करतैं तीव्र रागादिक होते थे अब इनि क्रियानिकौं करतें मंद राग भया [redacted] तातैं जेता अंश राग भाव घट्या तितनी अंश तौ चारित्र कहौ जेता अंश राग रह्या तेता अंश राग कहौ ऐसें याकै सराग चारित्र संभवै है। ताका समाधान। [redacted] जो तत्त्वज्ञानपूर्वक ऐसे होइ तौ तौ कहो हो तैसें ही है। [redacted] तत्त्वज्ञान बिना उत्कृष्ट आचरन होतें भी असंयम ही नाम पावै है। जातैं [redacted] राग भाव करनेका अभिप्राय नाही मिटै है। सोई दिखाइए है। द्रव्यलिंगी मुनि राज्यादिककौं छोडि निर्ग्रंथ हो है। अठाईस मूलगुणनिकौं पालै है। उग्रोग्र [redacted] अनशनादि घना तप करै है। क्षुधादिक बाईस परीषह सहै है [redacted]

[redacted]

२१ करनेंका ही श्रद्धान रह्या॥ अप्रशस्त परद्रव्यनिसौं द्वेष करि प्रशस्त परद्रव्यनिविषै राग करनेंका अभिप्राय भया॥ [redacted] किछू परद्रव्यनिविषै साम्यभावरूप [redacted] अभिप्राय न भया [redacted]॥ इहां प्रश्न जो

शरीरकौं खंड खंड करैं तौ भी क्रोध न करै है॥ व्रतभंगके कारन अनेक मिलैं तौ भी दृढ रहै है॥ कोई सेती क्रोध न करै है॥ ऐसा साधनका मान न करै है॥ ऐसे साधनविषै कोई कपटाई नाहीं है॥ इस [redacted] साधनकरि इसलोक परलोकके विषयसुखकौं न चाहै है॥ ऐसी याकी दशा भई है॥ जो ऐसी दशा न होइ तौ ग्रैवेयकपर्यंत कैसें पहुंचै॥ परन्तु [redacted] याकौं मिथ्यादृष्टि असंयमी ही शास्त्रविषै कह्या सो [redacted] ताका कारण यहु है॥ या [redacted] तत्त्वनिका [redacted] श्रद्धान ज्ञान सांचा न भया नाहीं॥ पूर्वे वर्णन किया तैसें [redacted] तत्त्वनिका [redacted] श्रद्धान ज्ञान भया है॥ तिस ही अभिप्रायतें सर्व साधन करै है सो इनि साधननिका अभिप्रायकी परंपराकौं विचारें कषायनिका अभिप्राय आवै है॥ कैसें सो सुनहु॥ [redacted] ॥ यहु पापका कारण [redacted] रागादिककौं तौ हेय जांनि छोरै है॥ परन्तु पुण्यका कारण प्रशस्तरागकौं [redacted] उपादेय मानै है ताके वधनेंका उपाय करै है॥ सो प्रशस्तराग भी तौ कषाय है कषायकौं उपादेय मान्या तब कषाय [redacted] सम्यग्दृष्टि भी तौ [redacted] प्रशस्तरागका उपाय राखै है॥ ताका उत्तर यहु [redacted] जैसैं काहूकै बहुत डंड होता था सो [redacted] वह थोरा डंड देनेंका उपाय राखै है॥ जो थोरा डंड दीएं [redacted] हर्ष भी मानै है॥ परन्तु श्रद्धानविषै डंड देनौं अनिष्ट ही मानै है॥ तैसैं सम्यग्दृष्टीकै पापरूप बहुत कषाय होता था सो यहु पुण्यरूप थोरा कषाय करनैंका उपाय राखै है॥ जो थोरा कषाय भएं हर्ष भी मानै है॥ परन्तु श्रद्धानविषै कषायकौं हेय ही मानै है॥ बहुरि जैसैं कोऊ कमाईकौं [redacted] व्यापारादिककौं [redacted] उपाय राखै है [redacted] उपाय बनि १५९

१ कारण जानि

[redacted]

159/

२मिथ्यादृष्टी२

आएँ हर्ष मानै है।। तैसें द्रव्यलिंगी मोक्ष [redacted] का कारन जो निरग्रन्थ सराग कौं [redacted] उपाय रा

षै है।। उपाय बनि आएँ हर्ष मानै है।। ऐसें सग्रन्थ सराग का उपाय दि षैवा हर्ष विषैं समानता होतें

३सम्यग्दृष्टी कै — जी [redacted] के तौ उ उसमान [redacted] के व्यापार समान श्रद्धान पाईए है।। तातैं अनिसा याविषै विशेष जया।।

बहुरि याकै परीषह तपश्चरणादिक के निमित्त तैं दुष होइ ताका इलाज तौ न करै है।। परन्तु दुष वेदै

है सो दुष कौं वेदनौं कषाय ही है [redacted] जहाँ वीतरागता हो है तहाँ तौ जैसें अन्य ज्ञेय कों जानै है तैसें ही

दुष का कारण ज्ञेय कों जानै है।। [redacted] सो ऐसी दशा याकी न हो है।। बहुरि [redacted] उन [redacted] कों — १परीषहादिक करि

सहै है [redacted]।। जो परवस पनैं नरकादि गति विषै बहुत दुष सहे। यह दुष [redacted]

२सोजीकषायका अनिप्रायरूप विचार [redacted] तें सहै है सो [redacted] — [redacted] तौ थोरा है याकों स्ववस्य सहैं स्वर्ग मोक्ष सुष की प्राप्ति हो है।। [redacted] जो इनिकों न स [redacted] हिए अर

[redacted] विचार ऐसा हो है — विषय सुष सेईए तौ नरकादिक की प्राप्ति होसी तहाँ बहुत दुष होगा [redacted]

[redacted]

कोऊ कहै शमोह का लोभ तौ कषाय नांही।। [redacted]

[redacted] इत्यादि विचार विषै

[redacted]

परीषहनि विषै अनिष्ट बुद्धि रहै है। केवल नरकादिक के भय तैं वा सुष के लोभ तैं तिनिकों सहै है।। सो एस

[illegible] कषाय मंद होहै।। बहुरि ऐसा विचार होहै।। [illegible] कर्म बांधे थे ते तो भोगें बिना छूटते नांही तातैं मोकों सहनें आए।। बहुरि [illegible] जे परीषहादिकरूप अवस्था होहै ताकों आपकै भई मानैहै [illegible] द्रव्यदृष्टितैं [illegible] अपनी वा शरीरादिककी अवस्थाकों भिन्न न पहिचानैहै ऐसे ही नानाप्रकार व्यवहारविचारतैं परीषहादिक सहैहै।। [illegible] बहुरि [illegible] राज्यादि विषयसामग्रीका त्याग कीया है वा इष्ट भोजनादिकका [illegible] त्याग करैहै।। सो जैसैं [illegible]

[illegible]

कोऊ दाहज्वरवाला वायु होनेके भयतैं शीतल [illegible] वस्तुसेवनका त्याग करैहै।। परंतु [illegible] यावत् शीतलवस्तुका सेवन [illegible] तावत् वाकै दाहका अभाव न कहिए।। तैसैं [illegible] सहित जीव नरकादिकके भयतैं विषयसेवनका त्याग करैहै।। परंतु यावत् विषयसेवन रुचै [illegible] तावत् रागका अभाव न कहिए।। [illegible] ।। बहुरि जैसैं [illegible] अमृतका आस्वादी देवकौं अन्य भोजन स्वयमेव न रुचै।। तैसैं [illegible] स्वरसका आस्वाद करि विषयसेवनकी अरुचि याकै न होहै।। या प्रकार फलादिककी अपेक्षा परीषहसहनादिकौं [illegible] जानैहै अर विषयसेवनादिकौं [illegible] जानैहै।। [illegible]

[illegible]

सो ऐसे विचारतैं कर्मफलचेतनारूप प्रवर्त्तैहै

१ काम्य भाव

१६०

१६०

देशसंयत [redacted] नीचली

५ सिद्धांत विषैं असंयत सम्यग्दृष्टी तैं नीयाकौं हीन कैसें कह्या है ॥ जातैं [redacted] कै चौथा गुणस्थान है ॥ याकै पहलाही गुणस्थान है ॥ [redacted]

[redacted] बहुरि तत्काल विषै परीषह सहनादिकतैं दुःख होनां मानै है ॥ विषय सेवनादिकतैं सुख मानै है ॥ बहुरि नि[redacted]तैं सुख दुःख होनां मानि एतिनि विषै इष्ट अनिष्ट बुद्धितैं रागद्वेष [redacted] रूप अभिप्राय [redacted] का अभाव होइ नाहीं ॥ बहुरि जहां रागद्वेष है तहां चारित्र होइ नाहीं ॥ तातैं यहु द्रव्यलिंगी विषय सेवन छोरि तपश्चरणादिक करै है तथापि असंयमी ही है ॥ इहां कोऊ कहै कि [redacted] असंयत सम्यग्दृष्टी [redacted] कै [redacted] कषाय की प्रवृत्ति विशेष है [redacted] कै थोरी है याहीतैं असंयत सम्यग्दृष्टी तौ [redacted] सोलवां स्वर्ग पर्यंत ही जाइ और [redacted] द्रव्यलिंगी उपरिम ग्रैवेयक पर्यंत जाइ ॥ तातैं भावलिंगी मुनितैं तौ द्रव्यलिंगी कौं हीन [redacted] कहौ [redacted] असंय[redacted]त[redacted] सम्यग्दृष्टीतैं याकौं हीन कैसें कहिए है ॥ ताका समाधान ॥ [redacted] असंयत सम्यग्दृष्टी कै कषायनि की प्रवृत्ति तौ है परंतु श्रद्धान विषै किसी ही कषाय के करनें का अभिप्राय नाहीं ॥ बहुरि द्रव्यलिंगी कै शुभ कषाय करनें का अभिप्राय पाईए है ॥ श्रद्धान विषै तिनिकौं भले जानै है ॥ तातैं [redacted] अपेक्षा असंयत सम्यग्दृष्टीतैं नीयाकै [redacted] अधिक कषाय है ॥ [redacted] बहु[redacted]के योगनि द्रव्यलिंगी [redacted] की प्रवृत्ति शुभ रूप घनी हो है और [redacted] अघाति कर्मनि विषै पुण्य पाप [redacted] बंध का विशेष शुभ अशुभ योगनि [redacted] के अनुसारि है तातैं उपरिम ग्रैवेयक पर्यंत पहुंचै है ॥ सो किछू कार्यकारी नाहीं जातैं अघातिया कर्म आत्मगुण के घातक नाहीं ॥ इनि के उदयतैं [redacted] ऊंचै नीचै पद पाए तौ [redacted] कहा भया ॥ [redacted] ए तौ बाह्य संयोग मात्र संसार दशा के स्वांग है ॥ आप तौ आत्मा है तातैं आत्मगुण के घातक घातिया कर्म है तिनि का [redacted] नीकार्यकारी है

देशसंयत

असंयत द्रव्यलिंगी मुनि

श्रद्धान

16

द्रव्यलिंगी कैं सर्व घातिकर्मनि का बंध बहुत स्थिति अनुभाग लीएं होइ असंयत देशसंयत सम्यग्दृष्टी कै...

सो घातिया कर्मनि का बंध बाह्य प्रवृत्ति कै अनुसारि नाहीं॥ अंतरंग कषाय शक्ति कै अनुसारि है॥ याहीतैं द्रव्यलिंगी तैं [redacted] असंयत देशसंयत सम्यग्दृष्टी कै घातिकर्मनि का बंध थोरा है॥ [redacted] मिथ्यात्व अनंतानुबंधी आदि कर्मनि का तो बंध [redacted] है ही नाहीं॥ [redacted] अवशेषनि का बंध होइ है सो [redacted] स्तोक स्थिति अनुभाग लीएं होइ है॥ याहीतैं बहु मोक्षमार्गी न या है॥ तातैं [redacted] द्रव्यलिंगी मुनि [redacted] असंयत देशसंयत सम्यग्दृष्टी तैं [redacted] हीन शास्त्र विषै कह्या है॥ सो समयसार [redacted] गाथा वा टीका शास्त्र विषै [redacted] द्रव्यलिंगी मुनि का हीनपना [redacted] कलशानि विषै [redacted]॥ बहुरि पंचास्तिकाय [redacted] की टीका विषै जहां केवल व्यवहारावलंबी का कथन कीया है तहां [redacted] व्यवहार पंचाचार [redacted] होतें भी ताकी [redacted] हीनपनो ही प्रगट कीया है॥ बहुरि प्रवचनसार विषै संसारतत्त्व द्रव्यलिंगी कौं कह्या॥ बहुरि परमात्मप्रकाशादि अन्य शास्त्रनि विषै भी इस व्याख्यान कौं स्पष्ट कीया है॥ बहुरि द्रव्यलिंगी के पाईए है व्रत तप शील संयमादि क्रिया तिनिकौं भी अकार्यकारी इनि शास्त्रनि विषै जहां तहां दिखाई है सो तहां देखि लेनी॥ इहां ग्रंथ बधनैं के भयतैं नाहीं लिखिए है॥ ऐसैं केवल व्यवहाराभास के अवलंबी मिथ्यादृष्टीनि का निरूपण कीया॥ अब निश्चय व्यवहार दोऊ नयनि का आभास कौं अवलंबै है ऐसे मिथ्यादृष्टीनि का निरूपण कीजिए है॥ जे जीव ऐसा मानै है जिनमत विषै निश्चय व्यवहार दोय नय कहे हैं॥ तातैं हमकौं तिनि दोऊनि का अंगीकार करना॥ ऐसैं विचारि जैसैं केवल निश्चयाभास के अवलंबीनि का कथन कीया था तैसैं तो निश्चय का अंगीकार करै है॥ अर जैसैं केवल व्यवहाराभास के अवलंबीनि का कथन कीया था तैसैं व्यवहार...

(left margin) प्रगट कीया है

(left margin) ऐसा मानै है

(right margin) पवकरि द्रव्यलिंगी कै कदाचित गुणश्रेणि निर्जरा न होइ सम्यग्दृष्टी कै कदाचित होहै॥ देशसंयत ...

16

161/A

रका अंगीकार करै है। अद्यपि [redacted] ऐसैं अंगीकार करनें विषै दोऊ नयनिकै परस्पर विरोध [redacted] है तथ[redacted]
थापि कै रह्या।। सांचा तौ [redacted] दोऊ नयनिका स्वरूप जास्या नाहीं। अर जिनमत विषै दोय नय कहे
तिनि विषै काहू कौं छोडी नी जाती नाहीं। तातैं भ्रम लीएं दोऊनिका साधन साधै है। ते भी जीव मि[redacted]
४ की प्रवृत्ति ष्टी जाननें।। अब इनिका विशेष दिखाइए है। अंतरंग विषै आपनौ निर्धार करि यथावत निश्चय व्यव
हार मोक्षमार्ग कौं पहचान्या नाहीं।। जिन आज्ञा मानि [redacted] मोक्षमार्ग दोय प्रकार [redacted] १ दोय निश्चय व्यवहार रूप
[redacted] मांनै है।। सो मोक्षमार्ग दोय [redacted] नाहीं।। मोक्षमार्ग का निरूपण दोय प्र
कार है।। जहां [redacted] सांचा मोक्षमार्ग कौं मोक्षमार्ग निरूपिए सो निश्चय मोक्षमार्ग है।। अर जहां
जो मोक्षमार्ग तौ है नाहीं परंतु मोक्षमार्ग कौ निमित्त है वा सहचारी है [redacted] ताकौं उपचा
र करि मोक्षमार्ग कहिए सो व्यवहार मोक्षमार्ग है।। जातैं [redacted] निश्चय व्यवहार का सर्वत्र ऐसा ही
लक्षण है सांचा निरूपण सो निश्चय उपचार निरूपण सो व्यवहार।। तातैं निरूपण अपेक्षा दोय प्रका
र मोक्षमार्ग जाननां।। एक निश्चय मोक्षमार्ग है।। एक व्यवहार मोक्षमार्ग है।। ऐसैं दोय मोक्षमार्ग
माननां मिथ्या है।। बहुरि निश्चय व्यवहार दोऊनि कौं उपादेय मांनै है सो भी भ्रम है।। जातैं निश्चय व्यव
हार का स्वरूप तौ परस्पर विरोध लीएं है।। समय [redacted] जातैं समयसार विषै ऐसा कह्या है।। ववहारो भूदत्थो। भू[redacted]दत्थो देसिदो दु सुद्धणओ।। याका
अर्थः।। व्यवहार अभूतार्थ है। [redacted] सत्य स्वरूप कौं न निरूपै है। उपचार करि अन्यथा निरूपै है।। बहु
रि शुद्धनय जो निश्चय है सो भूतार्थ है। जैसा वस्तु का स्वरूप है तैसा निरूपै है।। [redacted]

१ किंसी अपेक्षा

[redacted]

[redacted] ऐसें इन दोऊनि का स्वरूप तो विरुद्ध लीए [redacted] है।। [redacted]
[redacted] बहुरि तू ऐसें मानै है जो [redacted] सिद्ध समान शुद्ध आत्मा
का अनुभवन सो निश्चय अर [redacted] व्रत शील संयमादिरूप प्रवृत्ति सो व्यवहार सो ऐसा तेरा मानना
ठीक नाही।। जातैं कोई द्रव्य भाव का नाम निश्चय कोई का नाम व्यवहार ऐसें है नाही।। एक ही द्रव्य के भा-
व कौं तिस स्वरूप ही निरूपण करना सो निश्चय नय है।। उपचार करि अन्य द्रव्य के भाव स्वरूप नि- *तिस द्रव्य के भाव कौं
रूपण करना सो व्यवहार है।। [redacted] जैसें माटी के घडे कौं माटी का घडा निरूपिए सो निश्चय।। अर घृत
संयोग का उपचार करि वाकौं ही [redacted] घृत का घट कहिए सो व्यवहार।। [redacted] ऐसैं ही अन्यत्र जानना।।
तातैं तू [redacted] किसी कौं निश्चय मानै किसी कौं व्यवहार मानै सो भ्रम है।। बहुरि तेरे माननें विषै
निश्चय व्यवहार कै परस्पर [redacted] विरोध आया।। जो तू आप कौं सिद्ध समान शुद्ध मानै है तो [redacted] व्रता-
दिक काहे कौं करै है जो व्रतादिक का साधन करि सिद्ध भया चाहै है तो [redacted] वर्तमान विषै शुद्ध आत्मा का अ- १६२
नुभवन मिथ्या भया।। [redacted] ऐसैं दोऊ नयनि [redacted] के परस्पर विरोध है तातैं दोऊ नयनि कौं उपादेय- *का अनुभव
पना बनै नाही।। इहाँ प्रश्न जो समयसारादि विषै शुद्ध आत्मा कौं निश्चय कह्या है।। व्रत तप संयमा-
दिक कौं व्यवहार कह्या है।। तैसें ही हम मानै है।। ताका समाधान।। शुद्ध आत्मा का अनुभव साचा मोक्ष
मार्ग है तातैं वाकौं निश्चय कह्या।। इहाँ [redacted] स्वभावतैं अभिन्न परभावतैं भिन्न ऐसा शुद्ध शब्द का

[redacted]

162/A

अर्थ जाननौ।। संसारीकौं सिद्ध माननौ ऐसा अन्यरूप अर्थ शुद्ध शब्दका न जाननौ।। बहुरि व्रत तप आदि
मोक्षमार्ग है नाहीं।। निमित्तादिककी अपेक्षा उपचारतैं इनिकौं मोक्षमार्ग कहिए है तातैं इनिकौं व्य
वहार कह्या।। [redacted]
[redacted] ऐसैं भूतार्थ अभूतार्थ मोक्षमा
र्ग [redacted] पनौं करि इनिकौं निश्चय [redacted] व्यवहार कहे हैं।। [redacted] सो ऐसैं ही माननौ।। बहुरि ए
दोऊ सांचे मोक्षमार्ग है।। इनि दोऊनिकौं उपादेय माननौ सो तौ मिथ्याबुद्धि ही है।। [redacted] तहीं वह
कहै है।। [redacted] श्रद्धान तौ निश्चयका राखै है।। अर प्रवृत्ति व्यवहाररूप राखै है।। ऐसैं हम दोऊनिकौं अं
गीकार करै हैं।। [redacted] सो ऐसैं जीवनैं
[redacted] अर व्यवहारका व्यवहाररूप श्रद्धान करनौ युक्त है।। एक ही नयका श्र
द्धान भए एकांत मिथ्यात्व होइ है।। बहुरि प्रवृत्ति विषै नयका प्रयोजन ही नाहीं।। प्रवृत्ति तौ द्रव्यकी परणति
है।। [redacted] तहीं जिस द्रव्यकी परणति होइ ताकौं तिसही की प्ररूपिए सो निश्चयनय अर [redacted] तिसहीकौं
[redacted] अन्य द्रव्यकी प्ररूपिए सो व्यवहारनय ऐसैं [redacted] अभिप्राय अनुसारि प्ररूपण [redacted] तैं तिस प्रवृत्ति
विषै दोऊ नय बनै है।। किछू प्रवृत्ति ही तौ नयरूप है नाहीं।। तातैं या प्रकार भी दोऊ नयका ग्रहण
माननौ मिथ्या है।। तौ कहा करिए सो कहिए है।। निश्चयनय करि जो निरूपण कीया होइ ताकौं
सत्यार्थ मानि ताका [redacted] श्रद्धान करनौ।। अर व्यवहारनय करि जो निरूपण कीया होइ ताकौं असत्यार्थ मानि ताका

श्रद्धान श्री टीकार ४

163 त्यार्थमानिता का श्रद्धान [redacted] छोडनी।।
सोई समयसार विषै कह्या है। सर्वत्राध्यवसानमेवमखिलं त्याज्यं यदुक्तं जिनै स्तन्मन्ये व्यवहार एव
निखिलोऽप्यन्याश्रयस्त्याजितः।। सम्यग्निश्चयमेकमेव परमं निष्कंपमाक्रम्य किं शुद्ध ज्ञानघने म
हिम्नि न निजे बध्नंति संतो धृतिं।।१।। याका अर्थः। जातैं सर्व ही हिंसादि वा अहिंसादि विषैं अध्यव
साय है सो समस्त ही छोडनी ऐसा जिनदेवनि करि कह्या है।। तातैं ऐसें मानौं हौं जो [redacted] पराश्रित
व्यवहार है सो सर्व ही छुडाया है।। संत पुरुष एक परम निश्चय ही कौं भलै प्रकारि निष्कंपपनैं अंगीकार क
रि शुद्ध ज्ञानघन रूप निज महिमा विषै स्थिति क्यौं न करै है।। भावार्थ यहु व्यवहार का तौ त्याग करा
या तातैं निश्चय कौं अंगीकार करि निज महिमा रूप प्रवर्त्तनौ युक्त है।। बहुरि [redacted]
[redacted] षट्पाहुड विषै कह्या है।। जो सुत्तो ववहारे। सो जोई जागद
सकज्जम्मि।। जो जागदि ववहारे। सो सुत्तो अप्पणे कज्जे।।१।। याका अर्थः।। जो व्यवहार विषै सूता है।।
सो जोगी अपने कार्य विषै जागै है।। बहुरि जो व्यवहार विषै जागै है सो अपने कार्य विषै सूता है। [redacted] 163
[redacted] तातैं व्यवहारनय का श्रद्धान छोडि निश्चयनय का श्रद्धान करनौ योग्य है।। व्यवहारनय
[redacted] स्वद्रव्य परद्रव्य कौं वा तिनिकै भावनि कौं वा कारण कार्यादि
क कौं काहू कौं काहू विषै मिलाय निरूपण करै है सो ऐसे ही श्रद्धानतैं मिथ्यात्व है तातैं याका त्याग क

163 A

रनौ॥ बहुरि निश्चयनय तिनि ही कौं यथावत निरूपै है काहू कौं काहू विषै न मिलावै है॥ सो ऐसे ही श्रद्धा
नतैं सम्यक्त होहै तातैं याका श्रद्धान करनौ॥ इहाँ प्रश्न जो ऐसे है तौ जिन मार्ग विषै दोऊ नयनि का ग्रहण
करनौ कह्या है सो कैसें है॥ ताका समाधान॥ जिनमार्ग विषै कहीं तौ निश्चयनय की मुख्यता लीए व्याख्या
न है ताकौं तौ सत्यार्थ जाननौ बहुरि कहीं व्यवहारनय की मुख्यता लीए व्याख्यान है ताकौं [redacted] ऐसैं है नौ
ही निमित्तादि अपेक्षा उपचार कीया है ऐसा जाननौ॥ इस प्रकार जानने का नाम ही दोऊ नयनि का ग्रहण है॥
बहुरि दोऊ नयनि के व्याख्यान कौं समान सत्यार्थ जानि ऐसैं भी [redacted] है ऐसैं भी है ऐसा भ्रमरूप प्रवर्त्तनै
नैं [redacted] करि तौ दोऊ नयनि का ग्रहण करनौ कह्या है नाहीं॥ बहुरि प्रश्न जो व्यवहारनय असत्या
र्थ है तौ ताका उपदेश जिनमार्ग विषै काहे कौं दीया॥ एक निश्चयनय ही का निरूपण करनौ था॥ ताका समाधा
न॥ ऐसैं ही तर्क समयसार विषै कीया है तहाँ यह उत्तर दीया है॥ ॥ जह णवि सक्कमणिज्जो अणि
ज्जभासं विणा उ गाहेउं॥ तह ववहारेण विणा। परमत्थुवएसणमसक्कं॥ ॥ याका अर्थ॥ जैसैं [redacted] अनार्य
जो म्लेछ सो म्लेछ भाषा बिना अर्थ ग्रहण करावनें कौं समर्थ न हूजे॥ तैसैं व्यवहार बिना परमार्थ का उपदेश
[redacted] अशक्य है॥ [redacted] तातैं व्यवहार का उपदे
श है॥ बहुरि इस ही सूत्र की व्याख्या विषै ऐसा कह्या है॥ [redacted] व्यवहारनयो ना
नुसर्तव्यः॥ याका अर्थ यहु निश्चय के अंगीकार करावनें कौं व्यवहार करि उपदेश दीजिए है बहुरि व्यव
हारनय है सो अंगीकार करनें योग्य नाहीं॥ इहाँ प्रश्न व्यवहार विना निश्चय का उपदेश कैसैं न होइ बहुरि व्य
वहारनय कैसैं अंगीकार न करनौ सो कहौ॥ ताका समाधान॥ निश्चयनय करि तौ आत्मा परद्रव्यनि तैं भि
न्न स्वभावनि तैं अभिन्न स्वयंसिद्ध वस्तु है॥ ताकौं जे न पहिचानैं तिनिकौं ऐसैं ही कह्या करिए तौ तौ वैस
मझैं नाहीं॥ तब उनकौं शरीरादिक [redacted] परद्रव्य [redacted] निकी सापेक्ष करि [redacted]

ऐसैं ही है ऐसा न

[redacted]

[redacted]

१ व्यवहारनय करि

321)

164

१ प्रकार लीएं

नरनारक पृथ्वीकायादिरूप [redacted] जीवके विशेष कीए।। तब [redacted] मनुष्य जीव है ना
रकी जीव है इत्यादि [redacted] जीव [redacted] की पहचानि [redacted] भई।। अथवा अभेद वस्तु विषे भेद उपजाइ
ज्ञान दर्शनादि गुण पर्याय [redacted] रूप जीवके विशेष कीए तब जाननें वाला जीव है देखनें वाला जीव है।।
इत्यादि [redacted] प्रकार लीएं वाकै जीवकी पहचानि भई।। [redacted]
बहुरि निश्चय करि वीतराग भाव मोक्षमार्ग है।। ताकों जे न पहिचानैं तिनिकों ऐसें ही कह्या करि
एतौ वे समझै नाही।। तब उनकों तत्व श्रद्धान ज्ञान पूर्वक परद्रव्यका निमित्त मिटनें की सापेक्षा करि
५ व्यवहार नयकरि ५ व्रत शील संयमादिक रूप वीतराग भावके विशेष दिखाए तब वाके वीतराग भावकी पहचानि भई।
याही प्रकार अन्यत्र भी व्यवहार विना निश्चयका उपदेश [redacted] का न होनी जाननी।। बहुरि इहां व्यवहारक
रि [redacted] नरनारकादि पर्याय हीकों जीव कह्या।। सो पर्याय हीकों जीव न मांनि लेनी।। पर्याय तौ जीव पुद्गल
कासंयोगरूप है तहां निश्चय करि जीव द्रव्य जुदा है ताही कों जीव मांननी।। [redacted] जीव का संयोगतें शरी
रादिककों भी उपचार करि जीव कह्या सो कहनें मात्र ही है।। परमार्थतें [redacted] शरीरादिक जीव होते नाही।। [redacted]
[redacted] ऐसा ही श्रद्धान करनी।। बहुरि अभेद आत्मा विषे ज्ञान दर्शनादि भेद कीए सो तिनिकों भे
दरूप ही न मांनि लेनें भेद तौ समझावनें के अर्थि [redacted] कीए हैं।। निश्चय करि [redacted] आत्मा अभेद ही है १६४
तिस हीकों जीव वस्तु माननी।। संज्ञा संख्यादिक करि भेद कहे सो कहनें मात्र ही है।। परमार्थतें [redacted] जुदे जु
दे हैं नाही ऐसा ही श्रद्धान करनी।। बहुरि परद्रव्यका निमित्त मिटनें की अपेक्षा व्रत शील संयमादिक
कों मोक्षमार्ग कह्या सो इनि हीकों मोक्षमार्ग न मांनि लेनें।। जातें परद्रव्यका ग्रहण त्याग आत्माकै होइ तौ
आत्मा परद्रव्यका कर्त्ता हर्त्ता होइ सो कोई द्रव्य कोई द्रव्यकै आधीन है नाही।। तातैं आत्मा अपनें भाव रा[redacted]

164 A गादिक है तिनकौं छोडि वीतरागी होइ है सो [redacted] निश्चयकरि वीतराग भाव ही मोक्षमार्ग है।। [redacted]
[redacted] वीतराग भावनिकै अर व्रतादिकनिकै कदाचि
त् कार्यकारणपनौ है तातैं व्रतादिककौं मोक्षमार्ग कहै सो कहनेमात्र ही है। परमार्थतैं बाह्य क्रिया
मोक्षमार्ग नाहीं। ऐसा ही श्रद्धान करनौ।। ऐसैं ही अन्यत्र भी व्यवहारनयका अंगीकार न करनौ
जा[illegible]नौ।। इहाँ प्रश्न जो व्यवहारनय परकौं उपदेशविषै ही कार्यकारी है कि [redacted] आपनी भी प्रयो
जन[illegible]धै है।। ताका समाधान।। आपनी यावत् निश्चयनयकरि प्ररूपित [illegible] वस्तुकौं न पहिचानैं
तावत् व्यवहारमार्गकरि वस्तुका निश्चय करै तातैं नीचली दशाविषै आपकौं भी व्यवहारनय कार्य
कारी है।। परंतु व्यवहारकौं उपचारमात्र मांनि वाकै द्वारि वस्तुका ठीक करै तौ तौ कार्यकारी होइ बहु
8 रि जो निश्चयवत् व्यवहारकौं भी सत्यभूत कोई [redacted] वस्तु ऐसैं ही है ऐसा श्रद्धान करै तौ
उलटा अकार्यकारी होइ जाइ।। सोई पुरुषार्थसिद्ध्युपायविषै कह्या है।। अबुधस्य बोधनार्थं मुन
श्वरा देशयंत्यभूतार्थं। व्यवहारमेव केवलमवैति यस्तस्य देशना नास्ति।।१।। माणवक एव सिंहो यथा
भवत्यनव[illegible]तसिंहस्य।। व्यवहार एव हि तथा। निश्चयतां यात्यनिश्चयज्ञस्य।।१।। इनका अर्थ। मुनिराज अ
ज्ञानीकै समझावनेकौं अ[redacted]सत्यार्थ जो व्यवहारनय ताकौं उपदेशै है।। जो केवल व्यवहार ही कौं
जानै है ताकौं उपदेश ही देनौं भी योग्य है।। बहुरि जैसैं कोई साचा सिंहकौं न जानै ताकै [redacted] बिलाव ही सिं
ह है।। तैसैं जो निश्चयकौं न जानै ताकै व्यवहार ही निश्चयपणाकौं प्राप्त होहै।। इहाँ कोई निर्विचार पुर
ष ऐसैं कहै कि तुम व्यवहारकौं असत्यार्थ हेय कहौ हौ तौ हम व्रत शील संयमादि व्यवहारकार्य काहे
कौं करैं सबकौं छोडि देवैंगे।। ताकौं कहिए है।। कि छू व्रत शील संयमादिकका नाम व्यवहार नाहीं है।
इनिकौं मोक्षमार्ग माननौ व्यवहार है सो [redacted] छोडि दे।। इनिकौं तौ बाह्य सहकारी जानि [redacted]

बहुरि [redacted] ऐसा श्रद्धान करिजो

323

165

उपचारतैं मोक्षमार्ग कह्या है ॥ [redacted] ए दोऊ पर द्रव्याश्रित हैं ॥ बहुरि सांचा मोक्षमार्ग वीतरागभाव है सो स्व
द्रव्याश्रित है ॥ ऐसैं व्यवहार कौं असत्यार्थ हेय जानना ॥ व्रतादिक का छोडनें तैं तौ व्यवहार का हे
यपना होता है नाहीं ॥ बहुरि पूछै है व्रतादिक कौं छोडि कहा करैगा ॥ जो हिंसादिरूप प्रवर्त्तैगा तौ [redacted]
[redacted] तहीं तौ मोक्षमार्ग का उपचार भी संभवै नाहीं ॥ तहां प्रवर्त्तनें तैं कहा भला होगा नरकादिक पावै

५ ऐसैं कर नै तौ निर्वि चारपनौ है बहुरि ५

गा तातैं व्रतादिरूप [redacted] परणति मेटि केवल वीतराग उदासीन भावरूप होना बनैं तौ [redacted] भलै ही
है सो नीचली दशा विषै होइ सकै नाहीं ॥ तातैं व्रतादि साधन छोडि स्वछंद होना योग्य नाहीं ॥ या प्र
कार श्रद्धान विषै निश्चय कौं प्रवृत्ति विषै व्यवहार कौं उपादेय मानना सो भी [redacted] मिथ्याभाव ही है ।
बहुरि [redacted] यहु जीव [redacted] दोऊ नयनि का अंगीकार करनैं कै अर्थि कदाचित् आपकौं शुद्ध सिद्ध
समान रागादि रहित केवलज्ञानादि सहित आत्मा [redacted] अनुभवै है ध्यानमुद्रा धारि ऐसैं विचार
विषै लागै है ॥ सो ऐसा आप नाहीं परंतु [redacted] भ्रमतैं निश्चय करि मैं ऐसा ही हौं ऐसैं मानि संतुष्ट
हो है ॥ कदाचित् वचन द्वारि निरूपण ऐसैं ही [redacted] करै है ॥ सो निश्चय तौ यथावत् वस्तु कौं प्ररूपै ॥ प्र
त्यक्ष आप [redacted] जैसा नाहीं तैसा आपकौं मानैं निश्चय नाम कैसैं पावै ॥ जैसा केवल निश्चयाभास वा
ला जीव कै पूर्वैं अयथार्थपना कह्या था तैसैं ही याकै जानना ॥ [redacted] इस नय करि

५ अथवा यहु ऐसैं मानै है जो

आत्मा ऐसा है इस नय करि ऐसा है [redacted] सो आत्मा तौ जैसा है तैसा ही है तिस विषै नय
करि निरूपण करनें का जो अभिप्राय है ताकौं न पहिचानै है ॥ जैसैं [redacted]
[redacted] आत्मा नि
श्चय करि तौ सिद्ध समान केवलज्ञानादि सहित [redacted] रहित है ॥ व्यवहारनय करि संसारी मतिज्ञानादि स

१६५ २

१ द्रव्यकर्म [redacted] नोकर्म भावकर्म

हितबाद्रव्यकर्म्मनोकर्म्मभावकर्म्मसहितहैऐसामानैहै।।सोएकआत्माकेऐसेंहोयस्वरूपतौहोइ
नीही।।जिसभावहीकासहितपनौतिसभावहीकारहितपनौएकवस्तुविषैकैसैंसंभवैतातैंऐसामान
नौभ्रमहैतौकैसैंहैं।।जैसैंराजादिकमनुष्यपनेंकीअपेक्षासमानहैं।तैसैं[redacted]सिद्धसंसारीजीवत्वपनेंकी
अपेक्षासमानकहेहैं।।केवलज्ञानादि[redacted]अपेक्षासमानतामानिएसोहैनाही।।संसारीकैनिश्चयकरिमतिज्ञानादिकहीहै।।
सिद्ध[redacted]कैकेवलज्ञानहै।।[redacted]इतनौविशेषहैंमतिज्ञानादिक[redacted]कर्म्मकानिमित्त
तेंहैतातैं[redacted]स्वभावअपेक्षासंसारीकैकेवलज्ञानकीशक्तिकहिएतौदोषनाहीजैसैंरंकमनु
ष्यकैराजाहोनेंकीशक्तिपाईएतैसैंयहशक्तिजाननी।।बहुरिद्रव्यकर्म्मनोकर्म्मपुद्गलकरिनिपजेहैंतातैं
निश्चयकरि।संसारीकैभीइनिकाभिन्नपनौहै।।परंतुसिद्धवत्इनिकाकारण[redacted]अपेक्षासंबंध
भीनमांनैतौभ्रमहीहै।।बहुरिभावकर्म्मआत्माका[redacted]भावहैसोनिश्चयकरिआत्माहीकाहै।।कर्म्म
केनिमित्ततेंहोहैतातैंव्यवहारकरिकर्म्म[redacted]काकहिएहै।।[redacted]बहुरिसिद्धवत्[redacted]संसारीकैभीरागादि
कनमाननेंकर्म्महीकामाननें।।यहभ्रमहै।।याहीप्रकारकरि[redacted]नयकरि[redacted]एकहीवस्तुकोंएक[redacted]
भावअपेक्षावैसाभीमाननेंवैसाभीमाननेंसोतौमिथ्याबुद्धिहै।।बहुरिजुदेजुदेभावनिकीअपेक्षा[redacted]नयनिकीप्ररूपणाहैऐसेंमांनि[redacted]यथासंभववस्तुकोंमाननौसोसांचाश्र
द्धानहै।।तातैंमिथ्यादृष्टीअनेकांतरूपवस्तुकोंमानै।।परंतुयथार्थभावकोंपहचांनिमांनिस
केनाही।।ऐसाजाननां।।बहुरिइसजीवकैव्रतशीलसंयमादिककाअंगीकारपाईएहैसोव्यव
हारकरिएभीमोक्षकेकारणहैंऐसामांनितिनकोंउपादेयमांनैहै।सोजैसैंकेवलव्यवहारावलंबी
जीवकैपूर्वैंअयथार्थपनौकह्याथातैसेंहीयाकैभी[redacted]अयथार्थपनौजाननां।।बहुरि

॰संसारीकै

॰कार्य॰

166

इविषै ग्रहणत्यागरूप

बहुरि ऐसें भी मानै [redacted] है जो यथायोग्य व्रतादि क्रिया तौ करनी योग्य है।। परंतु इनिविषै ममत्व न करनी
सो जाका आप कर्त्ता होइ तिसविषै ममत्व कैसें न करिए।। आप कर्त्ता न है तौ मुझकौं करनी योग्य है ऐसा
भाव कैसें कीया।। अर जो कर्त्ता है तौ वह अपना कर्म भया।। तब कर्त्ता कर्म संबंध स्वयमेव ही भया।।
सो ऐसी मानि तौ भ्रम है तौ कैसें है।। बाह्य व्रतादिक है सो तौ शरीरादि परद्रव्य के आश्रय है परद्रव्य
का आप कर्त्ता है नाहीं तातैं तिसविषै कर्तृत्वबुद्धि भी न करनी अर तहाँ ममत्व भी न करनी।। बहुरि [redacted]
[redacted] व्रतादिक [redacted] अपना शुभोपयोग [redacted] होइ [redacted] सो अपनै आ
श्रय है [redacted] ताका आप कर्त्ता है।। तातैं तिसविषै कर्तृत्वबुद्धि भी माननी अर तहाँ ममत्व भी करनी।।
बहुरि [redacted] इस शुभोपयोग कौं बंध का ही कारन जाननी।। मोक्ष का का
रन न जाननी।। जातैं [redacted] बंध [redacted] अर मोक्ष कै तौ प्रतिपक्षीपनौ है।। तातैं एक ही भाव पुण्यबंध कौं भी का
रन होइ अर मोक्ष कौं भी कारन होइ ऐसा माननौं भ्रम है।। तातैं व्रत अव्रत दोऊ [redacted] विकल्परहित
जहाँ परद्रव्य के ग्रहण त्याग का किछू प्रयोजन नाहीं ऐसा उदासीन वीतराग [redacted] सोई मोक्षमा शुद्धोपयोग
र्ग है।। बहुरि [redacted] नीचली दशा विषै केई जीवनिकै शुभोपयोग अर शुद्धोपयोग का युक्तपनौ
व्रतादिक पाइए है तातैं उपचार करि शुभोपयोग कौं मोक्षमार्ग कह्या है।। वस्तु विचारतैं [redacted]
[redacted] शुभोपयोग मोक्ष का घातक ही है।। जातैं बंध कौ कारण सोई मोक्ष का घात १६६
क है।। ऐसा श्रद्धान करनी।। बहुरि [redacted] शुद्धोपयोग ही कौं उपादेय मानि ताका उपाय करनी।। शुभो
पयोग अशुभोपयोग कौं हेय जानि तिनके त्याग का उपाय करनी।। जहाँ शुद्धोपयोग न होइ सकै त
हाँ अशुभोपयोग कौं छोडि शुभ ही विषै प्रवर्त्तनी।। जातैं शुभोपयोगतैं अशुभोपयोग विषै अशुद्धता कौ

[redacted]

अधिकता है।। बहुरि शुद्धोपयोग होइ इतब तौ परद्रव्य [redacted] का साक्षीभूत ही रहै है।। [redacted]
[redacted] नहीं तौ किछू परद्रव्य का प्रयोजन ही नाहीं।। बहुरि शु
[redacted]
नोपयोग होइ इतही [redacted] वा सिव्रतादिक की प्रवृत्ति होइ [redacted] अर अशुभोपयोग हो
इतर्हि वाह्य अव्रतादिक की प्रवृत्ति होइ।। जातैं अशुद्धोपयोग कै अर परद्रव्य की प्रवृत्ति कै निमित्त नैमित्ति
कसंबंध पाइए है।। बहुरि पहलैं अशुभोपयोग छूटि शुभोपयोग होइ।। पीछैं शुभोपयोग छूटि शुद्धो
पयोग होइ ऐसी क्रम परिपाटी है [redacted] ।। बहुरि कोई
ऐसें मानै कि शुभोपयोग शुद्धोपयोग कौं कारण है सो जैसें अशुभोपयोग छूटि शुभोपयोग होइ है तैसें
शुभोपयोग छूटि शुद्धोपयोग होइ है।। ऐसें ही कार्य कारणपना होइ तौ शुभोपयोग का कारन अशुभो
पयोग ठहरै [redacted] अथवा द्रव्यलिंगी कै शुभोपयोग तौ उत्कृष्ट होइ है
शुद्धोपयोग होता ही नाहीं।। तातैं परमार्थतैं इनिकै कारणकार्यपनो है नाहीं।। जैसें रोगी कै बहुत रोग
था पीछैं स्तोक रोग भया तौ वह स्तोक रोग तौ नीरोग होनें का कारण है नाहीं।। इतनी है स्तोक रोग रहैं
नीरोग [redacted] होनें का उपाय करै तौ [redacted] होइ जाइ।। बहुरि जो स्तोक रोग ही कौं भला जानि ताका राखनें
का यत्न करै तौ नीरोग कैसें होइ।। तैसें कषायी कै तीव्रकषायरूप अशुभोपयोग था पीछैं मंदकषाय
रूप शुभोपयोग भया।। तौ वह शुभोपयोग तौ निःकषाय शुद्धोपयोग होने कौं कारण है नाहीं।। इतनी
है शुभोपयोग न रहैं शुद्धोपयोग का यत्न करै तौ होइ जाइ।। बहुरि जो शुभोपयोग ही कौं भला जानि ताका
साधन कीया करै तौ शुद्धोपयोग कैसें होइ तातैं [redacted] मिथ्यादृष्टी का शुभोपयोग तौ शुद्धोपयोग कौं

167

[redacted] कारण नाहीं।। सम्यग्दृष्टिकैं शुभोपयोग भए निकट शुद्धोपयोग प्राप्ति होइ ऐसा मुख्य
पनाकरि कहीं शुभोपयोगकौं शुद्धोपयोगका कारण भी कहिए है।। ऐसा जानना।। बहुरि यहु जीव
आपकौं [redacted] निश्चय व्यवहाररूप मोक्षमार्गका [redacted] साधक मानै है।। तहां पूर्वोक्त प्रकार [redacted] आ
त्माकौं [redacted] शुद्ध मान्या सो तौ [redacted] सम्यग्दर्शन भया।। तैसे ही जान्या सो
सम्यग्ज्ञान भया।। [redacted] तैसे ही विचार विषै प्रवर्त्या सो सम्यक्चारित्र भया ऐसैं तौ आ
पकै निश्चयरत्नत्रय भया मानै।। [redacted]
[redacted] सो मैं प्रत्यक्ष अशुद्ध शुद्ध कैसें मानों जानों विचारों हौं।।
[redacted] इत्यादि विवेकरहित भ्रमतैं संतुष्ट होहै। बहुरि [redacted] अरहंतादि बिना
अन्य देवादिककौं न मानैं है वा जैन शास्त्र अनुसारि जीवादिकके भेद सीखि लीए हैं।। तिनही
कौं मानै है सो तौ सम्यग्दर्शन भया [redacted]।। बहुरि जैनशास्त्रनिका अभ्यासविषै बहुत प्रवर्तै है
सो सम्यग्ज्ञान भया [redacted]।। बहुरि [redacted] व्रतादिरूप क्रियानिविषै प्रवर्त्तै है सो सम्यक्चारित्र
भया [redacted] ऐसैं आपकै व्यवहाररत्न [redacted] त्रय भया मानै सो व्यवहार तौ उपचारका नाम है सो उ
पचार भी तौ तब बनै जब सत्यभूत निश्चयरत्नत्रयका कारणादिक होइ।। [redacted]
[redacted] जैसैं निश्चयरत्नत्रय सधै तैसैं इनिकौं साधै
तौ व्यवहारपनौं भी संभवै सो याकै तौ सत्यभूत निश्चयरत्नत्रयकी पहचानि ही न भई नाहीं यहु ऐसैं कै
सैं साधि सकै आज्ञा अनुसारी हुवा देख्यां देखी साधन करै है तातैं याकै निश्चय व्यवहार मोक्षमार्ग
न भया।। आगैं निश्चय व्यवहार मोक्षमार्गका निरूपण करैंगे ताका साधन भए ही मोक्षमार्ग होगा।।

औरकौं न मानै है

(६७)

167 A

ऐसें यहु जीव निश्चयाभासकौं मांनि जांनैं है व्यवहारसाधनकौं नीचला जांनै है। तातैं स्वछंद
होइ अशुभरूप प्रवर्तै है। व्रतादिक शुभ कार्य ऐसा रूप प्रवर्तै है। तातैं ग्रैवेयकपर्यंत
पदकौं पावै है। बहुरि जो निश्चयाभासकी प्रबलता तैं अशुभरूप प्रवर्त्ति होइ जाइ तौ कुगति वि
षैं गमन होइ। परिणामनिकै अनुसारि फल पावै है। परन्तु संसारका ही भोक्ता रहै है। सो
वा मोक्षमार्ग पाऐ विना सिद्धपदकौं न पावै है। ऐसें निश्चयाभास व्यवहाराभास दोऊनिके
अवलंबी मिथ्यादृष्टी तिनिका निरूपण कीया। अब सम्यक्त्वकौं सन्मुख जे मिथ्यादृष्टी तिनि
कानिरूपण कीजिए है। ज्ञानावरणादिक कर्मनिका क्षयोपशमतैं तत्त्व विचार करनेकी शक्ति भई

ऽ कोई मंद कषायादिक का कारण पाय

अर मोह मंद भया तातैं तत्त्वविचार विषै [redacted]। बाह्य देवगुरुशास्त्रादिकका [redacted] नया
ति [redacted] सांचा उपदेश [redacted] का लाभ भया। तहां [redacted]
[redacted] मोक्षमार्ग [redacted] का वा देवगुरुधर्मादिकका वा जी

ऽ अपने प्रयोजनभूत

वादि तत्त्वनिका वा आपा परका वा आपकौं अहित [redacted] कारी [redacted] हितकारी भावनिका इत्यादि [redacted]
[redacted] उपदेशतैं सावधान [redacted] होइ ऐसा विचार कीया। अहो मुझकौं तौ इनि बातनिकी खबरि ही नाहीं।
मैं भ्रमतैं लि पाया पर्याय ही विषै तन्मय भया। सो [redacted] पर्याय [redacted] थोरे ही कालकी स्थिति है। बहु
रि इहां मोकौं सर्व निमित्त मिलै हैं [redacted] तातैं मोकौं इनि बातनिका ठीक करना। जातैं इनि विषै तौ मेरा
ही प्रयोजन [redacted] भासै है। ऐसैं विचारि जो उपदेश सुन्या ताका निर्द्धार करनेका उद्यम कीया। तहां [redacted]
उद्देश लक्षण निर्देश परीक्षा द्वार करि तिनिका निर्द्धार होइ तातैं पहलै तौ [redacted]
[redacted] तिनिकौ नाम सीखै। [redacted] बहुरि तिनिके [redacted] लक्षण जानैं। बहुरि ऐसैं भी संभवै

329

168

हैं किनी ही ऐसा विचार लीजिए परीक्षा करने लगे॥ तहाँ नाम सीखि लेनी अर लक्षण जानि लेने ए दोऊ
तौ उपदेशके अनुसारि हैं॥ [redacted] जैसें उपदेश दीया
तैसें याद करि लेने॥ बहुरि परीक्षा करने विषै आपनी विवेक चाहिए है॥ सो एकांत आपनें उपयो १विवेककरि
ग विषै विचारै जैसें उपदेश दीया तैसें ही है कि अन्यथा है॥ तहाँ अनुमानादिकरि ठीक करै वा उपदे
शतौ ऐसें है अर ऐसें न मानिए तौ ऐसें होइ सो इनि विषै प्रबल युक्ति कौन है अर निर्बल युक्ति कौं
न है जो प्रबल भासै ताकौं सांच जानै॥ बहुरि जो उपदेश [redacted] तैं अन्यथा सांच भासै वा संदेह रहै है नि
र्धार न होइ तौ बहुरि विशेषज्ञ होइ तिनिकौं पूछै॥ बहुरि वै उत्तर देतें ताकौं विचारै ऐसें ही यावत् निर्धा
र न होइ तावत् प्रश्न उत्तर करै॥ अथवा समानबुद्धिके धारक होइ तिनिकौं आपनी विचार जैसा भया
होइ तैसा कहै प्रश्न उत्तर करि परस्पर चर्चा करै॥ बहुरि जो प्रश्नोत्तर विषै निरूपण भया होइ ताकौ
एकांत विषै विचारै याही प्रकार [redacted] आपनें अंतरंग विषै [redacted] जैसें उपदेश दीया था तैसें ही
१निर्णयहो ६४ भाव भासै [redacted] तावत् ऐसें ही उद्यम कीया करै॥ बहुरि अन्यमतीनिकरि कल्पित तत्त्वनिका उ
पदेश दीया है ताकरि जैन उपदेश अन्यथा भासै वा संदेह होइ तौ भी पूर्वोक्त प्रकार करि उद्यम क
रै॥ ऐसें उद्यम कीए जैसें जिनदेवका उपदेश है तैसें ही सांच है [redacted] मुझकौं भी ऐसें ही भासै है ऐ १६८
सा निर्णय होइ॥ जातैं जिनदेव अन्यथावादी है नाहीं॥ इहाँ कोऊ कहै जो जिनदेव अन्यथावादी नाँ
ही हैं तौ [redacted] जैसें उनका [redacted] उपदेश है तैसें श्रद्धान करि लेना [redacted] जिए
परीक्षा काहेकौं कीजिए॥ ताका समाधान॥ परीक्षा कीए बिना [redacted]॥ यहु तौ मानना तौ ए
इ जो जिनदेव ऐसें कह्या है सो सत्य है॥ परंतु उनका भाव आपकौं भासै नाहीं बहुरि [redacted] भाव भासे बिना नि

[redacted]

मूल अज्ञान न होइ। [redacted]। जाकी काहूका वचन ही करि प्रतीति करिए ताकी अन्यका वचन करि अन्यथा भी प्रतीति होइ जाइ तातैं शक्ति अपेक्षा वचन करि कीन्ही प्रतीति अप्रतीतिवत् है। बहुरि जाका भाव भास्या होइ ताकौं [redacted] अनेक प्रकार करि भी अन्यथा न मानै। तातैं भाव भासैं प्रतीति होइ सोई सांची प्रतीति है। बहुरि जो कहोगे पुरुष प्रमाणतैं वचन प्रमाण कीजिए है तौ पुरुषकी भी प्रमाणता स्वयमेव तौ न होइ वाके केई वचननिकी परीक्षा पहलैं करि लीजिए तब पुरुषकी प्रमाणता होइ। [redacted] इहाँ प्रश्न उपदेश तौ अनेक प्रकार। किस किसकी परीक्षा करिए। ताका समाधान। उपदेशविषै केई उपादेय केई हेय केई ज्ञेय तत्व निरूपिए है। तहाँ उपादेय हेय तत्वनिकी तौ परीक्षा करि लेनी। जातैं [redacted] इनिविषै अन्यथापनौ भए अपना बुरा होइ है। उपादेयकौं हेय मानि लें तौ बुरा होइ। हेयकौं उपादेय मानि ले तौ बुरा होइ। बहुरि जो कहोगा आप परीक्षा न करी अर जिनवचन ही तैं [redacted] उपादेयकौं उपादेय जानै हेयकौं हेय जानै तौ यामैं कैसैं बुरा होइ। ताका समाधान। अर्थका भाव भासे बिना [redacted] वचनका [redacted] ताका अभिप्राय न पहिचानैं यह तौ मानि ले जो मैं जिनवचन अनुसारि मानौं हौं। परंतु भाव भासे बिना अन्यथापनौ होइ [redacted] जाइ [redacted]। लोकविषै भी [redacted] किंकरकौं कोई कार्यकौं भेजिए। सो वह उस कार्यका भाव जानै तौ कार्यकौं सुधारै। जो भाव न भासै तौ कहीं चूकि ही जाय तातैं भाव भासनेकै अर्थि हेय उपादेय तत्वनिकी परीक्षा अवश्य करनी। बहुरि वह कहै है जो परीक्षा अन्यथा होइ जाइ तौ कहा करिए। ताका समाधान। जिनवचन अर अपनी परीक्षा इनिकी समानता होइ तब तौ जानिए सत्य परीक्षा भई

169

यावत् ऐसैं न होइ तावत् जैसैं कोऊ [redacted] लेषा करै है ताकी [redacted] विधि न मिलै तावत् [redacted]
[redacted] अपनी चूक कौं ढूंढै तैसैं यहु अपनी परीक्षा विषै विचार कीया करै ।। बहुरि जो ज्ञेय तत्व है तिनिकी परी-
क्षा होइ सकै तौ परीक्षा करै नाहीं यहु अनुमान करै जो हेय उपादेय [redacted] तत्व ही अन्यथा न कहे तौ ज्ञेय तत्व
अन्यथा किसैं अर्थि कहै ।। जैसैं कोऊ प्रयोजनरूप कार्यनि विषै मिथ्या न बोलै सो अप्रयोजन मिथ्या काहे कौं बोलै
तातैं ज्ञेय तत्वनि का परीक्षा करि वा आज्ञा करि स्वरूप जानै है ।। तिनिका यथार्थ भाव न भासै तौ भी दोष नाहीं
याही तैं जैन शास्त्रनि विषै तत्वादिक का निरूपण कीया तहां तौ हेतु युक्ति आदि करि जैसैं याकै अनुमानादिक
करि प्रतीति आवै तैसैं कथन कीया ।। बहुरि त्रिलोक [redacted] गुणस्थान मार्गणादिक का कथन आज्ञा अनु-
सारि कीया ।। तातैं हेयोपादेय तत्वनि की परीक्षा करनी योग्य है ।। तहां [redacted]
[redacted] पहचानने ।। बहुरि तिस ही आपा परकौं पहचानना ।। बहुरि त्यागने योग्य मि-
थ्यात्व रागादिक अर ग्रहणे योग्य सम्यग्दर्शनादिक तिनका स्वरूप पहचानना ।। बहुरि निमित्त नैमित्तिका-
दिक जैसैं है तैसैं पहचानना ।। इत्यादि मोक्षमार्ग विषै जिनकौं जानें [redacted] प्रवृत्ति होइ तिनिकौं अव-
श्य जाननें ।। बहुरि इस जाननें का उपकारी गुणस्थान मार्गणादिक वा पुराणादिक [redacted]
वा व्रतादिक क्रियादिक का भी जानना योग्य है ।। इहां [redacted] परीक्षा [redacted] होइ सकै तिनिकी
परीक्षा [redacted] करनी न होइ सकै ताका आज्ञा अनुसारि जानपनौ करना ।। ऐसैं इस जाननें कै अर्थि कबहू आप ही
विचार करै है कबहू शास्त्र बांचै है कबहू सुनै है कबहू अभ्यास करै है ।। कबहू प्रश्नोत्तर करै है ।। इत्यादि [redacted] रूप
प्रवर्त्तै है । अपनी [redacted] कार्य करने का जाकै हर्ष बहुत है तातैं अंतरंग प्रीतितैं [redacted] ताका साधन करै है ।। [redacted]
[redacted] या प्रकार साधन करतैं यावत् सांचा तत्वश्रद्धान न होइ यहु ऐसैं ही है ऐसी
जाननें ।। वा निर्देश स्वामित्वादिकरि वा सत्संख्यादिकरि इनिका विशेष जानना ।। जैसी बुद्धि होइ जैसा निमित्त बनै तैसैं इनिकौं
सामान्य विशेषरूप पहचानने ।। २

x सो इनिकी तौ परीक्षा करनी [redacted] सामान्यपनैं किसी हेतु युक्ति करि इनिकों जाननें ।। वा [redacted] प्रमाण नयनि करि जाननें

x गुणस्थान [redacted] जीवादिक द्रव्य वा तत्व [redacted] तिनिकों

१६८

169 A

प्रतीति लीऐं जीवादि तत्वनिका स्वरूप आपकौं न जानैं जैसैं पर्याय विषैं अहंबुद्धि है तैसैं केवल आत्मा विषै
अहंबुद्धि न आवै हित अहित रूप आपनैं भावनिकौं न पहिचानैं तावत् सम्यक्त्वकौ सन्मुख मिथ्यादृष्टी
है॥ यहु जीव थोरे ही कालमैं सम्यक्त्वकौं प्राप्त होगा॥ इस ही भवमैं [redacted] वा अन्य पर्याय विषैं सम्यक्त्वकौं
पावैगा॥ इस भवमैं अभ्यास करि परलोकविषै तिर्यंचादि गति विषै भी जाइ तौ तहां संस्कार के बलतैं
देवगुरुशास्त्रका निमित्त विना भी सम्यक्त्व होइ जाइ॥ जातैं ऐसैं अभ्यासके बलतैं मिथ्यात्व कर्मका
अनुभाग हीन हो है जहां वाका उदय न होइ तहां ही सम्यक्त्व होइ जाइ॥ मूलकारन यहु ही है॥ देवादिकका
तौ बाह्य निमित्त है सो [redacted] मुख्यताकरि तौ इनिके निमित्त हीतैं सम्यक्त्व होइ॥ तारतम्यतैं पूर्व अभ्या
स [redacted] संस्कारतैं वर्त्तमान इनका निमित्त न होइ तौ भी सम्यक्त्व होइ सकै है॥ सिद्धांत विषैं॥ तन्निसर्गाद
धिगमाद्वा ऐसा सूत्र है॥ याका अर्थ यहु सो सम्यग्दर्शन निसर्ग वा अधिगमतैं हो है॥ तहां देवादि
क बाह्य निमित्त विना होइ सो निसर्गतैं कहिए देवादिकका निमित्ततैं होइ सो अधिगमतैं भया कहिए
देखो तत्व विचारकी महिमा॥ व्रतादिक पालैं तपश्चरणादि करै ताकै तौ सम्यक्त्व होनेका अधिकार नाहि
अर तत्व विचारवाला [redacted] विना भी सम्यक्त्वका अधिकारी हो है॥ बहुरि कोई जी
वकै तत्व विचार होनेंपहलैं [redacted] देवादिककी प्रतीति होइ [redacted] वा व्रततपकौ
अंगीकार [redacted] होइ पीछैं तत्व विचार करै॥ परन्तु सम्यक्त्वका अधिकारी तत्व विचार भये ही हो है॥ बहुरि
काहूकै तत्व विचार भये पीछैं [redacted] तत्त्व या अर व्यवहार धर्मकी प्रतीति रु
चि होइ गई तातैं देवादिककी प्रतीति करै है वा व्रततपकौं अंगीकार करै है॥ काहूकै [redacted] देवादिककी
प्रतीति अर सम्यक्त्व युगपत् होय॥ अर व्रततप सम्यक्त्वकी साथि भी होइ अर [redacted] पहलैं पीछैं भी होइ
तत्वप्रतीति न होनेतैं सम्यक्त्व तो

Margin notes (left): तैं नया [redacted] / तत्व विचार / कहित अदे / वादिककी प्र / तीति करै बहु / तशास्त्र अ / भ्यासैं

Margin note (right): [redacted]

170 देवादिक की प्रतीति का तौ नियम है [redacted] इस बिना सम्यक्त न होइ। व्रतादिक का नियम है नाहीं। घने जीव तौ पहलैं सम्यक्ती होइ पीछै ही व्रतादिक कौं धारै है। काहूकै युगपत भी होइ जाइ है। ऐसैं यहु तत्वविचारवाला जीव सम्यक्त का अधिकारी है। परंतु याकै सम्यक्त होइ ही होइ ऐसा नियम नाही जातैं शास्त्रविषै सम्यक्त होने तैं पहलैं पंचलब्धि का होना कह्या है। क्षयोपशम। विशुद्धि। देशना। प्रायोग्य। करण। तहां जिसकौं होतैं संतैं तत्वविचार होइ सकै ऐसा ज्ञानावरणादि कर्मनि का क्षयोपशम होइ।

उदय [redacted] काल कौं प्राप्त सर्वघाती स्पर्द्धकनि के निषेकनि का [redacted] उदय का अभाव सो क्षय अर अनागत काल विषै उदय आवनें योग्य तिनि ही का सत्तारूप रहना [redacted] सो उपशम ऐसैं देशघाती स्पर्द्धकनि का उदय सहित कर्मनि की अवस्था ताका नाम क्षयोपशम है। ताकी प्राप्ति सो क्षयोपशम लब्धि है। बहुरि मोह का मंद उदय आवनें तैं मंदकषायरूप [redacted] भाव होइ जहां तत्वविचार होइ सकै सो विशुद्धि लब्धि है। बहुरि जिनदेव का उपदेश्या तत्व का धारण [redacted] होना [redacted] विचार होना सो देशनालब्धि है। जहां उपदेश का निमित्त न होइ तहां पूर्व संस्कार तैं होइ [redacted] बहुरि कर्मनि की पूर्व सत्ता अंतःकोटाकोटी सागर प्रमाण रहि जाय। अर नवीन बंध अंतःकोटाकोटी प्रमाण ताकै संख्यातवैं भाग मात्र होइ। सो भी तिस लब्धिकाल तैं लगाइ क्रमतैं घटता होइ। [redacted] केतीक पापप्रकृतिनि का बंध क्रमतैं मिटता जाय। इत्यादि योग्य अवस्था का होना सो प्रायोग्य लब्धि है। सो ए च्यारौं लब्धि भव्य वा अभव्यकै होइ है। इनि च्यारि लब्धि भए पीछैं सम्यक्त होइ तौ होइ न होइ तौ नाहीं भी [redacted] होइ। ऐसैं लब्धिसारविषै कह्या है। तातैं तिस तत्वविचारवालेकै सम्यक्त होने का नियम नाहीं। जैसैं काहूकौं हित की शिक्षा दई ताकौं वह जानि विचार करै [redacted] यहु सीख दई सो कैसैं है पीछै विचार करतैं वाकैं उस सीख की प्रतीति होइ जाइ अथवा [redacted]

नरकादिविषै

170

ऐसैं ही है ऐसैं

170 A

श्रीगुरां

अन्यथा विचार होइ [redacted] वा [redacted] अन्य विचार विषै लागि तिसंसी पका निर्द्धारन करै तौ
प्रतीति नाही होइ।। तैसें तत्वोपदेश दीया ताकों जीनि विचार करै यहु उपदेश दीया सो कैसें है। बि — पीछैं
चार करनें तैं वाकै ऐसें ही है ऐसी प्रतीति होइ जाइ अथवा अन्यथा विचार होइ वा अन्य विचार वि
षै लागि तिस उपदेश का निर्द्धारन करै तौ प्रतीति नाही नाही होइ।। सो मूल कारण मिथ्यात्व कर्म्म है।।
ताका उदय [redacted] मिटै तौ प्रतीति होइ जाइ न मिटै तौ नाही होइ ऐसा नियम है।। याका उद्यम तौ तत्व वि
चार का करनें मात्र ही है।। बहुरि पांचवईं करणलब्धि [redacted] भए सम्यक्त होइ ही होइ ऐसा नियम है सो जा
कै पूर्वैं कही च्यारि लब्धि ते तौ भई होइ अर अंतर्मुहूर्त्त पीछैं जाकै सम्यक्त होनी होइ तिस ही जीव
कै करणलब्धि होहै।। सो इस करणलब्धि वाला कै बुद्धिपूर्वक तौ इतना ही उद्यम होहै तिस तत्व विचार
विषै [redacted] उपयोग कौं [redacted] तद्रूप होइ लगावै ताकरि समय समय परिणाम निर्म्मल होते जाइ है।। तैसें
निर्म्मल — जैसें काहू कै सीष [redacted] का विचार ऐसा होनें लग्या जो याकै नीं शीघ्र ही ताकी प्रतीति होइ जासी।। तैसें
तत्व उपदेश का ऐसा निर्म्मल होनें लग्या ताकरि याकै शीघ्र ही ताका श्रद्धान होसी।। बहुरि इनि [redacted] प
रिणामनि का तारतम्य केवलज्ञान करि देख्या [redacted] ताका निरूपण करणानुयोग विषै कीया है।
सो इस करणलब्धि के तीन भेद हैं।। अधःकरण १ अपूर्वकरण २ अनिवृत्तिकरण ३ इनिका वि
शेष व्याख्यान तौ लब्धिसार शास्त्र विषै कीया है तिसतैं जाननां इहाँ संक्षेप सा कहिए है।। त्रिकालव
र्ती सर्व्व करणलब्धि वाले जीव तिनके परिणामनि की अपेक्षा ए तीन नाम है तहाँ [redacted] करण नाम तौ
परिणाम का है।। बहुरि जहाँ पहले पिछले समयनिके परिणाम समान होइ सो अधःकरण है। जे
सें कोई जीव का [redacted]

[redacted]

335

171

६ बहुरि इहाँ अधःकरणवत [redacted]

परिणाम तिस करणके पहिले समयसंबंधी विशुद्धतानी ऐं तथा द्वितीय समय समय अनंतगुणी विशुद्ध ६
ताकरि वृद्धि तेजरण ।। बहुरि वाके जैसे द्वितीय [redacted] तृतीयादि समयनि विषै परिणाम होइ तैसे के [redacted]
अन्य जीवनिके [redacted] समय [redacted] विषै ही होइ तिसतैं समय समय अनंतगुणी विशुद्धताकरि वध
ते होइ ।। ऐसें [redacted] अप्रवृत्तकरण जाननी ।। बहुरि जिस विषै [redacted] पहले पिछ
ले समयनिके परिणाम समान न होइ अपूर्व ही होइ जैसें [redacted] पहले समय [redacted] होइ । तिस करणके परिणाम जैसे
तैसे कोई भी जीवके द्वितीयादि समयनि विषै न होइ वधते ही होइ [redacted] तिनि जीवनिकै
करणनिके पहला समय ही होइ तिनि अनेक जीवनिकै परस्पर परिणाम समान भी होइ अर अधिक
हीन विशुद्धता लीयें भी होइ ।। परन्तु इसकी उत्कृष्टतातैं भी द्वितीय समय वालेका जघन्य परिणाम भी
अनंतगुणी विशुद्धता लीयें ही होइ [redacted] ऐसें ही जिनिकौं करण मांडे द्वितीया
दि समय भया होइ तिनिके [redacted] तिस समयवालेंकै तौ परस्पर परिणाम समान वा अ
समान होइ परन्तु पहले समयवालेंकै तिस समय समान सर्वथा न होइ अपूर्व ही होइ ऐसें अपूर्व
करण जाननी ।। बहुरि [redacted] जिस विषै समान समयवर्ती जीवनिकै परिणाम समान ही होइ
[redacted] निवृत्ति कहिए परस्पर भेदता करि रहित होइ ।। जैसें तिस करण [redacted] १७१
[redacted] का पहला समय विषै सर्व जीवनिका परस्पर समान ही होइ ऐसें ही
द्वितीयादि समयनि विषै समानता परस्पर जाननी ।। बहुरि प्रथमादि समय वालेंतैं [redacted] समय वाले द्वितीयादि
कै अनंतगुणी विशुद्धता लीयें ही होइ ।। ऐसें अनिवृत्तिकरण जाननी ।। ऐसें ए तीन करण जाननें ।। तहाँ पहले
लैं अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत अधःकरण होइ [redacted] तहाँ च्यारि आवश्यक होइ ।। समय समय अनंतगुणी विशुद्ध

[redacted]

इहाँ इतनां विशेष भया जो

171 ताहोई वहुरिएकअंतर्मुहूर्तकरिनवीनवंधकीस्थितिघटतीहोइसोस्थितिवंधापसरणहोइ वहुरिसमयसमयप्रशस्तप्रकृतिनिका
अनंतगुणांअनुभागवंधे वहुरिसमयसमयअप्रशस्तप्रकृतिनिकाअनुभागवंधअनंतवैंभागिहोइऐसैंच्यारिआवश्यकहोइ
तहांपीछैंअपूर्वकरणहोइताकाकालअधःकरणकेकालकैसंख्यातवैंभागिहैताविषैंआवश्यकऔरहोइ एकएकअं
तर्मुहूर्तकरिसत्ताभूतपूर्वकर्मकीस्थितिथीताकौंघटावैसोस्थितिकांडकघातहोइ वहुरितिसतैंस्तोकएकए
कअंतर्मुहूर्तकरिपूर्वकर्मकाअनुभागकौंघटावैसोअनुभागकांडकघातहोय वहुरिगुणश्रेणिकाका
लविषैंक्रमतैंअसंख्यातगुणांप्रमाणलीएंकर्मनिर्जरनेयोग्यकरिएसोगुणश्रेणिनिर्जराहोइ वहुरिगुणसं
क्रमइहांनांहीहोहै अन्यत्रअपूर्वकरणहोहैतहांहोहै ऐसैंअपूर्वकरणभएंपीछैंअनिवृत्तिकरणहोइताका
कालअपूर्वकरणकैभीसंख्यातवैंभागिहैतिसविषैंपूर्वोक्तआवश्यकसहितकेताककालगएंपीछैंअंतरक
रणकरैहै अनिवृत्तिकरणकेकालपीछैंउदयआवनेयोग्यऐसेमिथ्यात्वकर्मकेमुहूर्तमात्रनिषेकतिनिकाअ
भावकरैहैतिनिपरमाणूनिकौंअन्यस्थितिरूपपरिनमावैहै वहुरिअंतरकरणकीएंपीछैंउपशमकरणकरैहै अं
तरकरणकरिअभावरूपकीएनिषेकनिकैउपरिजोमिथ्यात्वकेनिषेकतिनिकौंउदयआवनेकौंअयोग्य
करैहै इत्यादिकक्रियाकरिअनिवृत्तिकरणकाअंतसमयकेअनंतरजिनिनिषेकनिकाअभावकीयाथाति
निकाकालआयतवनिषेकनिविनाउदयकौनकाआवैतातैंमिथ्यात्वकाउदयनहोनेतैंप्रथमोपशमस
म्यक्त्वकीप्राप्तिहोहैअनादिमिथ्यादृष्टीकैसम्यक्मोहनीमिश्रमोहनीकीसत्तानांहीहैतातैंएकमिथ्यात्वकर्म
हीकौंउपशमाइउपशमसम्यग्दृष्टीहोयहै वहुरिकोईजीवसम्यक्पाईपीछैंभ्रष्टहोताकीभीदशाअनादि
मिथ्यादृष्टीकीसीहोइजाइहै इहांप्रश्नजोपरीक्षाकरितत्वश्रद्धानकीयाथाताकाअभावकैसैंहोइ ताका
समाधानजैसैंकिसीपुरुषकौंसिष्यादईताकीपरीक्षाकरिवाकैऐसैंहीहैऐसीप्रतीतिभीआईथी पीछैं

172 अन्यथा कोई प्रकार करि विचार न या तातैं उस मिथ्या विषै संदेह न या ऐसैं है कि ऐसैं है अथवा न जानौ कैसैं
है अथवा तिस शिष्या कौ कछु जानी तिस तैं विपरीतता भई तब वाकै प्रतीति भई तब वाकै तिस शिष्या की प्रती-
ति का अभाव होइ अथवा पूर्वै तौ अन्यथा प्रतीति थी ही वा विषै मैं सिष्या का विचार तैं यथार्थ प्रतीति भई
थी ~~बहुरि तिस सिष्या का विचार तैं यथार्थ प्रतीति भई~~ थी बहुरि तिस शिष्या का विचार कीएं बहुत काल
होइ गया तब ताकौं भूलि जैसैं पूर्वै अन्यथा प्रतीति थी तैसी ही स्वयमेव होइ गई तब तिस शिष्या की प्रती-
ति का अभाव होइ जाइ अथवा यथार्थ प्रतीति पहलै तौ कीन्ही पीछैं न तौ किछू अन्यथा विचार कीया न ब-
हुत काल भया परंतु तैसा ही कर्म उदय तैं होनहार कै अनुसारि स्वयमेव ही तिस प्रतीति का अभाव होय अ-
+ न्यथापना भया ऐसैं अनेक प्रकार तिस मिथ्या की यथार्थ प्रतीति का अभाव हो है तैसैं जीव कैं जिनदे-
व का तत्त्वादि रूप उपदेस भया ताकी परीक्षा करि वाकै ऐसैं ही है ऐसा श्रद्धान भया पीछैं पूर्वै जैसैं कहे
र्या तैसैं अनेक प्रकार तिस पर्याय का श्रद्धान का अभाव हो है सो यह कथन स्थूलपनैं दिखाया है तारतम्य करि
केवलज्ञान विषै भासै है इस समय श्रद्धान है इस समय नाही जातैं इहां मूल कारण मिथ्यात्व कर्म है ता-
का उदय होइ तब तौ अन्य विचारादि कारण मिलौ वा मति मिलौ स्वयमेव सम्यक श्रद्धान का अ-
भाव हो है बहुरि ताका उदय न होय तब अन्य कारण मिलौ वा मति मिलौ स्वयमेव सम्यक श्र-
द्धान होइ जाय है सो ऐसी अंतरंग समय समय संबंधी सूक्ष्म दसा का जानना छद्मस्थ कै होता ना-
ही तातैं अपनी मिथ्या सम्यक श्रद्धान रूप अवस्था का तारतम्य याकौ निश्चय होसकै नाही केवल
~~ज्ञान विषै भासै है तिस अपेक्षा गुणस्थाननि की पलटनि की आगम विषै कही है~~ १७२

172 A

केवलज्ञान विषै नासै है तिस अपेक्षा गुणस्थाननिका पलटनि शास्त्र विषै कही है ॥ या प्रकार जो
सम्यक्त तै भ्रष्ट होइ सो सादि मिथ्यादृष्टी कहिए ॥ ताकै भी बहुरि सम्यक्त की प्राप्ति विषै पूर्वोक्त पांच
लब्धि हो है ॥ विशेष इतना इहां कोई जीव कै दर्शनमोह की तीन प्रकृतिनि की सत्ता हो है सो तीनों को
उपशमाइ प्रथमोपशम सम्यक्ती हो है ॥ अथवा काहू कै सम्यक्त मोहनी का उदय आवै है दोय
प्रकृतिनि का उदय न हो है सो क्षयोपशम सम्यक्ती होइ है ॥ याकै गुणश्रेणि आदि क्रिया न हो है वा
अनिवृत्तिकरण न हो है [redacted] ॥ बहुरि काहू कै मिश्र मोहनी का उदय आवै है दोय प्रकृतिनि का उदय
न हो है सो मिश्र गुणस्थान कौ प्राप्त हो है ॥ याकै करण [redacted] न हो है ॥ ऐसैं सादि मिथ्यादृष्टी कै मिथ्या
त्व [redacted] छूटै दशा हो है ॥ क्षायिक सम्यक्त कौं वेदक सम्यग्दृष्टी ही पावै है तातैं ताका कथन इ
हां न कीया है ॥ ऐसैं सादि मिथ्यादृष्टी का जघन्य तौ मध्य अंतर्मुहूर्त मात्र उत्कृष्ट किंचिदून अर्द्धपुद्गल
परिवर्त्तन मात्र काल जानना ॥ देखो परिणामनि की विचित्रता ॥ कोई जीव तौ ग्यारवें गुणस्थान यथाख्या
त चारित्र पाइ बहुरि मिथ्यादृष्टी होइ किंचिदून अर्द्धपुद्गल परिवर्त्तन काल पर्यंत संसार मैं रुलै अ
र कोई नित्यनिगोद मैं स्यौं निकसि मनुष्य होइ मिथ्यात्व [redacted] छूटै पीछै अंतर्मुहूर्त मैं केवलज्ञा
न पावै ॥ ऐसैं जानि निज परिणाम [redacted] बिगरनें का भय [redacted] राखना अर तिनके सुधारनें का उपाय क
रना ॥ बहुरि इस सादि मिथ्यादृष्टी कै [redacted] थोरे काल मिथ्यात्व का उदय रहै तौ बाह्य जैनीप
नौ नाहीं नष्ट हो है ॥ वा तत्त्वनि का अश्रद्धान व्यक्त न हो है ॥ वा विना विचारै ही वा स्तोक विचार
ही तैं बहुरि सम्यक्त की प्राप्ति हो जाइ है ॥ बहुरि बहुत काल मिथ्यात्व का उदय रहै तौ जैसी अनादि
मिथ्यादृष्टी की दशा तैसी याकी भी दशा हो है ॥ गृहीत मिथ्यात्व कौं भी ग्रहै है ॥ निगोदादिक विषैं भी
रुलै है याका किछू प्रमाण नाहीं ॥ बहुरि [redacted] कोई जीव सम्यक्त

173

१ जिनदेव का अन्यदेव १   १० याकौं तौ यह विनय मिथ्यात्व प्रगट है १

तैं भ्रष्ट होइ सासादन होहै है सो तहां जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह आवली प्रमाण काल रहै है॥ सो याका परि
णाम की दशा वचन करि कहने मैं आवती नाहीं॥ सूक्ष्म काल मात्र कोई जाति के केवलज्ञान गम्य परिणाम
होहै तहां अनंतानुबंधी का तौ उदय होहै मिथ्यात्व का उदय न होहै सो आगम प्रमाणतैं याका स्वरूप जा
ननी॥ बहुरि कोई जीव सम्यक्त तैं भ्रष्ट होइ मिश्र गुणस्थान कौं प्राप्त होहै॥ तहां मिश्रमोहनी का उदय
होहै॥ [redacted] याका काल मध्य अंतर्मुहूर्त मात्र है॥ सो याका भी काल थोरा है सो [redacted]
याकै भी परिणाम केवलज्ञान गम्य है॥ इ[redacted]हां इतना जानना है॥ जैसें काहू कौं सीष दई तिसकौं वह कि
छू सत्य [redacted] किछू असत्य एकै काल मानें तैसें तत्वनि का श्रद्धान अश्रद्धान एकै काल होइ सो मिश्र दशा है
कोई कहै है हम कौं तौ सर्व [redacted] वंदने योग्य हैं इत्यादि मिश्र श्रद्धान कौं मिश्र गुणस्थान कहै है सो नाहीं॥ १ मिथ्यात्व रहै है १
यह तौ प्रत्यक्ष मिथ्यात्व दशा है॥ [redacted] व्यवहाररूप देवादिक का श्रद्धान न एनीं [redacted]क
[redacted] तौ याके तौ किछू भी कही नाहीं॥ ऐसें जाननी॥ [redacted] सम्य[redacted]क कौं स १ मतवाले १
१ देव कुदेव का १ नुख मिथ्यादृष्टीनि का कथन कीया॥ प्रसंग पाइ अन्य भी कथन कीया है॥ [redacted] या प्रकार जे मिथ्या
दृष्टीनि का स्वरूप निरूपण कीया॥ [redacted] इहां [redacted] नाना प्रकार मिथ्यादृष्टीनि का कथन कीया है ता
का प्रयोजन यह जाननां जो इन [redacted] प्रकारनि कौं पहचानि आप [redacted] विषै कोई ऐसा दोष होइ तौ ताकौं १७३
दूरि करि सम्यक्श्रद्धानी होनां॥ औरनि ही कै ऐसा दोष देखि देखि कषायी न होनां॥ जातैं अपनां भला
बुरा तौ अपनें परिणामनि तैं है॥ औरनि कौं तौ रुचिवान देखिए तौ किछू उपदेश देइ वाका भी भला की
जिए॥ तातैं अपनें परिणाम सुधारनें का उपाय करनां योग्य है॥ सर्व प्रकार के मिथ्यात्व भाव छोडि स
म्यग्दृष्टी होनां योग्य है॥ जातैं संसार का मूल मिथ्यात्व है॥ मिथ्यात्व समान अन्य पाप नाहीं है॥ एक

१अरताकैसाधिअनैतानुबंधी॥

173
8

मिथ्यात्वकाअनावनरौ इकतालीसप्रकृतिनिकाबंधमहीमिटिजाय॥ स्थितिअंतःकोराकोरीसागरकीरहिजाय अनुभागथोरा [redacted] रहिजाय॥ शीघ्रहीमोक्षपदकौंपावै॥ [redacted] नहरिमिथ्यात्वकासद्भावरहैअन्यअनेकउपायकीयैभीमोक्षमार्गनहोइ॥ तातैं जिसतिसउपायकरिसर्वप्रकारमिथ्यात्वकानाशकरनीयोग्यहै॥७॥ इतिमोक्षमार्गप्रकाशकनामशास्त्रविषैजैनमतवालेमिथ्यादृष्टीनिकानिरूपणजामैंनयाअैसा अधिकारसंपूर्णभया॥ ७॥ ७॥
॥ॐनमः॥ अथमिथ्यादृष्टीजीवनिकोंमोक्षमार्गकाउपदेशदेइतिनकाउपकारकरनी॥ यहुहीउत्तमउपकारहै॥ ● तीर्थंकरगणधरादिकभी [redacted] ● ऐसाहीउपकार [redacted] करैहै॥ तातैंइसशास्त्रविषैभीतिनहीकाउपदेशकेअनुसारिउपदेशदीजियहै॥ तहींउपदेशकास्वरूपजीननेकैअर्थिकिछूव्याख्यानकीजिए॥ जातैंउपदे●शकोंयथावतनपहिचानैतोअन्यथामांनि [redacted] [redacted] विपरीतप्रवर्त्ते॥ तातैंउपदेशकास्वरूपकहिएहै॥ जिन [redacted] विषैउपदेशच्यारिअनुयोगकरिदीयाहै॥ प्रथमानुयोग१ करणानुयोग१ चरणानुयोग॥ द्रव्यानुयोग१ एच्यारिअनुयोगहैं॥ तहींतीर्थंकरचक्रवर्त्तिआदिमहानपुरषनिक [redacted] चरित्र [redacted] जिसविषैनिरूपणकीयाहोइसोप्रथमानुयोगहै॥ बहुरिगुणस्थानमार्गणादिकरूपजीवकावाकर्मनिकावात्रिलो [redacted] कादिककाजाविषैनिरूपणहोइसोकरणानुयोगहै॥ बहुरिगृहस्थमुनिकैधर्म● आचरन [redacted] करनेंकाजाविषैनिरूपणहोइसोचरणानुयोगहै॥ बहुरि [redacted] षटद्रव्यसप्ततत्त्वादिककानास्वपरभेदविज्ञानादिककाजाविषैनिरूपणहोइसोद्रव्यानुयोगहै॥ अबइनिकाप्रयोजनकहिएहै॥ प्रथ

174 मानुयोगविषैतो [redacted] सी आरकी विस्तुत्रतापुण्यपापका फल तहाँ तैं पुरषनिकी प्रवृत्ति इत्यादि [redacted]
निरूपण करि जीवनिकों धर्म्मविषै लगाया है ॥ [redacted] जे जीव तुच्छबुद्धी होय तेभी [redacted] तिसकरि धर्म्मसन्मु
ख होय है। जातैं वे जीव सूक्ष्म निरूपणकौं पहिचानैं नाहीं लौकीक वातनिकों जानैं [redacted] तहाँ तिनिका
उपयोग लागै बहुरि प्रथमानुयोगविषै तौ किंकप्रवृत्ति निरूपही निरूपण होय ताकौं नीकैं समझि जाय
बहुरि लोकविषै तौ राजादिककी कथानिविषै पापका पोषण होय है। तहाँ महंत पुरुष राजादिक तिनिकी
कथा तौ है परंतु प्रयोजन जहाँ तहाँ पापकौं छुडाय धर्म्मविषै लगावनेंका प्रगट करै है तातैं ते जीव कथानि
कै लालच करि तौ [redacted] तिसकौं वाचै सुनैं पीछैं पापकौं [redacted]
[redacted] बुरा धर्म्मकौं नलाजानि धर्म्मविषै [redacted] रुचिवंत होय है। ऐसैं तुच्छबुद्धीनिकै स
मझावनेंकौं यहु अनुयोग है॥ प्रथम कहिए अव्युत्पन्न मिथ्यादृष्टी तिनकै अर्थि जो अनुयोग सो प्रथमानु
योग है ऐसा अर्थ गोमट्टसारकी टीका विषै कीया है। बहुरि जिनि जीवनिकै तत्वज्ञान भया होय पीछैं इस प्र
थमानुयोगकौं वाचैं सुनैं तौ तिनिकौं यहु उदाहरणरूप भासै है। जैसैं जीव अनादिनिधन है शरीरादिक
[redacted] संयोगी पदार्थ है ऐसैं यहु जानैं था॥ [redacted] बहुरि पुराणनिविषै [redacted] जीवनिके नवीनतराद [redacted] निरू
पण कीए [redacted] तौ तिस जाननेंकै उदाहरण भए॥ बहुरि शुभ अशुभ शुद्धोपयोगकौं जानैं था वा तिनिके फल
कौं जानैं था [redacted] बहुरि पुराणनिविषै तिनि उपयोगनिकी प्रवृत्ति अर तिनिका फल जीवनिकै भया सो
निरूपण कीया सोई तिस जाननेंका उदाहरण भया॥ [redacted] ऐसैं ही अन्य जाननेंका उदाहरणका अर्थ यहु
जो जैसैं जानैं था तैसैं ही तहाँ कोई जीवकै अवस्था भई तातैं यहु तिस जाननेंकी साखि भई॥ [redacted]
पुरुष अन्य कामी पुरुषनिकी कथा सुनि अति कामासक्त होय है तैसैं यहु धर्मात्मा अन्य धर्मात्मा -७८

२तिसकैं [redacted]

174 A

२ पुराणपुरुषनिकी २

[redacted]। बहुरि जैसैं कोई सुभट है सो सुभटनि की प्रशंसा अर कायर
निकी निंदा जाविषै होइ ऐसी [redacted] कोई [redacted] कथा सुननेकरि सुभटपना विषै [redacted]
अति उत्साहवान होहै। तैसें धर्मात्मा है सो धर्मात्मानि की प्रशंसा अर पापीनिकी निंदा जाविषै होइ
ऐसी कोई [redacted] पुराणपुरुषनिकी कथा सुननेकरि धर्मविषै अतिउत्साहवान होहै। ऐसैं यहु प्रथमानु
योगका प्रयोजन जानना। बहुरि [redacted] करणानुयोगविषै जीवनिकी वा कर्मनिकी विशेष [redacted] वा त्रिलो
कादिककी रचना निरूपणकरि जीवनिकौं धर्मविषै लगाए है। [redacted] जे जीव धर्मविषै उपयोग लगाया
चाहै ते जीवनिकी गुणस्थान मार्गणा आदि विशेष अर कर्मनिका कारण अवस्था फल कौन कौन कै
कैसे कैसे पाईए इत्यादि विशेष अर त्रिलोकविषै नरक स्वर्गादिकके ठिकानें पहचानि पापतैं विमुख होइ
धर्मविषै लागै है। बहुरि ऐसे विचारविषै उपयोग रमि जाय तब पापप्रवृत्ति छूटि स्वयमेव तत्काल
धर्म उपजै है। तत्त्वज्ञानकी प्राप्ति होहै। बहुरि ऐसा सूक्ष्म यथार्थ कथन [redacted] जिनमत विषै ही
है अन्यत्र नाहीं ऐसैं महिमा जानि जिनमतका श्रद्धानी होहै। बहुरि जे जीव तत्त्वज्ञानी होइ इस करणा
नुयोगकौं अभ्यासै है तिनकौं यहु तिस[redacted]का विशेषणरूप भासै है। जे जीवादिक तत्त्व आप
जानै है तिनिहीका विशेष करणानुयोगविषै कीए है। तहां केई विशेषण तौ यथावत् निश्चयरूप [redacted] है
केई उपचार [redacted] व्यवहाररूप [redacted] है। केई द्रव्य क्षेत्र काल भावादिकका स्वरूप प्रमाणादि [redacted]
निरूपै है। [redacted] केई निमित्त आश्रयादि अपेक्षा लीए है। इत्यादि अनेक प्रकारके विशेषण [redacted] निरू
पे है तिनकौं जैसाका तैसा मानता तिस करणानुयोगकौं अभ्यासै है। इस अभ्यासतैं तत्त्वज्ञान नि
र्मल होहै। जैसैं कोऊ यहु तौ जानै था यहु रत्न है। परन्तु उस रत्नके विशेषण घनें जानैं [redacted] निर्मल रत्नका पा

तिसका अभ्यास करि

२ निर्म्मल २ ३ ज्ञानी ३

रूपी होइ तैसैं तत्त्वनिकौं जानैं या ए जीवादिक हैं। परन्तु तिनि तत्त्वनिके घनें विशेष जानैं तौ निर्मल तत्त्वज्ञान होइ। तत्त्वज्ञानतैं आपही विशेष धर्म्मात्मा होहै। बहुरि अन्य विकारभैं उपयोगकौं लगाइए तौ रागादिककी वृद्धि होइ अर छद्मस्थका एकाग्र निरंतर उपयोग रहै नाहीं। तातैं इस करणानुयोगविषै अभ्यासविषै उपयोगकौं लगावै है। केवलज्ञानकरि देखे पदार्थ [redacted] निका जानपनौ याकै होहै। प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष ही का भेद है। तासनैं विषै विरुद्ध है नाहीं। ऐसैं यह करणानुयोगका प्रयोजन जाननौ। करण कहिए गणित कार्यकौ कारण सूत्र तिनिका जा विषै अनुयोग अधिकार होइ सो करणानुयोग है। इस विषै गणित वर्णनकी मुख्यता है ऐसा जाननौ। अब चरणानुयोगका प्रयोजन कहिए है। चरणानुयोग विषै नाना प्रकार धर्म्मके साधन निरूपण करि जीवनिकौं धर्म्मविषै लगाइए है। जे जीव हित अहितकौं जानैं नाहीं हिंसादिक पापकार्यनिविषै तत्पर होइ रहे हैं। तिनिकौं जैसैं वै पापकार्यनिकौं छोड़ि धर्म्मकार्यनिविषै लागै तैसैं उपदेश दीया ताकौं जानि धर्म्म आचरन करनेंकौं सन्मुख भए ते जीव गृहस्थधर्म्म वा मुनिधर्म्मका विधान सुनि आपतैं जैसा सधै तैसा धर्म्मसाधनविषै [redacted] होहै जो लागै है। ऐसैं साधनतैं [redacted] जिनमतका निमित्त बन्या रहै तहाँ कुगतिविषै दुःख न पावै अर सुगतिविषै सुख पावै [redacted] तत्त्वज्ञानकी प्राप्ति होनी होइ तौ होइ जाइ। बहुरि जे जीव तत्त्वज्ञानी होइ करि चरणानुयोगकौं अभ्यासै हैं तिनकौं ए सर्व आचरन अपनें वीतरागभावके अनुसारी भासै हैं। [redacted] एकदेश वा सर्वदेश वीतराग[redacted]ता भए [redacted] ऐसी [redacted] श्रावकदशा ऐसी मुनिदशा होहै। जातैं इनिकै निमित्त नैमित्तिकपनौं पाईए है। ऐसैं जानि [redacted] श्रावक मुनिधर्म्मके विशेष पहचानि जैसा अपना [redacted] वीतराग [redacted] भाव भया होइ तौ

४ तिसकरि ४

५ कषायमंद होहै ताके फलतैं इतनौ होहै ५

६ बहुरि ऐसैं साधनतैं ६

साम्रपनें योग्य धर्म्मकौं साधै है॥ तहां जे ताश्री श्री वीतरागता होहै ताकौं कार्यकारी जानै है॥ जेता
अंशरागरहै है ताकौं हेय जानै है॥ संपूर्ण वीतरागता कौं परम धर्म्म मानै है॥ असैं चरणानुयोग-
का प्रयोजन है॥ अब द्रव्यानुयोग का प्रयोजन कहिए है॥ द्रव्यानुयोग विषै द्रव्यनि का वा तत्वनि का निरू-
पण करि जीवनिकौं धर्म्म विषै लगाईए है॥ जे जीव अजीवादिक द्रव्यनिकौं वा तत्वनिकौं पहिचानैं नाहीं
आपापरकौं भिन्न जानैं नाहीं तिनिकौं हेतु दृष्टांत युक्ति करि वा प्रमाण नयादिक करि तिनिका स्वरू-
प असैं दिखाया जैसैं याकै प्रतीति होइ जाइ ताकै अभ्यासतैं अनादि [redacted] अज्ञानता दूरि होइ अ-
न्यमत कल्पित तत्वादिक झूठ भासै तब [redacted] तिनके भावकौं पहचा-
जिनमत की प्रतीति होइ अर
[redacted] ननैं का अभ्यास राखै तौ शीघ्र ही तत्वज्ञान की प्राप्ति होइ जाइ॥ बहुरि जिनिकै तत्वज्ञान भया होइ
ते जीव द्रव्यानुयोगकौं अभ्यासै तिनिकौं अपनें श्रद्धानकै अनुसारि सो सर्व कथन प्रतिभासै है
जैसैं काहूनैं [redacted] किसी विद्याकौं सीखि लई परन्तु जो ताका [redacted] अभ्यास कीया करै तो बहु यादि रहै न
करै तौ भूलि जाइ॥ तैसैं याकै तत्वज्ञान [redacted] भया परन्तु जो ताका प्रतिपादक द्रव्यानुयोग का अभ्या-
कौ याक रैं
स [redacted] तौ वह तत्वज्ञान रहै [redacted] न करै तौ भूलि जाइ अथवा संक्षेपपनैं [redacted] तत्वज्ञान भया
था॥ [redacted] नाना [redacted] युक्ति [redacted] हेतु दृष्टांतादिक करि स्पष्ट होइ जाइ तौ तिस विषै शिथि-
लता न होइ सकै॥ बहुरि [redacted] इस अभ्यासतैं रागादि घटनें तैं शीघ्र मोक्ष सधै
[redacted] असैं द्रव्यानुयोग का प्रयोजन जानना॥ अब इनि अनुयोगनि विषै [redacted]
व्याख्यान है सो कहिए है॥ प्रथमानुयोग विषै जे मूल कथा हैं ते तौ [redacted] जैसी कीं तैसी ही निरू-
पिए है अर तिनि [redacted] विषै [redacted] प्रसंग पाइ व्याख्यान हो है सो कोई तौ जैसा का तैसा हो है कोई ग्रंथ

२ किस प्रकार २

कर्त्ता का विचार कै अनुसारि होहै परंतु प्रयोजन अन्यथा न हो है।। ताका उदाहरण जैसैं तीर्थंकर दे
वनि के कल्याणकनि विषै इंद्र आया यहु कथा तो सत्य है।। बहुरि इंद्र स्तुति करी ताका व्याख्यान
कीया सो इंद्र तो और ही प्रकार स्तुति कीनी थी अर इहां ग्रंथकर्त्ता और ही प्रकार स्तुति कीनी लि
खी परंतु स्तुतिरूप प्रयोजन अन्यथा न भया।। बहुरि परस्पर किनिहू कै वचनालाप भया।।
तहां उनकै तौ और प्रकार अक्षर निकसे थे। इहां अन्य प्रकार कहे परंतु प्रयोजन एक [redacted] है। बहुरि १ ही दिखावै १
नगर वन संग्रामादिक का [redacted] नामादिक तौ यथावत ही लिखै अर वर्णन हीनाधिक भी प्रयोज
न कौं पोषता निरूपै। इत्यादि ऐसैं ही जानना।। बहुरि प्रसंगरूप कथा भी ग्रंथकर्त्ता अपनी विचार
अनुसारि कहै जैसैं धर्मपरीक्षा विषै [redacted] मूर्खनि की कथा लिखी सो एही कथा मनोवेग कही थी ऐसा
नियम नाहीं।। परंतु मूर्ख[redacted]पना का पोषती कोई वार्त्ता कही ऐसा अभिप्राय पोषै है।। ऐसैं ही
अन्यत्र जानना।। इहां कोई कहै।। अयथार्थ कहना तौ जैन शास्त्रनि विषै संभवै नाहीं।। ताका उत्तर
अन्यथा तौ वाका नाम है जो [redacted] प्रयोजन और का और [redacted] प्रगट करै।। जैसैं काहूकौं कह्या तू ऐसैं कहि
यो।। वानैं वे ही अक्षर तौ न कहे परंतु [redacted] तिस ही प्रयोजन लीएं कह्या तौ वाकौं मिथ्यावादी न कहिए।
ऐसैं जानना।। जो जैसा का तैसा लिखने का संप्रदाय होइ तौ [redacted] काहूनैं बहुत प्रकार वैराग्य चिं
तवन कीया था ताका वर्णन सर्व लिखैं ग्रंथ बधि जाय किछू न लिखैं वाका भाव भासै नाहीं।। तातैं वैराग्य
कौ ठिकानैं [redacted] थोरा बहुत अपनी विचार कै अनुसारि वैराग्य [redacted] पोषता ही कथ
न करै सराग पोषता न करै [redacted] तहां प्रयोजन अन्यथा न भया तातैं याकौं अ[redacted]यथार्थ न कहि
ए ऐसैं ही अन्यत्र जानना।। बहुरि प्रथमानुयोग विषै जाकी मुख्यता होइ ताकौं ही [redacted] पोषै है।। जैसैं

345

176 B

अऐसैं ही अन्य जानने॥

काहूनैं उपवास [redacted] कीया ताका तौ फल स्तोक था। पुनि बाकै अन्य धर्म परणति की विशेषता भई ताकरि
तैं विशेष उच्च पद की प्राप्ति भई। तहाँ तिसकौं उपवास ही का फल निरूपण करै। बहुरि जैसैं काहू [redacted] नैं शी
१८ लादि प्रतिज्ञा दृढ राखी वा नमस्कार मंत्र स्मरण कीया। [redacted] अन्य धर्म साधन कीया। [redacted]
ताकै कष्ट दूरि भए। प्रतिज्ञाय प्रगट भए। तहाँ तिनही कौं तिसका फल न भया [redacted] अर अन्य कोई कर्म के
उदय [redacted] तैं वैसे कार्य भए। तिनिकौं तिनि शीलादिक का ही फल निरूपण करै।
ऐसैं ही कोई [redacted] पाप कार्य कीया ताकै [redacted] तिस [redacted] तौ तिसका फल न भया [redacted] अर अन्य कर्म
उदयतैं नीच गति प्राप्त भया वा कष्टादिक भए ताकौं तिस पाप ही [redacted] कार्य का फल निरूपण करै। इत्यादि
ऐसैं ही जानना। इहाँ कोऊ कहै ऐसा झूठा फल दिखावना [redacted] तौ योग्य नाहीं। [redacted] ऐसे
कथनकौं प्रमाण कैसैं कीजिए। ताका समाधान। [redacted]
[redacted] जे अज्ञानी जीव बहुत फल दिखाए बिना [redacted] धर्मविषै न लागै वा पापतैं न डरै तिनिकौं भला करने
के अर्थि ऐसैं वर्णन करिए है। बहुरि झूठा तौ तब होइ जब [redacted] धर्म का फलकौं पाप का फल बतावै पा
प का फलकौं धर्म का फल बतावै। सो तौ [redacted] है नाहीं। जैसैं दश पुरुष मिलि कोई कार्य करै तहाँ
उपचारकरि एक पुरुष [redacted] का भी कीया कहिए तौ दोष नाहीं। अथवा जाकै पितादिकनैं कोई कार्य कीया होइ
ताकौं एक जाति अपेक्षा उपचारकरि पुत्रादिक का कीया कहिए तौ दोष नाहीं। तैसैं बहुत शुभ वा अशुभ कार्य
[redacted] निका एक फल भया ताकौं उपचारकरि एक शुभ [redacted] वा अशुभ कार्य का फल कहिए तौ दोष नाहीं
अथवा और शुभ वा अशुभ [redacted] कार्य का फल [redacted] जो भया होइ ताकौं एक जाति अपेक्षा उपचारकरि और शुभ
वा अशुभ कार्य का फल कहिए तौ दोष नाहीं। उपदेश विषैं कहीं व्यवहार [redacted] वर्णन है। कहीं निश्चय का व
र्णन है। इहाँ उपचाररूप व्यवहार वर्णन कीया है याकौं [redacted] प्रमाण कीजिए है। तारतम्य करणानु

हि [illegible]

पाँचौं [illegible] प्रीति लै नौ

347
177/
199

योग [illegible] विषै निरूपण कीया है सो जाननी॥ बहुरि प्रथमानुयोगविषै [illegible] उपचाररूप कोई [illegible] धर्म का अंग [illegible] संपूर्ण धर्म भया कहिए है। जैसें [illegible] जिन जीवनिकै शंका [illegible] कांक्षादिक न भए तिनकै सम्यक्त भया कहिए॥ [illegible] सो एक कोई कार्यविषै शंका कांक्षा न कीएं ही तौ सम्यक्त न होइ सम्यक्त तौ तत्त्वश्रद्धान भए होहै॥ परंतु निश्चयसम्यक्तका तौ व्यवहारसम्यक्तविषै उपचार कीया॥ बहुरि व्यवहारसम्यक्तका कोई एक अंगविषै संपूर्ण व्यवहारसम्यक्तका उपचार कीया। ऐसें उपचारकरि सम्यक्त भया कहिए है॥ [illegible] कोई जैनशास्त्रका एक अंग जानैं [illegible] सम्यग्ज्ञान भया कहिए है॥ [illegible] सो संशयादिरहित तत्त्वज्ञान भए सम्यग्ज्ञान होइ परंतु पूर्ववत् उपचार करिए है॥ बहुरि कोई भला आचरण भए सम्यक्चारित्र भया कहिए है॥ तहाँ जानैं जैनधर्म अंगीकार कीया होइ वा कोई छोटी मोटी प्रतिज्ञा ग्रही होइ ताकौं श्रावक कहिए सो श्रावक तौ पंचमगुणस्थानवर्ती भए होहै॥ परंतु पूर्ववत् उपचारकरि याकौं श्रावक कह्या है। 179
उत्तरपुराणविषै श्रेणिककौं श्रावकोत्तम कह्या सो वह [illegible] तौ असंयत था परंतु जैनी था तातैं कह्या [illegible] ऐसैं ही अन्यत्र जाननां॥ बहुरि जो [illegible] मुनिलिंग धारै ताकौं [illegible] कौं मुनि कहिए॥ [illegible] सो मुनि तौ षष्ठादि गुणस्थानवर्ती भए होहै परंतु पूर्ववत् उपचारकरि मुनि कह्या है॥ [illegible] समव

[illegible] कोई [illegible]

२८ कोई द्रव्यलिंगी अतीचार [illegible]
४

स्र तां संख्यादिविषै मुनिनिकी संख्या कहीं तहां सर्व ही शुद्ध भावलिंगी मुनि न थे परंतु मुनिलिंग धारनेतैं स
बनिकौं मुनि कहे।। ऐसैं ही अन्यत्र जाननी।। बहुरि प्रथमानुयोगविषै कोई धर्मबुद्धितैं अनुचित कार्य करै
ताकी भी प्रशंसा करिए है।। जैसैं विष्णुकुमार [redacted] मुनिनिका उपसर्ग दूरि कीया सो [redacted]
धर्मानुरागतैं कीया परंतु मुनिपद छोडि यहु कार्य करनी योग्य न था।। जातैं [redacted] ऐसा कार्य तौ गृहस्थधर्म
विषै संभवै अर गृहस्थधर्मतैं मुनिधर्म ऊंचा है सो ऊंचा धर्म छोडि नीचा धर्म अंगीकार कीया सो अयो
ग्य है।। परंतु वात्सल्य अंग [redacted] की प्रधानता [redacted] करि विष्णुकुमारजी की प्रशंसा क
री।। [redacted] इस छलकरि औरनिकौं ऊंचा धर्म छोडि नीचा ध
र्म अंगीकार करनी योग्य नाहीं।। बहुरि जैसैं ग्वालिया मुनिकौं अग्निकरि तपाया सो करुणातैं यहु का
र्य कीया परंतु [redacted] विषै आया उपसर्गकौं तौ दूरि करै
सहज अवस्थाविषै जो परीषह हो है ताकौं दूरि कीएं रति माननेका कारण होइ उनकौं रति करनी नाहीं तब उ
लटा उपसर्ग होइ याहीतैं विवेकी उनकै शीतादि [redacted] का उपचार करते नाहीं।। [redacted]
[redacted] ग्वालिया अविवेकी था करुणाकरि यहु कार्य कीया तातैं या
[redacted] की प्रशंसा करी इस छलकरि औरनिकौं धर्मपद्धतिविषै जो विरुद्ध होइ ऐसा कार्य करनी योग्य ना
ही।। बहुरि जैसैं वज्रकरण राजा सिंहोदर राजाकौं नम्या नाहीं।। मुद्रिकाविषै प्रतिमा राखी सो बडे बडे सम्य
ग्दृष्टी राजादिककौं नमनेंका दोष नाहीं अर मुद्रिकाविषै प्रतिमा राखनेमैं अविनय होइ यथावत विधि तैं ऐ
सी प्रतिमा न होइ तातैं इस कार्यविषै दोष है।। परंतु वाकै ऐसा ज्ञान न था धर्मानुरागतैं मैं औरकौं
नमौं ऐसी बुद्धि भई तातैं वाकी प्रशंसा करी इस छलकरि औरनिकौं ऐसैं कार्य करने युक्त नाहीं।। बहुरि
केई पुरुषोंनैं पुत्रादिककी प्राप्तिकै अर्थि वा रोगकष्टादि दूरि करनेकै अर्थि चैत्यालय पूजनादि कार्य कीए

[redacted]

ॅ शीतादिककौंॅ

ॅ नाहीॅ

[redacted] स्तोत्रादि कीए नमस्कार मंत्र स्मरण कीया सो ऐसें कीएं तौ निःकांक्षित गुण का अभाव होइ
निदानबंध नामा आर्त्तध्यान होइ पाप ही का प्रयोजन अंतरंग विषै है तातैं पाप ही का बंध होइ।। परंतु मो
हित होइ करि भी बहुत पापबंध का कारण कुदेवादिक का तौ पूजनादि न कीया इतनी वाका गुणग्रह
ण करि वाकी प्रशंसा क[redacted]रिए है।। इस छल करि औरनि कौं लौकीक कार्यनि कै अर्थि धर्म्मसा
धन करनी युक्त नाहीं।। ऐसें ही अन्य जाननें।। [redacted]
[redacted]।। ऐसें ही अन्य कथन भी होइ ताकौं [redacted]
१ प्रथमानु योगविषै १ [redacted] यथार्थ सी भव जौ निन्न मरूपन होनी।। अब करणानुयोग विषै [redacted] किस
प्रकार व्याख्यान है सो कहिए है।। जैसें केवलज्ञान [redacted] करि जान्या तैसें करणानुयोग विषै व्या
ख्यान है।। बहुरि केवलज्ञान करि तौ बहुत जान्या [redacted] परंतु जीव कौं कार्यकारी जीव कर्मादिक का वा त्रि
लोकादिक का ही निरूपण या विषै हो है।। बहुरि तिनि का भी [redacted] स्वरूप [redacted] सर्व निरूपण न होइ सकै
तातैं जैसें वचनगोचर होइ छद्मस्थ के ज्ञान विषै उनका किछू भाव भासै तैसें संकोचन करि निरूपण
करिए है।। इहां उदाहरण।। जीव के भावनि की अपेक्षा गुणस्थान कहे ते भाव अनंत स्वरूप लीएं वचनगो
चर नाहीं तहां बहुत भावनि की एक जाति करि चौदह गुणस्थान कहे।। बहुरि जीव जाननें के अनेक प्रकार १७५
तिनि मुख्य चौदह मार्गणा का निरूपण कीया।। बहुरि कर्म परमाणू अनंत प्रकार शक्तियुक्त हैं तिन विषै बहुत
निकी एक जाति करि आठ वा एक सौ अड़तालीस प्रकृति कही।। बहुरि त्रिलोक विषै अनेक रचना हैं तिन ही
मुख्य केतीक रचना निरूपण करिए है।। बहुरि प्रमाण के अनंत भेद तहां संख्यातादि तीन भेद वा इनिकै इ
कईस भेद निरूपण कीए।। ऐसें ही अन्यत्र जाननी।। बहुरि करणानुयोग विषै [redacted]

350

178

।वस्तुके॥

यद्यपि सूक्ष्मकाल नानादिक अखंडित है तथापि छद्मस्थकौं [illegible] हीनाधिक ज्ञान होनेंकै अर्थि प्रदेश समय अविभागप्रतिछेदादिककी [illegible] कल्पना करि तिनिका प्रमाण निरूपिए है॥ वहुरि एक वस्तु विषैं जुदे जुदे गुणनिका [illegible] वा पर्यायनिका भेद करि निरूपण कीजिए है॥ वहुरि [illegible] जीव पुद्गलादिक यद्यपि भिन्न भिन्न है तथापि संबंधादिक करि [illegible] अनेक द्रव्य करि निपज्या गति जाति आदि भेद तिनकौं एक जीव के निरूपै है॥ इत्यादि व्यवहार नयकी प्रधानता लीए व्याख्यान जाननी॥ जातैं व्यवहार विना विशेष जांनि सकै नांही॥ वहुरि कहीं निश्चय वर्णन भी पाईए है। जैसें जीवादिक द्रव्यनिका प्रमाण निरूपण कीया सो जुदे जुदे इतने ही द्रव्य है॥ [illegible] तेई हैं सो यथार्थ तब जांनिलेंनी॥ वहुरि करणानुयोग विषै [illegible] जे कथन है [illegible] तेई हैं तिनिकौं आज्ञा प्रमाण करि माननें॥ [illegible] छद्मस्थकै अल्पज्ञ अनुमानादि गोचर होइ [illegible] न होइ [illegible] तिनिकौं आज्ञा प्रमाण करि माननें॥ [illegible]

[illegible]

जैसें जीव पुद्गलके स्थूल बहुत कालस्थायी मनुष्यादि

॥वहुरिजे॥

[illegible]

पर्यायवा [redacted] घटादिपर्यायनिरूपणकीएतिनिकातौप्रत्यक्षअनुमानादिहै इसकै।।बहुरिसम
ज्ञानादिकके दिक
यसमयप्रतिसूक्ष्मपरिणमनअपेक्षा [redacted] वा क्रियारूप [redacted] केअैसा [redacted] निरूपणकीएतेआज्ञाहीतैंप्रमाणहोइ।।अैसैंहीअन्यत्रजाननी।।बहुरिकरणानुयो
गविषैछद्मस्थनिकीप्रवृत्तिकेअनुसारिवर्णननांही।।केवलज्ञानगम्यपदार्थनिकानिरूपणहै।

ऽतौ इत्यादि का विचार करें हैं व्रतादि पालै हैंऽ

जैसैंकोईजीव [redacted] परंतुतिनकेअंतरंगसम्यक्तचारि
त्रशक्तिनाहीतातैं उनकौं मिथ्यादृष्टीअ [redacted] कहिएहै।।बहुरिकोई [redacted] वा निद्रादिकरि [redacted] निर्विचारहोइरहे हैं परंतु [redacted] उनकेसम्यक्तादि
शक्तिकासद्भाव है तातैं उनकौं सम्यक्ती वा [redacted] व्रतीकहिएहै।।बहुरिकोईजीवकै

ऽई जीव इत्यादि कका वा व्रतादि कका विचार रहित हैं अन्य कार्यनि विषै प्रवर्तै हैंऽ

ऽअरवाकेऽ

कषायनिकीप्रवृत्तितौ [redacted] घनीहै [redacted] अंतरंगकषायशक्तिथोरीहैतौ वाकौं मंदकषायीकहिएहै।।
अरकोईजीवकेकषायनिकीप्रवृत्तितौथोरीहै अरवाकेअंतरंगकषायशक्तिघनीहैतौवाकौंतीव्रकषा
यीकहिएहै।।जैसैंव्यंतरादिकदेवकषाय निर्तैं [redacted] नगरनाशा
दिकार्यकरतेनीतितिनिकैं पीतलेश्या [redacted] कही।।बहुरिएकेंद्रियादिक [redacted] जीवकषायकार्यकरतेदीसैनाहीतितिनिकैं कृष्णादिलेश्याकही।।बहुरिसर्वार्थसिद्धिकेदेवकषा

ऽथोरीकषाय शक्तितैं ऽबहुतकषाय शक्तितैंऽ

यरूपथोरेप्रवर्तैंतिनकै [redacted] बहुतकषायशक्तितैंअसंयमकह्या।।पंचमगुणस्थानीव्या
पारअब्रह्मादिकषायकार्यरूपबहुतप्रवर्तैंताकेंमंदकषायशक्तितैंदेशसंयमकह्या।।अैसैंहीअन्यत्र
जाननी।।बहुरिकोईजीवकैमनवचनकायकीचेष्टाथोरीहोतीदीसैतौ [redacted] कर्माकर्षणशक्तिकीअ
ऽतीऽ

179 A

१० करणानुयोग विषैं तौ यथार्थ पदार्थ जनावनेका मुख्य प्रयोजन है। आचरन करावनेकी मुख्यता नाहीं ॥

पदार्थनिका बहुत योग कह्या। काहू कै चेष्टा बहुत दीसै तौ भी शक्तिहीन होनेतें स्तोक योग कह्या। जैसें केवली गमनादि क्रियारहित भया तहां भी तिनकै योग बहुत कह्या। बेंद्रियादि जीव गमनादि करै है तौ भी तिनकै योग स्तोक कहे। ऐसें ही अन्यत्र जाननी। बहुरि कहीं जाका व्यक्त किछू न भासै तौ भी सूक्ष्म शक्ति के सद्भावतें ताका तहां अस्तित्व कह्या। जैसें मुनिकै अब्रह्म कार्य किछू नाहीं तौ भी नवम गुणस्थान पर्यंत मैथुन संज्ञा कही। अहमिंद्रनिकै [redacted] दुःखका कारण व्यक्त नाहीं तौ भी कदाचित् असाताका उदय कह्या। नारकीनिकै [redacted] सुखका कारण व्यक्त नाहीं तौ भी कदाचित् साताका उदय कह्या। ऐसें ही अन्यत्र जाननी। बहुरि करणानुयोग सम्यक्त्वनि ज्ञान चारित्रादिक धर्मका निरूपण कर्मप्रकृतिनिका उपशमादिककी अपेक्षा लीएं सूक्ष्म शक्ति जैसें पाईए तैसें गुणस्थानादि विषैं निरूपण करै है। वा सम्यग्दर्शनादिकके विषयभूत जीवादिक तिनिका भी निरूपण सूक्ष्म भेदादि लीएं करै है। इहां कोई करणानुयोग के अनुसारि [redacted] आप उद्यम करै तौ होइ नाहीं। [redacted]। तातें यहु तौ करणानुयोगादिकके अनुसारि प्रवर्तै। तिसतें तौ कार्य होना नाहीं है ऐसें स्वयमेव ही होइ है। जैसें आप तौ तत्वादिकका निश्चय करनेका उद्यम करै तातें स्वयमेव ही उपशम [redacted] सम्यक्त्व होइ। ऐसें ही अन्यत्र जाननी। [redacted] एक अंतर्मुहूर्त विषैं ग्यारवां गुणस्थान स्यों पडि क्रमतें मिथ्यादृष्टी होइ बहुरि चढि करि केवलज्ञान उपजावै। सो ऐसें सूक्ष्म भाव बुद्धिगोचर आवते नाहीं। तातें [redacted] करणानुयोगके अनुसारि [redacted] जैसा का तैसा जानि तौ लेअ, र प्रवृत्ति बुद्धिगोचर जैसें भला होइ तैसें करै। बहुरि करणानुयोग विषैं कहीं उपदेशकी मुख्यता लीए

[Left margin notes:] [redacted] सम्यक्त्वादिकके ॥

[Right margin note:] आप कर्मनिका उपशमादि कीया चाहै तौ कैसें होइ ॥

जीए

180

ःसर्वथा तैसैं ही न माननीः

व्याख्यान होइ ताकौं [redacted]॥ जैसैं हिंसादिकका उपायकौं कुमतिज्ञान कह्या॥ अन्यमतादि
कके शास्त्राभ्यासकौं कुश्रुतज्ञान कह्या॥ बुरा दीसै भला न दीसै ताकौं विभंगज्ञान कह्या सो [redacted]
इनिकै छोडनेंकौं उपदेश करि ऐसैं कह्या॥ तारतम्यतैं मिथ्यादृष्टीकै सर्व ही ज्ञान कुज्ञान है॥ सम्यग्दृष्टि
सम्यग्दृष्टि: कै सर्व ही ज्ञान सुज्ञान है॥ ऐसैं ही अन्यत्र जाननी॥ बहुरि कहीं स्थूल कथन कीया होइ ताकौं तारतम्यरूप
न जाननी॥ जैसैं व्यासतैं तिगुणी परिधि कहिए॥ सूक्ष्मपनैं किछू अधिक तिगुणी हो है॥ ऐसैं ही अन्यत्र जाननी॥
बहुरि कहीं मुख्यताकी अपेक्षा व्याख्यान होइ ताकौं सर्वप्रकार न जाननी॥ जैसैं मिथ्यादृष्टि सासादनगुण
स्थानवालेकौं पापजीव कहे। [redacted] असंयतादि गुणस्थानवालेकौं पुण्यजीव कहे सो मुख्यपनैं
ऐसैं [redacted] कहे तारतम्यतैं दोऊनिकै [redacted] पापपुण्य यथासंभव पाइए है॥ ऐसैं ही अन्यत्र जाननी॥
[redacted] ऐसैं ही और भी नानाप्रकार पाइए है ते यथासंभव जानने॥ ऐसैं करणानुयोगविषै व्या
ख्यानका विधान दिखाया॥ अब चरणानुयोगविषै दिखाइए है॥ चरणानुयोगविषै जैसैं जीवनिकैं ध ःअपनी बुद्धिगोचरः
र्मका आचरन होइ सो उपदेश दीया है॥ तहां धर्म तौ निश्चय [redacted] रूप मोक्षमार्ग है सोई है ताके साध
नादिक [redacted] उपचारतैं धर्म [redacted] है सो [redacted] व्यवहारनयकी प्रधानताकरि [redacted] नानाप्रकार [redacted]
[redacted] उपचार धर्मके भेदादिक याविषै निरूप
ण करिए है॥ जातैं निश्चय धर्मविषै तौ किछू ग्रहणत्यागका विकल्प नाहीं॥ अर याकै नीचली अवस्थावि
ःइस जीवकौं षै विकल्प छूटता नाहीं तातैं धर्मविरोधी कार्यनिकौं [redacted] छुडावनेंकौं अर धर्मसाध
नादिकार्यनिके ग्रहण करा[redacted]वनेंकौं उपदेश याविषै है॥ सो उपदेश दोय प्रकार [redacted] दीजिए है॥ एक तौ
[redacted] व्यवहार [redacted] हीकौ उपदेश दीजिए है॥ एक निश्चयसहित व्यवहारका उपदेश दीजिए है॥ तहां [redacted] जि

१८०

१८० प

[redacted]

निजीवनिकै निश्चयका ज्ञान नाही है वा उपदेश दीए भी होता न दीसै ऐसे मिथ्यादृष्टी जीव किछू धर्मकौं सन्मुख भए तिनिकौं व्यवहार ही का उपदेश [redacted] दीजिए है। जातैं श्रीगुरु सर्व जीवनिके उपकारी हैं सो असंज्ञी जीव [redacted] तौ उपदेश ग्रहनें योग्य नाही तिनिका तौ उपकार इतनौ ही कीया और जीवनिकौं तिनिकी दया का उपदेश दीया॥ बहुरि जे [redacted] जीव कर्म प्रबलतातैं मोक्षमार्गकौं प्राप्त होइ सकै नाही तिनिकौं [redacted] इतनौ ही उपकार कीया जो उनकौं व्यवहार धर्मका उपदेश देइ कुगतिके दुःखनिके कारण [redacted] सुगतिके [redacted] इंद्रिय सुखनिका कारण पुण्य कार्यनि विषै लगाया। जेता दुःख मिट्या तितना ही उपकार भया॥ [redacted] बहुरि पापीकै तौ पाप वासना ही रहै अर कुगति विषै जाय तहां धर्मकौ निमित्त नाही तातैं परंपरा दुःख ही कौं पाया करै अर [redacted] पुण्यवानकै धर्म वासना रहै अर सुगति विषै जाय तहां धर्मकौ निमित्त पाईए तातैं परंपरा सुखकौं पावै अथवा कर्मशक्ति हीन होइ जाय तौ मोक्षमार्गकौं भी प्राप्त होइ जाइ तातैं [redacted] व्यवहार उपदेशकरि [redacted] पापतैं छुडाय पुण्य कार्यनि विषै लगाइए है॥ बहुरि जे जीव मोक्षमार्गकौं प्राप्त भए वा प्राप्त होनें योग्य हैं तिनिका [redacted] ऐसा उपकार कीया जो उनकौं निश्चय सहित व्यवहार का उपदेश देइ मोक्षमार्ग विषै [redacted] प्रवर्त्ताए॥ [redacted] ॥ श्रीगुरु तौ सर्वका ऐसा ही उपकार करै परंतु जिनि जीव

॰निश्चय॰

॰पापकार्य छुडाय॰

॰बहुरि तिनि जीवनि निश्चय व्यवहारकौं [redacted] है॥ वा उपदेश दीए तिनका ज्ञान होता दीसै है ऐसे सम्यग्दृष्टी जीव वा सम्यक्त्वकौं सन्मुख मिथ्यादृष्टी जीव तिनिकौं निश्चय सहित व्यवहार का उपदेश दीजिए है॰

[redacted]

355

(8)

व्यवहार

निकौं ऐसा उपकार न बनै तौ श्रीगुरु कहा करैं। जैसा बनै तैसा ही उपकार कीया॥ तातैं दोय प्रकार
उपदेश दीजिए है॥ तहां व्यवहार उपदेशविषै तौ बाह्य क्रियानि ही की प्रधानता है।
तिनका उपदेशतैं जीव पापक्रिया छोडि पुण्यक्रियानिविषै प्रवर्तै। तहां क्रिया के अनुसारि परिणाम
भी तीव्र कषाय छोडि किछू मंदकषायी होइ जाइ सो मुख्यपनैं तौ ऐसे है कोई कै न होइ तौ मति होउ (बहुरि)
श्रीगुरु तौ परिणाम सुधारने के अर्थि बाह्यक्रिया कौं उपदेशै हैं। बहुरि निश्चयसहित व्यवहार का
(बाह्यक्रिया निः) उपदेशविषै परिणामनि ही की प्रधानता है। ताका उपदेशतैं
तत्त्वज्ञान का अभ्यासकरि वा वैराग्यभावना करि परिणाम सुधारै। तहां परिणाम के अनु
(बाह्य) सारि क्रिया भी सुधरि जाय॥ परिणाम सुधरैं बाह्यक्रिया सुधरै ही सुधरै तातैं श्रीगुरु परिणाम सुधा
रने कौं मुख्य उपदेशै है॥ ऐसैं दोय प्रकार उपदेशविषै जहां व्यवहार ही का उप
देश होइ तहां सम्यग्दर्शन के अर्थि अरहंत देव निर्ग्रंथ गुरु दयाधर्म कौं ही मानना और कौं
न मानना। बहुरि जीवादिक तत्त्वनि का व्यवहार स्वरूप कह्या है तिनका
श्रद्धान करना। शंकादिक पचीस दोष न लगावनें॥ निःशंकितादिक अंग वा संवेगादिक गुण पालनें इत्या
दि उपदेश दीजिए है॥ बहुरि सम्यग्ज्ञान के अर्थि जिनमत के शास्त्रनि का अभ्यास करना॥ अर्थ व्यं (१८१)
जनादिक अंगनि का साधन करना इत्यादि उपदेश दीजिए है॥ बहुरि सम्यक्चारित्र के अर्थि
एकोदेश वा सर्वदेश हिंसादि पापनि का त्याग करना॥ व्रतादिक अंगनि कौं पालनें इत्या
(विशेष धर्मका साधन न होता जानि) दि उपदेश दीजिए है॥ बहुरि कोई जीवकौं एक आखडी आदिक ही का उपदेश दीजिए है। जैसें भीलकौं काग
लाका मांस छुडाया॥ गुवालिया कौं नमस्कार मंत्र जपन का उपदेश दीया॥ गृहस्थ कौं चैत्यालय पूजा प्र

ताका भी निरूपण करिए है

भावनादि कार्य का उपदेश दीजिए है॥ इत्यादि जैसा जीव होइ ताकौं तैसा उपदेश दीजिए है॥ बहुरि जहां
निश्चय सहित व्यवहार का उपदेश होइ तहां सम्यग्दर्शन के अर्थि यथार्थ तत्वनि का श्रद्धान कराइए है।
[redacted] तिनका जो [redacted] निश्चय स्वरूप है सो [redacted] तार्थ [redacted] है। व्यवहार स्वरूप है [redacted] उ
पचार [redacted] है ऐसा श्रद्धान लीए [redacted]। [redacted] स्वपर का भेदवि
ज्ञान [redacted] करि परद्रव्य विषै रागादि छोडने का [redacted] प्रयोजन लीए [redacted] तिनि तत्वनि का श्रद्धान
करनें का उपदेश दीजिए है॥ ऐसे श्रद्धान तैं [redacted] अरहंतादि विना अन्य देवादिक झूठ भासै तब तिनि
का मानना छूटै है। बहुरि सम्यग्ज्ञान के अर्थि संसयादि रहित तिन ही तत्वनि कौं तैसें ही जानने का
उपदेश दीजिए है [redacted] तिस जानने कौं कारण जिनशास्त्रनि का अभ्यास है तातैं तिस प्रयोजन कूं [redacted] जि
नशास्त्रनि का भी अभ्यास स्वयमेव होइ है॥ बहुरि सम्यक्चारित्र के अर्थि रागादि [redacted] दूरि करनें का उपदे
श दीजिए है। [redacted] तहां एकदेश वा सर्वदेश तीव्र रागादिक का अभाव भए एकदेश सर्वदेश पापक्रि
या छूटै है श्रावक मुनिके व्रतनि की प्रवृत्ति होइ है [redacted] बहुरि मंद रागादिकनि का भी अभाव भए शुद्धोप
योग की प्रवृत्ति होइ है ताका निरूपण करिए है॥ बहुरि यथार्थ श्रद्धान लीए सम्यग्दृष्टीनि कै जैसें यथा
र्थ [redacted] कोई आखडी होइ है॥ वा [redacted] भक्ति होइ है वा पूजा प्रभावनादि कार्य होइ है [redacted]
वा ध्यानादिक होइ है तिनिका [redacted] उपदेश दीजिए है॥ जैसें [redacted] सौ जिनमत विषै सांची परंपरा मा
र्ग है तैसा उपदेश दीजिए है॥ ऐसें दोय प्रकार उपदेश चरणानुयोग विषै जाननां॥ बहुरि चरणानुयोग
विषै तीव्रकषायनि का कार्य छुडाय मंदकषायरूप कार्य करनें का उपदेश दीजिए है। यद्यपि कषाय करनी बुरा
ही है तथापि सर्वकषाय न छूटते जानि जेते कषाय घटै तितना ही भला होगा ऐसा प्रयोजन [redacted] त
ही जाननां॥ जैसें जिनि जीवनि कै आरंभादि करनें की वा मंदिरादि बनावनें की वा विषय सेवनें की वा क्रोधादि

ताका निरूपण करिए है

स्वयमेव

के अर्थि

[redacted] तिनिके निमित्ततैं होती थी जिस

182

[redacted]

करनेंकी इछा [redacted] धा इहरि न होती जो तितिनकौं पूजा प्रभावना दानादिक करनेंका वा देव्यालयादि बना
वनेंका [redacted] जिनदेवादिककै आगें नृत्यगानादि करनेंका वा [redacted] धर्मात्मा पुरुषनिकी सहा
यादि करनेंका उपदेश दीजिए है। जातैं इनि विषै परंपरा कषायका पोषण न हो है। पापकार्यनि विषै परंप
रा [redacted] कषाय पोषण हो है तातैं पापकार्यनि [redacted] छुडाय इनि कार्यनि विषै लगाईए है। बहुरि थोरा
बहुत जेता छूटता जानैं तितनी पापकार्य छुडावनेंका तिनकौं उपदेश दीजिए है। बहुरि [redacted] जिनि जीवनि
कै सर्वथा आरंभादिककी इछा दूरि भई तिनकौं पूर्वोक्त पूजादिक कार्य वा सर्व पापकार्य छुडाय महाव्रता
दिक्रियानिका उपदेश दीजिए है। बहुरि [redacted] किंचित रागादिक [redacted] दयाधर्मोपदेश [redacted] प्रतिक
मणादि कार्य करनेंका उपदेश दीजिए है। जहां सर्व राग दूरि होइ तहां किछू करनेंका कार्य ही रह्या नाहीं। तिनि
कौं [redacted] उपदेश ही नाहीं। ऐसैं क्रम जाननां। बहुरि चरणानुयोग विषै [redacted]
[redacted] कषायी जीवनि
कौं कषाय [redacted] छुडाईए है। अर धर्मविषै लगाईए है। जैसैं पापका फल नरकादिकके दुख दिखा
इ तिनिकौं भयकषाय उपजाय [redacted] पापकार्य छुडाईए है। बहुरि पुन्यका फल स्वर्गादिकके सुख दिखा
इ तिनिकौं लोभकषाय उपजाय धर्मकार्यनि विषै लगाईए है। बहुरि [redacted]
~~तिनिकौं जुगुप्साकषाय उपजाय शरीरादिककौं उदास करिए है। बहुरि पुत्रादिककौं धनादिक~~
[redacted] ~~ग्राहक दिखाइ तिनकौं~~ [redacted] ~~द्वेष उपजाय पुत्रादिकतैं उदास करिए है।~~ [redacted] शरीर पुत्र ध
नादिकके अनुरागतैं पाप करै है धर्मपराङ्मुख रहै है [redacted] तातैं इंद्रियविषयनिकौं मरणक्लेशादिकके का
रण दिखावनें करि [redacted] तिनि विषै [redacted]। शरीरादिककौं अशुचि दिखावनें करि
तहां जुगुप्साकषाय कराईए है। पुत्रादिककौं धनादिकके ग्राहक दिखाइ इहां द्वेष कराईए है। बहुरि धनादि

१ यथासंभव अणुव्रतादि पालें

२ छूटता न जी तिनिकौं

३ उपजाय ... पापकौं

१ तातैं

१ [redacted]

१०२

१ यह जीव इंद्रियविषय

२ अरति कषाय कराई है

[redacted]

182/A

१ ऐसैं ही अन्य उदाहरण जानवें ॥

२ क्रिया ॥

कको मरण [redacted] दिक का कारण दिखाइ तहाँ अनिष्ट बुद्धि कराईए है ॥ इत्यादि उपायतैं [redacted] तीव्रराग [redacted] दूरि होनें [redacted] कारि तिनिकै पाप [redacted] छूटि धर्म [redacted] विषै प्रवृत्ति हो है ॥ बहुरि [redacted] नामस्मरण स्तुतिकरण पूजा दान शीलादि कतैं इस लोक विषै दरिद्र [redacted] कष्ट दुख दूरि हो है ॥ पुत्र धनादिककी प्राप्ति हो है ऐसैं निरूपण करि तिनकै लोभ उपजाय तिनि धर्मकार्यनि विषै लगाईए है ॥ इहाँ प्रश्न जो कोई कषाय छुड़ाय कोई कषाय करावनें का प्रयोजन कहा ॥ ताका समाधान ॥ जैसैं रोग तौ शीतांग भी है अर ज्वर भी है परंतु काईकै शीतांगतैं मरण होता जानें तहाँ वैद्य [redacted] है सो वाकै [redacted] ज्वर होनें का उपाय करै ज्वर भए पीछैं वाके जीवनें की आशा होइ तब [redacted] पीछैं ज्वरके भी मेटनें का उपाय करै । तैसें [redacted] कषायतैं [redacted] सर्व हो है परंतु [redacted] जीवनिकै [redacted] कषायनितैं पापकार्य होता जानें तहीं श्रीगुरु है सो उनकै [redacted] पुण्यकार्य को कारणभूत कषाय होनें का उपाय करै पाछैं वाकै सांची धर्मबुद्धि भई जानें तब पीछैं तिस कषाय मेटनें का उपाय करै है ॥ ऐसा प्रयोजन जाननी ॥ बहुरि चरणानुयोग विषै जैसें जीव पाप छाडि धर्म विषै लागै तैसें अनेक युक्ति करि वर्णन करिए है ॥ तहाँ लौकिक दृष्टांत युक्ति उदाहरण न्याय प्रवृत्तिकै द्वारि समझाईए है वा कहीं अन्यमत के भी उदाहरणादि कहिए है ॥ [redacted] जैसैं सूक्तिमुक्तावली विषै लक्ष्मीकों कमलवासिनी [redacted] कही वा [redacted] समुद्र विषै विष अर लक्ष्मी उपजे तिस अपेक्षा विषकी [redacted] लक्ष्मी कही ऐसैं ही अन्यत्र [redacted] कहिए है ॥ तहाँ केई उदाहरणादिक झूठे भी है परंतु प्रयोजनको पोषै है तातैं दोष नाहीं ॥ इहाँ कोऊ कहै कि झूठका तौ दोष लागै ताका उत्तर जो झूठ भी है अर सांचा प्रयोजनकों

ज्व

१ केई ॥

१ विषयादिक विषै ॥

१ सांचा ॥

पोषै तौ वाकौं झूठ न कहिए [redacted] (बहुरि) सांच नाही है। अर झूठा प्रयोजन कौं पोषै तौ वह झूठ ही है॥ अलंकार युक्ति [redacted]
नामादिक विषै वचन अपेक्षा झूठ सांच नाहीं॥ प्रयोजन अपेक्षा झूठ सांच है॥ जैसैं [redacted]
[redacted] तुच्छ सोभा सहित नगरी कौं इंद्रपुरी के समान कहिए है॥ सो झूठ है परंतु सोभा का प्रयोजन कौं पोषै है
तातैं झूठ नाहीं॥ बहुरि [redacted] (इस) नगरी विषै छत्रही कै दंड है अन्यत्र नाहीं। ऐसा कह्या सो झूठ है अन्यत्र भी [redacted]
दंड देना पाइए है परंतु तहां अन्यायवान थोरे हैं [redacted] (वानकौं) न्यायवान दंड न दीजिए है ऐसा प्रयोजन कौं पोषै है तातैं झू-
ठ नाहीं॥ बहुरि [redacted] बृहस्पति का नाम सुरगुरु [redacted] लिखै वा मंगल का नाम कुज लिखै सो
ऐसे नाम अन्यमत अपेक्षा है [redacted] इनिकौं [redacted] (अक्षरार्थ) वर्ड्ड है सो झूठ है परंतु [redacted] वह नाम तिस पदार्थ का
अर्थ प्रगट करै है तातैं झूठ नाहीं॥ ऐसैं ही अन्यमतादिक के उदाहरण दीजिए है तो झूठ है परंतु उदाहरणा-
दिक का तौ श्रद्धान करावना है नाहीं श्रद्धान तौ प्रयोजन का करावना है सो प्रयोजन सांचा है तातैं दोष नाहीं है।
बहुरि करणानुयोग विषै [redacted] छद्मस्थ की बुद्धिगोचर [redacted] उपदेश दीजिए है॥ (बहुरि) केवलज्ञान [redacted] गोचर
सूक्ष्मपनी की अपेक्षा (न दीजिए है जातैं तिसका) आचरन न होइ सकै इहां आचरन करावने का प्रयोजन है। [redacted]
[redacted]॥ जैसैं अणुव्रती कै त्रसहिंसा का त्याग कह्या [redacted] अर वाकै स्त्रीसेवनादि क्रिया-
निविषै त्रसहिंसा हो है यह भी जानै है जिनवानी विषै इहां त्रस कहे हैं॥ परंतु याकै त्रस मारने की बुद्धि नाहीं
अर लोक विषै [redacted] नाहीं तातैं तिस अपेक्षा वाकै त्रसहिंसा का त्याग है॥ [redacted]
[redacted] बहुरि मुनि कै स्थावर हिंसा का भी त्याग कह्या सो मुनि पृथ्वी
जलादि विषै गमनादि करै है तहां सर्वथा त्रस का भी अभाव नाहीं जातैं त्रस जीवनि की भी अवगाहना [redacted] ऐसी छो-
टी हो है जो दृष्टिगोचर न आवै अर तिनकी स्थिति पृथ्वी [redacted] जलादि विषै ही है सो मुनि [redacted] जिन-
वानी तैं जानै है वा कदाचित् अवधिज्ञानादि करि भी जानै है॥ परंतु [redacted] याकै स्थावर त्रस हिंसा का अभिप्रा-

१ स्थूलपनी की अपेक्षा ही। [redacted] लोक प्रवृत्ति की मुख्यता लीए १

[redacted]

१ अभिप्राय १ १८२

५ जाका नाम त्रसघात है ताकौं करै ४   १ प्रमाद तैं १

२स्थूल त्रसनिकै पीडनें कानाम [redacted] — २है [redacted] ताकौं न करै१

अनी ही॥ बहुरि लोकविषै त्रसनिकी उदनी अप्रासुकजल [redacted] तैं क्रिया करनी [redacted] इत्यादि प्रवृत्ति [redacted] कानाम

[redacted] स्थावरहिंसा [redacted] त्रसहिंसा [redacted] तातैं मु

निकै सर्वथा हिंसा का त्याग कहिए है। बहुरि ऐसे ही अनृत स्तेय अब्रह्म परिग्रह का त्याग क [redacted] ह्या

अर केवलज्ञान का जानने की अपेक्षा असत्य वचन योग बारवा गुणस्थान पर्यंत कह्या॥ अ [redacted] दत्त कर्म

१परद्रव्य१ परमाणु आदिक का ग्रहण तेरवां गुणस्थान पर्यंत है [redacted]। वेदका उदय नवमा गुणस्थान पर्यंत है [redacted]॥ अंत

रंग परिग्रह [redacted] दशवां गुणस्थान पर्यंत है [redacted] बाह्य परिग्रह समवसरणादि केवली कै ही है।

परंतु प्रमाद तैं पापरूप [redacted] अभिप्राय नाहीं। अर लोकप्रवृत्तिविषै झूठ बोलै है चोरी करै १जिनि क्रिया निकरि१

है कुशील सेवै है परिग्रह राखै है अ [redacted]

[redacted] है नाहीं॥ तातैं अनृतादिक का इनिकै त्याग कहिए है। बहुरि जैसैं मुनिकै मूलगुणनिविषै पंच इं

द्रियनिके विषयका त्याग कह्या॥ सो जाननी तौ इंद्रियनिका मिटै नाहीं अर विषयनिविषै राग द्वेष सर्व

था दूरि भया [redacted] होइ तौ यथाख्यात चारित्र होइ जाय सो भया नाहीं परंतु विषय [redacted] १स्थूलपनैं१

इच्छा का अभाव भया॥ अर बाह्य विषय सामग्री मिलावने की प्रवृत्ति दूरि भई तातैं याकै इंद्रिय विषयका

त्याग [redacted] कह्या॥ ऐसैं ही अन्यत्र जाननी॥ बहुरि व्रती जीव त्याग [redacted] करै है सो चरणानुयोग की [redacted] १बाह्याचरन

[redacted] पद्धति अनुसारि [redacted] वा लोकप्रवृत्ति [redacted] कै अनुसारि त्याग करै है॥ [redacted]

जैसैं [redacted] का हनै त्रसहिंसा का त्याग कीया तहां चरणानुयोगविषै वा लोकविषै जाकौं त्रसहिं

सा कहिए है [redacted] ताका त्याग कीया है। केवलज्ञानादिकरि जे त्रस देखिए है तिनिकी हिंसा [redacted] का त्याग

[redacted] बनै ही नाहीं॥ तहां [redacted] त्रसहिंसा का त्याग कीया तिस रूप मन का विकल्प न करना सो

१जिम१

३ केवलज्ञान अपेक्षा

मन करि त्याग है बचन न बोलनी सो बचन करि त्याग है ।। [redacted] काय करि न प्रवर्त्तनी सो काय क
रि त्याग है ।। ऐसैं अभ्यंतर त्याग द्रव्य ग्रहण होइ है सो ऐसी पद्धति लीयें होइ है ऐसा जाननी ।। [redacted] इहां प्र
श्न जो करणानुयोग विषै तौ तारतम्य कथन है तहां छठै गुणस्थानि सर्वथा बारह अविरतिनिका अ
भाव कह्या सो कैसैं कह्या ।। ताका उत्तर ।। अविरति जो योग कषाय विषै गर्भित थे परन्तु तहां भी [redacted]
[redacted] चरणानुयोग अपेक्षा त्यागका अभाव तिसही का नाम अविरति कह्या है ।। तातैं तहां तिनिका अ
भाव है [redacted] मन अविरतिका अभाव कह्या सो मुनिकै मन के विकल्प हो
है परन्तु स्वेच्छाचारी मनकी पापरूप प्रवृत्तिके अभावतैं मन अविरतिका अभाव कह्या है ऐसा जाननी ।। बहुरि चरणानु
योग विषै व्यवहार लोक प्रवृत्ति अपेक्षा ही नामादिक कहिए है ।। जैसैं सम्यक्त्वीकौं पात्र कह्या ।। मिथ्यात्वीकौं अपा
त्र कह्या सो इहां जाकै जिन [redacted] देवादिकका श्रद्धान [redacted] पाईए सो तौ सम्यक्त्वी जाकै [redacted] तिनका श्र
द्धान नांही सो मिथ्यात्वी जाननी ।। [redacted] जातैं दान देना चरणानुयोग विषै कह्या है सो चरणानुयोग ही के स
म्यक्त्व मिथ्यात्व ग्रहण करनें ।। करणानुयोग अपेक्षा सम्यक्त्व मिथ्यात्व ग्रहें वो ही जीव ग्यारह वें गुणस्थान था वो ही अंत
र्मुहूर्त्त मैं पहले गुणस्थान आवै तहां दातार पात्र अपात्रका कैसैं निर्णय करि सकै ।। बहुरि द्रव्यानुयोग अपेक्षा
सम्यक्त्व मिथ्यात्व ग्रहें [redacted] मुनिसंघ विषै द्रव्यलिंगी भी है भावलिंगी भी है [redacted] सो प्रथम तौ तिनिका ठीक हो १०४
ना कठिन है जातैं बाह्य प्रवृत्ति समान है ।। अर जो कदाचित सम्यक्त्वीकौं कोई चिह्न करि ठीक पडै अर वह
वाकी भक्ति न करै तब औरनिकै संसय होइ याकी भक्ति क्यों न करी ऐसैं वाका मिथ्यादृष्टिपना प्रगट होइ
तब संघ विषै वि[redacted]रोध उपजै तातैं इहां व्यवहार सम्यक्त्व मिथ्यात्वकी अपेक्षा कथन जाननी ।। इहां
कोई प्रश्न करै सम्यक्त्वी तौ द्रव्यलिंगीकौं आपतैं हीनगुणयुक्त मानै है ताकी भक्ति कैसैं करै ।। ताका समाधान ।। तातैं [redacted]
व्यवहार धर्मका साधन द्रव्यलिंगीकै बहुत है अर [redacted] भक्ति करनी सो भी व्यवहार ही है

१ कुल अपेक्षा बडा जानि ताका २

जैसें कोई धनवान् होइ परन्तु जो कुल विषै बडा होइ ताकौं सत्कार करैं तैसें [redacted] आप सम्यक्त्व गुण सहि
त [redacted] है परन्तु जो व्यवहार धर्म विषै प्रधान होइ ताकौं व्यवहार [redacted] धर्म अपेक्षा गुणाधिक मानि ताकी
भक्ति करै है॥ [redacted] ऐसा जाननां॥ बहुरि ऐसें ही जो जीव बहुत उपवासादि करै ताकौं तपस्वी कहि
ए है॥ यद्यपि कोई ध्यान अध्ययनादि विशेष करै है सो उत्कृष्ट तपस्वी है॥ तथापि [redacted] इहाँ
चरणानुयोग विषै बाह्य तप ही की प्रधानता है ताते तिस ही कौं तपस्वी कहिए है॥ याही प्रकार अन्य [redacted]
[redacted] नामादिक जाननें॥ [redacted] ऐसें ही अन्य अनेक प्रकार लीएं चरणानुयोग
विषै व्याख्यान का विधान जाननां॥ अब द्रव्यानुयोग विषै कहिए है॥ जीवादि द्रव्य [redacted] निका यथार्थ श्र — १ जीवनिकै २
द्धान [redacted] जैसें होइ तैसें [redacted] विशेष [redacted] काइ ही निरूपण कीजिए है॥ जातैं या विषै य — १ युक्ति हेतु दृष्टा न्तादिक २
थार्थ श्रद्धान करावने का प्रयोजन है॥ तहाँ यद्यपि जीवादि वस्तु अभेद है तथापि तिनि विषै भेद कल्प
नाकरि द्रव्य गुण पर्यायादिक का भेद [redacted] निरूपण कीजिए है॥ बहुरि [redacted] प्रतीति आनावने के अ
र्थि अनेक युक्ति करि उपदेश दीजिए है अथवा प्रमाण नय करि उपदेश दीजिए सो भी युक्ति है॥
[redacted] बहुरि वस्तु का अनुमान [redacted] प्रत्यभिज्ञानादिक करनैं कौं हेतु दृष्टा
न्तादिक दीजिए है॥ ऐसें तहाँ वस्तु की [redacted] प्रतीति करावनें कौं उपदेश दीजिए है॥ बहुरि मोक्षमा — १ इहाँ २
र्ग का श्रद्धान करावनें के अर्थि जीवादि तत्त्वनि का [redacted] निरूपण कीजिए है तहाँ [redacted]
[redacted] स्व पर भेद विज्ञानादिक जैसें होइ तैसें जीव अजीव का निर्णय कीजिए है॥ ब

(Left margin notes:) १ [redacted] युक्ति [redacted] — १ व्यवहारतैं २ — [redacted] नी [redacted] — १ विशेष युक्ति हेतु दृष्टान्तादिकरि २

बहुरि वीतराग भाव जैसैं होइ तैसैं आश्रवादिक का स्वरूप दिखाईए है।। बहुरि तहीं मुख्यपनैं [redacted]
[redacted] ज्ञान वैराग्य कौं कारण आत्म अनुभवनादिक ताका महिमा गाईए है।। बहुरि [redacted]
[redacted] अर बाह्य क्रियाकांड विषै मग्न है तिनकौं तहीं तैं उदास करि आत्मअनुभवनादि विषै लगावनें कौं
व्रत शील संयमादिक का हीनपनौ प्रगट कीजिए है।। तहां ऐसा न जांनिलेनां जो इनिकौं छोडि पाप विषै ल
गनौं।। [redacted] जातैं तिस उपदेश का प्रयोजन अशुभ विषै लगावनें का नाहीं है।। शुद्धोपयोग
विषै लगावनें कौं शुभोपयोग का निषेध कीजिए है।। इहीं कौ ऊ कहै है कि [redacted] पुण्य पाप समान क
हे हैं तातैं शुद्धोपयोग होइ तौ तौ भला ही है।। न होइ तौ पुण्य विषै लगौ वा पाप विषै लगौ।। ताका उत्तर।।
जैसैं शूद्र जाति अपेक्षा जाट चांडाल समान कहे परंतु [redacted] चांडाल तैं जाट किछू उत्तम है
वह अस्पृश्य है वह स्पृश्य है।। तैसैं बंध कारण अपेक्षा पुण्य पाप समान है।। परंतु पाप तैं पुण्य किछू भ
ला है।। वह [redacted] तीव्र कषाय रूप है वह मंद कषा
य रूप है।। ऐसा जाननौं।। बहुरि [redacted] जे जीव [redacted] जिन बिंब भक्त्यादि कार्यनि विषै ही मग्न हैं [redacted] तिनि
कौं [redacted] आत्मश्रद्धानादिक करावनें कौं देह विषै देव है देहुरा विषै नाहीं इत्यादि उपदेश दीजिए है
तहां ऐसा न जांनि लेनौं।। जो भक्ति छुडाय भोजनादिक तैं आपकौं सुखी करनौं।। जातैं तिस
उपदेश का प्रयोजन ऐसा नाहीं है।। ऐसैं ही अन्य व्यवहार [redacted] का निषेध तहां कीया होइ ताकौं जांनि
प्रमादी न [redacted] होनौं।। [redacted]
[redacted] ऐसा जाननौं जे केवल व्यवहार साधन विषै मग्न हैं तिनिकौं निश्चय रुचि करावनें कै अर्थि व्यवहार कौं हीन
दिखाया है।। बहुरि तिनि [redacted] ही शास्त्रनि विषै सम्यग्दृष्टी के विषय भोगादिक कौं निर्जरा का कारण कह्या है

१ बंधका कारण न कह्या

× तातैं पुण्य छोडि पाप विषै लगनौं युक्त नाहीं।

२ द्रव्यानुयोग विषै [redacted] निश्चय अध्यात्म उपदेश की प्रधानता है [redacted] इत ही व्यवहार धर्म कौ निषेध कीजिए है [redacted] जे जीव आत्मानुभवन के उपाय कौं न करै हैं ×

185 P

२ जोगादिक कौं होत संतै जीव १

[redacted] सो इहाँ जोगनि का उपादेयपनौ [redacted] नां नि लैनौ।। सम्यग्दृष्टि का महिमा दिखावनें कौं
जिते अबंधके कारण जोगादिक प्रसिद्ध थे तिनकौं [redacted] प्रधान शक्ति के बलतैं संवर होने लागा [redacted] ता
कौं गिन्यां नाहीं [redacted] तिस ही बलतैं निर्जरा विशेष होनें लगी [redacted]
[redacted] तातैं उपचारतैं जोगनिकौं भी बंधका कारण न कह्या निर्जरा का कारण कह्या।। [redacted] विचार
कीए जोग निर्जरा के कारण होइ तौ तिनकौं छोडि सम्यग्दृष्टी मुनिपदका ग्रहण काहे कौं करै।। इहां इस कथ
१ जो केवल तैं १ नका इतना ही प्रयोजन है देखो सम्यक्त की महिमा जोग भी अपनें गुण कौं न करि सकै है।। [redacted] याही प्र
कार और भी कथन होइ ताका यथार्थपनौ जानि लैनौ।। बहुरि द्रव्यानुयोग विषै [redacted] भी चरणा
नुयोगवत् ग्रहण त्याग करावनें का प्रयोजन है तातैं छद्मस्थ के बुद्धिगोचर परिणामनि की अपेक्षा ही
तहाँ कथन कीजिए है।। [redacted] इतना विशेष है जो चरणानुयोग विषै तौ बा
ह्यक्रिया की मुख्यता करि वर्णन करिए है।। द्रव्यानुयोग विषै आत्म परिणामनि की मुख्यता करि निरू
पण कीजिए है।। बहुरि करणानुयोगवत् [redacted] सूक्ष्म वर्णन न कीजिए है [redacted]।। ताके उ
दाहरण कहिए है।। उपयोग के [redacted] शुभ
अशुभ शुद्ध ऐसैं तीन भेद कहे।। तहाँ [redacted] धर्मानुरागरूप परिणाम सो शु
(परिणाम)
भोपयोग अर पापानुराग रूप वा द्वेषरूप [redacted] सो अशुभोपयोग।। रागद्वेषरहित परिणाम सो शु
द्धोपयोग ऐसैं कह्या।। सो इस छद्मस्थ के परिणामनि की अपेक्षा यहु कथन है।। [redacted] करणानुयोग विषै
१ बुद्धिगोचर १ कषाय शक्ति अपेक्षा गुणस्थानादि विषै [redacted] संक्लेश विशुद्ध परिणाम अपेक्षा निरूपण कीया है सो
विवक्षा इहाँ नाही है।। करणानुयोग विषै तौ शुद्धोपयोग [redacted] यथाख्यात चारित्र

१ रागादि रहित १

न ऐ हो इ सो [redacted] मोहका मंदतातैं स्वयमेव होसी॥ नीचली अवस्थावाला शुद्धोपयोग का [redacted] साधन कैसैं करै॥ अर द्रव्यानुयोग विषै शुद्धोपयोग करने ही का उपदेश प्रधान है तातैं इहाँ छद्मस्थ जिनि क्रिया आदि हिंसा आदि कार्यरूप परणामनिकौं छुडाय आत्मा [redacted] नुभवनादि कार्यनिविषै प्रवर्तै तिसकालि शुद्धोपयोग कहिए॥ यद्यपि इहाँ केवलज्ञानगोचर सूक्ष्म रागादिक है तथापि ताकी विवक्षा इहाँ न करी॥ अपनी बुद्धिगोचर रागादिक छोडे तिस अपेक्षा याकौं शुद्धोपयोगी कह्या॥ ऐसे ही स्वपर श्रद्धानादिक भए सम्यक्त्वादिक कहे सो बुद्धिगोचर अपेक्षा निरूपण है॥ सूक्ष्म भावनिकी अपेक्षा गुणस्थानादि विषै सम्यक्त्वादिकका निरूपण करणानुयोग विषै पाइए है॥ ऐसे ही अन्य जानने॥ ~~जो द्रव्यानुयोग विषै कथन की माके~~ ~~इनको करणानुयोग विषै कहे गुणस्थानादिकतैं~~ [redacted] ~~ऐसा निर्णय की चाह है सो होइ नाहीं॥~~ [redacted] ~~शुद्धोपयोग मैं कैसे गुणस्थानि~~ तातैं द्रव्यानुयोगके कथनकौं [redacted] करणानुयोगतैं विधि मिलाया चाहिए सो ~~सैं तैं अन्य जाननी॥ बहुरि~~ कहीं तौ [redacted]॥ जैसैं यथाख्यातचारित्र भएं तौ दोऊ अपेक्षा शुद्धोपयोग है॥ बहुरि नीचली दशा विषै द्रव्यानुयोग अपेक्षा तौ कदाचित् शुद्धोपयोग है अर करणानुयोग अपेक्षा सदाकाल कषाय अंशके सद्भावतैं शुद्धोपयोग नाहीं॥ [redacted] ऐसैं ही अन्य कथन जानि लेनी॥ बहुरि द्रव्यानुयोग विषै परमत विषै कहे तत्त्वादिक तिनिकौं असत्य दिखावनेकै अर्थि तिनिका निषेध कीजिए है॥ तहाँ द्वेषबुद्धि न जाननी॥ तिनकौं असत्य दिखाइ सत्य श्रद्धान करावनेका प्रयोजन जाननी॥ [redacted] ऐसैं ही और भी अनेक प्रकार करि द्रव्यानुयोग विषै व्याख्यानका विधान [redacted] है॥ या प्रकार च्यारौं अनुयोगके व्याख्यानका विधान कह्या॥ सो कोई ग्रंथ विषै एक अनुयोगकी कोई विषै [redacted] दोयकी कोई विषै तीनौंकी

जिस कालवि वै [redacted] बुद्धिगोचर

~~निर्णय होय सकै नाहीं~~

~~[redacted]~~ मिलै कहीं न मिलै है

१५६

कोई विषै ओसरों की प्रधानता लीएं व्याख्यान हो है।। सो जहीं जैसा संभवै तहीं तैसा समझि लैनां।। अब इनि
अनुयोगनि विषै कैसी पद्धति की मुख्यता पाईए है सो कहिए है।। प्रथमानुयोग विषै तौ [redacted] अलंकार
[redacted] शास्त्रनि की वा काव्यादि शास्त्रनि की पद्धति मुख्य है।। जातैं [redacted]
अलंकारादिक तैं रंजायमान होइ।। [redacted] तैं उपयोग ला अलंकारादि
[redacted] सूधी बात कहें ऐसा उपयोग लागै नाहीं जैसा युक्ति सहित कथन तैं उपयोग लागै [redacted] ताका स्वरूप नीकैं भासै
गे।। बहुरि परोक्ष बात कौं किछू अधिकता करि निरूपण करिए तौ [redacted]
बहुरि करणानुयोग विषै गणित आदि शास्त्रनि की पद्धति [redacted]
मुख्य है।। जातैं तहीं [redacted] द्रव्य क्षेत्र काल भाव का प्रमाणादिक निरूपण कीजिए है सो गणित ग्रंथ
निकी [redacted] आम्नायतैं ताका सुगम ज्ञानपना हो है।। बहुरि चरणानुयोग विषै सुभाषित नीति
शास्त्रनि की पद्धति मुख्य है।। जातैं इहीं आचरन करावना है सो लोकप्रवृत्ति कै अनुसारि [redacted]
मार्ग दिखाएं बहु आचरन करै।। बहुरि द्रव्यानुयोग विषै [redacted] न्यायशास्त्रनि की मुख्य पद्धति है
जातैं इहीं निर्णय करने का प्रयोजन है अर न्यायशास्त्रनि विषै निर्णय करने का मार्ग दिखा
या है।। ऐसैं इनि अनुयोगनि विषै मुख्य पद्धति है और भी अनेक पद्धति लीएं व्याख्यान इनि विषै
पाईए है।। इहाँ कोऊ कहै।। अलंकार गणित नीति न्याय का तौ ज्ञान पंडितनि कै होइ।। तुच्छबुद्धी

182

समझै नाहीं।। ता[redacted]तैं सधा कथन कौंन कीया।। ताका उत्तर।। शास्त्र है सो मुख्यपनैं पंडित चतु
रनिके अभ्यास करने योग्य है [redacted] सो अलंकारादि आम्नाय लीएं कथन होय तौ ति
निका मन लागै बहुरि [redacted] जे तुच्छबुद्धी है तिनिकौं पंडित समझाइ दे।। अर जे न समझि सकै
तौ तिनिकौं मुखतैं सधा ही कथन कहैं।। परंतु ग्रंथनिविषै [redacted] सधा कथन लिखें [redacted] विशे
षबुद्धी तिनिका अभ्यास [redacted] विषैं विशेषन प्रवर्तें तातैं अलंका
रादि आम्नाय लीएं कथन कीजिए है।। ऐसैं इनि च्यारि अनुयोगनिका निरूपण कीया।। ब
हुरि जिनमत विषै घनें शास्त्र तौ इनि च्यारयों अनुयोगनि विषैं गर्भित हैं।। बहुरि व्याकरण
न्याय [redacted] छंद कोशादिक शास्त्र वा वैद्यक ज्योतिष मंत्रादि शास्त्र भी जिनमत विषै पाईए है।। ति
निका कहा प्रयोजन है सो सुनहु।। व्याकरण [redacted]
[redacted] न्यायादिकका अभ्यास तैं [redacted] अनुयोगरूप शास्त्रनिका अभ्यास होइ सकै है
तातैं [redacted] व्याकरणादिक [redacted] शास्त्र कहे हैं।। कोऊ कहै [redacted]
भाषारूप सधा निरूपण करते तौ व्याकरणादिकका कहा प्रयोजन था।। ताका उत्तर।। भाषा तौ अ
पभ्रंशरूप अशुद्ध वाणी है देश देश विषै और और है [redacted] सो [redacted] महंत पुरुष शास्त्रनि विषैं ऐ
सी रचना कैसैं करै।। बहुरि व्याकरण न्यायादिक करि जैसा यथार्थ सूक्ष्म अर्थ निरूपण हो है तैसा
सधी भाषा विषै होइ सकै नाहीं।। तातैं व्याकरणादि आम्नाय [redacted] करि वर्णन कीया है।। सो अपनी
बुद्धि अनुसारि थोरा बहुत इनिका अभ्यास करि अनुयोगरूप प्रयोजनभूत शास्त्रनिका अभ्यास क
रनी।। बहुरि [redacted] जिनमतकी प्रभावना [redacted]।। अथवा १८७

वैद्यकादिक चमत्कारतैं

होइ।। वा उपआदिकतैं उप
कार भी बनै

३१८

१८७/४

जेजीवलौकीककार्यविषै अनुरक्तहैं तेवैद्यकादिक [redacted] चमत्कारतें [redacted] ।जैनी होइपीछैंसांचाध
र्मपाइअपनाकल्यानकरै इत्यादिप्रयोजनलैं वैद्यकादिशास्त्रकहेहैं।।इहांइतनाहै [redacted]
[redacted] एभीजिनशास्त्रहैंऐसाजांनिइनिकाअभ्यासविषैबहुतलगनांनाहीं।।जोबहुत१निकासहजे [redacted] १बहुतबुद्धि तैं×
जांननांहोइअरइनिकोंजानेंआपकै [redacted] रागादिविकारवधतेनजानैतौइनिकाभीजाननांहोउ।।
[redacted] अनुयोगशास्त्रवत्एशास्त्रबहुतकार्यकारीनांही।। [redacted] तातैंइनिकाअभ्यासका
[redacted] विशेषउद्यमकरनौयुक्तनांही।।इहांप्रश्नजोऐसैंहैतौगणधरादिकइनिकीरचनाकाहेकौंकर
ताकाउत्तर।।पूर्वोक्त [redacted] किंचित्प्रयोजनजांनिइनिकीरचनाकरी।।जैसैंबहुतधनवान [redacted]
(कदाचित् लौककार्यकारि) (करै वस्तु)
[redacted] वस्तुकानीसंचय [redacted] थोराधनवान [redacted] उनवस्तु
निकासंचयकरैतौ [redacted] धनतौतहांलगिजायबहुतकार्यकारीवस्तुका
(कथंचित्)
संग्रहकाहेतैंकरै।।तैसैंबहुतबुद्धिवानगणधरादिक [redacted] लौककार्यकारीशास्त्रनिकानीसंचयकरै
थोराबुद्धिवानउनकाअभ्यासविषैलगैतौबुद्धितौतहांलगिजाय।।उत्कृष्टकार्यकारीशास्त्रनिका
(मंद)
अभ्यासकैसैंकरै।।बहुरिजैसैं [redacted] रागीतौपुराणादिविषैशृंगारादिनिरूपणकरैतौनीविकार
१शृंगारादिनि रूपै१ नहोइतीव्र [redacted] रागीतैसैं [redacted] तौपापहीबांधै।।तैसैंमंदरागीगणधरादिक [redacted] तेवैद्यकादि [redacted] शास्त्र
निरूपैतौनीविकारीनहोइतीव्ररागीतिनिकाअभ्यासविषैलगिजायतौरागादिवधाइपाप [redacted] कर्म
(स्वरूप)
कोंबांधैऐसैंजाननौ।।या [redacted] प्रकारजैन [redacted] मतकेउपदेशकास्वरूपजाननौ।।अबइनिविषै
दोषकल्पनाकोईकरैहैताकानिराकरणकीजिएहै।। [redacted] केईजीवकहैहैं [redacted] प्रथमानुयोगविषैशृं
गारादिककावासंग्रामादिकका [redacted] बहुतकथनकरै [redacted] तिनिकेनिमित्ततैं [redacted]

१वैद्यकादि

कोऊ चैत्यालय बनावै क्षावाका तौ प्रयोजन नहीं धर्मकार्य करावने [redacted]
कौ है अर कोई पापी नहीं पापकार्य करै तौ चैत्यालय बनावने का ताका तौ [redacted] दोष नाहीं ॥

१४४ रागादिक न बधि जाय तातैं ऐसा कथन न करनी था [redacted] ऐसा कथन सुननौं नाहीं॥ ताकौं कहिए है। कथा
कहनी होइ तब तौ सर्व ही अवस्था का [redacted] कथन कीया चाहिए बहुरि जो अलंकारादि करि बधाय कथन
करै है सो पंडितनिके वचन युक्ति लीए ही निकसै॥ [redacted] अर जो तुम
कहोगे संबंध मिलावनेंकौं [redacted] सामान्य कथन कीया होता बधाय करि कथन [redacted] काहेकौं [redacted] कीया ता
काउत्तर यहु है जो परोक्ष कथनकौं बधाय कहे बिना [redacted] वा स्वरूप भासै नाहीं॥ बहुरि पहलें तौ भोग संग्रामादि ऐसे
पदाकास्वरूपः [redacted] कीए पीछैं [redacted] सर्व का त्याग करि मुनि भए [redacted] इत्यादि चमत्कार तब ही भासै जब बधाय कथन कीजिए॥ बहुरि तू कहै है ताके
[redacted]
निमित्ततैं रागादि बधि जाय सो जैसैं [redacted]
मिः [redacted] ॥ [redacted]
[redacted] ॥ तैसें श्री गुरु पुराणादि विषै शृंगारादि वर्णन करैं तहां उनका प्रयोजन [redacted]
[redacted] रागादि करावनेका तौ है नाहीं॥ धर्म विषै लगावनेका प्रयोजन है अर कोई पापी [redacted] धर्म न करैं [redacted]
अर रागादिक ही बधावै तौ श्री गुरु का [redacted] कहा दोष है॥ बहुरि [redacted]
[redacted] सरागी जीवनिका १८८
[redacted] जो तू कहै [redacted] जो रागादिकौं निमित्त होइ सो कथन ही न करनी था ताका उत्तर यहु है
मन केवल वैराग्य कथन विषै लागै नाहीं॥ तातैं जैसैं बालककौं पतासाकौं आश्रय करि औषधि दीजिए तैसें
[redacted] सरागीकौं भोगादि कथनके आश्रय धर्म विषै रुचि कराईए है॥ बहुरि तू कहै है ऐसे है तौ वि
रागी पुरुषनिकौं तौ ऐसे ग्रन्थनिका अभ्यास करनौं युक्त नाहीं॥ ताका उत्तर यहु है जिनिकै अंतरंग विषै राग

188 A

नावनी ही तिनिकैं [redacted] शृंगारादिकथन सुनें रागादि उपजै ही नाहीं।। यहु जानैं [redacted] ऐसैं ही इहां
कथन करनेंकी पद्धति है।। बहुरि तूक है गा जिनिकैं शृंगारादिकथन सुनें रागादि होइ आवै तिनिकों तौ वै
सा कथन सुननौ योग्य नाही।। ताका उत्तर यहु है [redacted] जहाँ धर्म्म ही का तौ प्रयोजन
अरु जहां तहां धर्म्मकों पोषै ऐसे जैन पुराणादिक तिनि विषै प्रसंग पाइ शृंगारादिकका कथन कीया
ताकों सुनें भी जो बहुत रागी भया तौ वह [redacted] अन्यत्र कहां विरागी होय [redacted] सी।। [redacted] पुराण सुननौ छो
डि और कार्य भी ऐसा ही करैगा जहां बहुत रागादिक होइ।। तातैं [redacted] वाकै भी पुराण सुनें थोरी बहुत ध
र्म्मबुद्धि होइ तौ होइ [redacted] और कार्यनितैं यहु कार्य भला ही है।। बहुरि कोई कहै प्रथमानुयोगविषै
अन्य जीवनिकी कहानी है।। वातैं अपनौ कहा प्रयोजन सधै है।। ताकों कहिए है जैसें [redacted] कामी पु
रुषनिकी कथा सुनें आपकै भी कामका प्रेम बधै है।। तैसें धर्म्मात्मा पुरुषनिकी कथा सुनें आपकै ध
र्म्म [redacted] की प्रीति विशेष होहै।। तातैं प्रथमानुयोगका अभ्यास करनौ योग्य है।। बहुरि केई जीव
कहै है करणानुयोगविषै गुणस्थान मार्गणादिकका वा कर्म्मप्रकृतिनिका कथन कीया [redacted]
वा त्रिलोकादिकका कथन कीया सो तिनिकों [redacted] जो जान्या यहु ऐसें है यहु ऐसें है यामैं
अपनौ कार्य कहा सिद्धि भया।। कै तौ भक्ति करिए कै व्रत दानादि [redacted] क करिए कै आत्मानुभवन करिए
इनितैं अपनौ भला होइ।। ताकों कहिए है। परमेश्वर तौ वीतराग है भक्ति कीएं प्रसन्न होइ किछू [redacted]
करते नाही भक्ति करतैं मंदकषाय हो है ताका स्वयमेव [redacted] उत्तम फल हो है सो करणानुयोगके अभ्यास
विषै तिसतैं भी अधिक मंदकषाय होइ सकै है तातैं याका फल अति उत्तम हो है।। बहुरि व्रतदानादिक तौ
[redacted] कषाय घटावनेके बाह्य[1]साधन है अर करणानुयोगका अ

[1] निमित्तका १

अभ्यास कीएं [redacted] तहां उपयोग लगि जाय तब रागादिक दूरि होय ताते ऐसा अंतरंग साधन है ताते यहु वि
शेष कार्यकारी है। व्रतादिक धारि अध्ययनादि कीजिए है। बहुरि आत्मानुभव सर्वोत्तम कार्य है॥ प
रंतु सामान्य अनुभव विषै उपयोग थंभै नाहीं॥ अर नाहीं थंभै तब अन्य विकल्प होइ [redacted] तहां करणानुयो
ग का अभ्यास होइ तौ तिस विचार [redacted] विषै उपयोग को लगावै॥ [redacted] वर्तमान भी रागादिक [redacted] अर १ घटावै है
आगामी रागादि घटावने का कारण है॥ ताते इहां उपयोग लगावना॥ [redacted] जीव कर्मादिक के ना
ना प्रकार करि भेद जानै तिनि विषै रागादि करने का प्रयोजन नाहीं ताते रागादि बधै नाहीं॥ वीतराग होने
का प्रयोजन जहां तहां प्रगटै है ताते रागादि मिटावने को कारण है॥ इहां कोऊ कहै कोई तौ कथन ऐसा ही है
परंतु द्वीप समुद्रादिक के योजनादि निरूपै तिनि में कहा सिद्धि है॥ ताका उत्तर॥ तिनि कौं जानै किछू तिनि विषै
१ बुद्धि न होइ इष्ट अनिष्ट [redacted] ताते पूर्वोक्त [redacted] सिद्धि हो है॥ बहुरि वह कहै है ऐसे है तौ
[redacted] जिसतें किछू प्रयोजन नाहीं ऐसा पाषाणादिक कौं भी
जानै [redacted] तहां इष्ट अनिष्ट पनौं न मानिए है सो भी कार्यकारी भया॥ ताका उत्तर॥ सरागी जीव रा
गादि प्रयोजन बिना काहू कौ [redacted] जानने [redacted] का उद्यम न करै॥ जो स्वयमेव उनका जानना होइ तौ
अंतरंग रागादिक का अभिप्राय [redacted] के वश करि तहांतैं उपयोग कौं छुडाया ही चाहै है॥ इहां
उद्यम करि [redacted] द्वीप समुद्रादिक कौं जानै है तहां उपयोग लगावै है सो रागादि घटै ऐसा कार्य होइ। १८९
बहुरि पाषाणादिक विषै इस लोक का प्रयोजन कोई भासि जाय तौ रागादिक होइ आवै अर द्वीपा
दिक विषै इस लोक संबंधी कार्य किछू नाहीं ताते रागादिका कारण नाहीं॥ जो स्वर्गादिक की रच
ना सुनि तहां राग होइ तौ परलोक संबंधी होइ ताका कारण पुण्य कौं जानै तब पाप छोडि पुण्य वि
षै प्रवर्तै इतना ही नफा होइ॥ बहुरि द्वीपादिक के जानै यथावत रचना भासै तब अन्यमतादिक [redacted]

कषाय मंदता सैं सत्यश्रद्धानी होइ॥ बहुरि भ्रम मिटें उपयोग की निर्मलता होइ ता तैं यहु अभ्यास
कार्यकारी है॥ बहुरि केई कहै है करणानुयोग विषै कठिनता घनी ता तैं [redacted] ता
का अभ्यास विषै खेद [redacted] होइ [redacted] ताकौं कहिए है॥ जो वस्तु शीघ्र जाननें मैं आवै त[redacted] हीं उपयो
(अरु) ग उलझै नाहीं॥ अर जानी वस्तु कौं बारबार जाननें का उत्साह होइ नाहीं॥ तब पापकार्यनि विषै उप
योग लगि जाय॥ ता तैं [redacted] अपनी बुद्धि कै अनुसारि कठिन [redacted] अभ्यास करनौं॥ अर जौ का (ताकरि भी जाका अभ्यास होता जानै ताका)
अभ्यास होइ ही सकै नाहीं ताका कैसैं करै॥ बहुरि तू कहै है खेद [redacted] होइ सो प्रमादी रहनें मैं तो ध
र्म है नाहीं॥ [redacted] प्रमाद तैं सुखिया रहिए तहां तो [redacted] पाप ही होइ ता
तैं धर्म अर्थि उद्यम करनौं ही युक्त है॥ या विचारि करणानुयोग का अभ्यास करनौं॥ बहुरि
([redacted] है है) केई जीव करणानुयोग विषै बाह्य व्रतादि साधन का उपदेश है सो इनि तैं किछू सिद्धि नाहीं॥ अ
पनें परिणामनि निर्मल चाहिए बाह्य चाहो जैसें प्रवर्तौ ता तैं इस उपदेश तैं पराङ्मुख रहै है तिनि
कौं कहिए है॥ आत्म परिणामनि कै अर बाह्य प्रवृत्ति कै निमित्त नैमित्तिक संबंध है॥ जा तैं छ
द्मस्थ कै क्रिया परिणाम पूर्वक हो है॥ कदाचित् विना परिणाम कोई क्रिया हो है सो परवश
([redacted]) तैं हो है॥ अपनें वश तैं उद्यम करि कार्य करिए अर कहिए परिणाम इस रूप नाहीं है सो यहु भ्रम है॥
अथवा बाह्य पदार्थ का आश्रय पाय परिणाम होइ सकै है॥ [redacted]
(परिणाम मेटनें कै अर्थि) ता तैं बाह्य वस्तु का निषेध करना समयसारादि विषै कह्या है॥ इस ही वास्तै रागादि भाव घटें बा
ह्य ऐसैं अनुक्रम तैं श्रावक मुनि [redacted] धर्म होइ अथवा ऐसैं श्रावक मुनि धर्म अंगीकार कीएं
पंचम षष्ठ [redacted] आदि गुणस्थाननि [redacted] रागादि घटनें रूप परिणामनि की प्राप्ति होइ

३ ग्रहस्थश्रावकः

ऐसा निरूपण चरणानुयोग विषै कीया॥ [redacted]॥ बहुरि जो बाह्य संयमतैं किछू सिद्धि न होइ तौ सर्वार्थसिद्धिवासी देव सम्यग्दृष्टी बहुत ज्ञानी तिनकै [redacted] तौ चौथा गुणस्थान होइ अर [redacted] मनुष्यकै पंचम गुणस्थान होइ सो कारण कहा॥ बहुरि तीर्थंकरादिक गृहस्थपद छोडि काहे कौं संयम ग्रहै तातैं [redacted] यहु नियम है बाह्य [redacted] संयम साधन विना परिणाम निर्मल न होइ सकै तातैं बाह्य साधन का विधान जाननें कौं चरणानुयोग का अभ्यास अवश्य कीया चाहिए॥ बहुरि केई जीव [redacted] कहै है जो द्रव्यानुयोग विषै व्रत संयमादि व्यवहारधर्म का [redacted] हीनपनां प्रगट कीया है सम्यग्दृष्टी के विषयभोगादिक कौं निर्जरा का कारण [redacted] कह्या है इत्यादि कथन सुनि जीव पुण्य छोडि पाप विषै प्रवर्त्तै तातैं इनिका बांचना सुनना युक्त नाहीं॥ ताकौं कहिए है॥ [redacted] जैसैं गर्दभ मिश्री खाएं मरै तौ [redacted] मनुष्य तौ मिश्री खाना न छोडै॥ तैसें विपरीत बुद्धी अध्यात्मग्रंथ सुनि स्वछंद होइ तौ विवेकी तौ अध्यात्मग्रंथनि का अभ्यास न छोडै॥ इतना करै जाकौं स्वछंद होता जानैं ताकौं जैसैं वह स्वछंद न होइ तैसैं उपदेश दे॥ [redacted] अध्यात्मग्रंथनि विषै भी स्वछंद होनें का जहां तहां निषेध कीजिए है [redacted] तातैं जो नीकैं [redacted] तिनिकौं सुनै सो तौ स्वछंद होता नाहीं॥ अर एक बात सुनि अपनें अभिप्रायतैं कोऊ स्वछंद होसी तौ ग्रंथ का तौ दोष है नाहीं उस जीव ही का दोष है॥ बहुरि जो [redacted] झूठा दोष की कल्पना करि अध्यात्मशास्त्र का बांचना सुनना निषेधिए तौ मोक्षमार्ग का मूल उपदेश तौ तहां ही है ताका निषेध कीएं मोक्षमार्ग का निषेध होइ॥ जैसैं मेघवर्षा भएं [redacted] जीव

१ बहुत

हे सो स्व[redacted]

१९०

190/A

निकाकल्याणहोइ॥अरकोई [illegible] हकैउलटाटोटापडैतौ [illegible]
तिसकीमुख्यताकरिमेघकातौनिषेधनकरनी।तैसैंसभाविषैअध्यात्मउपदेश [illegible] नएँबहुतजीव
निकोंमोक्षमार्गकीप्राप्तिहोइ॥अरकाहूकैउलटापापप्रवर्त्तैतौतिसकीमुख्यताकरिअध्यात्मशास्त्र
निकातौनिषेधनकरनी॥बहुरि [illegible]
[illegible] अध्यात्मग्रंथनितैंकोऊस्वछंदहोइसो
तौपहलैंभीमिथ्यादृष्टीथाअबभीमिथ्यादृष्टीहीरहाइतनीहीटोटापडैजोसुगतिनहोइकुगतिहोइ।
अध्यात्मउपदेशानभएँबहुतजीवनिकैमोक्षमार्गकीप्राप्तिकाअभावहोइसुयामैंघनेंजीवनिका
घनोबुराहोइतातैंअध्यात्मउपदेशकानिषेधनकरनो॥बहुरिकेईजीवकहैहैजोद्रव्यानुयोगरूप
अध्यात्मउपदेशहैसोउत्कृष्टहै सोउंचीदशाकोंप्राप्तहोइतिनिकोंकार्यकारीहैनीचलीदशावा
लोंकौंतौव्रतसंयमादिककाहीउपदेशदेनीयोग्यहै॥ताकोंकहिएहैजिनमतविषैतौयहुपरिपाटीहैजो
पहलैंसम्यक्तहोइपीछैंव्रतहोइसोसम्यक्त स्वपरादिककाश्रद्धानभएँहोइ॥अर सोश्रद्धानद्रव्या
नुयोगकाअभ्यासकीएँहोइतातैंपहलैंद्रव्यानुयोग [illegible] करिसम्यग्दृष्टीहोइ पीछैंचरणानु
योगकेअनुसारिव्रतादिकधारिव्रतीहोइऐसैं [illegible] मुख्यपनैंतौनीचलीदशाविषैहीद्र
व्यानुयोगकार्यकारीहै गौणपनैंजाकोंमोक्षमार्गकीप्राप्तिहोतीनजानिएताकोंपहलैंकोईव्रतादि
ककाउपदेशदीजिएहै॥तातैंउंचीदशावालोंकोंअध्यात्मअभ्यासयोग्यहै [illegible] ऐसाजानिनीचली
दशावालोंकोंतहींतैंपराङ्मुखहोनीयोग्यनाहीं॥बहुरि [illegible] उचाउपदेशकास्व

(margin, beside line 13: कैअनुसारिआचरन)

(below text: जोकहोगे)

३२५

१९१

रूपनी बलीदशावालोंकों भासै नाही।। ताका उत्तर यहु है।। और तौ अनेक प्रकार [redacted] चतुराई जानै [redacted] अर
इहीमूर्खपनौ [redacted] प्रगट कीजिए [redacted] सो युक्त नाही। अभ्यास कीएं स्वरूप नीकै भासै है।। [redacted]
[redacted] अपनी बुद्धि अनुसारि थोरा बहुत भासै परंतु सर्वथा निरुद्यमी होनेंकों पोषि
एसा तौ जिनमार्गका द्वेषी होना है।। बहुरि जो कहोगे अबार काल निकृष्ट है तातैं उत्कृष्ट अध्यात्म
उपदेशकी मुख्यता न करनी।। [redacted] ताकों कहिए है।। अबार काल साक्षात् मोक्ष न
होनेंकी अपेक्षा निकृष्ट है।। [redacted] आत्मानुभवनादिकरि सम्यक्त्वादिकका होनी अबार मनैं नाही।। ता
तैं [redacted] आत्मानुभवनादिककै अर्थि द्रव्यानुयोगका अवश्य अभ्यास करनां।। सोई षट्पाहुड विषै
कह्या है।। ७।। अज्जवि तिरयणसुद्धा अप्पा झाऊण जंति सुरलोए। लोयंतिय देवत्तं तत्थ चुया णिव्वुदिं जंति ।।१।। याका अर्थ।। अबहू त्रिकरण [redacted] करि शुद्ध जीव आत्माकों ध्यायकरि सुरलोककौं प्राप्त
होहैं वा लौकांतिकविषै देवपणो पावै है।। तहां तैं च्युत होइ मोक्ष जाय है।। ७।। बहुरि

१९१

।। तातैं इस कालविषैं भी द्रव्यानुयोगका उपदेश मुख्य चाहिए।। बहुरि कोई कहै है द्रव्यानुयोगविषै
अध्यात्मशास्त्र है तहां [redacted] स्वपर भेदविज्ञानादिकका उपदेश दीया सो तौ कार्यकारी भी घनां अर समझिमैं
भी शीघ्र आवै परंतु द्रव्यगुणपर्यायादिकका वा [redacted] वा प्र
माणनयादिकका वा अन्यमतके [redacted] कहे तत्त्वादिकके निराकरणका कथन कीया सो विकल्प विशेष
१ अतिनिका अभ्यासतैं

191/A

२जानने॥

होइ [redacted] ॥बहुत प्रयास कीएं जानने में आवै तातैं इनिका अभ्यास न करना॥ तिनिकों कहिए है॥ सा
मान्यतैं विशेष का जानना बलवान् है॥ ज्यौं ज्यौं विशेष जानै त्यौं त्यौं वस्तुस्वभाव निर्मल भासै श्रद्धान
दृढ होइ रागादिघटै तातैं तिस अभ्यास विषै प्रवर्त्तनां योग्य है॥ ऐसैं च्यारौं अनुयोगनि [redacted]
विषैं दोषकल्पना करि [redacted] अभ्यासतैं पराङ्मुख होनां योग्य नाहीं॥ बहुरि व्याकरण [redacted] न्यायादिक
शास्त्र हैं तिनिका भी [redacted] थोरा बहुत अभ्यास करना॥ जातैं इनि [redacted] का ज्ञान विना बडे शास्त्रनि
का अर्थ भासै नाहीं॥ बहुरि वस्तु का भी स्वरूप इनिकी पद्धति जानें [redacted] जैसा
भासै तैसा भाषादिक करि [redacted] भासै नाहीं॥ तातैं परंपरा कार्यकारी जानि इनिका भी अभ्यास करना
परन्तु इनिहीविषै फसि न जानां॥ किं [redacted] इनका अभ्यास करि प्रयोजनवंत शास्त्रनिका अभ्यास विषै
[redacted] प्रवर्त्तना॥ बहुरि वैद्यकादि शास्त्र हैं तिनितें मोक्षमार्ग विषै किछू प्रयोजन ही नाहीं। तातैं [redacted] को
ई व्यवहार धर्म का अभिप्रायतैं विना खेद इनिका अभ्यास होइ जाइ तौ उपकारादि करना॥ पापरूप
न प्रवर्त्तना॥ अर [redacted] इनका अभ्यास न होइ तौ मति होहु किछू बिगार नाहीं॥ ऐसैं जिनमत के शा
स्त्रनि निर्दोष जानि तिनिका उपदेश [redacted] मानना॥ अब [redacted] शास्त्रनि विषै अपेक्षादिक कौं न जानें पर
स्परविरोध भासै ताका निराकरण कीजिए है॥ प्रथमादि अनुयोगनिकी [redacted] आम्नाय के अनुसारि जि
हां जैसैं कथन कीया होइ तहां तैसैं जानि लैना॥ और अनुयोग का कथन कौं और अनुयोग का कथनतैं अ
न्यथा जानि संदेह न करना॥ [illegible]
[illegible]
[redacted] ॥जैसैं कहीं तौ निर्मल सम्यग्दृष्टी ही कै [redacted] शंका कांक्षा विचिकित्सा का अभाव कह्या

कहीं नयका आवली गुणस्थान पर्यंत लोभका दशमा पर्यंत जुगुप्साका आवली पर्यंत उदय कह्या ॥ तहां वि
रुद्धन जानना ॥ [redacted] अज्ञानपूर्वक तीव्र स्त्रीकादिकका सम्यग्दृष्टीकै अभाव नया अथवा अनु
त्वापनैं सम्यग्दृष्टी [redacted] स्त्रीकादिनकौ रतिस अपेक्षा चरणानुयोग विषै स्त्रीकादिकका सम्यग्दृष्टीकै अभाव
कह्या ॥ बहुरि सूक्ष्मशक्ति अपेक्षा नयादिकका उदय [redacted] गुणस्थान पर्यंत पाईए है तातैं करणानुयो
ग विषै तहां पर्यंत तिनिका सद्भाव कह्या ॥ [redacted] ॥ ऐसैं ही अन्य जाननी पू
र्व अनुयोगनिका उपदेश विधान विषै कई उदाहरण कहे हैं ते जाननें अथवा अपनी बुद्धितैं समझि लेनें
बहुरि [redacted] एक ही अनुयोग विषै विवक्षा का वशतैं अनेकरूप कथन करिए है ॥ जैसैं प्रमादनिका
सप्तमगुणस्थान विषै अभाव कह्या तहां [redacted] कषाया दिक [redacted] प्रमाद
के भेद कहे बहुरि तहां ही कषायादिकका सद्भाव दशमगुणस्थान पर्यंत कह्या ॥ [redacted] विकथादिका ना
मगुणस्थान विषै ही कह्या ॥ अरहंतनिकी विषयसहित दशमगुणस्थान पर्यंत कही ॥ अरहंत
दिकका रूप बवनयोग की प्रवृत्ति [redacted] नयो दशमगुणस्थान पर्यंत कही ॥ निद्राका बारामगुणस्था
न पर्यंत उदय कह्या ॥ [redacted] रति कषायका अष्टमगुणस्थान पर्यंत उदय कह्या ॥ [redacted] इहां विक
ल्प जानना ॥ तहां शुद्ध प्रमुख भावनिका अभिप्रायतैं कषायादिक [redacted] दशा लेश्या का
नाम प्रमाद है सो ताका सप्तम गुणस्थान [redacted] विषै अभाव है ॥ बाजानैं तहां शुद्ध प्रमुख भाव [redacted]
[redacted] ध्यान अवलंबना ईए है ॥ बहुरि जो कषायादिकका दशमा दिगुणस्थान पर्यंत [illegible]

१ करणानुयोग विषै

१९२

१ तहां ही

तहां विरुद्ध न जाननां ॥ जातैं प्रमाद निविषैं तौ ते शुभ अशुभ भावनि का अभिप्राय लीएं कषायादि
क होइ तिनिका ग्रहण है । [illegible]
[illegible] सो सप्तम गुणस्थान विषैं ऐसा अ
भिप्राय दूरि भया तातैं तिनिका तहां अभाव कह्या ॥ बहुरि सूक्ष्मादि भावनि की अपेक्षा तिनिहीका
दशमादि गुणस्थान पर्यंत सद्भाव कह्या है ॥ बहुरि चरणानुयोग विषैं [illegible]
[illegible] बहुरि तहां ही तिनिका त्याग द्वितीय प्रतिमा विषैं कह्या तहां विरुद्ध न जाननां ॥
जातैं सप्त व्यसन विषैं तौ चोरी [illegible] आदि कार्य ऐसे ग्रहे हैं [illegible] जिनिकरि दंडादिक पावै । बहुरि
व्रतनि विषैं चोरी आदि का त्याग [illegible] करने योग्य ऐसे कहे हैं जे गृहस्थ धर्म विषैं विरुद्ध होइ वा
किंचित् लोकनिंद्य होइ ऐसा अर्थ जाननां ॥ ऐसैं ही अन्यत्र जाननां ॥ बहुरि [illegible]
[illegible] नाना भावनि की
सापेक्षतैं एक ही भाव कौं [illegible] अन्य अन्य प्रकार निरूपण कीजिए है ॥ जैसैं कहीं तौ महाव्रतादि
क चारित्र के भेद कहे कहीं महाव्रतादि होतैं भी ⁵असंयमी कह्या तहां विरुद्ध न जाननां । सम्यग्ज्ञान स
हित महाव्रतादिक तौ चारित्र है अर अज्ञानपूर्वक व्रतादिक भएं भी असंयमी ही है ॥ बहुरि
जैसैं पांच मिथ्यात्वनि विषैं भी विनय कह्या अर बारह प्रकार तपनि विषैं भी विनय कह्या तहां विरुद्ध न जान
नां ॥ जातैं विनय करने योग्य नाहीं तिनका भी विनय करि धर्म माननां सो तौ मिथ्यात्व है ॥ अर धर्म पद्ध
तिकरि जे विनय करने योग्य हैं तिनिका यथायोग्य विनय करनी सो विनय तप है ॥ बहुरि जैसें

५ द्रव्यलिंगीकौं

² चोरी परस्त्री आदि सप्त व्यसन का त्याग प्रथम प्रतिमा विषैं कह्या

² लोक विषैं अति निंद्य होइ

³ जातैं

⁴ विनय

१५३

कहीं तो अभिमान की निंदा करी॥ कहीं प्रशंसा करी॥ तहीं विरुद्ध न जाननी॥ जातैं मान कषायतैं आप
कों ऊंचा मनावनें के अर्थि [redacted] विनयादि न करै सो अभिमान तो निंद्य ही है अर निःस्प्रिहप
नीतैं दीनता आदि न करै सो अभिमान प्रशंसा योग्य है॥ बहुरि जैसें कहीं चतुराई की निंदा [redacted]
करी तहीं विरुद्ध न जाननी॥ जातैं मायाकषायतैं काहू का ठिगनैं के अर्थि [redacted] चतुराई कीजिए सो तो निंद्य
ही है॥ अर विवेक लीएं यथासंभव कार्य करनें विषै जो चतुराई होइ सो श्लाघ्य ही है॥ ऐसें ही अन्यत्र
जाननी॥ बहुरि [redacted] एक ही भाव की कहीं तो [redacted] तिसतैं उत्कृष्ट भाव की अपेक्षा करि निंदा करी होइ अर क
हीं तिसतैं हीन भाव की अपेक्षा करि प्रशंसा करी होइ तहीं विरुद्ध न जाननी॥ जैसें किसी शुभ क्रिया की [redacted] निंदा
करी होइ तहीं तैं शुद्ध भाव की अपेक्षा जाननी॥ अर जहीं प्रशंसा करी होइ तहीं अशुभ क्रियानि की अपे
क्षा जाननी॥ [redacted] ऐसें ही अन्यत्र जाननी॥ ऐसें ही काहू जीव की ऊंचे जीव की अपेक्षा निंदा क
री होइ तहीं सर्वथा निंदा न जाननी॥ काहू की नीचे जीव की अपेक्षा प्रशंसा कीनी होइ तो सर्वथा प्रशंसा न
जाननी॥ यथासंभव [redacted] वाका गुण दोष जांनि लेनी॥ [redacted] ऐसें ही अन्य व्याख्यान जिस अपेक्षा लीएं
कीया होइ तिस अपेक्षा वाका अर्थ समझनी॥ बहुरि शास्त्र विषै एक ही शब्द का कहीं तो कोई अर्थ हो है
कहीं कोई अर्थ हो है तहीं प्रकरण पहचानि वाका [redacted] संभवता अर्थ जाननी॥ जैसें [redacted] मोक्ष
मार्ग विषै [redacted] सम्यग्दर्शन कह्या तहीं दर्शन शब्द का अर्थ श्रद्धान है अर उपयोग वर्णन विषै दर्शन
शब्द का अर्थ [redacted] वस्तु का सामान्य स्वरूप ग्रहण मात्र है अर इंद्रिय वर्णन विषै दर्शन शब्द का अर्थ
नेत्र करि देषनें मात्र है॥ बहुरि जैसें सूक्ष्म बादर का अर्थ [redacted] छोटा प्रमाण लीएं होइ ताका नाम
सूक्ष्म अर बडा प्रमाण लीएं होइ ताका नाम बादर ऐसा अर्थ हो है [redacted] इंद्रियगम्य न होइ सो सूक्ष्म इंद्रियगम्य

[redacted] २ वस्तु प्रमाणादिक कथन विषै

१ पुद्गलस्कंधादिका कथनें विषै १

१ कही प्रशंसा करी १

२ तिसतैं ऊंची शुभक्रिया वा

२ तिसतैं नीची क्रियावा २

१९३

193

१ जीवादिक का कथन विषै [redacted] रूढि आदिका निमित्त बिना स्वयमेव x

५ बहुरि जैसें [redacted] मिथ्यादृष्टी कै अज्ञान कह्या तहां सर्वथा ज्ञान का अभाव न जानना।। सम्यग्ज्ञान के अभाव तैं अज्ञान कह्या है x
होइ सो बादर ऐसा अर्थ है।। [redacted] रूकै नाहीं ताका नाम सूक्ष्म रूकै ताका नाम बादर [redacted] ऐसा अर्थ है।। वस्तु
निक का कथन विषै महीन का नाम सूक्ष्म मोटा का नाम बादर ऐसा अर्थ है।। बहुरि प्रत्यक्ष शब्द का अर्थ
लोकव्यवहार विषै तो इंद्रिय निकरि [redacted] है।। प्रमाणभेदनि विषै स्पष्ट
प्रतिभास [redacted] का नाम प्रत्यक्ष है।। आत्मानुभवनादि विषै आप विषै अवस्था होइ ताका नाम
प्रत्यक्ष है।। बहुरि जैसें उदीरणा शब्द का अर्थ जहां देवादिक कै उदीरणा न कही तहां तो अन्य निमित्त तैं
मरण होइ [redacted] ताका नाम उदीरणा है अर दश करणनि का कथन विषै उदीरणा करण देवायु कै भी कह्या
तहां ऊपरि के निषेकनि का द्रव्य उदयावली विषै दीजिए ताका नाम उदीरणा है।। ऐसें ही अन्यत्र यथासंभव
अर्थ जानना।। बहुरि एक ही शब्द का पूर्व शब्द जोडें अनेक प्रकार अर्थ हो है वा उस ही शब्द के अनेक अर्थ
है तहां जैसा [redacted] संभवै तैसा अर्थ जानना।। जैसें जीतै ताका नाम जिन है परंतु धर्मपद्धति विषै कर्म
शत्रु कों जीतै ताका नाम जिन जानना।। [redacted] इहां कर्मशत्रु शब्द कों पूर्वै जोडें जो अर्थ होइ सो ग्रहण की
या अन्य न कीया।। बहुरि [redacted]
[redacted] जैसें [redacted] ताका नाम जीव है तहां [redacted] जीव
न मरण का व्यवहार अपेक्षा कथन होइ तहां तो इंद्रियादि प्राण [redacted] सो जीव है बहुरि [redacted]
द्रव्यादिक का निरूपण होइ तहां चैतन्यप्राण कों धारै सो जीव है।। बहुरि जैसें समय शब्द के अनेक अर्थ
आत्मा का नाम समय है सर्व पदार्थ का नाम समय है काल का नाम समय है समयमात्र काल का नाम सम
यहै [redacted] शास्त्र का नाम समय है मत का नाम समय है ऐसें अनेक अर्थनि विषै जैसा जहां संभवै तैसा तहां अ
र्थ जानि लेना।। बहुरि कहीं तो अर्थ अपेक्षा नामादिक कहिए है कहीं रूढि अपेक्षा नामादिक कहिए है।। जहां

३ जानने का नाम प्रत्यक्ष है x

२ प्राण धारै x

२ धारै x

२ मिथ्यात्व अपेक्षा x

१५४

रूढि अपेक्षा नामादिक लिख्यां होइ तहां वाकौ [redacted] शब्दार्थ न ग्रहण करनां वाका [redacted] रूढिरूप अर्थ
होइ सो ही ग्रहण करनां॥ जैसैं [redacted] सम्यक्त्वादिककौं धर्म्म कह्या तहां तौ [redacted] यहु
जीवकौं उत्तम स्थान विषैं धारै है तातैं याका नाम [redacted] सार्थक है॥ बहुरि धर्म्म द्रव्यका नाम धर्म्म कह्या तहां रू-
ढि नाम है याका अक्षरार्थ न ग्रहणौं इस नामधारक एक वस्तु [redacted] है ऐसा अर्थ ग्रहण करनां॥ ऐसै ही अन्य-
त्र जाननां॥ [redacted]
बहुरि कहीं जो शब्दका अर्थ होता होइ सो तौ न ग्रहण करनां अर तहां प्रयोजनभूत अर्थ होइ सो ग्रहण क-
रनां॥ जैसैं कहीं किसीका अभाव कह्या होइ अर तहां किंचित् सद्भाव पाईए तौ तहां सर्वथा अभाव न ग्रहण
करनां॥ किंचित् सद्भावकौं न गिणि अभाव कह्या है ऐसा अर्थ जाननां। [redacted] सम्यग्दृष्टीकै रागादिकका अ-
भाव कह्या तहां [redacted] ऐसैं [redacted] अर्थ जाननां [redacted] बहुरि नोकषायका अर्थ तौ यहु कषायका निषेध [redacted] इहां क्रो- *सो तौ अर्थ न ग्रहण करनां अर*
धादि सारिषे ए कषाय नांही किंचित् कषाय है तातैं नोकषाय है ऐसा अर्थ ग्रहण करनां॥ [redacted] ऐसैं ही
अन्यत्र जाननां॥ बहुरि जैसैं कहीं कोई युक्तिकरि कथन कीया होइ तहां प्रयोजन न ग्रहण करनां॥ [redacted] स-
यहु कह्या मयसारका कलशा विषैं धोबीका दृष्टांतवत् परभावका त्यागकी दृष्टि यावत् प्रवृत्तिकौं न प्राप्त भई तावत्
यहु अनुभूति प्रगट भई सो [redacted] इहां यहु प्रयो- १९४
जन है [redacted] परभावका त्याग होतैं ही अनुभूति प्रगट हो है॥ लोक विषै काहूकौं आवतैं ही कोई कार्य भया हो-
इ तहां ऐसैं कहिए जो यहु आया ही नांही अर यहु कार्य होइ गया ऐसा ही इहां प्रयोजन ग्रहण करनां॥ [redacted]
ऐसैं ही अन्यत्र जाननां॥ बहुरि जैसैं कहीं प्रमाणादिक किछू कह्या होइ सो इतना ही न मानि लेनां॥ ज्ञानार्णव *तहां प्रयोजन होइ सो जाननां*
ऐसा कह्या है॥ अबार विषैं [redacted] दोय तीन सत्पुरुष है सो नियमतैं इतने ही नांही॥ इहां थोरे हैं ऐसा प्रयोजन जाननां॥ [redacted]
[redacted] ऐसैं ही [redacted] अन्यत्र जाननां॥ [redacted] इस ही रीति लीए और भी अ-

१९५

नेक प्रकार शब्दनिके अर्थ होहैं तिनिकौं यथासंभव जानने। विपरीत अर्थ [redacted] न जानने। बहुरि जो उपदेश होइ ताकौं यथार्थ पहचानि जो अपनें योग्य उपदेश होइ ताका अंगीकार करनी। जैसैं वैद्यकशास्त्रनि विषै अनेक औषधि कही है तिनकौं [redacted] जानै [redacted] अर [redacted] ग्रहण तिसहीका करै जाकरि अपना रोग दूरि होइ। आपकै शीतका रोग होइ तौ उष्ण औषधिका ही ग्रहण करै शीतल औषधिका ग्रहण न करै। तैसैं जैनशास्त्रनि विषै अनेक उपदेश है तिनकौं जानै अर ग्रहण तिसहीका करै जाकरि अपना विकार दूरि होइ। [redacted] आपकै जो विकार होइ ताका निषेधकरनहार उपदेशकौं ग्रहै। तिसका पोषक उपदेशकौं न ग्रहै। यहु उपदेश औरनिकौं कार्यकारी है ऐसा जानै। इहां उदाहरण कहिए है। जैसैं शास्त्रविषै कहीं निश्चय पोषक उपदेश है। कहीं व्यवहारपोषक उपदेश है तहां आपकै व्यवहार [redacted] का आधिक्य होइ तौ निश्चय पोषक उपदेशकौं ग्रहणकरि यथावत् [redacted] प्रवर्त्ते अर आपकै निश्चयका आधिक्य होइ तौ व्यवहार पोषक उपदेशका ग्रहणकरि यथावत् प्रवर्त्ते। [redacted] पहलैं तौ व्यवहार श्रद्धानतैं [redacted] आत्मज्ञानतैं भ्रष्ट होइ रह्या था पीछैं व्यवहार उपदेशहीकी मुख्यता करि आत्मज्ञानका उद्यम [redacted] न करै [redacted] अथवा पहलैं तौ निश्चय श्रद्धानतैं वैराग्यतैं भ्रष्ट होइ स्वछंद होइ रह्या था पीछैं निश्चय उपदेशहीकी मुख्यता करि [redacted] विषयकषायकौं पोषै ऐसैं विपरीत उपदेश ग्रहैं बुरा ही होइ। [redacted] बहुरि जैसैं [redacted] आत्मानुशासनविषैं ऐसा कह्या जो तू गुणवान् होइ दोष क्यों लगावै है। दोषवान् होना था तौ दोषमय ही क्यों न भया। [redacted] [redacted] आप गुणवान् होइ दोष लगावै ताकौं अंगीकार करनी। बहुरि आप तौ दोषवान् है अर गुण

(Left margin notes:) यहु उपदेश औरनिकौं कार्यकारी है ऐसा जानै ।। १ बहुरि ।।

(Right margin notes:) २ जो तौ वा ।। २ उपदेशकौं ग्रहण करिए ।।

(Foot note:) १ तहां तिस दोष दूर करनेकौं आप तिस उपदेश ग्रहै ।।

स्पष्टं।

वानू पुरुषनिकों नीचा दिखावै [redacted] उपदेश [redacted]
तौ बुरा ही होइ॥ [redacted] सर्व दोषमय होनेतैं तौ किंचित् दोषरूप होना बुरा नाहीं है॥ तातैं तुझतैं तौ वह भला है॥
बहुरि इहाँ यहु कह्या तूं दोषमय ही क्यों न भया [redacted] यहु तर्क करी है॥ किछू सर्व दोषमय होनेकै अर्थि यहु
उपदेश नाहीं है॥ बहुरि जो गुणवाननिकै किंचित् दोष भए भी निंदा है तौ सर्व दोषरहित तौ [redacted] सि
द्ध [redacted] है नीचली दशा विषै तौ कोई गुण कोई दोष होय ही होय॥ इहाँ कोऊ कहै॥ ऐसैं है तौ मुनिलिंग
धारि किंचित् परिग्रह राखै सो भी निगोद जाय ऐसा षट्पाहुड विषै कैसैं कह्या है ताका उत्तर॥ ऊँ [redacted] ची
पदवी धारि नीचा कार्य कीए तौ [redacted] प्रतिज्ञाभंगादि होनेतैं महादोष लागै है अर नीची पदवी
१तिसपद वीविषैन हीसंभवतां२ विषै [redacted] तहाँ संभवता गुण दोष होइ तौ होइ तहाँ [redacted] वाका दोष ग्रहण [redacted]
करनी योग्य नाहीं॥ [redacted] ऐसा जानना॥ बहुरि उपदेशसिद्धांतरत्नमाला विषै कह्या॥ [redacted] आज्ञा अनुसार
उपदेश देनेवालाका क्रोध [redacted] भी क्षमा करना योग्य है सो यहु उपदेश वक्ताका ग्रहण करना योग्य नाहीं इस
उपदेशतैं वक्ता क्रोध [redacted] तौ वाका बुरा ही होइ॥ यहु उपदेश श्रोतानिका ग्रहण करना योग्य है॥ [redacted]
१कोयाकरैं२ कदाचित् वक्ता क्रोध करिकैं भी सांचा उपदेश देतौ [redacted] श्रोता गुण ही मानै॥ [redacted] ऐसैं ही अन्य [redacted]
जानना॥ बहुरि जैसैं काहूकै अति शीतांग [redacted] रोग होइ ताकै अर्थि अति उष्ण [redacted] रसादिक औषधिक
है तिस कौं औषधिकौं जाकै [redacted] दाह होइ वा तुच्छ शीत होइ सो ग्रहण करै तौ दुख ही पावै। तैसैं काहूकै कोई
कार्यकी अति मुख्यता होइ ताकै अर्थि तिसकै निषेधका अति खींचि करि उपदेश दीया होइ ताकौं जाकै तिस
कार्यकी मुख्यता न होइ वा थोरी मुख्यता होइ सो ग्रहण करै तौ [redacted] बुरा ही होइ॥ इहाँ उदाहरण जैसैं का
हूकै शास्त्राभ्यासकी अति मुख्यता [redacted] अर आत्मानुभवका उद्यम ही नाहीं ताकै अ
[redacted] शास्त्राभ्यासका निषेध कीया [redacted] बहुरि जाकै शास्त्राभ्यास नाहीं वा थोरा शास्त्राभ्यास है सो जो

१बहुत२

१९५

384

१९
१८

३ जीव पूजनादिकार्यनि करि ४
[redacted] सामायिकादि ४

वतिसउपदेशतैं शास्त्राभ्यास छोडि [redacted] वाकातौ बुराही होइ ॥ बहुरि जैसैं काहूकै यज्ञ स्नानादि
कीएं हिंसातैं धर्म्म माननेंकी मुख्यता है ताकै अर्थि जो ऐसी उलटै तौ भी हिंसा कीएं पुन्य फल न होइ ऐसे
सा उपदेश दीया बहुरि [redacted] जो किंचित् हिंसा [redacted] लगावै अर बहुत पुन्य उपजावै सो जीव
इस उपदेशतैं पूजनादि कार्य छोडि अर हिंसारहित धर्म्म विषै उपयोग लागै नाहीं तब वाकातौ बुराही होइ
ऐसैंही अन्यत्र जाननी ॥ बहुरि जैसैं औषधि [redacted] गुण [redacted] है परंतु आ[redacted] पकै यावत् [redacted]
ऐसैंही अन्यत्र जाननी ॥ बहुरि जैसैं औषधि [redacted] करै तौ उलटा रोग होइ ॥
तावत् तिस [redacted] का ग्रहण करै ॥ जो शीत मिटै तौ उष्ण औषधिका सेवन कीया [redacted] करै तौ उलटा रोग होइ ॥
तैसें [redacted] कोई धर्म्मकार्य [redacted] है परंतु आपकै यावत् तिस धर्म्मकार्यतैं [redacted] हित होइ
तावत् तिसका ग्रहण करै ॥ जो ऊंची दशा होतैं नीची दशा संबंधी धर्म्मका सेवन विषै लागै तौ उलटा विका
रही होइ ॥ इहां उदाहरण ॥ जैसैं पाप मेटनेंकै अर्थि प्रतिक्रमणादि धर्म्मकार्य कहे बहुरि आत्मानुभव [redacted] होतैं प्र
तिक्रमणादिकका विकल्प करै तौ उलटा विकार बधै ॥ याहीतैं समयसार विषै प्रतिक्रमणादिकको विष
कह्या है ॥ बहुरि जैसैं अव्रतीकै करने योग्य प्रभावनादि धर्म्मकार्य [redacted] कहे तिनकों व्रती होइ करि करै तौ पाप
ही बांधै ॥ [illegible] [redacted] [illegible]
[redacted] [illegible] ॥ ऐसैंही अन्यत्र जाननी ॥ बहुरि जैसैं [illegible] [redacted]
[illegible] [redacted]
[illegible] तिस सेवन [illegible]
[illegible] [redacted] [illegible]
[illegible] ॥ इहां उदाहरण जैसैं [redacted] [illegible] [redacted]
[redacted] [illegible] जो [illegible] बालत्यादिक कार्यनिका अधिकारी लेहतौ [illegible]

[redacted] [illegible] ४
[illegible] ४

---

४ अर आत्मानुभव विषै उपयोग हैं नाहीं तब
५ तिस औषधितें [redacted] हित होइ ४
६ आपादादि आरंभ छोडि चैत्यालयादि कार्यनिका अधिकारी होइ सोकैसें बनें ४

।अर [redacted] आपापादिकमान
का धर्म अंगीकार करै तो।

[redacted] भोजनादि विषयनि विषै आसक्त होइ अर बहुत ही दोष लागै। [redacted]
बहुरि आपापादि आरंभ तो करै अर [redacted] त्यागी का भेष धरै तो बहुत दोष लागै। ऐसैं ही
अन्यत्र जाननी॥ [redacted] याही प्रकार जैसैं रोगी आपकै हितकारी [redacted] ॥ ऐसैं ही अन्यत्र जाननी॥
बहुरि जैसैं पाकादिक कफ पुष्टिकारी है परंतु ज्वरवान ग्रहण करै तो महादोष उपजै॥ तैसैं ऊंचा धर्म बहुत
भला है परंतु अपनैं विकार भाव दूरि न होइ अर ऊंचा धर्म ग्रहै तो महादोष उपजै॥ इहां उदाहरण॥ जैसैं अप
ना अशुभ विकार भी न छूट्या अर निर्विकल्प [redacted] दशा कौं अंगीकार करै तो उलटा विकार
बधै॥ बहुरि जैसैं भोजनादि विषयनि विषै आसक्त होइ अर [redacted] आरंभ त्यागादि धर्म कौं अंगीकार
करै तो दोष ही उपजै॥ बहुरि जैसैं व्यापारादि करनेंका विकार तो न छूटै अर त्याग का भेषरूप धर्म
अंगीकार करै तो महादोष उपजै ऐसैं ही अन्यत्र जाननी॥ याही प्रकार और भी [redacted] सांचा विचारतैं उपदे
शकौं यथार्थ जानि अंगीकार करनां॥ बहुत विस्तार कहां ताईं कहिए॥ अपनैं सम्यग्ज्ञान [redacted] भए आ
पही कौं यथार्थ भासै॥ उपदेश तौ वचनात्मक है॥ बहुरि वचननि करि अनेक अर्थ युगपत् कहे जाते नाहीं॥ तातैं
उपदेश तौ एक ही अर्थ की मुख्यता लीएं हो है॥ बहुरि जिस अर्थ का जहां वर्णन है, तहां तिस ही की मुख्यता है
दूसरे अर्थ की तहां ही मुख्यता करै तो दोऊ उपदेश दृढ न होइ तातैं उपदेश विषै एक अर्थ कौं दृढ करै पर
तु सर्व जिनमत का चिह्न स्याद्वाद है स्यात् पद का अर्थ कथंचित् है तातैं जो उपदेश होइ ताकौं सर्वथा न जानि ले १९६
नी॥ [redacted] उपदेश का अ
र्थ कौं जानि तहां इतना विचार करना यहु उपदेश किस प्रकार है किस प्रयोजन लीएं है किस जीवकौं कार्य
कारी है इत्यादि विचार करि तिसका यथार्थ अर्थ ग्रहण करै पीछैं अपनी दशा देखै [redacted]

196
प

जो उपदेश जैसैं आपकौं कार्यकारी होइ तिसकौं तैसैं आप अंगीकार करै।। अर जो उपदेश जा
नने योग्य ही होइ तौ ताकौं यथार्थ जानि लै।। ऐसैं उपदेश का फलकौं पावै।। कोई कहै जो तु
च्छबुद्धी इतनी विचार न करि सकै सो कहा करै।। ताका उत्तर [redacted] जैसैं व्यापारी [redacted]
[redacted] अपनी बुद्धि कै अ
१ योगावाव इतर नुसारि जिसमैं समझै सो व्यापार करै परंतु नफा टोटा का ज्ञान तौ अवश्य चाहिए।। तैसैं विवे
की अपनी बुद्धि कै अनुसारि जिसमैं समझै [redacted] उपदेश कौं ग्रहै परंतु मुझकौं यहु कार्यका ६ सो योगावा व इतर
री है यहु कार्यकारी नाहीं इतना तौ ज्ञान अवश्य चाहिए।। सो कार्य तौ इतना है [redacted]
[redacted] यथार्थ श्रद्धान ज्ञान करि रागादि घटावना सो [redacted] यहु कार्य [redacted] अपनैं सधै सोई
उपदेश का प्रयोजन अहै।। विशेष ज्ञान न होइ तौ प्रयोजन कौं तौ भूलै नाहीं।। यहु तौ सा
वधानी अवश्य चाहिए।। [redacted] जिसमैं अपना हित की हानि होइ तैसैं उपदेश का अर्थ
समझ[redacted]ना योग्य नाहीं।। या प्रकार [redacted] जैन शास्त्रनि का अभ्यास कीएं अपना कल्याण
१ स्याद्वाद इहिलीए हो है।। इहां कोई प्रश्न करै [redacted] जहां अन्य अन्य प्रकार संभवै तहां तौ स्याद्वाद संभवै।। बहुरि एक ही प्रका
र[redacted] करि शास्त्रनि विषै परस्पर विरुद्ध भासै तहां कहा करिए।। [redacted] जैसैं प्रथमानुयोग विषै एक ती
र्थंकर की साथि हजारौं मुक्ति गए बताए करणानुयोग विषै छह महीना आठ समय विषै छसै आठ
जीव मुक्ति जाय ऐसा नियम कीया।। प्रथमानुयोग विषैं देव देवांगना उपजि पीछैं मरि साथि १ ऐसा कथन की मा
ही मनुष्यादि पर्याय विषै उपजे कहे।। करणानुयोग विषै देव का सागरौं प्रमाण देवांगना का प
ल्यों प्रमाण आयु कह्या।। इत्यादि [redacted]

[redacted] विधिकैसें मिलै।। ताका उत्तर।। करणानुयोगविषैं कथन है सो तौ तारतम्य लीएं है। अन्य अनुयोगनिविषैं कथन प्रयोजन अनुसारि है तातैं करणानुयोगका कथन तौ [redacted] जैसैं कीया है तैसैं ही है। और निका कथन [redacted] कीजैसें विधि मिलै तैसैं मिलाय लैंनी।। हजारों मुनि तीर्थंकरकी साथि मुक्ति गए बताए तहां यहु जाननी। एकही काल इतनें मुक्ति गए नाहीं।। [redacted] जहां तीर्थंकर [redacted] गमनादि क्रिया मेटि स्थिर भए तहां तिनिकी साथि इतनें मुनि [redacted] तिष्ठे। बहुरि मुक्ति आगैं पीछैं गए [redacted] ऐसैं प्रथमानुयोग करणानुयोगका विरोध दूरि होहै।। बहुरि देव देवांगना साथि उपजे पीछैं देवांगना चय करि बीचिमैं अन्य पर्याय धरी तिनिका प्रयोजन न जानि कथन न कीया पीछैं वह [redacted] साथि मनुष्य पर्यायविषैं उपजे [redacted] ऐसैं विधि मिलाएं विरोध दूरि होहै।। ऐसैं ही अन्यत्र विधि मिलाय लैंनी।। [redacted] बहुरि प्रश्न जो ऐसे कथननिविषैं तौ कोई प्रकार विधि मिलै परंतु कहीं नेमिनाथ स्वामीका सूरीपुरविषैं कहीं द्वारावतीविषैं जन्म कह्या।। रामचंद्रादिककी कथा अन्य अन्य प्रकार लिखी।। [redacted] इत्यादि।। बहुरि कहीं एकेंद्रियादिकके सासादन गुणस्थान होनां लिख्या कहीं न लिख्या।। इत्यादि इनि कथननिकी विधि कैसैं मिलै।। ताका उत्तर।। ऐसे विरोध लीएं कथन कालदोषतैं भए हैं।। इस कालविषैं प्रत्यक्षज्ञानी वा बहुश्रुतनिका तौ अ[redacted] भाव भया।। और [redacted] स्तोकबुद्धी ग्रंथ करनेके अधिकारी भए।। [redacted]

१८७

१० तिनिकौं तो निर्द्धार नाहीं होइ सकै है सो कोई इनका स्वरूप विरुद्ध कहै तौ आपही कौं नासिजाया बहुरि

तिनके अनुमैं तैं कोई अर्थ अन्यथा भासै ताकौं तैसैं लिखै कोई [redacted]
अथवा इस काल विषै [redacted] केई जैन मत विषै भी कषायी भए हैं सो कोई कारण पाइ अन्यथा कथन
उनौंनै लिख्या है [redacted] ऐसें अन्यथा कथन भया तातैं जैन शास्त्रनि विषै विरोध भासनें लागा सो
[redacted] इतनौ करनौ ।। [redacted] कथन करनें वा
ले [redacted] बहुत प्रमाणीक कहै कि इस कथन करनें वाले बहुत प्रमाणीक हैं ऐसा विचार करि बडे आ
चार्यादिकनिका कह्या कथन प्रमाण करनौ ।। बहुरि जिनमतके बहुत शास्त्र हैं तिनिकी आम्ना
य मिलावनी ।। जो परंपरा आम्नायतें मिलै सो कथन प्रमाण करनौ ।। ऐसें विचार कीएं भी
सत्य असत्यका निर्णय न होइ सकै तौ जैसें केवलीकौं भास्या है तैसैं प्रमाण है [redacted]
[redacted] ऐसैं मानि लैनी ।। जातैं [redacted] [redacted]
[redacted] तत्त्वनिका निर्द्धार भए बिना तौ मोक्षमार्ग होइ नाहीं [redacted] देवादिक का
[redacted] अन्य कथनका निर्द्धार न होइ वा संशयादि रहै वा अन्यथा भी जानपनौ
होइ जाइ अर केवलीका कह्या प्रमाण है ऐसा श्रद्धान रहै तौ मोक्षमार्ग [redacted] विषै विघ्न नाहीं ।। तैसें
ऐसा जाननी ।। इहां कोई तर्क करै ।। जैसें [redacted] नाना प्रकार कथन जिनमत विषै कह्या ।। तैसें
अन्यमत विषै भी कथन पाईए है ।। तुम्हारे मतकौ कथनका तौ तुम जिस तिस प्रकार स्थापन
कीया अर अन्यमत विषै ऐसे [redacted] कथनकौं तुम दोष लगावौ सो यह तुम्हारे रागद्वेष है ।। ता
का समाधान ।। कथन तौ नाना प्रकार होइ अर प्रयोजन एक ही कौं पोषै तौ कोई दोष नाहीं
अर [redacted] कहीं कोई प्रयोजन पोषै कहीं कोई प्रयोजन पोषै तौ दोष ही है ।। सो जिनमत वि

198

जैसैं एक प्रयोजन रागादि मेटनेंका है सो कहीं बहुत राग छुडाय थोडा रागादि करावनेंका
[redacted] प्रयोजन पोष्या है कहीं सर्वथा रागादि मिटावनेंका प्रयोजन पोष्या है।। परन्तु रागादि बधा
वनेंका प्रयोजन कहीं नाहीं तातैं जिनमतका कथन सर्व निर्दोष है।। अर अन्यमत विषै कहीं रा
गादि मिटावनेंका प्रयोजन लीएं कथन करै कहीं रागादि बधावनेंका प्रयोजन लीएं कथन करै
[redacted] ऐसैं ही और भी प्रयोजनकी विरुद्धता लीएं कथन करै तातैं अन्यमतका कथन
सदोष है।। लोक विषै भी एक प्रयोजन [redacted] कों पोषते नाना वचन कहै ताकों प्रमाणी
क कहिए है।। अर प्रयोजन और और [redacted] पोषती बातें करै ताकों बाउला कहिए है।। बहुरि
जिनमत विषै [redacted] नाना प्रकार कथन है सो जुदी जुदी १९८
अपेक्षा लीएं है तहां दोष नाहीं।। अन्यमत विषै एक ही अपेक्षा अन्य अन्य कथन करै तहां [redacted]
दोष है।। जैसैं जिनदेवकै वीतराग भाव है अर समवसरणादि विभूति भी पाईए है तहां विरोध ना
हीं।। समवसरणादि विभूति की रचना इन्द्रादिक करै है।। इनिकौं तिस विषै रागादिक नाहीं।। तातैं
दोऊ बात संभवै है।। अर अन्यमत विषै ईश्वरकों [redacted] साक्षीभूत भी कहै अर [redacted]

१ वीतराग

[redacted] तिसकूँ करि कीए काम क्रोधादि भाव निरूपण करै॥ [redacted] सो एकूँ ही कै वीतरागपनौं अर काम क्रोधादि भाव कैसें संभवै॥ ऐसैं ही अन्यत्र जाननौं॥ बहुरि कालदोषतैं जिनमत विषै एक ही प्रकार करि कोई कथन विरुद्ध लिख्या है सो यह तुछबुद्धीनिकी भूलि है॥ किछू मत विषै दोष नाहीं॥ सो भी जिनमतका अतिशय इतना ही है॥ प्रमाण विरुद्ध कथन कोई करि सकै नाहीं॥ कहीं सूरीपुर विषै कहीं द्वारावती विषै नेमिनाथ स्वामीका जन्म लिख्या सो कोई ही हो हु [redacted] लिखि तो कहीं जमुना नदी अप्रमाण विरुद्ध माननेमें आवै नाहीं॥ [redacted] ऐसैं ... समुद्रतैं करै अर कहै [redacted] माननेमें ... बहुरि वीर्य मुख विषै [redacted] ॥ परंतु नगर विषै जन्म होना प्रमाण विरुद्ध नाहीं॥ अब भी होता दीसै है॥

सर्वज्ञादिक बहुरि अन्यमत विषै [redacted] यथार्थ ज्ञानी के कीए ग्रंथ बतावैं बहुरि तिनि विषै परस्पर विरुद्ध भासै कहीं तो बालब्रह्मचारीकी प्रशंसा करै कहीं कहै पुत्र बिना गति ही होइ नाहीं सो दोऊ सांच कैसें होइ॥ बहुरि प्रमाण विरुद्ध कथन तिनि विषै पाईए है॥ वीर्य मुख विषै पड़नेतैं मछली के पुत्र हुवा सो [redacted] ऐसैं अबार काहू कै होता दीसै नाहीं अनुमानतैं मिलै नाहीं सो ऐसे भी कथन बहुत पाईए सो इहां सर्वज्ञादिककी भूलि [redacted] मानिए सो तो कैसें भूलै अर [redacted]

[redacted] सो ऐसे कथन तहाँ बहुत पाईए

१९९

२ तहीं× ३ अभ्यास×

विरुद्धकथनमाननेंमैं आवैनाहीतातैं तिनकेमतविषैदोषठहराईए है॥ ऐसाजा[illegible]नि
एकजिनमतहीकाउपदेशग्रहणयोग्यहै॥ तहीं प्रथमानुयोगादिकका अभ्यासकरनां॥
[illegible] पहलैं याका करनां पीछैं याका करनां॥ [illegible]
[illegible] अपनें परिणामनिकी अवस्थादेषि जिसके अभ्यास
तें अपनें धर्म [illegible] विषैप्रवृत्तिहोइ तिसहीका अभ्यासकरनां॥ अथवा कदाचि
त् किसीशास्त्रका अभ्यासकरै कदाचित् किसीशास्त्रका अभ्यासकरै [illegible]
[illegible] बहुरि जैसैं रोजनामां वि
षै तौ रूकमजहीं तहीं लिषी है [illegible] तिनिकों षातै ठीकषतावै तौ [illegible] लहनां दि
नीका निश्चयहोइ॥ तैसैं शास्त्रनिविषैतौ अनेकप्रकारउपदेशजहींतहीं [illegible] दीया है॥ [illegible]
ताकों सम्यग्ज्ञानविषै यथार्थप्रयोजनलीएं पहिचानैंतौ हित अहितका निश्चयहोइ॥ [illegible]
[illegible] तातैं स्यात्पदकीसापेक्षलीएं सम्यग्ज्ञानकरि जेजीवजिनवचननिविषैरमैं हैं तेजी १९९
व शीघ्रही शुद्धआत्मस्वरूपकों प्राप्तहोहै॥ मोक्षमार्गविषै पहलैं उपायआगमज्ञानकहा है [illegible]
ऐं तुमकों नीयथार्थबुद्धिकरि आगमअभ्यासकरनां॥ तुम्हाराकल्याणहोगा॥ ७॥ इतिमो
क्षमार्गप्रकाशकशास्त्रविषैउपदेशस्वरूपप्रतिपादकनामा अधिकारसंपूर्णभया
॥७॥ श्री

Margin notes:
१ ऐसा निश्चय मनांहीं×
२ अनेक×
३ आगमकाज्ञानबिना और धर्मकासाधनहोइसकैनांहीं तातैं

१९९/A

।।ॐनमः।।दोहा।।शिवउपायकरतैंप्रथम।कारनमंगलरूप।।विघ्नविनाशकसुषकरन
नमौंशुद्ध[redacted]शिवरूप।।१।।अथमोक्षमार्गकास्वरूपकहिएहै।।पहलैंमोक्षमार्गकेप्रतिपक्षीमि
थ्यादर्शनादिकतिनकास्वरूपदिषाया।तिनकोंतौदुःखरूपदुःखकाकारनजानिहेयमानि
तिनकात्यागकरनी।।बहुरिबीचिमैं[redacted]उपदेशकास्वरूपदि
षायाँ।।अबमोक्षकेमार्गसम्यग्दर्शनादिकतिनिकास्वरूपदिषाईएहै[redacted]नकोंसुषरूपसुष
काकारनजानिउपादेयमानिइनिकाअंगीकारकरनी।।[redacted]जातैंआत्माकाहितमोक्षहैतिसही
काउपायआत्माकोंकर्त्तव्यहै।।तातैंइसहीकाउपदेशइहांदीजिएहै।।तहांआत्माकाहितमोक्ष
हीहैऔरनाहींऐसानिश्चयकैसैंहोइसोकहिएहै।।आत्माकैनानाप्रकारअवस्थापाईएहै[redacted]
तिनिविषैऔरतौकोईअवस्थाहोहुकिछूआत्माकाबिगारसुधारनाहीं।।एकदुःखसुषअवस्था[redacted]
तैंविगारसुधारहै।।सोइहांकिछूउदाहरनदीजिएनाहींप्रत्यक्ष[redacted]
[redacted]ऐसैंहीप्रतिभासैहै।।लोकविषैजेतेआत्माहैतिनिकेएकउपाययहुपाईएहै
दुःख[redacted]नहोइसुषहोइ।।बहुरिअन्यउपायजेतेकरैहै[redacted]एकइसहीप्रयोजनलीएकरैहैदूसराप्र
योजननाहीं।।[redacted]जिनकेनिमित्ततैंदुषहोताजानैंतिनकोंदूरिकरनेंकाउपायकरैअरजिनि
केनिमित्ततैंसुषहोताजानैंतिनिकेहोनेंकाउपायकरै।।बहुरिसंकोचविस्तारादिअवस्थाभीआ
त्माहीकेहोहैं।परंतुजिनिकरिदुषसुषहोतानजानैंतिनिकेदूरिकरनेंकावाहोनेंकाकिछूभीउ
पायकोईकरैनाहीं।।सोइहांआत्मद्रव्यकाऐसाहीस्वभावजाननाऔरतौसर्वअवस्थाकोंसहि

२वाअनेकपरद्रव्यनिकाजैसैंयोगमिलै२

२ताकोंजानिउपदेशकोंयथार्थसमझनी२

२गुणपर्यायरूप२

२जेते२

200

४जानना॥६ सो दुषी होइ तब मस्ता चाहै सो मोचनें मैं नानादिक मैं द सो इ आइहै परंतु [redacted]
[redacted] नइ सारि मानी होइ दुष कों हरि की मचाहै है॥ वाम वा चाहै [redacted] सो मरनें नैं आपनी नाम्रा मानै है पर

हि सकै एक दुःखकों सहि सकता नाहीं॥ परवश्य [redacted] दुःख होइ सो यहु कला करै ताकों भोगवै परंतु स्वव
जैसा होइ तैसा होइ
श [redacted] तौ किंचित् भी दुःखकों न सहै॥ अर [redacted] मैं को च विस्तारादि अवस्था [redacted] तिनिकों स्व
वशपनैं भोगवै॥ सो [redacted] स्वभाव विषै तर्क नाहीं [redacted] आत्मा का ऐसा ही स्वभाव [redacted] कि
[redacted]॥ बहुरि दुःख न होइ सो ही सुष है॥ जातैं [redacted] आकुलता लक्षण
लीए दुःख तिसका अभाव सोई निराकुल लक्षण सुष है सो यहु भी प्रत्यक्ष भासै है॥ [redacted]
[redacted]
[redacted] होइ सो थोरा सा दुषी है। जाकै आ [redacted]
[redacted]॥ बालको ईसा मस्त्री का संयोग मिलो जाकै अंतरंग विषै आकुलता है
सो दुषी ही है जाकै आकुलता नाहीं सो सुषी है॥ [redacted]
[redacted]
[redacted] आपकों भी [redacted] रागद्वेषनि ऐ नीका है मा॥ [redacted]
[redacted] आकुलता [redacted]
[redacted]॥ बहुरि आकुलता होइ है सो रागादिक कषायभा
[redacted] आपकों सुषी मानैं परंतु [redacted]
वनि होइ है॥ जातैं रागादिभावनि करि यहु तौ द्रव्यनिकों और भांति परिणमाया चाहै अर वै द्र
व्य और भांति परिणमैं तब याकै आकुलता होइ॥ सो [redacted] ही कै तौ आपकै रागादिक [redacted] दूरि हो
इ कै आप चाहै तैसैं ही सर्व द्रव्य परिणमैं तौ आकुलता मिटै॥ सो सर्व द्रव्य तौ याकै आधीन नाहीं॥

तु आप नीच
मिल नीको प्र
दुष्ट रिका मा
[redacted]
चाहै है तातैं
क [redacted]
[redacted] यका
अभाव करनी
ही याका कर्त्त
व्य है॥४

२ पत्नैं५

[redacted]

२००

कदाचित् कोई द्रव्य जैसे याकी इछा होइ तैसें ही परिणमै तौ भी याकी सर्वथा आकुलता दूरि न होय [redacted]
सर्व कार्य याका चाह्या ही [redacted] होय अन्यथा न होइ तब यहु निराकुल रहै सो यहु तौ होइ ही सकै नाहीं॥ जो
तैं कोई द्रव्यका परिणमन कोई द्रव्यकै आधीन नाहीं॥ [redacted] तातैं अपनें रागादि भाव दूरि भएं निराकुल
ता होइ॥ सो यहु कार्य बनि सकै है॥ जातैं रागादिक भाव आत्माका स्वभाव भाव तौ है नाहीं [redacted]
[redacted] ऊपाधिक भाव है [redacted] पर निमित्ततैं भए हैं॥ [redacted] सो निमित्त मोहकर्मका उदय है। ताका अभा
व भएं सर्व रागादिक विलय होइ जाइ॥ तब आकुलताका नाश भएं [redacted] दुःख दूरि होइ सुखकी प्राप्ति होइ
तातैं मोहकर्मका नाश हितकारी है॥ बहुरि तिस आकुलताकौं सहकारी कारण ज्ञानावरणादिकका उद
य है॥ ज्ञानावरण दर्शनावरणतैं ज्ञान दर्शन [redacted] संपूर्ण न प्रगटै तातैं याकै देखने जाननेकी [redacted]
आकुलता होइ अथवा यथार्थ [redacted] संपूर्ण वस्तुका स्वभाव न जानै तब रागादिरूप होइ [redacted] प्रवर्त्तै॥ बहु
रि अंतरायकै उदयतैं इछा अनुसारि दानादि कार्य न बनैं तब आकुलता होइ॥ [redacted] ऐसें [redacted]
[redacted] नाहीं [redacted]
इनिका उदय सहकारी कारण है [redacted] मोहकौ उदयका नाश भएं इनिका [redacted] बल [redacted] नाहीं [redacted]
[redacted] आपैं आप नाशकौं प्राप्त होइ॥ परंतु सहकारी कारण भी दूरि होइ जा
इ तब [redacted] प्रगटरूप निराकुल [redacted] दशा भासै [redacted]॥ तहीं केवलज्ञानी भगवान् अनंत सुखरूप दशा
कौं प्राप्त कहिए [redacted]॥ बहुरि [redacted] अघातिकर्मनिका उदय [redacted] कै निमित्ततैं शरीरादिकका संयोग हो है सो
[redacted] मोहकर्मका उदय होतैं शरीरादिकका संयोग आकुलताकौं बाह्य सहकारी कारण [redacted]
है॥ अंतरंग [redacted] मोहका उदयतैं रागादिक होइ अर बाह्य अघातिकर्मनिके [redacted] उदयतैं रागादिककैं

२कौ उदय२

२है सो मोह का उदय होतैं आकुलताकौं२

२न होइ आकुलता होइ२

२अंतर्मुहूर्त कालविषैं२

कारण शरीरादिक का संयोग होइ तब आकुलता उपजै है [redacted] बहुरि मोह का उदय नाश भए भी अघातिकर्म का उदय रहै है तौ [redacted] किछू भी आकुलता उपजाइ सकै नाहीं ॥ [redacted] परंतु पूर्वै आकुलता का सहकारी कारण था तातैं अघातिकर्मनि का भी नाश आत्मा कौं इष्ट ही है ॥ सो केवली कै इनि कै होतैं किछू दुख नाहीं तातैं इनि कै नाश का उद्यम भी नाहीं परंतु मोह का नाश भए ए कर्म आपै आप थोरे ही काल मैं सर्व नाश कौं प्राप्त होइ जाइ है ऐसैं सर्व कर्म का नाश होना आत्मा कौं हित है ॥ बहुरि सर्व कर्म कै नाश ही का नाम मोक्ष है तातैं आत्मा का हित एक मोक्ष ही है और किछू नाहीं ऐसा निश्चय करना ॥ इहां कोऊ कहै संसार दशा विषै पुण्य कर्म का उदय होतैं भी जीव सुखी हो है तातैं केवल मोक्ष ही हित है ऐसा काहे कौं कहिए ॥ ताका समाधान ॥ संसार दशा विषै सुख तौ सर्वथा है ही नाहीं ॥ दुख ही है ॥ परंतु काहू कै कबहू [redacted] बहुत दुख हो है ॥ काहू कै कबहू थोरा दुख हो है सो [redacted] पूर्वै बहुत दुख था वा अन्य जीवनि कै बहुत दुख पाइए है तिस अपेक्षा तैं थोरे दुख वाले कौं सुखी कहिए ॥ बहुरि तिसही अभिप्राय तैं थोरे दुख वाला आपकौं सुखी मानै है ॥ परमार्थ तैं [redacted] सुख है नाहीं ॥ [redacted] बहुरि जो थोरा भी दुख सदा काल रहै तौ वाकौं भी [redacted] हित ठहराइ[redacted]ए सो भी नाहीं ॥ [redacted] थोरे काल ही पुण्य का उदय रहै तहां थोरा दुख होइ पीछै बहुत दुख होइ जाइ तातैं संसार अवस्था हितरूप नाहीं ॥ २०१

जैसैं काहू कै विषमज्वर है ताकै कबहू असाता बहुत हो है कबहू थोरी हो है थोरी असाता होइ तब वह आपकौं नीका मानै ॥ लोक भी कहै नीका है ॥ परंतु [redacted] परमार्थ तैं यावत् [redacted]ज्वर का सद्भाव है तावत् नीका नाहीं है ॥ तैसैं संसारी कै मोह का उदय है ताकै कबहू आकुलता बहुत हो है कबहू थोरी हो है ॥ थोरी आकुलता होइ तब वह आपकौं सुखी मानै लोक भी कहै सुखी है परंतु परमार्थ तैं यावत् मोह का सद्भाव है तावत् सु

५ आकुलता घटनें वधनें की बाह्य सामग्री के अनुसारि नाहीं। कषायनि भावनि का घटनें बधनें कै अनुसारि है। जैसें ५

...नाहीं। बहुरि मुनि संसार दशा विषैं भी [redacted] आकुलता घटें सुख नाम पावै हैं। किछू बाह्य सामग्री तें सुख नाहीं। जैसें काहू कै दरिद्री कैं किंचित् धन की प्राप्ति भई तहीं [redacted] किछू आकुलता घटनें तैं वाकौं सुखी कहिए अर वह भी आप कौं सुखी मानैं। बहुरि काहू बहुत धनवान कै [redacted] किंचित् धन की हानि भई तहीं किछू आकुलता वधनें तैं वाकौं दुखी कहिए [redacted] अर वह भी आप कौं दुखी मानै ऐसैं ही सर्वत्र जाननां। बहुरि काहू कै थोरा धन है अर वाकै संतोष है तौ वाकौं [redacted] बहुरि काहू कै बहुत धन है अर वा[redacted] कै तृष्णा है तौ [redacted] बहुरि काहू कौं काहू नैं बुरी कह्या अर वाकै क्रोध न भया तौ [redacted] वाकै आकुलता [redacted] न होहै अर थोरी बातें करें ही क्रोध होइ आवै तौ वाकै आकुलता घनी होहै। [redacted] बहुरि जैसें गऊ कै [redacted] वछडे तैं किछू भी प्रयोजन [redacted] नाहीं परंतु मोह बहुत तातैं वाकी रक्षा करनें की बहुत आकुलता होहै। बहुरि सुभट [redacted] कै [redacted] तें [redacted] धनें कार्य सधै है परंतु रण विषै [redacted] मरनें की भी थोरी आकुलता होहै। तातैं ऐसा जाननां [redacted] सुख दुख मांनिए है। बहुरि आकुलता [redacted] कौं घटनां वधनां रागादिक कषाय [redacted] घटनें वधनें कै अनुसारि है। [redacted]

५ आकुलता वधें दुख नाम पावै है ५

५ आकुलता थोरी है ५

[redacted] ५

५ [redacted] कै आकुलता घनी है ५

५ थोरी वा [illegible] कै ५ [redacted]

[illegible] ५ मानादिक [illegible] रागादिक [illegible] वधै तब ५

२ संसार दशा विषैं भी आकुलता घटनें वधनें तैं [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ बहुरि पर द्रव्यरूप बाह्य सामग्री
कै अनुसारि सुष दुष नांही॥ कषायतें याकै इछा उपजै अर याकी इछा [illegible] अनुसारि बाह्य सा
मग्री मिलै तब याकै किछू कषाय उपशमैं [illegible] मंतैं आकुलता घटै तब सुष मानै
अर इछा अनुसारि सामग्री न मिलै तब कषाय वधनें तें आकुलता वधै तब दुष मानै सो है तो ऐसैं
अर यहु [illegible] जानैं मो कौं पर द्रव्य के निमित्ततैं सुष दुष हो है॥ सो ऐसा जानना भ्रम ही है॥ तातैं
इहां ऐसा विचार करना जो संसार अवस्था विषै किंचित कषाय घटें सुष मानिए ताकौं हित
जानिए तौ जहां सर्वथा कषाय दूरि होइ [illegible] कषाय का कारण दूरि होइ [illegible] परम निराकुल [illegible]
ताहाने करि अनंत सुष पाइए [illegible] ऐसी मोक्ष अवस्था कौं [illegible] कैसें हित न [illegible] मानिए॥ बहुरि सं
सार अवस्था विषै उच्च पद कौं पावै तौ भी कै तौ विषय सामग्री मिलावने की आकुलता होइ कै वि
षय सेवने की आकुलता होइ कै अपने [illegible] और कोई क्रोधादि कषायतें इ
छा उपजै ताके पूर्ण करने की आकुलता होइ॥ कदाचित् सर्वथा निराकुल होइ सकै नांही॥
[illegible] अभिप्राय विषै तौ अनेक प्रकार आकुलता बनी ही रहै अर बाह्य [illegible] 202
कोई आकुलता मेटने के उपाय करै सो प्रथम तौ [illegible] कार्य सिद्ध होइ नांही
अर जो भवितव्य योगतैं वह कार्य सिद्ध होइ जाइ तौ तत्काल और आकुलता मेटने का उपाय
विषै लागै ऐसैं आकुलता मेटने की आकुलता निरंतर रह्या करै तातैं संसार अवस्था विषै पु

जो ऐसी आकुलता न रहै है तौ नए नए विषय सेवनादि कार्यनि विषै काहे कौं प्रवर्त्तै है।

एप का उदय तैं इन्द्र अहमिंद्रादि पद पावै तौ भी निराकुलता न होइ दुखी ही रहै तातैं संसार अ
वस्था [redacted] हितकारी नाहीं ।। [redacted] बहुरि मोक्ष अवस्था विषै कोई ही प्रकार की आकुल
ता रही नाहीं ।। तातैं आकुलता मेटनें का उपाय करनें का भी प्रयोजन नाहीं [redacted] सदा काल
शांतरस करि सुखी रहै है ।। तातैं मोक्ष अवस्था ही हितकारी है [redacted] ।। [redacted]

पूर्वै भी संसार अवस्था का दुःख का अर मोक्ष अवस्था का सुख का विशेष वर्णन कीया है सो
इस ही प्रयोजन कै अर्थि कीया है ताकौं भी विचारि मोक्ष कौं [redacted] हित रूप [redacted] जानि
मोक्ष का उपाय करनां ।। सर्व उपदेश का तात्पर्य इतना है ।। इहां प्रश्न जो मोक्ष का उपाय का
ललब्धि आएं भवितव्य अनुसार बनै है कि मोहादिक का उपशमादि भएं बनै है कि
अपनें पुरुषार्थ तैं उद्यम कीए बनै है सो कहौ ।। जो पहले दोय कारण मिलें बनै है तौ हम
कौं उपदेश काहे कौं दीजिए है अर पुरुषार्थ तैं बनै है तौ उपदेश सर्व सुनैं तिनि विषै को
ई उपाय करि शकै कोई न करै सो कारन कहा ।। ताका समाधान ।। [redacted]

[redacted]

एक कार्य होनैं विषै अनेक कारण मिलै है सो मोक्ष का उपाय [redacted] बनै है तहां तौ पूर्वोक्त
तीनों ही कारण मिलै है॥ अर न बनै है तहां तीनों ही कारण न[redacted] मिलै है॥ [redacted] तिनि विषै पूर्वोक्त तीन कारण कहे
काललब्धि वा होनहार तौ किछू वस्तु नाहीं॥ जिस काल विषै कार्य बनै सोई काललब्धि अर
जो कार्य भया [redacted] सोई होनहार॥ बहुरि जो कर्म का उपशमादिक है सो पुद्गल की शक्ति
है ताका [redacted] आत्मा कर्ता हर्ता नाहीं॥ बहुरि पुरुषार्थ तैं उ
द्यम करिए है सो यहु आत्मा का कार्य है तातैं आत्मा कौं पुरुषार्थ करि उद्यम करने का उपदेश
दीजिए है॥ तहां [redacted] यहु आत्मा जिस कारण तैं कार्य सिद्धि [redacted] अवश्य होइ तिस का २०२
रण [redacted] रूप उद्यम करै तहां तौ अन्य कारण [redacted] मिलै ही मिलै अर [redacted] कार्य की भी सिद्धि होइ ही होइ ब
हुरि जिस कारण तैं कार्य की सिद्धि होइ अथवा नाहीं भी होइ तिस कारणरूप उद्यम करै तहां
अन्य कारण मिलै तौ कार्य सिद्धि [redacted] होइ न मिलै तौ न सिद्धि होइ॥ सो जिनमत विषै जो मोक्ष
का उपाय कह्या है सो इसतैं मोक्ष होय ही होय तातैं जो जीव पुरुषार्थ करि जिने[redacted]श्वर का उप

दिशा अनुसारि मोक्षका उपाय करै है ताकै काललब्धि वा होनहार भी • भया अर कर्मका उपश
मादि भया है तौ यहु ऐसा उपाय करै है तातैं जो पुरुषार्थ करि मोक्षका उपाय करै है ताकै स
र्व कारण मिलै है ऐसा निश्चय करनी।। अर वाकै अवश्य मोक्षकी प्राप्ति हो है।। बहुरि जो जीव
पुरुषार्थ करि मोक्षका उपाय न करै ताकै काललब्धि वा होनहार भी नाही।। अर कर्मका उप
शमादि न भया है तौ यहु [redacted] उपाय न करै है तातैं जो पुरुषार्थ करि मोक्षका उपाय न करै
है ताकै कोई कारण मिलै नाही ऐसा निश्चय करनी। अर वाकै मोक्षकी प्राप्ति न हो है।। बहुरि
तू कहै है [redacted] उपदेश तौ सर्व सुनै है कोई [redacted] मोक्षका उपाय करि सकै
कोई न करि सकै सो कारण कहा। ताका कारण यहु ही है [redacted] जो उपदेश सुनि पुरुषार्थ
[redacted] करै है सो मोक्षका उपाय करि सकै है।। अर पुरुषार्थ न करै है सो मोक्षका उपाय न करि
सकै है।। [redacted]

[redacted] उपदेश तौ शिक्षामात्र है।। फल जै [redacted] सो पुरुषार्थ करै [redacted] तैसा ला
गै [redacted]।। बहुरि अभव्य भी द्रव्यलिंगी मुनि मोक्षके अर्थि ग्रहस्थपनो छोडि तपश्चरणादि करै है तौ
पुरुषार्थ तौ कीया कार्य सिद्ध न भया।। तातैं [redacted] पुरुषार्थ कीएं तौ किछू सिद्धि नाही।।
[redacted]।। ताका समाधान।। [redacted] अन्यथा पुरुषार्थ करि [redacted] फल चाहै तौ कैसे
सिद्धि होइ।। तपश्चरणादि व्यवहार साधन विषै अनुरागी होइ प्रवर्त्तै ताका फल शास्त्र विषै
तौ शुभबंध कह्या अर यहु तिसतै मोक्ष चाहै सो कैसे होइ।। [redacted]

[redacted]

204

[redacted]

[redacted]॥ यह तौ भ्रम है॥ बहुरि प्रश्न जो भ्रम कीनी तौ कारण कर्म ही है॥ पुर
षार्थ कहा करै॥ ताका उत्तर॥ सांचा उपदेश तैं निर्णय [redacted]
की ऐ [redacted] भ्रम दूरि होइ॥ [redacted] सो ऐसा पुरषार्थ न करै है तिसही तैं भ्रम रहै है॥ [redacted]
निर्णय करने का पुरषार्थ करै तौ भ्रम [redacted] का कारण मोह कर्म ताका भी
उपशमादि होइ [redacted] तब भ्रम दूरि होइ जाइ॥ जातैं निर्णय करतैं परिणामनि की विशुद्ध
ता होइ तिसतैं मोह का स्थिति अनुभाग घटै है॥ बहुरि प्रश्न जो निर्णय करने विषै उपयो
ग न लगावै है ताका कारण नीतौ [redacted] कर्म है ताका समाधान॥ [redacted]
नो
[redacted] विचार करने की शक्ति [redacted] नी होति न कैतौ कर्म ही का कारन [redacted]
एकेंद्रियादिकके: है॥ याकै तौ ज्ञानावरणादिक का क्षयोपशम तैं [redacted] निर्णय करने की शक्ति भई॥ [redacted] : जल उपयो गलगावे [redacted] तिसही का नि
[redacted] यह अन्य निर्णय करने विषै उ २०४
पयोग लगावै इहाँ उपयोग न लगावै सो यह तौ याही का दोष है कर्म का [redacted] र्णय हो [redacted]
[redacted] तौ किछू प्रयोज इसकै:
न नाही॥ बहुरि प्रश्न जो सम्यक्त्व चारित्र का घातक मोह है ताका अभाव भए बिना मोक्ष का
उपाय कैसैं बनै॥ ताका उत्तर॥ तत्त्व निर्णय करने विषै उपयोग न लगावै सो तौ याही का दोष
है॥ [redacted] बहुरि पुरषार्थ करि तत्त्व निर्णय विषै उपयोग लगावै २०५
तब स्वयमेव ही मोह का अभाव भए सम्यक्त्वादि रूप मोक्ष के उपाय का पुरषार्थ बनै है॥ सो

२०४/४

१ मोनैं
३ नेरा हीहोयहै

१ बहुरि जबदेशना नीरा जिए हैसो
२ सदी पुरषार्थकरावने के अर्थ ही
जिहैं। बहरि ३

मुख्यपनैं तौ तत्वनिर्णय विषै उपयोग लगावनें [redacted] पुरषार्थ करनी ॥ [redacted] पुरषा
र्थतैं [redacted] मोक्षके उपायका पुरषार्थ आप ही तैं सि । इहां कोऊ आर तत्वनिर्णय करनें
[redacted] विषै कोई कर्मका दोष नाहीं [redacted] आरत आपतौ महंतर साबा है आपनी
कर्मादिकके लगावै तौ [redacted] जिनआज्ञा [redacted] तौ असी अनीति संभवैनी
ही ॥ ताकौं विषयकषायरूप ही रहनां [redacted] तातैं जुगवो [redacted] लेहै [redacted]
[redacted] मोक्षका साधन आनि लाग होइ तौ असी युक्तिकाहेकौं बनावै ॥ संसारीक कार्य
[redacted] नि विषै [redacted] आपनां पुरषार्थ नैं सिद्धि न होती जानें तौ भी पुरषार्थ [redacted]
[redacted] करि उद्यम कीयाकरै ॥ इहां पुरषार्थ खोयबै वैसा जांनिए है मोक्षकौं
[redacted] इन्द्रादिकभी उत्कृष्ट कहै है वाका स्वरूप पहचानि ताकौं हितरूप
न जानै है ॥ हित जांनि ताका उद्यम बनै सो न करै [redacted] यह असंभव है ॥ इहां प्रश्न [redacted]
[redacted] द्रव्यकर्मके उदयतें भावकर्म होइ भावकर्म तैं द्रव्यकर्म
का बंध होइ ॥ बहुरि ताके उदयतैं भावकर्म होइ असें ही अनादितैं परंपरा है ॥ मोक्षका उ
पाय कैसें होइ सकै ॥ ताका समाधान ॥ [redacted] कर्मका बंध वा उदय सदाकाल समान
ही हुवा करै तौ तौ असें ही है परंतु [redacted] परिणामनिके निमित्ततैं पूर्वबद्ध कर्म [redacted]
[redacted] शक्ति हीन अधिक होइ है ॥ [redacted]
[redacted] तातैं तिनिका उदय भी [redacted] मंद होइ है तिनिके निमित्ततैं नवीन बंधन
[redacted] मंद तीव्र होइ है [redacted] तातैं संसारी जीवनिकैं कबहू ज्ञानादिक घने प्रगट होइ है कबहू थोरे प्रगट होइ है कबहू

१ उमकका सामत्यप हैउ

१ काभी उत्कर्षण अपकर्षण संक्रमणादि होतैं तिनिकी
२ कर्मउदयके निमित्तकरि

तिनिकै तौ उपदेश समझनेंका ज्ञान ही नाहीं।। अर तीव्र रागादि सहित हैं
जीवनिका उपदेश विषै उपयोग लागै [redacted] नाहीं तातैं जीव ४

रागादिक मंद होहै कबहू तीव्र होहै।। [redacted] ऐसें पलटनि हूवा करै है।। [redacted] तहां कूंन चितसैनी
पंचेंद्री पर्याप्त पर्याय पाया तहां [redacted] मन करि विचार करनेंकी शक्ति भई।।
[redacted] बहुरि याकै कबहू [redacted] तीव्र रागादिक होइ कबहू मंद होइ।। तहां तीव्र रागादिकका उदय होतैं तौ [redacted]
[redacted] बहुरि याकै कबहू तीव्र रागादिक होइ कबहू मंद होइ।। तहां [redacted] रागादिकका उदय होतैं
विषयसक्त [redacted] कषायादिकके कार्य [redacted] निविषै ही प्रवृत्ति होइ।। [redacted] बहुरि [redacted] रागादिकका मंद उदय होतैं
बाह्य उपदेशादिकका निमित्त बनैं अर आप पुरुषार्थ करि तिनि उपदेशादिक विषै उपयोगकौं लगा
वै तौ धर्म्मकार्य विषै प्रवृत्ति होइ अर निमित्त न बनैं वा आप पुरुषार्थ न करै तौ अन्य [redacted] के कार्य
निविषै ही प्रवर्त्तै परंतु मंद रागादि लीऐं प्रवर्त्तै।। [redacted] इस अवसर विषै [redacted] उपदेश कार्यकारी है।। [redacted]
[redacted] विचारशक्ति रहित [redacted] एकेंद्रियादिक [redacted]
[redacted]।। विचारशक्ति सहित होइ अर तिनिकै रागादिक मंद होइ [redacted] तौ कोउ
[redacted]
पदेशका निमित्ततैं धर्म्मकी प्राप्ति होइ जाइ तौ ताकौं भला होइ।। [redacted] ए
कार्यकारी है।। [redacted] बहुरि इसही अवसर विषै पुरुषार्थ कार्यकारी है।। [redacted]
केंद्रियादिक तौ धर्म्मकार्य करनेंकौं समर्थ ही नाहीं कैसें पुरुषार्थ करै।। अर तीव्रकषायी पुरुषार्थ
करै सो पापही का करै।। धर्म्मकार्यका पुरुषार्थ होइ सकै नाहीं तातैं विचारशक्ति सहित होइ अर जि
निकै रागादिक मंद होइ सो जीव पुरुषार्थ करि उपदेशादिकके निमित्ततैं तत्वनिर्णयादि विषै
उपयोग लगावै तौ याका उपयोग तहां लगै तब याका [redacted] भला होइ।। [redacted] जो इस
अवसर विषै भी पुरुषार्थ न करै प्रमादतैं काल गमावै कै तौ [redacted] मंद रागादि लीऐं विष
यकषायनिके कार्यनि ही विषै प्रवर्त्तै कै व्यवहार [redacted] धर्म्मकार्यनि विषै प्रवर्त्तै तौ अवसर तौ जाता

१ तत्वनिर्णय करनेंका:

रहै॥ सो याही विषै भ्रमण होइ॥ बहुरि इस अवसर विषै जे जीव पुरुषार्थ करि तत्व निर्णय करने विषै
उपयोग लगावने का अभ्यास राखै तिनिकै विशुद्धता बधै ताकरि कर्म्मनि की शक्ति हीन होइ [redacted]
[redacted] कितेक काल विषै [redacted] आपै आप दर्शनमोह का उपशम होइ तब [redacted] याकै तत्वनि की इस ही तैं
यथावत् प्रतीति आवै॥ सो याका तौ कर्त्तव्य तत्व निर्णय का अभ्यास ही है॥ [redacted] दर्शनमोह का उ
पशम तौ स्वयमेव होइ यामैं जीव का कर्त्तव्य किछू नाहीं॥ बहुरि ताकौं होतैं जीव कै स्वयमेव स
म्यग्दर्शन होइ॥ [redacted] बहुरि सम्यग्दर्शन [redacted] होतैं
श्रद्धान तौ यहु भया मैं आत्मा हौं मुझकौं रागादिक न करने॥ [redacted]
परंतु चारित्रमोह के उदयतैं रागादिक हो है॥ तहां तीव्र उदय होइ तब तौ विषयादि विषै प्रवर्त्तै
है अर मंद उदय होइ तब अपनै पुरुषार्थतैं धर्म्मकार्यनि विषै वा वैराग्यादि भावना विषै उप
योग कौं लगावै है॥ ताकै निमित्ततैं चारित्रमोह मंद होता जाय ऐसैं होतैं देशचारित्र वा सक
लचारित्र अंगीकार करने का पुरुषार्थ प्रगट होइ॥ बहुरि चारित्रकौं धारि अपनी पुरुषार्थ करि
धर्म्म विषै परणतिकौं बधावै [redacted] तहां विशुद्धता करि [redacted] कर्म्म की हीन शक्ति
होइ तातैं [redacted] विशुद्धता बधै ताकरि अधिक कर्म्म की शक्ति हीन होइ ऐसैं क्रमतैं [redacted]
मोह का नाश करै तब सर्वथा परिणाम विशुद्ध होइ [redacted] तिनिकरि ज्ञानावरणादिक का नाश होइ
तब केवलज्ञान प्रगट होइ तहां पीछैं बिना उपाय अघाति कर्म्म का नाश [redacted] करि शुद्ध सिद्धपद कौं पावै
ऐसैं उपदेश का तौ निमित्त बनै अर अपनी पुरुषार्थ करै तौ कर्म्म का नाश [redacted] होइ॥ बहुरि जब कर्म्म का उ
दय तीव्र होइ तब पुरुषार्थ [redacted] न होइ सकै है॥ उपरले गुणस्थाननितैं भी गिरि जाय है तहां [redacted] तौ जै

साहोनहारहोइतैसाहोइ परंतु जहां मैं उदय होइ अर पुरषार्थ होइ सकै तहीं तो प्रमादी न होनों सा
वधान होइ अपनों कार्य करनां ॥ [redacted] जैसैं कोऊ पुरष नदी का प्रवाह वि
षै पड्या [redacted] वहै है ॥ तहां [redacted] पानी का जोर होइ तब तौ वाका पुरषार्थ किछू नाहीं ॥ उपदेश भी कार्यका
री नाहीं ॥ अर पानी का जोर थोरा होइ तब जो पुरषार्थ करि निकसै तौ निकसि आवै नू निकसे तो हो
लूहोलू [redacted] पीछैं पानी का जोर भए वहा चलि जाय ॥ तैसें जीव संसार विषै भ्रमै है तहां कर्म
निका तीव्र उदय होइ तब तौ वाका पुरषार्थ किछू नाहीं उपदेश भी कार्यकारी नाहीं ॥ अर कर्म का मंद
उदय होइ तब वपुरषार्थ करि मोक्षमार्ग विषै प्रवर्त्ते तौ मोक्ष पावै ॥ तिसही कों मोक्षमार्ग का उप
देश दीजिए है ॥ अर मोक्षमार्ग विषै न प्रवर्तै तौ [redacted] पीछैं तीव्र उदय [redacted]
[redacted] आइ [redacted] निगोदादि पर्याय कों पावै ॥ तातैं अवसर चूकनों यो
[redacted] तातें [redacted]
ग्यनीं ही अब सर्व प्रकार अवसर आया है ऐसा अवसर पावनी कठिन है ॥ तातें [redacted]
[redacted] श्रीगुरु दयाल होइ मोक्षमा
[redacted] ॥ अब मोक्षमार्ग
र्गकौ उपदेशै तिस विषै भव्य जीवनि कों प्रवृत्ति करनीं ॥ [redacted] ऐसें जे [redacted]
[redacted] स्वरूप कहिए है ॥ जिनिके निमित्ततैं आत्मा अशुद्ध दशा कों धारि दुखी भया ऐसे जे
[redacted] मोहादिक कर्म तिनिका सर्वथा नाश होतैं [redacted] केवल आत्मा की [redacted]
सर्वप्रकार शुद्ध अवस्था का होनों सो मोक्ष है ॥ ताकाजु उपाय कारण सो मोक्षमार्ग जाननी ॥ सो [redacted]

किंचित्
[redacted] विशुद्ध
ताका इ९

तिसही कों
निकसने की
[redacted] ताही जि
पुहै अर ९

२०६

कारणतौ अनेक प्रकार हो है [illegible]॥ केई कारण तौ ऐसे हो हैं॥ जाके भए विना तौ कार्य [illegible] न होइ
अर जाके भए कार्य होइ वा न होइ। जैसैं मुनिलिंग धारें विना तौ मोक्ष न होइ अर मुनिलिंग धारें मो
क्ष होइ भी नाही भी होइ॥ बहुरि केई कारण ऐसे हैं [illegible] मुख्यपनैं तौ जाके भए कार्य होइ॥ अर ४ कारण कथन ४
काहूकै विना भए भी कार्य सिद्धि होइ। जैसैं अनशनादि बाह्य तप कीए मुख्यपनैं मोक्ष पाईए है॥
भरतादिककै बाह्य तप कीए विना ही मोक्ष प्राप्ति भई॥ बहुरि [illegible]
[illegible] केई कारण ऐसे हैं जाके भए कार्य सिद्धि होइ ही होय॥ जाकों न भए सर्वथा कार्य सिद्धि
न होइ [illegible] जैसें सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र की एक
ता भए तौ मोक्ष होय ही होय अर ताकों न भए सर्वथा मोक्ष न होय॥ ऐसें ए कारण कहे तिनि विषै अ
तिशय करि नियमतैं [illegible] मोक्ष का साधक सौ सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र का एकीभाव सो मोक्षमार्ग
जानना॥ इनि सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र निविषै एक भी न होइ तौ मोक्षमार्ग न होय॥
[illegible] सोई [illegible] सूत्र विषै कह्या है॥ सम्यग्दर्शनज्ञानचा
रित्राणि मोक्षमार्गः॥ इस सूत्र की टीका विषै कह्या है जो इहां मोक्षमार्गः ऐसा एकवचन कह्या ताका अर्थ
यहु है जो तीनों मिलें एक मोक्षमार्ग है॥ जुदे जुदे तीन मार्ग नाही है॥ इहां [illegible] प्रश्न जो असंयत सम्य
ग्दृष्टीकै तौ चारित्र नाही [illegible] वाकै मोक्षमार्ग भया है कि न भया है॥ ताका समाधान॥ मोक्ष
मार्ग याकै होसी यहु तौ नियम भया [illegible] तातैं उपचारतैं याकै मोक्षमार्ग भया भी कहिए॥ परमार्थ
तैं सम्यक्चारित्र भए ही मोक्षमार्ग हो है। जैसैं कोई पुरुषकै किसी नगर [illegible] चालने कौ निश्चय भया तातैं
वा [illegible] कौं व्यवहारतैं ऐसा भी कहिए यहु तिस नगरकौं [illegible] है॥ परमार्थतैं मार्ग विषै

२०७

२ वीतराग भावरूप २ ४ वीतराग भावरूप परिणमें ही [redacted]

गमन की ऐ ही चलनी होसी॥ तैसें असंयत सम्यग्दृष्टी के [redacted]
[redacted] मोक्षमार्ग का श्रद्धान भया तातैं वाकों उपचार तैं मोक्षमार्गी कहिए॥ परमार्थ तैं [redacted]
[redacted] मोक्षमार्ग होसी॥ बहुरि प्रवचनसार विषैं भी तीनों की ए-
काग्रता भऐं ही मोक्षमार्ग कह्या है॥ [redacted] तातैं यहु जाननां तत्वश्रद्धान ज्ञान विना तौ रागादि घटाऐं [redacted]
मोक्षमार्ग नाहीं और रागादि घटाऐं विना तत्वश्रद्धान ज्ञान तैं भी मोक्षमार्ग नाहीं॥ तीनों मिलें
साक्षात् मोक्षमार्ग हो है॥ अब इनका निर्देश और लक्षण निर्देश और परीक्षा द्वार करि निरूपण कीजिए है
तहां सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र मोक्ष का मार्ग है ऐसा नाम मात्र कथन सो [redacted] तौ निर्दे-
श जाननां॥ बहुरि अतिव्याप्ति अव्याप्ति असंभव विपनी करि रहित होइ और जाकरि इनिकों [redacted] पह-
चानिए सो लक्षण जांननां ताका जु निर्देश का कहिए निरूपण सो लक्षणनिर्देश जाननां॥ तहीं जाकों
पहचानें नां होइ ताका नाम लक्ष्य है॥ उस विना और का नाम अलक्ष्य है॥ सो [redacted]
[redacted] ही अतिव्याप्ति पनों [redacted]॥ जैसें आत्मा का ल-
[redacted] लक्ष्य वा अलक्ष्य दोऊ विषैं पाईए तहां अतिव्याप्ति पनों जाननां है॥ जैसें आत्मा का ल-
क्षण अमूर्त्तत्व कह्या सो अमूर्त्तत्व लक्षण है सो लक्ष्य जु है आत्मा तिस विषैं भी पाईए अर अलक्ष्य जु है आ-
काशादिक तिनि विषैं भी पाईए तातैं यहु [redacted] अतिव्याप्ति [redacted] है॥ याकरि आत्मा [redacted] आकाशादि
का भिन्नपना होइ जाइ॥ बहुरि जो कोई लक्ष्य विषैं तौ होइ कोई विषैं न होइ ऐसा लक्ष्य का एकदेश विषैं
पाईए तहां अव्याप्तिपनों जाननां॥ जैसें आत्मा का लक्षण केवलज्ञानादिक कहिए सो केवल-
[redacted] पाईए तहां अव्याप्तिपनों जाननां॥ जैसें आत्मा का लक्षण [redacted] अव्याप्ति [redacted] है॥ याकरि आत्मा
ज्ञान कोई आत्मा विषैं तौ पाईए कोई विषैं न पाईए तातैं यहु [redacted] अव्याप्ति [redacted] है॥ याकरि आत्मा
पहिचानें [redacted] सो कहा नी आत्मा न होइ॥ यहु दोष लागै॥ बहुरि जो [redacted] लक्ष्य विषैं पाई

४ ऐसा लक्षण नहीं कहिए २ — ३ ऐसा लक्षण नहीं कहिए २ — २ पहिचानें २ — ४ यहु दोष लागै ४

२०९

२०७/P णही नांही ऐसा लक्षण जहां कहिए तहां असंभवीपनौ जाननां। ऐसैं आत्माका लक्षण जडप
नां कहिए। प्रत्यक्षादि प्रमाणकरि यहु विरुद्ध है। जातैं यहु असंभवि लक्षण है। या कहिए आ
त्मानैं पुद्गलादिक आत्मा होइ जाइ। अर आत्मा है सो अनात्मा होइ जाइ। यहु दोष लागै
ऐसैं अतिव्याप्ति अव्याप्ति असंभवि लक्षणाभास होइ। सो लक्षणाभास वर्जि लक्ष्य विषैं तौ स
र्वत्र पाईए। अर अलक्ष्य विषैं कहीं न पाईए। सो सांचा लक्षण है। जैसैं आत्माका स्वरूप
चेतन्य है। सो यहु लक्षण सर्व ही आत्मा विषैं तौ पाईए है। अनात्मा विषैं कहीं न पाई
ए। तातैं यहु सांचा लक्षण है। याकरि आत्मानैं आत्मा अनात्माका यथार्थज्ञान होइ
। किछू दोष लागै नांही। ऐसैं लक्षणका स्वरूप उदाहरणमात्र कह्या। अब सम्यग्
दर्शनादिकका सांचा लक्षण कहिए है। विपरीताभिनिवेशरहित जीवादिक तत्त्वार्थश्रद्धान
सो सम्यग्दर्शनका लक्षण है। जीव अजीव आस्रव बंध संवर निर्जरा मोक्ष ए सात तत्त्वार्थ
है। इनिका जु श्रद्धान ऐसैं ही है अन्यथा नांही। ऐसा प्रतीतिभाव सो तत्त्वार्थश्रद्धान बहुरि
विपरीताभिनिवेश जो अन्यथा अभिप्राय ताकरि रहित सो सम्यग्दर्शन है। इहां विपरीता
भिनिवेशका निराकरणकै अर्थि सम्यक् पद कह्या है। जातैं सम्यक् ऐसा शब्द प्रशंसावा
चक है। सो श्रद्धान विषैं विपरीताभिनिवेशका अभाव भए ही प्रशंसा संभवै है। ऐसा जा
नां। इहां प्रश्न जो तत्त्व अर अर्थ ए दोय पद कहे तिनिका प्रयोजन कहा। ताका समाधान

श्रद्धान है सो यत्नशब्द कौं अपेक्षा लीयें है तातैं जाकाप्रकर्ण होइ सोतत्व कहिए। जाका भा
व कहिए। स्वरूप सो तत्व जाननां। जातैं तस्यभाव तत्वं ऐसा तत्वशब्द का समास होय है। बहुरि
जो जाननेमैं आवै ऐसा द्रव्य वा गुणपर्याय ताका नाम अर्थ है। बहुरि तत्वेन अर्थस्तत्वा
र्थ तत्व कहिए। आपनां स्वरूप ताकरि पदार्थ तिनिका श्रद्धान सो सम्यग्दर्शन है। इहां जो त
त्व श्रद्धान ही कहते तो जाका यह भाव है ताका श्रद्धान विनां केवल भाव ही का श्रद्धान
कार्यकारी नांही। बहुरि जो अर्थश्रद्धान ही कहते तो भावका श्रद्धान विनां पदार्थ का
श्रद्धान कार्यकारी। जैसैं कोई ज्ञानदर्शनादिक वा वर्णादिक का तो श्रद्धान होइ यह जा
नपनां है यह श्वेतवर्ण है इत्यादि प्रतीति होइ परंतु ज्ञानदर्शन आत्मा का स्वभाव है
मैं आत्मा हौं। बहुरि वर्णादि पुद्गल का स्वभाव है पुद्गल मोतैं भिन्न जुदा पदार्थ है
ऐसा पदार्थ का श्रद्धान होइ। तौ भाव का श्रद्धान कार्यकारी नांही। बहुरि जैसैं मैं आ
त्मा हौं ऐसा श्रद्धान कीया परंतु आत्मा का स्वरूप जैसा है तैसा श्रद्धान न कीया तौ
भाव का श्रद्धान विनां पदार्थ का भी श्रद्धान कार्यकारी नांही। तातैं तत्वकरि अर्थ का
श्रद्धान होइ है सोई कार्यकारी है। अथवा जीवादिक कौं तत्वसंज्ञा भी है। अर अर्थसं
ज्ञा भी है तातैं तत्वमेवार्थस्तत्वार्थः जो तत्व सोई अर्थ तिनका श्रद्धान सो सम्यग्दर्श
न है॥ १२०८

५१०

208 P

इन अर्थ करि कही तत्वश्रद्धान [redacted] कौं सम्यग्दर्शन कहै है वा कही पदार्थश्रद्धान कौं सम्यग्दर्शन कहै है तहां विरोध न जान
नौ ॥ [redacted] ऐसें तत्व अर अर्थ दोय पद कहनें का प्रयोजन कहै ॥ [redacted] बहुरि प्र
श्न जो तत्वार्थ तौ अनंत हैं तैं [redacted] अपेक्षा [redacted] करि जीव अजीव विषै सर्व गर्भित भए ॥ [redacted] तातैं दोय ही [redacted] कहनें थे कै अनंत कहनें थे ॥ आस्रवादिक तौ जीव अजीव ही के विशेष
हैं इनि [redacted] ही कौं जुदा कहनें का प्रयोजन कहा ॥ ताका समाधान ॥ जो इहां पदार्थश्रद्धान करनें ही का प्रयोजन हो
ता तौ तौ [redacted] सामान्य करि [redacted] वा विशेष करि जैसें सर्व पदार्थनि का
जानना होइ तैसें ही कथन करते सो तौ इहां प्रयोजन है नाहीं ॥ इहां तौ मोक्ष का प्रयोजन है सो जिनि सा
मान्य वा विशेष भावनि का श्रद्धान कीएं मोक्ष होइ अर जिनिका श्रद्धान कीएं विना मोक्ष न होइ तिनि ही [redacted] का
इहां निरूपण कीया [redacted]
सो जीव अजीव ए दोय तौ बहुत द्रव्यनि की एक जाति अपेक्षा सामान्यरूप तत्व कहे सो ए दोय जाति जानें जीव कै
आपा पर का श्रद्धान होइ ॥ तब पर तैं भिन्न आपा कौं जानें अपनां हित कै अर्थि मोक्ष का उपाय करै ॥ अर ः विषै ः
आप तैं भिन्न पर कौं जानैं तब परद्रव्य [redacted] तैं उदासीन होइ रागादिक त्यागि [redacted] मोक्षमार्ग प्रवर्तै तातैं ए दो
य जाति [redacted] का श्रद्धान भएं ही मोक्ष होइ अर दोय जाति जानें विना आपा पर का श्रद्धान न होइ तब [redacted]
पर्यायबुद्धि तैं [redacted] संसारी प्रयोजन ही का उपाय करै ॥ परद्रव्य विषै रागद्वेषरूप होइ प्रवर्त्तै तब
मोक्षमार्ग विषै कैसें प्रवर्त्तै तातैं इनि दोय जातिनि का श्रद्धान न भएं मोक्ष न होइ ॥ ऐसें ए दोय तौ सामान्य तत्व
अवश्य श्रद्धान [redacted] करनें योग्य कहे ॥ बहुरि आस्रवादि पांच कहे ते जीव पुद्गल की पर्याय हैं तातैं ए विशेषरू

२ तातैं मोक्षका श्रद्धान करनां।

तत्त्व है॥ सो इनि पाँच पर्यायनिकौं जानैं मोक्ष का उपाय करनेंका श्रद्धान होइ॥ तहाँ मोक्षकौं पहि-
चानैं तौ ताकौं हित मांनि ताका उपाय करै॥ बहुरि मोक्षका उपाय संवर निर्जरा है॥
सो इनिकौं पहिचानैं तौ जैसैं संवर निर्जरा होइ तैसैं
प्रवर्त्तै॥ बहुरि संवर निर्जरा तौ अभावलक्षण लीएं हैं॥
४ तातैं संवर निर्जराका श्रद्धान करनां। सो जिनिका अभाव कीया चाहिए तिनिकौं पहचानैं चाहिए॥ जैसैं क्रोधका अभाव भएं क्षमा होइ
सो क्रोधकौं पहिचानैं तौ ताका अभाव करि क्षमारूप प्रवर्त्तै॥ तैसैं ही आस्रवका अभाव
नएं संवर होइ अर बंधका एकदेश अभाव नएं निर्जरा होइ सो आस्रव बंधकौं पहि- १ नएं मोक्ष मार्ग होइ
५ तातैं आस्रव बंधका श्रद्धान करनां। चानैं तौ तिनिका नाश करि संवर निर्जरारूप प्रवर्त्तै॥ ऐसैं इनि पाँच पर्यायनिका श्रद्धान
इनिकौं न पहिचानैं तौ मोक्षकी पहिचानि विना ताका उपाय काहेकौं करै॥ संवर निर्जराकी पह-
चानि विना तिनिविषै कैसैं प्रवर्त्तै॥ आस्रव
बंधकी पहिचानि विना तिनिका नाश कैसैं करै॥ ऐसैं इनि पाँच पर्यायनिका श्रद्धान न भएं मोक्षमार्ग
न होइ॥ या प्रकार यद्यपि तत्त्वार्थ अनंते हैं तिनिका सामान्यविशेषकरि अनेक प्रकार प्ररूपण होइ
परंतु इहां एक मोक्षका प्रयोजन है तातैं दोय तौ जाति अपेक्षा सामान्यतत्त्व अर पाँच पर्यायरूप वि- २०९
शेषतत्त्व मिलाय सात ही तत्त्व कहे॥ इनि विना औरनिका श्रद्धान होहु वा मति होहु किसीकै आ- १ वा अन्यथा श्रद्धान होहु।
६ इनि काय पदार्थ श्रद्धान कै आधीन मोक्षमार्ग है। धीन मोक्षमार्ग नाहीं॥ ऐसा जाननां॥ बहुरि कहीं पुण्यपापसहित नव पदार्थ कहे हैं सो

२०९ A

‹समयसारादिविषै इनिकों›

पुण्यपापआश्रवादिकके ही विशेष हैं।। [redacted]ऐसा तत्त्वविषै गर्भित जानिए।। अथवा पुण्यपापका [redacted]
तातैं
श्रद्धान भए पुण्य[redacted] कों मोक्षमार्ग न मानै वा स्वछंद होइ पापरूप न प्रवर्त्तै तातैं मोक्षमार्ग
विषै इनिका श्रद्धान भी उपकारी जानि [redacted] दोय तत्त्व विशेषके विशेष मिलाय न
व पदार्थ कहे [redacted] वा नव तत्त्व भी [redacted] कहिए [redacted] है।। बहुरि प्रश्न इनिका श्रद्धान सम्यग्दर्शनि कह्या सो
दर्शनि तौ सामान्य अवलोकनमात्र अर श्रद्धान प्रतीति मात्र इनिकै एकार्थपना कैसैं संभवै।।
ताका उत्तर।। प्रकरणके वशतैं धातुका अर्थ अन्यथा हो है सो इहां प्रकरण मोक्षमार्गका है
तिसविषै दर्शनि शब्दका अर्थ सामान्य अवलोकनमात्र न ग्रहण करना [redacted] जातैं [redacted]
[redacted] अचक्षु दर्शनिकरि सामान्य अवलोकन तौ सम्यग्दृष्टी मिथ्यादृष्टी
कै समान होइ किछू याकरि मोक्षमार्गकी प्रवृत्ति अप्रवृत्ति होती नाहीं।। बहुरि श्रद्धान हो है
सो सम्यग्दृष्टी हीकै हो है याकरि मोक्षमार्गकी प्रवृत्ति हो है तातैं दर्शनि शब्दका अर्थ भी इहां
श्रद्धान मात्र ही ग्रहण करना।। बहुरि प्रश्न इहां विपरीताभिनिवेशरहित श्रद्धान करना कह्या
सो प्रयोजन कहा।। ताका समाधान।। [redacted] अभिनिवेश नाम अभिप्राय
का है सो जैसा तत्त्वार्थश्रद्धान [redacted] का अभिप्राय [redacted] तैसा [redacted]न होइ।। अ
न्यथा अभिप्राय होइ ताका नाम विपरीताभिनिवेश है।। सो [redacted]
[redacted]
[redacted] तत्त्वार्थश्रद्धानका अभिप्राय
[redacted] तहां अभिप्राय ऐसा है [redacted]
[redacted]ल तिनिका निश्चय करणमात्र ही नांही है

‹करनेका›

२१०

५ हितका कारण मानै। २ अहित मानै। ३ आपकौं वा परकौं जैना कानै मानै।

[illegible] ॥ जीव अजीवकौं [illegible] पहचानि [illegible] बहुरि आस्रवकौं पहचानि ताकौं हेय मानै ॥ [illegible] ॥ बहुरि बंधकौं पहचानि ताकौं [illegible] ॥ बहुरि संवरकौं पहचानि ताकौं उपादेय मानि [illegible] ॥ बहुरि निर्जराकौं पहचानि ताकौं [illegible] बहुरि मोक्षकौं पहचानि ताकौं अपना परम हित मानि [illegible] ॥ [illegible] ऐसैं अभिप्राय [illegible] ऐसा [illegible] का नाम विपरीताभिनिवेश है ॥ सो साचा तत्त्वार्थश्रद्धानतैं अभिप्रायतैं उलटा अभिप्राय [illegible] का नाम विपरीताभिनिवेश है ॥ सो साचा तत्त्वार्थश्रद्धान है सो विपरीताभिनिवेश रहित है ऐसा इहाँ [illegible] याका अभाव होइ तातैं तत्त्वार्थश्रद्धान [illegible] है सो विपरीताभिनिवेश रहित है ऐसा इहाँ [illegible] का अभाव होइ तातैं तत्त्वार्थश्रद्धान होइ है परंतु अभिप्राय [illegible] है अथवा काहू कै आभासमात्र तत्त्वार्थश्रद्धान होइ है परंतु अभिप्रायविषै विपरीतपनौं नाहीं छूटै है ॥ [illegible] अभिप्रायविषै पाईए है [illegible] कोई प्रकार करि पूर्वोक्त अभिप्रायतैं अन्यथा अभिप्राय अंतरंगविषै पाईए है [illegible] कोई प्रकार करि [illegible] जैसैं द्रव्यलिंगी मुनि तौ वाकै सम्यग्दर्शन न होइ ॥ [illegible] जैसैं द्रव्यलिंगी मुनि जिनवचननितैं तत्त्वनिकी प्रतीति करै ॥ परंतु शरीराश्रित क्रियानिविषै अहंकार वा पुण्यास्रवविषै उपादेयपनौं इत्यादि विपरीत अभिप्राय [illegible] तैं मिथ्यादृष्टी ही है ॥ [illegible] तातैं जो [illegible] तत्त्वार्थश्रद्धान विपरीताभिनिवेशरहित है सो सम्यग्दर्शन है ॥ [illegible] ऐसैं वि[illegible] निवेश रहित जो [illegible]

१ हैनिस [illegible]

[illegible] विपरीता [illegible]

१ तत्त्वार्थश्रद्धानका ४

२१०

१२६९

210 A

वादितत्वार्थनिका श्रद्धानपनां सो सम्यग्दर्शनिका लक्षण है।। सम्यग्दर्शन लक्षण है। सो ई तत्त्वा
र्थसूत्र विषै कह्या है।। ॥ तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनं। तत्त्वार्थनिका श्रद्धान सो ई सम्यग्दर्शन
है।। बहुरि सर्वार्थसिद्धि नामा सूत्रनिकी टीका है तिसविषै तत्त्वा[redacted]दिक [redacted]
[redacted]पदनिका अर्थ प्रगट [redacted] लिख्या है वा सात ही तत्त्व कैसे कहे सो प्रयोजन लिख्या है ता
के अनुसार तैं इहां [redacted] किछू कथन कीया है ऐसा जाननां।। बहुरि पुरुषार्थसिद्ध्युपाय विषै भी ऐसें ही
कह्या है।। ॥ जीवाजीवादीनां तत्त्वार्थानां सदैव कर्तव्यं।। श्रद्धानं विपरीताभिनिवेश विविक्त
मात्मरूपं तत्।।॥ याका अर्थ।। [redacted] विपरीताभिनिवेश
करि रहित जीव अजीव आदि तत्त्वार्थनिका श्रद्धान [redacted] सदा कालि करनी योग्य है।। सो यहु श्रद्धान
आत्माका स्वरूप है। [redacted] उपाधि दूरि भए प्रगट हो है तातैं आत्माका स्वभाव है। [redacted]
[redacted] चतुर्थादि गुणस्थान
[redacted] सदा काल याका सद्भाव रहे है।। ऐसा जाननां
विषै प्रगट होइ पीछैं [redacted] सिद्ध अवस्था विषै भी सदाकाल याका सद्भाव रहे है।। ऐसा जाननां
इहां प्रश्न उपजे है जो तिर्यंचादिक [redacted] तुच्छज्ञानी केई जीव सात तत्त्वनिका नाम भी न जांनि सकै
तिनकै भी सम्यग्दर्शनकी प्राप्ति शास्त्र विषै कही है तातैं तत्त्वार्थश्रद्धानपनां तुम सम्यक्त का लक्षण
कह्या तिस विषै अव्याप्ति दूषण लागै है।। ताका समाधान।। जीव अजीवादिकका नामादिक जा
नैं वा मति जानैं[1] वा अन्यथा जानैं[2] उनका स्वरूप यथार्थ[2] पहचानि श्रद्धान कीए सम्यक्त हो है।। तहां कोई सामान्यपनैं स्वरूप
पहिचानि [redacted] कोई विशेषपनैं स्वरूप पहचानि श्रद्धान करे।। [redacted]

1 दर्शनमोह

1 विश्रद्धान करै

2 वा अन्यथा जानैं

2 यथार्थ

415

211

[redacted] ५जो ज्ञानादि स्वरूप आत्मा है तिस विषै तौ आपो मानै है।। अर [redacted]
जो शरीरादि [redacted] है तिनि [redacted] कौं पर मानै है।

तातैं तुछ ज्ञानी [redacted] जीवादिक का नाम भी न जानै है [redacted] तथापि तिन का स्वरूप पहचानि [redacted] निश्रद्धान करै है तातैं सम्यक्त्व की प्राप्ति हो है।। जैसैं [redacted] कोई तिर्यंच आपना [redacted] वा और नि का नामादिक तौ नाहीं जानै परंतु आप ही विषै आपो मानै है।। और नि [redacted] कौं पर मानै है।। तैसैं तुछ ज्ञानी [redacted] जीव अजीव का नाम न जानै परंतु [redacted] ऐसा श्रद्धान वाकै है सोई जीव अजीव का श्रद्धान है।। बहुरि जैसैं सोई तिर्यंच [redacted]

[redacted]

सुख अवस्था कौं पहिचानै तातैं ताके अर्थि आगामी दुख का कारण कौं प [redacted] हो है।। बहुरि जो दुख का कारन बनि रहा है ताकौ अभाव का उपाय करै
जो नि [redacted] वा हो है।। बहुरि जो दुख का कारन बनि रह्या है ताकौ अभाव का उपाय करै है।। तैसैं तुछ ज्ञानी मोक्षादिक का नाम न जानै [redacted] तथापि सर्वथा सुखरूप मोक्ष अवस्था कौं श्रद्धा [redacted] संवर कौं याचा नकरता ताके अर्थि आगामी बंध का कारण रागादिक आस्रव ताकौ [redacted] संवर कौं याचा

१ त्यागरूप

[redacted] दुःखादिक
४ [redacted] का नामादिक न जानै है तथापि ४ ध
३ ताका त्याग कौं की या ५

211 A

१ शुद्ध नव करि॥ [redacted]॥

है है। बहुरि जो संसार दुःख का कारन [redacted] है ताकी निर्जरा कीया चाहै है। ऐसें आस्रवादिकका बा

कै श्रद्धान है। [redacted] या प्रकार वाकै सात तत्त्वका श्रद्धान पाइए है। [redacted]

[redacted] जो ऐसा श्रद्धान न होइ तौ रागादि त्यागि [redacted] शुद्ध भाव करनेकी चाहि न होइ सोई कहिए है

[redacted] जो जीव अजीवकी जाति न जानि आपा परकौं

न पहिचानैं तौ परविषै रागादिक कैसैं न करै। रागादिककौं न पहिचानैं तौ तिनिका त्याग कैसैं

कीया चाहै सो रागादिक [redacted] ही आस्रव है। रागादिकका फल

बुरा न जानैं तौ काहेकौं रागादिक छाड्या चाहै सो रागादिकका फल सोई बंध है। बहुरि रागादिरहि

त [redacted] परिणाम कौं पहिचानै है तौ तिस रूप हुवा चाहै है सो रागादिरहित परिणामकाही

नाम संवर है। बहुरि [redacted] पूर्वैं संसार अवस्थाका कारण [redacted]

[redacted] तप आचरणादि करि शुद्ध भाव कीया चाहै है सो पूर्वै संसार अवस्थाका कारण कर्म है ताकी

[redacted] हानि सोई निर्जरा है। बहुरि [redacted] संसार अव

स्थाका अभावकौं न पहिचानैं तौ संवर निर्जरारूप काहेकौं प्रवर्तै सो संसार अवस्थाका अभा

व सोई मोक्ष है तातैं सातौं तत्त्वनिका श्रद्धान नहीं होइ रागादिक छोडि शुद्ध भाव होनेकी इच्छा उपजै

है [redacted] ऐसी चाहि तुच्छज्ञानी तिर्यंचादि सम्यग्दृष्टीकै होय है तातैं वाकै सप्त तत्त्वनिका श्रद्धान पा

इए है ऐसा निश्चय करनां। [redacted] ऐसें ग्यान हीण विषै आस्रवादि हीण नीठि है। बहुरि प्रश्न जो [redacted]

२ जो इनिविषै एक भी तत्त्वका श्रद्धान न होइ तौ ऐसी चाहि न उपजै। बहुरि॥

१ ज्ञानावरणका क्षयोपशम थोरा होतैं वि[redacted] शेष पनैं तत्त्वनिका ज्ञान न होइ तथा

पि दर्शनमोहका उपशमादिकतैं

जिसकाल विषै सम्यग्दृष्टी विषयकषायनिके कार्यनि विषै प्रवर्त्तै है तिसकाल विषै स[redacted]सप्ततत्वनि
का विचार ही नाहीं तहीं श्रद्धान कैसैं संभवै [redacted] अर सम्यक्त्व रहै ही है तातैं तिस लक्षण विषै अव्या
प्ति दूषण आवै है॥ ताका समाधान॥ विचार है सो तौ उपयोग [redacted] कै आधीन है। जहीं उपयोग लागै ति
सही का विचार होइ [redacted]॥ बहुरि श्रद्धान है सो प्रतीति रूप है। [redacted] अन्य ज्ञेय का विचार होतैं वा सोव
नीं आदि [redacted] क्रिया होतैं तत्वनि का विचार नाहीं तथापि तिनि की [redacted] प्रतीति [redacted]
बनी रहै है नष्ट न होइ है तातैं वाकै सम्यक्त्व का सद्भाव है। जैसैं मनुष्य [redacted] कै ऐसी प्रतीति है मैं मनुष्य हौं॥
[redacted] मेरै इस कारणतैं रोग भया है सो अब कारण मेटि रोग कौं घटाय नीरोग होनां
बहुरि वो ही मनुष्य अन्य विचारादि रूप प्रवर्त्तै है तब वाकै ऐसा विचार न होइ है॥ परंतु श्रद्धान [redacted]
[redacted] रह्या करै है। तैसैं [redacted] इस आत्मा कै ऐसी प्रतीति है॥ मैं आत्मा हौं॥ पुद्गलादि नाहीं
हौं॥ मेरै आस्रवतैं बंध भया है सो आस्रव संवर करि निर्जरा करि मोक्षरूप होनां॥ बहुरि सोई आत्मा
अन्य विचारादि रूप प्रवर्त्तै है तब वाकै ऐसा विचार न होइ है [redacted] परंतु श्रद्धान ऐसा ही रह्या करै है॥
बहुरि प्रश्न जो ऐसैं श्रद्धान रहै है तौ [redacted] ताका उत्तर॥ जैसैं सोई मनुष्य कौ
ई कारण के वशतैं [redacted] रोग [redacted] बधनें कौ कारणनि विषै भी प्रवर्त्तै है॥ [redacted] व्यापारादि का
र्य [redacted] वा क्रोधादि करै है तथापि तिस श्रद्धान [redacted] का वाकै नाश न होइ है॥ तैसैं सोई आत्मा [redacted] उद
य [redacted] निमित्त के वशतैं [redacted] बंध होनें के कारणनि विषै भी प्रवर्त्तै है॥ विषय [redacted]
सेवनादि कार्य वा क्रोधादि कार्य करै है तथापि तिस श्रद्धान का वाकै नाश न होइ है॥ इस [redacted] का वि
शेष निर्णय आगें करैंगे [redacted] ऐसैं सप्त तत्व [redacted] का विचार न होतैं भी श्रद्धान का स
द्भाव पाइए है तातैं तहां अव्याप्तिपनौं नाहीं है॥ बहुरि प्रश्न उंचीदशा विषै जहां निर्विकल्प [redacted] आ

(margin notes)
निर्विकल्प अनुभव विषै ... नाहीं है॥

बंध होनें के कारण ... विषै कैसे प्र वर्त्तै है॥

[redacted]

कर्म 212

२१२
A

[redacted] ४अरविषयादिकतैं उपयोग छुडाय रागादि दूरि कराया।। बहुरि ५ ... ६कीजिए है तातैं जहाँ ५

अनुभव हो है तहाँ तौ [redacted] सप्ततत्वादिकका विकल्प[redacted]नी निषेध कीया है सो सम्यक्त्वके लक्षण
का निषेध करनी कैसें संभवै।। अर तहाँ निषेध संभवै है तौ अव्याप्ति दूषण आया।। ताका उत्तर।।
नीच[redacted]ली दशाविषैं सप्ततत्वनिकौ विकल्पनिविषैं उपयोग लगाया [redacted] ताकरि प्रतीतिकौ दृढ
कीं [redacted] कार्यसिद्धि भऐं कारणनिका [redacted]नी निषेध [redacted]
[redacted] प्रतीति नी दृढ [redacted] भई अर रागादिक दूरि भए तहाँ उपयोग भ्रमावनेका खेदका
हकौ करिए तातैं तहाँ तिनि विकल्पनिका निषेध कीया है।। बहुरि सम्यक्त्वका लक्षण तौ प्रत
तीति है सो प्रतीति [redacted] का तौ निषेध न कीया जो प्रतीति छुडाई हो य तौ [redacted] इस लक्षणका नि
षेध कीया कहिए सो तौ है नाहीं तातैं इहाँ अव्याप्तिपनौ नाहीं है।। बहुरि प्रश्न जो [redacted] ५सातौंतत्वनिकी प्रतीति तहाँनी बनी रहै है ५ सम्यक्
छद्मस्थकै तौ प्रतीति अप्रतीति कहनी संभवै तातैं तहाँ सप्ततत्वनिकी प्रतीति [redacted] सम्यक्
काल लक्षण कह्या सो हम मान्या।। परन्तु केवली सिद्ध भगवान्‌कै तौ सर्वका जानपनी [redacted] समानरू
पहै तहाँ सप्ततत्वनिकी प्रतीति कहनी संभवै नाहीं अर तिनकै सम्यक्त्वगुण पाईए ही है तातैं तहाँ
ति इस लक्षणको [redacted] अव्याप्तिपनौ आया।। ताका समाधान।। [redacted] छद्मस्थकै श्रुतज्ञानके [redacted] ५जैसें ५
प्रतीति [redacted] पाईए है।। तैसें केवली सिद्ध भगवान्‌कै केवलज्ञान [redacted] कै अनुसारि प्रतीति पाईए
पूर्वै।। [redacted] जो सप्ततत्वनिका स्वरूप पहलैं ठीक कीया था सो ही केवलज्ञान
करि जान्या तहाँ प्रतीतिकौ परम अवगाढपनौ [redacted] भया याहीतैं तहाँ परमावगाढ सम्यक्त्व
ह्या।। जो पूर्वैं श्रद्धान कीया था ताकौं झूठ जान्या होता तौ तहाँ अप्रतीति होती सो तौ जैसा सप्ततत्व
निका श्रद्धान छद्मस्थकै भया था तैसा ही केवली सिद्ध भगवान्‌कै पाईए है।। तातैं ज्ञानादिककी [redacted]

[redacted] ५कौ

५कै अनुसारि ५

213

[redacted] १ तिर्यंचादिका वा [redacted] केवली सिद्ध भगवान् २ बहुरि पूर्वें [redacted] भव्य ... विषय ५
तिनके ४

हीनता अधिकता होतें भी सम्यक्त्वगुण समान ही कह्या॥ [redacted] मानै था संवर निर्जराक
२ पीछैं मुक्त अवस्था भए ४ रि मोक्ष का उपाय करनी [redacted] ऐसैं मानैं लगे जो संवर निर्जरा करि हमारै मोक्ष भई॥ [redacted]
[redacted] बहुरि पूर्वें ज्ञान की हीनता करि जीवादिक के थोरे विशेष जा
नैं था॥ पीछैं केवलज्ञान भए तिनके सर्व विशेष जानें परंतु मूलभूत जीवादिक का स्वरूप जे
सा [redacted] पाईए है तैसा ही केवली कैं पाईए है॥ बहुरि यद्यपि केवली सिद्ध भग
वान् अन्य पदार्थनि कौं भी प्रतीति लीएं जानैं है तथापि ते पदार्थ प्रयोजनभूत नाहीं तातें स
म्यक्त्वगुण विषैं सप्ततत्त्वनि ही का श्रद्धान ग्रहण कीया है॥ [redacted] केवली सिद्ध भगवान् [redacted]
[redacted] रागादिरूप न परिणमैं
[redacted] बहुरि प्र
हैं संसार अवस्था कौं न चाहै है सो [redacted] यहु इस श्रद्धान [redacted] का बल जाननां॥
श्न जो सम्यग्दर्शन तौ मोक्षमार्ग विषैं था॥ मोक्ष विषैं याका सद्भाव कैसैं कहिए है॥ ताका
उत्तर॥ कोई कारण ऐसा भी हो है जो कार्य सिद्ध भएं भी नष्ट न होइ। जैसैं काहू [redacted] २१३
[redacted]
[redacted] वृक्ष कै एक शाखा था ताकरि अनेक शाखा [redacted] भई॥ [redacted]
[redacted] होतैं वह एक शाखा [redacted] नष्ट न हो है॥ तैसैं काहू आत्मा कै सम्यक्
गुणकरि अनेक गुणयुक्त मुक्त अवस्था भई॥ [redacted] ताकौं होतैं सम्यक्त्वगुण नष्ट न हो है।

२ तिनकौं ४   ३ युक्त मुक्त अवस्था ४

ऐसें केवली सिद्ध भगवान्‌कै भी तत्त्वार्थश्रद्धान लक्षण ही सम्यक्त्व पाइए है तातैं तहां अव्याप्तिपनौं नाहीं है॥ बहुरि प्रश्न [redacted] मिथ्यादृष्टीकै भी तत्त्वश्रद्धान होहै ऐसा [redacted] शास्त्रविषै निरूपण है॥ प्रवचनसारविषै आत्मज्ञानशून्य तत्त्वार्थश्रद्धान अकार्यकारी कह्या है तातैं सम्यक्त्वका लक्षण तत्त्वार्थश्रद्धान कहैं अतिव्याप्ति दूषण लागै है॥ ताका समाधान॥ मिथ्यादृष्टीकै [redacted] जो तत्त्वश्रद्धान कह्या है सो नामनिक्षेपकरि कह्या है जामैं तत्त्वश्रद्धानका गुण नाहीं अर व्यवहारविषै जाका नाम तत्त्वश्रद्धान कहिए सो [redacted] मिथ्यादृष्टीकै होहै अथवा आगम द्रव्यनिक्षेपकरि [redacted] होहै [redacted] तत्त्वार्थश्रद्धानके प्रतिपादक शास्त्रनिकौं अभ्यासै है तिनका [redacted] स्वरूप निश्चय करनेविषै उपयोग [redacted] नाहीं लगावै है॥ ऐसा जाननां॥ बहुरि इहां सम्यक्त्वका लक्षण तत्त्वार्थश्रद्धान कह्या है सो भावनिक्षेपकरि कह्या है॥ [redacted] गुणसहित सांचा तत्त्वार्थश्रद्धान मिथ्यादृष्टीकै कदाचित् न होय॥ बहुरि आत्मज्ञानशून्य तत्त्वार्थश्रद्धान कह्या है तहां भी सोई अर्थ जाननां॥ सांचा जीव अजीवादिकका जाकै श्रद्धान होइ ताकै आत्मज्ञान कैसैं न होय॥ [redacted] होय होहोय॥ [redacted] ऐसैं कोई ही मिथ्यादृष्टीकै सांचा तत्त्वार्थश्रद्धान [redacted] सर्वथा न [redacted] पाईए है तातैं तिस लक्षणविषै अतिव्याप्ति दूषण न लागै है॥ [redacted] बहुरि जो यहु तत्त्वार्थश्रद्धान [redacted] लक्षण कह्या सो असंभवी भी नाहीं है॥ जातैं सम्यक्त्वका प्रतिपक्षी मिथ्यात्वका यहु नाहीं है॥ वाका लक्षण इसतैं विपरीतता लीए है॥ ऐसैं अव्याप्ति अतिव्याप्ति असंभवपनौकरि रहित सर्व सम्यग्दृष्टीनिविषै तौ पाईए अर कोई मिथ्यादृष्टीविषै न पाईए ऐसा सम्यग्दर्शनका सांचा लक्षण तत्त्वार्थश्रद्धान है॥ बहुरि प्रश्न उपजै है जो [redacted]

२५

[redacted] इहां तातैं तत्वनिकै श्रद्धानका नियमक
हो है सो बनैं नाहीं. जातैं कहीं [redacted] परतैं भिन्न आपका श्रद्धान [redacted] हीकौं सम्य
क्त कहै है।। समयसार विषै [redacted] एकत्वे नियतस्य इत्यादि कलशा है तिस विषै
ऐसा कह्या है जो इस आत्माका परद्रव्यतैं भिन्न [redacted] अवलोकन सोई नियमतैं सम्य
ग्दर्शन है।। तातैं नवतत्वकी संततिकौं छोडि हमारै यहु एक आत्मा ही होहु।। बहुरि कहीं एक आ
त्माके निश्चय ही कौं [redacted] सम्यक्त कहै है पुरुषार्थसिद्ध्युपाय विषै दर्शनमात्मविनिश्चितिः
ऐसा पद है सो याका यहु ही अर्थ है।। तातैं जीव अजीव ही का [redacted] वा केवल जीव ही का श्रद्धान भए [redacted]
सम्यक्त हो है।। [redacted] सातौं का श्रद्धानका नियम होता तौ ऐसैं काहेकौं लिखते।। ताका समाधान।।
परतैं भिन्न आपका श्रद्धान हो है सो आस्रवादिकका श्रद्धान [redacted] करि रहित हो है कि सहित हो है जो रहित
हो है तौ मोक्षका श्रद्धान बिना किस प्रयोजनके अर्थि ऐसा [redacted] उदीय करै है।। संवर निर्जराका श्रद्धान
रहित होय — बिना रागादिक [redacted] स्वरूप विषै उपयोग लगावनेका काहेकौं उद्यम राखै है।। आस्रव बंधका
श्रद्धान बिना पूर्व अवस्थाकौं काहेकौं छोडै है।। [redacted] तातैं आस्रवादिकका श्रद्धान रहित [redacted] आ
पापरका श्रद्धान [redacted] का रनौं संभवै नाहीं।। बहुरि जो आस्रवादिकका श्रद्धान सहित होहै
तौ स्वयमेव ही सातौं तत्वनिके श्रद्धानका नियम भया।। बहुरि [redacted] केवल आत्माका निश्चय है
सो परका पररूप श्रद्धान भए बिना आत्माका श्रद्धान न होइ तातैं अजीवका [redacted] श्रद्धान [redacted]
[redacted] भए ही जीवका श्रद्धान होइ।। बहुरि ताकै पूर्ववत् आस्रवादिकका भी श्रद्धान होइ ही होय तातैं
इहां भी सातौं तत्वनिके ही [redacted] नियम जानना।। बहुरि आस्रवादिककौं [redacted] श्रद्धान बिना
[redacted]

२१४

422

२१५
A

३ नाते?

आपापरका श्रद्धान वा केवल आत्मा का श्रद्धान [redacted] आपापरका श्रद्धान वा केवल आत्मा का श्रद्धान [redacted]
[redacted] सांचा होता नाही।। जातैं आत्मा द्रव्य है सो तौ शुद्ध अशुद्ध [redacted] पर्याय
[redacted] जैसैं तंतु अवलोकन विना।।
[redacted] ली ऐ है [redacted]
पट का अवलोकन न होइ तैसैं [redacted] शुद्ध अशुद्ध पर्याय पहचानें विना आत्म द्रव्य का श्रद्धान न होइ।।
सो शुद्ध अशुद्ध अवस्था की पहचानि आश्रवादिक की पहचानि तैं हो [redacted] है।। बहुरि आश्रवादिक का श्र
द्धान विना आपापरका श्रद्धान वा केवल आत्मा का श्रद्धान कार्यकारी नाही।। जातैं [redacted] आपहै
ही।। परद्रव्य है [redacted]।। [redacted] बहुरि आश्रवादिक का श्रद्धान होइ तौ आश्रवबंधका अभाव करि संवर नि
र्जरा रूप [redacted] उपायतैं मोक्ष पदकौं पावै।। जो आपापरका भी श्रद्धान कराइए है सो [redacted]
तिस ही प्रयोजन के अर्थि कराइए है।। तातैं आश्रवादिक का श्रद्धान सहित आपापरका जानना भी वा आपका
जानना कार्यकारी है।। इहाँ प्रश्न जो ऐसैं है तौ शास्त्रनि विषै आपापरका श्रद्धान वा केवल आत्मा
श्रद्धान ही कौं सम्यक्त्व कह्या वा कहरि नवतत्त्व की संतति छोडि हमारे एक आत्मा ही होहु ऐसा कह्या सो कै
सैं कह्या।। [redacted] ताका समाधान।। जाकै सांचा आपापरका श्रद्धान वा आत्मा का श्रद्धान होइ ताकै आपापर
कै सातौं तत्त्वनि का श्रद्धान होइ ही होय।। बहुरि जाकै सांचा सात तत्त्वनि का श्रद्धान होइ ताकै आपापरका श्रद्धान के
का वा आत्मा का श्रद्धान होइ ही होय।। ऐसा परस्पर अविनाभावीपनां जानि आपापरकौं जानि वा आ
त्मश्रद्धान ही कौं सम्यक्त्व कह्या है।। बहुरि ईस छल करि कोई सामान्यपनैं आपापरकौं जानि वा आ
[redacted]
[redacted]
[redacted]

२१६

ऐसा कला है निर्विशेष हि सामान्य नवतत्त्व विना। याका अर्थ यहु जो विशेष रहित सामान्य
है सो गधे का सींग समान है॥ [redacted]
तातैं प्रयोजनभूत आस्रवादिक विशेष सहित आपापर का वा आत्मा का श्रद्धान करनौ योग्य है॥ अथ
सातौं तत्त्वार्थनि का श्रद्धान करि रा[redacted]गादिक मेटनें के अर्थि [redacted] परद्रव्यनि कौं
वा [redacted] सातौं तत्त्वार्थनि का श्रद्धान करि रा[redacted]गादिक मेटनें के अर्थि [redacted] हैं ताकै प्रयोजन की सिद्धि हो है॥ तातैं मुख्यता
निन्न नावै है वा [redacted] अपनें आत्मा ही कौं ताके [redacted] है ताकै प्रयोजन की सिद्धि हो है॥ तातैं मुख्यता
करि [redacted] ने हविज्ञान कौं वा आत्मज्ञान कौं कार्यकारी कह्या है॥ बहुरि तत्त्वार्थश्रद्धान कीए विना
सर्वज्ञाननी [redacted] कार्यकारी नाहीं॥ जातैं प्रयोजन तौ रागादिक मेटनें का है सो आस्रवादिक
का श्रद्धान विना यहु प्रयोजन भासै नाहीं॥ तब केवल ज्ञान ही तैं मान कौं वधावै॥ रागादिक छोडै
नाहीं तब वाका कार्य कैसें सिद्धि होइ॥ बहुरि नवतत्त्व संतति का छोडनौ कह्या है सो पूर्वै नवतत्त्व
के विचार करि [redacted] सम्यग्दर्शन भया पीछै [redacted] निर्विकल्प दशा होनें
के अर्थि नवतत्त्वनि का भी विकल्प छोडनें की चाहि करी॥ बहुरि [redacted]
[redacted] पहलैं ही नवतत्त्व का वि[redacted] वार नाहीं ताकै तिस विकल्प छो
[redacted] अपनेक विकल्प [redacted] तिनि ही का
डनें का कहा प्रयोजन है॥ [redacted] ॥ ऐसें आपापर का श्रद्धान विषै वा आत्मश्रद्धान विषै सप्त
तत्त्वार्थश्रद्धान की सापेक्षा [redacted] पाईए है तातैं तत्त्वार्थश्रद्धान सम्यक्त्व कह्या है। बहुरि सर्वजो
करि [redacted] त्याग करौ॥ [redacted]
का श्रद्धान की सापेक्षा [redacted] पाईए है तातैं तत्त्वार्थश्रद्धान सम्यक्त्व कहना है सो कैसें है॥ ताका
कहीं शास्त्रनि विषै अरहंत देव निर्ग्रंथ गुरु [redacted] हिंसा रहित धर्म का श्रद्धान कौं सम्यक्त्व कह्या है सो कैसें है॥ ताका

२१५ आपके पाई एहे

215 A

१ कुदेवादिकका श्रद्धान दूरि होनेंकरि॥

समाधान॥ अरहंतदेवादिकका श्रद्धानतैं ग्रहीतमिथ्यातका अभाव हो है तिस अपेक्षा याकौं सम्यक्त
कह्या है॥ सर्वथा सम्यक्तका लक्षण यहु नाहीं॥ जातैं द्रव्यलिंगी मुनि आदि व्यवहारधर्मके धारक
मिथ्यादृष्टी तिनकै भी ऐसा श्रद्धान हो है॥ अथवा [redacted]
[redacted] जैसैं अणुव्रत महाव्रत होतैं तौ देशचारित्र सकलचारित्र होय
वा न होय परंतु अणुव्रत महाव्रत भए बिना देशचारित्र सकलचारित्र कदाचित् न होय॥ तातैं [redacted]
[redacted] व्रतनिकौं अन्वयरूप कारण जानि कारणविषै कार्यका उपचार करि [redacted] इनिकौं चारित्र कह्या॥
तैसैं अरहंतदेवादिकका श्रद्धान होतैं तौ सम्यक्त होय वा न होय परंतु अरहंतादिकका श्रद्धान भए बिना
तत्वार्थश्रद्धानरूप सम्यक्त कदाचित् न होय॥ तातैं अरहंतादिकके श्रद्धानकौं अन्वयरूप कारण जानि
कारणविषै कार्यका उपचार करि इस श्रद्धानकौं सम्यक्त कह्या है॥ याहीतैं याका नाम व्यवहार सम्यक्त है॥
[redacted] अथवा जाकै तत्वार्थश्रद्धान होइ ताकै सांचा अरहंतादिकके स्वरूपका श्रद्धान होइ ही होय
तत्वार्थश्रद्धान बिना पक्षकरि अरहंतादिकका श्रद्धान करै परंतु यथावत् स्वरूप [redacted] की पहि
चानि लीए श्रद्धान होइ नाहीं॥ बहुरि जाकै सांचा अरहंतादिकके स्वरूपका श्रद्धान होइ ताकै तत्वश्रद्धान
होइ ही होय जातैं अरहंतादिकका स्वरूप पहचानैं जीव अजीव आस्रवादिककी पहचानि हो है॥ ऐसैं इनि
कौं परस्पर अविनाभावी जानि कहीं अरहंतादिकके श्रद्धानकौं सम्यक्त कह्या है॥ इहां प्रश्न जो नारकादिक
जीवनिकै देवकुदेवादिकका व्यवहार नाहीं अर तिनकै सम्यक्त पाईए है तातैं सम्यक्त होतैं अरहंतादिक
का श्रद्धान होइ ही होय ऐसा नियम संभवै नाहीं॥ ताका समाधान॥ सप्ततत्वनिका श्रद्धान विषै अरहं

५२५

216

मुख्यपनैं॰ तोतैंमु॰ विषैं॰ सर्वोत्कृष्ट

तादिक का श्रद्धान गर्भित है।। जातैं तत्त्वश्रद्धान मोक्षतत्त्व कौं [redacted] मानै है।। सो मोक्षतत्त्व तौ [redacted] अ-
रहंतसिद्ध [redacted] तातैं उनकौं [redacted] भी सर्वोत्कृष्ट मान्यौ [redacted] और कौं न मान्या सो ही
देव का श्रद्धान भया।। बहुरि मोक्ष के कारण संवर निर्जरा है तातैं इनिकौं उत्कृष्ट [redacted] मानै है सो संवर निर्जरा
के धारक [redacted] मुनि हैं [redacted] तिनिकौं उत्तम मान्या और कौं [redacted] न मान्या सो ही गुरु का श्रद्धान
भया।। बहुरि रागादिक रहित [redacted] भाव कौं [redacted] नाम अ-
हिंसा है ताही कौं उपादेय मानै है और कौं न मानै है सोई धर्म का श्रद्धान भया ऐसैं तत्त्वश्रद्धान वि-
षैं गर्भित अरहंत देवादिक का श्रद्धान [redacted] हो है।। [redacted] अथवा जिस निमित्ततैं याकै तत्त्वार्थश्रद्धान हो है तिस
निमित्ततैं अरहंत देवादिक का भी श्रद्धान हो है।। तातैं सम्यक्त्व विषैं देवादिक के श्रद्धान का नियम है।।
बहुरि प्रश्न जो [redacted] केई जीव अरहंतादिक का श्रद्धान करै हैं तिनिके गुण पहिचानै हैं अर उनकै तत्त्वश्र-
द्धानरूप सम्यक्त्व न हो है तातैं जाकै साँचा अरहंतादिक का श्रद्धान होय ताकै तत्त्वश्रद्धान होय ही होय ऐसा नियम सं-
भवै नाहीं।। ताका समाधान। तत्त्वश्रद्धान बिना अरहंतादिक का गुण जानै है सो पर्यायाश्रित गुण जा-
नै है।। परंतु जुदा जुदा [redacted] जीव पुद्गल विषैं जैसैं संभवै है तैसैं यथार्थ [redacted] नाहीं पहिचानै है।। तातैं साँचा श्र-
द्धान भी न होय।। जातैं जीव अजीव जाति पहिचानें बिना अरहंतादिक के आत्माश्रित गुणनिकौं वा शरीरा-
श्रित गुणनिकौं भिन्न भिन्न न जानैं [redacted]
[redacted] ।। जो [redacted] जानैं तो अपने आत्मा कौं परद्रव्य तैं भि-
न्न कैसैं न मानै।। जातैं प्रवचनसार विषैं [redacted] ऐसा कह्या है।। जो जाणदि अरहंतं दव्वत्तगुणत्तपज्ज-
यत्तेहिं। सो जाणदि अप्पाणं। मोहो खलु जादि तस्स लयं।। १।। याका अर्थ यहु जो अरहंत कौं द्रव्यत्व गुणत्व

२ का लक्षण है सो लक्षणकौं उत्कृष्ट मानै [redacted] सो ताके लक्षणकौं उत्कृष्ट कौं नै मानैं॰

पूजै मं॰

[redacted] सं॰

श्रिया लीस ज्यादि॰

२१६

पर्यायत्व करि जानै है सो आत्माकौं जानै है ताका मोह विलयकौं प्राप्त होइ है। तातैं [redacted] जाकै जीवादि तत्त्वनिका श्रद्धान न होइ ताकै अरहंतादिकका सांचा श्रद्धान न होइ। बहुरि मोक्षादि तत्त्वका श्रद्धान विना अरहंतादिकका माहात्म्य यथार्थ न जानै लौकिक अतिशयादिक करि अरहंतका [redacted] तपश्चरणादि करि गुरुका परजीवनिकी अहिंसादि करि धर्मका महिमा जानै। [redacted] सो पराश्रित [redacted] भाव है। अर आत्माश्रित भावनिकरि अरहंतादिकका स्वरूप तत्त्वश्रद्धान भए ही जानिए है। तातैं जाकै सांचा अरहंतादिकका श्रद्धान होइ ताकै तत्त्वश्रद्धान होय ही होय ऐसा नियम जाननां। या प्रकार [redacted] सम्यक्त्वका लक्षण [redacted] निर्देश कीया। इहां प्रश्न जो सांचा तत्त्वार्थश्रद्धान [redacted] वा आपापरका श्रद्धान वा आत्मश्रद्धान वा देवगुरुधर्मका श्रद्धान सम्यक्त्वका लक्षण कह्या। [redacted] बहुरि [redacted] इनि सर्व लक्षणनिकी परस्पर एकता भी [redacted] दिखाई। सो [redacted] जानी। परंतु अन्य अन्य प्रकार लक्षण कहनेका प्रयोजन कहा। [redacted] ताका उत्तर। ए च्यारि लक्षण कहे तिनिविषैं एक [redacted] लक्षण ग्रहण कीए च्यारयौं लक्षणका ग्रहण होइ है तथापि मुख्य [redacted] प्रयोजन जुदा जुदा विचारि [redacted] अन्य अन्य प्रकार लक्षण कहे हैं। जहां तत्त्वार्थश्रद्धान लक्षण कह्या है तहां तौ यहु प्रयोजन है जो इनि तत्त्वनिकौं पहिचानैं तौ [redacted] यथार्थ वस्तुकै स्वरूपकौं वा अपने हित अहित तत्त्वका श्रद्धान करि मोक्षमार्ग विषैं प्रवर्तै। बहुरि जहां आपापरका भिन्न श्रद्धान कह्या है तहां तत्त्वार्थश्रद्धान [redacted]

सांची दृष्टि करि

लक्षण

लक्षणकह्या

कापयोजन[redacted] जाकरिसिद्ध होइ तिस श्रद्धानकों मुख्य [redacted] है।। जीव अजी
वके श्रद्धानका प्रयोजन आपापरका भिन्न[redacted] वहु
रि आश्रवादिकके श्रद्धानका प्रयोजन रागादि [redacted] छोडनौ है सो आपापरका भिन्न
[redacted] श्रद्धान भए परद्रव्यविषै रागा
१सिद्ध१ दिक [redacted] नेका श्रद्धान हो है।। ऐसें तत्वार्थश्रद्धानका प्रयोजन आपापरका भिन्नश्र
द्धानतैं होता जानि [redacted] इस लक्षणकों [redacted] कह्या है।। वहुरि जहां आत्मश्रद्धान
लक्षण कह्या है तहां आपापरका भिन्न श्रद्धानका प्रयोजन इतना ही है आपकों आप जा
नना [redacted] आपकों आप जानें परका भी विकल्प कार्यकारी नाही।। ऐसा [redacted]
[redacted] मूलभूत प्रयोजनकी प्रधानता जानि आत्मश्रद्धानकों मुख्य लक्ष
णकह्या है।। वहुरि जहां देवगुरधर्मका श्रद्धान लक्षण कह्या है।। तहां बाह्यसाधनकी प्रधान
ता करी है [redacted]
[redacted]
[redacted] ।। जातैं अरहंत देवादिकका श्रद्धान [redacted] सांचा तत्वार्थश्रद्धानकों
कारण है।। अरकुदेवादिकका श्रद्धान कल्पित तत्वश्रद्धानकों कारण है सो बाह्यकारणकी
प्रधानता करि कुदेवादिकका श्रद्धान छुडाय सुदेवादिकका श्रद्धान करावनेंके अर्थि
देवगुरुधर्मका श्रद्धानकों मुख्य लक्षण कह्या है।। ऐसें जुदे जुदे [redacted] प्रयोजननिकी मु
ख्यता करि जुदे जुदे लक्षण कहे हैं।। इहां प्रश्न जो ए च्यारि लक्षण कहे तिनिविषै यहु जीव किस

लक्षणकौं अंगीकार करैं ताका समाधान॥ [illegible] उपदेशादि तैं विपरीताभिनि-
वेशका भाव [illegible] होइ है तहीं [illegible] आस्मा लक्षणयुगपत पाइए है॥ [illegible]
बहुरि [illegible] विचार ऐसे का मुख्यपनैं तत्वार्थनिकौं विचारै है कै आपापरका भेदविज्ञानक
रै है कै आत्मस्वरूपही कौं संभारै है कै देवादिकका स्वरूप विचारै है॥ ऐसैं ज्ञान विषैं तौ नाना
प्रकार विचार होइ परंतु श्रद्धानविषै सर्वत्र परस्पर [illegible] सापेक्षपनौं पाइए है [illegible]
[illegible] तत्वविचार करै है तौ भेदविज्ञान [illegible]
[illegible] करै है तौ तत्वविचारादिकका अभिप्राय
[illegible] दिकका अभिप्राय लीए करै है अर भेदविज्ञान [illegible] करै है तौ तत्त्व समभ्यग्दृष्टीके श्रद्धान
लीए करै है [illegible] ऐसैं ही अन्यत्र [illegible] भी परस्पर सापेक्षपनौं है तातैं सम्यग्दृष्टीके विपरीताभि-
निवेश्याकौं ही लक्षणनिका अंगीकार है॥ बहुरि जाकै मिथ्यात्वका उदय है ताकै विपरीताभि-
निवेश पाइए है ताकौं [illegible] लक्षणआभासमात्र होइ सांचे न होइ [illegible]

[illegible]

429

218

[illegible]

[illegible] ॥ जिनमत के जीवादिक तत्वनिकों मानें और कों न मानें तिनिके नाम भेदादिक कों सीषि ऐसें तत्वार्थश्रद्धान होइ परंतु तिनिका यथार्थ भावका श्रद्धान न होइ ॥ बहुरि आपापरका भिन्नपनाकी बातें करै [illegible] चितवन करै परंतु जैसें पर्याय विषैं अहंबुद्धि है तैसें आ[illegible]त्मा विषैं अहंबुद्धि शरीरादि विषैं परबुद्धि न होइ है ॥ बहुरि आत्माकों [illegible] जिनवचन अनुसारि चितवै ॥ परंतु [illegible] प्रतीतिरूप आपकों आप श्रद्धान न करै ॥ बहुरि अरहंत देवादिक बिना और कुदेवादिक कों न मानें परंतु तिनके स्वरूपकों यथार्थ पहिचानि श्रद्धान न करै ॥ ऐसें [illegible] इन लक्षणाभास मिथ्यादृष्टि [illegible] कै होइ है [illegible] इनि विषै कोई होय कोई न होय [illegible] तहाँ भिन्नपनौं भी संभवै है ॥ [illegible] ॥ बहुरि [illegible] निविषै इतनी विशेष है जो पहलें तौ देवादिक का श्रद्धान होइ पीछें तत्वनिका विचार होइ पीछें आपापरका चितवन करै पीछें केवल आत्माकों चितवै इस अनुक्रमतें साधन करै तौ परंपरा सांचा मोक्षमार्गकों पाइ कोई जीव सिद्धपदकों भी पावै ॥ बहुरि [illegible] इस अनुक्रमका उलंघन करि [illegible]

×अवस्थादि विषै परबुद्धि×

×इनिकै×

२१८

तातैं आपकौं ज्ञानी मानै है

जाकै देवादिक माननेका तौ किछू ठीक नाहीं अर बुद्धि की तीव्रता तातैं तत्वविचारादिक विषै प्रवर्त्तै है
[illegible] अथवा तत्वविचार [illegible] विषै [illegible] उप ज्ञानी
योग न लगावै है अर आपापरका भेदविज्ञानी हूवा रहै है॥ अथवा [illegible] आपापरका
ठीक न करै है अर आपकौं आत्मज्ञानी मानै है सो ए सर्व चतुराई की बातें है [illegible]
[illegible] मानादिक कषाय के साधन हैं किछू भी कार्यकारी नाहीं तातैं जो जी
व अपना भला किया चाहै तिसकौं [illegible] यावत् साचा सम्यग्दर्शन की प्राप्ति न होइ आज्ञादिक
तावत् इनि कौं भी अनुक्रम ही तैं अंगीकार करना॥ सोई कहिए है॥ पहलैं तौ कुदेवादिक का [illegible] करि ताकी
माननां छोडि अर हंत देवादिक का श्रद्धान करना॥ जातैं इस श्रद्धान भए [illegible] परीक्षा करि
[illegible] गृहीतमिथ्यात्व का तौ अभाव [illegible]
[illegible]
[illegible] होहै बहुरि मोक्षमार्ग
[illegible]

केविघ्नकरण हरिज्ञ देवादिक का निमित्त हरि होहै ।। मोक्षमार्ग का सहायी अरहंत देवादिक का निमित्त मिलै है तिसतैं पहलैं [redacted] देवादिक का श्रद्धान करनां ।। बहुरि पीछैं जिनमत विषै कहे जीवादिक तत्वनि का विचार करनां ।। नाम लक्षणादिक सीषने ।। जातैं इस अभ्यासतैं [redacted] तत्वार्थश्रद्धान की प्राप्ति होइ [redacted] बहुरि पीछैं [redacted] आपा [redacted] परका भिन्न [redacted] पनां [redacted] जैसैं भासै तैसैं विचार कीया करै ।। जातैं इस अभ्यासतैं [redacted] परका भिन्न [redacted] पनां [redacted] जैसैं भासै तैसैं विचार कीया करै ।। बहुरि पीछैं आप विषै आपा माननें कै अर्थि [redacted] भेदविज्ञान होइ [redacted] ।। बहुरि पीछैं आप विषै आपा माननें कै अर्थि [redacted] स्वरूप का विचार कीया करै ।। जातैं इस अभ्यासतैं आत्मानुभव की प्राप्ति होहै ।। [redacted] स्वरूप का विचार कीया करै ।। जातैं इस अभ्यासतैं आत्मानुभव की प्राप्ति होहै ।। [redacted] बहुरि ऐसैं अनुक्रमतैं इनिकौं अंगीकार करि पीछैं इनि ही विषै कबहू [redacted] बहुरि ऐसैं अनुक्रमतैं इनिकौं अंगीकार करि पीछैं इनि ही विषै कबहू देवादिक का विचार विषै कबहू आपापर का विचार विषै कबहू आत्मविचार विषै उपयोग लगावै ।। ऐसैं अभ्यासतैं दर्शनमोह [redacted] मंद होता जाय तब कदाचित् सांचा सम्यग्दर्शनिकी प्राप्ति होइ [redacted] नी ही नी होइ परंतु मुख्यपनैं घनें जीवनि कै तौ इस अनुक्रम [redacted] कार्यसिद्धि होहै ।। तातैं इनिकौं ऐसैं अंगीकार करनें ।। जैसैं पुत्र का अर्थी विवाहादि [redacted] कार्यसिद्धि होहै ।। तातैं इनिकौं ऐसैं अंगीकार करनें ।। जैसैं पुत्र का अर्थी विवाहादि कारणनिकौं मिलावै पीछैं घनें [redacted] पुरुषनि कै तौ पुत्र की प्राप्ति होय ही है ।। काहू कै न होय तौ न होय ।। तैसैं सम्यक्त्व का अर्थी इनि कारणनिकौं मिलावै पीछैं घनें जीवनि कै तौ सम्यक्त्व की प्राप्ति

(याकौं तौ उपाय करनौं)

२१९

८०
कै बहुत लि
खियाय वि
षैक्रियो
सा नियम
तो

[redacted]

है नाही याकौ
इ जीव कैकौ
इ विपरीत का
रण प्रबल बी
चि में होइ जाइ
तौ सम्यग्द
र्शन की प्राप्ति

२१९
A

होय रही है॥ काहूकै न होय तौ नाही भी होय॥ परंतु याकौं तौ आपतैं बनैं सो उपाय करनौ॥ ऐसैं सम्
क्तका लक्षणनिर्देश कीया॥ इहां प्रश्न॥ जो सम्यक्तके लक्षण तौ अनेक प्रकार कहे तिनि विषै
तुम तत्वार्थश्रद्धान लक्षणकौं मुख्य कीया सो कारन कहा॥ ताका समाधान॥ तुछबुद्धीनिकौं
अन्य लक्षण विषै [redacted] प्रयोजन [redacted] प्रगट भासै नाही वा भ्रम उपजै अर इस तत्वार्थश्रद्धान
लक्षणविषै प्रगट प्रयोजन भासै किछू भ्रम उपजै नाही॥ तातैं इस लक्षणकौं मुख्य कीया है॥
सोई दिखाईए है॥ देवगुरुधर्मका श्रद्धानविषै तुछबुद्धीनिकौं यहु भासै अरहंतदेवादिककौं
माननां औरकौं न माननां इतना ही सम्यक्त है॥ तहां [redacted] जीव अजीव [redacted] का वा बंधमो
क्षके कारण कार्यका स्वरूप न भासै तब मोक्षमार्गका प्रयोजनकी सिद्धि न होय॥ वा¹ इस ही श्रद्धानवि
षैं संतुष्ट होइ आपकौं सम्यक्ती मानैं [redacted]
[redacted]॥ बहुरि आपापरका श्रद्धान विषै तुछबुद्धीनिकौं यहु भासै
आपापरका ही जानना कार्यकारी है [redacted] इसतैं ही सम्यक्त हो है [redacted]
[redacted] तहीं आस्रवादिकका स्वरूप न भासै तब [redacted] मोक्षमार्ग [redacted] प्रयोजनकी सिद्धि [redacted]
[redacted] न होय॥ [redacted] वा आस्रवादिकका श्रद्धान भए बिना इतना ही जाननेंविषै सं
तुष्ट होइ आपकौं सम्यक्ती मानै स्वछंद होइ रागादि [redacted] छोडनेंका उद्यम न करै ऐसा
भ्रम उपजै॥ बहुरि आत्मश्रद्धान विषै तुछबुद्धीनिकौं यहु भासै आत्मा ही का विचार कार्यकारी
है इस ही तैं सम्यक्त हो है तहां जीवाजीवादिकका विशेष वा आस्रवादिकका स्वरूप न भासै तब
मोक्षमार्ग [redacted] प्रयोजनकी सिद्धि न होय॥ वा जीवादिकका विशेष वा आस्रवादिकका स्वरूप

¹ जीवादिकका श्रद्धान भए बिना

¹ एकका देवादिकतैं देव तौ मानै अन्य रागादिकका उनैंका उद्यम न करै ऐसा भ्रम उपजै

का श्रद्धान न होय विना इनका ही विचारतैं आपकों सम्यक्त्वी मानै। [redacted] स्वच्छंद होइ रागादि छो
ड़नें का उद्यम न करै याकै भी ऐसे सम्यक्त्व न उपजै। [redacted] इनि [redacted] लक्षणनि [redacted] कों मुख्य न की
ए। बहुरि तत्वार्थश्रद्धान लक्षणविषै जीव अजीवादिकका वा आस्रवादिकका श्रद्धान होइ त
हाँ [redacted] का स्वरूप नीकैं जानै [redacted] तब मोक्षमार्गका प्रयोजनकी सिद्धि [redacted] होय। बहुरि
सर्व: इस [redacted] श्रद्धान [redacted] नहीं सम्यक्त्व होइ परंतु यहु सीतु ह [redacted]
[redacted] उद्यम राखे है। न हो है। आस्रवादिकका श्रद्धान होनें तैं रागादि छोडि मोक्षका उ [redacted] द्यम राखे है
याकै सम्यक्त्व उपजै है तातैं तत्वार्थश्रद्धानलक्षणकों मुख्य कीया है। अथवा तत्वार्थश्रद्धानल
क्षणविषै तौ देवादिकका श्रद्धान वा आपापरका श्रद्धान वा आत्मश्रद्धान गर्भित हो है सो तौ तुच्छ
बुद्धीनिकों भी भासै। बहुरि अन्य लक्षणनिविषै तत्वार्थश्रद्धानका गर्भितपनौ विशेषबुद्धी होइ
तिनिहीकों भासै तुच्छबुद्धीनिकों न भासै तातैं तत्वार्थश्रद्धानलक्षणकों मुख्य कीया है। [redacted] अथ
वा मिथ्यादृष्टीकै आभासमात्र ए होइ तहाँ [redacted] तत्वार्थनिका विचार तौ शीघ्रपनैं [redacted] विपरीता
भिनिवेश दूरि करनेंकों कारण हो है अन्य लक्षण [redacted] शीघ्र कारण नाहीं हो है वा विपरीताभि
निवेशका भी कारण होइ जाइ। तातैं इहाँ [redacted] सर्वप्रकार प्रसिद्ध जानि [redacted] 220
[redacted] विपरीताभिनिवेशरहित [redacted] जीवादितत्वार्थनिका श्रद्धान
[redacted] तौ सम्यक्त्वका लक्षण है। ऐसा निर्देश कीया। ऐसैं लक्षणनिर्देशका निरूपण कीया। ऐसा
[redacted] ऐसा लक्षण जिस आत्माका स्वभावविषै [redacted] दिखाईए है
पाईए है सो ही सम्यक्त्वी जानना। अब इस सम्यक्त्वके [redacted] निश्चयव्यवहारकौं
किनें दिखाईए है तहाँ प्रथम

220 A

[redacted]

[redacted] विपरीताभिनि

विशार हित आत्मा का परिणाम सो तौ निश्चय सम्यक्त्व है।। जातैं यहु सत्यार्थ सम्यक्त्व का स्वरूप

है।। बहुरि [redacted] विपरीताभिनिवेश [redacted] रहित श्रद्धान कौं कारण [redacted]

[redacted] भूत [redacted]

[redacted] श्रद्धानु सो व्यवहार सम्यक्त्व है।। तहाँ सम्यग्दृष्टी जीवकै [redacted] देवगुरुध

र्मादिक का सांचा श्रद्धान [redacted] है तिसही निमित्त तैं याकै [redacted] श्रद्धान विषै

विपरीताभिनिवेश का अभाव है।। सो इहाँ विपरीताभिनिवेश रहित श्रद्धान सो तो निश्चय सम्य

क्त्व है अर देवगुरुधर्मादिक का श्रद्धान है सो यहु व्यवहार सम्यक्त्व है।। [redacted] एक ही काल विषै दोऊ

सम्यक्त्व पाईए है।। बहुरि मिथ्यादृष्टी जीवकै देवगुरुधर्मादिक का श्रद्धान [redacted]

[redacted] आभास मात्र हो है अर याकै विपरीताभिनिवेश का अभाव न हो है तातैं इहाँ निश्चयस

म्यक्त्व तौ है नाहीं अर व्यवहार सम्यक्त्व भी आभास मात्र है।। जातैं [redacted] याकै देवगुरुध

र्मादिक का श्रद्धान है सो विपरीताभिनिवेश [redacted] कारण न भया नाहीं।। कारण भए बिना उपचार [redacted]

[redacted] संभवै नाहीं तातैं [redacted] व्यवहार सम्यक्त्व भी [redacted] याकै न संभवै [redacted] है।। [redacted]

अथवा याकै देवगुरुधर्मादिक का श्रद्धान [redacted] है सो [redacted]

[redacted] विपरीताभिनिवेश रहित श्रद्धान कौं परंपरा कारण [redacted] भूत [redacted] है।। यद्यपि नियमरूप का

नियमरूप ः केअभावकौं साक्षात् ः
२ साक्षात् कारण अपेक्षा ः

Margin notes:

३ श्रद्धानरू पः

४ श्रद्धानवि षैः

[redacted]

ः जातैं कारण विषै कार्य का उपचार कीया है सो उपचार ही का नाम व्यवहार है ः

५३५

२२१

।बहुरि।

रणभी होत थापि मुख्यपनैं कारण है॥ [redacted]कारण विषैं कार्य का उपचार [redacted] संभवै है॥ [redacted] तातैं मुख्यरूप परंपरा कारण। अनेका मिथ्या दृष्टीकैं भी व्यवहार सम्यक्त कहिए है॥ इहाँ [redacted] प्रश्न जो केई शास्त्रनि विषैं देव गुरु ध र्म का श्रद्धान कौं वा तत्वश्रद्धान कौं तौ व्यवहार सम्यक्त कह्या है अर आपापर का श्रद्धान कौं वा केवल आत्मा का श्रद्धान कौं निश्चय सम्यक्त कह्या है सो कैसें है॥ ताका समाधान॥ [redacted] [redacted] देव गुरु धर्म का [redacted] श्रद्धान विषैं तौ प्रवृत्ति की मुख्यता है॥ जो प्रवृत्ति विषैं अरहंतादिक कौं देवादिक मानै और कौं न मानै सो देवादिक का श्रद्धानी कहिए है॥ अर तत्व श्रद्धान विषैं [redacted] तिनके विचार की मुख्यता है [redacted] जो ज्ञान विषैं जीवादिक तत्वनि कौं विचारै [redacted] ताकौं तत्वश्रद्धानी कहिए है॥ ऐसैं मुख्यता पाइए है सो ए दोऊ काहू जीव कै सम्यक्त कौं कारण तौ होइ परंतु [redacted] तातैं इनिकौं व्यवहार सम्यक्त कह्या है॥ बहुरि आपापर का श्रद्धान विषैं वा आत्मश्रद्धान विषैं विपरीताभिनिवेश रहित पनां की मुख्यता है॥ जो [redacted] आपापर का भेदविज्ञान करै वा अपने आपकौं अनुभवै ताकै मुख्यपनैं [redacted] विपरीताभिनिवेश न होइ [redacted] [redacted] तातैं भेदविज्ञानी कौं वा आत्मज्ञानी कौं सम्यग्दृष्टी कहिए है॥ ऐसैं मुख्यता करि [redacted] आपापर का श्रद्धान वा आत्मश्रद्धान सम्यग्दृष्टी ही कै पाइए है तातैं इनिकौं निश्चय सम्यक्त [redacted] कह्या सो ऐसा कथन मुख्यता की अपेक्षा है॥ तारतम्यपनैं [redacted]

[redacted]

१ इनिका सद्भाव मिथ्यादृष्टीकै भी संभवै है

२२१

२२१
क

आज्ञामात्र में

सांचे

एव्या सो मिथ्यादृष्टीकै [redacted] होइ [redacted] सम्यग्दृष्टीकै [redacted] होइ ॥ [redacted] तहाँ आज्ञामात्र है [redacted] सो तो नियम [redacted] विना
परंपरा [redacted] कारण है ॥ अर सांचे हैं सो [redacted] नियमरूप साक्षात् कारण है
तातैं इनिकौं व्यवहाररूप कहिए ॥ इनिके निमित्ततैं जो विपरीताभिनिवेश रहित श्रद्धान भया सो
निश्चय सम्यक्त है ऐसा जाननौं ॥ बहुरि प्रश्न कोई शास्त्रनि विषै लिखै है आत्मा है सो ही
निश्चय सम्यक्त है और सर्व व्यवहार है सो कैसें है ॥ ताका समाधान ॥ विपरीताभिनिवेश
रहित श्रद्धान भया सो आत्मा ही का स्वरूप है ॥ तहाँ अभेद बुद्धि करि [redacted] आत्मा [redacted]
और सर्व
अर सम्यक्त विषै भिन्नता नाँही तातैं निश्चय करि आत्मा ही कौं सम्यक्त कह्या ॥ और सर्व
५ सम्यक्त [redacted] कौं निमित्तमात्र है वा भेद [redacted] कल्पना कीएं [redacted] आत्मा अर सम्यक्त [redacted] कै
भिन्नता कहिए है तातैं और सर्व व्यवहार कह्या है ऐसा जाननौं ॥ याप्रकार निश्चय [redacted]
[redacted] समक्त अर व्यवहार सम्यक्त करि सम्यक्त के दोय भेद हो
है ॥ बहुरि अन्य निमित्तादि अपेक्षा सम्यक्त के दश भेद कीए है ॥ [redacted]
६ आज्ञा सम्यक्तादि ५ [redacted]
सो आत्मानुशासन विषै कहे हैं ॥ ७ ॥ आज्ञामार्गसमुद्भवमुपदेशात्सूत्रबीजसंक्षेपात् विस्
शार्यान्यां नव   अवपरमावादि गाढं च ॥ १ ॥ [redacted] याका अर्थ ॥ आज्ञातैं [redacted]
जिन
तत्वश्रद्धान भया होइ सो आज्ञा सम्यक्त है ॥ इहाँ इतनौं जाननौं ॥ मोकौं जिन आज्ञा प्रमाण है इतनौं
ही श्रद्धान सम्यक्त नाँही है ॥ आज्ञा माननौं [redacted] तौ कारणभूत है ॥ याही तैं इहाँ [redacted]
[redacted] आज्ञातैं [redacted]

पश्चात् कह्या है॥ तातैं पूर्वैं जिनआज्ञा माननेतैं पीछैं जो तत्वश्रद्धान भया सो आज्ञासम्यक्त है॥ ऐसैं ही निर्ग्रंथमार्गकौं अवलोकनेतैं तत्वश्रद्धान होइ सो मार्गसम्यक्त है॥

ऐसैं आठ [illegible] भेद तौ कारण अपेक्षा कीए॥ बहुरि श्रुतकेवलीकै जो तत्वश्रद्धान है ताकौं अवगाढसम्यक्त कहिए॥ केवलज्ञानीकै जो [illegible] तत्वश्रद्धान है ताकौं परमावगाढ सम्यक्त कहिए॥ ऐसैं दोय भेद ज्ञानका सहकारीपनाकी अपेक्षा कीए॥ या प्रकार दश भेद सम्यक्तके कीए तहाँ सर्वत्र सम्यक्तका स्वरूप तत्वार्थश्रद्धान ही जानना॥ बहुरि सम्यक्तके तीन भेद कीए है॥ औपशमिक१ [illegible] क्षायोपशमिक२ क्षायिक३॥ सो ए तीन भेद दर्शनमोहकी अपेक्षा कीए हैं॥ तहाँ औपशमिकसम्यक्तके दोय भेद हैं॥ प्रथमोपशमसम्यक्त१ द्वितीयोपशमसम्यक्त२॥ तहाँ मिथ्यादृष्टिगुणस्थानविषै करणकरि दर्शनमोहकौं उपशमाय [illegible] सम्यक्त उपजै ताकौं प्रथमोपशमसम्यक्त कहिए है॥ तहाँ इतना विशेष है॥ अनादि मिथ्यादृष्टीकै तौ एक मिथ्यात्वप्रकृति हीका उपशम हो है॥ जातैं याकै मिश्रमोहनी सम्यक्तमोहनीकी सत्ता है नाहीं॥ २२२ जब जीव उपशमसम्यक्तकौं प्राप्त होइ तहाँ तिस सम्यक्तके कालविषै मिथ्यात्वके [illegible] परमाणूनिकौं मिश्रमोहनीरूप वा सम्यक्तमोहनीरूप परिणमावै है तब तीन प्रकृतिकी सत्ता हो है॥ तातैं अनादि मिथ्यादृष्टीकै एक मिथ्यात्वप्रकृतिकी सत्ता है॥ तिसहीका उपशम हो है॥ बहुरि सादि मिथ्यादृष्टीकै काहूकै तीन प्रकृतिकी सत्ता है॥ काहूकै एक हीकी सत्ता है॥ जाकै सम्यक्त

222 A.

४ अनिवृत्तिकरण ३ तातैं सादि मिथ्यादृष्टीकै ४ विषै कीया अंतरकरण विधानतैं जे;

[redacted]

कालविषै तीनकी सत्ता भई थी सो [redacted] सत्ता पाईए ताकै तीनकी सत्ता है। अर जाकै [redacted] मिश्रमोहनी
सम्यक्त्वमोहनीकी उद्वेलना होय गई होय।। उनके परमाणु मिथ्यात्वरूप परिणमि गए होइ ताकै
एक मिथ्यात्वकी सत्ता [redacted] है।। [redacted] तीन प्रकृतिनिका वा एक प्रकृतिका उपशम होहै।। उपशम
नका कहिए है।। सम्यक्त्वकौं काल विषै उदय आवने योग्य निषेक थे तिनका तौ अभाव कीया
तिनके परमाणु अन्यकाल विषै उदय आवने योग्य निषेकरूप कीए।। बहुरि तिस काल [redacted] कै पी
छे उदय आवने योग्य निषेक थे तैं उदीरणारूप होइ इस काल विषै उदय न आइ सकै ऐसे
कीए।। ऐसें [redacted] जहां सत्ता तौ पाईए अर उदय न पाईए ताका नाम उप
शम है।। सो इहु [redacted] मिथ्यात्वतैं भया प्रथमोपशम सम्यक्त्व सो चतुर्थादि सप्तम गुण
स्थान पर्यंत पाईए है।। बहुरि [redacted] उपशमश्रेणीकौं [redacted] सन्मुख होतैं
स[redacted] सप्तम गुणस्थान विषै क्षयोपशम सम्यक्त्वतैं जो उपशम सम्यक्त्व होइ ताका नाम द्वितीयोपशम
सम्यक्त्व है।। [redacted] इहीकरणकरि [redacted] तीन ही प्रकृतिनिका उपशम हो है जातैं याकै तीन हीकी स
त्ता पाईए।। इहां भी अंतरकरण विधानतैं वा उपशम विधानतैं तिनिकै उदयका अभाव करै है
सो ही उपशम [redacted]।। [redacted] ऐसें उपशम सम्यक्त्व दोय प्रकार है।। सो यहु सम्यक्त्व वर्तमानका
ल विषै क्षायिकवत् निर्मल है।। [redacted] याका प्रतिपक्षी कर्मकी सत्ता पाईए है तातैं अंतर्मुहूर्त
कालमात्र यहु सम्यक्त्व रहै है पीछै दर्शनमोहका उदय आवै है ऐसा जानना।। ऐसें उपशम
सम्यक्त्वका स्वरूप कह्या।। बहुरि [redacted] दर्शनमोहकी तीन प्रकृतिनि विषै सम्यक्त्वमोहनीका उ

(margin) [redacted]

(margin) ५ अनिवृत्तिकरण ही विषै कीया उपशम विधानतैं जे

(margin) सो यहु द्वितीयोपशम सम्यक्त्व सप्तमादि ग्यारहवां गुणस्थान पर्यंत होहै पडतौ कोईकै छठे पांचवें चौथे भी रहै है ऐसा जानना।।

223 दय होइ अन्य दोयका उदय न होइ तहाँ क्षयोपशम सम्यक्त हो है॥ सो [redacted] उपशम सम्यक्त [redacted]
[redacted] काकाल पूर्ण भएँ यह सम्यक्त हो है॥ [redacted] वा सादि मिथ्यादृष्टीकै मिथ्यात्वगुणस्था
नतैं वा मिश्रगुणस्थानतैं भी याकी प्राप्ति हो है॥ क्षयोपशम कहा सो कहिए है॥ दर्शनमोहकी
तीन प्रकृतिनि विषै जो मिथ्यात्वका अनुभाग है ताकै अनंतवैं भागि मिश्रमोहनीका है ताकै अ
नंतवैं भागि सम्यक्तमोहनीका है सो इनि विषै सम्यक्तमोहनी [redacted] प्रकृति देशघाती है॥ याका
उदय होतैं भी सम्यक्तका घात न होइ॥ किंचित् मलीनता करै॥ मूल घात न करि सकै ताहीका
नाम देशघाती है॥ सो जहाँ मिथ्यात्व वा मिश्र मिथ्यात्वका वर्तमान [redacted] काल विषै उदय
आवने योग्य निषेक तिनकी उदय [redacted] हुए बिना ही निर्जरा [redacted] होइ सो तौ क्षय जानना॥ अर [redacted]
इनिहीका आगामी काल विषै उदय आवने योग्य निषेकनिकी सत्ता पाइए [redacted]
सो ही उपशम है॥ [redacted] बहुरि सम्यक्तमोहनीका उदय पाइए है॥ [redacted] ऐसी दशा
जहाँ होइ सो क्षयोपशम है॥ तातैं समल [redacted] तत्वार्थश्रद्धान होइ सो क्षयोपशम सम्यक्त है॥ इहाँ २२३
जो मल लागै है ताका [redacted] तारतम्य स्वरूप तौ केवली जानै है॥ उदाहरण दिखावनेकै अर्थि चलम
लिन अगाढपना कह्या है तहाँ व्यवहारमात्र देवादिककी प्रतीति तौ होइ परन्तु अरहंत देवादि
विषै यहु मेरा [redacted] है यहु अन्यका है [redacted] इत्यादि भाव सो चलपना है॥ शंकादि मल लागै सो मलिनपना
है॥ यहु शांतिनाथ शांतिकर्ता है इत्यादि भाव सो अगाढपना है॥ [redacted] सो ऐसा उदाहरण व्यव
हार मात्र दिखाए परन्तु नियमरूप नाहीं॥ [redacted] क्षयोपशम सम्यक्त विषै जो नियमरूप

कोई मल लागै है सो केवली जानै है॥ इतनी जाननी [redacted] याकै तत्वार्थश्रद्धान विषै कोई प्रकार क[redacted]
रि समल पनौं हो है तातैं यहु सम्यक्त निर्म्मल नाहीं है॥ [redacted] इस क्षयोपशम
सम्यक्त का एक ही प्रकार है [redacted] या विषै किछू भेद नाहीं है॥ इतना विशेष है जो क्षायिक सम्य
क्त कौं सन्मुख होतैं अंतर्मुहूर्त काल मात्र जहाँ मिथ्यात्व की प्रकृति का क्षय करै है तहाँ दोय
ही प्रकृति की सत्ता रहै है बहुरि [redacted] पीछैं मिश्रमोहनी का भी क्षय करै है तहाँ सम्यक्त मोहनी
की ही सत्ता रहै है॥ पीछैं सम्यक्त मोहनी की कांडक[redacted] घातादि क्रिया न करै है तहाँ कृतकृ
त्य वेदक सम्यग्दृष्टी नाम पावै है॥ ऐसा जाननौ॥ बहुरि इस क्षयोपशम सम्यक्त ही का ना
म वेदक सम्यक्त है॥ जहाँ मिथ्यात्व मिश्रमोहनी की मुख्यता करि कहिए तहाँ क्षयोपशम ना
म पावै है सम्यक्त मोहनी की मुख्यता करि कहिए तहाँ वेदक नाम पावै है॥ सो कहनें मात्र दो
य नाम है॥ स्वरूप विषै भेद है नाहीं॥ बहुरि यहु क्षयोपशम सम्यक्त चतुर्थादि सप्तम गुणस्था
न पर्यंत पाइए है॥ ऐसैं क्षयोपशम सम्यक्त का स्वरूप कह्या॥ बहुरि तीनौं प्रकृतिनि के सर्व
था सर्व निषेकनि का नाश भए अत्यंत निर्म्मल तत्वार्थश्रद्धान होइ सो क्षायिक सम्यक्त है।
सो [redacted] चतुर्थादि च्यारि गुणस्थाननि विषै कहीं क्षयोपशम सम्यग्दृष्टी कै
याकी प्राप्ति हो है॥ कैसैं हो है [redacted] सो कहिए है॥ प्रथम तीन करण करि [redacted] मि
थ्यात्व के परमाणूनि कौं मिश्रमोहनी वा सम्यक्त मोहनी रूप परिणमावै॥ वा निर्जरा करै ऐसैं
मिथ्यात्व का सत्ता नाश करै॥ बहुरि मिश्रमोहनी के परमाणूनि कौं सम्यक्त मोहनी रूप परिणम

५५।

२२५

विवा निर्जरा करै ऐसैं मिश्रमोहनी का नाश करै॥ बहुरि सम्यक्त्वमोहनी का निषेक उदय आइ खिरै
[redacted] बाकी बहुत स्थिति [redacted] होइ ताकों
[redacted] तिष्ठै तब कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टी होइ
स्थितिकांडकादि करि घटावै जहाँ अंतर्मुहूर्त स्थिति रहै तब कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टी होइ है॥ सो यहु प्रति
बहुरि अनुक्रमतैं इनि निषेकनि का नाश करि [redacted] क्षायिकसम्यग्दृष्टी हो है॥ सो यहु प्रति
पक्षी कर्म्म के अभावतैं निर्म्मल है वा [redacted] मिथ्यात्व [redacted] रूप रंजना के अभावतैं वीत
राग है॥ [redacted] या का नाश न होइ [redacted] जहाँ उपजे तहीं तैं सिद्ध अवस्था पर्यंत याका सद्भाव है।
ऐसैं क्षायिक सम्यक्त्व का स्वरूप कह्या॥ ऐसैं तीन [redacted] भेद सम्यक्त्व के हैं॥ बहुरि अनंतानु
बंधी कषाय की सम्यक्त्व होतैं दोय अवस्था हो है॥ कै तौ अप्रशस्तउपशम हो है कै विसंयोजन
हो है॥ जो [redacted] करण करि उपशम विधानतैं उपशम होइ ताका नाम प्रशस्तउपशम है। सो अनंता
[redacted]॥ उदय का अभाव ताका नाम अप्रशस्तउपशम है सो अन्य मोह की प्रकृतिनि
नुबंधी का अप्रशस्तउपशम तौ होइ ही नाहीं [redacted] तीन क
का हो है बहुरि इस [redacted] का अप्रशस्तउपशम हो है॥ बहुरि जो [redacted] रूप परिणमाय
रण करि अनंतानुबंधीनि कै परमाणूनि कौं अन्य चारित्रमोह की प्रकृतिरूप परिणमाय
[redacted] इनि का सत्ता नाश करिए ताका नाम विसंयोजन है॥ सो इनि विषै प्रथमोपशम सम्यक्त्व
क्त्व विषै तौ अनंतानुबंधी का [redacted] अप्रशस्तउपशम ही है॥ बहुरि द्वितीयोपशम सम्यक्त्व कौ
[redacted] की प्राप्ति पहलैं अनंतानुबंधी का विसंयोजन भए ही होय ऐसा नियम कौ
ई आचार्य लिखै है कोई नियम नाहीं लिखै है॥ बहुरि क्षयोपशम सम्यक्त्व विषै कोई जीव कै अप्र

तहाँ

[redacted] मो

[redacted]

२२४

225 A

शान्तउपशम [redacted] होहै वाकोइ कै विसंयोजन होहै॥ बहुरि क्षायिक सम्यक्त है सो पहलैं अनंतानुबंधी
का विसंयोजन भएही होहै॥ ऐसा जानना॥ १उपशम क्षयोपशम सम्यक्तीकै अनंतानुबंधी
का विसंयोजनतैं सत्तानाश भया था बहुरि वह मिथ्यात्व विषै आवै तौ अनंतानुबंधीका बंध
करै तहां बहुरि वाकी सत्ताका सद्भाव होइ॥ अर क्षायिक सम्यक्ती [redacted] मिथ्यात्व विषै आवै नां
ही तातैं वाकै अनंतानुबंधीकी सत्ता कदाचित न होय॥ इहां प्रश्न जो अनंतानुबंधी तौ चारि
त्रमोहकी प्रकृति है सो चारित्रकौं [redacted] घातै या करि [redacted] सम्यक्तका घात कैसैं संभवै॥
ताका समाधान॥ अनंतानुबंधीके उदयतैं क्रोधादिरूप परिणाम होहै किछू अतत्वश्रद्धान
होता नाहीं तातैं अनंतानुबंधी चारित्रहीकौं घातै है सम्यक्तकौं [redacted] नाहीं घातै है॥ सो १है तौ ऐसैं — १ परमार्थ तैं
ही परंतु अनंतानुबंधीकै उदयतैं [redacted] जैसे क्रोधादिक हो हैं तैसे क्रोधादिक [redacted] सम्यक्त हो
तैं न होइ ऐसा निमित्तनैमित्तिकपना पाइए है॥ जैसैं [redacted] त्रसपनाकी घातक तौ
स्थावरप्रकृति ही है॥ परंतु [redacted] एकेंद्रियजातिप्रकृतिका भी उदय न हो
इ तातैं उपचारकरि एकेंद्रियप्रकृतिकौं भी त्रसपनाका घातकपना कहिए तौ दोष नाहीं॥ तैसैं — √ त्रसपनी होतें
सम्यक्तकी घातक तौ [redacted] दर्शनमोह है॥ परंतु सम्यक्त होतैं अनंतानुबंधी कषाय
निका भी उदय न होय तातैं उपचारकरि अनंतानुबंधीकै भी सम्यक्तका घातकपना कहिए तौ दो
षनाहीं॥ बहुरि इहां प्रश्न जो अनंतानुबंधी भी चारित्रहीकौं घातै है तौ याकौ गए किछू चारित्र भया क
हौ॥ १असंयम काहेकौं कहौ हौ॥ ताका समाधान॥ [redacted]

१ असंयतगुणस्थान विषै

[redacted]

५५३

२२५

[illegible] अनंतानु
बंधी आदि जे हैं ते तीव्र मंद कषाय की अपेक्षा नाहीं है॥ जातैं मिथ्यादृष्टी कैं तीव्र कषाय [redacted] होतैं
वा मंद कषाय होतैं [redacted] अनंतानुबंधी आदि च्यारयौं का उदय युगपत् होहै॥ इतना विशेष है जो अ
नंतानुबंधी की साथि जैसा तीव्र उदय अप्रत्याख्यानादिक का होइ तैसा ताकौं गएं न होइ॥ ऐसैं ही
अप्रत्याख्यान की साथि जैसा प्रत्याख्यान संज्वलन का उदय होइ तैसा ताकौं गएं न होइ॥ बहुरि जे
प्रत्याख्यान की साथि संज्वलन का उदय होइ तैसा केवल संज्वलन का उदय न होइ॥ तातैं अनं
तानुबंधी के गएं किछू कषायनि की मंदता तौ होहै॥ परंतु ऐसी मंदता न होहै जाकरि कोई चारि
[illegible] ── उसही च्यारौं का उदय ईकसमान कहैहैं

२२५

५५५

225 A

२तिनि विषै १ सर्वत्र

[redacted] एईस्थाननितैं उपरस्थान
त्रनामपावै।। जातैं कषायनिकै असंख्यातलोकप्रमाणस्थान हैं [redacted] परंतु व्यवहारकरि तिनिस्थान
विषै मैंदताबाई ए है [redacted] आदिकै बहुत स्थाननितैं असंयमरूप कहे।। बीचिके केतकेदेशसंयमरूपकहे
निविषैतीनमर्यादाकरी।। आदिकै बहुत स्थाननितैं असंयमरूप कहे।। बीचिकै केतके देशसंयमरूप कहे ४तिनि विषै
पीछैकेतक सकलसंयमरूप कहे।। [redacted]
[redacted] प्रथमगुणस्थाननितैं लगाय चतुर्थगुणस्था
[redacted] सर्व असंयमहीके
न पर्यंत जे कषायके स्थान हैं ते [redacted] कषाय
होहै तातैं कषायनिकी मंदता होतैं भी चारित्र नाम न पावै है यद्यपि परमार्थतैं [redacted]
का घटनी [redacted] चारित्रका अंश है तथापि व्यवहारतैं जहाँ [redacted] ऐसा अंश
[redacted] श्रावकधर्म्म मुनिधर्म्मका अंगीकार [redacted] होइ तहाँ ही चारित्र नाम पावै है।। [redacted]
सैयत विषै [redacted] असंयम घटनी ही तातैं इहाँ असंयम कह्या है।। [redacted]
[redacted] प्रमत्तादिगुणस्थाननिविषै सकल
[redacted] कषायनिका अधिकपनौ कौं होतैं भी जिसै [redacted]
कषायनिका अधिकपनौ कौं होतैं भी जिसैं [redacted] पर्यंत गुणस्थाननिविषै असंयमनाम पावै है
सैयम नाम पावै तैसैं मिथ्यात्वादि असंयत [redacted] बहुरि इहाँ प्रश्न जो अनंतानुबंधी
सर्वत्र असंयमकी समान ता न जाननी।। [redacted] बहुरि इहाँ प्रश्न जो अनंतानुबंधी
सम्यक्त्वकौं न घातै है तौ याका उदय होतैं सम्यक्त्वतैं भ्रष्ट होइ सासादनगुणस्थानकौं कैसैं पावै है।। ताका
समाधान।। जैसैं कोई मनुष्यकै मनुष्यपर्यायनाशका कारण तीव्ररोग प्रगट भया होइ ताकौं [redacted]
समाधान।। जैसैं कोई मनुष्यकै मनुष्यपर्यायनाशका कारण [redacted] मनुष्यपर्यायका छोडनहारा कहिए।। [redacted]
[redacted] मनुष्यपर्यायका छोडनहारा कहिए।। तैसैं सम्यक्त्वीकै सम्यक्त्वके नाशका कारण अनंनतानुबंधीका उदय
बहुरि [redacted] मनुष्यपनौ हरिनरै ही [redacted]।। तैसैं सम्यक्त्वीकै सम्यक्त्वके नाशका कारण अनं
बडरि [redacted] मनुष्यपनौ हुरिनरैं ही [redacted] रोग अवस्थाविषैं मनुष्यकी आयु है

तीव्र रोग
१ देवादिपर्यायिरोइसातौ [redacted] रोग अवस्थाविषैं मनुष्य

२ मिथ्यात्व ऐह साते [redacted] २ ननयारहो

226 तानुबंधी का उदय प्रगट भया ताकौं सम्यक्त्व का विराधक सासादन कह्या बहुरि [redacted] सम्यक्त्व का अभाव न हुवा [redacted] सासादन विषैं उपशम सम्यक्त्व ही का काल है [redacted] ऐसा जानना। बहुरि जैसैं अनंतानुबंधी चतुष्क की सम्यक्त्व होतैं अवस्था होइ है तातैं सात प्रकृतिनि के उपशमादिक तैं भी सम्यक्त्व की प्राप्ति कहिए है। बहुरि प्रश्न सम्यक्त्व मार्गणा के छह भेद कीए हैं सो कैसे है।। ताका समाधान।। सम्यक्त्व के तो भेद तीन ही है। बहुरि सम्यक्त्व का अभावरूप मिथ्यात्व है दोऊनि का मिश्रभाव सो मिश्र है।। सम्यक्त्व का [redacted] घातक भाव सो सासादन है।। ऐसें सम्यक्त्व [redacted] मार्गणा करि जीव का विचार कीए छह भेद कहे हैं।। इहाँ [redacted] कोई कहै कि सम्यक्त्व तैं भ्रष्ट होइ मिथ्यात्व विषैं आया होइ ताकै मिथ्यात्व सम्यक्त्व कहिए सो यह असत्य है।। जातैं अभव्य कै भी [redacted] तिसका सद्भाव पाईए है।। बहुरि [redacted] मिथ्यात्व सम्यक्त्व कहना ही असंभव है।। [redacted] जैसें संयम मार्गणा विषैं असंयम कह्या भव्य मार्गणा विषैं अभव्य कह्या तैसें ही सम्यक्त्व मार्गणा विषैं मिथ्यात्व कह्या है।। [redacted] मिथ्यात्व [redacted] कौं सम्यक्त्व का भेद न जानना।। [redacted] सम्यक्त्व [redacted] अपेक्षा विचार करतैं [redacted] कोई जीवनि कै [redacted] सम्यक्त्व का अभाव तैं ही मिथ्यात्व पाईए है ऐसा अर्थ प्रगट करने कै अर्थि सम्यक्त्व मार्गणा विषैं मिथ्यात्व कह्या है।। ऐसैं ही सासादन मिश्र [redacted] भी सम्यक्त्व के भेद नाहीं हैं सम्यक्त्व के भेद तीन ही है ऐसा जानना।। इहाँ कर्म कै उपशमादिक तैं उपशमादिक सम्यक्त्व कहे सो कर्म का उपशमादिक याका कीया होता नाहीं।। यहु तौ तत्त्वश्रद्धान करने का उद्यम करै तिसके निमित्त तैं स्वयमेव कर्म का उपशमादिक हो [redacted] है ताकै तत्त्वश्रद्धान की प्राप्ति होइ है ऐसा जानना।। या प्रकार सम्यक्त्व के २२६

[redacted] मिथ्यात्व

५५६

226
A

भेदजानने।। ऐसैं सम्यग्दृष्टिनिका [redacted] स्वरूप कह्या। [redacted]
[redacted]
[redacted] बहुरि सम्यग्दृष्टिनिके [redacted] आठ अंग कहे हैं।। निःशंकितत्व।
निःकांक्षितत्व। निर्विचिकित्सत्व। अमूढदृष्टित्व। उपबृंहण। स्थितिकरण। प्रभावना। वात्सल्य।
तहां भयका अभाव अथवा तत्वनिविषै संशयका अभाव सो निःशंकितत्व है।। बहुरि [redacted]
[redacted] परद्रव्यादिविषैरा
गरूपवांछाका अभाव सो निःकांक्षितत्व है।। बहुरि परद्रव्यादिविषै द्वेषरूप ग्लानिका अभाव
सो निर्विचिकित्सत्व है।। बहुरि तत्वनिविषै वा देवादि विषै [redacted] अन्यथा प्रतीतिरूप मोहका अभा
व सो अमूढदृष्टित्व है।। बहुरि आत्मधर्मका वा जिनधर्मका बधावना ताका नाम उपबृंहण
है।। इसही अंगका नाम उपगूहन भी कहिए है तहां [redacted] धर्मात्मा जीवनिका दोष ढांकना [redacted]
[redacted] ऐसा ताका अर्थ जानना।। बहुरि अपने स्वभावविषै वा जिनधर्मविषै आपकौं वा प
रकौं स्थापन करना सो [redacted] स्थितिकरण है।। बहुरि अपने स्वरूपका वा जिनधर्मका महिमा प्रग
ट करना सो प्रभावना है।। बहुरि स्वरूपविषै वा जिनधर्मविषै वा धर्मात्मा जीवनिविषै प्रति
प्रीतिभाव सो वात्सल्य है।। ऐसैं ए आठ अंग जानने।। जैसैं शरीरके हस्तपादादि अंग हैं तैसैं ए सम्य
क्त्वके अंग है।। इहां प्रश्न जो केई सम्यक्त्वी जीवनिकै भी भय इच्छा ग्लानि आदि पाइए है अर केई मि

२ मनुष्य

[redacted]

227 ५५7

२८७

थ्यादृष्टीनिकै न पाईए है तातैं निःशंकितादिक अंग सम्यक्त्वके ● कै सं कहे हैं ।। ताका [redacted] ना
धान ।। जैसैं मनुष्य शरीरके हस्त पादादिक अंग कहिए है ।। तहां कोई मनुष्य ऐसा होइ जा
दृष्टि विषै कोई अंग: के हस्त पादादिक न होइ तहां वाकै मनुष्य शरीर तौ कहिए परंतु तिनि अंगनि विना [redacted] शोभा
यमान सकल कार्यकारी [redacted] न होइ ।। [redacted]
तैसें सम्यक्त्वके नि● शंकितादिक अंग कहिए है तहां कोई सम्यक्त्वी ऐसा होइ जाकै [redacted]
४ विषै: निःशंकितत्वादिक कोई अंग न होइ तहां वाकै सम्यक्त्व तौ कहिए परंतु तिनि अंगनि विना वह
● निर्मल सकल कार्यकारी न होइ ।। [redacted]
[redacted] । बहुरि सम्यक्त्व विषै पचीस मल कहे हैं (२२)
[redacted]
आठ शंकादिक [redacted] आठ मद तीन मूढता षट् अनायतन सो [redacted] ए सम्यक्त्वीकै न हो
इ ।। कदाचित् काहूकै कोई मल लागै [redacted] । सम्यक्त्वका सर्वथा नाश न
हो है ।। [redacted] तहां सम्यक्त्व मलिन ही हो है ऐसा जानना ।। बहु

● बहुरि जैसैं बीदरकै नीरस्त पादादिक अंग हो है ।। परंतु जैसे मनुष्यकै होइ तैसे न
हो है तैसें मिथ्यादृष्टीनिकै भी व्यवहाररूप निःशंकितादिक अंग हो है ।। परंतु जैसे
निश्चयकी सापेक्षता लीए सम्यक्त्वीकै होइ तैसे न हो है ।।

ॐ